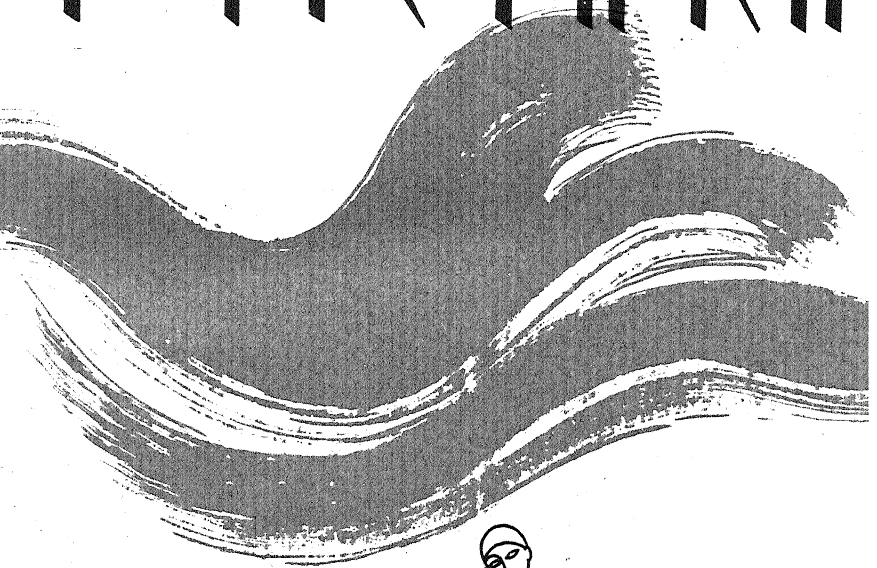
रचनावली 5

सम्पादक : अजित कुमार

5

बच्चन रचनावली



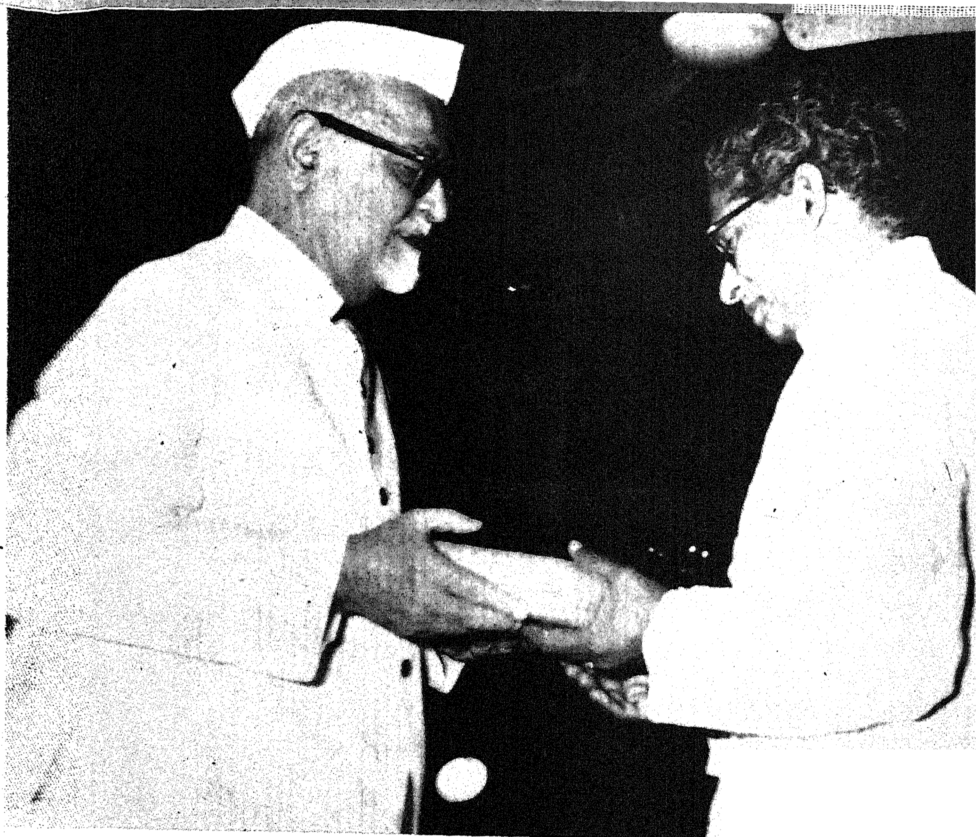


राजकमल

 मूल्य : प्रति खण्ड रु. 100/-; सम्पूर्ण सैट रु 900/-
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा लि, 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-110002
कलापक्ष : नरेन्द्र श्रीवास्तव आवरण-चित्र के छायाकार : अमिताभ बच्चन
मुद्रक : आवरण एवं प्रारम्भिक पृष्ठ – प्रभात ऑफसेट प्रेस, नयी दिल्ली - 110002
पाठ्य भाग – रुचिका प्रिन्टर्स, दिल्ली - 110032 प्रथम संस्करण : 1983



1958

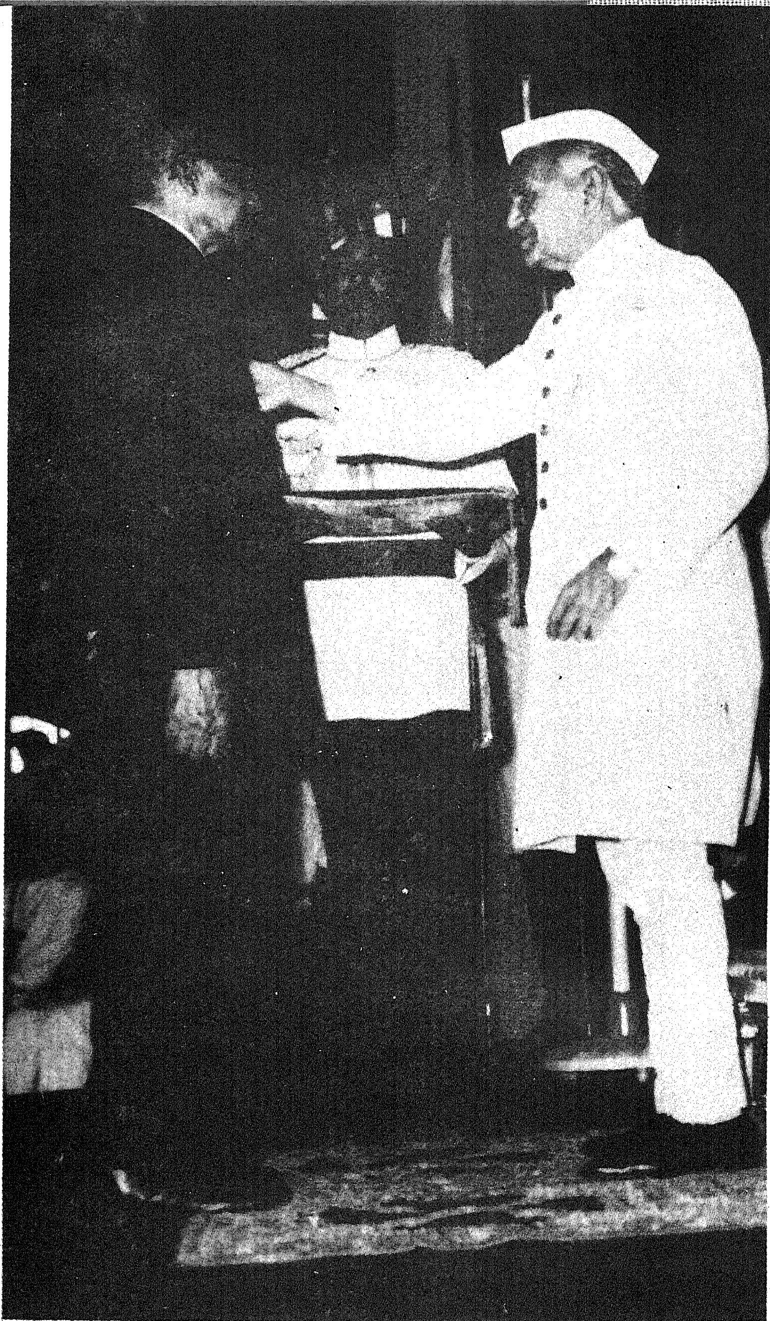


तत्कालीन राष्ट्रपति डा. ज़ाकिर हुसेन से 'दो चट्टानें' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करते हुए



ओथेलो के कलाकार पं. जवाहरलाल नेहरू के साथ : जनवरी 1963

'नेहरू : ए पॉलिटिकल बायोग्राफी' के डा. बच्चन कृत हिन्दी अनुवाद-प्रकाशन के अवसर पर पं. नेहरू पहली प्रति पर हस्ताक्षर करते हुए



सन् 1976 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद से पद्मभूषण पदक स्वीकार करते हुए

दूसरा दृश्य।

पहलवानों का अखाड़ा

क्लियोपात्रा, चार्मियन, इरास, और [illegible] का प्रवेश

क्लियोपात्रा - वह गया कहाँ?

चार्मियन - तब से मैंने उसे न देखा।

क्लियोपात्रा - पता करो वह कहाँ, साथ में है क्या करता,
क्या करता है; लगे न तुमको मैंने भेजा;
वह उदास हो तो कहना मैं नाच रही हूँ,
वह प्रसन्न हो तो कहना, बीमार पड़ गई,
जल्दी जा [illegible], वापस आओ। (एलेक्सास बाहर जाता है)

चार्मियन - देवि, यदि दिल से प्यार आप करतीं उनको,
मुझे लगता है, यह उपाय उनको पाने का
कभी उपाय न [illegible]

क्लियोपात्रा - क्या करूँ ऐसा जो मैं करती नहीं?

चार्मियन - हर बात में उनके आगे झुकिए, लड़ें नहीं

क्लियोपात्रा - मूर्ख, सिखाती तो तुम खो देने का [illegible]

चार्मियन - [illegible] [illegible] [illegible]
मैं [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

क्लियोपात्रा - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

एन्टनी - [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

क्लियोपात्रा - [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

क्लियोपात्रा - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बच्चनजी द्वारा अनूदित शेक्सपियर के एक नाटक का अंश

सूचना

बच्चन रचनावली नौ खण्डों में प्रकाशित की जा रही है। पहले, दूसरे, तीसरे खण्ड में बच्चनजी की कविता संकलित है; चौथे में अन्य कवियों की रचनाओं के अनुवाद और पाँचवें में शेक्सपियर के नाटकों के अनुवाद हैं; छठे में बच्चनजी का आलोचनात्मक लेखन और सातवें-आठवें में आत्मकथा के तीन भागों सहित विदेश-प्रवास की डायरी है; नवें खण्ड में कहानियाँ, साक्षात्कार, वार्ताएँ, समीक्षाएँ, पत्र आदि विभिन्न विधाओं की रचनाएँ सम्मिलित हैं। वहीं अकारादि क्रम में कविताओं तथा लेखों की सूची भी मिलेगी।

प्रत्येक खण्ड की सामग्री सामान्यतः प्रकाशन-क्रम में रखी गयी है। आरम्भ 'मधुशाला' से हुआ है, जो भले ही कवि की पहली रचना न हो, पर लगभग आधी सदी से हिन्दी-प्रेमियों के लिए बच्चनजी का पर्याय रही है। **रचनावली** में सभी पुस्तकें अविकल रूप में दी गयी हैं और विधा-विशेष की असंकलित सामग्री सम्बद्ध खण्ड के अन्तिम पृष्ठों में रखी गयी है।

अपनी पुस्तकों की भूमिकाएँ लिखना बच्चनजी ने बहुत बाद में आरम्भ किया। ये भूमिकाएँ तो हमने यहाँ पुस्तकों के साथ दी हैं, पर जो थोड़ी-सी भूमिकाएँ या टिप्पणियाँ अन्य महानुभावों ने लिखी हैं, उन्हें **बच्चन रचनावली** में लेना हमने आवश्यक नहीं समझा। पाठक उन्हें अलग से छपी स्वतन्त्र पुस्तकों में पा सकेंगे।

आरम्भ से ही बच्चनजी ने एक ऐसी आत्मीयतापूर्ण, निराली शैली विकसित की, जिससे कि उनका श्रोता या पाठक, तन्मयता के क्षणों में, सुनने या पढ़ने के बजाय, खुद ही कुछ कहता हुआ-सा अनुभव करने लगता है। रस-निष्पत्ति की इस स्थिति को कोई भारी-भरकम नाम न दे, हम कवि और पाठक-श्रोता के बीच एक सहज, आत्मीय संवाद कहना अधिक पसन्द करेंगे। यह **रचनावली** भी वैसा ही लम्बा और अन्तरंग संवाद बने, इस उद्देश्य से हमने इसको टीका-टिप्पणी, कोष्ठक आदि के सम्पादकीय हस्तक्षेपों से सर्वथा मुक्त रखा है। कवि के जीवन तथा सृजन का पूर्णतर चित्र भी इस तरह पाठकों के सम्मुख आ सकेगा, ऐसी हमें आशा है।

रचनावली का यह पाँचवाँ खण्ड शेक्सपियर की चार त्रासदियों के अनुवादों को समर्पित है। ये हैं: 'मैकबेथ' ('57), 'ओथेलो, ('59), 'हैमलेट' ('69), और 'किंग लियर' ('72)। आकार की दृष्टि से

रचनावली का यह खण्ड थोड़ा छोटा है लेकिन यदि हम विचार करें कि इसमें विश्व के सर्वप्रमुख लेखक के चार महानतम नाटकों का समावेश हुआ है, तो इस खण्ड की गरिमा का कुछ आभास मिल सकेगा।

हिन्दी में शेक्सपियर के नाटकों के अधिकतर अनुवाद गद्य में हुए हैं, जबकि शेक्सपियर का विशेष उल्लेखनीय गुण यह है कि वे जितने बड़े नाटककार हैं, उतने ही बड़े कवि भी हैं। इस गुण की रक्षा के लिए, बच्चनजी ने शेक्सपियर के पद्यबद्ध नाटकों का पद्यबद्ध अनुवाद करना ही उचित समझा; मूल में जो थोड़े-से गद्यांश थे, केवल वे ही गद्य में रखे हैं।

अपने अनुवाद के लिए बच्चनजी ने 'रोला' नामक जो छन्द चुना, वह हिन्दी का अत्यन्त समर्थ छन्द है और शेक्सपियर द्वारा प्रयुक्त छन्द 'आयंबिक पेण्टामीटर' की ही भाँति, वह लय, प्रवाह, स्वाभाविक बोल-चाल और नाटकीयता की आवश्यकताएँ भलीभाँति पूरी करता है। यह तथ्य बच्चनजी द्वारा संगठित हिन्दी शेक्सपियर मंच की उन प्रस्तुतियों के दौरान सामने आया जिनमें श्रीमती तेजी बच्चन और श्री अमिताभ बच्चन सहित राजधानी के अनेक रंगकर्मियों ने भाग लिया था। नाटक की सार्थकता उसके खेले जाने में है, इसलिए प्रथम प्रस्तुतियों का संक्षिप्त विवरण इस खण्ड में यथास्थान दिया जा रहा है।

हमें आशा है कि इन विवरणों, अनुवादक की भूमिकाओं तथा अनुवादों को पढ़कर हमारे पाठक इस कार्य की गुरुता-गम्भीरता का कुछ अनुमान लगा पायेंगे और कम-से-कम इस तथ्य से तो अवगत होंगे ही कि अपने आप में बच्चनजी का यह प्रयास हिन्दी में अभी तक बेजोड़ है।

अजित कुमार

हिन्दी विभाग
किरोड़ीमल कालेज, दिल्ली-7

क्रम

'मैकबेथ' : प्रथम प्रकाशन 1957; राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, से प्रकाशित।

प्रवेशिका

पहले संस्करण की

आज हिन्दी पाठकों के सामने शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मैकबेथ' का पद्यानुवाद उपस्थित करते हुए मैं बड़े आनन्द एवं गर्व का अनुभव कर रहा हूँ। वस्तुतः हिन्दी के लिए शेक्सपियर का यह सर्वप्रथम नाटक है जो पद्यबद्ध रूप में प्रकाश में लाया जा रहा है।

शेक्सपियर के जीवन, काव्य और नाटकों के विषय में इतना अधिक लिखा जा चुका है, लिखा जा रहा है और लिखा जा सकता है कि इनके विषय में लेखनी उठानेवाले को अपने ऊपर बड़ा कड़ा संयम रखना चाहिए। मैं प्रयत्न करूँगा कि यह प्रवेशिका छोटी से छोटी रक्खी ाय।

शेक्सपियर (1564-1616) अंग्रेज़ी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाट्यकार माने जाते हैं। बहुत से विद्वान् उन्हें योरोपीय साहित्य का, और कुछ उन्हें विश्व-साहित्य का महानतम कवि और नाट्यकार समझते हैं। उन पर निर्णय देने का न मैं अधिकारी हूँ और न उसका, यदि मैं ऐसा करने का दुःसाहस करूँ भी तो, कोई मूल्य होगा। फिर भी जिस रूप में मैंने उन्हें स्वीकार किया है उसे बता देने की धृष्टता मैं करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि शेक्सपियर विश्व के लिए पश्चिमी सभ्यता के सबसे सुन्दर वरदान हैं।

उनकी कृतियों की संख्या लगभग चालीस है—लगभग इसलिए कहा जाता है कि कुछेक रचनाओं के आमूल लेखक होने के सम्बन्ध में विद्वानों को सन्देह है। सम्भवतः उन्होंने उनका संशोधन-सम्पादन किया था अथवा उनके लेखन में किसी अंश तक सहयोग दिया था। इनमें से सैंतीस नाटक हैं—दुखान्त, सुखान्त, ऐतिहासिक, दुखसुखान्त, और इन सबसे परे भी। शेक्सपियर ने देखा था कि जीवन में दुख-सुख घुले-मिले भी हैं और दोनों के ऊपर भी उठा जा सकता है।

'भिन्न सुखों से, भिन्न दुखों से होता है जीवन का रुख भी।'

जीवन की विविधता, विशालता और विचित्रता ही शेक्सपियर के नाटकों के लिए मापदण्ड का काम कर सकती है।

इन सैंतीस नाटकों में शीर्षस्थान दिया जाता है उनके चार दुखान्त नाटकों को, जिनके नाम हैं, 'हैमलेट', 'मैकबेथ', 'ओथेलो' और 'किंग लियर'। किसी-न-किसी दृष्टि से इनमें से हरएक को सर्वोच्च सिद्ध करने के प्रयत्न समालोचकों द्वारा बराबर हुआ करते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि अंग्रेज़ी न जाननेवाले हिन्दी पाठकों को 'मैकबेथ' का परिचय पद्य-नाटक के रूप में देने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो रहा है।

भारतीयों को शेक्सपियर का परिचय भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना एवं अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार के साथ प्राप्त हुआ। भारतीय भाषाओं में शेक्सपियर के नाटकों को अनूदित करने की लालसा स्वाभाविक थी। बंगाल सर्वप्रथम अंग्रेज़ों के अधिकार एवं प्रभाव में आया। बंगाली भाषा में पर्याप्त क्षमता थी। पहले-पहल

शेक्सपियर के अनुवाद, जहाँ तक मुझे मालूम है, बंगला में ही हुए; बाद को अन्य भाषाओं में।

अंग्रेज़ी का साधारण ज्ञान रखते हुए भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का ध्यान शेक्सपियर की ओर आकर्षित हुआ था। उन्होंने शेक्सपियर के 'मर्चेण्ट आफ़ वेनिस' का रूपान्तर 'दुर्लभ वन्धु' के नाम से किया था। इसके पूर्व बाबू बालेश्वरप्रसाद बी. ए. ने इस नाटक की कथा 'वेनिस का सौदागर' के नाम से सम्भवत: लैब-लिखित 'टेल्स फ्राम शेक्सपियर' के आधार पर लिखी थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में जयपुर के गोपीनाथ पुरोहित ने 'रोमियो ऐण्ड जूलियट' का अनुवाद 'प्रेमलीला' के नाम से, और बदरीनारायण चौधरी के भाई मथुराप्रसाद ने 'मैकबेथ' का 'साहसेन्द्र साहस' तथा 'हैलमेट' का, 'जयन्त' के नाम से प्रकाशित किया। इन्हें पढ़ने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला। कोई सज्जन इन्हें मेरे लिए सुलभ कर सकें तो कृतज्ञ हूँगा। मेरा अनुमान है इनमें 'दुर्लभ बन्धु' की परम्परा का अनुसरण किया गया होगा।

नाटकों के कथा भाग को कहानियों में कहने की परम्परा गंगाप्रसाद एम. ए. ने आगे बढ़ाई और इस शताब्दी के तीसरे दशक में ये कहानियाँ छह भागों में, इण्डियन प्रेस, प्रयाग द्वारा प्रकाशित की गयीं। कुछ मास हुए, मैंने कहीं विज्ञापन देखा है, किसी महिला ने शेक्सपियर के नाटकों की कहानियाँ अभिनव रूप और शैली में उपस्थित की हैं।

इस शताब्दी के तीसरे दशक में ही लाला सीताराम बी. ए. ने शेक्सपियर के कुछ नाटकों का अनुवाद—'मैकबेथ' इनमें से एक था—प्रकाशित कराया। उनके अनुवाद गद्य में हैं, जबकि शेक्सपियर ने अपने नाटक पद्य में लिखे थे। इन अनुवादों को मैं छायानुवाद ही कहना चाहूँगा; तो भी शेक्सपियर के नाटकों को उनके निकट-तम रूप में सर्वप्रथम हिन्दी में उपस्थित करने का श्रेय लालाजी को ही है। भारतेन्दु और उनके अनुयायियों ने नाटकों का वातारण भारतीय कर दिया था।

1930 के लगभग मैंने शेक्सपियर के 'ओथेलो' का भी एक हिन्दी अनुवाद पढ़ा था। अनुवादक का नाम भूल गया हूँ। यह लालाजी-कृत नहीं था। यह भी गद्य में था। इन पंक्तियों के कोई पाठक इस अनुवाद का कोई अता-पता देंगे अथवा इसकी एक प्रति मुझे भिजवा सकेंगे तो बहुत आभारी हूँगा।

हिन्दी में शेक्सपियर के नाटकों के सम्बन्ध में यदि और कोई काम हुआ है तो मैं उससे अनभिज्ञ हूँ।*

शेक्सपियर के नाटकों को हिन्दी में अनूदित करने की बात मेरे मन में सबसे पहले प्रसिद्ध अभिनेता श्री बलराज साहनी और उनकी पत्नी श्रीमती सन्तोष साहनी ने डाली थी। उनका विचार था कि मेरी कविताओं में जो सरल, सचित्र, बोलती हुई भाषा है वह नाटक के अनुवाद के लिए बहुत उपयुक्त है। शेक्सपियर के नाटक मैंने काफ़ी पढ़े-पढ़ाये थे, मुझे उनका अनुवाद करना हो तो उनका अभिनय भी मुझे पर्याप्त देखना चाहिए। यह अवसर मुझे इंग्लैण्ड-प्रवास में प्राप्त हुआ; पर अनुवाद एक पंक्ति का न हुआ। इंग्लैण्ड से लौटा तो श्रीमती साहनी ने इस विषय में

---

* जब मेरा 'मैकबेथ' का अनुवाद छपने को भेज दिया गया था उस समय मुझे पता लगा कि डाक्टर रांगेय राघव ने शेक्सपियर के लगभग एक दर्जन नाटकों का अनुवाद गद्य में कर डाला है और वे राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, से प्रकाशित हो रहे हैं। जब मैंने अपना अनुवाद आरम्भ किया, मुझे उनके अनुवाद की कोई ख़बर न थी। शायद यह एक सबूत है कि शेक्सपियर एक बार फिर हिन्दी के वातावरण में हैं।

मुझे फिर पत्र लिखे। श्री साहनी मिले तो उन्होंने फिर अनुरोध किया। उधर दिल्ली की साहित्य अकादेमी ने विदेशी साहित्य को हिन्दी में अनूदित कराने की अपनी योजना में शेक्सपियर का एक नाटक मेरे नाम लिख दिया। साथ ही भारत सरकार ने जिस विशेष कार्य के लिए मुझे विदेश मन्त्रालय में बुलाया था उसमें अधिक दक्षता प्राप्त करने के उद्देश्य से, अभ्यास के तौर पर, मैं किसी अंग्रेज़ी क्लासिक्स का अनुवाद हिन्दी में करना चाहता था।

रुचि ही कुछ ऐसी मिली है कि मन ज़मीन से उठता है तो आसमान पर ही टिकता है। शेक्सपियर की ओर ध्यान गया। विश्व-साहित्य में शेक्सपियर का क्या स्थान है, इसे सोचना हम थोड़ी देर के लिए बन्द भी कर दें तो, यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उनकी रचनाएँ अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य की मेरुदण्ड हैं। उनके साथ खड़े होने का साहस यदि कोई और रचना कर सकती है तो वह है बाइबिल। अंग्रेज़ी भाषा का कोई लेखक यदि उनसे अप्रभावित है तो उसका कारण केवल एक हो सकता है कि वह उनके प्रादुर्भाव से पूर्व अपनी लेखनी रख चुका था। बाइबिल का शुद्ध-सुन्दर अनुवाद करने के लिए मुझे किसी हिन्दी-भाषी निष्ठावान ईसाई माँ की कोख से जन्म लेना था। मैंने शेक्सपियर के किसी नाटक से अपना प्रयोग आरम्भ करने का निश्चय किया।

मैंने 'मैकबेथ' को उठाया जो अनुवाद दृष्टि से मुझे उनका सबसे कठिन नाटक प्रतीत हुआ। इसमें सफल होता हूँ तो सम्भवतः मैं शेक्सपियर के अन्य नाटकों का अनुवाद भी कर सकूँगा; असफल होता हूँ तो उनको अनूदित करने की आकांक्षा मुझे सदा के लिए छोड़ देनी चाहिए। अनुवाद पूरा हुआ, प्रकाशित किया जा रहा है। और अब जनता-जनार्दन निर्णय दें कि यह कैसा हुआ है।

जैसा कि मैंने पहले कहा है, शेक्सपियर के कुछ नाटकों का अनुवाद हिन्दी गद्य में हो चुका है। पर ये नाटक पद्य में लिखे गये थे, और मेरी ऐसी धारणा है कि जब तक उनका अनुवाद पद्य में न किया जाय उनमें रसे-बसे कवित्व की रक्षा नहीं की जा सकती। हमें यह न भूलना चाहिए कि शेक्सपियर महान नाटककार ही नहीं, महान कवि भी हैं और उनकी कविता उनके नाटकों में बिखरी पड़ी है। जिस कवित्व का शीशमहल उन्होंने पद्य की विशाल छाती पर खड़ा किया है उसे गद्य के शीश पर धरते ही वह गिरकर चकनाचूर हो जाता है। मैंने संकल्प किया कि मैं अपना अनुवाद पद्य में करूँगा।

शेक्सपियर का छन्द अंग्रेज़ी में 'ब्लैंक वर्स' कहलाता है। उसमें समलय किन्तु अतुकान्त पंक्तियाँ होती हैं, जिन्हें 'आयंबिक पेण्टामीटर' कहते हैं। अंग्रेज़ी भाषा की अपनी विशेष प्रवृत्ति, स्वराघात-प्रधानता के कारण इस पंक्ति में विविधता की बड़ी सम्भावना है। थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता लेकर इसकी विविधता और बढ़ाई जा सकती है। 'ब्लैंक वर्स' अंग्रेज़ी काव्य का आधारभूत छन्द है।

अनुवाद प्रारम्भ करने से पहले मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि 'आयंबिक पेण्टामीटर' के जोड़ का कौन ऐसा छन्द है जिसमें वह सारा कुछ उतार देने की क्षमता हो जो शेक्सपियर अपनी पंक्तियों में भर देते हैं। और उनकी शब्द योजना के बाहरी आवरण का ध्यान छोड़, भावों में डूब, जब मैंने हिन्दी के माध्यम से उसे व्यक्त करना आरम्भ किया तो उसने चौबीस मात्राओं के छन्द का आकार लिया, जिसे शायद 'रोला' कहते हैं। अब जब मैंने शेक्सपियर का एक पूरा नाटक रोला छन्द में अनूदित कर लिया है तो मुझे यह कहने का साहस होता है कि इस छन्द में बड़ी ही संवहन शक्ति है। हिन्दी भाषा की अपनी विशेष प्रवृत्ति, मात्रा-प्रधानता,

के कारण उसकी पद्य-पंक्तियों में विविधता की सम्भावनाएँ सीमित हैं और स्वतन्त्रता तो ली ही नहीं जा सकती। यदि एक पंक्ति में स्वतन्त्रता ले ली जाय तो ठीक दूसरी पंक्ति में उसका परिहार करना पड़ता है। पर हम भाषा की प्रवृत्ति से नहीं झगड़ सकते। संस्कृत मात्रिक है, यूनानी मात्रिक है, और इन दोनों में महान नाटक और काव्य लिखे गये हैं। मात्रिकता की परिसीमाओं के बावजूद हिन्दी पद्य-पंक्तियों में उच्च एवं सूक्ष्म काव्य-गुणों को सन्निहित कर सकने की क्षमता है। मैं यहाँ सबूत देने नहीं जा रहा हूँ।

किसी भी भाषा के महान काव्य में शब्द और अर्थ, गिरा और अर्थ, जल और वीचि के समान सम्बद्ध होते हैं। अनुवाद को अर्थ लेना पड़ता है, शब्द छोड़ना पड़ता है, और उस अर्थ को दूसरी भाषा के शब्दों के साथ जोड़ना पड़ता है। अपने अभ्यास के दौरान में मैंने देखा कि 'आयंबिक पेण्टामीटर' अपनी एक पंक्ति में जितना अर्थ रख देता है उसे उठाने के लिए रोला की सवा या डेढ़, और कहीं-कहीं दो पंक्तियों की आवश्यकता होती है। रोला की ही पंक्ति में आठ मात्राएँ और जोड़कर यह अन्तर कम किया जा सकता था, पर मैंने किन्हीं कारणों से ठीक नहीं समझा। शेक्सपियर के नाटक खेले जाने के लिए हैं और दर्शक पंक्तियाँ नहीं गिनता।

इसके कई कारण हैं! अर्थ से उतना ही अर्थ नहीं जितना स्कूली बच्चों को बताया जाता है। मेरे लिए तो उसमें रस भी सम्मिलित है। दूसरे, थोड़ा लिखना, बहुत समझना—मोर इज़ मेण्ट दैन मीट्स द इयर—वाली शैली बहुत प्रौढ़, परिपक्व और विकसित भाषा में ही सम्भव है। शेक्सपियर की अंग्रेज़ी की तुलना में भी आधुनिक हिन्दी बिलकुल नयी भाषा है। आश्चर्य नहीं कि अंग्रेज़ी जो कम शब्दों में कह देती है, हिन्दी को उसी ज़्यादा शब्दों में कहना पड़ता है। हिन्दी के अभिमान की और चीज़ें हैं—उसकी ताज़गी, उसकी सुकुमारता, उसकी नवीनता; प्रौढ़ता, परिपक्वता नहीं। ऐसी अवस्था में पंक्तियों की समानता के लिए आग्रह करने से अर्थ के साथ ज़्यादती होती। मैंने ध्यान यह रक्खा है कि शब्द के साथ ज़्यादती हो तो हो, अर्थ के साथ, कम-से-कम जान में, न हो।

आज शेक्सपियर के नाटक जितने देखे जाते हैं उससे कई हज़ार गुना पढ़े जाते हैं। अनुवाद करने का एक दृष्टिकोण यह भी हो सकता था कि उन्हें केवल पढ़ने के लिए किया जाय। मैंने इस दृष्टिकोण को अस्वस्थ समझा। शेक्सपियर के नाटक केवल खेले जाने के लिए लिखे गए थे, और आज भी इनका सजीवतम रूप केवल रंगमंच पर देखा जा सकता है, मैंने अपना अनुवाद इसी आशा से किया है कि किसी-न-किसी दिन इसका अभिनय रंगमंच के ऊपर किया जायगा।

यह अवश्य है कि शेक्सपियर के नाटकों को रंगमंच पर देखने के लिए आने-वाली जनता को कुछ नई ही प्रत्याशाएँ लेकर दर्शक-भवन में प्रवेश करना होगा। हिन्दी नाटकों का जो तत्किंचित् विकास हुआ है, वह गद्य नाटकों के रूप में ही। रंगमंच पर पद्य बोलने की प्रथा सर्वथैव नवीन होगी, पर सर्वथैव अश्रुत नहीं। हमारे कवि-सम्मेलनों में मुक्त छन्द में लिखी कविताएँ आजकल प्रायः सुन पड़ने लगी हैं। जनता उनका आनन्द लेना सीख रही है। यदि ये रचनाएँ समुचित भावा-वेश में पढ़ी जायँ तो कवि उसी कोटि में आ जाय जिसका उत्कृष्ट स्वरूप शेक्सपियर के नाटक के अभिनेता में देखा जायगा। दर्शकों को शेक्सपियर का नाटक देखने के लिए ही नहीं आना होगा, शेक्सपियर की कविता सुनने के लिए भी। साथ ही उन्हें यह भी समझना होगा कि शेक्सपियर के नाटक घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-प्रधान

हैं। घटनाओं का उपयोग उतना ही किया गया है जितना भीतर के चरित्र की झाँकी देने के लिए आवश्यक है। आधुनिक सिनेमा की तस्वीरों से जिनकी रुचि बनी है, वे शेक्सपियर के पद्य, कवित्व और चरित्र-चित्रण का कितना स्वागत करेंगे इसे जानना कठिन है। फिर भी अक्सर ऐसा होता है कि जनता नई चीज़ों का स्वागत करती है, और केवल इसलिए कि वे पुरानी से भिन्न हैं। शेक्सपियर का नाम ही उनमें यह विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त होना चाहिए कि इस नवीनता में कोई बहुमूल्य निधि छिपी है।

शेक्सपियर के नाटकों को रंगमंच पर लाने की तैयारी में एक क़दम यह उठाया जा सकता है कि छोटी-छोटी गोष्ठियों में नाटक-पाठ हो। नाटक-पाठ अथवा 'प्ले-रीडिंग' का इंग्लैण्ड तथा अन्य योरोपीय देशों में बड़ा प्रचलन है। नाटक आँख से पढ़ने की चीज़ नहीं; उसे देखा न जा सके तो कम-से-कम सुना जाय। कई लोग विभिन्न पात्रों की भूमिका में कथोपकथन को भावपूर्ण ढंग से पढ़ें; अभिनय और रंगमंच कल्पना पर छोड़ दिए जायँ। इस प्रकार शेक्सपियर के नाटकों के अभिनेताओं का भी आविर्भाव होगा। स्वाभाविक है कि शेक्सपियर का नाटक नवीन प्रकार के दर्शक ही नहीं, नवीन प्रकार के अभिनेताओं की भी माँग करेगा।

शेक्सपियर के नाटक पर्याप्त संख्या में अनूदित हो जायँ और नाटक-पाठ से उनके अभिनय की सफलता का विश्वास हो जाय तो मेरा स्वप्न है कि एक **हिन्दी शेक्सपियर मंच** की स्थापना की जाय। अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं के और पद्य-नाटक भी अनुवाद करके उपस्थित किए जा सकते हैं। सम्भव है मौलिक पद्य-नाटक भी हिन्दी में लिखे जायँ। हमारी प्राचीन साहित्यिक परम्परा में नाटक काव्य के ही अन्तर्गत माना गया है। यह सब न भी हो तो भी शेक्सपियर अपने-आप में एक पूर्ण संस्था बनने का सामर्थ्य रखते हैं।

बहरहाल, ये भविष्य की बातें हैं। अभी तो यह नाटक पाठकों के ही हाथों में जा रहा है। इसका अनुवाद करने में मैंने चार विशेष लक्ष्य अपने सामने रखे थे—अनुवाद, छायानुवाद न होकर अविकल हो; शेक्सपियर के कवित्व की यथासम्भव रक्षा की जाय; नाटक, सामान्य शिक्षित-दीक्षित जनता के सामने खेला जा सके, और चरम लक्ष्य यह हो कि अनुवाद, अनुवाद न मालूम हो।

'मैकबेथ' का अनुवाद जब मैंने आरम्भ किया था तब मेरे मन में हिचक थी कि उसे पूरा कर भी पाऊँगा कि नहीं और जब तक यह समाप्त नहीं हो गया तब तक इसका पता सिवा मेरी पत्नी के और किसी को नहीं था। अनुवाद को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने के पूर्व मैं उसे अपने कई मित्रों को दिखाना चाहता था। टाइप की हुई प्रतियाँ कम, मित्र अधिक, फिर कोई देश के इस कोने में, कोई उस कोने में। केवल श्री सुमित्रानन्दन पन्त और श्री बलराज साहनी के सुझाव मुझे मिल सके जिनसे कवित्व एवं अभिनय की दृष्टि से इसे सुधारने में मुझे काफ़ी सहायता मिली। पन्तजी ने अपना विशेष समय और श्रम लगाया। खेद यही था कि उनके प्रयाग और मेरे दिल्ली रहने के कारण हम साथ बैठकर इस पर काम न कर सके। मैं इन दोनों मित्रों के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

अनुवाद जिस रूप में प्रकाशित किया जा रहा है उसे मैं इसका अन्तिम रूप नहीं मानता। होना तो यह चाहिए था कि पहले इसका कई बार नाटक-पाठ होता, फिर इसका कई बार अभिनय होता और इस प्रकार यह अनुवाद जो रूप लेता वह प्रकाशित किया जाता। मेरी यह निश्चित धारणा है कि शेक्सपियर के नाटक भी जिस रूप में लिखे गए थे उसी रूप में प्रकाशित नहीं किए गए। उन दिनों प्रथा ही

यह थी कि नाटक लिखे जाने के बाद पहले वर्षों हस्तलिखित प्रतियों से उनका अभि-नय किया जाता था और तब कहीं जाकर वे पुस्तक रूप में छपते थे। और अभिनय करते-करते नाटकों का रूप बहुत बदल जाता था, बहुत निखर आता था। शेक्सपियर के किसी नाटक की प्रति ऐसी नहीं प्राप्त हुई जो उनके हाथ की लिखी हो। 'मैकबेथ' को ही लीजिए। यह सर्वप्रथम 1606 में खेला गया था; 1616 में शेक्सपियर की मृत्यु हुई और उसके सात वर्ष बाद, यानी 1623 में, यह प्रथम बार मुद्रित हुआ। यदि मौलिक नाटकों के लिए यह आवश्यक है कि उनका अन्तिम रूप अभिनेता और रंगमंच के द्वारा निर्धारित हो तो अनुवाद के लिए तो यह और भी ज़रूरी है। फिर भी इसे प्रकाशित करने की आवश्यकता इस कारण प्रतीत हुई कि अभिनेता और रंगमंच की आलोचना के पूर्व, अनुवाद को, केवल शुद्धता और सुन्दरता की दृष्टि से, परिष्कृत एवं परिमार्जित करने के लिए ऐसे बहुत-से लोगों की आलोचना की आवश्यकता है जो अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों के ज्ञाता हों। साथ ही छपी प्रतियों से नाटक-पाठ और अभिनय दोनों सुलभ होंगे। इस कार्य में जिन लोगों की रुचि हो, इस प्रवेशिका के द्वारा, मैं उन सबों को निमन्त्रित करता हूँ कि वे मेरे अनुवाद को निष्पक्षता से पढ़ें, खटकनेवाली बातों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करें, इसकी त्रुटियाँ बतलाएँ और हो सके तो सुधार सुझाएँ। उनके सहयोग से, मुझे विश्वास है, मेरे अनुवाद के बहुत-से दोषों का निराकरण हो जायगा। शेक्सपियर ऐसे महाप्रतिभ की रचना को हिन्दी में रूपान्तरित करने के लिए मैं केवल अपनी अल्प बुद्धि एवं रुचि को नितान्त अपर्याप्त स्वीकार करता हूँ।

मेरे जिन मित्रों ने पाण्डुलिपियों में 'मैकबेथ' का अनुवाद पढ़ा और पसन्द किया और मुझसे शेक्सपियर के और नाटकों का अनुवाद करने के लिए अनुरोध किया उन्हें मैं एक शुभ सूचना देना चाहता हूँ कि मैंने उनके प्रोत्साहन पर 'ओथेलो' का अनुवाद आरम्भ कर दिया है।

अन्त में मैं उन सब लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने किसी भी रूप में इस कार्य के सम्पादन में मेरी सहायता की।

विदेश मन्त्रालय, **बच्चन**
नयी दिल्ली।
28-5-57

प्रवेशिका

दूसरे संस्करण की

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि 'मैकबेथ' के मेरे अनुवाद का दूसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। इस बीच पढ़े-लिखों की दुनिया में इस अनुवाद की पर्याप्त चर्चा रही। हिन्दी के बहुत-से पत्र और पत्रिकाओं में इसकी आलोचनाएँ निकलीं। इसे रेडियो-रूपक का आकार देकर आकाशवाणी के नई दिल्ली केन्द्र से प्रसारित किया गया जिस पर कई पत्रों ने अपनी सम्मतियाँ दीं। कई श्रोताओं ने अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखीं। इसको नई दिल्ली में रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया और राजधानी के लगभग सभी प्रमुख हिन्दी और अंग्रेज़ी पत्र-पत्रिकाओं में इस

पर टिप्पणियाँ निकलीं। इस अवसर पर मैं उन सब लोगों के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने अपनी-अपनी रीति से मेरी इस कृति की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। मैं अपने प्रकाशक का भी अनुगृहीत हूँ जो इन अनुभवों के आधार पर संशोधित-परिष्कृत मेरी इस रचना को नवीन आकार-प्रकार से जनता के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं।

सिद्धान्ततः इस बात को मानते हुए भी कि नाटक के मूलपाठ को तभी छपाना चाहिए जब विभिन्न नाट्य-पाठों (प्ले रीडिंग) और अभिनयों के द्वारा उसका रूप निश्चित हो जाय, निखर उठे; जो मैंने 'मैकबेथ' को प्रकाशित कराया उसका कारण यह था कि मैं अधिकारी विद्वानों की आलोचनाओं और सुझावों से अपने अनुवाद को संशोधित-परिष्कृत करना चाहता था; साथ ही यह भी विचार था कि छपी प्रतियों से नाट्य-पाठ और अभिनय दोनों ही सरल-साध्य हो सकेंगे।

खेद के साथ लिखना पड़ता है कि मेरी यह प्रत्याशा पूरी नहीं हुई। पत्र-पत्रिकाओं की समालोचनाओं में सृजनात्मक सुझाव प्रायः नहीं के बराबर थे— प्रशंसा और निन्दा दोनों मेरे लिए बेकार थीं। कारण स्पष्ट है। जो महज़ अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे नहीं, सच्चे अर्थों में अंग्रेज़ी के विद्वान हैं, उन्हें हिन्दी की समझ नहीं; जो हिन्दी के विद्वान हैं, वे अंग्रेज़ी भाषा, साहित्य और काव्य के मर्म को नहीं समझते—कुछ गलत-सही अंग्रेज़ी बोलने-लिखने का अभ्यास उन्होंने भले ही किया हो। दोनों भाषाओं पर प्रायः समान अधिकार रखनेवाले जो थोड़े-से लोग रह जाते हैं उन्हें इतना अवकाश नहीं कि वे इस प्रकार के कार्य में सहयोग या समय दे सकें। मेरे कुछ मित्रों ने अवश्य मूल से मिलाकर अनुवाद को पढ़ा और कुछ मूल्यवान सुझाव दिए। इनमें मैं विशेष रूप से शिक्षा मन्त्रालय के उपपरामर्श-दाता श्री रघुवंश किशोर कपूर का नाम स्मरण करना चाहता हूँ। इन सुझावों का यथासम्भव मैंने उपयोग किया है।

नाट्य-पाठ इसका हुआ या नहीं, इसे बताना मेरे लिए असम्भव है। हिन्दी में इसकी प्रथा नहीं, और किसी भी नई चीज को हम ज़रा मुश्किल से ही ग्रहण करते हैं। केवल एक शिक्षा संस्था से एक सज्जन ने मुझे लिखा है कि वे 'मैकबेथ' के नाट्य-पाठ का आयोजन कर रहे हैं। और जगह कहीं हुआ भी हो तो उसकी सूचना मुझे नहीं दी गई। नाट्य-पाठ के आधार पर कथोपकथन में किसी प्रकार की त्रुटि अथवा कठिनता की ओर मेरा ध्यान किसी ने आकर्षित नहीं किया। इसके पूर्ण अथवा कुछ दृश्यों को अभिनीत करने-कराने के समाचार भी मुझे कहीं से नहीं मिले।

इस प्रकार इस नवीन संस्करण में जो कुछ भी संशोधनादि किए गए हैं उसका मुख्य आधार हमारे अपने यहाँ का ही नाट्य-पाठ और हमारा स्वयं-आयोजित अभिनय है जिसकी चर्चा मैं ऊपर कर चुका हूँ।

मैं जिस छन्द, भाषा और शैली में अनुवाद कर रहा हूँ वह अभिनय की दृष्टि से नाटक के उपयुक्त है इसका विश्वास मुझे मेरी पत्नी ने दिलाया। वे लाहौर, इलाहाबाद, दिल्ली में कई नाटकों में अभिनय कर चुकी हैं। मैं जैसे-जैसे अनुवाद करता जाता उन्हें सुनाता जाता, कभी भावपूर्ण ढंग से; कभी वे भी इसी प्रकार किसी स्त्री-पात्र का कथन पढ़कर सुनातीं। हमने हँसी-हँसी में यह निश्चय कर लिया कि जब नाटक खेला जायगा मैं 'मैकबेथ' बनूँगा और वे 'लेडी मैकबेथ' बनेंगी। मैकबेथ के कुछ सम्भाषणों को मैंने कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली के कवि-सम्मेलनों में भी सुनाया; कुछ के टेप-रिकार्ड भी बनाए गए।

इस तरह नाट्य-पाठ का आरम्भ हुआ और कभी-कभी इसमें मेरे मित्र और मेरे भूतपूर्व विद्यार्थी भी सम्मलित होते। मेरे दोनों बच्चे उन दिनों पढ़ने के लिए नैनीताल चले गए थे; और किसी और के न रहने पर भी इस प्रकार का नाट्य-पाठ हम पति-पत्नी के लिए अच्छा-ख़ासा शग़ल बन जाता। जब इन कथोपकथनों में हमें पर्याप्त स्वाभाविकता और सजीवता दिखने लगी तो हमने एक दिन (27 नवम्बर, 1957 को) अपने पचीस-तीस मित्रों और साहित्यिक-बन्धुओं के सामने नाट्य-पाठ किया। इसमें लोगों ने नाटक के सफल अभिनय की सम्भावना देखी। 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के सम्पादक ने इस पर एक टिप्पणी लिखकर हमें प्रोत्साहित किया। नई दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र के निर्देशक ने इसका रेडियो-रूपान्तर प्रसारित करने की इच्छा प्रकट की। यह लगभग तीन मास पश्चात् सम्भव हो सका, जिसमें मेरी पत्नी ने 'लेडी मैकबेथ' का पार्ट किया; श्री एफ. सी. माथुर और मैंने निर्देशन किया। इस पर पत्रों में जो टिप्पणियाँ निकलीं और कतिपय श्रोताओं ने जो रायें दीं, उनसे हमारा विश्वास दृढ़ हो गया कि यदि 'मैकबेथ' रंगमंच पर खेला गया तो सफल रहेगा।

अब तेजीजी को 'मैकबेथ' को रंगमंच पर प्रस्तुत करने की धुन सवार हुई। नाटक के प्रस्तुतकर्ता को कितना पढ़ना, कितना सोचना, कितना धन-जन-साधन जुटाना और कितना दौड़ना-धूपना पड़ता है यह वही जान सकता है जिसने कभी नाटक खेला हो। चार महीने के सम्यक् नाट्य-पाठ और छः महीने के अभ्यास (रिहर्सल) के पश्चात् हिन्दी शेक्सपियर मंच की ओर से 18, 19, 20 दिसम्बर, 1958 को नई दिल्ली के फाइन आर्ट्स थियेटर में 'मैकबेथ' रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया। पहले दिन दर्शकों में श्री जवाहरलाल नेहरू थे, अन्तिम दिन श्री पृथ्वीराज कपूर। अभिनय देखकर नेहरूजी ने कहा, 'ए रिमार्केबिल एचीवमेण्ट'— (सराहनीय सफलता)। पृथ्वीराजजी ने कहा, 'ए न्यू ऐण्ड प्रेज़वर्दी वेन्चर' (नया और सराहनीय प्रयास)।

राजधानी के अंग्रेज़ी पत्रों में हिन्दी की हर चीज़ को नीचे गिराने की प्रवृत्ति देखी जाती है, इस कारण अनुवाद और अभिनय दोनों पर जो इन पत्रों में लिखा गया उसका विशेष महत्त्व है। किसी भी कलाकृति को आदरणीय समझने का जो मापदण्ड बाबा तुलसीदास हमारे लिए छोड़ गए हैं उसे हमें न भूलना चाहिए—

'सहज बयर बिसराय रिपु जो सुनि करहिं बखान।'

'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने लिखा : 'Dr. Bachchan obviously did not mean to make his a popular version, but rather a poetic feat which not only conveyed the spirit of Shakespeare in some measure but also a piece of work of original value independent of being a good translation...This is a production by no means perfect, but yet a landmark in Delhi's amateur dramatics.'

(ज़ाहिर है कि डा. बच्चन का उद्देश्य कोई चलतू अनुवाद करना न था, बल्कि वे एक ऐसा काव्यात्मक रूपान्तर करना चाहते थे, जो न केवल किसी हद तक शेक्सपियर की मूल भावना को व्यक्त करे बल्कि अच्छा अनुवाद होने के साथ ही उसका अपना मौलिक रचनात्मक महत्त्व भी हो···यह प्रदर्शन पूर्ण तो किसी भी दृष्टि से नहीं, फिर भी दिल्ली के अव्यावसायिक रंगमंच की विशिष्ट उपलब्धि है।)

'टाइम्स आफ़ इण्डिया' ने लिखा : '···the noted Hindi poet deserves our congratulations for venturing into this field; one hopes more

translations would follow···The production is competent in many respects The costumes show painstaking and intelligent research. The settings are simple and facilitate swift action.'

(प्रख्यात हिन्दी कवि इस क्षेत्र में प्रयास करने के लिए हमारी बधाई के पात्र हैं। हमें आशा है कि और अनुवाद भी होंगे···कई दृष्टियों से यह एक समर्थ प्रदर्शन है। वेशभूषा से प्रकट है कि इस विषय में परिश्रम और बुद्धिमत्तापूर्वक खोजबीन की गई है। सेटिंग सादी है और गतिपूर्ण अभिनय करने की सुविधा प्रदान करती है।)

'स्टेट्समैन' ने लिखा : 'Macbeth in Hindi—it is easy to scoff at the very idea. The point about Prof. H. R. Bachchan's poetic translation is that it is not a thing to scoff at. It is an earnest and brave effort...The Hindi Shakespeare Manch production is elaborate with a cast of thirty. Stage and lighting are well done and much thought was bestowed on costume.'

('मैकबेथ' हिन्दी में ! इस विचार को ही हँसी में उड़ा देना आसान है। लेकिन प्रोफ़ेसर हरिवंशराय बच्चन के इस पद्यानुवाद की विशेषता यह है कि इसे हँसी में नहीं उड़ाया जा सकता। यह एक गम्भीर और साहसपूर्ण प्रयास है। हिन्दी शेक्सपियर मंच का यह प्रदर्शन शानदार है और इसमें तीस पात्रों ने काम किया है। मंच और प्रकाश-व्यवस्था अच्छी है और वेशभूषा पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।)

'मैकबेथ' के निर्देशक श्री वीरेन्द्रनारायण का सहयोग मुझे प्राप्त हो सका तो कभी मैं इस नाटक के अभिनय-पक्ष पर अलग से एक सचित्र पुस्तक प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिससे इस नाटक का अभिनय आयोजित करनेवालों को कुछ दिशा-निर्देश मिल सके। इस समय तो अनुवाद की आलोचनाओं पर ही मैं कुछ कहना चाहता हूँ। नाटक को केवल पढ़कर उसकी भाषा पर टीका-टिप्पणी करनेवालों को मैंने बहुत महत्त्व नहीं दिया। नाटक की भाषा रंगमंच पर अभिनय के साथ बोली जाने के लिए है। पुस्तक के पृष्ठों पर छपी हुई वह ऐसी ही है जैसे सूखा हुआ स्पंज। रंगमंच पर अभिनेता के मुख में वह पानी में पड़े हुए स्पंज के समान फूलती और भारी हो उठती है—रसमय और गरिमामय हो जाती है। रंगमंच पर उस भाषा को सुनकर जिन्होंने कुछ कहा-लिखा है उस पर मैंने अधिक विचार किया है।

अभिनय के बाद मैंने कुछ लोगों को कहते सुना, और ऊपर उद्धृत एक अंग्रेज़ी पत्र की टिप्पणी से भी यह ध्वनि आती है कि अनुवाद की भाषा कुछ क्लिष्ट है और साधारण जनता के लिए बोधगम्य नहीं है। इस पर मैंने विस्तार से 'ओथेलो' की भूमिका में लिखा है।

हिन्दी से सरल, सरलतर, सरलतम होने की जो माँग की जाती है, यहाँ तक कि वह बिना पढ़े-लिखे भी समझ में आ जाए, उससे मैं बहुत खुश होता हूँ। हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने की अधिकारिणी होने का इसे मैं सबसे बड़ा और सबसे सबल सबूत मानता हूँ। जन-जीवन-वातावरण में जब वह रस-बस जायगी तो यह भी सम्भव होगा। अभी हिन्दी कुछ अध्ययनज्ञान की अपेक्षा करती है। हिन्दी में सामान्य शिक्षित-दीक्षित जनता के लिए नाटक की भाषा कठिन नहीं थी। फिर हमें इसका भी ध्यान रखना होगा कि अनुवाद शेक्सपियर का किया गया है जो

संसार के महानतम कवियों में ही नहीं हैं बल्कि जिन्होंने मानव-जीवन के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म भाव-विचारों के अन्तर्द्वन्द्वों को सम्यक् रूप से वाणी दी है। इन सबको मुखरित करने के लिए कुछ विशिष्ट भाषा अनिवार्य है।

दिल्ली के एक अंग्रेज़ी दैनिक 'इंडियन एक्सप्रेस' की राय थी कि हिन्दी अनुवाद के साथ 'मैकबेथ' के पात्रों की शुद्धि भी कर देनी थी—यानी 'मैकबेथ' को कोई हिन्दू राजा बना देना था और इसी तरह अन्य पात्रों को भी; क्योंकि अंग्रेज़ों के मुँह में हिन्दी नकली और अस्वाभाविक लगती है। ऐसी धारणा अनुवाद की प्रथा और नाटक की समय-सिद्ध परम्परा के प्रति दयनीय अज्ञानता नहीं तो क्या है? कालिदास का दुष्यन्त लन्दन में अंग्रेज़ी और मास्को में रूसी बोलता है। सुना है ड्राइडन लिखित 'औरंगज़ेब' नई दिल्ली में अभिनीत होनेवाला है। औरंगज़ेब के मुँह से अंग्रेज़ी कैसी लगेगी? पूछ सकता हूँ, 'टाइमन आफ़ एथेन्स', 'जूलियस सीज़र', 'क्लियोपाट्रा', 'ओथेलो', 'हैमलेट' में किसकी भाषा अंग्रेज़ी थी? बात यह है कि अभी तो अंग्रेज़-मार्का हिन्दुस्तानियों के मुँह में हिन्दी भी नकली और अस्वाभाविक लगती है, फिर विशुद्ध अंग्रेज़ों के मुँह में हिन्दी कैसे सोहे, स्वाभाविक लगे। 'एक्सप्रेस' के प्रतिनिधि ने शायद मेरे उद्घाटन-भाषण को नहीं समझा था, क्योंकि वह हिन्दी में था (नाटक क्या समझा होगा!)। उसमें, अन्त में, मैंने नाटक की इस विश्वविख्यात परम्परा की ओर ही थोड़े कवित्वपूर्ण एवं विनोदात्मक ढंग से संकेत किया था :

'क्राइस्ट ने कहा था कि जब तक मनुष्य अपने को बच्चे-सा न बना ले, तब तक वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। स्वर्ग के राज्य के लिए यह बात कितनी सत्य है, इसे बताने के अधिकारी हम नहीं। पर इतनी बात मैं अवश्य जानता हूँ कि जब तक आप अपने को बच्चे-सा न बना लें तब तक आप कला के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

'और बच्चा बनने के लिए, कोलरिज के शब्दों में, ज़रूरी है (Willing suspension of disbelief) यानी जो कलाकार कहे उसकी सच्चाई में विश्वास करना।

'तो मैं आपसे कहता हूँ—आप इस समय यह भूल जायँ कि आप नई दिल्ली में बैठे हैं—इस समय आप स्काटलैण्ड में हैं। और आप यह भूल जायँ कि आप सन् 1958 में हैं। आप स्पुतनिक और एक्सप्लोरर के युग में नहीं हैं, आप उस युग में हैं जिसमें डाइनें जल-थल और नभमण्डल में विचरण करती हैं। आप 11वीं सदी में हैं। और हाँ, उस समय स्काटलैण्ड की मातृभाषा, और राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी थी। अगर आपको इन बातों पर विश्वास है तो कला के राज्य का द्वार आपके लिए खुलता है!'

जब 'मैकबेथ' रंगमंच पर खेला गया तब वह शेक्सपियर का ही सर्वप्रथम पद्यबद्ध नाटक नहीं था जो रंगमंच पर आया, बल्कि हिन्दी का भी। परम्परा के अभाव में, अनुवाद करते समय मेरी, और अभ्यास के समय अभिनेताओं की, सबसे बड़ी कठिनता थी—हिन्दी अतुकान्त छन्द (ब्लैंक वर्स) की लय को कायम रखते हुए सम्भाषणों की स्वाभाविकता को बनाए रखना। इसमें हमें कितनी सफलता मिली इसका सबूत इससे मिलता है कि शायद ही दर्शकों में किसी ने जाना कि मंच पर पद्य बोला जा रहा है। 'नवभारत टाइम्स' ने अपनी टिप्पणी के दौरान में तीन बार लिखा कि नाटक का अनुवाद 'गद्य-काव्य' में किया गया है। इस ग़लती ने भी, (अनुवाद गद्य-काव्य में न होकर अतुकान्त छन्द में है) मुझे सन्तोष ही दिया

क्योंकि कवित्व के साथ प्रवाह की स्वाभाविकता और स्वाभाविकता के साथ कवित्व की भावमयता ने ही ऐसी भूल करने को प्रेरित किया होगा। और, अनुवाद और अभिनय में इन्हीं दोनों बातों को साथ रखने का प्रयास किया गया था।

नाट्य-पाठ और अभ्यास के दौरान सम्भाषण सैकड़ों बार बोले गए और उन्हें परिस्थिति, पात्र और भाव के अधिक अनुरूप बनाने और श्रोता एवं दर्शकों पर उनसे वांछित प्रभाव उत्पन्न करने के ध्येय से उन्हें कई जगह बदलने की आवश्यकता पड़ी, कहीं-कहीं उन्हें उच्चारण-सुलभ बनाने की दृष्टि से भी। ऐसे सब संशोधन नये संस्करण में कर दिए गए हैं। मेरा विश्वास तो यही है कि इनके कारण अनुवाद में अधिक निखार आ गया है। ऐसे परिवर्तनों का ब्यौरा देना मैंने ज़रूरी नहीं समझा; जो लोग इन संशोधनों का अध्ययन अधिक निकटता से करना चाहें वे दोनों संस्करणों की तुलना कर सकते हैं। कल्पनाप्रवण पाठकों के लिए परिवर्तनों का कारण समझना कठिन न होगा। शेक्सपियर के नाटकों में मंच-निर्देशन बहुत कम है। इस संस्करण में अभिनय के अनुभवों से कुछ मंच-निर्देशन बढ़ा दिए गए हैं जो नाटक को अभिनीत करानेवालों के लिए सुविधाजनक सिद्ध होंगे।

यों तो नाटक को पुस्तक-रूप में पढ़ने का भी एक आनन्द है और बहुत-से लोगों ने इस नाटक को भी पुस्तक-रूप में ही पढ़ा है। सम्भवतः आगे भी पढ़ेंगे। जहाँ एकाकी पाठक हो वहाँ भी मैं चाहूँगा कि यह नाटक सस्वर पढ़ा जाय। आगे चलकर सम्भाषणों को भावपूर्ण ढंग से पढ़ा जा सकता है अर्थात् पात्र, परिस्थिति और भावना में पूर्णतया डूबकर। एकाधिक लोग एकत्र हो सकें तो नाट्य-पाठ किया जाना चाहिए, एक-एक व्यक्ति एक-एक पात्र का अंश बोले। आगे चलकर इसी को अभिनय-पाठ में बदला जा सकता है। नाट्य-पाठ और अभिनय-पाठ के अन्तर को समझ लेना होगा। नाट्य-पाठ में लोग एक जगह बैठकर भी पाठ कर सकते हैं। अभिनय-पाठ में सम्भाषणों के साथ गति-मुद्रा का भी योग दिया जा सकता है। मैंने केम्ब्रिज में ऐसे प्रदर्शन देखे हैं जिनमें विद्यार्थी बिना किसी रंगमंच के साधारण से कमरे में, रोज़मर्रा की पोशाक पहने हुए, किसी नाटक का अभिनय करते हैं।

नाटक सामाजिक कला है। बहुत लोगों के सहयोग से नाटक का रूप निखरता है और उसका प्रभाव पड़ता है। अभिनय-पाठ की प्रथा हिन्दी में चलाने का मेरा बड़ा आग्रह है। एक नाटक का अभिनय करके मैंने देखा है कि इस काम के लिए जितने खर्च की आवश्यकता होती है उसको जुटाना बड़े-बड़े नगरों में भी सरल नहीं है। नाटक तैयार भी हो गया तो नाटक-दर्शकों की इतनी संख्या नहीं होती कि तैयारी में लगाया खर्च निकल सके। अगर अच्छे अभिनय-पाठ का विकास हो जाए तो बिना लम्बे-चौड़े ख़र्च के हम नाटकों का आनन्द ले सकते हैं। स्वस्थ यही है कि नाटक के आनन्द का मुख्य भाग नाटक के आन्तरिक गुणों से आए; बाह्य उपकरणों से, अनुपात में बहुत कम। इसके यह अर्थ नहीं हैं कि मंच-वेशभूषा-संयुक्त अभिनय की कोई महत्ता नहीं। जहाँ इस प्रकार के साधन एकत्र हो सकें वहाँ परिपूर्ण अभिनय की योजना की जा सकती है। जहाँ नहीं हो सकती वहाँ नाटकों से एकदम विरक्त होने की विवशता नहीं अनुभव की जानी चाहिए। वहाँ नाटक-पाठ अथवा अभिनय-पाठ द्वारा नाटक की परम्परा अथवा आत्मा को सचेत-सजग बनाए रखा जा सकता है।

आपके हाथों में 'मैकबेथ' के रूप में एक ऐसा नाटक है जो कथोपकथन और

अभिनय दोनों की दृष्टि से जाँचा-परखा है। मैं अब भी यह नहीं कहता कि यह अपना अन्तिम रूप प्राप्त कर चुका। सम्भव है, नये नाट्य-पाठ अथवा अभिनय-पाठ से उसके कुछ और सुधार की बातें सूझें। इस दिशा में जो लोग मुझे कुछ भी सहायता दे सकेंगे उनका मैं आभारी हूँगा। 'मैकबेथ' के इस अनुवाद से आपको कुछ रस मिला हो तो आप 'ओथेलो' को भी अपने पाठ्य-प्रयोग में सम्मिलित करें। 'ओथेलो' का नाट्य-पाठ कई बार हो चुका है; उसका रेडियो-रूपान्तर भी दो बार नई दिल्ली से प्रसारित हो चुका है। उसे रंगमंच की परीक्षा से भी गुज़रना है। हम तैयारी में हैं। अभिनय के पूर्व 'ओथेलो' के सम्बन्ध में अपने अनुभव के बल पर आप कुछ सुझाव भेज सकें तो हमारे काम का होगा। आपको मेरे अनुवादों में रुचि हो तो इस सूचना से आपको प्रसन्नता होगी कि मैंने 'हैमलेट' का अनुवाद हिन्दी ब्लैंक वर्स में 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' की पद्धति पर आरम्भ कर दिया है, जो यथा-समय आपके हाथों में पहुँचेगा।

इस संस्करण में 'मैकबेथ' के प्रथम अभिनय में उसके पात्रों की भूमिका में उतरनेवाले व्यक्तियों तथा सम्बद्ध सहायकों के नाम अलग दिए जा रहे हैं। प्रथम अभिनय के कुछ चित्र भी दिए जा रहे हैं जो यथा-प्रसंग पुस्तक में मिलेंगे। इनसे हमारे सेट और वेश-सज्जा का भी सम्भवतः कुछ अनुमान पाठकों को हो सकेगा। अभिनय-सम्बन्धी मेरी पुस्तक के लिए तो शायद अभी कुछ दिन प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

13, विलिंगडन क्रिसेण्ट
नयी दिल्ली-11
25 अगस्त, 1960

बच्चन

श्री जवाहरलाल नेहरू को

आदरणीय,

आपने मुझे जिस प्रकार के कार्य के लिए अपने निकट बुलाया था, अपने कलाकार के मानों में, उसी का एक परिष्कृत स्वरूप आज आपके सामने रख रहा हूँ। काम के समय अपने पैर ज़मीन पर जमाए हुए भी, अवकाश के समय आकाश में अपने डैने फैलाने का जो प्रयास मैंने किया है, आशा है, उसे आप थोड़े कौतूहल और बहुत सहानुभूति के साथ देखेंगे।

विदेश मन्त्रालय, नयी दिल्ली। आपका

14-11-56 बच्चन

नाटक के पात्र

पात्र	परिचय
डंकन	स्काटलैण्ड का राजा
मैलकम, डोनलबेन	डंकन के बेटे
मैकबेथ, बैंको	डंकन के सेनापति
मैकडफ़, लेनाक्स, रास, मेनटेथ, ऐंगस, कैटनस	स्काटलैण्ड के सरदार
फ़्लिएंस	बैंको का बेटा
पिता सिवर्ड	नार्दबरलैण्ड का सरदार, अंग्रेज़ी फ़ौज का सेनापति
पुत्र सिवर्ड	सिवर्ड का बेटा
सीटन	मैकबेथ की सेवा में रहनेवाला एक अफ़सर
छोटा लड़का	मैकडफ़ का बेटा
एक अंग्रेज़ डाक्टर	
एक स्काच डाक्टर	
एक सारजेण्ट	
एक दरबान	
एक बूढ़ा आदमी	
लेडी मैकबेथ	
लेडी मैकडफ़	
परिचारिका	लेडी मैकबेथ की सेवा में रहनेवाली
मसानी देवी और तीन डाइनें	

सरदार, नागरिक, अफ़सर, सैनिक, हत्यारे, सेवक और दूत
बैंको का प्रेत और दूसरी छायाएँ।

'मैकबेथ' का प्रथम अभिनय

पात्र-परिचय

पुरुष

डंकन	इस्लामुद्दीन
मैलकम	दर्शन बेदी

डोनलबेन	सोमनाथ नागर
मैकबेथ	अशोक रामपाल
बैंको	गोपाल कौल
मैकडफ़	चन्द्रदत्त पाण्डे
लेनाक्स	विमलेन्दु श्रीवास्तव
रास	कृष्णनाथ शिवनाथ मेहता
ऐंगस	विश्वनाथ मलहोत्रा
अन्य सरदार तथा सैनिक	गौरीशंकर गौर, सोमनाथ, मानकचन्द सेठी
फ्लिएंस	शान्तिस्वरूप कालरा
पिता सिवर्ड	अब्दुल मजीद
पुत्र सिवर्ड	रमेश खन्ना
सीटन	रमेश चौहान
पुत्र मैकडफ़	अनिल सहगल
स्काच डाक्टर	चन्द्रप्रकाश गुप्त
दरबान	राजेश्वरनाथ
दो हत्यारे	धर्मप्रकाश जैन, मोहन पाराशर
सेवक तथा सन्देशवाहक	जगदीशचन्द्र पाण्डे, मामचन्द, सतीशचन्द्र गुप्त

स्त्री

लेडी मैकबेथ	तेजी बच्चन
लेडी मैकडफ़	सुखवर्षा पण्डित
परिचारिका	सुखवर्षा पण्डित
तीन डाइनें	चाँदनारायण, अजित बिन्दल, तिलकराज मेहता

सम्बद्ध सहायक

प्रस्तुतकर्त्री	तेजी बच्चन
निर्देशक	वीरेन्द्र नारायण
रंगमंच प्रबन्धक	लेनिन पन्त
सेट	वीरेन्द्र नारायण
प्रकाश	लेनिन पन्त
वेश-भूषा	प्रमिला राय (राय ब्रदर्स)
रूप-सज्जा	वीरेन्द्र नारायण, अशोक श्रीवास्तव
अन्य सहायता	ओंकारनाथ श्रीवास्तव, अजितकुमार, दर्शन बेदी, विश्वनाथ मलहोत्रा, जगदीशचन्द्र पाण्डे बिशन घुपड़
व्यवस्था	कुँवर चौधरी



पहला अंक

पहला दृश्य

खुली जगह

(बादल गरज रहा है; बिजली चमक रही है; तीन डाइनें आती हैं।)

पहली डाइन : कब जुटतीं फिर तीनों हम—
आँधी में, या पानी में, या
बिजली चमके जब चम-चम ?

दूसरी डाइन : हल्ला-गुल्ला जब हो बन्द,
शोर - शड़प्पा हारे - जीते
रण का जब पड़ जाये मन्द ।

तीसरी डाइन : ख़त्म लड़ाई होगी त्योंही,
ज्योंही होगा दिन का अन्त ।

पहली डाइन : जगह बताओ।

दूसरी डाइन : अरे वही जो
पच्छिम-पूरब का ऊसर।

तीसरी डाइन : वहीं मिलेगा मैकबेथ हमको,
ऐसा शूर नहीं भू पर।

(नेपथ्य में बिल्ली की आवाज़)

पहली डाइन : बिल्लो मुझे बुलाती;—आई !

(नेपथ्य में मेढक की आवाज़)

सब डाइनें : मेढक ने भी टेर लगाई !
बुरा वही है, जो अच्छा है;
जो अच्छा है, वही बुरा :
चक्कर मारो, उड़ो हवा में
बदबू हो, या हो कुहरा !

[सब बाहर जाती है

दूसरा दृश्य

फ़ारेस के निकट का खेमा

(नेपथ्य में युद्ध का बाजा बजता है। एक ओर से महाराज डंकन, मैलकम, डोनलबेन, लेनाक्स और नौकर-चाकर आते हैं; दूसरी ओर से एक घायल सारजेंट आता है।)

डंकन : यह घायल आदमी कौन है ? इसकी हालत
से लगता है, हमें युद्ध की ताज़ी खबरें
दे सकता है।

मैलकम : श्रीमन्, यह वह सारजेंट जो
अच्छे-सधे सिपाही-सा लड़ता दुश्मन के
हाथों में पड़ने से मुझे बचा लाया था।
मेरे वीर मित्र, बतलाओ महाराज को,
रण की हालत क्या थी, जब तुम चले वहाँ से।

सारजेंट : श्रीमन्, दुबधे की हालत थी; ऐसी, जैसे
दो तैराक, थके, आपस में गुथे हुए हों,
एक-दूसरे के कर-बस को कुण्ठित करते।
निर्दय मैकडनवाल्ड (बाग़ियों में बढ़-चढ़कर,
जिसमें दुनिया के सब दुर्गुण कूट-कूटकर
भरे हुए हैं) लाया है पच्छिमी द्वीप से
घुड़सवार, पैदल सिपाहियों का दल रण में;
उनका कौशल देख लगा पल भर को जैसे
जीत उसी की क़िस्मत में है : लेकिन किसका
भाग्य रहा थिर ? आख़िर को कमज़ोर पड़े वे;
महाबली मैकबेथ—उसका यह उचित विशेषण—
ले नंगी तलवार, शत्रुदल के शोणित की
प्यास मचलती थी जिसकी जिह्वा में, करता
हुआ अवज्ञा भावी की आगे बढ़ आया,
खड़ा हो गया नर पिशाच के सम्मुख ऐसे,
जैसे उसका बनकर काल कराल खड़ा हो;
उसे न आगे बढ़ने दिया, न पीछे हटने
और अचानक सीना उसका चाक कर दिया,
नाभी से ले हलक़ तलक, बस एक वार में,
शीश काटकर टाँग दिया खेमों के आगे।

डंकन : धन्य बन्धु तुम ! धन्य तुम्हारा है बल-विक्रम।

सारजेंट : किन्तु जहाँ से रवि छिटकाता छवि की किरणें,
ठीक वहीं से उठते हैं तूफ़ान भयंकर
जिनमें पड़कर नौकाएँ डूबा करती हैं।
जिस निर्झर से शान्ति उतरती जान पड़ी थी,
उससे ही सहसा अशान्ति की बाढ़ आ गई।

स्काटलैण्ड के नाथ, देखिए क्या होता है :
ज्योंही बल ने धारण कर तलवार न्याय की
समर-भूमि से दुश्मन-दल के पाँव उखाड़े,
त्योंही मौक़ा देख, नारवे के राजा ने
नये अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित नई फ़ौज ले
हम पर धावा बोल दिया फिर।

डंकन : डरे नहीं इस
घटना से मेरे सेनापति—मैकबेथ, बैंको ?

सारजेंट : गौरैयों से गरुड़, स्यार से सिंह डरेगा !
अगर कहूँ सच, कहना होगा, वे थे ऐसी
तोपों से जिनमें दुगुनी बारुद भरी हो;
उन दोनों ने
लौटाया हर वार शत्रु का दूना और
चौगुना करके : यह लगता था, वे दुश्मन को
उसके घावों के लहू में बिना डुबोए
नहीं रहेंगे; यह समरांगण को कर देंगे
मरघट, जैसा था गलगोथा* किसी समय में !
और नहीं बोला जाता है—
सिर चकराता है, मेरे घावों की मरहम-
पट्टी जल्दी करने की आवश्यकता है।

डंकन : तुझे सोहते हैं ये तेरे शब्द, घाव भी;
गौरव टपक रहा दोनों से—ले जा इसको
सरजन को दिखलाओ।

[**नौकर सारजेंट को बाहर ले जाते हैं**

(**रास आता है**)

कौन चला आता है ?

मैलकम : महाराज, यह रास प्रान्त के योग्य राव हैं।

लेनाक्स : आँखों में कितनी घबराहट भरी हुई है !
लगता है, कुछ नई ख़बर लेकर आए हैं।

रास : महाराज की जय हो !

डंकन : राव कहाँ से आए ?

रास : महाराज, फ़ाइफ़ से, जहाँ नारवी झण्डे
आसमान में पंखे-से लहरा-लहराकर
थके हमारे दल को ठण्डक पहुँचाते हैं।
राव कावडर का जो है विश्वास-विघाती,
राजद्रोही, उसकी पाकर मदद नारवे
के राजा ने अपनी भारी सेना लेकर

---

*वह स्थान, जहाँ ईसामसीह को सलीब पर लटकाया गया था; कहा जाता है, यह नरमुण्डों से पटा था।

घमासान संग्राम अचानक छेड़ दिया था :
पर मैकबेथ, बख़्तर से सज्जित और सुरक्षित
बढ़ा सामना करने को ऐसे, जैसे हो
साक्षात वह रणचण्डी का पति पराक्रमी;
हुआ जोड़ का युद्ध, पैंतरे चले बराबर,
हुए वार पर वार, तोड़ दी, पर, मैकबेथ ने
बढ़ी हुई सब हिम्मत उसकी, और अन्त में
विजय हमारी हुई;—

डंकन : बड़ा आनन्द हुआ यह !

रास : और नारवे का राजा, स्वेनो, अब करता
सन्धि-प्रार्थना; किन्तु उसे हम तब तक अपने
मरे सिपाही नहीं गाड़ने देंगे, जब तक
दस हज़ार डालर वह हमको हरज़ाने में
नहीं चुकाता सेंट कालमे के टापू पर।

डंकन : मेरी मंशा के खिलाफ़ कावडर-प्रान्तपति
फिर न चलेगा, फिर न करेगा धोखेबाज़ी।—
अभी उसे जाकर फाँसी की सज़ा सुनाओ,
उसके पद पर विजयी मैकबेथ को बिठलाओ।

रास : होगा, जैसा महाराज ने हुक्म सुनाया।

[बाहर जाता है

डंकन : उसने जो खोया, नरवर मैकबेथ ने पाया।

[सब बाहर जाते हैं

तीसरा दृश्य

ऊसर

(बादल गरजता है : तीन डाइनें आती हैं।)

पहली डाइन : बहिन, कहाँ थी ?

दूसरी डाइन : सुअर मारती।

तीसरी डाइन : बहिन, कहाँ तू ?

पहली डाइन : कोंछ भरे अखरोट एक माँझी की पत्नी
चला रही थी लगातार अपना मुँह : मैंने
कहा, 'मुझे दे' :—पर यह जूठनखानी, कोढ़िन
झिड़क देकर कहती है, 'हट दूर यहाँ से !'
उसका पति 'टइगर*' जहाज़ से गया अलप्पो।

*टइगर—चीता, यहाँ जहाज़ का नाम।

पर मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी
छेद-भरी चलनी में तिरती,
बेदुम के चूहे-सी फिरती;
पहुँचूँगी-पहुँचूँगी, निश्चय।

दूसरी डाइन : एक हवा का झोंका तुझको मैं देती हूँ।

पहली डाइन : बड़ी कृपा है।

तीसरी डाइन : और दूसरा मैं देती हूँ।

पहली डाइन : बाकी और हवा के झोंके मेरे पास;
बन्दरगाह उड़ा देंगे ये झंझावात :
जितने भी हैं दिए दिशाओं के संकेत
माँझी के नक्शे पर, सब हैं इनको ज्ञात।
उसे सुखाऊँगी मैं जैसे सूखी घास :
नींद नहीं फटकेगी, दिन हो, चाहे रात,
उसके ढेलों को ढकती पलकों के पास;
इतना भारी होगा उसके सिर पर शाप,
नौ नौ गुन की सात गुनी कर जितनी रात,
घुल-घुल हड्डी-हड्डी होगा भरता आह :
जल में उसका पोत नहीं पाएगा डूब,
पर खाएगा झंझा के झकझोरे खूब।
देख ज़रा, क्या मेरे पास।

दूसरी डाइन : दिखला, दिखला।

पहली डाइन : माँझी का मैं एक अँगूठा लाई तोड़,
बढ़ा चला आता था जब वह घर की ओर।

(नेपथ्य में ढोल की आवाज़)

तीसरी डाइन : ढोल ढमाढम, ढमढम, शोर!
मैकबेथ आता है इस ओर।

सब डाइनें : डाइन—डाइन पकड़ें हाथ,
जल में, थल में, नभ-मण्डल में
विचरण करनेवाली साथ,
फिर-फिर घूमें गोलाकार :

पहली डाइन : मेरे तीन,

दूसरी डाइन : तीन अब मेरे,

तीसरी डाइन : तीन हुए फिर, सब नौ फेरे।

सब डाइनें : बस!—अब जादू है तैयार।

(मैकबेथ और बैंको आते हैं।)

मैकबेथ : इतना अच्छा और बुरा दिन कभी न देखा।

बैंको : फ़ारेस कितनी दूर यहाँ से?—कौन खड़ीं ये?—
इनके सूखे बदन, अनूठे वसन देखकर
लगता है ये नहीं भूमि पर बसनेवाली,
फिर भी ये धरती पर। **(डाइनों से)**

क्या तुम जीवनधारी ?
हम कुछ प्रश्न करें तो क्या तुम उत्तर दोगी ?

[**डाइनें अपनी उँगलियाँ अपने होठों पर रखती हैं**

तुम सब झुर्रीदार उँगलियाँ अपने चिमड़े
होठों पर रखती हो, इससे लगता मेरी
बात समझती हो : निश्चय ही तुम नारी हो
फिर भी देख तुम्हारी दाढ़ी, ऐसा कहने
में संकोच मुझे होता है ।

मैकबेथ : बोल सको तो बोलो, क्या हो ?

पहली डाइन : सबका अभिवादन मैकबेथ को ! अभिवादन
तुमको ग्लेमिस के राव !

दूसरी डाइन : सबका अभिवादन मैकबेथ को ! अभिवादन है
तुझे, कावडर-नाथ !

तीसरी डाइन : सबका अभिवादन मैकबेथ को ! आगे चलकर
जिसे मिलेगा राज !

[**इसे सुनकर मैकबेथ चौंक उठता है**

बैंको : श्रीमन्, चौंक उठे क्यों, इन बातों से डरते
जो सुनने में इतनी मीठी ? (**डाइनों से**)
सच-सच बोलो,
तुम छलना हो, या कि ठीक जैसी बाहर से
दीख रही हो ? मेरे भाग्यवान साथी का
तुम अभिवादन करतीं उसके वर्तमान पद,
आगामी सम्पद, भविष्य में राजभोग की
आशा से भी, जिसके कारण वह अपने में
खोया-सा है : मुझसे तुम क्यों नहीं बोलतीं ?
अगर काल के अन्तराल में पैठ तुम्हारी,
और जान सकती हो दाना कौन उगेगा,
कौन सूख जाएगा, तो कुछ मुझे बताओ;
गो तुम करके कृपा बना दोगी क्या मेरा,
और घृणा करके बिगाड़ ही क्या पाओगी !

पहली डाइन : अभिवादन !

दूसरी डाइन : अभिवादन !

तीसरी डाइन : अभिवादन !

पहली डाइन : घटकर मैकबेथ से औ' उससे बढ़कर भी ।

दूसरी डाइन : इतना सुखी नहीं, पर उससे अधिक सुखी ।

तीसरी डाइन : तू न करे, पर राज करेंगे तेरे वंशज ही :
सबका अभिवादन मैकबेथ औ' बैंको, दोनों का !

पहली डाइन : मैकबेथ औ' बैंको, दोनों को सबका अभिवादन !

[**डाइनें जाने लगती हैं**

मैकबेथ : ठहरो, ओ अटपट वक्ताओ, और बताओ ।

सैनेल* के मरने से ग्लेमिस-राव बना मैं;
किन्तु कावडर-पति मैं कैसे ? राव वहाँ का
जीवित, जाग्रत; औ' राजा होना आशा की
हद से इतना बाहर जितना राव कावडर
का हो जाना । बतलाओ तो तुम्हें कहाँ से,
कैसे अद्‌भुत ज्ञान हुआ यह ? क्यों इस उजड़े
ऊसर में तुम राह रोककर यह भविष्य वाणी
करती हो ?—सुनती हो, मैं क्या कहता हूँ ?

[**डाइनें ग़ायब हो जाती हैं**

बैंको : मिट्टी में बुल्ले उठते जैसे पानी में,
ऐसी थीं ये—कहाँ हो गईं तीनों ग़ायब ?

मैकबेथ : अन्तरिक्ष में; जो सदेह लगती थीं घुलकर
साँस की तरह मिलीं हवा में—यदि वे रुकतीं !

बैंको : हम जिनकी बातें करतें हैं, क्या सचमुच थीं,
या हम कोई जड़ी, नशीली, खा बैठे हैं,
जिससे तर्क-बुद्धि कुण्ठित हो जाया करती ?

मैकबेथ : पुत्र तुम्हारे राजा होंगे ।

बैंको : लेकिन तुम खुद ।

मैकबेथ : राव कावडर का भी; ऐसा ही न कहा था ?

बैंको : ठीक इसी लब-लहजे में । यह कौन आ गया ?

(रास और ऐंगस आते हैं ।)

रास : खबर, जीत की, पाकर, मैकबेथ, महाराज को
बड़ी खुशी है; जब वे सुनते हैं इस रण में
तुमने कितनी बहादुरी-हिम्मत दिखलाई,
तब वे समझ नहीं पाते हैं इस पर अपना
अचरज प्रकट करें, या सुयश तुम्हारा गाएँ ।
इस दुविधा में, उस दिन के युद्धस्थल की जब
मौन कल्पना वे करते, तब तुम्हें देखते
विकट नारवी सेना दल में डटे अकम्पित
पल-पल रचते महामरण के रूप भयंकर ।
तरपर जैसे ओले गिरते, खबरें आईं,
महाराज तक पहुँची; सब में मातृभूमि की
रक्षा में जो तत्परता तुमने दिखलाई
उसकी बड़ी बड़ाई की थी ।

ऐंगस : हम आए हैं
महाराज का धन्यवाद तुम तक पहुँचाने,
केवल उनके आगे तुम्हें लिवा चलने को,
नहीं इनाम तुम्हें देने को ।

---

*मैकबेथ का पिता

रास : कोई बड़ा मान तुमको मिलनेवाला है;
उसकी तैयारी में समझो, मुझे उन्होंने
आज्ञा दी है, राव कावडर का मैं तुमको
घोषित कर दूँ : ग्रहण करो अपने इस पद को;
तुम इसके सर्वथा योग्य हो, तुम्हें बधाई।

बैंको : (अपने आप)
क्या जो कहा डाइनों ने वह सच ही होगा ?

मैकबेथ : राव कावडर का जीवित है : उसका जामा
क्यों तुम मुझको पहनाते हो ?

ऐंगस : राव कावडर
का अब भी जीवित है; लेकिन न्याय-खड्ग उसकी
गर्दन पर लटक रहा है, जो कि गिरेगा
उस पर निश्चय। मुझे नहीं मालूम, नारवे
के राजा का उसने साथ दिया, या अपनी
सेनाओं से छिपे-छिपे विद्रोही दल को
सहायता दी, या दोनों बातें कीं, कुछ हो,
देश-तबाही करने में वह लगा हुआ था।
राजद्रोह का अपराधी वह सिद्ध हो चुका;
उसने स्वयं क़बूल किया है औ' अब उसका
अन्त निकट है।

मैकबेथ : (अपने-आप) ग्लेमिस, और कावडर-पति मैं :
सबसे बड़ा मान आगे है। (**रास-ऐंगस से**)
कष्ट के लिए
आभारी हूँ। (**बैंको से**)—
क्या अब तुम्हें नहीं आशा है,
पुत्र तुम्हारे राज करेंगे क्योंकि, जिन्होंने
मुझको दिया कावडर का पद, उनको राजा
बनवाने का वचन दिया है ?

बैंको : उनके ऊपर
यदि इतना विश्वास तुम्हें तो, राव कावडर
का होना क्या, राज-ताज के लिए तुम्हारी
साध बढ़ेगी। बड़ी अनोखी बात हुई यह :
अन्धकार की ये प्रतिमाएँ, अक्सर हमें हानि
पहुँचाने की मंशा से, छोटी बातों
में सच कहकर, मन को मोहित कर लेती हैं,
पर मतलब के बड़े काम में धोखा देतीं।
(**रास-ऐंगस से**)—
एक बात, बन्धुओ। (**उन्हें एक तरफ़ ले जाता है।**)

मैकबेथ : (अपने आप) सत्य दो कहे गए जो,
वे मानो मंगलाचरण हैं राज-भोग के
महाकाव्य के। (**रास-ऐंगस से**)—
धन्यवाद है तुम्हें, सज्जनो।

(फिर अपने आप)—
पराप्रकृति का यह उद्‌बोधन बुरा नहीं हो
सकता; और नहीं अच्छा भी—अगर बुरा है,
क्यों आरम्भ सत्य से करके इसने मुझे
सफलता का विश्वास दिलाया ? अब मैं राव
कावडर का हूँ : यदि अच्छा है, तो क्यों झुकता
उस विचार की ओर कि जिसके घृणित रूप से
तन के रोम खड़े होते हैं, औ' दृढ़ छाती,
पसली की हड्डियाँ हिलाती धड़क रही है,
जैसा कभी नहीं होता था ? सम्मुख आए
भय से उसकी मनःकल्पना भीषण होती।
हत्या का विचार, जो अब तक सिर्फ़ ख़ब्त ही
मेरे मन का, मुझको कम्पित कर ऐसा
जर्जरित बनाता, जैसे मेरी कार्यशक्ति सब
मंसूबे-मंसूबे में ही खत्म हो गई,
और शून्य के सिवा मुझे कुछ नहीं सूझता।

बैंको : **(रास-ऐंगस से)** मेरा साथी कैसा अपने में खोया है !

मैकबेथ : **(अपने आप)** अगर भाग्य को मुझे बनाना होगा राजा,
भाग्य शीश पर मेरे लाकर ताज धरेगा,
उसकी खातिर मैं न उठाऊँ उँगली तो भी।

बैंको : **(रास-ऐंगस से)** उसे नया पद नये सिले जामे-सा कसता;
कुछ दिन पहने जाने पर वह ठीक लगेगा।

मैकबेथ : **(अपने आप)** होनी हो सो हो, चिन्ता से क्या पाना है,
कठिन से कठिन घड़ियों को भी कट जाना है।

बैंको : नरवर मैकबेथ, हमें तुम्हारा इन्तज़ार है।

मैकबेथ : क्षमा करो मुझको : मेरी धुँधली सुधि में कुछ
भूली बातें उभर उठी थीं। **(रास-ऐंगस से)**—
महानुभावो,
मेरी खातिर जो तुमने यह कष्ट उठाया,
वह मेरे मानस-पट के ऊपर अंकित है,
जिसे खोलकर हर दिन उसका पाठ करूँगा।
महाराज के पास चलें अब। **(बैंको से)**—ज़रा सोचना
उस पर जो कुछ आज हुआ है, वक़्त मिले तो
उसे तोलना, हम फ़ुरसत से इस पर खुलकर
बात करेंगे।

बैंको : बड़ी खुशी से।

मैकबेथ : इतना काफ़ी
है तब तक को।—**(रास-ऐंगस से)**—आओ, मित्रो।

[सब बाहर जाते हैं

चौथा दृश्य

फ़ारेस—महल का कमरा

(तुरही बजती है। महाराज डंकन, मैलकम, डोनलबेन, लेनाक्स और नौकर-चाकर आते हैं।)

डंकन : प्राण-दण्ड मिल चुका कावडर को ? क्या हाकिम
नहीं अभी तक वापस आए ?

मैलकम : श्रीमन्, वे तो
अभी नहीं वापस आए हैं, लेकिन मुझसे
एक मिला जिसने उसको मरते देखा था :
वह कहता था, उसने बड़े खुले शब्दों में
राजद्रोह का अपने को अपराधी माना,
महाराज के क्षमादान की भिक्षा माँगी,
औ' फिर पश्चात्ताप किया वाणी से, मन से।
उसने जितनी खूबी से अपना तन छोड़ा,
उतनी खूबी से जीवन में कुछ न किया था :
उसने त्यागी देह, मरण का जैसे उसने
सबक़ सीख रक्खा हो, त्यागे प्राण परम प्रिय,
जैसे कोई घर का कूड़ा फेंक रहा हो।

डंकन : कोई विद्या नहीं कि जिससे कोई जाने
मुँह से मन की : वह ऐसा सज्जन था जिस पर
मुझे पूर्ण विश्वास कभी था—

(मैकबेथ, बैंको, रास और ऐंगस आते हैं।)

नरवर भाई !
मैं तो अब भी कृतघ्नता के पाप भार से
दबा हुआ हूँ। इतने आगे बढ़े हुए उप-
कार तुम्हारे, पुरस्कार मेरे कितना ही
पर मारें, उनके पीछे ही रह जाते हैं :
काश तुम्हारी नेकी कम होती, जिससे मैं
धन्यवाद-प्रतिदान बराबर का दे पाता
मेरे पास यही कहने को बचा हुआ है,
तुम उससे भी ज़्यादा पाने के अधिकारी,
जितना दे सकने की सारी शक्ति हमारी।

मैकबेथ : मेरी सेवा-भक्ति राजऋण, जिसे समर्पित
करना, केवल उसे चुकाना। महाराज का
काम, हमारी सेवाएँ लें; और हमारा
काम, आपके सिंहासन, शासन-सम्पद को,
सन्तानों को, सामन्तों को अपनी सेवा
अर्पित करना; जिसके द्वारा हम अपना
कर्तव्य निभाते, औ' हम जो कुछ भी करते हैं,

एक आपके प्रति आदर के, और प्रेम के
शुद्ध भाव से।

डंकन : वारम्बार तुम्हारा स्वागत :
मूल तुम्हारे वैभव का मैं लगा रहा हूँ,
यत्न करूँगा जिससे पूरी तरह बढ़े वह।—
और, बहादुर बैंको, तुमने किया नहीं कम,
काम तुम्हारा नहीं किसी से छिपा हुआ है,
आओ, तुमसे गले मिलूँ मैं और हृदय से
तुम्हें लगाऊँ।

बैंको : अगर वहाँ पर मैं बढ़ता हूँ
तो फल पर अधिकार आपका।

डंकन : मेरे मन का
सुख-समुद्र बढ़ और उमँड़ आँसू की बूँदों
में छिप जाने को आतुर है।—मेरे पुत्रो,
बन्धु-बान्धवो, सामन्तो औ' नातेदारो,
तुम्हें विदित हो, हम अपना युवराज बनाते
हैं मैलकम को, जो कि हमारा बड़ा पुत्र है;
कंबरलैण्ड-कुमार उसे मैं घोषित करता :

[**मैलकम सामने घुटनों के बल झुकता है और डंकन उसके दोनों कन्धे तलवार से छूता है।**

औ, उसके इस पद के पाने के अवसर पर
चिह्न मान के, जैसे तमग़े दिए जायँगे
उन सबको जो अधिकारी हैं।—चलो यहाँ से
सब इनवरनेस, और वहीं हम खुशी मनाएँ।

सब : कंबरलैण्ड-कुमार की जय !
कंबरलैण्ड-कुमार की जय !
कंबरलैण्ड-कुमार की जय !

मैकबेथ : जो सेवाएँ नहीं आपको अर्पित होतीं,
केवल श्रम हैं : पूर्व आपके पहुँच, आपके
शुभागमन का समाचार मैं खुद पत्नी को
दूँगा, जिससे वह खुश होगी; इस कारण मैं
विनम्रता से विदा माँगता।

डंकन : योग्य कावडर !

मैकबेथ : (**अलग**) कंबरलैण्ड-कुमार !—एक दीवार मार्ग में,
जिसे फाँदकर अगर नहीं मैं निकल गया तो
उससे टक्कर खाकर नीचे गिर जाऊँगा।
तारो, अपनी आग छिपा लो, जिससे मेरे
काले, गहरे मंसूबे को ज्योति न देखे;
आँख न झपके हाथ देख; होने दो फिर भी,
हो जाने पर जिसे देखकर आँख सहमती।

[**बाहर जाता है**

(इस बीच बैंको तथा अन्य सरदार मैकबेथ की वीरता की चर्चा करते रहते हैं।)

डंकन : सच है, सज्जन बैंको : मैकबेथ बड़ा बली है,
उसके यश की चर्चा मुझको बहुत सुहाती;
वह मुझको, संगीत की तरह। हम भी पीछे
चलें, वह गया आगे-आगे, वहाँ हमारे
स्वागत की तैयारी करने : ऐसा मेरा
नहीं दूसरा सम्बन्धी है।

[तुरही बजती है; सब जाते हैं

पाँचवाँ दृश्य

इनवरनेस—मैकबेथ के गढ़ का कमरा

(लेडी मैकबेथ पत्र पढ़ती हुई आती है।)

लेडी मैकबेथ : "वे मुझे विजय के दिन मिलीं, और मुझे इसका पक्का सबूत मिल चुका है कि उनका ज्ञान अलौकिक है। जब मैं उनसे कुछ और पूछने के लिए तड़प रहा था, वे हवा बनकर ग़ायब हो गईं। मैं अभी अचम्भे में खड़ा ही था कि महाराज के दूत आए, और उन्होंने 'कावडर का राव' कहकर मेरा अभिवादन किया; इसी पद से वे भूत भगिनियाँ कुछ देर पहले मेरा स्वागत कर चुकी थीं; मेरा भविष्य उन्होंने इस तरह बताया, 'आगे चलकर जो पाएगा राज !' मेरे सौभाग्य की परम प्रिय संगिनी, मैंने उचित समझा कि तुम्हें यह समाचार दे दूँ, जिससे तुम्हारे भाग्य में जो ऐश्वर्य लिखा है उससे अनजान रहकर तुम उस आनन्द से वंचित न रहो जो तुम्हारा है। इसे अपने मन में ही रखना; शेष मिलने पर।" ग्लेमिस का तू राव, कावडर का भी; वह भी तू पाएगा जो कि बताया तुझे गया है।—
फिर भी मुझको आशंका तेरे स्वभाव से,
जहाँ दूध की धवल धार-सी मानव-करुणा
उमँड़ा करती, जो नज़दीकी राह पकड़ने
तुझे न देगी। तुझमें चाह बड़े बनने की,
और हवस की कमी नहीं है; किन्तु कमी है
इन बातों के लिए ज़रूरी खोटेपन की :
तुझे चाह ऊँचे उठने की, पर ईमान
समूचा रखकर, हक़ से बाहर हाथ बढ़ाना
तू चाहेगा, लेकिन छल से अलग रहेगा;
ग्लेमिस राव, जिसे तू पाना चाह रहा है,
वह पुकारकर यह कहता है, 'ऐसे तुझको

करना होगा, तब जाकर वह तुझे मिलेगा;'
औ' ऐसा करने से तू बस डर से दबता,
गो ऐसा करने की तेरे मन में उठती
जल्दी आ, जिससे तेरे कानों में अपनी
रूह फूंक दूं, औ' अपनी वाणी के बल से
सब रुकावटें दूर हटा दूं जो तेरे औ'
राज-ताज के बीच खड़ी हैं, जिससे तेरा
मस्तक शोभित करना निश्चित किया नियति ने,
पराप्रकृति ने।—

(दूत आता है)

तुम क्या समाचार लाए हो?

दूत : महाराज आनेवाले हैं यहाँ शाम तक।

लेडी मैकबेथ : तू पागल तो नहीं हुआ है। तेरे मालिक
उनके साथ नहीं हैं? (**अपने आप**) होते तो तैयारी
करने को सूचित कर देते।

दूत : सुनकर खुश हों।
महाराज के साथ हमारे मालिक भी हैं;
एक हमारा साथी उनसे आगे निकला,
और हाँफता-गिरता वह मुश्किल से अपना
सन्देशा भर कहने पाया।

लेडी मैकबेथ : जाओ उसको
देखो-भालो: उसने बड़ी ख़बर लाकर दी।

[**दूत जाता है**

(**नेपथ्य में कौए की भर्राई हुई आवाज़**)

कौआ भी अपने भर्राए स्वर से कहता,
मेरे परकोटे में पग धरना डंकन को
घातक होगा। आओ, हे मारक मंसूबों
पर मँडलानेवाली रूहो, मेरी सारी
नारि-जनित कोमलता हर लो, भर दो मुझमें
एड़ी से लेकर चोटी तक, खूब लबालब,
कठिन क्रूरता! मेरा खून बना दो गाढ़ा,
रोको सारे मार्ग और सब द्वार दया के;
जिससे जीवन की कोई भी करुण भावना
पैठ हृदय में मेरे निर्मम, दृढ़ निश्चय को
डिगा न पाए, औ' न इरादे और नतीजे
में खाई बनकर आ जाए! ओ हत्या के
प्रेरक प्रेतो, जहाँ कहीं भी हो तुम अपने
अलख रूप में, दुनिया के पापों के ऊपर
आँख लगाए, आ जाओ मेरी नारी की

छाती में जो दूध उसे तुम ज़हर बना दो।
घनी रात, आ, कज्जल-काले, नरक धुएँ से
अपने सब अंगों को ढक ले, जिससे मेरी
तेज़ छुरी जो घाव करे वह देख न पाए,
और स्वर्ग तम की चादर को उठा न झाँके
और पुकारे, 'ठहरो' 'ठहरो !'—

(मैकबेथ आता है।)

ग्लेमिस के पति !
राव कावडर के ! भविष्य में दोनों से बढ़कर
जैसा संकेत हुआ है। तेरे पत्रों
ने अजान इस वर्तमान से मुझको ऊपर
उठा दिया है, और इसी क्षण मैं भावी को
देख रही हूँ।

मैकबेथ : मेरी प्यारी, सुनो, शाम तक
आज यहाँ डंकन आएगा।

लेडी मैकबेथ : और यहाँ से
कब जाएगा ?

मैकबेथ : कल, जैसा उसने कह रक्खा।

लेडी मैकबेथ : वह कल कभी नहीं आएगा ! राव, तुम्हारा
चेहरा पुस्तक-सा है जिसमें जो कुछ मन में
छिपा हुआ है, सब पढ़ सकते। अवसर को
धोखा देने को अवसर के अनुरूप बनो तुम;
स्वागत की मुद्रा दिखलाओ आँख, हाथ से,
और बात से : दिखलाई दो सरल फूल से,
रहो आड़ में कुटिल साँप से। जो आता है
उसकी मेहमानी करनी है; आज रात का
बड़ा काम जो, मेरे ज़िम्मे छोड़ो उसको;
जो कि हमारी आनेवाली सब रातों को,
सभी दिनों को सोना-चाँदी मय कर देगा,
और देश में सबके ऊपर एक हमारा
हुक्म चलेगा।

मैकबेथ : हम इस पर फिर बात करेंगे।

लेडी मैकबेथ : चेहरे का रँग बदला तो डर ज़ाहिर होगा।
फ़िक्र तुम्हें क्या ? सीधी रक्खो सिर्फ़ नज़र तुम।
बाकी बात सँभालूँगी मैं।

[दोनों बाहर जाते हैं।

छठा दृश्य

वही। गढ़ के सामने

(बाजा बजता है: मशालों की रोशनी होती है। महाराज डंकन , मैलकम, डोनलबेन, बैंको, लेनाक्स, मैकडफ़, रा न, ऐंगस और नौकर-चाकर आते हैं।)

डंकन : यह गढ़ अच्छी जगह बना है; मन्द, सुगन्धित
हवा हमारे अंगों को सहलाती कैसी
प्यारी लगती !

बैंको : अबाबील जो गर्मी के मौसम में आकर
मन्दिर-मन्दिर पर मँडलाती, अपने सुन्दर
नीड़ों से साबित करती है यहाँ स्वर्ग की
सुरभित साँसें आकर मनुहारें करती हैं:
कोई रोशनदान, झरोखा, कोना, कोई
मौक़ेवाली जगह नहीं है, इस चिड़िया ने
नहीं जहाँ पर अपने या अपने बच्चों के
सोने का झूला डाला है: जहाँ कहीं यह
बहुतायत से चक्कर देती, अण्डे सेती,
मैंने देखा है कि वहाँ की हवा बड़ी सुख-
कर होती है।

(लेडी मैकबेथ आती है।)

डंकन : देखो, आतीं आदरणीया
गृह की देवी ! **(लेडी मैकबेथ से)**—
हमें अनुसरण करनेवाला
प्रेम कभी हमको दुखदायी भी होता है,
फिर भी उसको प्रेम समझकर हम उसके
आभारी होते। यहाँ तुम्हारे लिए सबक़ है,
हम जो कष्ट तुम्हें दें उसके लिए दुआएँ
हमको देना, और हमारे प्रति आभारी
होना हमसे दुख पाकर भी।

लेडी मैकबेथ : महाराज ने
आज हमारे घर को जितना भारी गौरव
दिया, अगर उसके बदले में हम अपनी
सेवाएँ दूनी और चौगुनी भी कर दें तो
हल्की होंगी, तुच्छ रहेंगी: हमें आपसे
पहले जो सम्मान मिला है, और हाल में
उसमें बढ़ती और हुई जो, उसके कारण
सदा आपका गुण गाते हम।

डंकन : कहाँ कावडर-
पति हैं ? उनके चलने के बस बाद चले हम

और इरादा था हम उनसे पहले पहुँचें;
पर वे अच्छे घुड़सवार हैं; और तुम्हारे
मधुर प्रेम से प्रेरित होते, एड़ लगाकर
घोड़े को भी प्रेरित करते हमसे पहले
वे आ पहुँचे। सुन्दर, गुणवन्ती, गृहदेवी,
आज रात के लिए हमें मेहमान बनाओ।

लेडी मैकबेथ : हम सेवक हैं सदा आपके, और हमारे
जो हैं, और हमारा जो कुछ, औ' हम खुद भी
महाराज के आगे हाज़िर हैं, जब चाहें
तब मुजरा लें, फिर भी तो हम दिया आपका
ही लौटाते।

डंकन : आओ, अपना हाथ मुझे दो;
और हमारे मेज़बान से हमें मिलाओ :
हमको उनसे बड़ा प्रेम है, औ' उनके प्रति
सदा हमारी कृपा रहेगी। यदि आज्ञा हो
तो गृहदेवी।

[डंकन लेडी मैकबेथ के हाथ का सहारा लेता है : सब बाहर जाते हैं।

सातवाँ दृश्य

वही। गढ़ का कमरा

(बाजा बजता है : मशालों की रोशनी होती है। बड़ा ख़ानसामा और कई नौकर तश्तरियाँ तथा और सामान लिए एक ओर से आते हैं और मंच पर होते हुए दूसरी ओर चले जाते हैं। इसके बाद मैकबेथ आता है।)

मैकबेथ : **(अपने आप)**
काम खत्म कर देने के ही साथ अगर यह
काम ख़त्म हो जाता तो यह अच्छा होता,
जल्दी ही यह काम ख़त्म कर डाला जाता :
यदि हत्या परिणामों पर क़ाबू पा सकती,
औ' उनके वश में आने के साथ सफलता
हाथों लगती; अगर सिर्फ़ आघात एक यह
आदि-अन्त सब कुछ अपने ही अन्दर होता,
यहाँ, यहीं पर काल-नदी के इसी किनारे
पर, कछार पर, तो भविष्य-जीवन के तट पर
जो होता वह देखा जाता।—किन्तु मामले
जो ऐसे हैं, उनमें अब भी यहीं फ़ैसला
हो जाता है; ऐसा करके हम देते हैं

केवल रक्तपात की शिक्षा, जो प्रचार पा
शिक्षक पर ही हाथ उठाती : यह समान-कर
न्याय हमारे विष के प्याले के तत्त्वों को
स्वयं हमारे अधर पुटों के साथ लगाता।
मेरे ऊपर उसकी रक्षा की दुहरी
ज़िम्मेदारी है : पहली मैं उसका सम्बन्धी,
उसकी रैयत, दोनों दृढ़ प्रतिकूल काम के ;
फिर मैं उसका मेज़बान हूँ, जिसे उचित है
द्वार बन्द रख हत्यारों से उसे बचाना,
न कि खुद उस पर छुरी चलाना। और, अलावा
इसके, इस डंकन ने अपने अधिकारों को
इस नर्मी से वहन किया है, अपने ऊँचे
पद पर इतना साफ़ रहा है, उसके सद्गुण
नरसिंघों-सी मुखर जीभ के देवदूत बन
महापापमय उसकी हत्या के विरुद्ध प्रति-
वाद करेंगे; औ' करुणा नवजात नग्न शिशु
के समान तूफान लाँघती, या नैसर्गिक
देव बालकों-सी अम्बर के अलख वाहनों
पर सवार हो यह जघन्य कृति सबकी आँखों
में डालेगी, जिस पर आँसू की वह भीषण
झड़ी लगेगी, उसमें अन्धड़ डूब जायँगे।—
कोई ऐसा नहीं कि मेरे सुस्त इरादे में
चुस्ती भर तेज़ बढ़ाए; बस मेरी
आकाशी हवसें अपने को ही फाँद-फाँदकर
एक दूसरे पर गिरती हैं।—

(लेडी मैकबेथ आती है।)

कहो क्या ख़बर ?

लेडी मैकबेथ : वह खा चुका, मगर तुम कमरे से क्यों निकले ?

मैकबेथ : उसने मुझे बुलाया है क्या ?

लेडी मैकबेथ : और नहीं क्या ?

मैकबेथ : इस कुकर्म में अब हम आगे नहीं बढ़ेंगे :
अभी हाल में उसने मुझको मान दिया है;
औ' जनता से मुझे सुयश का वह कंचन परि-
धान मिला है जिसे शान से मुझे पहनना
अभी चाहिए; इतनी जल्दी उठा फेंकना
ठीक न होगा।

लेडी मैकबेथ : क्या वह आशा मदमाती थी
जिसे लगाया था तुमने अपने अंगों से ?
क्या तब से वह सुप्त पड़ी थी और जगी अब
रूप-रंग खोकर उमंग से किए काम पर
अचरज करती ? और आज से इसी तरह का

प्रेम तुम्हारा मैं समझूँगी। क्या तुम अपने
काम और बल से वह बनने से डरते हो
जिसकी तुमने अपने लिए कल्पना की है ?
क्या तुम वह लेना चाहोगे जिसे समझते
हो तुम शीश-मुकुट जीवन का, औ' अपनी नज़रों
में कायर बने रहोगे, 'कर न सकूँगा',
'करना चाहूँगा' की माला जपा करोगे ?
बिल्ली मछली खाएगी, पर पाँव न भीगे !

मैकबेथ : ज़रा कृपा कर धीमे बोलो। मैं वह सब कुछ
कर सकता हूँ जो कि मर्द को शोभा देता;
ज़्यादा करनेवाला पैदा नहीं हुआ है।

लेडी मैकबेथ : तब फिर वह नामर्द कहाँ था तुममें जिसने
मुझसे ऐसी साहसवाली बात कही थी ?
जब तुममें वह करने की हिम्मत थी तब तुम
भले मर्द थे; जो तुम थे उससे ज़्यादा कर
दिखलाने में मर्द और ज़्यादा तुम बनते।
तब न वेश ही औ' न काल ही मेल खा रहे
थे, पर उनका मेल बिठाने को तुम दृढ़ थे :
अब वे अपने आप मिले हैं, औ' उनके जुट
जाने पर तुम बिखर गए हो। दूध पिलाया
है मैंने औ' खूब जानती हूँ पीते शिशु
को दुलराना कैसा ममतामय होता है;
लेकिन क़स्द अगर कर लेती, जैसा तुमने
यह करने के लिए किया, तो जब वह मेरी
ओर देख मुसकाता होता, उसके दन्त-
रहित मुख से मैं अपनी छाती झटक हटाती,
और पटक उसका भेजा बाहर कर देती।

मैकबेथ : अगर हुए हम इसमें असफल ?

लेडी मैकबेथ : हम औ' असफल !
मौक़े पर बस हिम्मत को मत ढीली करना,
असफल कभी नहीं होंगे हम। सोता होगा
जब डंकन तब (सारे दिन के कड़े सफ़र के
बाद नींद गहरी सोएगा, स्वाभाविक है।)
उसके दोनों रखवालों को मैं शराब के
प्याले पर प्याले दे-देकर ऐसा मद में
चूर करूँगी, उनकी सुध-बुध, जो दिमाग़ पर
पहरा देती, भाप की तरह उड़ जाएगी;
और खोपड़ी, तर्क-वितर्क जहाँ से होता,
भब्के की हाँडी-सी होगी। जब मदिरा में
शराबोर वे सुअरों-से ख़र्राटे भरते
बेख़बरी में मुर्दों-जैसे सोते होंगे,
तब अनरक्षित डंकन पर तुम औ' मैं दोनों

ऐसा क्या जो कर न सकेंगे ? ऐसा क्या जो
उसके माते रखवालों पर मढ़ न सकेंगे ?
वही हमारे घोर घात के दोषी होंगे।

मैकबेथ : केवल नर बच्चों को जन्मो; क्योंकि तुम्हारी
निडर कोख में केवल नर ही ढल सकते हैं।
जब हम उसके कमरे में सोनेवालों पर
ख़ून पोत देंगे, औ' उनकी ख़ास कटारें
इस्तेमाल करेंगे जब हम, कौन नहीं यह
मानेगा, यह काम उन्हीं का ?

लेडी मैकबेथ : जब हम उसके
मरने पर ज़ोरों से रो-धोकर मातम का
स्वाँग भरेंगे; बात दूसरी माने, किसमें
हिम्मत होगी ?

मैकबेथ : मैंने तै कर लिया, साथ ही
इस भयकारी काम के लिए मेरी रग-रग
ने तैयारी कर ली है। बस, अब तुम जाओ,
बढ़िया हाव-भाव से घड़ियों को झुठलाओ;
झूठे मुख से झूठे मन की बात छिपाओ।

[दोनों बाहर जाते हैं

दूसरा अंक

पहला दृश्य

वही। गढ़ का आँगन

(आगे-आगे मसाल हाथ में लिये फ्लिएंस आता है, पीछे-पीछे बैंको।)

बैंको : बेटे, कितनी रात जा चुकी ?

फ्लिएंस : चाँद ढल चुका, मैंने घण्टा नहीं सुना है।

बैंको : बारह बजे चाँद ढलता है।

फ्लिएंस : श्रीमन्, मुझको
लगता ज़्यादा रात हो चुकी।

बैंको : लो तलवार ज़रा, अम्बर संयम से चलता,
अपने सारे दीप बुझाए।—इसको भी लो।

(ढाल भी फ्लिएंस को देता है।)

नींद-भरी मेरी पलकें भारी-भारी हैं,
फिर भी सोना नहीं चाहता : स्वर्ग शक्तियो !
बिस्तर पर जाने पर जो कुविचार हृदय में
उठते, उनका शमन करो !—तलवार मुझे दो।—

(आगे-आगे मशाल हाथ में लिये सेवक आता है, पीछे-पीछे मैकबेथ।)

कौन आ रहा ?

मैकबेथ : मित्र तुम्हारा।

बैंको : श्रीमन्, क्या अब
तलक न सोए ? महाराज कब के जा लेटे :
बेहद खुश थे, और उन्होंने सभी तुम्हारे
दास-दासियों को बख्शीशें बड़ी-बड़ी दीं।
पत्नी को यह रत्न भेंट में भेजवाया है,
कहलाया है, दयामयी गृह की देवी को
दिया जाय यह; और, परम सन्तुष्ट, पलँग पर
अब सोए हैं।

मैकबेथ : पहले से तैयार न थे हम,
इससे आव-भगत में कमियाँ बहुत रह गईं,
नहीं बड़ी विधि से हम उनका स्वागत करते।

बैंको : ठीक हुआ सब। ऊसर की वे तीन डाइनें
मुझे रात, कल, स्वप्न में दिखीं : तुम पर उनका
कहा हुआ कुछ सच उतरा।

मैकबेथ : मेरे दिमाग़ से
उतर गईं वे : जिस पर भी घण्टा भर हो तो
हम-तुम इसके बारे में कुछ बात करेंगे,
वक़्त कभी क्या दे सकते हो ?

बैंको : जब तुम चाहो।

मैकबेथ : जब ऐसा हो, तब यदि मेरी तरफ़ रहे तुम
तो सम्मान बड़ा पाओगे :

बैंको : अगर बढ़ाने
की कोशिश में जो है उससे हाथ न धोऊँ,
लेकिन अब भी मेरा अन्तःकरण शुद्ध है,
राजभक्ति मेरी अविचल है, बात सुनूंगा।

मैकबेथ : जाकर अब आराम करो तुम !

बैंको : धन्यवाद है,
तुम भी अब जाकर सो जाओ।

[बैंको और फिलएंस जाते हैं

मैकबेथ : **(सेवक से)** जा, अपनी मलकिन से कह, जब मेरा प्याला
बन जाए, मुझको घण्टी दें। जा, तू सो जा।

[सेवक जाता है

मैकबेथ : यह कटार है क्या जो आगे देख रहा हूँ,
मेरी ओर मूठ है जिसकी ? आ, मैं तुझको
पकड़ूँ : हाथ नहीं आई तू, फिर भी तुझको
देख रहा हूँ । घातक छलना, क्या तू केवल
दिखती भर है, छुई न जाती ? या कटार तू
केवल मन की झूठी रचना, जो दिमाग़ की
गर्मी से उत्पन्न हुई है ? अब भी तुझको
देख रहा हूँ उसी शक्ल की, उसी धातु की
जिसकी मेरी, जो मैं बाहर खींच रहा हूँ ।
तू दिखलाती है पथ जिस पर मैं जाता था;
ऐसा ही हथियार काम में लाने को था ।—
मेरी सब इन्द्रियाँ हँस रही हैं आँखों पर,
या ये सब पर; अब भी तुझको देख रहा हूँ;
औ' अब तेरी धार-मूठ पर बूंद खून की,
जो पहले मौजूद नहीं थी ।—ऐसी कोई
चीज़ नहीं है । मेरा खूनी काम आँख के
आगे मूर्तिमान होता है ।—आधी दुनिया
के ऊपर अब प्रकृति मरी-सी, औ' अभिशापित
निद्रा को दुःस्वप्न सताते । जादू-टोना
पीत मसानी देवी को बलिदान चढ़ाता;
हत्या का कंकाल भेड़िये की बोली से
चौकन्ना हो, जो उसका सन्तरी, वक़्त
बतलानेवाला, ऐसे दबे हुए पाँवों से,
कामातुर के बलात्कारकारी क़दमों से,
भूत की तरह, अपने लक्ष्य की तरफ़ जाता ।—
ओ सुस्थिर, अडोल, अचला, तू मत सुन मेरी
पद-चापों को, कहाँ, किधर को वे जाती हैं,
क्योंकि मुझे डर, तेरे पत्थर बोल न मेरा
भेद खोल दें, भंग न कर दें इस अवसर पर
छाए भीषण सन्नाटे को जो कि काम के
लिए ज़रूरी । धमकी ने कब किसको मारा ?
बातों से बुझ जाता कामों का अंगारा

(घण्टी बजती है ।)

गया कि ख़त्म हुआ, घण्टी ने किया इशारा ।
डंकन, मत सुन इसे; क्योंकि इसकी यह टन-टन
तुझे स्वर्ग का, या कि नरक का है आमन्त्रण ।

दूसरा दृश्य

वही

(लेडी मैकबेथ आती है।)

लेडी मैकबेथ : जिससे वे बेहोश हुए, बाहोश हुई मैं,
जिससे वे बुझ गए, मुझे दी उसने ज्वाला।

(नेपथ्य में उल्लू की आवाज़)

सुनो ! षि···ई ! यह उल्लू था जो चीख़ पड़ा था,
जो कि मौत की घुड़की देता, और रात से
कर्कश स्वर में विदा माँगता। कर-धर में वे।

(नेपथ्य में खर्राटे भरने की आवाज़)

द्वार खुले हैं; और नशे में गच रखवाले
ख़र्राटे भरकर अपनी ज़िम्मेदारी पर
व्यंग कर रहे हैं : मैंने उनके प्यालों में
ऐसी जड़ी मिला दी, मौत-ज़िन्दगी उन पर
दावे करतीं कि वे मर चुके, कि वे जी रहे।

मैकबेथ : **(नेपथ्य से)** कौन आ रहा है ? क्या कोई !

लेडी मैकबेथ : अरे मुझे भय !
जाग पड़े वे और काम सध नहीं सका है :—
काम नहीं, नाकामियाब हो जाना हमको
नष्ट करेगा—षि···ई—उनकी खुली कटारें
मैंने ऊपर ही रख दी थीं; पाई होंगी।—
सोते में वह अगर न लगता, जैसे मेरा
पिता, काम खुद मैं कर देती ! —ओ, मेरे पति !

(मैकबेथ आता है।)

मैकबेथ : काम ख़त्म कर डाला मैंने।—क्या तुमने कुछ
नहीं सुनी आवाज़ ?

लेडी मैकबेथ : सुनी उल्लू की चीख़ें,
और झींगुरों की झनकारें। तुम कुछ बोले ?

मैकबेथ : कब ?

लेडी मैकबेथ : पल भर पहले।

मैकबेथ : जब नीचे उतर रहा था ?

लेडी मैकबेथ : तभी।

मैकबेथ : सुनो, षी ! कौन साथ के कमरे में है ?

लेडी मैकबेथ : डोनलबेन।

मैकबेथ : **(हाथ देखकर)** देखना इसको दर्दनाक है।

लेडी मैकबेथ : दर्दनाक इसको कहना है ख़ामख़याली।

मैकबेथ : सोते-सोते एक हँस पड़ा और दूसरा
बोला, 'हत्या !' एक दूसरे से उठ बैठा :
खड़ा रहा मैं उन्हें अनकता, किन्तु प्रार्थना
करके फिर से लेट गए वे और सो गए।

लेडी मैकबेथ : दो हैं एक साथ कमरे में।

मैकबेथ : जब दोनों ने
मेरे क्रूर क़साई के हाथों को देखा,
एक पुकार उठा, 'प्रभु रक्षा करें हमारी !'
औ' बोला, 'आमीन', दूसरा कहा उन्होंने
जब, 'प्रभु रक्षा करें हमारी', कहीं न वे सुन
लें इस डर से मेरे मुँह 'आमीन' न निकला।

लेडी मैकबेथ : इन बातों को इस गहराई से मत सोचो।

मैकबेथ : पर किस कारण मेरे मुँह 'आमीन' न निकला।
मुझको रक्षा की विशेष आवश्यकता थी,
पर 'आमीन' गले में मेरे अटक गया था।

लेडी मैकबेथ : इन कामों को इस प्रकार से नहीं सोचते :
ऐसा करने से हम पागल हो जाएँगे।

मैकबेथ : मुझे लगा, आवाज़ एक चिल्लाकर कहती,
'निद्रा त्यागो, मैकबेथ निद्रा का वध करता,'—
निद्रा जो भोली-भाली है; निद्रा जो चिन्ता
के उलझे तागों को सुलझाया करती,
जो कि मरण दिन के जीवन का, ताप-तप्त का
स्नान, चुटीले मन का मरहम, महा प्रकृति का
उत्तम व्यंजन, जीवन के जेवनार-थाल का
जो कि परम पौष्टिक पदार्थ है :—

लेडी मैकबेथ : मतलब क्या है ?

मैकबेथ : फिर भी वह सब घर से चिल्लाकर कहती थी,
'निद्रा त्यागो !' 'ग्लेमिस ने निद्रा का वध कर
डाला, इससे और कावडर सो न सकेगा,
आगे मैकबेथ सो न सकेगा !'

लेडी मैकबेथ : कौन इस तरह चिल्लाता था ? योग्य राव, क्यों
तुम दिमाग़ के इस फ़तूर पर सोच-सोचकर
अपनी तनकर खड़ी शक्ति की कमर झुकाते ?
जाओ पानी लो, औ' इन हाथों पर बैठी
गन्द-गवाही को धो डालो।—साथ कटारें
क्यों ले आए ? इनको वहीं छोड़ आना था :
ले जाओ इनको, औ' सोते रखवालों पर
खून पोत देना।

मैकबेथ : मैं तो अब जा न सकूँगा :
मैंने जो कुछ किया सोचकर मैं डरता हूँ;
फिर से उसे देखने की अब ताब नहीं।

लेडी मैकबेथ : डर-
पोक कहीं के ! मुझे कटारें दो। सोए औ'
मरे सिर्फ़ तस्वीरों-से हैं; चित्र-लिखित
भूतों से केवल बच्चों की आँखें डरती हैं।
अगर खून बहता होगा तो रखवालों का
मुँह रँग दूँगी, जिससे यह अपराध उन्हीं का
समझा जाए।

[**चली जाती है**

(नेपथ्य में दरवाज़ा पीटने की आवाज़)

मैकबेथ : कौन पीटता है दरवाज़ा ?—
मुझको क्या हो गया कि हर आवाज़ डराती ?
हाथ बने क्या ? उफ़ ! ये मेरी आँख नोचते :
जो मेरे हाथों में खून लगा उसको तो
महावरुण का सारा पारावार नहीं धो
सकता। यही नहीं, ये मेरे हाथ करेंगे
उच्छल फेनोच्छ्वसित जलधि को भी रक्तारुण,
जो कि हरा है, लाल बनेगा।

(लेडी मैकबेथ वापस आती है।)

लेडी मैकबेथ : रंग तुम्हारे हाथों का मेरे हाथों पर;
लेकिन ऐसे कच्चे दिल से मुझे घृणा है।
सुनो, दक्षिणी दरवाज़ा कोई खड़काता :—
चलो, चलें कमरे के अन्दर। थोड़े जल से
हम पर से दायित्व काम का धुल जाएगा :
यह कितनी आसान बात है ! तुम्हें अकेला
छोड़ तुम्हारी दृढ़ता भागी :—

(नेपथ्य में दरवाज़ा पीटने की आवाज़)

सुनो, और भी
खड़कन, आ रतजामा पहनो, हमें निकलना
पड़ा अगर बाहर, हम जगते साबित होंगे।—
इतनी बुरी तरह मत ख्यालों में खो जाओ।

मैकबेथ : अपना काम याद कर अपने को भूले ही
रहना अच्छा।

(नेपथ्य में दरवाज़ा पीटने की आवाज़)

डंकन को तू दरवाज़े को
पीट जगा दे : काश कि तू ऐसा कर सकता !

[**दोनों चले जाते हैं**

तीसरा दृश्य

वही

(दरबान आता है।)

दरबान : ज़रूर कोई दरवाज़ा पीट रहा है ! जो कोई दोज़ख का दरबान हो तो उसको फाटक की कुंजी ही घुमाते रहना पड़े। (**दरवाज़ा पीटने की आवाज़**) पीटो, पीटो, पीटो ! शैतान के नाम पर बोलो तो कि हो कौन ?—आप बनिये हैं, जिन्होंने भाव गिरने के अन्देशे में फाँसी लगा ली : खूब आए; अँगोछे अपने पास काफ़ी रखिएगा, यहाँ पसीना ज़्यादा आता है। (**दरवाज़ा पीटने की आवाज़**) पीटो, पीटो ! शैतान के नाम पर बोलो तो कि हो कौन ? ईमानहू, आप हैं दुरंगी, जो इस पलड़े से उसके, और उस पलड़े से इसके ख़िलाफ़ हलफ़ उठाते हैं; जिन्होंने खुदा के नाम पर काफ़ी ग़द्दारी की, लेकिन बहिश्त को चकमा न दे सके : ख़ैर, अन्दर आइए, दुरंगीजी ! (**दरवाज़ा पीटने की आवाज़**) पीटो, और पीटो ! अब कौन है ?—ईमानहू, आप हैं अंग्रेज़ दर्ज़ी जो फ़िरंगी जुराब से तागा चुराने की वजह से यहाँ आए हैं : दर्ज़ीजी, अन्दर आइए, और मौज से अपनी इसतिरी गरमाइए। यहाँ आग इफ़रात है। (**दरवाज़ा पीटने की आवाज़**) पीटो, पीटो ! यहाँ कभी चैन नहीं ! आप कौन हैं ?—लेकिन दोज़ख़ में इतनी ठण्ड कहाँ ! अब मुझसे दोज़ख़ की दरबानी न होगी : मैंने सोचा था कि ऐसे हर पेशे के कुछ लोगों को यहाँ जमा करूँगा जो फूलों की राह से जहन्नुम की आग में जाते हैं। (**दरवाज़ा पीटने की आवाज़**) सब्र करो, सब्र करो : बराय मेहरबानी, दरबान की बख़्शीश न भूल जाना।

(दरवाज़ा खोलता है।)

(मैकडफ़ और लेनाक्स आते हैं।)

मैकडफ़ : कहो दोस्त, क्या रात देर से लेटे थे जो
अभी तलक सुस्ती छाई है ?

दरबान : ईमानहू, जनाब, रात के तीन बजे तक
हम सब मदिरा-पान-गान में मगन-मस्त थे;
और तीन बातें हैं जो मदिरा से बढ़तीं।

मैकडफ़ : कौन तीन बातें हैं जो मदिरा से बढ़तीं ?

दरबान : जनाब, नाक की रंगत, आँखों की नींद और पेशाब। काम-वासना को, जनाब, यह बढ़ाती भी है और कम भी करती है : वासना को बढ़ाती है, काम को कम करती है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि ज़्यादा शराब काम-वासना के लिए दुरंगी का काम करती है : यह उसे बनाती भी है और बिगाड़ती भी है; यह उसे लुहकारती भी है और खींच भी लेती है; यह उसकी

मनुहार करती है और उसे निराश भी; यह उसको चुस्त करती है और उसे सुस्त भी; और अन्त में उसे नींद का चकमा दे, चित कर चल देती है।

मैकडफ़ : तो मेरा ख़्याल है कल रात शराब ने तुम्हें चित कर दिया था।

दरबान : कर तो दिया था, जनाब ? चारों ख़ाने : लेकिन मैंने पट से उसे पटकान दी; और मैं समझता हूँ कि मैं ही तगड़ा पड़ा; गो उसने दो-तीन बार मेरे पाँव उखाड़ दिए, फिर भी मैंने एक ऐसा दाँव लगाया कि उसे पछाड़ फेंका।

मैकडफ़ : तुम्हारे मालिक अभी जगे कि नहीं ?

(मैकबेथ आता है।)

दरवाज़ा खड़काने से उठकर वे आते।

मैकडफ़-लेनाक्स : नमस्कार, श्रीमन् !

मैकबेथ : दोनों को नमस्कार है।

मैकडफ़ : महाराज क्या उठ बैठे हैं ?

मैकबेथ : अभी तो नहीं।

मैकडफ़ : मुझको यह आदेश मिला था, तड़के पहुँचूँ :
देर हो गई।

मैकबेथ : आओ, उनके पास ले चलूँ।

मैकडफ़ : तुम इन कष्टों को सुख माना करते हो, यह
मैंने माना; किन्तु कष्ट तो है अवश्य ही।

मैकबेथ : जिस मेहनत से हम खुश होते वह थकान को
दूर भगाती। द्वार इधर है।

मैकडफ़ : मुझे हिचकना
नहीं चाहिए, महाराज का हुक्म यही था।

[**चला जाता है**

लेनाक्स : महाराज क्या आज यहाँ से कूच करेंगे ?

मैकबेथ : निश्चय ः कम-से-कम उनकी मंशा ऐसी थी।

लेनाक्स : बुरी रात थी : हम लेटे थे जहाँ चिमनियाँ
भहराकर भठ गईं; सुनाई पड़ीं हवा में
करुण पुकारें और मौत की अजब कराहें,
जैसे कोई भीषण स्वर में सुखद घड़ी के
गर्भ में छिपी दुर्घटनाओं औ' विस्फोटों
की भविष्यवाणी करता हो। उल्लू चीख़ा
किया रात-भर :कुछ कहते थे धरती ऐसी
काँपी जैसे कोई कम्पज्वर में काँपे।

मैकबेथ : रात चली थी आँधी।

लेनाक्स : मुझको याद नहीं है
मैंने ऐसी रात कभी पहले देखी है।

(मैकडफ़ आता है।)

मैकडफ़ : ग़ज़ब हो गया ! ग़ज़ब हो गया ! ग़ज़ब हो गया !

किस मुँह, किस दिल से बतलाया जाय क्या हुआ !

मैकबेथ-लेनाक्स : बात हुई क्या ?

मैकडफ़ : सारा सत्यानाश हो गया !
महापापकारी हत्या ने प्रभु के पावन
मन्दिर का विध्वंस कर दिया, और वहाँ से
प्राण-प्रतिष्ठित प्रतिमा ग़ायब कर दी है !

मैकबेथ : क्या
कहा ? प्राण ?—

लेनाक्स : क्या महामहिम से अर्थ तुम्हारा ?

मैकडफ़ : जा कमरे में, घोर घिनौना दृश्य देखकर
अपनी-अपनी आँख फोड़ लो।—कोई मुझसे
कुछ मत पूछो; जाओ देखो, बात करो फिर।

[**मैकबेथ और लेनाक्स चले जाते हैं**

ख़तरे का घण्टा दो !—हत्या औ' ग़द्दारी!
बैंको ! डोनलबेन ! मैलकम ! जागो, जागो !
सुख की निद्रा त्यागो, जो है नक़ल मौत की,
असल मौत को देखो !—देखो, उठो, क़यामत
की सूरत को । जागो, जागो मैलकम !
बैंको !
बिस्तर की क़ब्रों से निकलो औ' प्रेतों की
भाँति चलो यह काण्ड देखने ! घण्टा पीटो !

(नेपथ्य में घण्टा बजता है, नरसिंघों की आवाज होती है।)

(लेडी मैकबेथ आती है।)

लेडी मैकबेथ : कौन जरूरी काम आ पड़ा
जो घर के सोनेवालों को नरसिंघों के
कनफट स्वर से जगा यहाँ बुलवाया जाता ? बोलो,
बोलो !

मैकडफ़ : देवि, दयामयि, तुम्हें सुनाई
जानेवाली बात नहीं है : जो कहनी है
मुझे अगर नारी के कानों में पड़ जाए
तो वह उसकी मौत बनेगी।

(बैंको आता है)

बैंको ! बैंको !
हत्या कर दी गई हमारे महाराज की !

लेडी मैकबेथ : हाय ! हमारे घर ?

बैंको : निर्ममतापूर्ण कहीं भी।—
दया करो, प्यारे डफ़, अपनी बात पलट दो,
कहो कि ऐसा नहीं हुआ है।

(मैकबेथ और लेनाक्स आते हैं।)

मैकबेथ : इस घटना से सिर्फ़ एक घण्टे पहले मर
जाता तो अपने को सुख से जिया मानता;
क्योंकि इस घड़ी से जीवन में बड़ी चीज़ कुछ
नहीं रह गई; सिर्फ़ रह गए गुड़िया-गुड्डे;
गौरव और गुमान उठ गया; जीवन-मदिरा
खींच ली गई, औ' अब जग की मधुशाला में
डींग मारने को सीठी भर बची हुई है।

(मैलकम और डोनलबेन आते हैं।)

डोनलबेन : क्या गड़बड़ है?

मैकबेथ : तुम गड़बड़ में, और बेख़बर :
दौड़ रहा जो ख़ून तुम्हारी नस-नाड़ी में
उसका पूत, प्रधान स्रोत अवरुद्ध हो गया;
मूलोद्गम अवरुद्ध हो गया।

मैकडफ़ : हत्या कर दी
गई तुम्हारे पुण्य पिता की।

[डोनलबेन झपटकर निपथ्य में जाता है और सिर नीचा किए धीरे-धीरे लौटता है।

मैलकम : किसके द्वारा?

लेनाक्स : जो कमरे में थे, ऐसा ही कहना होगा,
उनके द्वारा; उनके चेहरे-हाथ ख़ून से
सने हुए थे; उसी तरह से रँगी कटारें
भी तकियों पर पड़ी हुई थीं :
भौचक-से वे आँख फाड़कर देख रहे थे,
हर मनुष्य को उनके हाथों से ख़तरा था।

मैकबेथ : फिर भी पश्चात्ताप मुझे है, गुस्से में आ
मैंने उनको मार गिराया।

मैकडफ़ : उन्हें मार क्यों
डाला तुमने?

मैकबेथ : एकसाथ हो सकता कोई
ज्ञानवान भी, परेशान भी; सहनशील भी,
क्रोधातुर भी; राजभक्त भी, उदासीन भी?
कोई नहीं : प्रेम ने मुझको इतना पागल
बना दिया था, यह न हो सका ठहरूँ, सोचूँ—
इधर पड़ा था डंकन का तन रजत वर्ण का,
स्वर्ण रक्त की धारें जिस पर पड़ी हुई थीं,
जिस पर गहरे घाव प्रकृति में सेंध की तरह
दीख रहे थे, जिनसे होकर ध्वंस धँसा था :
उधर खड़े थे, हत्याकारी अपने बाने
के रंगों में डूबे, उनकी खुली कटारें

खून से सनी। अपने दिल में कौन मुहब्बत
रखनेवाला, जब उस दिल में उसको साबित
कर सकने की हिम्मत भी हो, अपने पर
क़ाबू रख सकता ?

लेडी मैकबेथ : हाय, मुझे ले चलो यहाँ से।

(लेडी मैकबेथ को ग़श आता है।)

मैकडफ़ : इनको ज़रा सँभालो।

मैलकम : **(अलग, डोनलबेन से)** हम क्यों मुँह बाँधे हैं,
जिनका इस दलील पर सबसे ज़्यादा हक है,

डोनलबेन : **(अलग, मैलकम से)** यहाँ क्या कहा जा सकता है,
जहाँ किसी भी छिपी माँद से झपट हमारा
भाग्य हमें दबोच सकता है ? आओ भागें :
अभी हमारे आँसू पिघले नहीं कि निकलें।

मैलकम : **(अलग, डोनलबेन से)**
अभी हमारे महाशोक से हमें काठ-सा
मार गया है।

(लेडी मैकबेथ गिरने-गिरने को होती है।)

बैंको : इन्हें सहारा दे ले जाओ।

[**दो सेवक लेडी मैकबेथ को बाहर ले जाते हैं**

पहले चलकर कपड़े पहनें, सर्दी से हम
काँप रहे हैं, फिर हम बैठें, जाँचें, कैसे,
किसके द्वारा भीषण हत्याकण्ड हुआ यह।
भय-संशय से हम चकराए : प्रभु के हाथों
मैं अपने को अर्पण करके, सुनो, घोषणा
करता हूँ मैं, इस दरपरदा करामात के
पीछे जो बद ग़द्दारी है, उससे लोहा
लूँगा मैं।

मैकडफ़ : औ' मैं भी लूँगा।

सब : हम सब लेंगे।

मैकडफ़ : हम सब जल्दी अपने बख़्तर धारण करके
मिलें बड़े कमरे के अन्दर।

सब : हम राज़ी हैं।

[**मैलकम और डोनलबेन को छोड़कर सब चले जाते हैं**

मैलकम : तुम क्या करना चाहोगे ? हम मिलें न इनसे :
जो दुख दिल से उठा नहीं उसको दिखलाना
मक्कारों के लिए बड़ा आसान काम है।
मैं इंग्लैण्ड चला जाऊँगा।

डोनलबेन : आयरलैण्ड चला जाता मैं : अलग-अलग हो

भाग्य हमारे अधिक सुरक्षित रह पाएँगे;
जहाँ अभी हम, वहाँ मनुष्यों की मुसकानों
में करौलियाँ छिपी हुई हैं; जो सम्बन्धी
जितना ही नज़दीकी उतना वह संघाती।

मैलकम : जो संघातक सायक छोड़ा गया अभी वह
गिरा नहीं है, औ' बचाव है अलग निशाने
से रहने में : बस हम घोड़ों पर सवार हों;
हमें विदा लेने का शिष्टाचार बरतना
नहीं, खिसक चलना है। चोरी विहित वहाँ है,
जहाँ प्राण-भय, दया नहीं रह गई जहाँ है।

[दोनों बाहर जाते हैं

(नेपथ्य से घोड़ों की टापों की आवाज़ आती है।)

चौथा दृश्य

गढ़ के बाहर

(एक बूढ़े आदमी के साथ रास आता है।)

बूढ़ा आदमी : तीन बीस के ऊपर दस बरसों की मुझको
याद बनी है; मैंने इतने लम्बे अरसे
में देखी हैं कितनी ही आफ़त की घड़ियाँ,
अद्‌भुत बातें, लेकिन इस दुखभरी रात ने
मात कर दिया है उन सबको।

रास : मेरे बाबा,
देखो मानव-करनी से क्रोधित नभ कैसा
उसके पापी रंगमंच पर घिरा खड़ा है!
घड़ी देखने से दिन है, पर निशा अँधेरी
गगन-पंथ-चारी सूरज का गला दबाए।
रात छा गई है अथवा दिन लजा रहा है,
जो धरती के मुख पर तम की चादर फैली,
जबकि चाहिए जीवन-किरणें उसको चूमें।

बूढ़ा आदमी : यह ऐसा अजीब, जैसा वह काण्ड हुआ है।
पिछले मंगल को मैंने देखा, चूहों पर
जीनेवाला उल्लू एक बाज़ पर झपटा
औ' उसने उसकी गर्दन धर तोड़ी जब वह
तेज़ चाल से धुर ऊँचाई पर उड़ता था।

रास : औ' यह जितना अद्‌भुत है, उतना ही सच है—
डंकन के घोड़े मस्ताने, तेज़ तुखारी
ताज़ी तड़पे, तोड़ अस्तबल बाहर झपटे

बँधे न बाँधे, जैसे वे विरुद्ध मानव के
युद्ध छेड़ने को उद्यत हों।

बूढ़ा आदमी : और यह सुना
गया उन्होंने एक दूसरे को खा डाला।

रास : ठीक सुना ; यह बड़ा अचम्भा मैंने अपनी
आँखों देखा। मैकडफ़ इधर चले आते हैं।

(मैकडफ़ आता है।)

भाई, अब क्या हाल-चाल है ?

मैकडफ़ : नहीं देखते ?

रास : पता चला कुछ, किसने खूनी काम किया है ?

मैकडफ़ : उन लोगों ने, मैकबेथ ने जिनके सिर काटे।

रास : दिन जल जाए ! उनको इससे क्या मिलना था ?

मैकडफ़ : उन्हें किसी ने उकसाया था—महाराज के
दोनों बेटे मैलकम, डोनलबेन निकलकर
चोरी-चोरी भाग गए हैं; जिससे यह शक
किया गया है हत्या थी करतूत उन्हीं की।

रास : अनहोनी-सी यह भी : सीमाहीन हवस, जो
अपने जीवन-दाता को ही हड़प जायगी !—
तब तो यह ज्यादा मुमकिन है मैकबेथ को ही
राज मिलेगा।

मैकडफ़ : घोषित उसका नाम हो चुका, राज्यारोहित
होने को इस्कोन गया वह।

रास : और कहाँ है
डंकन का शव ?

मैकडफ़ : उसे ले गए काल्मेकिल को;
उसके कुल के पूर्वजनों की पावन क़ब्रें
वहीं बनी हैं।

रास : तुम इस्कोन नहीं आते हो ?

मैकडफ़ : नहीं, बन्धु, मैं फ़ाइफ़ जाता।

रास : और उधर मैं।

मैकडफ़ : अच्छा, सब कुछ वहाँ ठीक हो :—विदा
अभी तो।
नये राज से भला पुराना ही न कहीं हो।

[बाहर जाता है।

रास : बाबा ! मेरा नमस्कार लो।

बूढ़ा आदमी : प्रभु की करुणा साथ तुम्हारे, सबके जाए,
जो कि शूल को फूल, शत्रु को मित्र बनाएं।

[दोनों बाहर जाते हैं

पहला दृश्य

फ़ारेस। महल का कमरा

(बैंको आता है।)

बैंको : कहा डाइनों ने जो तेरे लिए फला सब;
राव कावडर, ग्लेमिस का, राजा भी अब तू :
और मुझे आशंका है तूने इसके हित
सबसे गर्हित काम किया है; तो भी ऐसा
कहा गया था राजमुकुट यह तेरे वंशज
रख न सकेंगे; आगे के राजों का मैं ही
मूल पुरुष हूँ। यदि उनके मुख से सच निकला,
(जैसे तुझ पर, मैकबेथ, उनकी वाणी उतरी),
तो क्यों तुझ पर सिद्ध हुई बातों से मैं भी
उन्हें न अपना भूत-भविष्यद्वक्ता मानूँ,
औ' आशा से क़दम बढ़ाऊँ ? पर, बस अब; चुप।

(तुरही बजती है। मैकबेथ राजा के एवं लेडी मैकबेथ रानी के रूप में, तथा लेनाक्स, रास, सरदार और नौकर-चाकर आते हैं।)

मैकबेथ : यही ख़ास मेहमान हमारे।
लेडी मैकबेथ : अगर हमारे
राजभोज में ये रह जाते तो निश्चय ही
बड़ी कमी उसमें रह जाती, और अशोभन
सब कुछ लगता।
मैकबेथ : आज रात को एक बड़ी दावत हम देंगे,
श्रीमन्, कृपा करें आने की।
बैंको : महाराज की
जो आज्ञा हो; मेरे सब कर्तव्य उसी के
साथ सदा के लिए अटूट-अटल बन्धन में
बँधे हुए हैं।
मैकबेथ : कहीं तीसरे पहर सवारी जाएगी क्या ?
बैंको : हाँ, श्रीमन् !
मैकबेथ : वर्ना सन्ध्या के परिषद् में भी
हमें आपकी शुभ सलाह की आवश्यकता,
जो कि सदा सन्तुलित, लाभकर सिद्ध हुई है;
पर, अब कल। क्या दूर सवारी कहीं जायगी ?
बैंको : हाँ, श्रीमन्, जो अभी चला तो सन्ध्या-भोजन-
वेला तक वापस आऊँगा, घोड़े अगर न

तेज़ बढ़े तो, शायद घण्टा या दो घण्टा
रात का लगे।

मैकबेथ : याद रहे दावत में आना।

बैंको : श्रीमन्, मैं ज़रूर पहुँचूँगा।

मैकबेथ : हमने सुना हमारे हत्याकार भतीजे
आयरलैण्ड और इंग्लैण्ड विराज रहे हैं,
पितृघात स्वीकार न करके बेबुनियादी
मनगढ़न्त से लोगों के कानों को भरते।
पर, इस पर कल, जब इसके ही साथ राज के
और मामलों पर हम साथ विचार करेंगे।
तो अपने घोड़े मँगवाएँ : औ' तब तक के
लिए विदा जब तक न रात वापस आते हैं।
क्या फ़्लिएंस को अपने साथ लिये जाते हैं?

बैंको : हाँ, श्रीमन्, अब समय आ गया है जाने का।

मैकबेथ : सधी चाल से, तेज़, आपके घोड़े जाएँ;
बैठ ज़ीन पर एड़ लगाएँ और विदा हों।—

[बैंको जाता है

(नेपथ्य से घोड़ों की टापों की आवाज़ आती है।)

सात बजे तक जैसे जिसका जी हो अपना
वक़्त बिताए, फिर मिलकर आनन्द बढ़ेगा :
सन्ध्या-भोजन तक हम सबसे अलग रहेंगे :
तब तक सबका ईश्वर मालिक!

[लेडी मैकबेथ तथा सब सरदार बाहर जाते हैं

(सेवक से) ओ रे, सुन तो।

क्या वे दोनों मुझसे मिलना चाह रहे हैं?

सेवक : हां, मालिक, वे सिंहद्वार पर खड़े हुए हैं?

मैकबेथ : उन्हें बुला ला।

[सेवक बाहर जाता है

ऐसे रहना बेमानी है।
मानी है निर्द्वन्द्व, निरापद हो रहने के।—
हमको बैंको का भारी भय लगा हुआ है,
औ' उसकी राजसी प्रकृति में ऐसा रोब-
दाब है जिससे डरा चाहिए : बड़ा हिम्मती
है वह; लेकिन अपने मन की निर्भयता में
साथ बुद्धि भी रखता वह जो उसके बल को
सँभल-सँभलकर क़दम बढ़ाना सिखलाती है।
एक वही है जिसकी सत्ता मुझे अखरती :
उसके आगे मेरी प्रतिभा दबी हुई है,

मार्क ऐंटनी की जैसे सीज़र* के आगे।
भूत-भगिनियों ने जब मुझको राजा कहकर
पहले-पहल पुकारा, उसने उनको डाँटा
और कहा, 'कुछ मुझे बताओ।' पैगम्बर की
भाँति उन्होंने तब उद्घोषित किया कि भावी
राजों की वंशावलि का वह मूल पुरुष है।
मेरे सिर पर रक्खा निष्फल राज-मुकुट यह
औ' मुट्ठी में राज-दण्ड निर्वीर्य कि जिसको
औरों की सन्तान छीन ले; मेरा कोई
पुत्र न हो उत्तराधिकारी। यदि ऐसा है,
तो बैंको के वंश के लिए मैंने अपना
धर्म बिगाड़ा; उसके कारण मैंने कृपा-
निकेतन डंकन की हत्या की; मैंने अपने
शान्ति-पात्र में गरल उँडेला, केवल उसकी
ख़ातिर; और चिरन्तन अपनी निधि दे डाली
दानव को जो मानवता का महाशत्रु है,
राज उन्हें देने को, बैंको के बच्चों को !
कभी न ऐसा हो, आ दाएँ, भाग्य पक्ष ले
मेरा निर्णयकारी रण तक !—कौन खड़ा है ?

(दो हत्यारों के साथ सेवक आता है।)

(सेवक से)—
बाहर जाओ, वहीं रहो जब तक न बुलाऊँ।

[सेवक बाहर जाता है

कल ही तो हमने तुमसे कुछ बातें की थीं।

पहला हत्यारा : महाराज की बड़ी कृपा थी।

मैकबेथ : अच्छा, तो क्या
तुमने मेरी बातों पर कुछ सोचा ? जानो,
गये दिनों में जिसने तुम्हें दरिद्र बनाया,
वह था बैंको; मेरा कोई दोष नहीं था।
अपनी पिछली बातचीत में मैंने इसको
साफ़ किया था; और इसे तुमने माना था,
कैसे तुम्हें गया झुठलाया और सताया;
क्या हथकण्डे किए गए औ' किसके द्वारा;
और कई ऐसी बातें हैं जिनको सुनकर
बेग़ैरत, खब्तुलहवास भी समझ जायगा,

---

*सीज़र—जूलियस सीज़र (102-44) ईसा पूर्व, रोम सम्राट; शेक्सपियर ने उस पर ए
नाटक लिखा है।
ऐंटनी—सीज़र का सेनापति। मिस्र की रानी क्लिओपाट्रा और ऐंटनी की प्रे
कथा को शेक्सपियर ने अपने एक नाटक का विषय बनाया है।

ये बैंको की करतूतें थीं।

पहला हत्यारा : हमें आपने
बतलाई थीं;

मैकबेथ : बतलाई थीं; और आज की
मुलाक़ात में मुझे और कुछ बतलाना है।
क्या स्वभाव में तुमने इतनी सहनशीलता
धारण कर ली, इसको यों ही जाने दोगे?
क्या तुम ऐसे धर्मध्वज हो, इस सज्जन की
औ' इसके बच्चों की कुशल मनाओगे तुम,
जिसने अपनी विकट भुजा से तुम्हें क़ब्र के
निकट झुकाया, और तुम्हारी सन्तानों को
सदा के लिए रंक बनाया?

पहला हत्यारा : हम मनुष्य हैं।

मैकबेथ : निश्चय मानव की श्रेणी में आते हो तुम;
जिस प्रकार जंगली, गली के और पालतू,
झबरे, कबरे, भूरे, पनिहे और दुनस्ले,
सब कुत्ते ही कहलाते हैं : गुण दिखलाने-
वाली सूची, पर, उनमें विभेद कर कहती
चुस्त, सुस्त, चालाक, पाहरू और शिकारी,
अलग-अलग वरदान मिला समृद्ध प्रकृति से
जिसको जैसा, उसको वैसा; इसके कारण
कुछ विशेषता उसमें जुड़ती, बाक़ी रहते
सभी धान बाईस पँसेरी; इन्सानों का
यही हाल है। अब, सूची में अगर तुम्हारा
कोई दर्जा, और नहीं तुम मानवता की
निम्न कोटि में, तो बतलाओ; और तुम्हें मैं
काम एक ऐसा सौंपूंगा जिसे अगर तुम
कर डालो तो शत्रु तुम्हारा मिट जाएगा;
मेरे दिल की प्रीति-निकटता तुम्हें मिलेगी;
वह जीता है जब तक मेरा जीना दूभर,
वह मर जाता है तो मुझको शान्ति मिलेगी।

दूसरा हत्यारा : मेरे मालिक, मैं वह हूँ जो इस दुनिया के
कुटिल प्रहारों से, धक्कों से इतना भभक
उठा है, मुझको इसकी कुछ परवाह नहीं मैं
जग को बेइज़्ज़त करने को क्या करता हूँ।

पहला हत्यारा : और दूसरा मैं हूँ, ऐसे भाग्य-चक्र में
पड़ा, आपदाओं से ऊबा कि मैं ज़िन्दगी
किसी दाँव पर लगा सकूंगा, चाहे जीतूं,
चाहे हारूं।

मैकबेथ : तुम दोनों बैंको को अपना
दुश्मन जानो।

दूसरा हत्यारा : मालिक जो कहते हैं, सच है।

मैकबेथ : वैसा ही वह मेरा भी है; और दुश्मनी
उसकी इतनी तीखी, उसका एक-एक पल
जीना मेरे मर्मस्थल को साल रहा है :
गो मैं खुलेआम, ताक़त से, उसे नज़र से
दूर हटा सकता हूँ जब मेरी मर्ज़ी हो,
तो भी मुझको ऐसा करना नहीं चाहिए;
कारण हैं कुछ मित्र जो कि प्रिय हम दोनों के,
और मुरौवत जिनकी तोड़ नहीं सकता हूँ;
चाहे मैं खुद उसे गिराऊँ, उसके गिरने
पर मैं आँसू ढलकाऊँगा : इसीलिए तो
मुझे तुम्हारी मदद चाहिए; भारी कारण
हैं जिनसे यह काम आम जनता की आँख
बचाकर करता।

दूसरा हत्यारा : आप हमें जो आज्ञा देंगे
हम पालेंगे।

पहला हत्यारा : चाहे इसमें प्राण हमारे···

मैकबेथ : तेज तुम्हारी आँखों में है। अधिक से अधिक
घण्टे भर में मैं तुमको समझा देता हूँ
कहाँ घात में बैठा जाए, और सूचना
भी देता हूँ ठीक समय की, सच्चे पल की;
क्योंकि आज ही रात काम यह हो जाना है,
और महल से कुछ दूरी पर; ध्यान रहे यह,
मेरे ऊपर दाग़ न आए; औ' उसके ही
साथ, कि जिसमें कोई खोंच-खुरच मत छूटे,
इसी अँधेरे में उससे इकलौते बेटे
का भी तुम्हें सफ़ाया करना है जो उसके
साथ रहेगा; उसका मेरे पथ से हटना
उतना ही मेरे मतलब का जितना उसके
दुष्ट पिता का। जाकर अलग इरादा अपना
पक्का कर लो; मैं जल्दी ही तुम्हें मिलूँगा।

दूसरा हत्यारा : मालिक, हम पक्का कर चुके इरादा अपना।

मैकबेथ : सीधे तुम्हें बुला लूँगा मैं : अन्दर बैठो।—

[हत्यारे जाते हैं

बैंको तेरी रूह स्वर्ग यदि जा पाएगी
तो निश्चय है, आज रात को ही जाएगी।

[बाहर जाता है

दूसरा दृश्य

वही। दूसरा कमरा

(सेवक के साथ लेडी मैकबेथ आती है।)

लेडी मैकबेथ : क्या बैंको दरबार से गए ?

सेवक : देवि, गए, पर
आज रात ही लौट रहे हैं।

लेडी मैकबेथ : जाओ और कहो राजा से मैं उनसे कुछ
कहने को उनकी सुविधा की बाट देखती।

सेवक : देवि, कहूँगा।

[सेवक बाहर जाता है

लेडी मैकबेथ : कुछ न मिलता, सब कुछ खोता,
जहाँ कामना पूरी होती, हर्ष न होता :
हत्या करके भी जब हम सुख-चैन न पाएँ,
तो इस जीने से बेहतर है खुद मर जाएँ।

(मैकबेथ आता है।)

कहिए, श्रीमन्, आप अकेले क्यों रहते हैं,
घिरे ख़यालों से जिनमें है भरी उदासी,
दबे विचारों से जिनको तो साथ उन्हीं के—
सो जाना था जिनकी याद जगाते हैं वे ?
चिन्ता उसकी व्यर्थ मर्ज़ जो ला-इलाज है :
किया, सो किया।

मैकबेथ : हमने जख़्मी किया साँप को
किन्तु न मारा : घाव भरा तो फिर निकलेगा;
उसके साथ अदावत में नर्मी दिखलाना,
विषदन्तों को दावत देना। छिन्न-भिन्न हो,
लेकिन, जग का जाल, नष्ट परलोक-लोक हो
इसके पूर्व कि हम डर-डरकर कौर उठाएँ
या उन भीषण स्वप्नों से आतंकित सोएँ,
जो हमको रातों को कम्पित करते रहते।
खिंचा शिकंजे में दिमाग़ ले, विक्षिप्तों की
तरह तड़पने से बेहतर है हम उन मुर्दों
के संगी हों जिनको अपनी शान्ति के लिए
हमने शान्त किया। डंकन है पड़ा क़ब्र में;
जीवन-ज्वर से मुक्त चैन से वह सोता है;
ग़द्दारी जो कर सकती थी सब कर गुज़री :
अस्त्र-शस्त्र, विष, गृह-विद्वेष, विदेशी हमला—
इनमें से कुछ नहीं उसे अब छू सकता है !

लेडी मैकबेथ : आएँ, श्रीमन् ! अपने चेहरे की सख़्ती पर
नर्मी लाएँ; आज रात को मेहमानों के

बीच आपके मुँह पर रौनक़ और ख़ुशी हो।

मैकबेथ : प्रिये, रहेगी; औ' तुम भी ऐसी ही दिखना।
ख़्याल रहे बैंको का : उसको ख़ासा आदर
देना आँखों से, बातों से : जब तक हमको
अपने पद को चाटुकारिता के जामे से
ढकना पड़ता और लगाना पड़ता चेहरा
मन का रूप छिपा रखने को, तब तक समझो
हम ख़तरे में।

लेडी मैकबेथ : ऐसी बातें आप न सोचें।

मैकबेथ : क्या बतलाऊँ !
प्रिये, बिच्छुओं से मेरा मस्तिष्क भरा है !
बैंको औ' फ़्लिएंस का जीना काल हमें है।

लेडी मैकबेथ : उन्हें काल ने दिया अमरता का पट्टा कब ?

मैकबेथ : यही तसल्ली है कि वार उन पर चल सकता।
अब प्रसन्न हो। इसके पूर्व कि चमगादड़ पर
खोल मठों से बाहर निकलें; इसके पूर्व कि
हाँक मसानी देवी का सुन घूर-कूर पर
जन्मे झींगुर झीनी झनकारों से रजनी
की तन्द्रिल घण्टियाँ बजाएँ, एक भयंकर
काम किया जाएगा।

लेडी मैकबेथ : उसका नाम सुनूँ तो ?

मैकबेथ : मेरी प्यारी, अभी न पूछो, काम सराहोगी
होने पर। आ तमसावृत रात, करुण दिन
के मृदु नयनों पर लपेट दे पट्टी औ' तू
अपने ख़ूनी अलख हाथ से उस महान पट्टे
को कर दे रद्द फाड़कर टुकड़े-टुकड़े,
जिसके भय से मैं पीला हूँ !—अन्धकार बढ़ता
आता है; औ' कौओं का झुण्ड वनों की
ओर जा रहा;
भली वस्तुएँ दिन की नमित, निंदासी होतीं,
जबकि निशा के काले कारिन्दे चौकन्ने
हो शिकार पर झपट रहे हैं। मेरे शब्दों
पर अचरज है, पर अपने को रक्खो निश्चल,
आदि बुरा जो उसे बुराई से मिलता बल।
आओ, मेरे साथ चलो अब।

[**दोनों बाहर जाते हैं**

तीसरा दृश्य

वही उपवन : बीच में एक रास्ता जो
महल को जाता है।

(तीन हत्यारे आते हैं।)

पहला हत्यारा : किसने तुझसे कहा साथ लगने को ?
तीसरा हत्यारा : मैकबेथ।
दूसरा हत्यारा : अविश्वास हम करें न इस पर; हमको छिपना
जहाँ और जो कुछ करना है, ठीक-ठीक यह
बतलाता है :
पहला हत्यारा : तो तू भी आ, साथ खड़ा हो।
पच्छिम में अब भी दिन की कुछ किरणें अटकीं :
पिछड़ा पन्थी एड़ लगा तेज़ी से बढ़ता
जिससे दिन रहते सराय पर वह आ पहुँचे;
जिसकी ताक लगाए हैं हम, पास पहुँचने
ही वाला है।

(नेपथ्य से घोड़ों की टापों की आवाज़ आती है।)

तीसरा हत्यारा : घोड़ों की टापें सुन पड़तीं।
बैंको : **(नेपथ्य से)**
ज़रा रोशनी तो दिखलाओ।
दूसरा हत्यारा : ठीक वही है :
बाक़ी जो आनेवाले थे सब हाते में
पहुँच गए हैं।
पहला हत्यारा : उसके घोड़े तो जाते हैं
चक्कर देकर—
तीसरा हत्यारा : एक मील का, पर वह प्रायः
सब लोगों की तरह, यहाँ से सिंहद्वार तक
पैदल जाता।

(आगे-आगे मशाल हाथ में लिये फ्लिएंस आता है, पीछे-पीछे बैंको।)

दूसरा हत्यारा : दिखी रोशनी, दिखी।
तीसरा हत्यारा : वही है।
पहला हत्यारा : चुस्त रहो अब।
बैंको : आज रात को वर्षा होगी।
पहला हत्यारा : होने भी दो।

(बैंको पर तीनों वार करते हैं।)

बैंको : हाय, दग़ा ! बेटे फ़्लिएंस भग, जी लेकर भग !
शायद तू मेरा बदला ले—अरे नराधम !

(बैंको मर जाता है, फ्लिएंस भाग जाता है।)

तीसरा हत्यारा : किसने यह रोशनी बुझा दी ?
पहला हत्यारा : ठीक यही था।
तीसरा हत्यारा : एक मरा बस : पुत्र भग गया।
दूसरा हत्यारा : महा ज़रूरी
भाग काम का बिगड़ गया तब।
पहला हत्यारा : तो भी चलें बताएँ जितना काम बना है।

[सब जाते हैं

चौथा दृश्य

महल का बड़ा कमरा

(खाने की मेज लगी है। एक ओर से मैकबेथ और दूसरी ओर से रास, लेनाक्स, सरदार लोग और नौकर-चाकर आते हैं।)

सरदार लोग : महाराज की जय हो !
मैकबेथ : अपनी-अपनी श्रेणी सभी जानते, बैठें :
आगे-पीछेवालों, सबको, दिल से स्वागत !
सरदार लोग : महाराज को धन्यवाद है।
मैकबेथ : मेज़बान की तरह आज हम मेहमानों में
घूम-घूमकर सबसे सादर मिलें-जुलेंगे।
रानी राजसिंहासन पर बैठी हैं; लेकिन
उचित समय पर उनके द्वारा सबका स्वागत
किया जायगा।
लेडी मैकबेथ : **(नेपथ्य से)** श्रीमन्, मेरी ओर से कहें,
सभी हमारे मित्रों का दिल से स्वागत है।

(कहते-कहते लेडी मैकबेथ आती है और खाने की मेज पर बैठ जाती है।)

(पहला हत्यारा दरवाजे से झांकता दिखाई देता है।)

मैकबेथ : **(लेडी मैकबेथ से)**
देख, हृदय से धन्यवाद सब तुझको देते।
एक बराबर दोनों पाँतें, वहाँ बीच में
मैं बैठूँगा। खुलकर खूब हँसो-बोलो सब;
अब शराब का दौर चलेगा।—**(हत्यारे से)**
तेरे मुँह पर
खून लगा है।

हत्यारा : तो इसको बैंको का समझें।
मैकबेथ : उसके अन्दर होने से बेहतर यह तुझ पर।
काम तमाम हो चुका उसका ?
हत्यारा : मालिक, उसका गला कट चुका; मैंने काटा।
मैकबेथ : तू सबसे अच्छा गरकट है; तुझसे बढ़कर
वह फ़्लिएंस की गति भी जिसने ऐसी की हो।
यदि तूने की, अद्वितीय तू।
हत्यारा : हे राजेश्वर,
वह फ़्लिएंस तो बचकर भागा।
मैकबेथ : तब फिर मैं आशंकित होता : वर्ना होता
पूर्ण सुरक्षित; ठोस, जिस तरह सँगमरमर है;
अडिग, जिस तरह चट्टानें हैं; मुक्त, निरंकुश,
सब पर छाई हुई हवा-सा; लेकिन मैं हूँ
अब सीमित, संकुचित, सम्पुटित, बद्ध विनाशक
भय, संशय से।—पर बैंको तो पार हो गया ?
हत्यारा : मेरे मालिक, वह नाले में मरा पड़ा है;
उसके सिर के ऊपर गहरे बीस घाव हैं;
एक प्राण लेने को काफ़ी।

(इस बीच मदिरा के प्याले भरे जाते हैं, और मैकबेथ और लेडी मैकबेथ के स्वास्थ्य के लिए सरदार लोग उन्हें ऊपर उठाते हैं।)

मैकबेथ : **(मेहमानों से)** धन्यवाद है।—
(अपने आप)
बड़ा साँप मर गया : सँपोला भाग गया जो
रखता जीवन-शक्ति कि जिससे विष उगलेगा,
अभी नहीं हैं दाँत —**(हत्यारे से)**
भाग जा, हम इस पर कल
बात करेंगे।

[हत्यारा चला जाता है।

लेडी मैकबेथ : राजन्, आप नहीं करते हैं
ख़ातिरदारी : उदासीन मेहमानों के प्रति
होना, दावत को सराय का खाना करना;
आवभगत से यह दी जाती। यह न हुई तो
घर खाना ही ज़्यादा अच्छा; तश्तरियों में
स्वाद तकल्लुफ़ से आता है। जहाँ नहीं यह
वहाँ बैठकें फीकी लगतीं।
मैकबेथ : मेरी ग़लती,
अब दुरुस्त हाज़मा भूख की करे ख़ुशामद,
और सेहत, हाज़मा-भूख की।
लेनाक्स : महाराज भी

अपना आसन ग्रहण करें अब ।

(बैंको का प्रेत आता है और मैकबेथ की जगह पर बैठ जाता है ।)

मैकबेथ : गौरवपुंज हमारे बैंको भी यदि यहाँ
उपस्थित होते, तो स्वदेश के सब नरपुंगव
आज हमारे घर पर होते ; मैं चाहूँगा
अनुपस्थिति का कारण उनकी हृदय-हीनता
ही साबित हो, और न कोई दुःखद घटना !

रास : अनुपस्थिति से, श्रीमन्, अपनी बात न रखने
के वे दोषी । राजन् करिए कृपा, आपके
साथ बैठने का गौरव हम कब पाएँगे ।

मैकबेथ : जगह कहाँ है ?

लेनाक्स : यहाँ आपकी जगह सुरक्षित ।

मैकबेथ : कहाँ ?

लेनाक्स : यहाँ पर, मेरे मालिक । है क्या जिससे महाराज
यों चौंक रहे हैं ?

मैकबेथ : यह किसकी कारिस्तानी है ? :

सरदार लोग : क्या राजेश्वर ?

मैकबेथ : तू कह सकता नहीं कि मेरी कारिस्तानी :
अपन रक्त-रँगे बालों को हिला न मुझ पर ।

रास : उठो, सज्जनो; महाराज का जी ख़राब है ।

लेडी मैकबेथ : योग्य बन्धुओ, बैठो । राजा अक्सर ऐसे
हो जाते हैं; ऐसा हाल जवानी से है :
कृपया बैठें; ज़रा देर का यह दौरा है,
ख़्याल बदलते ही फिर अच्छे हो जाएँगे ।
और चिढ़ेंगे अगर आप इनको घूरेंगे,
और तबीयत बिगड़ जायगी; खाना खाएँ;
इनकी ओर ध्यान ही मत दें ।

(मैकबेथ से)—
आप मर्द हैं ?

मैकबेथ : बेशक, और बहादुर जिसमें इतनी हिम्मत
उसे देखता जिसे देख शैतान डरेगा ।

लेडी मैकबेथ : लौह-पुरुष ! यह है केवल तस्वीर आपके
डर की : सिर्फ़ कटार हवा की जो कि आपने
कहा, आपको डंकन तक पहुँचा आई थी ।
झूठे डर से ऐसे बकना और चौंकना
उन कहानियों में फबता है जो नानी से
सीख औरतें जाड़े की ठण्डी रातों में
आग तापती कहतीं-सुनतीं । क्या बेशर्मी !
आप इस तरह अपना चेहरा क्यों बिगाड़ते ?
सब कुछ करके आप सिर्फ़ ख़ाली कुरसी को

घूर रहे हैं।

मैकबेथ : ज़रा उधर को आँखें फेरो! नजर घुमाओ!
दृष्टि गड़ाओ! देखो! कैसे तुम कहती हो?
क्यों, किसकी परवाह मुझे है? शीश हिला सकता
है तू तो जीभ भी हिला—हम जिनको दफ़ना
आते हैं, अगर हमारे मुर्दाखानों
से, कब्रों से वापस आएँ, तो अच्छा है
हम अपने शव चीलों-कौओं को खिलवा दें।

[**बैंको का प्रेत गायब हो जाता है**

लेडी मैकबेथ : जड़ता में क्या बिल्कुल ही कापुरुष हो गए?

मैकबेथ : अगर यहाँ मैं खड़ा, उसे मैंने देखा था।

लेडी मैकबेथ : छि: बेशर्मी!

मैकबेथ : भूत काल में जबकि मानवी
न्याय-शील से जन-समाज यह शान्त-सुरक्षित
नहीं बना था, ख़ूनख़राबी बहुत हुआ था;
और बाद को भी हत्याएँ बहुत हुई हैं,
छाती को थर्रानेवाली : एक समय था,
भेजा निकला इधर, उधर इन्सान मर गया,
और मामला खत्म वहीं पर; लेकिन अब तो
सिर पर अपने बीस घाव ले फिर उठता है,
और हमारी कुरसी से हमको ढकेलता।
हत्या पर कम, इस हरकत पर ज़्यादा अचरज।

लेडी मैकबेथ : लायक नायक, सारे प्यारे मित्र आपके
इन्तज़ार कर रहे आपका।

मैकबेथ : भूल गया था।—
मेरे सच्चे, सज्जन मित्रो, मेरे बारे
में मत सोचो; मुझे एक अद्भुत बीमारी;
मुझे जाननेवालों को कुछ बात नहीं यह।
चलो, मुहब्बत-सेहत सबों को; बैठूँगा मैं;—
मदिरा देना; पूरा भर दो :—मैं पीता हूँ
सब लोगों की खुशी के लिए, औ' अपने प्रिय
साथी बैंको की ख़ातिर जिनकी अनुपस्थिति
हमें अखरती; काश यहाँ पर वे भी होते!
सबकी खातिर, उनकी ख़ातिर हम पीते हैं,
और पिएँ सब सबकी ख़ातिर।

सरदार लोग : सारी सेवा-
भक्ति हमारी महाराज को।

(बैंको का प्रेत फिर आता है।)

मैकबेथ : भाग! आँख से दूर चला जा! गड़ मिट्टी में!
ठण्डा तेरा ख़ून, हड्डियाँ मज्जाहत हैं;
तेरी इन आँखों में, जिनसे तू लिलोरता,

कोई जोत नहीं बाक़ी है ।

लेडी मैकबेथ : इस हरकत को,
हे सरदारो, सिर्फ़ हस्बमामूल समझिए;
और दूसरी बात नहीं है ; बस, अवसर की
हँसी-खुशी में विघ्न पड़ गया ।

मैकबेथ : मैं कर सकता
जो कि मर्द कोई कर सकता :
आगे आ तू बीहड़ रूसी रीछ की तरह,
बख़्तरधर गैण्डे, अफ़्रीकी चीते जैसा;
इसे छोड़कर किसी रूप में, पर मेरी इस्पाती
मनोशिराएँ कम्पित कभी न होंगी :
या तू फिर से जीवित हो जा, और खुले में
खड्ग हाथ में लेकर मेरा मुक़ाबला कर :
डरकर पीछे अगर हटूँ तो तू कह, बेशक,
मुझे किसी बच्ची का गुड्डा । भाग, भयंकर
भुतने ! झूठी नक़ल, दूर हट !—

[**बैंको का प्रेत ग़ायब हो जाता है**

यह कैसा है :—
उसके जाते ही मैं फिर से पहले जैसा ।—

(**सरदार लोग उठने लगते हैं ।**)

आप कृपा कर बैठे रहिए,बैठे रहिए ।

लेडी मैकबेथ : खूब रंग में भंग आपने किया, उखाड़ी
बढ़िया बैठक, बलिहारी इस पागलपन की ।

मैकबेथ : क्या ऐसी चीज़ें हो सकतीं औ' गरमी के
बादल-सी हम पर घिर सकतीं बिना हमें अचरज
में डाले ? तुम मेरे दिमाग़ को अपने
से दुर्बल साबित करती हो, जबकि देखता
ऐसे दृश्यों के आगे भी तुम गालों की
स्वाभाविक लाली रख सकतीं, जब मेरा मुख
डर से पीला पड़ जाता है ।

रास : दृश्य कहाँ का,
मेरे मालिक ?

लेडी मैकबेथ : कृपा करें, इनसे मत बोलें;
और खराब तबीयत इससे हो जायेगी;
कुछ पूछेंगे तो बिगड़ेंगे । नमस्कार है
सब लोगों को :—श्रेणी-शिष्टाचार छोड़ सब
साथ विदा हों ।

लेनाक्स : नमस्कार है; महाराज की
सेहत ठीक हो ।

लेडी मैकबेथ : सब लोगों को नमस्कार है ।

[सरदार लोग और सेवक बाहर जाते हैं।

मैकबेथ : कहा गया है, हत्या का बदला हत्या है;
खून, खून का : पत्थर हिलकर, पेड़ बोलकर,
और कार्य-कारण सम्बन्ध समझनेवाले
चतुर नजूमी नीलकण्ठ, कौओं, चिड़ियों से
छिपे से छिपे हत्यारे का भेद खोलते।—
रात जा चुकी होगी कितनी ?

लेडी मैकबेथ : गयी समझिए,
गो यह कहना कठिन सबेरा हो आया है।

मैकबेथ : मैकडफ़ कहता है, मेरी आज्ञा पर हाज़िर
होने से इन्कार उसे है; क्या कहती हो ?

लेडी मैकबेथ : श्रीमन्, उसे आपने क्या बुलवा भेजा था ?

मैकबेथ : ऐसा सुनता हूँ; पर मैं बुलवा भेजूंगा।
कोई ऐसा नहीं कि जिसके घर के अन्दर
मैं जासूस नहीं रखता हूँ। कल जाऊँगा,
औ' तड़के ही, भूत-भगिनियों से मिलने को :
वे कुछ और बताएँगी; अब घृणित से घृणित
विधि से जो कुछ बुरी से बुरी होने को है,
उसे जानने को मैं पूरी तरह तुला हूँ।
मेरा, अगर, भला होता है तो औरों की,
भले, भलाई जाय भाड़ में : रक्त-धार में
इतने गहरे पैठ चुका हूँ, जो ठहरूँ तो
पीछे हटना आगे बढ़ने-सा ही दुष्कर।
जो विचित्र बातें मेरे दिमाग़ के अन्दर
चक्कर करतीं, वे हाथों में ली जाएँगी;
समझी जाने के पहले ही की जाऊँगी।

लेडी मैकबेथ : सब रोगों की दवा, आपको नींद चाहिए।

मैकबेथ : चलो सो रहें। मेरा अद्भुत दोष यही है,
मैं नौसिखिए-सा डरता जो मँजा नहीं है।
अब भी हम इन कामों में बिल्कुल कच्चे हैं।

[दोनों जाते हैं

पाँचवाँ दृश्य

मैदान

(बादल गरजता है। एक ओर से तीनों डाइनें और दूसरी ओर से मसानी देवी आकर मिलती हैं।)

पहली डाइन : कहो मसानी देवी, हमसे रूठी क्यों हो ?

मसानी देवी : सुनो, ढीठ, मुँहज़ोर डुकरियो, जो तुम हो भी,
मैं जो तुमसे रूठ गई हूँ, उसका कारण :—
कैसे करने की जुर्रत की
तुमने मैकबेथ से व्यापार
अपनी दो-अर्थी बातों से
जो ली उसने हाथ कटार?
और तुम्हारे सब मन्त्रों की
मलकिन जो मैं एक प्रधान,
जिसके हथकण्डों से होता
सारी दुनिया का नुक़सान
उसे न तुमने कभी बुलाया
उसका भी हो इसमें भाग
वह भी अपना हुनर दिखाए,
और सुनाए अपना राग।
बात बुरी यह सबसे, तुमने
किया-धरा इतना उत्पात
जिसके कारण, वह ऐसा नर
नहीं किसी की सुनता बात।
वह द्रोही है, वह कोही है,
जैसी सारे जग की रीति,
अपना उल्लू सीधा करने
को करता है तुमसे प्रीति।
अभी वक़्त है, चलो गुफा में,
जो है बैतरनी के तीर,
वहीं पूछने को पहुँचेगा
प्रातः वह अपनी तक़दीर।
कर इकट्ठे अपने बर्तन,
जन्तर-मन्तर सारे साज;
आज रात मुझको करना है
एक भयंकर मारू काज।
मैं उड़ती हूँ, मध्य दिवस के
पहले करना भारी काम,
चन्द्र-कोर पर लटक रहा है
एक ओस का कण अभिराम।
धरती पर गिरने से पहले
मैं उस कण को लूँगी लोक,
औ' जादू से छान भरूँगी
उसके अन्दर शक्ति अमोघ;
जिससे नकली प्रेत उठेंगे,
जिनकी माया के बलवान
फन्दे में फँसकर भोगेगा
वह जीवन के कष्ट महान।

अवहेला करके क़िस्मत की
और मौत का कर उपहास
बुद्धि, शील, भय सबके ऊपर
पहुँचा देगा अपनी आस :
है मालूम तुम्हें, बेफ़िक्री
है मनुष्य की दुश्मन ख़ास।

(नेपथ्य में गाना होता है : 'आओ मसानी आओ', आदि।)

सुनो। बुलावा आया मुझको :
मेरा नन्हा प्रेत विभोर
कुहरे के बादल में बैठा
देख रहा है मेरी ओर।

[बाहर जाती है

पहली डाइन : आओ जल्दी चलें : शीघ्र ही वह लौटेगी।

[तीनों डाइनें चली जाती हैं

छठा दृश्य

फ़ारेस। महल का कमरा

(एक सरदार के साथ लेनाक्स आता है।)

लेनाक्स : मेरी पहले की बातों में ठीक वही था
जो तुमने सोचा था, उनमें अर्थ और भी :
मुझे सिर्फ़ इतना कहना है, क्या कमाल का
काम हुआ है। कृपासिन्धु डंकन के ऊपर
मैकबेथ ने करुणा की, लेकिन कब ?—मरने पर !
वीर बाँकुरा बैंको निकला बड़ी रात को ?
जिसकी हत्या, यदि तुम कहना चाहो, कह लो,
फ़्लिएंस ने की, क्योंकि फ़्लिएंस भाग निकला है।
रात देर से कभी निकलना नहीं चाहिए।
कौन नहीं सोचता कि डोनलबेन-मैलकम
का अपने गुणपुंज पिता की हत्या करना
कितनी दानवता थी ? कितना घृणित सत्य है !
कितना दुःख हुआ मैकबेथ को ! शुद्ध क्रोध में,
क्योंकि किसी भी ज़िन्दादिल को गुस्सा आता
यदि वे कहते, 'बेक़सूर हम।' इसीलिए तो
मैं कहता हूँ, क्या खूबी से उसने सारे

काम निकाले : और मुझे इसका निश्चय है
यदि डंकन के बेटे उसके बन्दी होते—
(ईश्वर ने चाहा, तो ऐसा कभी न होगा ।)
उन्हें पता चलता कि पितृ-हत्या का फल क्या;
औ' फ़्लिएंस भी इसे जानता । पर चुप रहना
ही अच्छा है !—क्योंकि खरी कहने के कारण,
और चूँकि ज़ालिम की दावत में वह शामिल
नहीं हुआ था, मैकडफ़ पर, सुनता हूँ, उसकी
कोपदृष्टि है । श्रीमन्, क्या बतला सकते हैं
कहाँ आजकल है वह ?

सरदार : बड़ा पुत्र डंकन का
जिससे ज़ालिम ने उसका हक़ छीन लिया है,
अंग्रेज़ी दरबार में बसा; इस उदारता
से पवित्र एडवर्ड ने उसे अपनाया है,
ऐसा आदर-मान दिया है, जैसे उसकी
भाग्य-क्रूरता का उनको कुछ ज्ञान नहीं है ।
मैकडफ़ वहीं गया है उसकी मदद के लिए,
उस पावनतम राजा से विनती करने को,
पराक्रमी योद्धा सिवर्ड, उसके सुपुत्र को
उत्तेजित करने को, जिनकी सहायता से
(ओ' ईश्वर की दया-कृपा से सफल काम हो)
हम फिर सुख की रोटी खाएँ, नींद चैन की
सोएँ अपनी जेवनारों से तलवारों की
धार हटाएँ, सच्चाई से सेवाएँ दें,
आज़ादी से आदर पाएँ, जिनको अब हम
तरस गए हैं । और ख़बर यह सुनकर ज़ालिम
आनन-फ़ानन, कैसे उसने दो रखवाले
मार गिराए, नींद-नशे में जो डूबे थे ।
काम भलाई का था : हाँ, चतुराई का भी;
इतना झल्लाया है उसने रण की तैयारी
कर ली है ।

लेनाक्स : क्या मैकडफ़ को बुलवाया था ?

सरदार : बुलवाया था : लेकिन उसने साफ़ कह दिया,
'श्रीमन्, मैं तो आ न सकूँगा ।' इस पर उसके
हरकारे ने नाक फुलाकर शीश हिलाया
और कहा, 'हूँ..., जैसे उसका मतलब यह था,
वक़्त चखाएगा तुमको इस उत्तर का फल ।

लेनाक्स : बस इससे वह चौकस रहने की शिक्षा ले,
और बुद्धिमानी इसमें है, पास न फटके ।
काश कि कोई देवदूत अम्बर में उड़ता
अंग्रेज़ी दरबार पहुँचता औ' उसके आने
के पहले ही उसका सन्देश सुनाता

जिससे पापी राज-दण्ड से शासित मेरे
दुखी देश पर जल्द सुखों की पुण्य वृष्टि हो !

सरदार : मेरी भी प्रार्थना साथ में उसके जाए।

[दोनों बाहर जाते हैं

चौथा अंक

पहला दृश्य

अँधेरी गुफ़ा। बीचोबीच में एक उबलता हुआ कड़ाह

(बिजली की कड़क। तीन डाइनें आती हैं।)

(नेपथ्य में तीन बार बिल्ली की बोली)

पहली डाइन : बिल्ली की तीसरी पुकार।

(नेपथ्य में चार बार सुअर की बोली)

दूसरी डाइन : घुड़क सुअर की चौथी वार।

(नेपथ्य में मरचिरैया की बोली)

तीसरी डाइन : नर-खग बोला, हो तैयार।

पहली डाइन : चल कड़ाह के चक्कर खायँ;
ज़हरी अँतड़ी अन्दर जाय।—
जो ठण्डे पत्थर के नीचे
विष रिसता था आँखें मीचे
एकतिस दिन तक, एकतिस रात,
सोते में जो आया हाथ,
ओ दादुर, तू सबसे पहले
इस मन्त्रित बर्तन में उबले।

सब डाइनें : दुगुना-दुगुना हो दुख-दाह :
लपट, धधक उठ; उबल, कड़ाह !

दूसरी डाइन : छिला-कटा दलदलिया साँप
सिझे कड़ाही में, दे भाप;
मेंढक के पिछले पंजे औ'
गिदगिदान की आँखें लाल,
जीभ किसी पागल कुत्ते की
चमगादड़ के पर का बाल,
विषधर की काँटे-सी जिह्वा

औ' अन्धे बिच्छू का डंक,
लँगड़ी बिस्तुइया की टाँगें,
उल्लू के पट्ठे का पंख :—
सब मिलकर यम की खिचड़ी-सा
खूब पके, उबले, उछले;
जादू से दुख-दाह खड़ा हो
जिससे सब दुनिया दहले।

सब डाइनें : दुगुना-दुगुना हो दुख-दाह :
लपट, धधक उठ; उबल, कड़ाह !

तीसरी डाइन : कड़ी अज़दहे की चमड़ी औ'
तेज़ भेड़िये के दस दाँत,
लोथ लटी बुढ़िया डाइन की,
मगरमच्छ की फूली आँत;
मूल धतूरे का ऐसा जो
खोद निकाला आधी रात,
जिगर यहूदी का बकवासी,
गुर्दे बकरे के छः-सात,
छाल सरो की छील उतारी
जब हो चाँद गहन की ओट,
नाक तुरुक की लम्बी-पतली,
तातारी का मोटा होठ;
उँगली उस बच्चे की जिसको
जननेवाली जबर छिनाल
पैदा होते ही उसका दम
घोट गई नाली में डाल :—
सब कड़ाह के अन्दर छोड़ो,
औ' चीते का अन्तड़ भी,
गाढ़ी औ' लबदार कढ़ी का
पूरा हो सामान सभी।

सभी डाइनें : दुगुना-दुगुना हो दुख-दाह :
लपट, धधक उठ; उबल, कड़ाह !

दूसरी डाइन : अब छिड़को बन्दर का खून :
जादू हो पक्का, परिपूर्ण।

(मसानी देवी आती है।)

मसानी देवी : खूब किया मेहनत से काम,
फल में सबका होगा नाम।
अब कड़ाह के चारों ओर
नाचो परियों-सी मदविभोर,
और बढ़े जादू का जोर।

(नेपथ्य से गाने-बजाने की आवाज़)

दूसरी डाइन : लगी अँगूठे बीच खराश,
आता है कोई बदमाश।—

(**नेपथ्य में दरवाजा पीटने की आवाज़**)

हुई पुकार,
खोलो द्वार।

(**मैकबेथ आता है।**)

मैकबेथ : गुपचुप, आधी रात, अँधेरे में, डोकरियो,
क्या करती हो?

सब डाइनें : जिसका कोई नाम नहीं है।

मैकबेथ : मैं कहता हूँ, क़सम तुम्हें अपनी विद्या की,
किसी तरह से भी तुम जानो, मुझे बताओ :
भले बवण्डर तुम्हें उठाने पड़ें, लड़ें वे
गिरजाघर की मीनारों से; भले फेन से
भरी तरंगें जलपोतों को डाल भँवर के
बीच डुबा दें; भले खड़ी फ़सलें चौपट हों;
वृक्ष टूटकर गिरें; भले ही पहरेदारों
के सिर पर गढ़ भहराएँ; प्रासाद-पिरामिड
अपनी बुनियादें छूने को शीश झुकाएँ;
बीज-कोष कुदरत का सारा नष्ट-भ्रष्ट हो;
औ' चाहे विध्वंस अघाए, ऊबे तो भी,
जो मैं तुमसे पूछ रहा हूँ मुझे बताओ।

पहली डाइन : बोलो।

दूसरी डाइन : पूछो।

तीसरी डाइन : हम प्रश्नों का उत्तर देंगी।

पहली डाइन : कहो, सुनोगे हमसे उत्तर, या कि हमारे
गुरुओं के मुख?

मैकबेथ : उन्हें बुलाओ, देखूँ तो मैं।

पहली डाइन : नौ बच्चों को खानेवाली
सुअरी का अब खून उँड़ेल.
छोड़ लपट के अन्दर फाँसी
के फन्दे से निकला तेल।

सब डाइनें : ऊपर के नीचे को चाहे
नीचे के ऊपर आओ,
अपने को, अपने करतब को
चतुराई से दिखलाओ।

(**बिजली की कड़क। पहली छाया, टोप-सज्जित सिर।**)

मैकबेथ : ओ रहस्यमय शक्ति बता—

पहली डाइन : जो तेरे मन में
ज्ञात उसे है : सुन चुप, कह देगा वह क्षण में।

पहली छाया : मैकबेथ ! मैकबेथ ! मैकबेथ ! मैकडफ़ से सचेत रह,
फ़ाइफ़पति से रह सचेत ! बस, जाने को कह ।

[**पहली छाया नीचे चली जाती है**

मैकबेथ : जो भी तू हो, इस आगाही का कृतज्ञ हूँ :
तूने मेरे डर पर उँगली रख दी ।—लेकिन······
पहली डाइन : वह न रुकेगा । देख दूसरा अब आता है
जो पहले से अधिक बली है ।

(**बिजली की कड़क : दूसरी छाया, खून सना बच्चा**)

दूसरी छाया : मैकबेथ ! मैकबेथ ! मैकबेथ !—
मैकबेथ : तीन कान होते तो सुनता मैं तीनों से ।
दूसरी छाया : खूनी, धाकड़ और धुनी बन, मानव बल पर
अट्टहास कर, क्योंकि नारि से जन्मा जो नर
मैकबेथ का कुछ कर न सकेगा ।

[**दूसरी छाया नीचे चली जाती है**

मैकबेथ : तब जी, मैकडफ़ : मुझे किसलिए तुझसे डर हो ?
पर निश्चित को परम सुनिश्चित कर लूँगा मैं,
और प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लूँगा क़िस्मत से :
तू न बचेगा जीता; जिससे कच्चे दिल के
डर से मैं कह सकूँ कि तू झूठी कहता है ।
सिर पर बिजली कड़क रही हो तो भी सोऊँ ।

(**बिजली की कड़क । तीसरी छाया, हाथ में पेड़ की शाखा लिये, मुकुट-सज्जित बच्चा**)

यह क्या है, जो राजपुत्र की भाँति उठ रहा
है, जो अपने बाल भाल पर गोला, ऊँचा
ताज राज-प्रभुता का पहने ?
सब डाइनें : सुन, चुप रहकर ।
तीसरी छाया : सिंह सदृश दम्भी बन सब चिन्ताएँ तजकर—
कौन झगड़ता, कौन बिगड़ता, और कहाँ पर
षड्यन्त्री हैं : अजय रहेगा मैकबेथ तब तक
डंसीनेन पहाड़ी तक बरनम बन जब तक
नहीं चला आता है ।

[**तीसरी छाया नीचे चली जाती है**

मैकबेथ : ऐसा कभी न होगा :
बन को कौन उभार सकेगा; ऐसा पोंगा
कहाँ, कहे जो तरु से अपनी धराबद्ध जड़
से हट जाए ? यह भविष्यवाणी शुभ-सुन्दर !

सिर न उठे, बाग़ियो; जब तलक बरनम बैठा,
उच्चासीन रहेगा मैकबेथ मूँछें ऐंठा :
अपना पूरा प्राकृत जीवन भोग करेगा,
साँसों का ऋण चुका, काल से उऋण मरेगा।—
हृदय मचलता, किन्तु जानने को यह फिर भी :
बतलाओ, यदि कला तुम्हारी बतला सकती,
क्या यह राज्य कभी बैंको की सन्तानों के
वश में होगा ?

सब डाइनें : और जानने का हठ मत कर।

मैकबेथ : तुम्हें बताना होगा मुझसे : नहीं बतातीं
तो अनन्त अभिशाप तुम्हारे सिर पर टूटे।
मुझे बताओ।—अब कड़ाह क्यों डूब रहा है ?

(नेपथ्य में डरावनी आवाज़ें होती हैं।)

औ' यह आवाज़ें कैसी हैं ?

पहली डाइन : दिखो।

दूसरी डाइन : दिखाओ।

तीसरी डाइन : दिखलाओ !

सब डाइनें : इसकी आँखों को दिखलाओ,
इसके दिल पर दुख ढाओ;
परछाईं बनकर तुम आओ,
परछाईं बनकर जाओ।

(आठ राजाओं की छाया, अन्तिम के हाथ में दर्पण, बाद को बैंको।)

मैकबेथ : तू बैंको के प्रेत-नुमा है : हट आगे से !
तेरे ताज, बाल से, मेरी आँखें जलतीं;—
और दूसरा शीश, मुकुटधर, तू, पहले-सा;—
और तीसरा है पिछले-सा :—गन्दखानियो !
क्यों यह मुझको दिखलाती हो ?—चौथा भी है ?—
आँखें सिहरो ! वंश प्रलय तक जाएगा क्या !
छठा ?—सातवाँ ?—और नहीं दिखलाई देगा :—
किन्तु आठवाँ भी है, जिसके कर में दर्पण,
जिसमें और बहुत-से दिखलाई पड़ते हैं;
कुछ के हाथों में दो गोलक, तीन दण्ड हैं।
दृश्य भयंकर !—अब मुझको लगता यह सच है;
क्योंकि खून से तर बैंको मुझ पर मुसकाता,
और उन्हें अपनी सन्तानें बतलाता है।
क्या ! ऐसा है ?

पहली डाइन : ऐसा ही सब है :—पर मैकबेथ
खड़ा हुआ क्यों आँखें फाड़ ?
उसका मन बहलाने को हम

खोलें खुशियों का भण्डार।
डाल हवा के ऊपर जादू
मैं कर दूँ संगीत प्रसार,
औ' तुम दोनों नाच दिखाओ
चतुराई से चक्कर मार;
जिससे यह भूपाल प्रतापी
करे खुशी से यह स्वीकार,
बीच हमारे आकर इसने
पाया है स्वागत-सत्कार।

[संगीत : डाइनें गाती हुई गायब हो जाती हैं

(नेपथ्य में घोड़ों की टापों की आवाज़)

मैकबेथ : कहाँ गईं वे ? ग़ायब ?—ये अशकुन की घड़ियाँ
पत्रे के ऊपर सदैव अभिशप्त रहेंगी !—
बाहरवालो, अन्दर आओ !

(लेनाक्स आता है।)

लेनाक्स : महाराज की
क्या आज्ञा है ?
मैकबेथ : तुमने भूत-भगिनियाँ देखीं ?
लेनाक्स : कहीं न, राजन् !
मैकबेथ : नहीं निकट से होकर निकलीं ?
लेनाक्स : नहीं कहीं से भी, राजेश्वर !
मैकबेथ : हवा विषैली
हो जिस पर वे चढ़कर फिरतीं; जायँ जहन्नुम
में जो उनका करें भरोसा !—मुझे सुनाई
दी थीं घोड़ों की टापें : कोई आया था ?
लेनाक्स : आए थे दो-तीन व्यक्ति स्वामी से कहने
को, मैकडफ़ इंग्लैण्ड भग गया।
मैकबेथ : तो मैकडफ़
इंग्लैण्ड भग गया ?
लेनाक्स : निश्चय, मेरे सच्चे स्वामी !
मैकबेथ : काल, कुटिल मेरी मंशाएँ जान पूर्व ही
तू उनमें बाधाएँ देता : चटुल इरादा,
जब तक उसके साथ न करनी भी जाए, जुल
दे जाता है। इस पल से हर बात हृदय में
आने के ही साथ हाथ में ली जाएगी।
और अभी, अपने ख़यालों को कामों का जामा
देने को, जो सोचा, कर डाला जाए :
मैकडफ़ के गढ़ पर चढ़कर मैं घेरा डालूँ;
फ़ाइफ़ को क़ब्ज़े में कर लूँ; औ' खाँडे की

धार उतारूँ उसकी बीवी, उसके बच्चे,
सभी अभागे उन लोगों को जो उसके कुल-
कुनबे के हैं। नहीं मूढ़ की भाँति डींगना;
ठण्डा होने के पहले यह लोह पीटना :
छायाओं से काम नहीं अब ! कहाँ गए जो
समाचार लाए थे ? उनसे मुझे मिलाओ।

[सब बाहर जाते हैं

दूसरा दृश्य

फ़ाइफ़। मैकडफ़ के गढ़ का कमरा

(लेडी मैकडफ़ अपने पुत्र और रास के साथ आती है।)

लेडी मैकडफ़ : किया उन्होंने क्या था, भागे देश छोड़ जो ?

रास : धीरज रक्खो, देवि !

लेडी मैकडफ़ : उन्होंने ही कब रक्खा :
पागलपन था भाग निकलना : कर न हमें जब,
डर हमको गद्दार बनाता।

रास : नहीं जानतीं
तुम यह उनका डर था या कि समझदारी थी।

लेडी मैकडफ़ : बड़ी समझदारी थी ! अपनी बीवी छोड़ी,
बच्चे छोड़े, कोठी, मालमता सब छोड़ा,
कहाँ ? जहाँ से भाग गए खुद। उनको हमसे
प्यार नहीं है : ऐसे हैं निर्मम-निर्मोही ;
चिड़ियों में जो सबसे छोटी, वह बेचारी
फुदकी अपने कच्चे-बच्चे लिए घोंसले
में बिल्ली के साथ लड़ेगी। डर सब कुछ है
और प्यार कुछ चीज़ नहीं है ; जबकि भागने
में कोई तुक-तर्क नहीं था, ऐसा करना
कौन समझदारी थी ?

रास : मेरी प्यारी बहना,
शान्त-चित्त अपने को रक्खो : सच मानो पति-
देव तुम्हारे गौरव-ज्ञान-विवेकवान हैं,
और ज़माने की हलचल को खूब समझते।
अधिक नहीं कहने का साहस : कठिन समय है,
जब हम हैं ग़द्दार और खुद नहीं जानते;
जब हम डरकर अफ़वाहों को सत्य मानते,
पर क्यों डरते, नहीं जानते; बस उतराते,
झटके खाते कभी इधर से, कभी उधर से

क्रुद्ध और विक्षुब्ध सिन्धु पर।—अब मैं चलता :
जल्दी ही मैं फिर आऊँगा। दो ही बातें
होनी हैं, या देश रसातल को जाएगा,
या ऊपर को उठ पहुँचेगा वहाँ जहाँ पर
वह पहले था।—मेरी प्यारी बहन, सुखी हो।

लेडी मैकडफ़ : **(लड़के की ओर संकेत करके)**
पितावान हो करके भी यह पिताहीन है।

रास : मेरा और यहाँ रुकना बेअक़्ली होगी,
इससे मेरी हेठी होगी, तुमको दिक़्क़तः
मुझे विदा दो।

[**बाहर चला जाता है**

लेडी मैकडफ़ : (लड़के से) रे, अब तेरे पिता मर गए :
बोल करेगा क्या तू अब? किस भाँति जिएगा?

पुत्र : माँ, जैसे चिड़ियाँ जीती हैं।

लेडी मैकडफ़ : कीड़े चुन-चुन?

पुत्र : जो पाऊँगा; वे भी तो ऐसे ही रहतीं।

लेडी मैकडफ़ : सुन, री चिड़िया! लासे, फन्दे और जाल में
कभी न फँस तू, और न पड़ पिंजरे के अन्दर।

पुत्र : कभी नहीं, माँ। नन्हीं चिड़ियाँ कौन पकड़ता?
बहुत कहो तुम, पिता हमारे नहीं मरे हैं।

लेडी मैकडफ़ : सच कहती हूँ : पिता तुझे अब कहाँ मिलेगा?

पुत्र : नहीं, तुम्हें पति कहाँ मिलेगा?

लेडी मैकडफ़ : चाहूँ तो मैं बीस खड़े बाज़ार ख़रीदूँ।

पुत्र : इतने अगर ख़रीदोगी तो फिर बेचोगी।

लेडी मैकडफ़ : तेज़ बोलनेवाला है तू;
छोटे बच्चे इतनी तेज़ी नहीं दिखाते।

पुत्र : क्या ग़द्दार पिता थे मेरे?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, वे थे ही।

पुत्र : माँ, ग़द्दार कौन होता है?

लेडी मैकडफ़ : जो झूठी क़समें खाता है, झूठ बोलता।

पुत्र : क्या वे सब ग़द्दार, इस तरह करते हैं जो?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, ग़द्दार हरेक, इस तरह करता है जो, और उसे
फाँसी पर लटका दिया जायगा।

पुत्र : जो झूठी क़समें खाते हैं, झूठ बोलते, क्या सबको
फाँसी पर लटका दिया जाएगा?

लेडी मैकडफ़ : एक-एक को।

पुत्र : कौन उन्हें फाँसी देगा, माँ?

लेडी मैकडफ़ : जो सच्चे हैं।

पुत्र : तब सब झूठ बोलनेवाले, झूठी क़समें खानेवाले
बेवक़ूफ़ हैं, वे इतने ज़्यादा हैं, मिलकर, सब बच्चों
को मार भगा सकते हैं, फाँसी दे सकते हैं।

लेडी मैकडफ़ : बन्दर, तब तो ईश्वर तुझे बचाए, लेकिन
यह तो बतला पिता तुझे अब कहाँ मिलेगा ?

पुत्र : अगर मर गए होते वे तो उन पर तुम रोती-धोतीं : पर,
अगर नहीं तुम रोती-धोतीं, तो अच्छे आसार,
कि जल्दी ही मैं नया पिता पाऊँगा।

लेडी मैकडफ़ : चतुर बोलके, तू कितनी बातें करता है !

(दूत आता है।)

दूत : देवि, आपका सदा भला हो ! मुझसे परिचित
आप नहीं हैं, किन्तु आपके ऊँचे पद से
मैं परिचित हूँ। मुझको डर है, कोई संकट
तुरत आप पर आनेवाला : अगर आप मेरी
मामूली-सी सलाह लें, यहाँ न ठहरें;
अपने बच्चे लेकर भागें। आप मुझे बर्बर
मत समझें, क्योंकि आपको डरा रहा हूँ;
अधिक बताना उससे बढ़कर जुल्म आप पर
ढाना होगा, जो कि आप पर होने को है।
ईश्वर करे आपकी रक्षा ! अब मैं नहीं
ठहर सकता हूँ।

[**बाहर जाता है**

लेडी मैकडफ़ : कहाँ भागकर जा सकती हूँ ?
मैंने किसका बुरा किया है। किन्तु भूलना
नहीं चाहिए, मैं हूँ उस विचित्र दुनिया में,
जहाँ बुरा कर बहुधा लोग बड़ाई पाते;
अच्छा करके कभी बड़ी नादानी करते :
तब क्यों, हाय, दलील, ज़नानी आगे रखकर
मैं कहती हूँ, मैंने किसका बुरा किया है ?
कौन लोग ये ?

(हत्यारे आते हैं।)

हत्यारा : बोल, कहाँ पर तेरा पति है ?

लेडी मैकडफ़ : जहाँ कहीं भी हों, वह ठौर अपावन ऐसा
नहीं कि तुझ-सा पतित वहाँ जा उन्हें मिल सके।

हत्यारा : तेरा पति ग़द्दारों में है।

पुत्र : झूठ बोलता, झबरे कुत्ते।

हत्यारा : तू भी, पिल्ले !

(छुरा भोंकता है।)

नमकहरामी के बच्चे ! ले !

पुत्र : इसने मुझे मार डाला, माँ, जल्दी भागो,
मैं कहता हूँ ! **(मर जाता है।)**

[‘मार डाला’ कहते हुए लेडी मैकडफ़ भागती है और हत्यारे उसका पीछा करते हैं

तीसरा दृश्य

इंग्लैण्ड। राजमहल का एक कमरा

(मैलकम और मैकडफ़ आते हैं।)

मैलकम : चलो किसी एकान्त जगह पर तरु-छाया में
बैठें, रोएँ औ' अपना दिल हल्का कर लें।

मैकडफ़ : इससे अच्छा बहादुरों की तरह कमर में
कस तलवारें अपनी बन्दी जन्मभूमि के
बन्धन काटें। प्रतिदिन सुबह नयी विधवाएँ
हा-हा करतीं; नये अनाथ सिसकते-रोते;
नये शोक से वदन व्योम का आहत होता,
औ' वह दर्द-भरी प्रतिध्वनि में क्रन्दन करता,
जैसे वह भी स्काटलैण्ड के साथ दुखी हो।

मैलकम : जो मानूँगा, वह झींखूँगा; जो जानूँगा,
वह मानूँगा, जो सहायता दे सकता हूँ,
जब अवसर अनुकूल मिलेगा, निश्चय, दूँगा।
सम्भव है, तुमने जो बात कही, वह सच हो।
यह जालिम जिसके कि नाम से मुख में छाले
पड़ जाते हैं, कभी भला समझा जाता था :
तुमने उससे प्रेम किया है; तुम पर उसने
नहीं अभी तक हाथ उठाया। मैं छोटा हूँ;
लेकिन मेरे द्वारा उससे कुछ पाने के
तुम अधिकारी हो सकते हो; अक्ल यही है,
क्रुद्ध देवता को खुश करने को तुम कोई
दुर्बल, दीन, अनाथ मेमना भेंट चढ़ा दो।

मैकडफ़ : धोखेबाज़ नहीं हूँ।

मैलकम : लेकिन मैकबेथ तो है।
जो अच्छे गुणवान, राजमद उन्हें कलंकित
कर देता है। लेकिन मुझको क्षमा करो तुम :
मैं कुछ भी सोचूँ, तुम जो हो, वही रहोगे।
स्वर्गदूत अब भी उज्ज्वल हैं गो उज्ज्वलतम
गिरे : भले ही शोभा का मुख सब प्रकार के
कलुष घेर लें, वह शोभामय बना रहेगा।

मैकडफ़ : मेरी आशा लुप्त हो गई।

मैलकम : सम्भवतः उस
जगह जहाँ पर मेरी शंका प्रकट हुई है।

क्यों पत्नी को, बच्चों को (धन-प्राण सगों को,
अटल स्नेह की गाँठों के बन्धन को) तुम क्यों
छोड़ चले आए जल्दी में, बिना बताए ?
यह मेरी प्रार्थना, कि मेरी शंकाओं में
अपनी मानहानि मत, मेरी रक्षा देखो :
मैं कुछ भी सोचूं, सम्भव है, जो कुछ तुमने
किया, ठीक हो।

मैकडफ़ : भीग, भीग, लोहू से, ओ रे
देश अभागे ! बढ़, रे अत्याचार निरंकुश,
सत्य नहीं साहस रखता, तेरा पथ रोके !
अन्यायों को सह, उनका आधार अडिग अब !
मुझे विदा दो, मेरे स्वामी : अन्यायी के
लम्बे-चौड़े राज्य, पूर्व की विपुल सम्पदा
की ख़ातिर भी मैं ग़द्दार नहीं बन सकता,
तुम कुछ समझो।

मैलकम : बुरा न मानो : मत समझो मैं
जो कहता हूँ वह इसलिए कि तुमसे मुझको
आशंका है। मुझे ज्ञात है कठिन जुए से
आज हमारा देश दबा है; वह रोता है,
रक्त-नहाता; प्रतिदिन आकर नया घाव उस-
पर कर जाता : पर आशा है मेरे हक़ में
हाथ उठेंगे; औ' उदार इंग्लैण्ड देश के
लोग, हज़ारों की संख्या में, मदद करेंगे :
पर जब ज़ालिम के सिर पर मैं पग रख लूँगा,
या जब उसको काट उठा लूँगा भाले पर,
तब भी मेरे दीन देश के ऊपर दूषण
पहले से ज़्यादा ही होंगे; मुसीबतें भी
ज़्यादा होंगी, और बहुत ज़्यादा क़िस्मों की;
उसके कारण, जो स्वदेश पर राज करेगा।

मैकडफ़ : कौन करेगा ?

मैलकम : मेरा मतलब अपने से है;
मुझे ज्ञात है मेरे मन के अन्दर कैसे-
कैसे दुर्गुण छिपे हुए हैं; उनके ज़ाहिर
हो जाने पर काला मैकबेथ हिम-सा उजला
दीख पड़ेगा, औ' मेरे अगणित दोषों की
तुलना में यह देश अभागा उसे मेमने-
सा समझेगा।

मैकडफ़ : कुम्भीपाक नरक के अनगिन
बाशिन्दों में ढूँढ़े से भी नहीं मिलेगा
ऐसा अधम पिशाच कि जो मैकबेथ से ज़्यादा
कलुष-भरा हो :

मैलकम : मान लिया वह ख़ूनी, भोगी,

लोभी, झूठा; सबको धोखा देनेवाला,
औ' उतावला, धँसा हुआ प्रत्येक पाप में
जिसका नाम लिया जा सकता; लेकिन मेरी
कामुकता की थाह नहीं है : उसके सागर
को भरने को सभी तुम्हारी बहू, बेटियों,
बहन, बीवियों, और बाँदियों का पत-पानी
दिया जाय तो भी वह ख़ाली रह जाएगा;
मेरी मंशा पर कितने ही मर्यादा के
बाँध बनाओ, मेरी प्रबल वासना सबको
बहा-ढहा देगी : ऐसे शासनकारी से
मैकबेथ अच्छा।

मैकडफ़ : सीमाहीन असंयमता को
प्रकृति नहीं सह सकती; इस दुर्गुण के कारण
कितने सुख-सिंहासन असमय रिक्त हुए हैं,
राजाओं का पतन हुआ है। फिर भी जो अपना,
उसको लेने से न डरो : जो सुख-भोग
तुम किया चाहो, आज़ादी से कर सकते हो;
सिर्फ़ ज़माने की आँखें इस भाँति बचाकर,
सीधे-सादे समझे जाओ। प्रतिभा का रुख़
इधर देखकर अपना तन अर्पण कर देने-
वाली बालाओं की कोई कमी नहीं है;
ऐसा गिद्ध तुम्हारे तन में नहीं बसा है
जो इतनों को हज़म कर सके।

मैलकम : किन्तु साथ ही
मेरे विकट विलासी मन के अन्दर उत्कट
लोभ बसा है : यदि मैं राजा बन जाता हूँ,
सरदारों का वध कर उनकी भूमि हरूँगा;
इसका माल खसोटूँगा, उसका घर लूँगा;
जितना पाऊँगा उससे उतनी ही मेरी
और-और की प्यास बढ़ेगी; निष्कारण ही
भक्त-भलों के साथ झगड़कर उनका सारा
धन हड़पूँगा, नाश करूँगा।

मैकडफ़ : इस लालच की
जड़, कामुकता के वासन्ती झड़-झोंके से
ज़्यादा गहरी, अधिक विघाती; वह वह खाँड़ा,
जिसकी धारों पर शाहों के शीश तिरे हैं :
तो भी न डरो; स्काटलैण्ड के पास बहुत है;
वह तो सिर्फ़ तुम्हारा ही तुमको दे करके
खुश कर देगा। और तुम्हारे दोष, गुणों की
तुलना में खप जाएँगे।

मैलकम : लेकिन मुझमें तो
राजाओं को शोभा देनेवाला लक्षण

एक नहीं है ; न्याय, सत्यता, संयम, दृढ़ता,
दानवीरता, लगन, धीरता, दया, नम्रता,
साहस, निष्ठा, सहनशीलता—इनका मुझमें
लेश नहीं है; तरह-तरह के अपराधों के
तरह-तरह से प्रतिपादन में, अलबत्ता मैं
चतुर। अगर मुझमें बल होता तो उँडेलता
मधुर दया का दूध क्रूरता के दोज़ख़ में,
विश्व-शान्ति को क्रान्ति बनाता, वसुन्धरा पर
सधी एकता खण्डित करता।

मैकडफ़ : स्काटलैण्ड हे,
स्काटलैण्ड !

मैलकम : यदि ऐसा कोई शासन करने
का अधिकारी हो तो बोलो : बता दिया जो,
जैसा हूँ मैं।

मैकडफ़ : शासन करने का अधिकारी।
नहीं, नहीं जीवित रहने का। त्रस्त जाति हे,
एक अनधिकारी ज़ालिम के ख़ूनी भाले
से अनुशासित, कब फिर तू अब अपने सुख के
दिन देखेगी, क्योंकि राज के सिंहासन का
सच्चा मालिक अपने ही मुख से आरोपित
दोषों से अभिशापित अपना वंश कलंकित
करा रहा है ? तेरे गौरव-पुंज पितृवर
नरपतियों में परम सन्त थे : रानी, जिसकी
पुण्य कोख ने तुझको जन्मा, क़दम-क़दम पर
ईश्वर का सुमरन करती थी; धर्माचरण
नित्य करती थी, जैसे उसके केश मृत्यु ने
पकड़ लिये हों। तुझसे विदा ले रहा हूँ मैं !
जो दुर्गुण तू अपने अन्दर बतलाता है
स्काटलैण्ड से मुझे निकाला दिया उन्होंने।—
ओ मेरी छाती, तू फट जा, तेरी आशा
टूट चुकी अब !

मैलकम : मैकडफ़, तेरे दिल से निकले
इतने उज्वल, इतने पावन उद्‌गारों ने
मेरे मन के सन्देहों की सभी कालिमा
धो डाली है, औ' तेरी सच्चाई, तेरी
सज्जनता के प्रति मेरा विश्वास जगाया।
नरपिशाच मैकबेथ ने अपने षड्यन्त्रों से
मुझे पकड़ने को बहुतेरे यत्न किए हैं,
और समझदारी थोड़ी-सी मुझे सिखाती
अजनबियों के कहे-सुने में जल्द न आऊँ :
मेरे-तेरे बीच एक ईश्वर साखी हो !
क्योंकि इसी क्षण से अपने को तुझे सौंपता,

और स्वयं की निन्दाओं को वापस लेता;
अपने ऊपर मैंने कलुष-कलंक लिये जो,
उन्हें त्यागता; वे मुझसे सर्वथा अपरिचित।
मैंने अब तक नारी का सहवास न जाना;
झूठी क़सम नहीं खाई है; जो अपना ही
था उसके भी लिए नहीं लालच दिखलाई;
कभी नहीं अपना प्रण तोड़ा; दग़ा न दूँगा
दानव को भी; और मुझे जीवन से इतना
प्यार कि जितना सच्चाई से; मेरा पहला
झूठ यही था जो मैं अपने ऊपर बोला।
जो मुझमें सच, वह तेरा है, दीन देश की
सेवा में है : तेरे आने के पहले से
बाँके, वीर, लड़ाके सैनिक दस हज़ार ले
वृद्ध सिवर्ड चढ़ाई करने को उद्यत हैं।
अब हम सब मिल साथ चलेंगे। और हमारे
न्याय-समर्थित संगर का फल मंगलमय हो!
तुम चुप क्यों हो?

मैकडफ़ : इतनी अप्रिय औ' प्रिय बातों
की संगति बिठलाना मेरे लिए कठिन है।

(डाक्टर आता है।)

मैलकम : बाक़ी फिर।—क्या महाराज आनेवाले हैं?

डाक्टर : निश्चय श्रीमन्, उनके हाथ शफ़ा पाने को
दुखियारों का झुण्ड खड़ा है : उनके रोगों
से हिकमत भी हार गई है; महाराज के
हाथों में ईश्वर-प्रदत्त कुछ ऐसा जस है,
उनके छूने से वे अच्छे हो जाते हैं।

मैलकम : धन्यवाद है तुम्हें, डाक्टर।

मैकडफ़ : कौन रोग यह?

मैलकम : इसको त्वचा रोग कहते हैं : जब से आया,
महाराज का यह अद्भुत गुण कई बार मैं
देख चुका हूँ। उनकी अर्ज़ स्वर्ग सुन लेता;
कैसे, इसको वे ही जानें; आते ऐसे
लोग कि जिनका रोग अजूबा, जिनके तन पर
फूलन-फोड़ा, जिन्हें देखने से दुख होता,
शल्यचिकित्सा से जिनको आराम न मिलता,
मगर मन्त्र कोई पढ़ एक सुनहरा सिक्का
वे गर्दन में पहना देते, बस वह अच्छा
हो जाता है : और कहा जाता है ऐसा,
क्रमिक उत्तराधिकारियों में भी यह सद्गुण
आ जाएगा। इस गुण के अतिरिक्त भविष्यद्-
वाणी की भी शक्ति उन्हें है; और बहुत-से

यश-विस्तारक वरदानों से उनका सिंहासन
शोभित है।

(रास आता है।)

मैकडफ़ : देखो कौन चला आता है।
मैलकम : देशनिवासी, लेकिन अभी नहीं पहचाना।
मैकडफ़ : आओ, बन्धु कृपालु, स्वागतम् तुम्हें यहाँ पर।
मैलकम : अब पहचाना। दयावान प्रभु वे बाधाएँ
जल्द हटायें हमें जिन्होंने अलग किया है!
रास : ऐसा ही हो।
मैकडफ़ : स्काटलैण्ड का हाल वही क्या
जो पहले था?
रास : दीन देश की बुरी दशा है।
अपनी ही हालत पर डरा हुआ लगता है।
मातृभूमि अब मृत्यु-भूमि है; और कहीं खुश
वही दिखाई देता जिसको कभी जगत-गति
नहीं व्यापती; वहाँ पुकारें, आहें, चीखें
गगन भेदती उठतीं, किन्तु अनसुनी जातीं;
वहाँ शोक में पागल होना अब घर-घर की
बीमारी है; गिरजों में जब मृत्यु-घण्टियाँ
बजतीं कोई नहीं पूछता, कौन मर गया;
सज्जन के जीवन उनकी कलँगी के फूलों
से पहले मुरझा जाते हैं, वे बीमारी
लगने से पहले मर जाते।
मैकडफ़ : क्या वर्णन है!
जितना अच्छा, उतना सच्चा।
मैलकम : बोलो क्या है
सबसे ताज़ी चोट देश पर?
रास : घण्टे भर की
बात बतानेवाले के ऊपर हँसती है,
हर क्षण नयी चोट पड़ती है।
मैकडफ़ : मेरी पत्नी
तो अच्छी है?
रास : अच्छी ही है।
मैकडफ़ : मेरे सारे
बच्चे अच्छे?
रास : वे भी अच्छे!
मैकडफ़ : ज़ालिम ने क्या
उनकी शान्ति नहीं छीनी है?
रास : नहीं, जब चला
मैं तब तो वे परम शान्त थे।
मैकडफ़ : करो न शब्दों

की कंजूसी, उन पर कैसी बीत रही है ?

रास : जब मैं चला यहाँ को, खबरें पहुँचाने को,
जो मेरे दिल पर भारी हैं, अफ़वाहें थीं,
लोग, बहुत-से, बाग़ी बनकर निकल पड़े हैं;
औ' उनकी सच्चाई पर विश्वास हुआ कुछ;
कारण, उन्हें दबाने को ज़ालिम की सेना
मैंने बाहर फिरती देखी। वक़्त मदद का
आया है अय। स्काटलैण्ड में चलो, तुम्हारी
नज़र सिपाही खड़े करेगी, मुक्त कष्ट से
होने को औरतें लड़ेंगी।

मैलकम : वे प्रसन्न हों,
हम आते हैं। कृपाकुंज इंग्लैण्ड ने हमें
दस हज़ार सैनिक औ' सेनापति सिवर्ड की
सेवाएँ दी हैं, उनसे बढ़-चढ़कर जोधा
ईसाई देशों में कोई और नहीं है।

रास : ऐसे सुखद समाचारों के प्रत्युत्तर में,
काश, कि मैं भी ऐसी कोई बात सुनाता !
लेकिन मेरे शब्दों को मरु की झंझा के
बीच उगलना उचित, कि जिससे कोई उनको
सुने न समझे।

मैकडफ़ : पूछूँ, किसके बारे में वे ?
सार्वजनिक संकट के, या ऐसे सदमे के
किसी खास के भाग्य पड़ा जो ?

रास : कोई भला
नहीं जो ऐसे दुख में अपना भाग न समझे,
फिर भी उसका ज़्यादा हिस्सा सिर्फ़ तुम्हारे
बाट पड़ा है।

मैकडफ़ : यदि मेरा है, तो मुझसे कह
देने में मत देर लगाओ, जल्द बताओ।

रास : कान तुम्हारे मेरी जिह्वा को न सदा को
घणित समझ लें : जैसा भीषण ध्वनि-विस्फोटन
यह करने को, कभी उन्होंने सुना न होगा।

मैकडफ़ : समझ गया मैं।

रास : हमला हुआ तुम्हारे गढ़ पर;
बर्बरता से क़त्ल कर दिए गए तुम्हारे
बीवी-बच्चे : कैसे, बतलाने के मानी,
उनकी लाशों की ढेरी पर और तुम्हारी
लाश लादना।

मैलकम : हे भगवान्, दया कर हम पर !
कैसे मर्द, कि नीचे अपना शीश झुकाते :
दुख कह डालो, ग़म जो बाहर नहीं निकलता
भीतर-भीतर सिसका करता, दिल के ऊपर

बोझा बनकर उसे तोड़ डाला करता है।

मैकडफ़ : मेरे बच्चे भी ?

रास : बीवी, बच्चे, नौकर सब
जो भी पड़े सामने।

मैकडफ़ : औ' मैं दूर पड़ा था !
क़त्ल हुई मेरी पत्नी भी ?

रास : बता चुका मैं।

मैलकम : धीरज रक्खो : छाती के ये घाव भरेंगे
गहरे बदले के मरहम से; आओ मिलकर
उसे बनाएँ।

मैकडफ़ : मैं निर्वंश हो गया।—मेरे
प्यारे बच्चे सारे ? तुमने कहा कि सारे ?—
चील नारकी !—सारे ? क्या मेरे सारे ही
प्यारे बच्चे औ' उनकी माँ, निर्दय, तूने
एक झपट्टे में ले डाली।

मैलकम : मर्द की तरह करो सामना।

मैकडफ़ : बन्धु, करूँगा;
किन्तु मर्द के सीने में भी दिल होता है :
कैसे इसे भुला दूँ ऐसी चीज़ें थीं जो
मेरे प्राणों की निधियाँ थीं।—स्वर्ग देखता
रहा, उन्हें उसने न बचाया। पापी मैकडफ़ !
तेरे कारण क़त्ल हुए वे। मैं नाकारा,
उनके अपने नहीं, किन्तु मेरे दोषों से
छुरी फिरी उनकी गर्दन पर। प्रभु अब अपनी
शरण उन्हें दो !

मैलकम : अश्रु-धार यह धार तुम्हारे
खाँड़े को दे : शोक, रोष में परिवर्तित हो;
रंज न दिल को दाबे, उसको उत्तेजन दे।

मैकडफ़ : मैं आँसू नारी की भाँति बहा सकता था,
क्रन्दन कर सकता था—पर भगवान् दयामय,
स्काटलैण्ड के इस अत्याचारी को, मुझको
निर्विलम्ब ला खड़ा करो आमने-सामने—
मेरी खड्ग परिधि के अन्दर अगर बचे तो
उसे स्वर्ग भी क्षमा-दान दे।

मैलकम : यह मर्दों की
बात कही है। महाराज से चलो मिलें हम :
सेना सब तैयार खड़ी है : उनकी आज्ञा
की देरी है। मैकबेथ पका हुआ गिरने को,
हेतु बनाए स्वर्ग हमें—यह माँग, मस्त हो;
पूर्व दिशा को ही गढ़ता है सूर्य अस्त हो।

[**सब जाते हैं**

पहला दृश्य

डंसीनेन। क़िले का एक कमरा

(डाक्टर के साथ परिचारिका आती है।)

डाक्टर : तुम्हारे साथ जागते-ताकते दो रातें हो चुकीं, पर जो तुम कहती हो उसमें कोई सच्चाई नहीं मालूम होती। पिछली वार नींद में वे कब चली थीं ?

परिचारिका : जब से महाराज मैदान में गए, मैंने देखा है कि वे बिस्तर से उठती हैं, रतजामा पहनती हैं, सन्दूक खोलती हैं, काग़ज़ निकालती हैं, मोड़ती हैं, उस पर लिखती हैं, उसे पढ़ती हैं, बाद को उस पर मुहर लगाती हैं और फिर बिस्तर पर जा लेटती हैं; और यह सब कुछ करती हैं गहरी नींद में।

डाक्टर : यह तो कुदरत की बड़ी भारी कुढ़रत हुई कि इन्सान सोने का आराम और जागने का काम एक साथ करे। अच्छा, यह तो बताओ कि रात की इस बेचैनी में चलने और दूसरे ख़ास कामों के अलावा वे कुछ कहती भी हैं ?

परिचारिका : श्रीमन्, वे जो कहती हैं, वह तो मैं नहीं बता सकती।

डाक्टर : मुझे तो बता ही सकती हो; और यह बहुत ज़रूरी है कि मुझे बताओ।

परिचारिका : न आपको, न किसी को; कहूँ तो उसे साबित करने को गवाह कहाँ से लाऊँ ?

(मोमबत्ती लिये लेडी मैकबेथ आती है।)

यह देखिए ! वे आ रही हैं। बिलकुल ऐसा ही करती हैं; और मैं मर जाऊँ जो झूठ कहूँ, एकदम नींद में हैं। देखिए उनको : ज़रा आड़ में खड़े हो जाइए।

डाक्टर : बत्ती उन्हें कहाँ से मिल गई ?

परिचारिका : यह तो उनके पास ही थी : उनके सिरहाने बत्ती बराबर जलती रहती है; उनकी ऐसी आज्ञा है।

डाक्टर : लेकिन, देखो, उनकी आँखें तो खुली हैं।

परिचारिका : हाँ, पर वे देख कुछ ही नहीं रही हैं।

डाक्टर : अब ये कर क्या रही हैं? देखो, ये अपना हाथ कैसे मल रही हैं।

परिचारिका : यह तो इनकी आदत हो गई है, बस इसी तरह हाथ धोते रहना। मैंने इन्हें पन्द्रह-पन्द्रह मिनट ऐसे ही करते देखा है।

लेडी मैकबेथ : एक धब्बा फिर भी रह गया।

डाक्टर : सुनो। वे बोल रही हैं। वे जो कह रही हैं उसे मैं लिख लूं।

मेरी याद्दाश्त कहीं धोखा न खा जाय।

लेडी मैकबेथ : निकल भी, पापी धब्बे ! निकल, मैं कहती हूँ !—एक; दो : हैं, तब यही तो करने का वक्त है।—नरक में अँधेरा है !—छिः, मेरे स्वामी, छिः ! सिपाही, और डरना ?—हम इससे क्यों डरें कि फ़लाँ जान गया, जब कोई हमारी ताक़त के सामने चूँ नहीं कर सकता ?—तो भी किसने समझा था कि उस बूढ़े आदमी के अन्दर इतना लोहू है ?

डाक्टर : ध्यान से सुनती हो ?

लेडी मैकबेथ : फ़ाइफ़ के थेन का बीवी से प्रेम था : अब वह कहाँ गई ?—क्या, ये हाथ कभी साफ़ ही न होंगे ?—ऐसा नहीं करते, मेरे स्वामी, ऐसा नहीं करते : आप इस तरह चौंककर सब चौपट कर रहे हैं।

डाक्टर : थू-थू : तूने वह सुना, जो तुझे नहीं सुनना था।

परिचारिका : मैं समझती हूँ उन्होंने वह कहा, जो उन्हें नहीं कहना था : जो उन्होंने स्वीकार किया, उसे भगवान ही जाने।

लेडी मैकबेथ : लोहू की बदबू अब भी नहीं गई : अरब का सारा इत्र इस छोटे-से हाथ में खुशबू नहीं ला सकता। ओह ! ओह ! ओह !

डाक्टर : कैसी आहें हैं ! कलेजा मुँह को आ रहा है।

परिचारिका : मेरे सारे बदन को कोई सोने से मढ़ भी दे तो मैं ऐसे कलेजे से बाज़ आऊँ।

डाक्टर : भला हो, भला हो !

परिचारिका : श्रीमन्, भगवान से प्रार्थना करें कि ऐसा ही हो।

डाक्टर : यह बीमारी मेरे इलाज के बाहर है : फिर मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो नींद में चलते तो थे, पर जो भगवान का नाम लेते हुए अपने बिस्तरों पर मरे।

लेडी मैकबेथ : हाथ धो डालो, रतजामा पहन लो;—इतने डरे-डरे न दिखो।—मैं तुमसे एक बार फिर कहती हूँ, बैंको ज़मीन में गड़ चुका : वह अपनी क़ब्र से नहीं निकल सकता।

डाक्टर : ऐसा भी ?

लेडी मैकबेथ : बिस्तर में, बिस्तर में : कोई फाटक पीट रहा है। भागो, भागो, भागो, भागो, मेरा हाथ पकड़ लो। किया अनकिया न हो सकेगा। बिस्तर में, बिस्तर में, बिस्तर में।

डाक्टर : अब क्या वे बिस्तर में जायँगी ?

परिचारिका : सीधे।

डाक्टर : बुरी तरह की कानाफूसी लोगों में है
लावाजिब कामों से लावाजिब तकलीफ़ें
पैदा होतीं : जो पापी हैं, अपने बहरे
सिरहानों को अपना भेद बता देते हैं।
मैं तो ख़ाली तन का रोग मिटा सकता हूँ;
इन्हें चाहिए मन की मैल छुड़ानेवाला।—
ईश्वर, हम सबकी रक्षा कर ! देखभाल में
इनको रखना; छुरी वग़ैरह इनके पास न

रहने पाए; इन्हें अकेला नहीं छोड़ना ।—
कानों ने जो सुना, उन्हें है उस पर ग़ैरत,
आँखों ने जो देखा, उनको उस पर हैरत,
जो दिमाग़ में, उसे नहीं कहने की जुर्रत ।—
अच्छा, मेरा नमस्कार अब ।

परिचारिका : नमस्कार है ।

[**दोनों जाते हैं**

दूसरा दृश्य

डंसीनेन के पास का इलाक़ा ।

(**मेनटेथ, कैटनेस, एंगस, लेनाक्स और सैनिकगण ढोल और झण्डों के साथ आते हैं ।**)

मेनटेथ : मैलकम औ' उसके काका सिवर्ड औ' मैकडफ़
अंग्रेज़ी फ़ौजें ले करके पहुँच गए हैं ।
उनके अन्दर बदले के अंगार धधकते;
उनको न्याय दिलाने को मुर्दे भी उठकर
अपना ख़ून बहाएँगे, औ' बहादुरी से
युद्ध करेंगे ।

एंगस : हम उनसे बरनम बन के नज़दीक
मिलेंगे : इसी तरफ़ को आते हैं वे ।

कैटनेस : क्या मैलकम के दल में डोनलबेन नहीं है ?

लेनाक्स : नहीं : मुझे यह ठीक पता है । मुझको सूची
मिली कि जिसमें सरदारों के नाम दिए हैं :
उनमें है सिवर्ड का बेटा और बहुत-से
युवक कि जिनकी मसें नहीं भीगी हैं अब तक ।

मेनटेथ : ज़ालिम क्या करता है ?

कैटनेस : उसने डंसीनेन
पहाड़ी पर मज़बूत क़िलेबन्दी कर ली है ।
कुछ उसको पागल कहते हैं ! कुछ, कम नफ़रत
रखनेवाले, बल-प्रकोप से पीड़ित कहते;
पर निश्चय है, अपने बिखरे दल पर शासन
करना उसके वश के बाहर ।

एंगस : अब उसको अनुभव
होता है, जो हत्याएँ उसने छिपकर
की थीं, वे सब, हथेलियों पर ख़ून से लिखीं;
क़दम-क़दम पर खड़ी बग़ावत अब उसके
विश्वासघात की निन्दा करती : उसकी आज्ञा
में जो चलते हैं, सो चलते हैं दबाव से,

नहीं प्रेम से : अब उसको अनुभव होता है,
हथियाया पद-वैभव उससे नहीं सँभलता,
जैसे किसी देव का जामा बौना चोर
पहनकर भागे।

मेनटेथ : जब सब कुछ जो उसके अन्दर, वहाँ पड़े रहने के कारण
अपनी स्वयं भर्त्सना करता,
तब उसकी इन्द्रियाँ और विचलित रहती हैं,
काम न देतीं, कौन उन्हें दोषी ठहराए ?

कैटनेस : अब प्रस्थान करें हम, औ' अपने को उसकी
आज्ञा में रक्खें जो सच्चा अधिकारी है :
उसे मिलें जो रुग्ण राज्य के लिए दवा है;
औ' फिर उसके साथ देश के कष्ट-निवारण
में हम अपने लोहू की हर बूँद गिराएँ।

लेनाक्स : या जितने से रंजित राजकमल मुसकाए,
औ' कतवार-सेवार सभी नीचे दब जाए।
हम बरनम की ओर बढ़ें अब।

तीसरा दृश्य

डंसीनेन। क़िले का एक कमरा

(मैकबेथ, डाक्टर और सेवक आते हैं।)

मैकबेथ : बन्द करो अब ख़बरें; सबको भग जाने दो :
जब तक बरनम का बन डंसीनेन पहाड़ी
तक न पहुँचता मुझे किसी का डर क्योंकर हो।
पिद्दे मैकलम की क्या हस्ती ? आखिर वह भी
नारि-जना है। सारा भूत-भविष्यत् जिनका
छाना, ऐसी रूहों ने मुझसे कह रक्खा :
"अभय रहो, मैकबेथ, कोई भी जिसे नारि ने
जन्म दिया है, तुम पर हावी कभी न होगा।"—
तो भागो, झूठे सरदारों, और विलासी
अंग्रेज़ों से जा मिल जाओ : मैकबेथ जिस
दिमाग़ से लेता काम और जो दिल रखता है,
कभी नहीं वह भय-संशय से हिल सकता है।

(सेवक आता है।)

तेरा मुँह शैतान करे काला, कोढ़ी के—!
यह गीदड़ का चेहरा तुझको कहाँ मिल गया ?

सेवक : दस हज़ार हैं—

मैकबेथ : गीदड़, गन्दे ?

सेवक : सैनिक, मालिक !

मैकबेथ : जा, अपना मुँह मार तमाचे लाल बना जो
भय से पीला। घोंघे, कैसे सैनिक, पोंगे?
तुझे मौत ले जाय! मुर्दनी जो तुझ पर है,
दहशत फैलाती है। कैसे सैनिक, भुतने?

सेवक : आप इसे मानें तो अंग्रेज़ों की सेना।

मैकबेथ : मत मुँह दिखला (**सेवक जाता है**)—सीटन!—
मेरा दिल घबराता,
जब कि देखता—सीटन, सुनता नहीं, कहाँ है!—
यह धक्का या तो गद्दी पर मुझे सदा को
बिठला देगा या ढकेल देगा गड्ढे में।
बहुत जी लिया : मेरे जीवन का बसन्त अब
पीले औ' सूखे पत्तों में बदल चुका है;
मान, प्रेम, आज्ञा का आदर, मित्र गोष्ठियाँ—
वृद्धावस्था की शोभाएँ—ये सब मेरे
लिए नहीं हैं; इनके बदले मुझे मिले हैं
शाप, होंठ के नहीं, हृदय के, मुँहदेखा गुण-
गान, पीठ के पीछे जिनसे दिल इनकार
किया करता है, मुँह पर जुर्रत करता डरता।—
सीटन!—

(**सीटन आता है।**)

सीटन : महाराज की क्या आज्ञा है?

मैकबेथ : और ख़बर क्या?

सीटन : मालिक, जो संवाद मिला था, ठीक मिला था।

मैकबेथ : युद्ध करूँगा जब तक मेरी बोटी-बोटी
तन से अलग नहीं हो जाती। लाओ, मेरा
कवच कहाँ है?

सीटन : अभी नहीं अवसर आया है।

मैकबेथ : मैं तन पर कसना चाहूँगा।
कहो, रिसाला और क़िले के बाहर भेजें;
घोड़े दौड़ाओ चौफेर इलाक़े भर में;
डर की बात करें जो उनको फाँसी दे दो।
लाओ मेरा कवच कहाँ है।—कहो डाक्टर,
कैसी हालत है मरीज़ की?

डाक्टर : मालिक, इतनी
वे बीमार नहीं हैं जितनी परेशान हैं,
ऐसे ख़्यालों से, जो फिर-फिर उठते रहते,
जो उनको आराम नहीं लेने देते हैं।

मैकबेथ : क्या इसकी कुछ दवा नहीं है? इस दिमाग़ की
बीमारी को क्या तुम दूर नहीं कर सकते?
खींचो सदमों को जो सुधि में जड़ें जमाए,
मेटो चिन्ता जो दिमाग़ पर लिखी हुई है,

और किसी मधुमयी, विसुधिकारी ओषधि से
वुसी हुई गन्दगी निकालो, सुनो, डाक्टर,
जो उनकी छाती के अन्दर ठँसी-धँसी है,
और वज़न भारी बन उनके मन पर बैठी।

डाक्टर : इसमें तो मरीज़ ही अपनी शफ़ा करेगा।

मैकबेथ : शफ़ा तुम्हारी जाय भाड़ में; मुझको उसकी
नहीं ज़रूरत।—चलो कवच पहनाओ मुझको;

(सीटन कवच पहनाने लगता है।)

वल्लम लाओ।—सीटन, बाहर करो[1]—डाक्टर,
सब सरदार भगे जाते हैं।—**(सीटन से)** ख़त्म
करो भी।—
अगर देश की रोग-परीक्षा करो, डाक्टर,
और मर्ज़ पहचानो और दवा-दारू से
उसे पूर्व-सा सुन्दर-स्वस्थ बना दो तो मैं
बड़ा तुम्हारा जस गाऊँगा, जो फिर ध्वनित-
प्रतिध्वनित होगा दिशा-दिशा से।—**(सीटन से)**
इसे खींच लो[2]।—
कहीं जड़ी-बूटी, जुलाब कोई ऐसा है
जो कि यहाँ से अंग्रेज़ों को वाहर कर दे ?
सुना कभी उनके बारे में ?

डाक्टर : मेरे मालिक,
रण की शाही तैयारी से इधर-उधर कुछ
सुन रक्खा है।

मैकबेथ : इसको[3] पीछे-पीछे लाओ।—
नहीं मौत से, बरबादी से मैं भय खाता,
जब तक डंसीनेन नहीं बरनम बन आता।

[बाहर जाता है

डाक्टर : **(अलग)** डंसीनेन क़िले से मैं बाहर तो जाऊँ,
धन-लालच से कभी यहाँ तशरीफ़ न लाऊँ।

[बाहर जाता है

चौथा दृश्य

डंसीनेन के निकट का प्रदेश। जंगल सामने है।

(मैलकम, पिता और पुत्र सिवर्ड, मैकडफ़, मेनटेथ, कैटनेस, ऐंगस, लेनाक्स और रास ढोल और झण्डों के साथ मार्च करते हुए सैनिकों के साथ आते हैं।)

मैलकम : भ्राताओ, दिन दूर नहीं अब जबकि हमारे
घर ख़तरों से बाहर होंगे।

1-2. कवच का कोई बन्द। 3. टोप या भाला।

मेनटेथ : इसमें क्या शक !

पिता सिवर्ड : यह जंगल है कौन सामने ?

मेनटेथ : बरनम का बन।

मैलकम : तुममें से हर एक सिपाही एक पेड़ की
शाखा काटे और उसे अपने आगे ले :
ऐसा करने से हम अपनी सेना-संख्या
छिपा सकेंगे, और हमारा दल-बल कोई
ठीक नहीं अनुमान सकेगा।

सिपाही : जो आज्ञा है।

पिता सिवर्ड : इतना ही मालूम हमें, मदमाता ज़ालिम,
जमकर डंसीनेन पहाड़ी पर बैठा है,
और वहीं पर हम उस पर घेरा डालेंगे।

मैलकम : यह उसकी सारी आशा है; क्योंकि जहाँ भी
लोगों ने मौक़ा पाया है—क्या छोटे, क्या
बड़े—सभी ने खुली बग़ावत कर रक्खी है।
औ' जो उसके निकट, निकट वे मजबूरी से,
पर उनका भी साथ नहीं देते उनके दिल।

मैकडफ़ : हक़ है किसके साथ, युद्ध-फल बतलाएगा,
अभी हमारा काम, जवाँमर्दी से लड़ना।

पिता सिवर्ड : समय आ रहा है जो समुचित निर्णय करके
हमें बताएगा क्या हमने पाया, खोया,
ख़्याल क़यासी आकाशी कंगूरे छूते,
असली मसले तै होते बाहों के बूते :
इसीलिए अब युद्ध शुरू हो।

[**मार्च करते हुए सब जाते हैं**

पाँचवाँ दृश्य

डंसीनेन। क़िले के अन्दर

(मैकबेथ, सीटन और सैनिक ढोल और झण्डों के साथ आते हैं।)

मैकबेथ : झण्डों को दो गाड़ क़िले की दीवारों पर :
शोर बराबर होता है, 'वे बढ़े आ रहे !'
किन्तु हमारे गढ़ की ताक़त उनके घेरे
का उपहास करेगी औ' वे पड़े यहीं पर
काल-महामारी के मुख के ग्रास बनेंगे।
अगर हमारी सेना के कुछ भाग न उनसे
जा मिल जाते, तो बराबरी के मुक़ाबले
पर साहस कर हम उनसे भिड़ते औ' उनको
दूर यहाँ से मार भगाते।

(नेपथ्य में स्त्रियों के रोने की आवाज़)

यह ग़ुल कैसा ?

सीटन : नाथ, औरतों का यह रोना।

[जाता है

मैकबेथ : किसी बात से
डरना अब मैं भूल चुका हूँ। एक समय था
जबकि रात को अगर चीख सुन लूँ तो मेरे
हाथ-पाँव ठण्डे पड़ जाते थे ; यदि मुझसे
कोई करुण कहानी कह दे, मेरे तन के
रोम खड़े हो जाते थे, इस तरह सिहरकर,
जैसे उनमें प्राण भरा हो। अब मैं इतनी
भीषणता से खेल चुका हूँ, मार-काट के
इतने ख़्यालों को दिमाग़ में बसा चुका हूँ,
मुझे भयंकरता, कैसी भी, ज़रा नहीं विचलित
करती है।

(सीटन लौटकर आता है।)

वह रोना-धोना कैसा था ?

सीटन : नाथ, महारानी का जीवन-दीप बुझ गया।

मैकबेथ : उन्हें किसी दिन मरना ही था :
समय कभी आता ही ऐसी बात के लिए।—
आज, आज के बाद, आज फिर-फिर से आकर
चलता जाता है दिन-प्रतिदिन, अविचल क्रम से,
जीवन-पथ पर, जब तक छोर नहीं आ जाता;
और हमारे सारे आज, उजाले, काले
कल में बदल अक़्ल के अन्धे इन्सानों को
अन्धकारमय काल-गर्त में पहुँचा देते।
ठण्डी हो जा, ठण्डी हो जा, क्षणभंगुर लौ।
जीवन केवल एक स्वप्न है, चलता-फिरता;
एक दीन अभिनेता, जो दो दिन दुनिया के
रंगमंच पर हँस-रोकर ग़ायब हो जाता,
कोई पता नहीं फिर पाता : यह क़िस्सा है
किसी मूढ़ का गढ़ा कि जिसमें शब्दाडम्बर
बड़ा, किन्तु कुछ सार नहीं है।

(दूत आता है।)

बोल, तुझे क्या कहना है, जल्दी से कह, रे !

दूत : महाराज अपराध क्षमा हो,
मुझे उचित है सूचित करना, जो कुछ मैंने
अपनी आँखों से देखा है, किन्तु उसे किस
भाँति कहूँ मैं, नहीं जानता।

मैकबेथ : कहो निडर हो।

दूत : मैं पहाड़ पर पहरा देता खड़ा हुआ था,
अनायास बरनम पर मेरी आँख जा पड़ी,
और मुझे क्या लगा कि जैसे सारा जंगल
चलने लगा, अचानक—

मैकबेथ : झूठे, धूर्त कहीं के !

दूत : चाहे जितना कोप करें, सच बात न हो तो।
चलकर देखें, तीन मील के अन्दर पेड़ों
का यह झुरमुट हिलता, बढ़ता, चला आ रहा।

मैकबेथ : अगर झूठ निकला तो इस दरख़्त की शाखा
से ज़िन्दा ही तुझे लटकना, मरना होगा,
सूख-सूख, बे-दाना-पानी। तेरा कहना
अगर सत्य है, तो मुझको परवाह नहीं जो
तू भी मुझको यही सज़ा दे—मेरी दृढ़ता
डोल गई है; और पिशाचिनियों की झूठी-
सच्ची, दो-अर्थी बातों पर अब मेरे मन
में सन्देह उठ रहा है; क्या कहा नहीं था ?—
'डंसीनेन पहाड़ी तक बरनम बन जब तक
नहीं पहुँचता, अभय रहो', लेकिन अब देखो,
जड़ जंगल जंगम-सा उठकर, बड़ा ग़ज़ब है,
डंसीनेन पहाड़ी तक बढ़ता आता है।—
निकल पड़ो अब हथियारों को बाँध-बाँधकर !—
इसका कहना अगर सत्य है, तो न यहाँ से
हटना सम्भव, औ' न यहाँ ठहरे रहना ही।
मेरा मन अब इस दुनिया से ऊब गया है,
और चाहता हूँ मैं सारी विश्व व्यवस्था
नष्ट-भ्रष्ट हो जाय।—बजाओ रण का डंका !—
उठो, आँधियो ! गिरो, बिजलियो, कड़क—

कड़ककर !

मरना है तो मरें कसे हम तन पर बख़्तर।

[सब जाते हैं

छठा दृश्य

वही। क़िले के सामने का मैदान

(मैलकम, पिता सिवर्ड, मैकडफ़ आदि ढोल और झण्डों के साथ, और उनके सिपाही पेड़ की शाखा के साथ आते हैं।)

मैलकम : अब काफ़ी नज़दीक आ गए : अपने हाथों

की शाखों को गिरा सामने आ जाओ अब ।—
वयोवृद्ध काका, अपने वरवीर पुत्र के
साथ, हमारे प्रथम युद्ध का आज तुम्हीं
नेतृत्व करोगे : हम, सुयोग मैकडफ़ अपने
ऊपर ले लेंगे, जो कुछ करने को बाक़ी है,
जैसी हमने अपने बीच व्यवस्था की है ।

पिता सिवर्ड : जैसा भी आदेश आपका, विजय आपकी ।—
आज शाम ज़ालिम की सेना मिल भर जाए,
हम न हराएँ उसको तो वह हमें हराए ।

मैकडफ़ : साथ बजा दो सब नरसिंघे, सब नक़्क़ारे,
जिनसे आती मौत, रुधिर की बहती धारें ।

[सब बाहर जाते हैं। नेपथ्य में लगातार रणभेरियों की आवाज़]

सातवाँ दृश्य

वही । मैदान का दूसरा भाग

(मैकबेथ आता है ।)

मैकबेथ : खूँटे से मुझको बाँधा है, कठिन भागना :
भालू-सा मैं युद्ध करूँगा इन कुत्तों से ।—
कोई है क्या जिसे नहीं नारी ने जन्मा ?
जो ऐसा हो, उसका मुझको डर है, यानी
नहीं किसी का ।

(पुत्र सिवर्ड आता है ।)

पुत्र सिवर्ड : क्या है तेरा नाम ?

मैकबेथ : डरेगा तू सुन करके ।

पुत्र सिवर्ड : कभी नहीं, चाहे सारे नारकी नरों में
तेरा नाम भयंकरतम हो ।

मैकबेथ : मैं मैकबेथ हूँ ।

पुत्र सिवर्ड : इससे ज़्यादा घृणित नाम अपनी जिह्वा पर
खुद शैतान नहीं ला सकता ।

मैकबेथ : औ' न भयानक ।

पुत्र सिवर्ड : व्यर्थ न बोल, घिनौने ज़ालिम, अभी खड्ग से
सिद्ध करूँगा, तू झूठा है ।

(वे लड़ते हैं और पुत्र सिवर्ड मारा जाता है ।)

मैकबेथ : तू नारी से
जन्मा था :—मैं नारी से जन्मे लोगों की

तलवारों पर मुस्काता हूँ और उपेक्षा
से उनके शस्त्रों पर अट्टहास करता हूँ।

[बाहर जाता है

(रणभेरी। मैकडफ़ आता है।)

मैकडफ़ : उधर शोर है।—ज़ालिम, ज़रा सामने तो आ :
अगर मरा तू, और न मेरे आघातों से,
तो मेरी पत्नी, मेरे बच्चों की रूहें,
सदा सताती मुझे रहेंगी। क्या मारूँ मैं
उन दरिद्र करनों* को जिनकी मुट्ठी गर्मा
तूने भाले पकड़ाए हैं : मैकबेथ, मेरी
खड्ग-धार ने जो तेरा शोणित न पिया तो
अच्छा है मैं उसे तृषित ही बन्द म्यान के
अन्दर कर दूँ।

(नेपथ्य में तलवारें चलने की आवाज)

खाँड़े की इन खनकारों से
ऐसा लगता उसको कोई वीर बाँकुरा
चला रहा है; उसी जगह तू निश्चय होगा।
भाग्य, उसे तू एक बार मेरे आगे कर !
मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

[बाहर जाता है। नेपथ्य में रणभेरी बजती है

(मैलकम और पिता सिवर्ड आते हैं।)

पिता सिवर्ड : महाराज, इस ओर;—क़िला अब हाथ आ गया :
ज़ालिम की सेनाओं में तो फूट पड़ गई,
सब सरदार, हमारे, रण में डटे हुए हैं।
दिवस आपका विजय-घोष करने ही को है,
थोड़ी-सी कोशिश करनी है :

मैलकम : हमको ऐसे
शत्रु मिले जो दिखलाने भर को लड़ते थे,
वार नहीं करते थे।

पिता सिवर्ड : श्रीमन्, चलें क़िले में।

[दोनों जाते हैं।

(नेपथ्य में रणभेरी बजती है।)

(मैकबेथ फिर आता है।)

मैकबेथ : आत्मघात किसलिए करूँ मैं औ' अपने ही ?

---

* आयरलैण्ड के पैदल सैनिक।

खाँड़े से किसलिए मरूँ, जब शत्रु सामने ?
इसके घाव उन्हीं के अंगों पर फबते हैं।

(मैंकडफ़ फिर आता है।)

मैंकडफ़ : पलट, नरक के कुत्ते, पलट।

मैंकबेथ : सबों में केवल
तुझे बचा जाना मैं चाह रहा था, लेकिन
हट जा, तेरे कुल का खून बहुत-सा पहले
से ही मुझ पर चढ़ा हुआ है।

मैंकडफ़ : शब्द नहीं हैं
मेरे मुख में, सुन मेरी आवाज़ खड्ग में :
शब्द बना ही नहीं कि तुझ से दुर्दानव का
नामकरण हो !

मैंकबेथ : क्यों तू अपनी बाँह थकाता :
जाकर पहले तू अपनी तलवार-धार से
काट हवा को, तब मेरे तन को घायल कर :
जा, उन पर कर वार कि जो मूली-गाजर हैं—
मेरा जीवन अभिमन्त्रित है, उसे नहीं छू
सकता जो नारी से जन्मा।

मैंकडफ़ : भूल-मन्त्र-बल
जाकर अपने इष्ट देव से पूछ, तुझे वह
बतलाएगा, मैंकडफ़ अपने मातृ गर्भ के
समय पूर्व ही कट जाने से निकल पड़ा था।

मैंकबेथ : जल जाए वह जीभ कहे जो मुझसे ऐसा,
क्योंकि उसी ने मेरी इन्सानियत मिटा दी :
इन छलनामय पिशाचिनियों का कभी न कोई
करे भरोसा, जो अपनी दो-अर्थी बातों
से हमको धोखा देती हैं, जोकि हमारे
कानों से जो वादे करतीं उन्हें हमारी
आँखों से तोड़ा करती हैं।—अब मैं तुझसे
नहीं लड़ूँगा।

मैंकडफ़ : तो, कायर, हथियार डाल दे,
और वक़्त का एक तमाशा बनकर तू जी :
अजब जानवर जैसा तुझको हम रक्खेंगे,
खम्भे से बाँधेंगे, ऊपर लिखा रहेगा,
'यह ज़ालिम है।'

मैंकबेथ : मैं हथियार नहीं डालूँगा,
कि मैं छोकरे मैलकम के पैरों के आगे
की धरती पर माथा टेकूँ, कि मैं भीड़ की
छेड़ सहूँ औ' गाली खाऊँ। भले बढ़े बर-
नम का जंगल डंसीनेन पहाड़ी तक औ'
भले न तू, मेरा प्रतिद्वन्दी, नारि-जना हो,

फिर भी मैं अपने अन्तिम बल को परखूँगा :
मैं अपने तन के आगे अब युद्ध-परीक्षित
ढाल डालता हूँ : मैकडफ़, कर वार, और जो
पहले बोले, 'बस, ठहरो !' धिक्कार उसे है।

[लड़ते हुए दोनों बाहर जाते हैं।

(विराम वाद्य। बाजे-गाजे की ध्वनि। मैलकम, पिता सिवर्ड, रास, सरदार लोग और सैनिक ढोल और झंडों के साथ फिर आते हैं।)

मैलकम : मैं प्रसन्न होता यदि वे सब मित्र हमारे,
जिन्हें यहाँ हम नहीं देखते, सकुशल आते।

पिता सिवर्ड : कुछ को तो जाना ही होगा, फिर भी जो
मौजूद यहाँ है, उन्हें देखते यह महान दिन
हमको महँगा नहीं पड़ा है।

मैलकम : मैकडफ़ नहीं
दिखाई देता, औ' न तुम्हारा वीर पुत्र ही।

रास : पुत्र तुम्हारा सैनिक ऋण से उऋण हो गया :
अन्तिम साँसों तक उसने पौरुष दिखलाया;
युद्धस्थल में उसने अपना भुज-बल-विक्रम
जहाँ अडिग रह सिद्ध किया था, वहीं वीरगति
पाई उसने।

ता सिवर्ड : तो क्या उसकी मृत्यु हो गई ?

रास : हाँ, उसका शव समर-भूमि से हम ले आए।
वह था इतना योग्य कि उस पर कितना ही हम
शोक मनाएँ कम है।

पिता सिवर्ड : उसके घाव कहाँ थे ?

रास : सब सीने पर।

पिता सिवर्ड : तब तो वह सच्चा सैनिक था !
मेरे इतने बेटे होते जितने मेरे
तन पर रोएँ, तो भी उनके लिए वीरगति
वही चाहता, इसे मिली जो। और शोक अब
उस पर करना उचित नहीं है।

मैलकम : उचित नहीं क्यों ?
और शोक उस पर होगा ही।

पिता सिवर्ड : शोचनीय वह
और नहीं है; सब कहते हैं, उसने अपना
फ़र्ज़ बजाकर, कर्ज़ अदाकर, त्याग दिया तन :
उसकी आत्मा को प्रभु अपनी अभय शरण दें !
और नये सुख का सामान इधर से आता।

(**मैकबेथ के सिर के साथ मैकडफ़ आता है।**)

मैकडफ़ : महाराज की जय, कि आज तू महाराज है।
सब देखें किस जगह टिका है निन्दित मुण्ड
अनधिकारी का : समय आज स्वाधीन हो गया।
देख रहा हूँ तुझको शोभित अपने नरवर
सरदारों में, जो मेरी ही भाँति हृदय से
तेरा अभिनन्दन करते हैं। मेरी इच्छा
है सब मेरे साथ ज़ोर से मिलकर बोलें,—
स्काटलैण्ड के महाराज की जय !

सब : स्काटलैण्ड के महाराज की जय !

मैलकम : मेरे सब सरदारो, सारे नातेदारो,
तुमने मेरे प्रति जो अपना प्रेम दिखाया,
उसका अति आभार मानकर निर्विलम्ब मैं
तुमसे उऋण हुआ चाहूँगा। तुम सबको मैं
अर्ल बनाता; स्काटलैण्ड में यह गौरव-पद
पानेवाले सर्वप्रथम तुम। काम बहुत से
जो बाक़ी हैं, यथासमय वे किए जायँगे,—
हमें बुलाना है अपने मित्रों को वापस
जोकि ज़ुल्म के हाथों के फन्दे से अपनी
जान बचाकर परदेशों को भाग गए थे;
हमें न्याय के सम्मुख लाना है उन सबको
जो कि मन्त्रदाता थे इस मृत हत्यारे औ'
उसकी पिशाचिनी रानी के, जिसने, ऐसा
सुना गया है अपने ही घातक हाथों से
अपना जीवनान्त कर डाला; ये आवश्यक
और काम भी, जिस प्रकार से, जहाँ, जिस समय,
करने को हैं, प्रभु-प्रसाद से किए जायेंगे।
धन्यवाद फिर सबको मेरा, और निमन्त्रण,
चल इस्कोन मनाओ मेरा राज्यारोहण।

[**बाजे-गाजे की ध्वनि के साथ सब बाहर जाते हैं**

○ ○ ○

ओथेलो

सन् 1957-'58 में अनूदित

'ओथेलो' : प्रथम प्रकाशन 1959; राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, से प्रकाशित ।

श्रीमती इन्दिरा गांधी को

जिनकी प्रेरणा से 'मैकबेथ' सर्वप्रथम हिन्दी रंगमंच पर
प्रस्तुत हुआ

और

श्रीमती तेजी बच्चन को

जिन्होंने उक्त प्रदर्शन में, लेडी मैकबेथ की भूमिका में,
सफल अभिनय किया।

प्रवेशिका

पहला संस्करण

'ओथेलो' के पद्य-गद्यानुवाद को पुस्तक रूप में उपस्थित करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। हिन्दी 'आजकल' के जुलाई, 1957 से जून, '58 तक के बारह अंकों में यह अनुवाद धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुका है। इसे इस प्रकार छपाने में मेरा मुख्य उद्देश्य यह था कि अंग्रेज़ी-हिन्दी जाननेवाले जो लोग मेरे इस कार्य में रुचि रखते हों, वे इसे निष्पक्षता से पढ़ें, खटकनेवाली बातों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करें, हो सके तो सुधार सुझाएँ। मुझे खेद है कि इस दिशा में मुझे यथेष्ट सहयोग नहीं मिला। कुछ ने केवल मेरी प्रशंसा की तो कुछ ने सिर्फ़ बेतुकी बातें। एक छद्म नामधारी आलोचक ने एक पत्रिका में अनुवाद की कुछ पंक्तियों को उद्धृत कर मुझसे कैफ़ियत माँगी कि यह पद्य कहाँ से है, और अगर यह पद्य है तो अन्य गद्य अनुवादों से मेरा अनुवाद भिन्न कैसे है? भले आदमी ने यह देखने का तो कष्ट किया होता कि वे पंक्तियाँ मूल अंग्रेज़ी में भी गद्य में ही हैं। मैं शेक्सपियर के गद्य को भी पद्य में ढालने की हिमाक़त करने नहीं चला। शेक्सपियर ने अपने नाटकों में विशेष पात्र-परिस्थितियों के अनुरूप गद्य का भी उपयोग किया है। मेरे अनुवादों की भिन्नता इस बात में है कि मैं पद्य का अनुवाद पद्य, और गद्य का गद्य में कर रहा हूँ।

एकाध लोगों ने इयागो के सम्भाषणों में अश्लीलता देखी। अगर शेक्सपियर कहीं पर अश्लील हैं तो मैं उन्हें श्लील कैसे बनाऊँगा? और शेक्सपियर बहुत जगहों पर अश्लील हैं। मगर शेक्सपियर और कालिदास जैसे महान् कलाकार जहाँ अश्लील हैं वहाँ जीवन का कोई नग्न सत्य बोल उठा है, कला की कोई दुर्निवार पुकार हुई है। हमें अपने दृष्टिकोण को अधिक व्यापक और कानों को अधिक स्वस्थ बनाना होगा। अगर कहीं इन बड़ों की दुर्बलता या निरंकुशता भी प्रकट हुई है तो उसके प्रति आदरपूर्वक सहिष्णु बने रहने में ही हमारी शोभा है। हम उन्हें अपदस्थ नहीं कर सकेंगे। वे जग, जीवन और काल की चट्टान पर खड़े हैं और हमारे हाथ हैं औपचारिकता के तीर नहीं, तुक्के। इयागो की अश्लीलता के पक्ष में भी बहुत-कुछ कहा जा सकता है। हमें न भूलना चाहिए कि वह है फ़ौज का सिपाही, जैसे इस नाटक के कई पात्र हैं, और अक्सर मुँहफट हो जाते हैं। फ़ौजी अश्लील, खुले-खरे शब्दों का प्रयोग किए बिना अपनी बात क्यों नहीं कहता, इसकी खोज किसी मनोवैज्ञानिक को करनी चाहिए। यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर में रहते हुए गत महायुद्ध-काल में मुझे एक ऐसी रेजीमेण्ट के साथ सैन्य-शिक्षा लेनी पड़ी जिसमें बहुत-से विद्यार्थी इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के थे, और क्या रस ले-लेकर वे फ़ोश ज़बान बोलते थे, अश्लील चुटकले सुनाते थे! मैंने भी उन्हें कुछ देशज, भदेस गालियों से दीक्षित करने का प्रयत्न किया था और इसका निर्णय नहीं हो सका था कि कौन भाषा गालियों में अधिक समृद्ध और शक्तिशाली है। 'लियर' का अनुवाद करते समय मेरा यह गाली-ज्ञान बड़े काम आएगा।

अंग्रेज़ी में एक कहावत है, तुम अपना मुँह खोलो और मैं बता दूँगा कि तुम

कैसे आदमी हो, नाटककार के लिए यह कथन महामन्त्र के समान है। शेक्सपियर इसे कभी नहीं भूलते और इसी के बल पर उन्होंने अपने सैकड़ों पात्रों में से हर एक को अलग व्यक्तित्व प्रदान किया है। एक ही भाषा बोलते हुए भी समाज का हर वर्ग अपने रहन-सहन, जीविका-व्यापार, संघर्ष-विनोद आदि के अनुसार उसे एक विशेष रूप देता है। सिपाहियों की भी अपनी शब्दावली, अपने लहज़े और अपने संकेत होते हैं। क्या आप चाहते हैं कि शेक्सपियर जब आपके सामने सजीव सिपाही खड़ा करना चाहते थे तब ड्राइंग रूम का जेंटिलमैन पेश कर देते! फिर शेक्सपियर के समय में, उनके दर्शकों के समक्ष—और उनमें 'चवन्नीवाले' काफ़ी होते थे, और उनकी रुचि का वे ध्यान रखते थे—जो बात अश्लील न समझी जाती रही हो, वह आज अश्लील समझी जा सकती है। अनुवाद को अविकल रखने के लिए मैं इस बात की स्वतन्त्रता चाहूँगा कि मूलपाठ को जहाँ तक सम्भव हो सके सही-सही उतारूँ। अभिनय के समय, यदि आवश्यक ही समझा जाए, तो इन स्थलों को छोड़ा या बदला जा सकता है। हम न भूलें, जीवन सब जगह ढक-मुँदकर चलने से इन्कार करता है।

कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि 'ओथेलो' के कई पात्र हिन्दी न बोलकर उर्दू बोलते हैं। हिन्दी के बड़े-बड़े विद्वान् इसे मान चुके हैं, लिख चुके हैं और दोहराते रहते हैं कि उर्दू हिन्दी की ही एक शैली है। तब हिन्दी की ही एक शैली से नाक-भौं क्यों सिकोड़ी जाए? हिन्दी और उर्दू के बीच रेखा खींचने का दुःसाहस आज तक किसी ने नहीं किया। मेरी यह दृढ़ धारणा है कि उर्दू शैली में जो कुछ प्रसादपूर्ण, ओज-संयुक्त और माधुर्यमय है उसे अपने अन्दर रसा-बसा लेने, पचा लेने, आत्मसात् कर लेने में ही हिन्दी का हित है। और मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हिन्दी की मनीषा इसी ओर जा रही है।

एक बात मैं स्पष्ट करना चाहूँगा, मैंने हिन्दी-उर्दू को समीप लाने के लिए किन्हीं सम्भाषणों को उर्दू शैली में नहीं लिखा। मैंने ऐसा अनुभव किया कि कुछ पात्र इसी शैली में बोलकर अपने चरित्र को अधिक स्पष्टता से व्यक्त कर सकते हैं। संस्कृतनिष्ठ हिन्दी, सरल हिन्दी, हिन्दुस्तानी, सरल उर्दू, उर्दू-ए-मोअल्ला—जिसमें स्वर्गीय मौलाना आज़ाद बोलते थे, और हम उन्हें समझते थे—इनसे, और इनके विभिन्न अनुपात के मिश्रण से अनेक ऐसी शैलियों का निर्माण हो सकता है जिनसे हर पात्र को एक अलग व्यक्तित्व दिया जा सके। जनपदीय बोलियों और कभी-कभी प्रान्तीय भाषाओं के लब-लहज़ों का समुचित सहारा लेकर भी और बहुत-से पात्रों के अनुरूप भाषा बनाई जा सकती है। शेक्सपियर के नाटकों में एक पूरी दुनिया अपनी विविधता, विशेषता और विचित्रता लेकर बोलती है। उनको अनूदित करने के लिए किसी भी भाषा को अपनी पूरी ताक़त से काम लेना होगा। यदि हिन्दी इन नाटकों की दुनिया को सजीवता दे पाती है तो वह अपनी क्षमता सिद्ध ही नहीं करेगी, उसे विकसित भी करेगी। मैं हिन्दी-भाषी पाठकों और दर्शकों से व्यापक दृष्टिकोण रखने की प्रार्थना करूँगा। आप अपनी शब्द-राशि जानें, उसकी रक्षा करें, उसे बढ़ाएँ। यह हिन्दी का विकास-काल है और वह किसी प्रकार का अंकुश, नियन्त्रण और बन्धन बर्दाश्त न करेगी।

जहाँ तक अनुवाद के मूलपाठ का सम्बन्ध है मुझे कोई सुझाव नहीं मिले। फिर भी जो मूल-पाठ पुस्तक-रूप में दिया जा रहा है, वह बिल्कुल वही नहीं है जो 'आजकल' में प्रकाशित हो चुका है। मैंने उसमें यत्र-तत्र परिवर्तन किये हैं—किन्हीं कारणों से। मेरा विश्वास तो यही है कि इनसे भाषा में सुधार हुआ है। इसे अन्तिम

पाठ समझने की भूल मैं नहीं कर रहा। नाटक का मूल-पाठ अभिनय करते-करते ही निखरता है। मेरा ऐसा विश्वास है कि शेक्सपियर के प्रायः सभी नाटक इस प्रक्रिया से गुज़रे हैं। 'मैकबेथ' सत्रह वर्ष तक हस्तलिखित प्रतियों से खेला जाता रहा और तब वह छपा। 'ओथेलो' 1604 में लिखा गया और 18 वर्ष खेले जाने के बाद उसका मुद्रण सर्वप्रथम 1622 में हुआ। आज तक इस बात का दावा करने का कोई आधार नहीं मिला कि नाटक जिस रूप में छपे हैं उसी रूप में शेक्सपियर द्वारा वे लिखे भी गए थे। रंगमंच का कुछ भी अनुभव रखनेवाले यह जानते हैं कि अभिनेता के सजीव सम्पर्क में आकर लिखित भाषा बदलती है, और अच्छे के लिए। 'मैकबेथ' का नाटक-पाठ, अभ्यास और अभिनय कराते हुए मैंने अनुवाद के मूल-पाठ की भाषा कई स्थानों पर बदली। दूसरे संस्करण में इन संशोधनों को सम्मिलित करने का इरादा है। रंगमंच पर प्रभावोत्पादक होने में ही नाटक की भाषा की सार्थकता है। 'ओथेलो' का भी अभिनय कराने पर ही इसकी भाषा की त्रुटियाँ स्पष्ट हो सकेंगी, फिर भी अंग्रेज़ी-हिन्दी के विद्वानों से मेरी प्रार्थना है कि उनकी नज़र किन्हीं त्रुटियों की ओर जाए तो वे मेरा ध्यान आकर्षित करें। अनधिकारियों के मौन को ही मैं उनका सहयोग मानूँगा।

'ओथेलो' का अनुवाद करने के पूर्व एक बार मेरे मन में यह आया था कि मेरे पूर्व जो अनुवाद हो चुके हैं उन्हें मैं पढ़ लूँ। 1930 के लगभग मैंने 'ओथेलो' का एक गद्यानुवाद पुस्तक रूप में देखा था। उसके प्रकाशक-अनुवादक का कोई अता-पता मेरे कोई मित्र या पाठक मुझे नहीं दे सके। डा. रांगये राघव का गद्यनुवाद अभी हाल ही प्रकाशित हुआ है, पर किन्हीं कारणों से उसे देखने के कौतूहल पर मैंने संयम रक्खा है। इस प्रकार 'ओथेलो' का यह अनुवाद सीधे मूल से किया हुआ मेरा अपना अनुवाद है। 'मैकबेथ' का अनुवाद करने के पूर्व लाला सीताराम का अनुवाद मैंने पढ़ा था और उससे लाभान्वित हुआ था।

'मैकबेथ' के समान ही 'ओथेलो' शेक्सपियर का पहला नाटक है जिसका सर्वप्रथम पद्य-गद्यानुवाद हिन्दी में उपस्थित किया जा रहा है—मूल के पद्य भाग का पद्य में, गद्य का गद्य में। मुख्यतया अपने नाटक पद्य में लिखते हुए भी शेक्सपियर ने अनेक स्थानों पर गद्य का उपयोग करके जीवन की सच्चाई के प्रति अपनी अन्तर्दृष्टि और कला की माँग के प्रति अपनी जागरूकता सिद्ध की हैं। उनके गद्य के उपयोग पर एक बड़ी पुस्तक अंग्रेज़ी में लिखी गई है, जिसमें यह दिखलाया गया है कि शेक्सपियर जहाँ गद्य का उपयोग करते हैं वहाँ परिस्थिति और पात्र उसी के द्वारा अपने को सम्यक् रीति से अभिचित्रित और अभिव्यक्त कर सकते हैं। पद्य में वे विकृत, प्रभावहीन और उपहासास्पद बनकर रह जाते। जिसने पद्य और गद्य की प्रकृति को इतनी सूक्ष्मता से बिलगाया था उसके पद्य-गद्य सबको गद्य में ढाल देने से उसकी कला के प्रति कितना अन्याय हुआ है, इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है। फिर भी ये गद्यानुवाद शेक्सपियर की दुनिया का वातावरण बनाने में किसी अंश तक सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

'ओथेलो' का अनुवाद करने में भी मैं उन्हीं सिद्धान्तों से प्रेरित हुआ हूँ जिनसे 'मैकबेथ' का अनुवाद करने में। शेक्सपियर अंग्रेज़ी के सबसे बड़े नाटककार ही नहीं, सबसे बड़े कवि भी हैं। अगर अनुवाद में हमें उनके कवित्व की रक्षा करनी है तो हमें उनके कवित्व के वाहक ब्लैंक वर्स के जोड़ के किसी छन्द का उपयोग करना होगा। 'मैकबेथ' का अनुवाद करते समय, अनायास 24 मात्राओं का रोला छन्द मुझे इस कार्य के लिए उपयुक्त जान पड़ा। पूरा 'मैकबेथ' रोला में अनूदित कर लेने के बाद

इस छन्द की संवहन-शक्ति में मेरा विश्वास दृढ़ हो गया। 'ओथेलो' पूरा कर लेने के बाद मेरा यह विश्वास और बढ़ा है। यदि कहीं किसी प्रकार का सन्देह भी था तो उसे 'मैकबेथ' के अभिनय ने दूर कर दिया। ब्लैंक वर्स के समान रोला में भी ऐसी लय है जो कवित्व के लिए उपयुक्त सिद्ध होती हुई भी उस स्वाभाविकता को नहीं छोड़ती जो बोलचाल के गद्य में पाई जाती है। ब्लैंक वर्स का सबसे बड़ा बल यही है कि वह अंग्रेज़ी की बोलचाल की लय के सबसे निकट है। 'मैकबेथ' के अभिनय में अधिकांश दर्शकों को इस बात का आभास ही नहीं हुआ कि पद्य बोला जा रहा है। कई प्रसिद्ध पत्रों ने अभिनय की आलोचना करते हुए लिखा कि अनुवाद 'गद्य-काव्य' में किया गया है, जब कि अनुवाद 'अतुकान्त छन्द' में है। पर इस भूल से भी अनुवाद का एक तथ्य अनायास ही स्पष्ट हो गया है। अनुवाद ने 'काव्य' का आभास दिया और 'गद्य' की ध्वनि दी। ब्लैंक वर्स के जोड़ के किसी छन्द से यही अभीष्ट था। जो पद्य-नाटक के नाम पर टटम-टटम, टटम-टटम, टटम-टटम, टटम-टटम के नमूने की पंक्ति सुनने आये थे, या जो स्वाभाविकता की प्रत्याशा में सब्ज़ीमण्डी की बोली सुनना चाहते थे—दोनों ही यदि रोला से असन्तुष्ट हुए हों तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। उपयुक्त छन्द का चुनाव हो जाने पर भी उसमें सन्निहित प्रभाव और शक्ति को पूरी तरह प्रदर्शित कर देने में मेरी अपनी योग्यता और क्षमता की सीमाएँ हैं।

अपनी अपरिपक्वता और प्रवृत्ति के कारण स्वयं हिन्दी भाषा की, तथा रोला छन्द की भी अन्य सीमाओं की ओर मैंने 'मैकबेथ' की प्रवेशिका में विस्तार से लिखा है। जो अंग्रेज़ी का ब्लैंक वर्स एक पंक्ति में उठा लेता है उसे उठाने के लिए हिन्दी के रोला की डेढ़ या दो पंक्तियों की आवश्यकता होती है। ऐसी अवस्था में इसी बात का ध्यान रखना समीचीन था कि शब्दों के साथ ज़्यादती हो तो हो, भावों के साथ न हो। नाटक की सार्थकता रंगमंच पर खेले जाने में ही है और दर्शक पंक्तियाँ नहीं गिनता। नाटक का अभिनय-काल अवश्य बढ़ सकता है और यह इस कारण भी कि हिन्दी पंक्तियों के बोलने में अंग्रेज़ी पंक्तियों के बोलने से अधिक समय लगता है। हम अपनी भाषा की प्रकृति और प्रवृत्ति नहीं बदल सकते। ये सीमाएँ उसकी विशेषताओं और गुणों में भी परिवर्तित की जा सकती हैं—भाषा के कुशल कलाकारों द्वारा।

अनुवाद करने में जो लक्ष्य मैंने अपने सामने रक्खे हैं उन्हें मैं एक बार फिर दोहरा देना चाहूँगा—अनुवाद, छायानुवाद न होकर अविकल हो; शेक्सपियर के कवित्व की रक्षा की जाए; नाटक, सामान्य शिक्षित-दीक्षित जनता के सामने खेला जा सके; और चरम लक्ष्य यह हो कि अनुवाद अनुवाद न मालूम हो। और मैं यह चाहूँगा कि इसी आदर्श को सामने रखकर मेरा अनुवाद जाँचा-परखा जाए। जो लोग कर सकें वे मूल अंग्रेज़ी के साथ इसकी तुलना करें। केवल अनुवाद में रुचि रखनेवाले इसे सस्वर पढ़ें—कविता के समान नाटक को भी सस्वर पढ़ना चाहिए। तभी यह पता चल सकता है कि सम्भाषणों में प्रयुक्त शब्दों में भावोद्‌बोधिनी शक्ति है या नहीं। तभी इस बात का अन्दाज़ हो सकता है कि अनुवाद में मौलिक की सी स्वाभाविकता और गति है कि नहीं। स्थानीय पाठक शायद रंगमंच पर भी 'ओथेलो' का अभिनय देख सकें। भावपूर्ण ढंग से नाटक-पाठ किया जाए तो अभिनय के विविध उपकरणों के बग़ैर भी किसी अंश में नाटक का रस लिया जा सकता है—या उसकी परीक्षा हो सकती है। मैं चाहूँगा कि जहाँ अभिनय के साधन नहीं जुट सकते वहाँ केवल नाटक-पाठ के द्वारा लोग मेरे अनुवाद की परीक्षा करें और अगर

वह खरा उतरे तो उसका आनन्द लें। साहित्यिक मूल्य के किसी भी नाटक में 75 प्रतिशत आनन्द शब्दों की भावोद्बोधिनी शक्ति द्वारा उत्पन्न किया जाना चाहिए। 25 प्रतिशत वेश-भूषा, रूप-सज्जा, रंगमंच-विधान, प्रकाश-व्यवस्था अथवा ध्वनि-प्रभाव पर छोड़ा जा सकता है। नाटकीय आनन्द के लिए इन बाहरी बातों पर जितना अधिक निर्भर रहा जाएगा उतना ही वह नाटक के मूल-पाठ की कमज़ोरी सिद्ध करेगा। इस बात की प्रत्याशा करना कि हमारे छोटे-छोटे नगर भी नाटकों के क़ीमती बाहरी उपकरणों को जुटाने में सफल हो सकेंगे, भूल होगी। पर भावपूर्ण ढंग से नाटक-पाठ करनेवाले उत्साही छोटी-छोटी जगहों में भी इकट्ठे किए जा सकते हैं। मैंने कैम्ब्रिज ऐसी जगह में शेक्सपियर के एक ऐसे नाटक का अभिनय देखा था जिसमें पात्रों ने रोज़मर्रा की पोशाक पहन रखी थी और रंगमंच के बाहरी उपकरणों की ओर कम-से-कम ध्यान दिया गया था। ऐसे अभिनय में मैंने देखा कि अभिनेता अपना सारा ध्यान अपने सम्भाषणों की प्रेषणीयता पर देता है और दर्शक भी—उसे श्रोता कहना अधिक उचित होगा—शब्दों का पूरा प्रभाव ग्रहण करता है, क्योंकि उसके मन को किसी और तरफ़ आकर्षित करनेवाले सामान नहीं होते। यह एक प्रकार से रेडियो की कला का साधारणीकरण है जहाँ श्रोता ध्वनि के माध्यम से भावोद्बुद्ध होकर अभिनय के अन्य अंगों की कल्पना स्वयं करता है। यह किसी रेडियो के स्टूडियो को उठाकर मंच पर रख देना है और अभिनेताओं का सीधा स्वर सुनते हुए इस बात पर आँख मूँद लेना है कि वे क्या पहने हैं, कैसे लगते हैं, किस जगह पर हैं।

इतना अवश्य मानना होगा ऐसे बाह्य-उपकरण-शून्य अभिनय-पाठ में शेक्सपियर के नाटक ही सबसे अधिक सफल हो सकते हैं। कारण शायद इसका यह है कि शेक्सपियर का रंगमंच बहुत ही सादा था। नाटककार को रंग-मंच का प्रभाव भी सम्भाषणों के द्वारा उत्पन्न करना होता था। उनके नाटकों के अनेक सम्भाषण सबूत में उद्धृत किए जा सकते हैं। और शायद यही कारण है कि रेडियो पर भी शेक्सपियर के नाटक बहुत सफल होते हैं। महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय के राज्यारोहण-समारोह के समय बी. बी. सी. ने शेक्सपियर का 'टेम्पेस्ट' अविकल रूप से प्रसारित किया था। उसके कुछ समय पूर्व मैं 'टेम्पेस्ट' को रंगमंच पर भी देख चुका था; और रेडियो पर सुनते हुए भी मुझे यही लगा जैसे 'टेम्पेस्ट' दूसरी बार देख रहा हूँ। रेडियो-नाटककारों को भी शेक्सपियर से बहुत-कुछ सीखना है। दूसरा कारण शायद यह है कि शेक्सपियर का मूल-पाठ अंग्रेज़ों के चेतन-अवचेतन में, शिरा-शिरा में गूँज चुका है। उनके अनुवादों को, बहुत सुन्दर होने पर भी, किसी अन्य देश में, किसी अन्य भाषाभाषियों के बीच, वह स्थान प्राप्त हो सकता है, इसमें सन्देह है। फिर भी अपनी साधनहीनता में, अनुवादों के अभिनय-पाठ से यदि हम आनन्द न उठा सकें तो, कम-से-कम, सस्ते में, उनकी परीक्षा तो कर सकते हैं। इस प्रथा के चल पड़ने से हमें अन्य लाभ भी होंगे। मौलिक नाटकों पर निर्णय देने की एक कसौटी हमारे हाथ आएगी। जहाँ हमें शब्दों से भावोद्बोधन करना सीखना है, वहाँ हमें शब्दों से भावोद्बुद्ध होना भी सीखना है। हमारे कवि-सम्मेलनों के द्वारा इस दिशा में कुछ कार्य हुआ है। नाटकों के द्वारा इस दिशा में और प्रगति की जा सकेगी। हमें यह विश्वास तो रखना ही चाहिए कि कभी हमारी भाषा में भी ऐसे मौलिक नाटक लिखे जायेंगे जिनके शब्दों के साथ हमारे दिल की धड़कनें जुड़ी होंगी। ये भविष्य की बातें हैं। अपने अनुवादों के लिए मैं चाहूँगा कि वे सस्वर पढ़े जायँ; अकेले नहीं, कई लोग साथ मिलकर उन्हें पढ़ें, यानी उनका अभिनय-पाठ

किया जाय। तभी उनके गुण-दोषों को पहचानकर पाठक मुझे भी लाभान्वित कर सकेंगे।

कभी-कभी लोगों ने अनुवाद की भाषा की क्लिष्टता के बारे में भी शिकायत की है। 'मैकबेथ' के अभिनय के बाद प्रायः ऐसे आरोप उन लोगों ने लगाए जो हिन्दी बराय-नाम जानते हैं। मैंने ध्येय यह रक्खा है कि नाटक साधारण हिन्दी-शिक्षित-दीक्षित जनता के सामने अभिनीत हो सके। नाटक की भाषा सरल हो, उसमें प्रेषणीयता हो, बोलते ही वह ग्रहण कर ली जाय—यह सब वांछनीय है। पर नाटक की भाषा से यह प्रत्याशा तो बिल्कुल अजीब है कि उसे न जाननेवाले भी उसे समझ लें। साधारण शिक्षित-दीक्षित का अर्थ अपढ़ नहीं है। आश्चर्य तो इस बात पर है कि हिन्दी में लगभग अपढ़, जो अपने साढ़े तीन सौ शब्दों के बल पर बाज़ार में साग-सब्ज़ी का भाव पटा लेता है, इक्के-ताँगेवाले से किराया-भाड़ा तै कर लेता है, या अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरत रफ़ा कर लेता है, या, यदि उच्चवर्ग का हुआ तो, अपने बच्चे की आया अथवा नौकर-चपरासी से यदा-कदा बात कर लेता है, वह भी इस बात की प्रत्याशा करता है कि हिन्दी के नाम पर जो कुछ लिखा या बोला जाय वह उसकी समझ में आना चाहिए और अगर नहीं आता तो वह संस्कृत-निष्ठ है, क्लिष्ट है, गरिष्ठ है। ऐसों के सामने मैं निवेदन करना चाहूँगा कि अनुवाद शेक्सपियर का किया जा रहा है जिन्होंने मानव-जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों और अन्तर्द्वन्द्वों को मुखरित किया है, और इन्हें आपके साढ़े तीन सौ शब्दों की पूँजी के सहारे प्रतिध्वनित करना किसी के लिए सर्वथा असम्भव है। और यह भी एक बड़ा भारी भ्रम है कि शेक्सपियर सब जगह सरल हैं और अंग्रेज़ जनता या अंग्रेज़ी पढ़ी जनता रंगमंच पर बोला गया शत-प्रतिशत समझ लेती है। यदि ऐसा होता तो शेक्सपियर को निम्न श्रेणी से लेकर उच्च श्रेणी तक सैकड़ों सटिप्पण संस्करणों की सहायता से पढ़ाने की आवश्यकता न होती। शेक्सपियर में बहुत-सी जगहों पर क्लिष्टता है, पेचीदगी है, अस्पष्टता है। और ऐसे स्थलों पर उन्हें रसमय सहानुभूति से ही समझा जा सकता है, ठीक उसी तरह जैसे हम तुलसीदास के अनेक क्लिष्ट स्थलों को भक्ति-भाव में बहते हुए समझ लिया करते हैं। अनुवादों में आई हुई क्लिष्टता को न्यायोचित ठहराने के लिए मैं ये पंक्तियाँ नहीं लिख रहा, बल्कि इस-लिए कि दर्शक, श्रोता या पाठक कभी अपनी सीमाओं का भी ध्यान रक्खें।

हिन्दी 'मैकबेथ' के अभिनय की आलोचना करते हुए दिल्ली के एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पत्र ने लिखा था कि विदेशी वेश-भूषा में, विदेशियों के समान आचरण करनेवाले पात्रों का हिन्दी बोलना परम असन्तोषजनक व्यवहार लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि वे नक़ली जान पड़े और उनसे निकटता नहीं स्थापित हो सकी। इस प्रकार की आलोचना अनुवाद की प्रथा और नाटक की समय-सिद्ध परम्परा पर कठोराघात है। तब तो एक भाषा के नाटकों का दूसरी भाषा में अनुवाद बन्द हो जाना चाहिए। अगर होना चाहिए तो केवल अनुकूलीकरण (एडैप्टेशन)। यानी जब 'शकुन्तला' नाटक अंग्रेज़ी में उपस्थित किया जाय—पुस्तक रूप में या रंगमंच पर—तो हमारा दुष्यन्त मिस्टर स्मिथ हो जाय, चीनी में उप-स्थित किया जाय तो चिंग-चांग। कालिदास के दुष्यन्त का प्रतिनिधित्व स्मिथ और चिंग-चांग से कितना किया जा सकेगा, यह सोचने की बात है। टूटल टाई और सोला हैट में या चीनी चोग़े में दुष्यन्त कैसा लगेगा! सन्तोष का विषय है कि इंग्लैण्ड, रूस, जर्मनी, चीन—सभी के रंगमंचों पर विभिन्न देश की भाषा बोलते हुए दुष्यन्त दुष्यन्त ही हैं, भारतीय वेश-भूषा में। हमारे आलोचक को भी कुछ ऐसे

अभिनय-चित्रों को देखने का सुयोग मिला होगा। दूसरी बात है नाटक की परम्परा की। यदि एक भाषाभाषी से दूसरी भाषा बोलवाना साहित्यिक अपराध है तो इसका दोषी अनुवादक ही नहीं, मूल लेखक भी है। मैं पूछना चाहूँगा, जूलियस सीज़र कब अंग्रेज़ी बोलता था, टाइमन आफ़ एथेन्स कब अंग्रेज़ी बोलता था, क्लियोपाट्रा कब अंग्रेज़ी बोलती थी? शेक्सपियर ने लातीनी, यूनानी, मिस्री बोलने-वालों के मुख में अंग्रेज़ी रखने की धृष्टता क्यों की? 'रोमियो और जूलियट' की लीला-भूमि इटली है। 'ओथेलो' के पात्र इटली और साइप्रस के हैं और अंग्रेज़ी रंगमंच पर अपने-अपने देश की वेश-भूषा में उपस्थित होकर भी विशुद्ध अंग्रेज़ी बोलते हैं। पर इसके विरुद्ध कभी आवाज़ नहीं उठाई गई। अभी तो अंग्रेज़ीदाँ हिन्दियों के मुख में हिन्दी भी अस्वाभाविक लगती है, फिर अंग्रेज़ पात्रों के मुख में हिन्दी कैसे स्वाभाविक लगे! मुझे आश्चर्य नहीं कि हिन्दी का यह साहस हमारे इन साहबों के बीच दुःसाहस समझा जा रहा है।

अब कुछ 'ओथेलो' के विषय में। शेक्सपियर (1564-1616) ने कुल मिला-कर सैंतीस नाटक लिखे थे—दुःखान्त, सुखान्त, ऐतिहासिक और दुःख-सुखान्त। इनमें से कुछ का उन्होंने संशोधन-सम्पादन भर किया था, परन्तु मूल लेखक के नगण्य होने के कारण वे सब शेक्सपियर के नाम से ही सम्बद्ध हैं। इनमें सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं उनके चार दुःखान्त नाटक—'मैकबेथ', 'ओथेलो', 'हैमलेट' और 'किंग लियर'। इनमें से हरएक को किसी न किसी विद्वान् ने, किसी न किसी दृष्टि से, सर्वोच्च सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। 'ओथेलो' के विषय में मेकाले ने लिखा है कि सम्भवतः यह संसार की सबसे महान् रचना है (ओथेलो इज़, परहैप्स, द ग्रेटेस्ट वर्क इन द वर्ल्ड)।

यह विवादास्पद हो सकता है, किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि शेक्सपियर के चार शीर्षस्थ दुखान्त नाटकों में किसी का विषय ऐसा नहीं जो मानव-जीवन को इतनी निकटता से स्पर्श करता हो जितना 'ओथेलो' का विषय। मैकबेथ, हैमलेट और लियर के सामने जो समस्याएँ आती हैं वे साधारण जीवन से बहुत दूर की हैं। ओथेलो की समस्या हर घर में खड़ी हो सकती है—पत्नी पर सन्देह की—जिससे एक सुखमय परिवार का बलिदान हो जाता है।

नाटक की कथा इस प्रकार है:

राडरीगो, इयागो की सहायता से, वेनिस के राज्यसभासद, ब्रबैंशियो की कन्या डेसडिमोना से विवाह करना चाहता था, पर उसने एक रात चोरी-चोरी घर से निकलकर राज्य के मूर सेनापति ओथेलो से विवाह कर लिया। उसी रात इयागो से इस गुप्त-परिणय का समाचार पाकर राडरीगो ओथेलो से बहुत जला। इयागो ओथेलो से पहले ही जला-भुना था, क्योंकि उसने अपने सह-सेनापति का पद उसे न देकर कैसियो को दे दिया था और उसे केवल अपना झण्डाबरदार बनाया था। दोनों ने ओथेलो के रंग में भंग करने के इरादे से ब्रबैंशियो को जगाकर उसकी कन्या के भागने का रहस्य उस पर प्रकट कर दिया। ब्रबैंशियो ओथेलो की खोज में निकला। ओथेलो का झण्डाबरदार होने के कारण इयागो खुल्लम-खुल्ला उसका विरोध नहीं कर सकता था। इस कारण वह आगे-आगे भागकर ओथेलो के पास पहुँच गया और उससे ऐसी बातें करने लगा जैसे ब्रबैंशियो को जगाने में उसका कोई हाथ ही न हो, और न राडरीगो से उसकी मित्रता हो।

उसी रात वेनिस-अधीन साइप्रस पर तुर्कों के आक्रमण का समाचार आया था, और राज्यसभा ने ओथेलो को उनके विरुद्ध भेजने को बुलवाया था। ब्रबैंशियो ने

उसी सभा में जादू-टोने से डेसडिमोना को वश में करने का आरोप ओथेलो पर लगाया। ओथेलो का कहना था कि डेसडिमोना ने उसके पराक्रम और संघर्षपूर्ण जीवन के प्रति आकर्षित होकर उससे विवाह किया है। वेनिस के राजा ने डेसडिमोना को बुलवाया कि वह स्वयं परिस्थिति स्पष्ट करे। डेसडिमोना सभा में आई तो उसने स्वेच्छया ओथेलो से विवाह करने की बात स्वीकार की। ब्रबैंशियो के विरोध के बावजूद राज्यसभा ने ओथेलो और डेसडिमोना का विवाह विधि-सम्मत माना। ब्रबैंशियो ने खिसियाकर ओथेलो को आगाह किया कि डेसडिमोना ने अपने पिता को धोखा दिया, कहीं पति को भी न दे। और इस प्रकार सन्देह का बीज बो दिया गया।

तुर्कों का मुक़ाबला करने के लिए, राज्यसभा की आज्ञा से ओथेलो और कैसियो अलग-अलग जहाज़ों पर साइप्रस के लिए रवाना हुए। ओथेलो ने एक सप्ताह बाद डेसडिमोना को वहाँ लाने का काम इयागो को सौंपा। इयागो ने राडरीगो को चुपके-चुपके समझाया कि वह निराश न हो और डेसडिमोना को प्राप्त करने के ध्येय से वेश बदलकर उसके साथ साइप्रस चले। रास्ते में ज़ोरों का तूफ़ान आया। कैसियो पहले पहुँचा; फिर डेसडिमोना, छद्मवेशधारी राडरीगो और सपत्नीक इयागो पहुँचे। ओथेलो सब के बाद पहुँचा और डेसडिमोना को वहाँ पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। तुर्कों से लड़ने की ज़रूरत ही न पड़ी; उनका बेड़ा तूफ़ान ने ही ग़र्क़ कर दिया।

साइप्रस में भी इयागो और छद्मवेशधारी राडरीगो कैसियो और ओथेलो से बदला लेने का षड्यन्त्र रचने लगे। पहली चाल इयागो ने यह सोची कि जब कैसियो पहरे पर हो तब राडरीगो उसे किसी बात पर छेड़ दे और इस कारण जो दंगा-फ़साद हो, उसकी बदौलत कैसियो अपने पद से हटा दिया जाय। कैसियो को शराब पिला, दंगा करा, इयागो उसे ओथेलो का कोप-भाजन बनवाने में सफल हुआ। फिर, उसे अपना पद वापस पाने के लिए डेसडिमोना के पास भेजकर इयागो ने ओथेलो के मन में यह सन्देह जगाया कि कैसियो और डेसडिमोना में अनुचित सम्बन्ध है। इसे साबित करने के लिए उसने अपनी पत्नी एमीलिया के द्वारा डेसडिमोना का एक रूमाल चोरवा लिया, जो उसे ओथेलो ने प्रेम-चिह्न के रूप में दिया था। इस रूमाल को तो उसने कैसियो के कमरे में डाल दिया और ओथेलो से लगा दिया कि डेसडिमोना ने उसे कैसियो को भेंट किया। जब ओथेलो ने छिपकर रूमाल कैसियो के हाथ में देखा तो उसका सन्देह पुष्ट हो गया और उसने निर्णय कर लिया कि वह डेसडिमोना की हत्या कर डालेगा। इयागो से उसने कहा कि वह कैसियो का सफाया कर दे।

इसी बीच वेनिस से लोडोविको और ग्रेशियानो साइप्रस आये और उन्होंने ओथेलो को वापस बुलाने और कैसियो को उसकी जगह नियुक्त करने का हुक्म सुनाया। ओथेलो और उद्विग्न हो उठा और उसने सबके सामने और अलग अपनी पत्नी का बड़ा अपमान किया। और अन्त में क्रोध में पागल होकर उसने निरपराध डेसडिमोना का गला घोट दिया। कैसियो को मारने का काम इयागो ने राडरीगो को सौंपा था, पर दोनों घायल होकर रह गये। औरों के सामने भेद खुलने के डर से इयागो ने खुद राडरीगो को मार डाला। एमीलिया ने जो कुछ स्वीकार किया उससे, और मृत राडरीगो के पास जो पत्र मिले उनसे, यह सिद्ध हुआ कि यह सारा षड्यन्त्र इयागो-रचित था; कैसियो निर्दोष था; डेसडिमोना निष्कलंक थी। निरपराध डेसडिमोना की हत्या करने के कारण ओथेलो को इतना पश्चात्ताप हुआ

कि उसने आत्महत्या कर ली।

किसी ने कहा है कि अगर 'मैकबेथ' नाटक की कुंजी हवस है तो 'ओथेलो' नाटक की, बदला। इयागो ने अपने अपमान का बदला लिया। उसे ओथेलो ने सह-सेनापति का पद नहीं दिया था। कुछ समालोचकों की सम्मति है कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था। यह तो अपने को दुष्कृति में प्रेरित करने के लिए इयागो की कल्पना भर है, जैसे उसने इसकी कल्पना कर ली थी कि ओथेलो और कैसियो का उसकी पत्नी से प्रेम है। वास्तव में इयागो ने किसी कारणवश यह कुचाल नहीं चली। जैसे कुछ लोग निष्काम भलाई करते हैं वैसे ही इयागो निष्कारण बुराई करता है। उसे 'मोटिवलेस मैलिगनिटी' का उदाहरण माना जाता है। अपनी बुद्धि की तेज़ी और चालाकी से सबको मूर्ख बनाने में उसे आनन्द आता है। अपने शिकार को हास-परिहास की सीमा में ही रखता तो हम शायद इयागो के प्रशंसक होते। पर उसने अपने कुचक्र से कुछ सरल, कुछ सुन्दर, कुछ सुखमय को निर्ममता से कुचल डाला है। और उसे ज़रा भी पश्चात्ताप नहीं है। हम उसकी बुद्धि का चमत्कार देखते रह जाते हैं और हमारे सामने डेसडिमोना, एमीलिया और ओथेलो की लाशें बिछ जाती हैं।

कथा में घटनाएँ ही प्रधानता पाती हैं। नाटक में शेक्सपियर ने मुख्यतया चरित्र-चित्रण किया है। सम्भाषणों के द्वारा जहाँ कथा ने प्रगति की है वहाँ पात्रों ने भी अपने-आपको अभिव्यक्त और विकसित किया है—हर पात्र अपनी सत्ता में सबसे अलग और नाटक के मन्तव्य में सबसे मिला हुआ।

'ओथेलो' के अनुवाद को पुस्तक-रूप में उपस्थित करते हुए इसकी कल्पना करना मेरे लिए स्वाभाविक है कि देखूँ, कितने लोगों के लिए इसके पात्र मेरे शब्दों से साकार हो पाते हैं, कितने लोग इन पात्रों को मेरे शब्दों से सजीव कर पाते हैं। 'ओथेलो' के पात्रों की भूमिका में उतरने के अभिनयप्रिय अभिलाषी श्रीमती तेजी बच्चन से सम्पर्क स्थापित करें। वे इसे रंगमंच पर प्रस्तुत करने की योजना बना रही हैं।

दूसरा संस्करण

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि 'ओथेलो' के मेरे अनुवाद का दूसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है।

इसकी जो आलोचनादि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में निकलीं उससे मैं प्रभावित नहीं हुआ। वे प्रायः अनधिकारियों द्वारा लिखी गई थीं जिन्हें न तो अंग्रेज़ी का ज्ञान था, न वे अनुवाद का मर्म समझते थे, न उन्हें इसी का बोध था कि खेले जानेवाले नाटक के लिए पात्र-परिस्थित के अनुरूप किस प्रकार भाषा की विविधता और उसके उतार-चढ़ाव की आवश्यकता है। कहीं प्रशंसा-निन्दा थी—और हिन्दी की आलोचना इन्हीं दोनों सिरों पर मँडराती रहती है—तो मैं नहीं समझ सका कि किस बात की निन्दा और किसकी प्रशंसा की गई है। मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि सारी आलोचनाओं-टिप्पणियों में मुझे अपने अनुवाद में परिवर्तन या सुधार करने के लिए शायद ही कोई सृजनशील सुझाव मिला हो।

लेकिन मैं जानता था कि मेरा सबसे सच्चा और सबसे सही आलोचक रंगमंच होगा। इस कारण मैं चाहता था कि किसी प्रकार 'ओथेलो' का मेरा अनुवाद

रंगमंच पर प्रस्तुत किया जा सके। इसकी प्रारम्भिक तैयारी के रूप में पहले 'ओथेलो' का नाटक-पाठ कई बार किया गया, जिसमें मेरी पत्नी, मेरे बड़े लड़के अमित, मेरे कुछ शिष्यों-मित्रों, और मैंने भाग लिया। इससे हम सभी को यह विश्वास हुआ कि रंगमंच से उच्चरित शब्द-माला नाटकीय, तुरत-बोधगम्य, उद्बोधक और प्रभावकारी सिद्ध होगी।

इसके बाद एक सन्ध्या को हमने अपने ड्राइंग रूम में 'ओथेलो' के अभिनय-पाठ का आयोजन किया। नाटक-पाठ और अभिनय-पाठ का अन्तर मैं कहीं स्पष्ट कर चुका हूँ। नाटक में रुचि रखनेवाले हमारे तीस-पैंतीस मित्र आये, जिनमें श्रीमती इन्दिरा गांधी (अब प्रधान मन्त्री) और श्री गोपाला रेड्डी भी थे जो उस समय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री थे। 'ओथेलो' के कुछ दृश्य प्रस्तुत किये गये और सभी लोगों ने उनकी सराहना की। श्री रेड्डी विशेष प्रभावित हुए और उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि 'ओथेलो' का एक संक्षिप्त रूप रेडियो से प्रसारित किया जाये।

मैंने नाटक की एक संक्षिप्त स्क्रिप्ट तैयार की। नई दिल्ली रेडियो स्टेशन के ड्रामा-प्रोड्यूसर श्री चिरंजीत के और मेरे निर्देशन में 'ओथेलो' रेडियो से प्रसारित किया गया। इसमें डेसडिमोना की भूमिका मेरी पत्नी ने अदा की, इयागो की भूमिका हिन्दी के कवि श्री देवराज दिनेश ने। मुझे इस समय याद नहीं कि और किन लोगों ने इसमें भाग लिया। प्रसारण बहुत पसन्द किया गया और एकाधिक बार नई दिल्ली से इसकी आवृत्ति हुई। पर इतने से ही मुझे सन्तोष न था, मैं 'ओथेलो' को रंगमंच पर लाने के लिए उत्सुक था।

नई दिल्ली में कोई भी नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत करना धन-साध्य व्यवसाय है। 'हिन्दी-शेक्सपियर मंच' के जिन सदस्यों ने 'मैकबेथ' प्रस्तुत किया था उनमें से अधिकांश लोग इधर-उधर हो गये थे। नये और योग्य अभिनेताओं को फिर एकत्र करना दूसरी बड़ी समस्या थी। बहुत से प्रयत्न किये गये, बहुत बार लोगों को देखा-परखा गया; कुछ उत्साही थे, पर उनमें अभिनय-क्षमता नहीं थी; कुछ में अभिनय-क्षमता थी, पर उनमें उत्साह नहीं था, या उनके पास समय नहीं था; उनकी माँग दूसरी जगहों पर भी थी; कुछ भाषा का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकने के कारण हमारे काम के नहीं थे। हमने बहुत से लोगों को बहुत बार ठोंका-पीटा पर वैद्यराज किसी को न बना सके। और आवश्यकता हमें एक की नहीं, कइयों की थी। तीन हम अपने घर के थे; तेजीजी डेसडिमोना का पार्ट करने को तैयार थीं, अमित कैसियो का पार्ट कर सकता था, मैं ब्रबैंशियो का; पर नौ-दस और पात्रों की भूमिका में उतरनेवालों की हमें खोज थी, जिनमें दो सर्वप्रमुख पात्र थे ओथेलो और इयागो जिन्हें अच्छी साफ़ आवाज़ का ही नहीं, अच्छे क़द, काठी का भी होना था। धन के अभाव में अभिनय का समय अनिश्चित होने के कारण अच्छी सम्भावनाओं के अभिनेता-अभिनेत्री भी चार-छह बार रिहर्सल में आकर घर बैठ रहते। यों शेक्स-पियर का नाटक लम्बे रिहर्सल की माँग करता है—'मैकबेथ' प्रस्तुत करते समय हमने पूरे छह महीने का रिहर्सल किया था—पर और किसी तरह की तैयारी के अभाव में अभिनेताओं को सन्देह होता कि ऐसा न हो कि वे अभ्यास मात्र करके रह जाएँ, और नाटक को रंगमंच पर लाने की कभी नौबत ही न आए। महीनों के प्रयत्नों का जो परिणाम निकलता उसे देखकर मुझे निराशा होती पर तेजीजी विश्वास दिलातीं, 'ओथेलो' रंगमंच पर आयेगा, ज़रूर आयेगा।

मैंने यह निश्चय किया कि पहले कुछ धन इकट्ठा किया जाये। तीन रात नाटक खेलने के खर्च का अनुमान लगाया जाये, जो कुछ प्राप्त धन से पूरा न हो सके उसे

अपने पास से मिलाया जाये। मैंने ब्रिटिश कौंसिल के सेक्रेटरी को अपनी कठिनता और आवश्यकता बतलाई तो अंश-योगदान के रूप में उन्होंने 1000 रु. देने का वचन दिया। एक और नाटक-प्रेमी मित्र ने एक बड़ी रक़म हमारे हाथों में रख दी—नाम अपना वे गुप्त रखना चाहते हैं। 'मैकबेथ' प्रस्तुत करने के लिए स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू ने प्रधानमन्त्री-कोष से हमें 15,000 रु. की सहायता दी थी। दोबारा उनके सामने हाथ फैलाते हुए मुझे संकोच हुआ। 'मैकबेथ'-अभिनय के समय की कुछ पोशाकें, कुछ नाटकोपयोगी सामान हमारे पास था; अब कुछ पैसा भी हमारे हाथ आ गया था, और यथावश्यकता हम कुछ अपने पास से भी लगा सकने की स्थिति में थे; हमने 'ओथेलो' के अभिनय की एक तिथि की घोषणा कर दी, जो बहुत दूर की नहीं थी, और थियेटर हाल की बुकिंग के लिए लिखा-पढ़ी शुरू कर दी जिससे हमारे नौसिखुए अभिनेताओं को यह विश्वास हो गया कि अब हम नाटक प्रस्तुत करने के लिए गम्भीर हैं और ठोस क़दम उठाने जा रहे हैं।

इस बीच मेरी पत्नी ने 'दि लिटिल थियेटर ग्रुप' से सम्पर्क स्थापित किया जो नाटकों के क्षेत्र में नई दिल्ली की एक ख्याति-प्राप्त संस्था है। उसके अधिकारियों से सलाह-मशविरा करके यह निश्चय हुआ कि नाटक दोनों संस्थाओं के तत्त्वावधान में खेला जायेगा; व्यय का दायित्व 'हिन्दी शेक्सपियर मंच' का होगा और संगठन और प्रबन्ध का 'दि लिटिल थियेटर ग्रुप' का—

आओ पड़ोसिन पुए पकाएँ,
आटा-घी-गुड़ तेरा,
ईंधन-पानी, चूल्ह-कड़ाही,
चकला-बेलना मेरा—

और टिकट की बिक्री से जो आमदनी होगी उसे राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष में दे दिया जायेगा—उस समय तक चीनी आक्रमण आरम्भ हो गया था। ख़ैर, ग्रुप के सहयोग से हमें रिहर्सल करने के लिए नगर में एक केन्द्रीय जगह मिल गई, परदे के पीछे कई तरह के काम करनेवाले कुछ अनुभवी लोग मिल गये और प्रचार और टिकट बेचने में भी सहायता मिली।

श्री गोपाल कौल ने नाटक के निर्देशन का कार्यभार सँभाला; वे 'हिन्दी शेक्सपियर मंच' के 'मैकबेथ' के प्रदर्शन में बैंको की भूमिका में उतरे थे। 'मैकबेथ' का सेट रचनेवाले लेनिन पन्त ने 'ओथेलो' के लिए भी सेट रचा। उसी नाटक में मैकबेथ की भूमिका अदा करनेवाले अशोक रामपाल इयागो के लिए मिल गये। मेरी पत्नी ने जिन्होंने 'मैकबेथ' में लेडी मैकबेथ का पार्ट अदा किया था, एमीलिया का पार्ट लिया। हमारे पूर्व अभिनय के इन्हीं चार लोगों का सहयोग 'ओथेलो' के लिए मिल सका। कैसियो का पार्ट मेरे बड़े लड़के को दिया गया—नाटक-पाठ और अभिनय-पाठ के अभ्यासों में वह उसकी भूमिका के लिए खूब मँज गया था। रवीन्द्र कपूर आरम्भ से ही ओथेलो के लिए निश्चित थे। कई प्रयोगों के बाद नीरा कुकरेजा डेसडिमोना के लिए उपयुक्त पाई गईं। भूषण कालरा पर राडरीगो की भूमिका खूब चस्पा हुई। शेष पात्र कई बार अदले-बदले गये। पात्रों और सहायकों की पूरी सूची अन्यत्र दी जा रही है।

4, 5 और 6 जनवरी 1963 को फ़ाइन आर्ट्स थियेटर, नई दिल्ली, में 'ओथेलो' अभिनीत किया गया। पहले दिन दर्शकों में स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी मौजूद थीं। आपत्कालीन स्थिति में

नेहरूजी को निमन्त्रित करने में हमें बड़ा संकोच था, पर उन्होंने स्वयं आकर हमारा नाटक देखने की इच्छा व्यक्त की। उनकी उपस्थिति से अभिनेताओं में उत्साह की एक लहर दौड़ गई। वे पूरे साढ़े तीन घण्टे एक आसन से बैठे नाटक देखते रहे और समाप्त होने पर उन्होंने मंच पर आकर अभिनेताओं को बधाई दी। अभिनय बहुत सफल हुआ। राजधानी के अंग्रेज़ी दैनिकों में दूसरे दिन उसकी बड़ी प्रशंसा की गई। इयागो की भूमिका में अशोक रामपाल का अभिनय बहुत सराहा गया। हिन्दी दैनिक प्राय: मौन रहे; नाटक की आलोचना करनेवाले अभी उनके पास कम ही हैं; जो हैं उनमें अंग्रेज़ी नाटकों को, विशेषकर शेक्सपियर के नाटकों को, परखने की सूझ-बूझ नहीं है।

हाल तीनों रातों को पूरा भरा रहा और टिकट की बिक्री से हुई आमदनी की एक अच्छी रक़म सुरक्षा-कोष में दी गई।

अनुवादक के रूप में मुझे अपने छन्द, भाषा, शैली से एक बार फिर सन्तोष का अनुभव हुआ। नाटक की भाषा से तुरत बोधगम्य होने की जो माँग न्यायत: की जाती है उसे मेरा अनुवाद निश्चय ही पूरा कर सका। त्रासदी से समुचित भावोद्बोधन का साक्ष्य कोई दर्शक ही दे सकता है। अभिनय की दृष्टि से 'ओथेलो' का अभिनय 'मैकबेथ' के अभिनय से कुल मिलाकर अधिक सफल रहा। दर्शकों पर पूरे समय उसकी पकड़ बनी रही। इसका कथानक जनजीवन के अधिक निकट भी है।

इस दूसरे संस्करण में नाटक के मूलपाठ में कोई विशेष संशोधन करने की आवश्यकता मैं नहीं समझ रहा हूँ। पिछले संस्करण की प्रेस आदि की भूलें मैंने सुधार दी हैं।

प्रथम अभिनय के कुछ चित्र भी इस संस्करण के साथ दिये जा रहे हैं।*

अन्त में मैं फिर कहना चाहता हूँ कि 'ओथेलो' की, जैसे अन्य नाटकों की, सार्थकता अभिनीत होने में ही है। साथ ही मैं यह भी जानता हूँ कि अभिनय बड़ी धन-साध्य समस्या है। कुछ लोगों का सहयोग मिल सके तो अभिनय-पाठ बिना किसी खर्च के सम्भव है। यानी, बिना किसी प्रकार की साज-सज्जा के, किसी भी जगह, पात्र गति-मुद्रा के साथ अपनी-अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। कुछ सुरुचि-सम्पन्न, नाट्य-दीक्षित और कल्पना-प्रवण दर्शक-श्रोता मिल जाएँ तो ऐसे अभिनय में नाटक के मूल-पाठ का प्रसाद-ओज-माधुर्य ही अन्य रंगमंची अभावों को पूरा कर सकता है। मेरे अनुवाद का मूलपाठ इस सम्बन्ध में मूल से कितनी होड़ ले सकेगा, यह मेरे कहने की बात न होकर, समय के कहने की है। फिर भी मैं चाहूँगा कि यदि मेरे अनुवाद के मूलपाठ में नाटकीयता और सजीवता है तो उसे इस परख पर भी रखा जाये।

मैं तो एकाकी पाठक से भी प्रार्थना करूँगा कि वह इस नाटक को सस्वर पढ़े— सम्भव हो तो प्रसंगानुकूल भावों को अभिव्यक्ति देनेवाले सप्राण स्वरों में। अपने से कुछ देर को अलग हो पाना बड़ी स्वस्थ मानसिक साधना है।

13, विलिंगडन क्रिसेण्ट, **बच्चन**
नयी दिल्ली-11
1-3-66

*रचनावली में ये चित्र नहीं दिये जा रहे हैं।

नाटक के पात्र

वेनिस का राजा	
ब्रबैंशियो	राज्य सभासद
अन्य राज्य सभासद	
ग्रेशियानो	ब्रबैंशियो का भाई
लोडोविको	ब्रबैंशियो का नातेदार
ओथेलो	वेनिस राज्य की सेवा में एक सज्जन मूर; सेनापति
कैसियो	ओथेलो का सह-सेनापति
इयागो	ओथेलो का झण्डाबरदार
राडरीगो	वेनिस का नागरिक
मनटानो	साइप्रस की सरकार में ओथेलो का पूर्ववर्ती
विदूषक	ओथेलो की सेवा में
डेसडिमोना	ब्रबैंशियो की पुत्री, ओथेलो की पत्नी
एमीलिया	इयागो की पत्नी
बियांका	कैसियो की रखेल
	मल्लाह, हरकारा, ढँढोरिया, अफ़सर, नागरिक, गवैया और नौकर-चाकर
स्थान	वेनिस, और साइप्रस का एक बन्दरगाह

'ओथेलो' का प्रथम अभिनय

पात्र-परिचय

पुरुष

वेनिस का राजा	के. के. जौहरी
ब्रबैंशियो	मधुकर
अन्य राज्य सभासद	कुल भूषण
	एल. एस. श्रीवास्तव
ग्रेशियानो	चन्द्रमोहन कपूर
लोडोविको	प्रदीप कुकरेजा
ओथेलो	रवीन्द्र कपूर
कैसियो	अमिताभ बच्चन
इयागो	अशोक रामपाल

राडरीगो	भूषण कालरा
मनटानो	हरिकृष्ण घई
सैनिक	चार्ल्स मैसी
	चन्द्र मोहन
	मोहन बतरा
	एस. के. आनन्द

स्त्री

डेसडिमोना	नीरा कुकरेजा
एमीलिया	तेजी बच्चन
बियांका	नीलम मलहोत्रा

सम्बद्ध सहायक

निर्देशन	गोपाल कौल
रंगमंच प्रबन्ध	लेनिन पन्त
सेट निर्माण	रवीन्द्र कपूर, चमन लाल
प्रकाश	एस. मुकर्जी
प्रभाव	दीनानाथ
वेश-भूषा तथा मंच सामग्री	के. के. जौहरी
रूप-सज्जा	डी. वी. नन्दा
प्रोत्साहन	कुल भूषण
अन्य सहायता	आर. आर. सहाय
	के. सी. भटनागर
	दर्शन लाल
	के. एस. माथुर
	रघुनाथ भटनागर
	श्रीमती अशोक रामपाल
	श्रीमती उर्मिल राजपाल

पहला अंक

पहला दृश्य

वेनिस की एक गली

(**राडरीगो और इयागो आते हैं।**)

राडरीगो : हट, मत मुझसे बन; मैं इससे बहुत दुखी हूँ
कि तू, इयागो, जिसने मेरी दौलत ख़र्ची
ऐसे, जैसे मेरी गँजिया की डोरी बस
तेरी ही हो, यह सारा कुछ जान रहा था।

इयागो : क़समन कहता, लेकिन मेरी तुम न सुनोगे :
अगर कभी मैंने सपने में भी सोचा हो
ऐस होगा, बेशक तुम मुझको दुत्कारो।

राडरीगो : तू तो कहता था तुझको उससे नफ़रत है।

इयागो : अगर न ऐसा हो तो मुझ पर लानत भेजो।
इस वेनिस के तीन बड़े लोगों ने जाकर
उसके आगे टोपी रख दी कि वह कृपा कर
मुझको अपना सह-सेनापति रख ले : औ' फिर,
क़सम जवानी की, मुझको मालूम खूब है
अपनी क़ीमत, इससे छोटा पद पाने को
नहीं बना मैं : पर उसको घमण्ड है अपने
दर्जे का, अपनी मंशा का, नाज़ुक हालत
और वक्त का उठा बवण्डर, और जंग के
कुछ भारी-भरकम लफ़्ज़ों की झड़ी लगाकर
वस उनको टरका देता है;
और नतीजा ?
वे अपना-सा मुँह लेकर वापस आते हैं :
वह कहता है, "मैंने तो हफ़्तों पहले से
अपना अफ़सर चुन रक्खा है।"
और कौन वह ?

बड़ा जोड़-बाक़ीगर, इसको ठीक मानना,
माइकेल कैसियो, एक फ़्लोरेंस-निवासी,
जिसका फूटा भाग्य सुन्दरी पत्नी पाकर;
जो सेना ले कभी समर में नहीं बढ़ा है,
औ' रण का संचालन जिससे ज़्यादा अच्छी
तरह जुलाहा कर सकता है; वह क्या जाने
वर्दी कसना; हाँ, चोग़ाधारी वकील-सा
वह ख़ूबी के साथ किताबी ज्ञान ज़रूर
बघार सकेगा। हाथों में तलवार की जगह
जबड़ों के अन्दर कैंची है। लेकिन, साहब,
उसे पसन्द किया जाता है; और मुझे, जिसकी
बाहों का जौहर उसने अपनी आँखों
से देखा रोडेश, साइप्रस; ईसाई औ'
काफ़िर देशों में, उस पर इस काट-सियो के
दर्ज़ी को तरजीह दी गई; टुकड़जोड़ यह,
टुकड़ख़ोर यह, मौक़ा पाकर सहसेनापति
बन बैठा है। मैं बेचारा—ख़ुदा बचाए
मेरी इज़्ज़त—इस हब्शी के पीछे-पीछे
चलनेवाला बस झण्डाबरदार बना हूँ।

राडरीगो : मैं तो उसके लिए दार* बनना चाहूँगा।

इयागो : कोई नहीं इलाज; नौकरी का यह रोना,
लोग सिफ़ारिश और ख़ुशामद से बढ़ते हैं;
कहाँ रह गई अब पहले की दर्जेबन्दी,
जिसमें आगेवाले के हटने पर पीछे-
वाला उसका पद पाता था। अब तुम ख़ुद यह
मुझे बताओ, क्या वह ऐसी ख़ास वजह है
जो मुझको मजबूर करेगी, इस हब्शी को
प्यार करूँ मैं।

राडरीगो : मैं तो उसके पास न फटकूँ।

इयागो : सब्र करो भी;
मैं अपने मतलब से उसके साथ लगा हूँ :
मालिक हममें से हर एक नहीं बन सकता,
और न हर मालिक की सच्चे दिल से सेवा
की जा सकती। तुमने अक्सर देखा होगा
उन फ़रमाबरदार बुद्धुओं को जो अपनी
रीढ़ झुकाए, खीस निपोरे, अपने मालिक
के क़दमों में घुटने टेके, और ग़ुलामी
में रहने को फ़ख़्र समझते, अपनी सारी
उम्र काट देते हैं; वे हैं गधों की तरह,
जो चारे-भूसे की ख़ातिर बोझा ढोते,

---

*सूली जिससे प्राणदण्ड देते थे, फाँसी।

औ' जब बूढ़े हो जाते हैं, कान पकड़कर
उन्हें निकाल दिया जाता है। मेरी चलती
तो इनको कोड़े लगवाता। पर ऐसे भी,
जो बाहर से तो मालिक की खूब वफ़ा-
दारी करते हैं, पर भीतर से वफ़ादार वे
अपने होते; अपने मालिक की दिखावटी
सेवा करके वे अपनी जेबें भरते हैं,
और ख़ज़ाना अपना जब वे भर लेते हैं,
तभी समझते हैं कि उन्होंने अपनी कोई
सेवा की है : ये हैं जिनमें कुछ जीवन है;
ऐसे लोगों में अपने को मैं गिनता हूँ।
सुनो राडरीगो, मुझको है क़सम तुम्हारी,
गर हब्शी के पद पर मैं होता तो हर्गिज़
मैं न इयागो को रखता जो आज बना मैं।
मैं हूँ उसके संग सिर्फ़ अपने मतलब से :
ख़ुदा देखता, फ़र्ज़-मुहब्बत के कारण मैं
उसके साथ नहीं फिरता हूँ; सिर्फ़ दिखावा
इनका करता अपने एक ख़ास मतलब से।
अगर कभी मेरे ऊपर के काम-बात से
मेरे दिल की असली सूरत-सीरत झलके—
जैसे भीतर वैसे बाहर—तो इससे तो
अच्छा है यह मेरी हाड़-मांस की छाती
शीशे की हो, जिससे जिस बुद्धू का जी हो
ताके-झाँके : मैं जो हूँ, मैं वही नहीं हूँ।

राडरीगो : कितना ख़ुशक़िस्मत यह मोटे होठोंवाला
हब्शी होगा गर वह सुन्दर औ' सुकुमारी
डेसडिमोना-सी प्यारी पत्नी पा जाता !

इयागो : ख़्वाब देखते क्या, ऊँची आवाज़ लगाओ,
जिससे उसका पिता जाग उसको दौड़ाये;
उसके रस में ज़हर मिला दो, गली-गली में
उसकी बदनामी फैलाओ, उसके नाते-
दारों को भड़काओ; भले नये नन्दन के
मधुवन में वह बसा हुआ हो, उसके सिर पर
मधुमक्खी का छत्ता तोड़ो; भले ख़ुशी ही
ख़ुशी नज़र उसको आती हो, उसको ऐसी
परेशानियों में डालो सब रंग-भंग हो।

राडरीगो : उसका पिता पास ही रहता, उसे पुकारूँ ?

इयागो : बेशक, औ' इतने ज़ोरों से, औ' कुछ ऐसी
ख़ौफ़नाक आवाज़ बनाकर जैसे कोई
बसे नगर में, किसी रात को, किसी मूर्ख की
लापरवाही से उठती लपटों को देखे
और गुहार मचाए।

राडरीगो : ओ ब्रबैंशियो, जागो !
जागो, ओ ब्रबैंशियो ! ओ ब्रबैंशियो, जागो !
चोर ! चोर ! चोरी होती है ! जागो, जागो !
घर ताको, बेटी को ताको, धन को ताको !
जागो ! जागो !

(**ब्रबैंशियो अपने कोठे की खिड़की पर आता है।**)

ब्रबैंशियो : ऐसी हाय-पुकार मचाने का मतलब क्या ?
बात हुई क्या ?
राडरीगो : श्रीमन्, सब कुटुम्ब के प्राणी तो घर में हैं ?
इयागो : दरवाज़ों के ताले तो साबित हैं ?
ब्रबैंशियो : क्यों, किस
कारण तुम यह मुझसे पूछ रहे हो ?
इयागो : श्रीमन्,
लुटे हुए तुम, शर्म ढको, रतजामा पहनो;
तुमसे नाता तोड़ तुम्हारी दिल से प्यारी
पुत्री भागी; ठीक इस समय, इसी घड़ी में
कहीं तुम्हारी उजली बछिया-सी कन्या पर
काला-मोटा साँड़ चढ़ा है; चेतो, चेतो;
घन-घण्टे से खर्राटे भरते लोगों को
तुरत जगाओ, वर्ना वह शैतान तुम्हें बस
नाना करके ही छोड़ेगा, जल्दी चेतो !
ब्रबैंशियो : क्या बकते हो, अक़्ल तुम्हारी ख़ब्त हुई क्या ?
राडरीगो : आदरणीय, नहीं पहचानी मेरी बोली ?
ब्रबैंशियो : नहीं, कौन तुम ?
राडरीगो : मेरा नाम राडरीगो है।
ब्रबैंशियो : भाग यहाँ से :
मैं तुझसे कह चुका कि तू मेरी कोठी पर
चक्कर मत दे : मैंने तुझको सीधी-सच्ची
बात बता दी, अपनी बेटी तुझे न दूँगा।
लेकिन तू तो दीवाना है; भरी रात में
ठूस-ठूस कर खाना खाकर, मदिरा पीकर
तू शैतानी को निकला है। मेरी नींद
हराम करेगा।
राडरीगो : श्रीमन्, मेरी भी तो सुनिए।
ब्रबैंशियो : तुझे अभी मालूम नहीं है मेरा ग़ुस्सा,
मेरी हस्ती, मेरी ताक़त : तुझको इसका
मज़ा चखा दूँगा मैं।
राडरीगो : श्रीमन्, धीरज धरिए।
ब्रबैंशियो : क्या लुटने की बातें करता; यह वेनिस है;
तूने मेरा घर खलिहान समझ रक्खा है।
राडरीगो : ओ ब्रबैंशियो, आप बुज़ुर्ग, बड़े हैं, मेरी

बात मानिए; मैं सच्चे दिल से कुछ कहने
को आया हूँ।

इयागो : क़समन, श्रीमन्, अगर बुरा आदमी भी अच्छी सलाह दे तो उसे मान लेना चाहिए। पर आप न मानेंगे। हम तो आपका भला चाहते हैं और आप हमें गुण्डा समझते हैं। हमें क्या, ले जाय आपकी लड़की को वह कलूटा घोड़ा। पता चलेगा जब नाती-पोते अगल-बग़ल हिनहिनाते नज़र आयेंगे। भाई-बन्द होंगे खच्चर, नातेदार होंगे टट्टू।

ब्रबेंशियो : बदज़बान शोहदे तुम दोनों।

इयागो : श्रीमन्, मैं तो यह बताने आया हूँ कि आपकी लड़की और वह हब्शी ऐसे सटे हैं कि उनकी पीठ भर देख लीजिए।

ब्रबेंशियो : तू पाजी है।

इयागो : और आप हैं राज्यसभासद।

ब्रबेंशियो : राज्यसभा में तुझे कैफ़ियत देनी होगी;
तेरा नाम राडरीगो है, ख़ूब जानता।

राडरीगो : श्रीमन्, मैं कैफ़ियत, जहाँ, जब चाहें, दूँगा,
लेकिन मेरी एक प्रार्थना—अगर आपने
सोच-समझकर और ख़ुशी से अपनी सुन्दर
कन्या को यह आज्ञा दी है, लगता, दी है,
कि वह रात की ऐसी सूनी और अँधेरी
वेला में चुपचाप निकलकर एक सड़े-से
माँझी को ले साथ, किराये की नौका में,
एक विलासी हब्शी के डेरे पहुँचे जो
उसे निठुर बाहों में जकड़े; अगर आपकी
यह जानी-बूझी है, इसमें अगर आपकी
अनुमति है तो बेशक हमने आज आपके
साथ बड़ी बेजा, बेहूदा गुस्ताख़ी की।
किन्तु, अगर इससे बिल्कुल बेख़बर आप हैं
तो मेरा मन मुझसे कहता है कि आपका
हम पर नाराज़ी दिखलाना ग़लत बात है।
ऐसा मत विश्वास कीजिए, मैं सब शिष्टा-
चार छोड़कर कभी आपकी बुज़ुर्गियत के
साथ मज़ाक़-मख़ौल करूँगा। अगर आपने
नहीं इजाज़त दे रक्खी तो मैं फिर कहता
हूँ कि आपकी बेटी निकल गई क़ाबू से;
दर-दर मारे-मारे फिरते आवारे के
हाथों अपना तन-मन-जीवन लुटा चुकी है।
जाकर अभी तसल्ली करिए; अगर आपके
घर में या अपने कमरे में वह मिलती है,
मुझे आपके साथ दग़ाबाज़ी करने की
जो चाहे सरकार सज़ा दें।

ब्रबेंशियो : करो रोशनी!

एक मोमबत्ती मुझको दो, घर के लोगो,
जागो ! ऐसी घटना का दुःस्वप्न अभी मैं
देख रहा था, जिससे मेरा दिल घबराया।
करो उजाला, सुनते हो रे !

[अपने कोठे की खिड़की से चला जाता है

इयागो : मुझे विदा दो,
मैं अब यहाँ नहीं ठहरूँगा; रुकता हूँ तो
मुझको हब्शी के विरोध में न्यायालय में
पेश किया जाएगा, यह तो बेजा होगा,
और बुरा भी; मेरा दर्जा ही ऐसा है।
इसको खूब समझता हूँ मैं—इस घटना से
उसको थोड़ी-बहुत डाँट खानी पड़ जाए,
पर सरकार उसे निकाल देने का खतरा
नहीं उठा सकती है; उसे साइप्रस जाना,
क्योंकि वहाँ पर एक भयंकर युद्ध छिड़ा है,
औ' चिराग़ लेकर तलाश की जाए तो भी
उसके जीवट का दूसरा नहीं मिल सकता,
जो कि वहाँ की मुहिम सँभाले: इस हालत में
उसे नरक की आग की तरह नफ़रत करने
पर भी, मेरे मौजूदा जीवन की ऐसी
मजबूरी है; मुझे ऊपरी प्रेम, दिखावा
करना होगा, जो ज़ाहिर है, सिर्फ़ दिखावा।
सुनो, बताता हूँ तुमको वह कहाँ मिलेगा—
जागे लोगों को लेकर सैंगिटरी पहुँचो,
मैं उसके ही साथ रहूँगा। अभी विदा दो।

[बाहर जाता है

(ब्रबैंशियो नीचे से आता है, साथ में मशालें हाथ में लिये हुए नौकर-चाकर हैं।)

ब्रबैंशियो : बुरी ख़बर यह सच ही निकली, निकल गई वह।
अब मेरी पापी क़िस्मत में केवल रोना
लिखा हुआ है। अरे राडरीगो, बतला तो
तूने उसे कहाँ देखा था ? ओ दुखियारी !
क्या हब्शी के साथ, उम्र में जो है उसके
बाप बराबर ? तुझको कैसे लगा, वही थी ?
मैंने कभी नहीं समझा था, मुझसे ऐसा
दग़ा करेगी। क्या वह तुझसे बोली भी थी ?
और मशालें लाओ, मेरे सारे भाई-
बन्द बुलाओ। क्या है ख़्याल कि ब्याह उन्होंने
करा लिया होगा ?

राडरीगो : मेरा तो यही ख़्याल है।

ब्रबैंशियो : ओ परमेश्वर ! वह निकली तो कैसे निकली ?
मेरा खून बग़ावत करने चला मुझी से !
अरे पिताओ, ऊपर की बातों से अपनी
कन्याओं के मन का अब विश्वास न करना।
जादू-टोने से भी लोग जवान लड़कियों
की मति फेर दिया करते हैं। ऐसे क़िस्से
पढ़े, राडरीगो, तुमने भी ?

राडरीगो : खूब पढ़े हैं।

ब्रबैंशियो : मेरे भाई को बुलवाओ।—काश, उसे मैं
तुमको देता।—कुछ जाओ इस तरफ़, उधर कुछ।—
तुम्हें पता है, कहाँ उसे औ' हब्शी को हम
पकड़ सकेंगे ?

राडरीगो : इसका पता लगा लूँगा मैं;
अच्छे पहरेदार लीजिए और आइए मेरे पीछे।

ब्रबैंशियो : आगे-आगे चलो, कृपा है; मैं घर-घर में
खोज करूँगा; कोई मुझे नहीं रोकेगा।
तलवारें ले लेना; औ' दो-चार रात के
ख़ास अफ़सरों को जगवा लो। देर करो मत,
भले राडरीगो, मैं तुमको खुश कर दूँगा।

[**सब जाते हैं**

दूसरा दृश्य

वेनिस की एक गली

(ओथेलो और इयागो आते हैं; उनके साथ मशाल दिखानेवाले नौकर हैं।)

इयागो : गो मैंने मैदानेजंग में दुश्मन बहुत
गिराए, मारे, मेरा दिल यह कभी गवारा
नहीं करेगा, लुक-छिप करके खून करूँ मैं;
खोटेपन से काम निकालूँ, ऐसा मुझसे
कम होता है : मैंने नौ-दस बार इरादा
किया कि पीछे से जा उसको छुरा भोंक दूँ।

ओथेलो : जाने भी दो।

इयागो : क्यों, उसने आपकी शान के
ख़िलाफ़ ऐसी गन्दी, ताव दिलानेवाली
बात निकाली; यह तो मेरी भलमंसी थी,
उसे खून की घूँट की तरह निगल गया मैं।
लेकिन, श्रीमन्, यह बताइए कि आपने क्या

शादी कर ली ? इसका ध्यान रहे, ब्रबैंशियो
की इस जगह बड़ी इज़्ज़त है, राजा के भी
ऊपर उसकी बात यहाँ मानी जाती है :
वह तलाक़ से अलग करा लेगा बेटी को;
या क़ानूनन रोक-थाम या सज़ा जिस तरह
की भी लागू हो सकती है, वह अपनी पूरी
ताक़त से लगवाएगा, दिलवाएगा।

ओथेलो : वह अपना कीना निकालने को जो चाहे
कर ले : मैंने राज्यसभा की जो सेवाएँ
की हैं, उनके आगे उसकी सब शिकायतें
गूँगी साबित होंगी। मुझको समझा क्या है—
अगर डींगना स्वाभिमान का लक्षण होता
तो बतलाता—मैं उन पुरुषों का वंशज हूँ
जो कि राजसिंहासन के ऊपर बैठे हैं,
किन्तु वंश का दम्भ त्याग दूँ तो भी मेरे
अपने गुण क्या कम हैं जिनके बल पर मैंने
गर्व और गौरव का यह पद प्राप्त किया है :
इसे, इयागो, सत्य मानना, अगर दयामय
डेसडिमोन के प्रति मेरा अनुराग न होता,
तो यों बे-घरबार, मुक्त रहनेवाला मैं,
रत्नाकर की सारी सम्पद पाने पर भी,
अपने को विवाह के बन्धन में न डालता।
पर, देखो, ये कौन मशाल लिये आते हैं ?

इयागो : ये ब्रबैंशियो औ' उसके साथी लगते हैं :
अन्दर जाएँ।

ओथेलो : नहीं, यहीं मैं खड़ा रहूँगा :
मेरा गुण, मेरा पद औ' मेरा निर्दोषी
हृदय बताए मैं जैसा हूँ। क्या वे ही हैं ?

इयागो : अरे, और ही ये, मेरा अन्दाज़ ग़लत था।

(कैसियो और कई अफ़सर मशाल लिये हुए आते हैं।)

ओथेलो : ये राजा के सेवक, मेरे सहसेनापति।
नमस्कार, मित्रो, यों आधी रात किधर को ?
समाचार क्या है ?

कैसियो : सेनापति को राजा ने
अभिवादन भेजा है औ' यह कहलाया है,
जल्दी-से-जल्दी उनके आगे हाज़िर हों,
तुरत।

ओथेलो : माजरा क्या है, कुछ मालूम है तुम्हें ?

कैसियो : मुझको लगता है कि साइप्रस से कुछ ख़बरें
आई हैं : कुछ बड़ा ज़रूरी काम आ पड़ा :
यके-बाद-दीगरे रात फ़ौजी नावों ने

पूरे दर्जन भर हरकारे भेजवाए हैं,
और बहुत से राज्यसभासद, जिनको सोते
से बुलवाया गया, इस समय राजभवन में
पहुँच चुके हैं। आप भी वहाँ फ़ौरन पहुँचें
जब अपने डेरे पर आप न मिल पाए तो
तीन टोलियाँ अलग-अलग संसद ने भेजीं,
पता लगाएँ, आप कहाँ हैं।

ओथेलो : तो यह अच्छा
हुआ कि तुमको यहाँ मिल गया। मैं घर में बस
दो बातें कहकर आता हूँ, साथ चलूँगा।

[**बाहर जाता है**

कैसियो : झण्डावर, सेनापति के 'घर में' का मतलब ?

इयागो : सहसेनापति, क़सम न कहता, आज रात को
उसने ऐसी एक चाम की नौका कब्ज़े
में कर ली है, जो उसको जायज़ ठहरी तो
उसकी क़िस्मत सदा के लिए बनी समझ लो।

कैसियो : मैं कुछ समझ नहीं पाया हूँ।

इयागो : उसने शादी
कर ली है।

कैसियो : शादी कर ली है ! किस लड़की से ?

(ओथेलो आता है।)

इयागो : शादी कर—आओ, सहसेनापति, चलते हो ?

ओथेलो : चलो।

कैसियो : आपके लिए दूसरी टोली आती।

इयागो : यह ब्रबैंशियो है : सेनापति, सँभल जाइए ;
बुरे इरादे से आता।

(ब्रबैंशियो, राडरीगो तथा अन्य अफसर आते हैं; उनके हाथों में मशालें और हथियार हैं।)

ओथेलो : हे ! और न बढ़ना

राडरीगो : साहब, यह हब्शी है।

ब्रबैंशियो : चोर न जाने पाए !

(दोनों तरफ़ के लोग तलवारें खींच लेते हैं।)

इयागो : तू भी इनके साथ, राडरीगो है। तुझसे
मैं समझूँगा।

[**इयागो राडरीगो को अलग ले जाता है**

ओथेलो : रुको, चमकती तलवारों को
अन्दर कर लो; नहीं, ओस में जंग लगेगी।

भद्र महोदय, हमें आपके हथियारों से
अधिक आपकी उम्र झुकाने में समर्थ है।

ब्रबैंशियो : क्यों बे काले चोर, बता तो मेरी कन्या
तूने कहाँ छिपा रक्खी है ? सत्यानाशी,
तूने उस पर कोई जादू-टोना डाला;
और वजह तो कोई अक़्ल क़बूल न करती;
मन्त्रों की कड़ियों से अगर न जकड़ी होती
तो वह कन्या इतनी सुन्दर, सरल, सलोनी,
इतनी ब्याह-विरुद्ध कि उसने कई हमारी
जाति के धनी, काकुलधारी सुकुमारों के
रिश्तों से इन्कार कर दिया, कभी जगत् में
यों अपना उपहास कराती, भाग पिता के
संरक्षण से तुझ जैसे काले भुसुण्ड के
वक्षस्थल में शीश छिपाती; तुझसे सुख क्या
पाती, वह तो तुझसे डरती। दुनियावालो,
तुम्हीं बताओ, क्या यह साफ़ नहीं जाहिर है,
इसने कोई चमर मन्त्र उस पर फूँका है,
या उस भोली सुकुमारी को ऐसी बूटी-
जड़ी सुँघा दी जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती।
न्यायालय में इस पर बहस कराऊँगा मैं;
यह सम्भव है, और तर्क से सम्मत भी है।
इस कारण दुनिया से ठगविद्या करने का,
औ' विधि-वर्जित औ' निषिद्ध अभिचार-प्रयोगी
होने का दोषी मैं तुझको ठहराता हूँ,
और तुझे बन्दी करता हूँ।—इसे पकड़ लो :
और विरोध करे तो इसको जबरन बाँधो,
चोट इसे आए जो आए।

ओथेलो : हाथ हटा लो,
मेरी और दूसरी टोली के दोनों ही :
यदि मेरी मंशा लड़ने की होती तो मैं
बिना किसी के कहे-सुने तलवार खींचता।—
मुझ पर जो कुछ अभी आपने दोष लगाया,
उसका उत्तर देने को मैं जहाँ आप कहिए,
चलता हूँ।

ब्रबैंशियो : चल बन्दीघर में रह जब तक
न्याय और न्यायाधीशों की विधिवत् बैठक
तुझे न अपना उत्तर देने को बुलवाए।

ओथेलो : अगर आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ,
तो जो मेरे पास खड़े हाकिम-हरकारे,
वे जा करके राजा को क्या उत्तर देंगे,
क्योंकि उन्होंने किसी ज़रूरी राज-काज से
मुझको अपने यहाँ बुला भेजा है।

अफ़सर : सच है,
परम प्रवीण महोदय, राजा राज्यसभा में
हैं, औ' मुझको ठीक पता है, आप, मान्यवर,
को भी लेने लोग गए हैं।

ब्रबैंशियो : क्या कहते हो !
राजा राज्यसभा में ! औ' इस समय रात में !
मैं भी पहुँचूँ—और साथ इसको भी लाओ :
मेरा भी मामला नहीं कम आवश्यक है :
राजा खुद औ' राज्यसभा के मेरे सारे
साथी, जो यह मेरे प्रति अन्याय हुआ है,
उसको अपने प्रति समझेंगे। अगर इस तरह
के कामों को आज़ादी से होने दोगे,
जल्द गुलाम-गँवार तुम्हारे नेता होंगे।

[**सब जाते हैं**

तीसरा दृश्य

राज्यसभा-भवन

(राजा और राज्यसभासद मेज़ के चारों ओर बैठे हैं। उनके पीछे अफ़सर लोग खड़े हैं)

राजा : इन ख़बरों में कोई समता नहीं, इन्हें सच
कैसे मानूँ ?

पहला सभासद : सच, इनमें अनुपात नहीं है;
मेरे पत्रों में फ़ौजी नावों की संख्या
सिर्फ़ एक सौ सात लिखी है।

राजा : औ' मेरे में
दर्ज एक सौ चालीस नावें।

दूसरा सभासद : औ' मेरे में
पूरे दो सौ : लेकिन, यद्यपि उनकी संख्या
ठीकमठीक नहीं मिलती है,—इतना अन्तर
अक्सर होता, क्योंकि इस तरह की बातों में
अन्दाज़ा भर लग सकता है,—तो भी इस पर
सब सहमत हैं, एक बड़ा तुर्की बेड़ा है,
और साइप्रस को वह बढ़ा चला आता है।

राजा : सही, आपकी राय ठीक मुझको जँचती है :
संख्या के अन्तर से हम निश्चिन्त न बैठें,
इनके अन्दर खास बात जो, मान रहा हूँ,
और हमें उससे खतरा है।

मल्लाह : (नेपथ्य में) कोई है क्या !
कोई है क्या !

अफ़सर : फ़ौजी नौका का हरकारा।

(मल्लाह आता है।)

राजा : नई ख़बर क्या ?

मल्लाह : तुर्की बेड़ा अब रोडेशी
रुख़ लेता है। मुझे मान्यवर ऐंजीलो ने
हुक्म दिया है, खबर आप तक पहुँचा दूँ मैं।

राजा : इस बदली हालत पर अपनी राय बताएँ।

पहला सभासद : ऐसा कभी नहीं हो सकता; सभी तरह यह
तर्क से परे। ज़रा ध्यान से इसे देखिए,
तुर्क के लिए साइप्रस का कितना महत्त्व है !
और पुन: यह बात समझने का थोड़ा-सा
कष्ट कीजिए, कौन तुर्क के अधिक काम का—
साइप्रस या रोडेश ? जबकि वह खेल-खेल में
उस पर क़ब्ज़ा कर सकता है, उसे बचाने
की फ़ौजी तैयारी कुछ भी नहीं हुई है :
क़िलेबन्द, हथियारबन्द रोडेश जिस तरह
है उससे वह बिल्कुल वंचित। यदि हम इस पर
ग़ौर करें तो हमें नहीं सोचना चाहिए
तुर्क इस क़दर नासमझा है, उसे बाद के
लिए उठा रक्खेगा जो उसके मतलब का
सबसे पहले; आसानी से मिलनेवाला
माल छोड़कर तुर्क मोल लेगा वह झगड़ा,
अपने सिर वह जोखम लेगा जिसमें उसको
लाभ नहीं है।

राजा : नहीं, राज़ की बात यही है,
वह रोडेश नहीं जाएगा। और ख़बर यह
आती, सुनिए।

(हरकारा आता है)

हरकारा : गुणागार, धर्मावतार, उस्मानी बेड़ा
पहले तो रोडेश द्वीप की तरफ़ सिधारा,
किन्तु वहाँ पर एक बाद को आनेवाला
बेड़ा उससे मिला, और वे साथ हो गए।

पहला सभासद : ठीक, यही मैंने सोचा था। उसके नावों
की संख्या का कुछ अनुमान लगा सकते हो ?

हरकारा : तीस समझिए : औ' अब अपनी दिशा बदलकर
वे फिर पीछे को आते हैं, जिससे साफ़ पता
चलता है, उनका लक्ष्य साइप्रस ही है।
वहाँ आपके परम वीर, विश्वासी सेवक

श्री मनटानो अपनी अविचल राजभक्ति का
इस प्रकार आश्वासन देते, और प्रार्थना
यह करते हैं उन पर आप भरोसा रक्खें।

राजा : यह निश्चय है, वे साइप्रस को ही जाएँगे।
सुनो, मारकस लकीचोस क्या नगर में नहीं ?

पहला सभासद : नहीं, आजकल लकीचोस फ़्लोरेंस गए हैं।

राजा : उनको मेरी तरफ़ से लिखें, वे जल्दी से-
जल्दी लौटें।

पहला सभासद : ये ब्रबैंशियो और बहादुर
मूर आ रहे।

(ब्रबैंशियो, ओथेलो, इयागो, राडरीगो तथा अफ़सर लोग आते हैं।)

राजा : वीर ओथेलो, तुम्हें जल्द-से-जल्द हमारे
दुश्मन तुर्कों के मुक़ाबले में जाना है।

(ब्रबैंशियो से)

अरे, आप भी हैं; स्वागत है, भद्र महोदय !
हमें आपकी राय-मदद की बड़ी ज़रूरत।

ब्रबैंशियो : इसी तरह से मुझे आपकी। गुणागार हे,
क्षमादान दें; अपने पद के कारण अथवा
राज-काज सम्बन्धी कोई समाचार सुन
मैं विस्तर से उठकर यहाँ नहीं आया हूँ;
मुझे इस समय जनसाधारण की चिन्ताएँ
नहीं व्यापतीं, क्योंकि आज मेरे अपने ही
दुख की ऐसी महाभयंकर बाढ़ उठी है
कि वह और सब सन्तापों को डुबा, निगलकर
भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

राजा : बात हुई क्या ?

ब्रबैंशियो : मेरी कन्या ! मेरी कन्या !

सब : हाय, मर गई ?

ब्रबैंशियो : निश्चय, मेरे लिए मरी ही; वह बौरा दी
गई, रात में चोरी-चोरी भगा दी गई
औ' उसकी भोरी मति ढोंगी भड़डरियों से
ली ओषधियों से, जन्त्रों से फेर दी गई।
बिना किसी टोने-टोटके के, ऐसी उल्टी
बातें करना, जब उसकी इन्द्रियाँ सजग थीं,
बुद्धि सचेत, आँख पर परदा नहीं पड़ा था,
कब उसके स्वभाव से सम्भव हो सकता था ?

राजा : इस भद्दे-गन्दे उपाय से, बन्धु, आपकी
कन्या को भरमानेवाला, उसे आपसे
अलग करानेवाला चाहे कोई भी हो:

आप स्वयं कटु क़ानूनी पुस्तक बाँचेंगे,
आप स्वयं उसकी कठोरतम व्याख्या देंगे,
कड़ा-से-कड़ा दण्ड आप ही नियत करेंगे,
निश्चय ही, अपराधी चाहे मेरा अपना
पुत्र क्यों न हो।

ब्रबैंशियो : गुणागार को विनम्रता से
धन्यवाद है। यह अपराधी है, यह हब्शी;
जो, मैंने ऐसा सुन रक्खा, किसी ज़रूरी
राज-काज से, संसद की विशेष आज्ञा से,
यहाँ उपस्थित किया गया है।

सब : हम सब इससे
बहुत दुखी हैं।

राजा : (ओथेलो से) तुमको इस पर क्या कहना है?

ब्रबैंशियो : इसको क्या कहना है, बिल्कुल सही बात है।

ओथेलो : परम शक्तिसम्पन्न, धीर-गम्भीर, मान्यवर
महोदयो, गुरु गौरवशाली, योग्य सज्जनो,
मुझ सेवक के भले मालिको, बिल्कुल सच है,
मैंने ही इन वयोवृद्ध की कन्या का अप-
हरण किया है; यह भी सच है मैंने उसको
ब्याह लिया है : मेरे अपराधों का केवल
यही आदि है, यही अन्त है, आगे कोई
बात नहीं है। मेरे शब्द-शब्द नीरस हैं,
मुझे शान्ति की सरस पदावलियों से परिचित
होने का सौभाग्य बहुत कम प्राप्त हुआ है;
क्योंकि, याद है, सात वर्ष की अल्पावस्था
से ले अब से आठ मास पहले तक, जिसमें
नया चाँद नौ बार उदय हो अस्त हुआ है,
मैंने अपने हाथों का सर्वोत्तम कौशल
शिविर-विमण्डित मैदानों में दिखलाया है;
सेना और समर-सम्बन्धी शौर्य छोड़कर
इस लम्बी-चौड़ी दुनिया का मुझको कुछ भी
ज्ञान नहीं है। औ' इस कारण अपने बारे
में कुछ कहकर अपने हित में भला नहीं कुछ
कर पाऊँगा। तो भी आप कृपा कर धीरज
रख सकिए तो मैं अपने इस प्रेम-पन्थ की
पूरी गाथा सीधे-सादे, सरल ढंग से
आप सबों के सम्मुख रख दूँ; किन ओषधियों,
किन अभिचारों, किन मन्त्रों, किन जादू-टोनों
के बल मैंने इनकी कन्या का मन जीता—
क्योंकि इस तरह के गन्दे-भद्दे उपाय करने
का दोषारोपण मुझ पर किया गया है।

ब्रबैंशियो : वह सुकुमारी जिसने कभी न आँख उठाई,

जो थी इतनी शान्त और लज्जालु प्रकृति की,
ज्योंही उसके मन में कोई भाव उठा करता
था त्योंही उसके मुख के ऊपर लाली
छा जाती थी; वह सुकुमारी प्रकृति, अवस्था,
देश नाम सब कुछ बिसराकर उससे जाकर
प्रेम करेगी जिसे देखकर वह डरती थी !
जो इसको माने कि पूर्णता सभी प्रकृति के
नियमों के प्रतिकूल खड़ी हो ऐसी भूलें
कर सकती है, उसका निर्णय मैं त्रुटिपूर्ण,
अपूर्ण कहूँगा; ऐसे को तो नरक-कुण्ड के
बीच ठेल दो कि वह वहाँ के नीचकर्म जीवों
को देखे, पता लगाए पाप-कर्म वे
क्यों करते हैं। इस कारण मैं फिर यह दावा
करता हूँ, कुछ इस प्रकार के रसायनों से,
जो अपनी ताक़त से चेतनता हर लेते,
या कि दवा-दारू से, जो इस काम के लिए
जादू से तैयार की गई, इस पाजी ने
मेरी कन्या की मति फेरी।

राजा : इस प्रकार उस पर
दोषारोपण करने का कोई मूल्य नहीं
होता है; इन ओछे तर्कों या थोथे
अनुमानों से ज़्यादा पक्की, ज़्यादा साफ़
गवाही जब तक नहीं पेश की जाती तब तक
दावा करना सिर्फ़ सबूत नहीं हो सकता।

पहला सभासद : किन्तु, ओथेलो, तुम बतलाओ :
क्या तुमने इनकी सुकुमारी कन्या का मन
अनुचित और अवैध उपायों से मोहित कर
अपने वश में किया, कि मधुमय मनुहारों से,
मीठी-प्यारी बातों से, जिससे दिल पर दिल
स्वयं निछावर हो जाता है ?

ओथेलो : मेरी एक
विनय है, रमणी को सैंगिटरी से बुलवा लें,
और उसे मेरे बारे में अपने पूज्य पिता
के आगे बतलाने दें : अगर आप उसके
बयान से मुझको दोषी पाते हैं तो
जो पद, जो विश्वास आपसे मुझे मिला है,
उसे न केवल आप छीन लें बल्कि आप
चाहें तो मुझको प्राणदण्ड दें।

राजा : डेसडिमोना
को ले आओ।

ओथेलो : झण्डावर, तुम इन्हें लिवा ले
जाओ, तुमको सैंगिटरी का ठीक पता है।

[इयागो और अफ़सर लोग बाहर जाते हैं

औ' जब तक वह आती है मैं सप्त स्वर्ग को
साखी रखकर अपने मन की दुर्बलताएँ
बतलाता हूँ : आप धीर-गम्भीर सज्जनों
को सच्चाई से मैं बता रहा हूँ कैसे
उस सुन्दर बाला से मेरा प्रेम बढ़ा औ'
उसका मुझसे।

राजा : कहो, ओथेलो।

ओथेलो : उसके पिता पसन्द मुझे करते थे, अक्सर
बुलवाते थे, और सदा मेरे जीवन की
कथा जानने को उत्सुक रहते थे,—मैं
सालहा-साल किन-किन लड़ाइयों, किन चढ़ाइयों
किस्मत के किन-किन चक्रों में पड़कर निकला।
मैं अपने बचपन के दिन से कथा सुनाने
के क्षण तक की सारी बातें बतलाता था :
बातें सारी—परम दुरन्त परिस्थितियों की,
जल-थल की रोमांचकारिणी घटनाओं की,
काल-गाल में पड़कर बाल-बाल बचने की,
सबल शत्रुओं के द्वारा पकड़े जाने की,
दास बना बेचे जाने की, छुटकारे की,
औ' इन यात्राओं में अपनी दिनचर्या की :
जिसकी चर्चा करते मैं वर्णन करता था,
चौड़े खन्दक औ' लम्बे रेगिस्तानों का,
अनगढ़ खानों, चट्टानों, पर्वतश्रृंगों का
जो अम्बर को छू लेते हैं; यह उपाय था—
मैं वर्णन करता उन आदमख़ोरों का, जो
एक दूसरे को खा जाते—मानवभक्षी—
उन मनुजों का, जिनके कन्धे उनके सिर से
ऊँचे होते। डेसडिमोना यह सुनने के
लिए महाव्याकुल रहती थी : फिर भी घर के
काम-काज से उसको उठना पड़ जाता था,
पर उनको जल्दी-से-जल्दी पूरा करके
वह फिर आती थी औ' मेरी रामकहानी
कान लगा सुनने लगती थी : इसे देखकर
एक सुअवसर का मैंने कुछ लाभ उठाया,
जिस पर उसने भरे हृदय से मुझसे माँगा,
एक बार मैं सविस्तार अपनी यात्रा की
कथा सुनाऊँ, जिसको उसने कभी यहाँ से,
कभी वहाँ से सुन रक्खा था, एक साथ सब
नहीं सुना था। मैं इस पर तैयार हो गया।
सुनते-सुनते जहाँ कहीं भी कोई ऐसी

दुखद चोट की चर्चा आई जो मैंने अपने
यौवन में खाई, झेली, उसकी आँखें
आँसू से गीली हो आईं। और कथा जब
पूर्ण हो गई, मेरे दुख पर उसने अपने
उच्छ्वासों की झड़ी लगा दी : सत्य, शपथ लेकर
वह बोली, 'यह अद्‌भुत है, यह अद्‌भुत से
भी बढ़कर है ; व्यथा भरी है; इसमें अनुपम
व्यथा भरी है : काश इसे मैं कभी न सुनती !'
किन्तु साथ ही उसने चाहा, 'काश मुझे भी
प्रभु ऐसा इन्सान बनाता !' धन्यवाद देकर
वह बोली, 'अगर तुम्हारा मित्र कहीं हो,
और प्यार मुझको करता हो, तो तुम अपनी
कथा सुनाना उसे सिखा दो, वह मुझको बरबस
वर लेगा।' पाकर यह संकेत बढ़ा मैं :
उसने मुझसे प्रेम किया है उन ख़तरों के
कारण जिनसे मैं गुज़रा हूँ। मैंने उससे
प्रेम किया है उस करुणा के कारण उसने
जो मेरे प्रति दिखलाई है। सिर्फ़ यही जादू-
टोना है जिससे मैंने काम लिया है—
यह रमणी आती; खुद इसकी भरे गवाही।

(इयागो और अफ़सरों के साथ डेसडिमोना आती है।)

राजा : मुझको तो लगता है ऐसी रुचिर कहानी
मेरी कन्या के मन को भी हर सकती है।
भद्र महोदय,
इस झगड़े को रफ़ा-दफ़ा कर इसका अच्छा
पहलू देखें। कहते हैं, ख़ाली हाथों से
कुन्द गँडासा भला।

ब्रबैंशियो : कृपा कर उसकी सुनिए :
अगर क़बूल करे यह इस रिश्ते में इसकी
आधो-आध रज़ामन्दी थी तो मेरे सिर
गाज गिरे जो इस मनुष्य पर कोई बद
इलज़ाम लगाऊँ।—आ सुशील सुकुमारी, आगे :
इस गौरवशाली समाज के सम्मुख बतला,
सबके ऊपर किसकी आज्ञा पालन करना
तू अपना कर्त्तव्य समझती ?

डेसडिमोना : मेरे गौरव-
शील पितृवर, इस अवसर पर मैं अपना
कर्त्तव्य विभाजित देख रही हूँ : जीवन, पालन-
पोषण, शिक्षण के कारण मैं ऋणी आपकी;
मेरा जीवन, शिक्षण—दोनों मुझे आपका
आदर करने को कहते हैं; और जहाँ तक

मैं पुत्री हूँ, यह मेरा कर्त्तव्य, आपकी
आज्ञा मानूँ : किन्तु सामने मेरे पति हैं।
क्या मेरी माता ने अपने पिता से अधिक
नहीं आपको मान दिया था? पिता, आपके
प्रति मेरी माँ ने जितना कर्त्तव्य निभाया,
उतना ही मैं अपने पति, सेनापति के प्रति
आज निभाने का हक़ रखती।

ब्रबैंशियो : ईश्वर तेरा
भला करे, जा! मेरा काम समाप्त हो गया।—
गुणागार, अब आप कृपा कर राज-काज की
ओर ध्यान दें :—काश कि मेरे तन से जन्मी
हुई न होकर तू मेरी मुँहबोली होती!—
जिससे ऐसी बात न कहती।—
हब्शी, आगे आ : मैं अपने पूरे मन से
उसे तुझे देता हूँ जिसको पूरे मन से
तुझसे दूर-अलग रखना मैं चाह रहा था।
लेकिन वह पहले ही तेरी।—रानी, तेरी
चाल देख मैं दिल से खुश हूँ, तू मेरी
इकलौती कन्या, वर्ना तेरा भाग निकलना
मुझे दूसरों के प्रति क्रूर-कठोर बनाता,
उनके पाँव काठ में देता। श्रीमन्, मेरा
काम हो गया।

राजा : कहिए तो मैं आपकी तरफ़ से कुछ ऐसी
कहावतें दुहरा दूँ जिनसे पुनः आपकी
कृपा प्राप्त करने का इन दो प्रेमयोगियों
को साहस हो।—
मर्ज़ हुआ जब लाइलाज, तब चिन्ता बीती,
भरी निराशा भली, नहीं, पर, आशा रीती।
कष्ट कटा जो, बीता जो, उस पर पछताना,
ऐसा जैसे नये कष्ट को न्योत बुलाना।
भाग्य जिसे छीने, किसमें है शक्ति बचाए,
धीर धरे तो उसकी चोटों पर मुस्काए।
ठगा हँसा तो ठग से कुछ सम्पत्ति बचाता,
रोनेवाला व्यर्थ ठगा अपने से जाता।

ब्रबैंशियो : तो अच्छा है तुर्क साइप्रस हमसे छीने,
औ' हम समझें बचा लिया है उसे हँसी ने।
जो सहता कुछ नहीं, कहावत उसे सुहाती,
मुफ़्त बुरी क्या, शब्दों से जो राहत आती।
शब्द-शोक दोनों उसको सहना पड़ता है,
जो दुख कटने को धीरज का मुँह तकता है।
ये कहावतें कुछ कुरेदतीं, कुछ सहलातीं।
दोनों में चालाक, दुरंगी ये कहलातीं।

शब्द-शब्द हैं; कभी नहीं यह मैंने माना,
उनसे सम्भव है टूटे दिल का जुड़ जाना।
आप कृपा कर राजकाज की ओर ध्यान दें।

राजा : तुर्क बड़ी ज़बरदस्त तैयारी के साथ साइप्रस की ओर बढ़ रहा है।—ओथेलो, साइप्रस में हमला रोकने की जो ताक़त है, वह तुम भली भाँति जानते हो; और यद्यपि वहाँ हमारे एक ऐसे कार्यकर्त्ता हैं जिनकी क्षमता में किसी को सन्देह नहीं है, फिर भी लोगों की राय है कि तुम्हें वहाँ भेजना अधिक उपयुक्त होगा, और रामकाज में जनमत ही सबके ऊपर है : इस कारण मुझे खेद है, तुम्हें अपने नूतन सौभाग्य से मुँह मोड़कर इस मुँहतोड़ और पुरज़ोर मोरचे की ओर अग्रसर होना होगा।

ओथेलो : परम धीर-गम्भीर, मान्य संसद-सदस्यगण,
मुझे नियति की निर्दयता ने इतना वज्र-
कठोर कर दिया है कि युद्ध की शर-शय्या को
मैं फूलों की सेज समझता : मेरी प्रकृति
कठिनताओं का स्वागत करने को हरदम
उद्यत रहती है। तुर्कों से मुँहतोड़ मोरचा
लेने का दायित्व इसी क्षण मैं लेता हूँ :
मुझे राज्यपरिषद की आज्ञा शिरोधार्य है।
लेकिन परम विनीत भाव से एक प्रार्थना :
मेरी पत्नी का समुचित प्रबन्ध हो, उसके
योग्य उसे श्रेणी दी जाए, भरण और
पोषण की ठीक व्यवस्था हो, घर, नौकर-चाकर
दिए जायँ जो उसके उच्च घराने के
अनुरूप सिद्ध हों।

राजा : अगर पसन्द तुम्हें हो तो वह
पिता के रहे।

ब्रबेंशियो : लेकिन मैं यह नहीं चाहता।

ओथेलो : और न मैं ही।

डेसडिमोना : और न मैं ही यह चाहूँगी;
क्योंकि रही तो मैं अपने उद्विग्न पिता की
आँखों में दिन-रात गड़ूँगी। परम गुणागर,
आप दया कर मेरा एक निवेदन सुनिए,
मुझ अबला का बल है केवल कृपा आपकी।

राजा : कहो, डेसडिमोना, जो कुछ तुम कहना चाहो।

डेसडिमोना : मैंने सेनापति को अपना प्रेम दान करने,
वरने में जैसे विकट विरोधों का सामना
किया, जैसे तूफ़ानी उलट-फेर का
स्वागत, उससे सब दुनिया पर ज़ाहिर है मैं
इनके साथ रहा चाहूँगी : अपने पति के
सैन्य-कर्म के प्रति भी मेरा हृदय समर्पित :
मैंने नहीं ओथेलो का तन, मन देखा है;

मैंने इनके गौरव, शौर्य, धैर्य पर अपने
मन औ' जीवन को वारा है। इस कारण, हे
श्रीमन्तो, यदि मुझको रोक लिया जाता है—
शान्ति-शलभ-सा, जबकि युद्ध की लौ-लपटों से
ये खेलेंगे—तो मैंने जिस प्रत्याशा से
इनको अपना स्नेह दिया, वह अन्धकार में
खो जाएगी, और विरह की सूनी, लम्बी
घड़ियाँ मुझ पर भारी होंगी! इसके साथ
मुझे जाने दें।

ओथेलो : इसे आपकी कृपा चाहिए।
सप्त स्वर्ग मेरे साखी हैं कि मैं वासना
की रसना की तृप्ति के लिए यह प्रार्थना
नहीं करता हूँ, और न यौवन की ज्वाला को
दहकाने को, जो अब मुझमें मन्द हो चुकी,
और न उसका संयत सेवन करने को ही।
इसके तन के नहीं, किन्तु मन के मधुवन में
मैं निर्द्वन्द, विमुक्त विहार किया चाहूँगा :
और आपके भोलेपन को स्वर्ग सिहाए,
अगर आपका यह विचार है कि मैं आपके
गुरु एवं गम्भीर कार्य को बिसरा दूँगा
क्योंकि साथ इसको रक्खूँगा। कभी नहीं, जब
गगनविहारी मीनकेतु के पंच पुष्प-शर
मेरी दृढ़, कर्तव्य-परायण दसों इन्द्रियाँ,
ग्यारहवाँ मन वेध सकेंगे, और कामकृत
कौतुक मेरा काम बिगाड़ सकेंगे, उसमें
बाधा देंगे, तब सिर की कूँडी उतारकर
मैं कह दूँगा, 'जाओ इसमें धनिया कूटो।'
और ढाल-तलवार किसी बनिए के गिरवी
रख आऊँगा : नाम बेच निन्दा, निर्लज्जा
ले आऊँगा।

राजा : इस पर निजी फ़ैसला कर लो,
चाहे इसे छोड़ जाओ, चाहे ले जाओ।
तुमको काम पुकार रहा है और तुम्हें जल्दी
जाना है।

पहला सभासद : आज रात ही जाना होगा।

ओथेलो : मैं राज़ी हूँ।

राजा : सुबह नौ बजे हम सब फिर इस जगह मिलेंगे।
सुनो ओथेलो, कोई अफ़सर छोड़े जाओ,
हम नियुक्ति का पत्र उसी से भेजवा देंगे,
और तुम्हारे पद, श्रेणी सम्बन्धी बातें—
सब उसमें ही अंकित होंगी।

ओथेलो : गुणागार की

जैसी इच्छा, अपने झण्डावर को पीछे
छोड़े जाता : सच्चा, विश्वसनीय व्यक्ति है :
पत्नी को लाने का काम इसे देता हूँ,
गुणागार को जो कुछ मेरे पास भेजना
हो इसके द्वारा भेजवा दें।

राजा : यही करूंगा।
नमस्कार सबको। गौरवशाली ब्रबैंशियो,
यदि गुण-गौरव, गौर वर्ण में कोई नाता,
तो काला होकर के भी गोरा जामाता।

पहला सभासद : विदा, वीर सेनापति, डेसडिमोना के प्रति
सहृदय रहना।

ब्रबैंशियो : हब्शी, तेरे कान अगर हों
तो सुन, कहनी हैं तुझसे दो बात मुझे भी,
इसने दिया पिता को धोखा, दे न तुझे भी।

[**राजा, राज्यसभासद और अफ़सर लोग बाहर चले जाते हैं**

ओथेलो : इसके ऊपर मुझे प्राण से अधिक भरोसा !
सत्यनिष्ठ झण्डावर, अपनी डेसडिमोना को
मैं अब तुम पर छोड़ रहा हूँ : एक प्रार्थना,
अपनी पत्नी को इसकी सेवा में रख दो :
और बाद को अच्छी तरह इन्हें ले आना।
डेसडिमोना आओ, घण्टा भर समय मिला है,
इसमें ही कुछ प्यार और कुछ काम-काज की
बातें करनी, कुछ निर्देश मुझे देना है;
हमें समय के अनुशासन में रहना होगा।

[**ओथेलो और डेसडिमोना बाहर जाते हैं**

राडरीगो : इयागो !

इयागो : क्या कहते हो, मेरे जिगरी जौहर ?

राडरीगो : तुम्हीं बताओ, अब मैं क्या करूँ ?

इयागो : करना क्या है, जाकर बिस्तर पर सो जाओ।

राडरीगो : मैं तो अभी जाकर नदी में डूब मरूँगा।

इयागो : अगर तुमने ऐसा किया तो मैं कभी तुम्हें प्यार नहीं करूँगा। तुम भी क्या जाहिल आदमी हो !

राडरीगो : जब जीना वबाल हो तो जीना जहालत तो है ही। जब मौत ही हमारे मर्ज़ की दवा हो तो मरने से कौन परहेज़ करेगा।

इयागो : अरे भलेमानस ! दुनिया को देखते हुए मुझे चार सते अट्ठाईस बरस हो चुके हैं, और जब से मैंने नफ़ा-नुक़सान में फ़र्क़ जाना तब से आज तक मुझे ऐसा आदमी नहीं मिला जिसे यह तमीज़ हो कि अपने से मुहब्बत कैसे की जाती है। जिस दिन मैं किसी हरजाई मुर्ग़ाबी की मुहब्बत में डूब मरने की बात सोचूंगा, उस

दिन मैं इन्सान के बजाय हैवान होना ज़्यादा अच्छा समझूँगा।

राडरीगो : लेकिन, मैं क्या करूँ ? मैं अपनी बेवकूफ़ी पर ख़ुद शर्मिन्दा हूँ, पर मुझमें वह गुण कहाँ कि उसके ऊपर उठ सकूँ।

इयागो : गुण ! मेरे ठेंगे पर ! यह हमारे ऊपर है कि हम ऐसे हों कि वैसे हों। हमारा बदन हमारा बाग़ है, हमारी मर्ज़ी उसका बाग़बान है : तो यह हमारी मर्ज़ी पर है कि हम उसमें कटहल खड़ा करें कि परवल बोएँ, पपीता लगाएँ कि पुदीना उगाएँ, एक तरह का बीज डालें कि बीस तरह के बीज बीजें, उसे लापरवाही से ऊसर कर डालें या मुस्तैदी से उपजाऊ बना दें। यह सब करने का बल किसमें है ?—हमारी मर्ज़ी में। हक़ किसको है ?—हमारी मर्ज़ी को। हमारी ज़िन्दगी एक तराज़ू है जिसमें एक पलड़ा है दिल का, दूसरा दिमाग़ का, जो एक-दूसरे को बराबर रखते हैं। अगर ऐसा न होता तो अपने मिज़ाज की हैवानियत और हरमज़दगी से हम निहायत बेहूदा नतीजों पर पहुँचते। ख़ैरियत है कि हमें दिमाग मिला है जो हमारे जोश-जज़्बों के शोलों को ठण्डा करता है, वहशियाना डंकों को कुन्द करता है, मुँहज़ोर मस्तानगी पर लगाम लगाता है। जिस प्रीति को तुम धरती पर बिरवा समझते हो उसे मैं आकाशबेलि का जाल कहूँगा।

राडरीगो : नहीं, ऐसा नहीं है।

इयागो : यह सिर्फ़ ख़ून की गर्मी है, मर्ज़ी का रुझान है। चलो, इंसान बनो : डूबने चले हैं ! डूबें अन्धे कुत्ते के पिल्ले और बिल्लियाँ। मैंने तुम्हें अपना दोस्त बनाया है, और तुम्हारी लियाक़त का मैं इतना क़ायल हूँ कि मैंने अपने को तुम्हारे साथ बड़े मज़बूत और अटूट बन्धनों में बाँध लिया है। इस वक़्त मैं तुम्हारे सबसे ज़्यादा काम का हूँ। पाकिट में पैसे रक्खो।—लड़ाई पर चलो; नक़ली दाढ़ी लगाकर अपनी सूरत बदल लो। मैं कहता हूँ, पाकिट में पैसे रक्खो। यह हो नहीं सकता कि डेसडिमोना ज़्यादा दिन तक हब्शी से मुहब्बत रक्खे या हब्शी उससे रक्खे—पाकिट में पैसे रक्खो : डेसडिमोना की मुहब्बत बुलबुले की तरह उठी, और तुम देखोगे, उसी तरह बैठ जायगी और वे अलग हो जायँगे : लेकिन पाकिट में पैसे रक्खो। ये हब्शी लोग ढुलमुल-मिज़ाज होते हैं : पैसों से पाकिट भर लो। जो खाना आज उसे इतना मीठा लग रहा है जैसे हलुआ, वही कल उसे इतना कड़वा लगने लगेगा जैसे तितलौआ। वह भी बूढ़े को छोड़ जवान से मुहब्बत करेगी : जब उसके तन से अपने तन की भूख मिटा लेगी तब उसे अपने मन की भूल मालूम होगी : वह ज़रूर बदलेगी, ज़रूर-बिल-ज़रूर बदलेगी : इसलिए पाकिट में पैसे रक्खो। अगर तुम्हें नरक में जाना ही है तो पानी में डूबकर—अकाल मौत मरकर—क्यों जाओ, कोई सरस पाप करके जाओ। जितने भी पैसे बना सकते हो बनाओ। एक बेघर के जाँगलूश और एक बेनिस की नाज़नीं के बीच कौन ऐसी गिरजे की रस्में और आपस की क़स्में हैं जो इयागो की सबीलें और

दोज़ख के क़बीले मिलकर तुड़वा नहीं सकते; फिर तुम लूटो उसके मज़े; इसलिए जैसे भी पैसे बना सको बनाओ। डूब मरे तुम्हारा दुश्मन। इसकी कोई ज़रूरत नहीं। उसे बिना पाए डूब मरने से अच्छा तो यह है कि उसे पाने की कोशिश में फाँसी पा जाओ।

राडरीगो : अगर मैं यह उम्मीद लगाऊँ तो क्या तुम आख़ीर तक मेरा साथ दोगे?

इयागो : मुझ पर यक़ीन रक्खो : जाओ, पैसे बनाओ : मैंने तुमसे अक्सर कहा है, और फिर-फिर कहता हूँ कि मुझे हब्शी से नफ़रत है : और यह फाँस मेरे दिल में गड़ी हुई है; तुम्हें भी उससे नफ़रत रखने की कम वजह नहीं है। आओ, हम दोनों मिलकर उससे अपना बदला निकालें : अगर तुम उसकी बीवी को फाँस लेते हो तो तुम मज़े लूटोगे और मेरे लिए यह एक तमाशा होगा। बहुत-सी बातें वक़्त की मुट्ठी में बन्द हैं, जो धीरे-धीरे खुलेंगी। जाओ, जुट जाओ, पैसे कमाओ। हम कल इसके बारे में और बातें करेंगे। आज विदा।

राडरीगो : हम कल सुबह कहाँ मिलेंगे?

इयागो : मेरे घर आ जाना।

राडरीगो : मैं तड़के ही पहुँच जाऊँगा।

इयागो : जाओ, मौज करो। सुनते हो, राडरीगो?

राडरीगो : क्या कहते हो?

इयागो : अब डूबने की बात मत करना; सुनते हो न?

राडरीगो : अब मैं पहले-सा बुद्धू नहीं रहा : मैं अभी जाकर अपनी सारी ज़मीन बेचता हूँ।

इयागो : जाओ, जाओ, मौज करो! पाकिट में काफ़ी पैसे रखना।

[राडरीगो बाहर जाता है

ऐसे लोगों को मैं सदा फँसाया करता
जो कि अक़्ल के अन्धे और गाँठ के पूरे,
मेरे सारे पढ़ने-लिखने पर लानत है
जो मैं ऐसे निरे काठ के उल्लू के सँग
वक़्त बिताऊँ और न अपना मज़ा-मुनाफ़ा
पहले देखूँ। मुझको हब्शी से नफ़रत है,
औ' लोगों में यह चर्चा है, मेरी बीवी
से भी उसका रब्त-ज़ब्त है : सच्चाई मैं
नहीं जानता, मगर सिर्फ़ शक को मैं बेशक
बात मानकर काम करूँगा। मुझको बहुत
मानता है वह, तब तो और मज़े में उस पर
मेरी चालें चल पाएँगी। सुन्दर है
कैसियो : मुझे अब क्या करना है, उसका दर्जा
पानी औ' अपनी उस्तादी का सिक्का बिठलाना
दुहरी शैतानी से—कैसे? कैसे?—

ज़रा सोच लूँ।—कुछ दिन बाद ओथेलो का मैं
कान भरूँ, उसकी बीवी कैंसियो से फँसी।
वह शकील है, रसिया भी है, जिस पर जल्दी
शक बैठेगा, इसीलिए वह गढ़ा गया है
औरत उसको देख पतिव्रत धरे ताक़ पर।
हब्शी है भोले, सीधे-सादे स्वभाव का;
जो ऊपर से भला दिखाई देता उसको
भला समझता। और गधे की तरह नकेल
पकड़कर उसको आसानी से हाँका-फेरा
जा सकता है।
बीज रहा यह। पेड़ उगा यह। दोज़ख़ काला
सींचे जिससे शैतानी फल फले निराला।

[बाहर जाता है

दूसरा अंक

पहला दृश्य

साइप्रस का एक बन्दरगाह। घाट के पास खुली हुई जगह।

(दो आदमियों के साथ मनटानो आता है।)

मनटानो : अन्तरीप से सागर पर क्या दीख रहा है?

पहला आदमी : कुछ भी नहीं : समग्र समुद्र तरंगाकुल है,
मुझे क्षितिज पर कोई नाव नहीं दिखती है।

मनटानो : थल पर ऐसे ज़ोर-शोर से अन्धड़ आया,
लगा क़िले का पत्थर का परकोट हिल गया।
जल पर भी गर ऐसा ही तूफ़ान उठा है,
तो नावों के लकड़ी के फट्टों की चूलें,
जब उनसे पर्वताकार लहरें टकराएँ,
कसी कब तलक बनी रहेंगी। देखो इसका
क्या फल होता!

दूसरा आदमी : तुर्की बेड़ा बिलट जायगा :
फेनिल तट पर ज़रा खड़े होकर तो देखो,
पागल मौजें उठ बादल को धौल जमातीं,
अनिल-विलोड़ित उग्र सिन्धु के उच्च हिलोरे
उत्तर के सप्तर्षि सितारों की आँखों पर
छींट मारते, और अचंचल ध्रुव के रक्षक

नक्षत्रों को नहला देते। इतना क्रुद्ध,
क्षुब्ध सागर को मैंने कभी नहीं देखा है।

मनटानो : तुर्की बेड़े ने खाड़ी में शरण न ली तो
डूबा समझो; इसे झेलना नामुमकिन है।

(तीसरा आदमी आता है।)

तीसरा आदमी : सुनो, जवानो ! बिना लड़े ही खत्म लड़ाई।
इस मदान्ध आँधी ने तुर्कों के बेड़े को
ऐसा झकझोरा है उनके सब मंसूबे
ठप्प हो गए। अभी एक जंगी जहाज़
वेनिस से आया, उससे लोगों ने देखा है
तुर्की बेड़े के ऊपर जो आफ़त आई;
औ' उसकी ज़्यादातर नावें बुरी तरह से
उलटीं-पलटीं।

मनटानो : कैसे-कैसे ! क्या यह सच है ?

तीसरा आदमी : वेरोना के इस जहाज़ ने अभी यहाँ लंगर
डाला है, माइकेल कैसियो उसी से
तट पर उतरे, युद्ध-विशारद मूर ओथेलो
के वे सह-सेनापति हैं, औ' सेनापति का
भी जहाज़ आनेवाला है, वे साइप्रस के
शासक के पद पर नियुक्त होकर आते हैं।

मनटानो : मैं प्रसन्न हूँ इस पर, वे सुयोग्य शासक हैं।

तीसरा आदमी : किन्तु वही कैसियो जो कि इस पर खुश हैं।
तुर्कों का बेड़ा ग़र्क़ हो गया, सेनापति के
लिए व्यग्र हैं और मनाते, वे सकुशल हों,
क्योंकि इसी प्रलयंकर, पाजी आँधी ने उनको
अलगाया।

मनटानो : हे भगवान्, बचाना उनको;
मैंने उनके नीचे काम किया है, पाया,
सिद्ध सिपाही-से दबंग हैं। तट पर आओ,
वह जहाज़ देखें जिसने लंगर डाला है,
और सूरमा मूर ओथेलो की तलाश में
दूर क्षितिज तक, जहाँ सिन्धु-नभ का नीलापन
एक हो गया है, अपनी नज़रें दौड़ाएँ।

तीसरा आदमी : आओ खोज शुरू कर दें हम क्योंकि हर मिनट
और जहाज़ों के आने की प्रत्याशा है।

(कैसियो आता है।)

कैसियो : युद्ध-कुशल साइप्रस के बलशाली निवासियो
धन्यवाद है, तुम्हें मूर के लिए मान है।
इस झंझा-झड़ से उनको भगवान बचाए;
ख़तरनाक लहरें थीं जब हम अलग हुए थे।

मनटानो : क्या उनका जहाज़ तगड़ा है ?
कैसियो : वह पोढ़े-पक्के लक्कड़ का बना हुआ है,
माँझी माना हुआ चतुर है और अनुभवी,
इससे मेरी आशा बँधी-'बँधी' तो कहना
ठीक नहीं, अटकी ज़रूर है।

[**अन्दर से 'पाल !', 'पाल !', 'जहाज़ का पाल !' की आवाज़ आती है**

(**चौथा आदमी आता है।**)

कैसियो : यह गुल कैसा ?
चौथा आदमी : नगर छोड़कर सागर-तट पर लोग खड़े हैं
औ' चिल्लाते, 'पाल दीखता !' 'पाल दीखता !'
कैसियो : मुझको लगता, यह सेनापति का जहाज़ है।

[**तोप दगने की आवाज़ सुनाई देती है**

दूसरा आदमी : सुनो, सलामी की तोपें वह दाग रहा है,
मित्र-पक्ष का है, निश्चित है।
कैसियो : आप कृपा कर
जाएं और देखकर आएँ इस जहाज़ से
कौन किनारे पर उतरा है।
दूसरा आदमी : मैं जाता हूँ।

[**दूसरा आदमी बाहर जाता है**

मनटानो : सह-सेनापति, मूर तुम्हारे क्या ब्याहे हैं ?
कैसियो : हाँ ब्याहे हैं, और परम सौभाग्यवान हैं।
उनको ऐसी सुन्दर पत्नी प्राप्त हुई है—
वह वर्णन से परे, प्रशंसा के ऊपर है;
उसके गुण अंकित करते लेखनी सकुचाती;
उसे प्रकृति ने वह नैसर्गिक आभा दी है,
कलाकार उस पर सिर धुनता।

(**दूसरा आदमी वापस आता है।**)

कहो, कौन है ?
दूसरा आदमी : कोई जिसे इयागो कहते, सेनापति का
झण्डावर है।
कैसियो : उसको आते समय परम अनु-
कूल और सुखदायी मौसम प्राप्त हुआ है।
तूफ़ानों ने, उच्च तरंगाकुल समुद्र ने,
गर्जन-तर्जन भरी हवा ने, दर्रों वाली
चट्टानों ने और बालुका के टीलों ने,
जो पानी में घात लगाए बैठे रहते,

औ' जहाज़ के पेंदे तोड़ दिया करते हैं,
अपनी घातक बान छोड़कर देवीरूपा
डेसडिमोना को संरक्षित राहें दी हैं।

मनटानो : वे क्या हैं ?

कैसियो : यह जिनकी मैंने बात कही है,
आनेवाले सेनापति की सेनापति हैं;
वीर इयागो को उनको लेकर आना था;
प्रत्याशा से सात रात पहले आ पहुँचीं।
पवन-देवता, ओथेलो की रक्षा करना,
अपनी सबल साँस से उनका पाल फुलाना,
जिससे उनका दिव्य जहाज़ सुरक्षित पहुँचे,
डेसडिमोना के अंगों में प्रेम-पुलक हो,
बुझे दिलों के अन्दर फिर से ज्वाला जागे,
औ' सारा साइप्रस सुख पाए।

(डेसडिमोना, एमीलिया, इयागो, छद्मवेशधारी राडरीगो और नौकर-चाकर आते हैं।)

देखो, देखो,
अब जहाज़ का रत्न किनारे पर आता है !
साइप्रस के लोगो, आदर से इनके आगे
घुटने टेको। देवि, तुम्हारी जय हो ! और
स्वर्ग की करुणा, सहस करों से सदा तुम्हारे
आगे-पीछे और चतुर्दिक् बरसे-सरसे !

डेसडिमोना : तुमको मेरा धन्यवाद, बलवान कैसियो !
मेरे पति का समाचार कुछ दे सकते हो ?

कैसियो : वे तो अभी नहीं पहुँचे हैं : इतना ही मैं
कह सकता हूँ, वे सकुशल हैं और जल्द ही
पहुँच जायँगे।

डेसडिमोना : किन्तु मुझे भय—एक दूसरे
से तुम कैसे अलग हो गए ?

कैसियो : सागर-अम्बर
पर जो बाढ़-बवण्डर आया, उसने हमको
अलग कर दिया।—लेकिन, सुनो, 'पाल' के
नारे।

[नेपथ्य में 'पाल ! पाल !' के शोर के बीच तोपें दगने की आवाज

दूसरा आदमी : यह तो गढ़ के लिए सलामी की तोपें हैं :
यह जहाज़ भी मित्र-पक्ष का।

कैसियो : पता लगाओ

[दूसरा आदमी बाहर जाता है

झण्डावर, स्वागतम् तुम्हें है :—(**एमीलिया से**)
और श्रीमती
जी, तुमको भी :—(**एमीलिया का मुख चूमता है**)
भले इयागो, मेरा यह आचरण देखकर
कहीं बुरा मत मान बैठना, मेरी शिक्षा-
दीक्षा है जो ऐसा शिष्टाचार बरतने
का मुझको साहस देती है।

इयागो : सह-सेनापति,
यदि यह अपने अधरों का इतना रस तुमको
दे-दे जितना अपनी रसना का यह अक्सर
मुझ पर बरसाती है, तो तुम छक जाओगे।

डेसडिमोना : इस बेचारी के मुख में तो जीभ नहीं है।

इयागो : क़सम न कहता, बड़ी जीभ है,
यह मुझको सोते में भी छेड़ा करती है;
सिर्फ़ तुम्हारे आगे, इतना मैं मानूँगा,
इसने अपनी जीभ पेट के अन्दर कर ली,
पर भीतर-ही-भीतर मुझसे झगड़ रही है।

एमीलिया : झूठ बोलते तुमको शर्म नहीं आती है !

इयागो : बहुत बनो मत, बहुत बनो मत, घर के बाहर
तुम तस्वीरों-सी लगती हो, कमरे के अन्दर
चर्ख़ी-सी, बावर्चीख़ाने में जंगल
की बिल्ली-सी, हानि किसी को पहुँचानी हो
तो साधू-सी, चोट किसी से पहुँची तो
तीछी बीछी-सी; और गृहस्थी के धन्धों के
वक़्त नींद तुमको आती है, और नींद के
वक़्त गृहस्थी के सब टण्टे तुम्हें सूझते।

डेसडिमोना : धिक्, तुमको जो हममें सिर्फ़ बुराई दिखती।

इयागो : मुझको समझो तुर्क, न जो मैं ठीक बूझता,
तुमको दिन को खेल, रात को काम सूझता।

एमीलिया : तुमसे मुझे प्रशंसा अपनी नहीं लिखानी

इयागो : मत लिखवाना।

डेसडिमोना : अगर प्रशंसा मेरी तुमको
लिखनी हो तो, बोलो, क्या लिखना चाहोगे ?

इयागो : देवि दयामय, मुझको ऐसा काम न सौंपो,
क्योंकि दोष मेरी आँखों से कभी न छिपते।

डेसडिमोना : यत्न करो।—क्या कोई बन्दरगाह गया है ?

इयागो : देवि, गया है।

डेसडिमोना : ख़ुशी नहीं है मुझे, मगर बाहर ख़ुश दिखकर
मैं अपने भीतर की चिन्ता छिपा रही हूँ।
बोलो, कैसे तुम मेरी तारीफ़ करोगे ?

इयागो : सोच रहा हूँ, पर मेरी प्रेरणा हृदय से
नहीं, खोपड़ी से आती है, चिड़िए के लासे-

सा इसको काँछ-कूँछ कर लाना पड़ता,
इस कारण दिमाग़ की नस-नस खिच जाती है :
लेकिन मेरी गिरा प्रसव की पीड़ा में है,
यह उसने उत्पन्न किया है:—
जो तन की गोरी, ज़बान की शोख़, सनम ले,
जिसको तन दे, पर ज़बान से काम स्वयं ले।

डेसडिमोना : खूब। अगर वह काले तन की, शोख़ज़बाँ हो?

इयागो : जो तन की काली, ज़बान की शोख़, फँसाए
ऐसा गोरा खसम कि कालापन छिप जाए।

डेसडिमोना : कैसी बुरी बात कह दी है!

एमीलिया : जो ज़बान की कुन्द और तन की गोरी हो?

इयागो : तन की गोरी हो सकती है नहीं अयानी,
कुन्दज़बाँ से वन्द हुई कब बच्चेदानी।

डेसडिमोना : यह सब दक़ियानूसी उलटबाँसियाँ हैं जो हौलियों में बेवकूफ़ों को हँसाने के लिए बनी हैं। जो कुरूप और मूर्ख हो उसकी तारीफ़ में तुम्हारे पास कुछ कहने को बचा हो तो बोलो।

इयागो : हर कुरूप औ' मूर्ख वही सब चालें चलती,
जिससे सुन्दर-बुद्धिमती पुरुषों को छलती।

डेसडिमोना : नासमझी की हद हो गई! जो सबसे बुरी है, उसकी तुम सबसे अधिक प्रशंसा करते हो। लेकिन, यह तो बताओ, तुम उस स्त्री की प्रशंसा कैसे करोगे जो सचमुच सुयोग्य हो और जो अपने गुणों के कारण अपनी श्रेष्ठता की इतनी अधिकारिणी बन गई हो कि साक्षात् ईर्ष्या भी उसके आगे नाक रगड़े!

इयागो : जो सुन्दर है, किन्तु नहीं फिरती इतराती,
मुख में रखती जीभ, उसे, पर, नहीं चलाती;
गहने रखती, किन्तु नहीं सज-बजकर चलती,
अवसर मिलने पर भी अपनी इच्छा दलती;
मौक़ा पाती, किन्तु नहीं है बदला लेती,
गुस्सा पीती और ज़्यादती रहती सेती;
इतनी रखती बुद्धि, न ऐसा धोखा खाए,
सत्तू दे-दे और धान बदले में लाए;
सोचा करती, किन्तु न मन का भेद खोलती,
पिछलगुओं को देख पलटकर नहीं बोलती;
जो ऐसी औरत है, वह है इस लायक़ बस—

डेसडिमोना : किस लायक़ बस?

इयागो : बच्चे पैदा करे, पतीला माँजे कस-कस।

डेसडिमोना : इससे भद्दी और भोंडी बात मैंने कभी नहीं सुनी। एमीलिया, इनसे सीख न लेना, तुम्हारे पति हुए तो क्या। कैसियो, तुम्हीं बताओ, इयागो ऐसा मुँहफट और बदज़बान तुमने कहीं और देखा है?

कैसियो : देवी जी, इसकी ज़बान पर कोई लगाम नहीं है: इसका पेशा है तलवार सफ़ाई से चलाना न कि ज़बान।

(कैसियो और डेसडिमोना के बीच अस्फुट वार्तालाप शुरू होता है।)

इयागो : (अलग) अच्छा, वह उसका हाथ अपने हाथों में ले रहा है। क्या खूब कहा है। खुसर-फुसर भी कर रहा है। इतने छोटे से जाले में कैसियो जितनी बड़ी मक्खी मैं न फँसा लूँ तभी कहना। हाँ, कर लो हँस-हँसके बातें, खूब कर लो; देखना तुम्हारी इन मनुहारों से ही मैं तुम्हारी कैसी जकड़बन्दी करता हूँ। सच कह रहे हो, ठीक ऐसा ही है। इस तरह की चालबाज़ियाँ तुम्हें सह-सेनापति के पद से उतार के रहेंगी, अपनी कुशल चाहते हो तो अपनी उँगलियों को इस तरह बार-बार मत चूमो। मगर तुम कब माननेवाले हो, तुम उन्हें फिर चूमने जा रहे हो। अच्छी बात है, जी भर के चूमो। क्या कमाल का शिष्टाचार है! इसमें भी कोई शक है। तुम फिर अपनी उँगलियाँ अपने होंठों के पास ले जा रहे हो। कहीं तुम्हारे लिए ये साही के काँटे न साबित हों।—

(नेपथ्य में नरसिंघों की आवाज़।)

(प्रकट) सेनापति आ गए। यह उन्हीं का नरसिंघा है।

कैसियो : मैं भी उसकी आवाज़ पहचानता हूँ।

डेसडिमोना : आओ, हम आगे बढ़कर उनका स्वागत करें।

कैसियो ; लो, वे तो यहीं आ गए।

(ओथेलो और नौकर-चाकर आते हैं।)

ओथेलो : खूब लड़ीं तुम तूफ़ानों से।

डेसडिमोना : प्यारे ओथेलो!

ओथेलो : तुमको अपने से पहले इस जगह देखकर
मैं हर्षित ही नहीं, बड़ा आश्चर्य-चकित हूँ।
ओ मेरे प्राणों की पुलकन! यदि हर झंझा
हो समाप्त ऐसी कलिका की मुसकानों पर,
तो तूफ़ानों से कह दो वे इतना गरजें,
इतना तड़पें, प्रलय जग पड़े, औ' समुद्र से
लड़ती नावें उठें पर्वताकार तरंगों
की चोटी पर और गिरें फिर नीचे, इतना
नीचे जितना नरक स्वर्ग से। अगर इस समय
मैं मर सकता, परम सुखी अपने को कहता,
क्योंकि इस समय मेरे प्राणों पर इतनी
परिपूर्ण शन्ति छाई हुई है, मुझको आशंका है,
फिर भविष्य में मुझको ऐसा सुखमय अवसर
नहीं मिलेगा।

डेसडिमोना : मुँह से ऐसा अशुभ न बोलो,
देव करे हम जैसे-जैसे बढ़ते जाएँ

बढ़े हमारा प्रेम और सुख।

ओथेलो : सदय शक्तियो !

मेरा भी 'आमीन' सुनो तुम। आज शान्ति-सुख
जो मेरे हैं, वाणी उन्हें नहीं कह सकती।
मेरा कण्ठ भरा आता है, हर्ष मौन है :
भंग करे इसको बस मेरे चुम्बन की ध्वनि—

(ओथेलो डेसडिमोना का मुख चूमता है)

कोई और कुशब्द हमारा हृदय न जाने।

इयागो : **(अलग)**

देख रहा हूँ खूब तुम्हारी मन-वीणा के
तार तने हैं। मगर इयागो, अगर इरादे
का पक्का है, पकड़ खूँटियों को ढीलेगा,
और बेसुरी तान करेगा।

ओथेलो : **(सबसे)** आओ गढ़ में

चलें। दोस्तो, ख़बर मिली है, ख़त्म लड़ाई
हुई, क्योंकि तुर्कों का बेड़ा ग़र्क़ हो गया।
मेरे परिचित द्वीप-निवासी तो अच्छे हैं ?—

(डेसडिमोना से)—

प्रेयसि, तुम्हें साइप्रस में सत्कार मिलेगा,
मेरे प्रति लोगों के अन्दर बड़ा प्रेम है,
मधुरे, मैं अपने शब्दों को रोक न पाता,
मेरे सुख ने मुझको पागल बना दिया है।

(इयागो से)—

भले इयागो, तुमसे है प्रार्थना कि तुम खाड़ी
को जाओ, सब सामान उतरवा लेना,
नाविक-नायक को गढ़ के अन्दर ले आना,
भला आदमी है, सुयोग्य है, हमें चाहिए
बड़ा मान-आदर उसको दें। डेसडिमोना,
आओ, साइप्रस का स्वागत लो।

[इयागो और छद्मवेशी राडरीगो को छोड़कर सब लोग चले जाते हैं

इयागो : सुनो; तुम थोड़ी देर बाद मुझे बन्दरगाह पर मिलना। पास आ जाओ। अगर तुममें कुछ कर दिखाने की हिम्मत हो तो मेरी बात पर ध्यान दो—कहते हैं कि छोटे आदमी भी जब मुहब्बत में पड़ जाते हैं तब उनके मिज़ाज में एक तरह की बुलन्दी आ जाती है जो अमूमन उनमें नहीं पायी जाती। आज रात को सह-सेनापति की तैनाती पहरे की चौकी पर होगी। लेकिन, पहले मैं तुमसे यह बता दूँ कि मुझे इस बात का ठीक पता लग

चुका है कि डेसडिमोना का उससे प्यार हो गया है।

राडरीगो : उससे ! यह कैसे ? यह नामुमकिन है।

इयागो : अपनी उँगली को ऐसे रक्खो, (**इयागो अपनी तर्जनी राडरीगो के मुँह पर लगाता है।**) और उल्लू-बसन्त, मुझ जैसे उस्ताद से कुछ सीखो। (**राडरीगो अपनी तर्जनी अपने मुँह पर लगाकर इयागो की बात सुनता है।**) तुमने देखा कि वह किस ज़ोर-शोर के साथ हब्शी की मुहब्बत में पड़ी, और सिर्फ़ इस बात पर कि वह डींग मार सकता है, शेख़ी बघार सकता है और मनगढ़न्त बकवास कर सकता है; और तुम्हारा क्या ख़्याल कि ऐसे ही चर्ख़ी चलाने पर वह उसे हमेशा प्यार करती रहेगी ? अगर दिमाग में गोबर नहीं भरा है तो ऐसा मत समझो। वह अपनी आँखें भी सेंकना चाहेगी, और उस भुतने को देखकर उसे क्या खुशी हासिल हो सकती है ? जब नई-नई शादी की रँगरलियों से ख़ून में ठण्डक आ जायगी तब उसमें फिर से गर्मी लाने के लिए, भरी हुई तबीयत में फिर से भूख पैदा करने के लिए वह क्या ढूँढेगी ?—किसी ख़ूबसूरत और हमजोली नौजवान की उन्माद-भरी आँखें, मनुहार-भरी बातें, अभिसार-भरी बाहें, और हब्शी में अब इन सबका टोटा है। वह जो मज़े चाहती है, जब उसे न मिलेंगे तब क्या होगा ?—उसकी सुकुमार और लहलहाती आशाओं पर पाला पड़ जायगा, हब्शी उसे अजीरन हो जायगा, वह उसे नापसन्द करेगी, वह उससे नफ़रत करेगी। खुद उसकी तबीयत उसे सिखलाएगी, उसे मजबूर करेगी—किसी दूसरे को ढूँढो। जनाब, जब यह बात मान ली—और न मानने की मैं कोई वजह नहीं देखता क्योंकि यही क़ुदरती है, पुरमतलब है—तो सोचो, वह ख़ुशक़िस्मत कौन है जिस पर उसकी निगाह सबसे पहले पड़ेगी ?—कैसियो पर। और वह दुष्ट पूरा थाली का बैंगन है। ईमान उसे छू नहीं गया है। शराफ़त और शाइस्तगी का भगल उसने सिर्फ़ इसलिए बना रक्खा है कि इसके पीछे उसे अपनी बदनीयती और बदचलनी को छिपाने में सहूलत हो। ईमान की उसे बू तक नहीं लगी। वह दुष्टा बड़ा ही ढुलमुल-यक़ीन और बड़ा ही शातिर है, मौक़े की ताक में रहता है; उसकी आँखें इतनी तेज़ हैं कि असली मौक़ा सामने न आने पर भी वे अपने फ़ायदे की कोई न कोई, नक़ली सूरत ही सही, निकाल लेती हैं। हूबहू शैतान समझो उसे। फिर उस दुष्ट में ख़ूबसूरती है, जवानी है, और वे सारी सिफ़तें हैं जिनकी तरफ़ नादान और नातजुर्बेकार लोग अक्सर खिंचते हैं। वह दुष्ट क्या है, पूरी वबा है और उस औरत की आँखें उस पर जम चुकी हैं।

राडरीगो : मुझे नहीं यक़ीन होता कि वह ऐसा कर सकती है। क्या ख़ुश-नसीब और ख़ुशगवार तबीयत है उसकी इस वक़्त।

इयागो : ख़ुश-गँवार के कद्दू ? वह जो शराब पीती है वह बनती है

अंगूरों से । वह खुशनसीब होती तो हब्शी की मुहब्बत में ही न पड़ती । खुश-गँवार के सत्तू ! जब वह उसके हाथ और हथेलियों को सहला-मल्हा रही थी, तब तुम्हारी आँखें कहाँ थीं ? देखा नहीं ?

राडरीगो : हाँ, देखा था, लेकिन वह तो सिर्फ़ उसकी शराफ़त थी ।

इयागो : शराफ़त नहीं शहवत । झूठ निकले तो अपनी ज़बान क़लम करा दूँ । उसकी इन हरकतों को उसकी बदएमाली और बदकारी के इतिहास की गोलमोल भूमिका और विषय-सूची समझ लो । उन दोनों के होठ इतने पास-पास आ गए कि उनकी साँसें आपस में मिल गयीं । राडरीगो, हो नहीं सकता कि इसके पीछे कोई बुरी वासना न हो । जब मिलना-भेंटना, चूमा-चाटी तब बात पहुँच गई तो जल्द ही वह ख़ास बात भी हो जायगी जो इन सबका आख़िरी नतीजा हुआ करती है ।

राडरीगो : हुश !

इयागो : हुश ? लेकिन, सुनो, जो मैं कहता हूँ, वह करना होगा । मैं तुम्हें वेनिस से लाया हूँ । आज रात तुम्हें पहरा देना होगा । मैं तुम्हारे लिए हुक्म निकलवा दूँगा । कैसियो तुम्हें नहीं पहचानता : मैं तुमसे ज़्यादा दूरी पर नहीं रहूँगा । तुम यह करना कि कोई मौक़ा पाकर कैसियो को ग़ुस्सा दिला देना, ज़ोर से शोर मचाकर, या उसके फ़ौजी इन्तजाम में किसी तरह की ख़राबी बताकर या किसी और तरीक़े से जो उस वक्त तुम्हें मौज़ूँ मालूम पड़े ।

राडरीगो : बहुत अच्छा ।

इयागो : सुनो, वह बड़ा उतावला-बावला है और उसके मिज़ाज में गर्मी है, और हो सकता है कि वह तुम पर हाथ चला दे । उसे ऐसा छेड़ देना कि वह हाथ चला ही दे, क्योंकि इतनी-सी बात पर भी मैं साइप्रसवालों में ग़दर करा दूँगा, और वे तब तक ठीक तरह से शान्त न होंगे जब तक कैसियो को बरखास्त न कर दिया जाय । इस तरह तुम अपनी मंज़िले-मक़सूद पर जल्दी पहुँच जाओगे । जो आगे करना है, वह मैं फिर बताऊँगा; उससे सारी रुकावटें दूर हो जायँगी और तुम्हारा रास्ता साफ़ हो जायगा । बग़ैर उनके हटे हमें कामियाबी की कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए ।

राडरीगो : अगर उससे कोई कामियाबी हासिल हो सके तो मैं ऐसा ही करूँगा ।

इयागो : ज़रूर होगी । मुझसे अभी थोड़ी देर में क़िले पर मिलो । मुझे हब्शी का सामान किनारे से लाना है । अब विदा दो ।

राडरीगो : अच्छा विदा ।

[**बाहर जाता है**

इयागो : प्यार कैसियो का है डेसडिमोना के प्रति,

ख़ूब समझता; प्यार उसे वह भी करती हो
तो अचरज क्या ?—यह भी माना जा सकता है।
हब्शी, जिससे कभी नहीं मेरी पट सकती
सच्चा, प्रेमी और तबीयत का शरीफ़ है,
और मुझे सन्देह नहीं है डेसडिमोना
उसको अपना पति पाकरके परम सुखी है।
लेकिन, डेसडिमोना से है प्यार मुझे भी;
सिर्फ़ वासना पर निर्भर यह प्रेम नहीं है,
गोकि वासना से अजान रहने का दावा
नहीं करूँगा; ऐसा करने का कुछ कारण
बदला लेना भी है, क्योंकि मुझे शुबहा है
विषयी हब्शी ने मेरी पत्नी पर अपना
हाथ लगाया। औ' यह शंका किसी विषैली
दवा की तरह भीतर-भीतर मुझे खा रही,
और शान्ति यह मेरी आत्मा न पा सकी है,
न पा सकेगी, जब तक मुझे नहीं मिल जाती
पत्नी के बदले में पत्नी। अगर न ऐसा
हो पाया तो हब्शी के दिल में मैं ऐसे
कठिन डाह का रोग लगा दूँगा वह अपनी
बुद्धि लगाए, कितनी ही, पर शफ़ा न पाए।
यह वेनिस का कुत्ता तो अपने शिकार पर
तुरत टूटने को आतुर है। मैं इसको नफ़रत
करता हूँ, किन्तु, अगर यह मेरी बातों
में आ जाए तो मैं इस माइकेल कैसियो
को पछाड़ दूँगा पल भर में, औ' हब्शी की
नज़रों में भी उसको नीचे गिरा सकूँगा,
क्योंकि मुझे शक है कि कैसियो ने भी मेरी
पत्नी के सत को तोड़ा है। अब मैं ऐसी
चाल चलूँगा जिससे हब्शी गधा बनेगा,
मन की शान्ति-धीरता खोकर पागल होगा,
फिर भी मुझको धन्यवाद देगा, बख़शीशें
देगा, प्यार करेगा और भला समझेगा।
यह नक़शा है, किन्तु अभी सब उल्टा-पुल्टा,
छल जब तक चल जाय न, उसका भेद न खुलता।

[बाहर जाता है

दूसरा दृश्य

एक सड़क

(ढूँढोरिया घोषणा-पत्र लिये हुए आता है : उसके पीछे-पीछे बहुत से लोग हैं।)

ढँढोरिया : भाइयो और बहनो, अभी कुछ खबरें ऐसी आई हैं जिनसे पता चला है कि तुर्कों का बेड़ा बिल्कुल तहस-नहस हो गया। इस पर खुश होकर हमारे गुणनिधान, महाबलवान सेनापति ओथेलो ने आज्ञा दी है कि आज सब लोग जीत की खुशी मनाएँ, गाएँ, नाचें, अलाव जलाएँ, यानी हर आदमी जिस तरह से भी उसका जी चाहे अपने-अपने राग-रंग में मगन-मस्त हो, क्योंकि इस खुश-ख़बरी के अलावा एक और बात है। आज हमारे सेनापति की सुहागरात है। उनकी आज्ञा है कि इसकी घोषणा सबको कर दी जाय। जगह-जगह लंगर खोल दिए गए हैं और इस वक़्त से, लगभग पाँच बजे से, रात के ग्यारह बजे तक सबको पूरी आज़ादी है कि जहाँ, जितना जी चाहे खाए-पिए। भगवान साइप्रस के द्वीप और हमारे गुणनिधान सेनापति ओथेलो का कल्याण करें।

[सब हँसते-कूदते, शोर मचाते बाहर जाते हैं

तीसरा दृश्य

गढ़ का एक बड़ा कमरा

(ओथेलो, डेसडिमोना, कैसियो और नौकर-चाकर आते हैं।)

ओथेलो : भले माईकेल, आज रात तुम पहरा देना;
हमें चाहिए अपने को संयम में रक्खें,
राग-रंग में मर्यादा को भूल न जाएँ।

कैसियो : जो करने को है उसका आदेश इयागो
को है, फिर भी सब कुछ अपनी देख-रेख में
मैं रक्खूँगा।

ओथेलो : वह पक्का ईमानदार है।
माइकेल, अब नमस्कार; कल तड़के आना,
तुमसे कुछ बातें करनी हैं **(डेसडिमोना से)**
आओ, प्रेयसि,
क़ीमत जिसकी दी, मिलने को है अब वह फल,
आज रात को हम न उसे कहने देंगे 'कल'!—
नमस्कार है।

[ओथेलो, डेसडिमोना और नौकर-चाकर बाहर जाते हैं

(इयागो आता है।)

कैसियो : आए खूब, इयागो, पहरे पर चलना है।

इयागो : अभी से नहीं, सह-सेनापति जी; अभी तो दस भी नहीं बजे हैं। सेनापति महोदय ने हमें इतनी जल्दी क्यों धता बता दिया?— डेसडिमोना से रस-बतियाँ करने के लिए; और अब वे हमीं को कुसूरवार बताएँगे! आज ही तो उनकी क़त्ल की रात है। वह तो राजा इन्द्र को भी घायल करे।

कैसियो : हाँ, वे बड़ी कमनीय कुमारी हैं।

इयागो : और क़समन कहता हूँ कि जवानी उसमें कसमसा रही है।

कैसियो : निश्चय ही वे बड़ी कोमल हैं, सुकुमार हैं।

इयागो : और क्या कमाल की आँखें हैं! लगता है जैसे गुनाह करने के लिए दावत दे रही हैं।

कैसियो : उनकी आँखों में आकर्षण है; फिर भी, मैं समझता हूँ, उनमें यथोचित लज्जा है।

इयागो : और जब वह बोलती है तो क्या ऐसा नहीं लगता जैसे उसने प्रेम का स्वागत करने के लिए दरवाज़ा खोल दिया हो?

कैसियो : निःसन्देह वे परिपूर्णता की मूर्ति हैं।

इयागो : हम भी चाहते हैं कि उनकी सेज पर सुखों की झड़ी लगे! सुनो, सह-सेनापति, मेरे पास एक बोतल बढ़िया शराब है; और मौक़े से साइप्रस के तीन-चार नौजवान बाहर खड़े हैं। वे चाहते हैं कि इस लाल शराब से काले ओथेलो का जामेसेहत पिया जाय।

कैसियो : इयागो, तुम आदमी बढ़िया हो, लेकिन आज रात को नहीं। मुझे अफ़सोस है कि मेरा दिमाग़ इतना कमज़ोर है कि शराब मुझे फ़ौरन चढ़ जाती है। अच्छा होता कि शिष्टाचार के लिए आमोद-प्रमोद का कोई और तरीक़ा निकाला जा सकता।

इयागो : अरे, वे सब अपने दोस्त हैं; बस एक प्याला; तुम्हारी जगह मैं पीऊँगा।

कैसियो : आज रात को मैंने सिर्फ़ एक प्याला लिया था; और उसमें भी, एहतियातन, मैंने काफ़ी पानी मिला लिया था; फिर भी देखो मेरे चेहरे की क्या हालत हो रही है। यह तो मेरी बदनसीबी है कि मुझको इसकी लत पड़ गई है; मगर अपनी कमज़ोरी पर मुझे और ज़्यादा जब्र करने की हिम्मत नहीं।

इयागो : तुम अपने को मर्द कहते हो! आज तो मौजमस्ती की रात है। नौजवान लोग इन्तजार में हैं।

कैसिगो : वे कहाँ हैं?

इयागो : बाहर, दरवाज़े पर, बराय मेहरबानी उन्हें अन्दर बुला लो।

कैसियो : बुला तो लूँगा, लेकिन मेरा जी नहीं कर रहा है।

[बाहर जाता है

इयागो : आज रात जितनी शराब इसने पी रक्खी
उस पर गर मैं एक जाम बस और जमा दूँ
तो यह ऐसा झगड़ालू-बिगड़ैल बनेगा
जैसे मेरी नौजवान जोरू का कुत्ता।
इधर मरीज़ेइश्क राडरीगो नालायक़
जितनी बातें करता है उल्टी करता है;
आज रात को नाम, डेसडिमोना का, ले-ले
उसने पूरी बोतल खाली कर डाली है,
पर पहरे के ऊपर उसकी तैनाती है।
औ' साइप्रस के तीन तिलंगे भी पहरे पर,
जो कि द्वीप के शूर और मशहूर लड़ाके,
बाँके, ऐसे तेज-तबीयत, अगर ज़रा-सी
मानहानि उनकी हो जाए, कटने-मरने
को आमादा हो जाते हैं, और उन्हें भी
आज रात मैंने शराब के प्याले दे-दे
खूब ताव पर चढ़ा दिया है। अब मुझको इन
पियक्कड़ों के बीच कैसियो से कुछ ऐसा
काम करा देना है जिससे द्वीप समूचा
बिगड़ खड़ा हो। लो वे लोग चले आते हैं।
अब मंज़िल-मक़सूद पहुँचने में क्या देरी;
मिलकर धार-बयार बढ़ातीं किश्ती मेरी।

(**कैसियो लौटकर आता है; उसके साथ मनटानो और दो-तीन नवयुवक हैं; पीछे-पीछे नौकर-चाकर शराब और प्याले लिये हुए आते हैं।**)

कैसियो : क़सम खुदा की, इन्होंने एक पूरा प्याला मेरे गले में उँडेल दिया है। और नहीं।

मनटानो : क़सम ईमान की, बस थोड़ी-सी; एक पेग से ज़्यादा नहीं; बेईमानी नहीं करूँगा, सिपाही हूँ।

इयागो : हे, शराब इधर लाना!

(**गाता है।**)

जब प्याले से प्याला मिले···ए
तब बोले टिनिक-टिन-टिन!
टिनिक-टिन-टिन!

चली आना सिपाही के डेरे,
चली जाना सबेरे-सबेरे;
गिनती की जवानी की रातें,
गिनती के जवानी के दिन।
टिनिक-टिन-टिन!
जब प्याले से प्याला मिले···ए
तब बोले टिनक-टिन-टिन!

ज़रा लाना इधर भी शराब !

कैसियो : क़सम खुदा की, क्या कमाल का गाना है !

इयागो : मैंने इसकी तान इंग्लिस्तान में सीखी थी, वहाँ वालों की टक्कर के पियक्कड़ नहीं दुनिया के अन्दर ! क्या तुम्हारे डेन और क्या तुम्हारे जर्मन और क्या तुम्हारे पेट-फुल्ले हालैण्ड वाले—ज़रा शराब देना—अंग्रेज़ों के मुकाबले में कोई चीज़ नहीं हैं।

कैसियो : तो क्या तुम्हारे अंग्रेज़ पीने में इस क़दर माहिर हैं।

इयागो : इसमें कोई शक है; जब तुम्हारा डेन पीकर चित हो जाता है, वह मजे में चुस्कियाँ लेता रहता है; तुम्हारे जर्मन से तो वह चुटकियों में बाज़ी मार ले जाता है; और तुम्हारा हालैण्डवाला तो एक बोतल में ही ओ···आ कर देता है।

कैसियो : ये रहा हमारे सेनापति का जामे सेहत !

मनटानो : मैं भी उठाता हूँ; सह-सेनापतिजी, तुमसे पीछे रहनेवाला नहीं हूँ।

इयागो : इंग्लैण्ड भी क्या प्यारा मुल्क है !

(गाता है।)

एक बड़ा राजा था जिसने एक सिलाया पाजामा;
कपड़े और सिलाई दोनों के ऊपर खर्चा नामा;
मगर चढ़ाया जब, तब पाया मोहरी उसकी तंग बनी,
गुस्से में दर्ज़ी से बोला, 'सात गधों का तू मामा ?'
अब पाजामा चढ़े न उतरे, खूब हुई खींचातानी;
इतने में आ गई कहीं से राजा की बूढ़ी नानी,
आँख गड़ाकर उसने देखा, शीश हिलाकर वह बोली
अब कोई तरकीब नहीं है, टाँग पड़ेगी कटवानी !
एक बड़ा राजा था जिसने एक सिलाया पाजामा।
इधर शराब ज़रा लाना !

कैसियो : भाई खूब ! यह गाना तो पहलेवाले से भी बढ़िया है।

इयागो : अगर सुनो तो फिर गाऊँ।

कैसियो : नहीं, जो यह सब करता है, मैं कहता हूँ, वह अपनी जगह के क़ाबिल नहीं है। देखो, खुदा सबके ऊपर है। इधर बहिश्त है, उधर दोज़ख़ है। वह किसी को बहिश्त में डाल देता है, किसी-को दोज़ख़ में डाल देता है।

इयागो : सह-सेनापति जी, बिलकुल ठीक कहते हो।

कैसियो : जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है—मैं सेनापति की बेइज़्ज़ती नहीं करता, मैं किसी बड़े आदमी की बेइज़्ज़ती नहीं करता—मुझको उम्मीद है कि मैं बहिश्त में जाऊँगा।

इयागो : और सह-सेनापतिजी, मैं भी बहिश्त में जाऊँगा।

कैसियो : ठीक है, लेकिन तुम बुरा न मानो तो, मैं पहले जाऊँगा। सह-सेनापति पहले जाएगा, झण्डाबरदार बाद को आएगा। लेकिन, अब यह सब बन्द करो; चलो अपने-अपने काम पर चलें। खुदा, हमारे गुनाहों को माफ़ कर ! साहबो, चलो अपना-अपना काम-

काज देखो। साहबो, यह मत समझना कि मैं नशे में हूँ, यह मेरा झण्डावर है, यह मेरा दाहिना हाथ है, यह मेरा बाहिना हाथ है। देखा, मैं बिलकुल नशे में नहीं हूँ। मैं ठीक से खड़ा हो सकता हूँ, ठीक से बोल सकता हूँ।

सब : बिलकुल ! बखूबी !

कैसियो : तो फिर ठीक है, मैं चला, लेकिन तुम यह कभी मत समझना कि मैं नशे में हूँ।

[**बाहर जाता है**

मनटानो : साथियो, चलो चबूतरे पर, अब हम पहरे पर डट जाएँ।

इयागो : देखा तुमने इसे अभी जो चला गया है;
यह ऐसा सेनानी सीज़र के काँधे से
काँधा मिला खड़ा हो जाए, हुक्म चलाए;
लेकिन, देखो, एक बुरी लत इसमें ऐसी
जो इसकी अच्छाई पर कालिख मलती है,
जिससे इसकी आधी रौनक़ मारी जाती;
कभी बड़ा अफ़सोस मुझे इस पर आता है,
लेकिन, इस पर बड़ा यक़ीन ओथेलो को है,
और हमेशा मुझको खौफ़ बना रहता है,
कभी न अपनी कमज़ोरी में यह कुछ ऐसा
कर बैठे, जिससे यह सारा द्वीप हिल उठे।

मनटानो : क्या अक्सर इसकी ऐसी हालत रहती है ?

इयागो : ऐसी हालत हुई कि बिस्तर पर जा पड़ता :
अगर नशे के झोंके से वह बचा रहे तो
अड़तालिस घण्टे तक पहरा दे सकता है।

मनटानो : अच्छा हो सेनापति को यह बात बता दो :
शायद उनको पता नहीं है, या वे अपनी
भलमंसी में सिर्फ़ कैसियो के गुण को ही
देखा करते, और दोष पर ध्यान न देते।
क्या यह सच है ?

(**राडरीगो आता है।**)

इयागो : (**अलग, राडरीगो से**) कहो, राडरीगो, कैसे हो ?
सह-सेनापति के पीछे लग जाओ, जाओ।

[**राडरीगो बाहर जाता है**

मनटानो : और बड़ा अफ़सोस है कि सीधे सेनापति
ने अपने से ठीक दूसरे पद पर ऐसा
शख़्स बिठा देने का जोखम उठा लिया है
जिसमें ऐसी कमज़ोरी जड़ जमा चुकी है।
मेरा तो ईमान यही कहता है इसकी
ख़बर मूर को कर दी जाए।

इयागो : नाँ-ना, बाबा !
मुझे द्वीप का राज दे दिया जाए तो भी
मैं यह काम नहीं करने का। मेरा जिगरी
दोस्त कैसियो है, मैं उसका दोष दूर करने
का भरसक जतन करूँगा।—मगर सुनो तो,
यह हल्ला-गुल्ला कैसा है ?

(नेपथ्य में 'बचाओ !' 'बचाओ !' की आवाज़)

(राडरीगो का पीछा करता हुआ कैसियो आता है।)

कैसियो : लुच्चे कहीं के ! शोहदे !
मनटानो : सह-सेनापति जी, बात क्या हुई ?
कैसियो : गधा चला है मुझको मेरा फ़र्ज़ बताने। बेटा, पीटते-पीटते तुम्हारा पलस्तर ढीला कर दूँगा।
राडरीगो : तुम पीटोगे, मुझको !
कैसियो : हरामज़ादे, ज़बान पकड़ के खींच लूँगा।

(राडरीगो को मारने के लिए बढ़ता है।)

मनटानो : **(कैसियो के सामने आकर)** नहीं, नहीं; शराफ़त से काम लो; कहना मानो; गुस्सा रोको !
कैसियो : जाने दो मुझे इस वक़्त; छोड़ दो मुझे, नहीं तुम्हारा खोपड़ा फोड़ दूँगा।
मनटानो : बड़ा आया है खोपड़ा फोड़नेवाला ! चुप कर; नशे के बल पर कूदता है।
कैसियो : नशे के बल पर ! तो देख !

(दोनों लड़ने लगते हैं।)

इयागो : **(अलग, राडरीगो से)**
सुनो, निकल जाओ, बाहर जाकर चिल्लाओ,
ग़दर हो गया।

[राडरीगो बाहर जाता है

हाँ !-हाँ ! सह-सेनापति ठहरो !
खुदा से डरो, भलेमानसो ! अरे, बचाओ !
सह-सेनापति, सुनो;—सुनो भाई मनटानो;—
अरे, बचाओ !—सुनो साथियो, यही तुम्हारी
पहरेदारी है ?—बलिहारी !

(नेपथ्य में घण्टा बजने की आवाज़)

कौन आदमी
घन-घन घण्टा बजा रहा है ?—ओ शैतानो !
सारा शहर अभी उठ पड़ता। खुदा के लिए

सह्-सेनापति, रुको; आज तुम जो करते हो
उस पर तुमको सदा के लिए शर्मिन्दगी
उठानी होगी।

(**ओथेलो और नौकर-चाकर आते हैं।**)

ओथेलो : बोलो, यहाँ माजरा क्या है?
मनटानो : उफ़! इसने घायल कर डाला, अब न बचूँगा।
ओथेलो : जान अगर प्यारी हो, ठहरो!
इयागो : ठहरो, ओ, सह्-सेनापतिजी,—ओ, मनटानो,—
भलेमानसो, क्या तुम बिलकुल भूल गए हो,
तुम क्या हो, किस जगह और क्या काम तुम्हारा?
सेनापति कहते हैं—ठहरो, ओ बेशर्मो!
ओथेलो : सुनो, बताओ यह झगड़ा उठ पड़ा कहाँ से?
क्या हम अपने लिए तुर्क खुद बन बैठे हैं?
हमें स्वर्ग ने जिस आफ़त से बचा लिया है,
क्या हम उसको अपने हाथों ऊपर लेंगे?
यदि ईसाई होने की कुछ लाज तुम्हें है
तो इस वहशी मार-पीट को बन्द करो अब?
जो अपना गुस्सा निकालने को बढ़ता है,
मैं समझूंगा, उसे प्राण का मोह नहीं है।
हाथ उठाते ही मैं उसका वध कर दूंगा।
बन्द करो ख़तरे का घण्टा। इससे दहशत
फैल रही है, शान्ति भंग होती लोगों की।

[**एक नौकर घण्टा बन्द कराने के लिए बाहर जाता है**

मरदूदो, मुँह खोलो, बोलो, बात हुई क्या?
ओ ईमानदार झण्डावर, तुम क्यों इतने
दुख में गड़े दिखाई देते?—तुम्हीं बताओ,
तुम्हें प्रेम की शपथ, तुम्हें सच कहना होगा।
इयागो : मुझे नहीं मालूम : दोस्त की तरह अभी तो,
अभी-अभी तो, दोनों में घुट-घुटकर ऐसा
बतरस होता था जैसे रतजामा पहने
बिस्तर में घुस मियाँ और बीवी करते हैं।
बस फिर जैसे—चला एक ग्रह आसमान में
जिसने इनकी बुद्धि फिरा दी। बात-बात में
तलवारें खिंच गईं, भिड़ गए वे आपस में,
जैसे एक दूसरे के खूं के प्यासे हों।
बेबुनियादी झगड़ा यह क्यों खड़ा हो गया,
नहीं जानता। अच्छा होता इसे देखने
को आने के पहले मेरे पाँव किसी घम-
सान लड़ाई में कट जाते!

ओथेलो : माइकेल, यह
हुआ किस तरह, तुम अपने को भूल गए यों ?
कैसियो : विनती है, अब क्षमा कीजिए, और कहूँ क्या ।
ओथेलो : तुम, सुयोग्य मनटानो, अपने व्यवहारों में
सदा शिष्ट समझे जाते थे, शान्ति-सौम्यता
जो कि तुम्हारे यौवन में थी, जग-जाहिर है;
बुद्धिमान से बुद्धिमान पारखी तुम्हारा
नाम बड़े आदर से लेते : बात हुई क्या
जो तुम अपने यश पर धब्बा लगा रहे हो,
औ' जो कीर्ति कमाई तुमने उसे लुटाकर
नाम रात गुण्डागर्दी करनेवालों में
लिखा रहे हो ? मुझको इसका उत्तर दो तुम
मनटानो : योग्य ओथेलो, मुझको गहरी चोट लगी है :
मुझको जो मालूम, आपका अफ़सर झण्डा-
वर उसको बतला सकता है । कम बोलूँगा,
क्योंकि बोलने में मुझको पीड़ा होती है ।
जब कोई हमला करने पर आमादा हो,
तब अपनी रक्षा करना यदि पाप नहीं है,
अगर ख़्याल रखना, अपना, अपराध नहीं है,
तो मैं नहीं समझता मैंने आज रात को
कुछ भी ऐसा कहा, किया है, जो अनुचित हो ।
ओथेलो : शपथ स्वर्ग की मेरा खून उबलकर मुझको
ठण्डे दिल से काम नहीं करने देता है;
मेरा गुस्सा न्याय और निर्णय पर हावी
होकर मुझको अपने से बाहर करता है ।
एक बार यदि बिगड़ उठा मैं, एक बार यदि
मैंने अपना हाथ उठाया, तो तुममें से
बड़ा से बड़ा मुझसे कड़ा दण्ड पाएगा ।
मुझे बताओ, कैसे दंगा खड़ा हुआ यह,
किसने इसको शुरू किया है ?—औ' जिसका
अपराध सिद्ध होगा उसको, वह मेरे साथ
जन्मनेवाला जुड़वाँ भाई भी हो तो भी,
मैं अपने से अलग करूँगा । हैरत ही है !
जबकि नगर में फ़ौज पड़ी, खलबली मची है
औ' लोगों के दिल दहशत में डूब रहे हैं,
तब अपने आपस के और घरेलू झगड़े
तै करने का मौक़ा तकना, वह भी आधी
रात, ख़ास पहरे की चौकी-चौबारे में !
शैतानी की हद है !—कहो, इयागो, किसने
शुरू किया था ?
मनटानो : अगर तरफ़दारी से, या कि
वज़ेदारी में तुमने सच को घटा-बढ़ाकर

बतलाया तो तुम्हें सिपाही मैं न कहूँगा।

इयागो : मुझको ऐसे नाज़ुक मौक़े पर मत जाँचो।
माइकेल कैसियो के लिए मेरे मुख से
निकली बातें बद साबित हों तो अच्छा है
मेरे मुँह से कटकर मेरी जीभ गिर पड़े।
फिर भी, मैं यक़ीन करता हूँ, सच कहने से
इन पर आँच नहीं आयेगी। सेनापति, वाक़या
इस तरह : मैं औ' मनटानो बातों में
लगे हुए थे, एक शख़्स चिल्लाता आया,
'जान बचाओ !' पीछे थे कैसियो हाथ में
तेग़ उठाए, उसे मारने की मंशा से।
इसे देख यह भला आदमी बीच में पड़ा
और कैसियो से बोला, 'मत ऐसा करिए।'
मैंने उस चिल्लानेवाले को समझाया,
'यों मत चीख़ो। नहीं शहर में अभी सनसनी
फैल जायगी'—और आख़िरश यही हुआ भी—
लेकिन अपने को वह मुझसे छुड़ा बड़ी
तेज़ी से भागा, औ' मैं तलवारों के चलने
की आवाज़ें सुनकर लौटा। यहाँ कैसियो
ऊँचे-ऊँचे वह गालियाँ निकाल रहे थे
जो मैंने इनके मुँह अब तक नहीं सुनी थीं।
जब मैं लौटा—औ' मैं जल्दी ही लौटा था—
दोनों गुथे हुए थे, घायल होते-करते,
जैसा इन्हें आपने देखा औ' अलगाया।
इससे ज़्यादा और नहीं कुछ कह सकता हूँ,
पर आख़िर आदमी आदमी ही होता है,
अच्छे-से-अच्छे भी भूलें कर जाते हैं।
थोड़ी-सी ज़्यादती कैसियो ने मनटानो
पर तो की है, पर गुस्से में लोग भलाई
करनेवाले पर भी हाथ चला देते हैं,
तो भी मुझको है यक़ीन जो शख़्स भग गया
उसने कोई हतक-इज़्ज़ती करनेवाली
बात कैसियो से ज़रूर की जो कि सब्र से
बाहर की थी।

ओथेलो : समझ रहा हूँ इसे, इयागो,
तुम अपने ईमान-मुहब्बत के कारण
मामला दबाते कि कैसियो पर आँच न आए।
तुम्हें, कैसियो, मैंने प्यार किया है लेकिन
तुम अब मेरे सह-सेनापति नहीं रहोगे।

(नौकर-चाकर के साथ डेसडिमोना आती है।)

देखो, गुल से मेरी प्यारी उठकर आती !—

तुमको सबक सिखाऊँगा मैं।

डेसडिमोना : बात क्या हुई ?

ओथेलो : मधुरे, अब सब ठीक हो गया; चलो सो रहें।

(**मनटानो** से)

चलो तुम्हारी मरहम-पट्टी मैं खुद कर दूँ—
इन्हें ले चलो।

[**नौकर मनटानो को सहारा देकर बाहर ले जाते हैं**

सुनो; इयागो, देख-रेख तुम करो नगर की,
दंगे से घबराए लोगों को समझा दो।—
डेसडिमोना, आओ : यह है सैनिक का जीवन
उसे चैन की नींद नहीं लेने देता रण।

[**इयागो और कैसियो को छोड़कर सब बाहर चले जाते हैं**

इयागो : सह-सेनापति, क्या तुम्हें भी चोट आई है ?

कैसियो : ऐसी कि जिसकी मरहम-पट्टी नहीं हो सकती।

इयागो : ऐसी बात न कहो।

कैसियो : इज़्ज़त, इज़्ज़त, इज़्ज़त ! हाय, आज मेरी इज़्ज़त चली गई ! आज मेरे अन्दर से देवता का अंश निकल गया और केवल पशुता बाक़ी रह गई ! मेरी इज़्ज़त, इयागो, मेरी इज़्ज़त !

इयागो : भाई, मैं तो सीधी बातें समझता हूँ, मैंने सोचा तुम्हारे बदन पर कोई चोट आई है। इज़्ज़त की चोट से बदन की चोट में ज़्यादा दर्द होता है। इज़्ज़त तो एक बिलकुल बेकार और झूठा चेहरा है जिसे ऊपर से लगा लिया जाता है। अक्सर यह बिना किसी ख़ूबी के मिलता है और बिना किसी ख़ामी के छिन जाता है। तुम्हारी कोई इज़्ज़त नहीं चली गई, जब तक तुम ख़ुद यह कहते न फिरो कि तुम्हारी इज़्ज़त चली गई है। सुनो, म्याँ, सेनापति के मनाने के तरीक़े हैं; सिर्फ़ इस वक़्त उन्होंने अपने चित्त से तुम्हें उतार दिया है। इस सज़ा का ताल्लुक बदख़्वाही से ज़्यादा हुकूमती दाँव-पेच-से है; बिलकुल उसी तरह जैसे कोई अपनी रोबीली बीवी को डराने के लिए घर की बेक़सूर बिल्ली को पीट दे। तुम्हें एक बार उनकी मिन्नत भर करनी है और वे फिर तुम्हारे हो जाएँगे।

कैसियो : मैं तो मिन्नत करूँगा कि वे मुझसे नफ़रत करें; क्या फ़ायदा कि मुझ जैसे मदहोश, नालायक़ और नासमझ अफ़सर से इतना अच्छा सेनापति धोखा खाए। शराब के प्याले चढ़ाना और बड़-बड़ाना और झगड़ना ! बम-चख़ मचाना ! गाली-गलौज करना ! और अपनी ही छाया के साथ बे-सिर-पैर की बहस में पड़ना ! ओ शराब की नादीदा रूह, अगर तुझे पुकारने के लिए कोई

नाम नहीं दिया गया तो हम तुझे शैतान कहना चाहेंगे।

इयागो : वह कौन था जिसे तुमने तलवार लेकर दौड़ाया था? उसने तुम्हारे साथ किया क्या था?

कैसियो : मुझे कुछ पता नहीं।

इयागो : यह नामुमकिन है।

कैसियो : मुझे बहुत-सी बातें याद आती हैं; पर साफ़-साफ़ कुछ नहीं। कोई झगड़ा हुआ था, पर पता नहीं क्यों? क्या जहालत है कि लोग अपने मुँह के अन्दर एक ऐसा दुश्मन ले जाते हैं जो उनके दिमाग़ ो ही सफ़ाचट कर जाता है। क्या बेवकूफ़ी है कि हम अपनी हँसी-खुशी और राग-रंग से अपने को ही इन्सान से हैवान बना लेते हैं।

इयागो : लेकिन अब तो तुम बिलकुल अच्छे हो: इतनी जल्दी कैसे ठीक हो गए?

कैसियो : शैतानी मदहोशी ने मेहरबानी करके अब अपनी जगह शैतानी गुस्से को दे दी है। मेरी एक ख़ामी मेरी दूसरी खामी की तरफ़ इशारा करती है कि मैं अपने आपको हरसू नफ़रत करूँ।

इयागो : हटो, बार। इतनी पारसाई भी क्या हुई। यह ज़रूर है कि वक्त, मुकाम और इस मुल्क की फ़िज़ा देखते हुए, मेरी दिली ख़्वाहिश थी कि ऐसी कोई बात न हो। लेकिन जो होनी थी सो तो हो गई। भलाई अब इसी में है कि इसे सुधार लो।

कैसियो : ठीक है, मैं उनसे अपनी जगह फिर माँगूँगा; वे कह देंगे, तुम पियक्कड़ हो। मेरे इतने मुँह होते जितने शेषनाग के हैं, तो भी सब इस जवाब से बन्द हो जाते। अभी हूँ दाना इन्सान, छिन भर में नादान, और पलक मारते ही हैवान! हैरत है! बस के बाहर हर जाम हराम है हर घूँट शैतान है!

इयागो : बस, बस; सुर्ख़ शराब अगर खूबसूरती से इस्तेमाल की जाय तो यह सुर्ख़ परी है; अब इसके ख़िलाफ़ और मत बकना। और मेरे अच्छे सह-सेनापति, यह तो तुम जानते ही हो कि मुझे तुमसे मुहब्बत है।

कैसियो : यह तुम कहोगे, तब मैं जानूँगा। लेकिन मैं और मदहोश!

इयागो : यार, तुम क्या, कोई भी बशर, हो सकता है, किसी वक्त ज़्यादा पी जाय। मैं तुमसे बताता हूँ कि तुम्हें क्या करना चाहिए। अब हमारे सेनापति की बीवी सेनापति हैं। यह मैं इस वजह से कहता हूँ कि उनकी हर अदा, उनका हर अन्दाज़ सेनापति की आँखों में बस गया है, दिमाग़ पर छा गया है, दिल में समा गया है; और वे उन पर लट्टू हैं, फ़िदा हैं, निछावर हैं। तुम उनके सामने जाकर बेहिचक अपना क़ुसूर क़ुबूल कर लो। उनसे इस्तदुआ करो, वे ज़रूर मदद करेंगी कि तुम्हें अपना दर्जा फिर से मिल जाय। वे इतनी फ़ैयाज़ हैं, इतनी मेहरबान हैं, इतनी सलीक़ेदार हैं, इतनी खुश-मिज़ाज हैं कि उनसे जो माँगा जाय, अगर वे उससे ज़्यादा न दे सकें तो समझती हैं कि उनकी अच्छाई में कोई कमी आ गई। तुम्हारे और उनके

ख़ाविन्द के बीच जो यह प्रेम की डोर टूट गई है, तुम उनसे कहो कि वे इसे फिर से जोड़ दें; और तुम मेरे साथ जो चाहो वह शर्त लगा लो कि यह जुड़ी हुई गाँठ पहले से भी ज़्यादा मजबूत होगी :

कैसियो : तुम ठीक सलाह देते हो।

इयागो : मुझे अपनी मुहब्बत की सच्चाई और दयानतदारी पर ग़रूर है।

कैसियो : मैं इस पर खुले दिमाग़ से सोचूँगा और सुबह तड़के ही गुणवन्ती डेसडिमोना के पास जाकर प्रार्थना करूँगा कि वे मेरी सहायता करें। यदि मेरा भाग्य मुझे यहीं रोक देता है तो भविष्य से मुझे कोई आशा नहीं है।

इयागो : तुम ठीक कहते हो। नमस्कार, सह-सेनापति; मुझे पहरे पर जाना है।

कैसियो : नमस्कार, सच्चे इयागो।

[**कैसियो बाहर जाता है**

इयागो : कौन कहेगा अब मैं शैतानी करता हूँ?
जबकि खुले दिल से, सच्चाई से मैं ऐसी
राय दे रहा हूँ जो बिल्कुल वाजिब लगती,
औ' हब्शी को खुश करने के लिए वाक़ई
एक राह है। कोई सच्ची अर्ज़ सुनाकर
नर्म डेसडिमोना के दिल को पिघला लेना
कोई मुश्किल काम नहीं है। वह क़ुदरत की
तरह लदी है वरदानों से। और मियाँ से
कुछ भी मनवा लेना उसके लिए सहल है।
उसके प्रेम-पाश में वह ऐसा जकड़ा है,
उसके कहने से वह अपना धर्म छोड़ दे,
पाप मुक्त करनेवाली मूर्तियाँ फोड़ दे,
पूजा के सामान तोड़ दे। उसकी मर्ज़ी
एक देवता है वह जिसके आगे निर्बल
बना हुआ है। अगर कैसियो को मैं उसकी
अच्छाई की राह दिखाता, तो इसमें
शैतानी क्या है? धन्य नरक के देव-देवियो!
जब शैतानी पलटन गन्दे पाप कराती,
तब उनके ऊपर चन्दन की छाप लगाती,
और वही मैं भी करता हूँ। जब यह सीधा-
सादा बुद्धू डेसडिमोना से अपना खोया
पद वापस पाने की प्रार्थना करेगा,
औ' वह सेनापति से उसके लिए कहेगी,
और ज़ोर उस पर डालेगी, तब मैं उसके
कानों में यह ज़हर उँडेलूँगा, वह ऐसा
क्यों करती है। करती है इसलिए कि उसको

वापस लाकर अपने तन की भूख मिटाए।
फिर वह उसका भला कराने का जितना ही
जतन करेगी, उतनी ही वह सेनापति की
नज़रों में गिरती जाएगी। और इस तरह
मैं उसकी ख़ूबियाँ ख़ाक में मिला सकूँगा।
औ' उसकी अच्छाई से ही ऐसा उम्दा
जाल बुनूँगा, उसमें सारे फँस जाएँगे।

(राडरीगो आता है।)

कहो, राडरीगो, कैसे हो?

राडरीगो : कहूँ क्या, इस खदेड़ा-खदेड़ी में मैं भी हूँ, लेकिन उस कुत्ते की तरह नहीं जो शिकार करता है, बल्कि उस कुत्ते की तरह जो हाँके के साथ भौंकता है। मेरा सारा पैसा ख़र्च हो गया। और आज रात के दंगे में मुझे कितने ही घाव लगे हैं, और मैं समझता हूँ कि नतीजा सिर्फ़ यह होगा कि मुझे दर्द का थोड़ा-सा तजुरबा और हो जायगा। और आख़िर में मुझे अपना पैसा लुटा, थोड़ी-सी अक़्ल कमा, वेनिस को लौट जाना पड़ेगा। जान बची लाखों पाए, घर के बुद्धू घर को आए।

इयागो : जिनमें सब्र नहीं है वे कितने ओछे हैं।
घाव सब तरह का धीरे-धीरे भरता है।
अक़्ल हमारी है, जादू की छड़ी नहीं है,
और अक़्ल चलती है उसको वक़्त मिले तब।
चाल ठीक ही बैठ रही है। तुम्हें कैसियो
ने मारा है, और तुम्हें जो चोट लगी है।
उसने उससे उसका दर्जा छीन लिया है।
सूरज की किरणों में कोई भले चमक ले,
जो पहले फूलेगा, पहले वही फलेगा।
ज़रा सब्र भर करो, सवेरा दूर नहीं है,
काम-ख़ुशी में वक्त इस तरह कट जाता है।

(चुटकी बजाता है।)

अपने डेरे पर जाकर आराम करो अब,
जाओ जल्दी, और बाद को बतलाऊँगा।
नहीं, चले जाओ।

[राडरीगो बाहर जाता है

बस दो बातें करनी हैं :

मेरी पत्नी माइकेल कैसियो के लिए
सेनापति की सेनापति से करे सिफ़ारिश;
उसे लगाता हूँ मैं इस पर।
औ' हब्शी को मैं ले जाऊँ अलग कहीं पर
और अचानक ले आऊँ तब जबकि कैसियो
उसकी पत्नी के आगे घुटने टेके हो।

चाल न चूके तो मंज़िल पर गाड़ूँ झण्डा,
लगे न देरी और मामला पड़े न ठण्डा।

[**बाहर जाता है**

तीसरा अंक

पहला दृश्य

साइप्रस : गढ़ के सामने

(कैसियो और कुछ संगीतज्ञ आते हैं।)

कैसियो : उस्ताद, अब कुछ हो जाय, पूरा मेहनताना मिलेगा, कोई छोटी-सी चीज़ रहे, सबेरे की, जिससे सेनापति जाग जायँ।

[**संगीत आरम्भ होता है।**

(विदूषक आता है।)

विदूषक : कहो उस्ताँद, यें बाँजें तुम्हारे नेंपिल्स रहकें लौंटें हैं क्याँ, जों ऐंसा नकियाँतें हैं ?

(नाक से बाजों की आवाज़ की नक़ल करता है।)

पहला संगीतज्ञ : कैसे, मियाँ कैसे ?
विदूषक : गुस्ताख़ी माफ़ हो तो जानना चाहूँगा कि क्या ये पवन-बाजे हैं ?
पहला संगीतज्ञ : पवन-बाजे तो हैं ही, मियाँ ?
विदूषक : क्या कहा, पवन-बाजे ? —जिन्हें जानवर अपनी दुम से ढकते हैं और···
पहला संगीतज्ञ : मियाँ, यह दुम से ढकने की क्या बात कही ?
विदूषक : क़समियाँ जनाब, मैं जिस पवन-बाजे को जानता हूँ, उसे तो ढका ही जाता है। लेकिन, छोड़ो भी उस्ताद, यह रही तुम्हारी बख़्शीश, और सेनापति तुम्हारे बाजों को इतना चाहते हैं कि वे चाहते हैं कि वे अब और तकलीफ़ न करें।
पहला संगीतज्ञ : तो, जनाब का मतलब है कि हम लोग गाना-बजाना बन्द कर दें ?
विदूषक : अगर तुम्हारा संगीत कवियों का नीरव, मौन, मूक संगीत हो तो फिर शुरू करो। लेकिन, सारी दुनिया जानती है कि सेनापति को संगीत-वंगीत से प्रेम नहीं है।

पहला संगीतज्ञ : मियाँ, हमारे पास ऐसे बाजे नहीं कि बजते भी रहें और बे-आवाज़ भी रहें।

विदूषक : तो अपने बाजों को पाजामों के अन्दर रक्खो, और जैसे मैं चला, वैसे तुम भी चलो, नौ-दो ग्यारह हो, दुम दबा के भागो।

[**संगीतज्ञ बाहर जाते हैं**

कैसियो : मेरे सच्चे दोस्त, मेरी सुनोगे?

विदूषक : नहीं, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, तुम्हारी बात सुन सकता हूँ।

कैसियो : भाई, बात पकड़ना तो कोई तुमसे सीखे। लो, यह इनाम—यों तो यह कुछ ख़ास नहीं। देखो, तुम्हारे सेनापति की पत्नी की सेवा में एक परिचारिका रहती है, अगर वह उठ पड़ी हो तो उससे कहना कि कैसियो नाम का एक आदमी उससे ज़रा बात करना चाहता है। कह दोगे न?

विदूषक : वह उठ तो गई है; वह आ भी पड़ी तो मैं उससे यह कहता-सा नज़र आऊँगा।

कैसियो : भूलना नहीं, बड़े भले हो।

[**विदूषक बाहर जाता है**

(इयागो आता है।)

अरे, इयागो,
खूब आ गए।

इयागो : तो क्या तुम जागते रह गए?

कैसियो : करता भी क्या, विदा हुआ जब तुमसे, लाली
छिटक चली थी। सुनो, इयागो, अभी तुम्हारी
पत्नी को मैंने अन्दर से बुलवाया है:
उससे मैं प्रार्थना करूँगा, वह गुणवन्ती
डेसडिमोना से मिलने की जुगत करा दे।

इयागो : फ़ौरन उसे भेजता हूँ मैं, औ' मैं किसी
बहाने से हब्शी को बाहर ले जाता हूँ,
इससे मतलब की बातें तुम आज़ादी से
कर पाओगे।

कैसियो : एहसानों से दबा हुआ हूँ।

[**इयागो बाहर जाता है**

ऐसा सच्चा दयावान
फ़्लोरेन्स नगर भर में न मिलेगा।

(एमीलिया आती है।)

एमीलिया : नमस्कार, सह-सेनापतिजी, मुझको दुःख है
तुमसे सेनापति नाखुश हैं, लेकिन सब कुछ
जल्द ठीक हो जाएगा। सुनकर आई हूँ:

सेनापति औ' उनकी पत्नी में इस पर ही
बातें होतीं, वे ज़ोरों के साथ तुम्हारी
तरफ़ बोलतीं : सेनापति कहते हैं—तुमने
जिसको ज़ख़्मी कर डाला उसका साइप्रस में
बड़ा नाम है, बड़ा ख़ानदानी अफ़सर है,
और अक़्ल यह कभी गवारा नहीं करेगी,
तुम्हें माफ़ कर दिया जाय, पर यह भी कहते,
वे पसन्द तुमको करते हैं और तुम्हारे
लिए किसी के उनसे कहने-सुनने की दर-
कार नहीं है। वे अपनी मर्ज़ी से मौक़ा
ठीक देखते ही फिर तुमको पिछले पद पर
बिठला देंगे।

कैसियो : फिर भी मैं प्रार्थना करूँगा,
अगर ठीक समझो या ऐसा हो सकता हो,
तो मुझको अवसर दो, बस दो बात अकेले
कहीं डेसडिमोना से कर लूँ।

एमीलिया : अन्दर आओ :
अभी तुम्हें ले चलती हूँ तुम जहाँ खुले दिल
उनसे बातें कर सकते हो।

कैसियो : बड़ी कृपा है।

[दोनों बाहर जाते हैं

दूसरा दृश्य

गढ़ का एक कमरा

(ओथेलो, इयागो और दो-एक आदमी आते हैं।)

ओथेलो : सुनो, इयागो, इन पत्रों को नाविक के
हाथों में देना, उससे कहना, राज्यसभा को
मेरी अविचल राजभक्ति का आश्वासन दे :
मैं अब थोड़ी देर क़िले पर टहल रहा हूँ;
और वहीं पर तुम आ जाना।

इयागो : अभी पहुँचता।

[बाहर जाता है

ओथेलो : चलिए, ज़रा क़िलेबन्दी की हालत देखें।

दोनों आदमी : हम पीछे-पीछे आते हैं।

[सब बाहर जाते हैं

तीसरा दृश्य

गढ़ के सामने

(डेसडिमोना आती है : पीछे-पीछे कैसियो और एमीलिया हैं।)

डेसडिमोना : भले कैसियो, मैं तुमको विश्वास दिलाती,
मुझसे जो हो सका, तुम्हारे लिए करूँगी।

एमीलिया : भली मालकिन, आप जरूर करें, मेरे पति
इनके कारण बहुत दुःखी हैं।

डेसडिमोना : वे दिल के सच्चे हैं। (कैसियो से)
तुम निश्चिन्त रहो अब
मैं देखूँगी मेरे पति के साथ तुम्हारी
जैसे पहले बनी हुई थी, फिर बन जाती।

कैसियो : देवि दयामय, माइकेल कैसियो किसी भी
हालत में हो, सदा आपका सच्चा सेवक
बना रहेगा।

डेसडिमोना : इसे जानती हूँ मैं : मेरा धन्यवाद लो।
मेरे पति से तुम्हें प्रेम है। बहुत दिनों से
तुमने उन्हें जान रक्खा है, और भरोसा
पूरा रक्खो, दूरी का बर्ताव तुम्हारे
साथ सिर्फ वे इतना रक्खेंगे जितना
शासन की नीति जरूरी कहती।

कैसियो : देवि, आपकी
बात ठीक, पर हो सकता है, शासन की यह
नीति बहुत दिन चलती जाए, बेबुनियादी
मनगढ़न्त बातों के ऊपर पलती जाए,
घटनाओं से बाहर जाकर पर फैलाए,
मेरी नामौजूदी में मेरे दर्जे पर
और किसी को लाया जाए, औ' सेनापति
मेरी सारी सेवा, मेरा प्रेम भुला दें।

डेसडिमोना : इसकी आशंका मत रक्खो, एमीलिया
साखी है—तुमको अपनी जगह दिलाने का मैं
वादा करती : इसे समझ लो, अगर किसी को
अपना मीत बना लेती हूँ, तो मैं उसका
साथ आख़िरी दम तक देती; अपने पति को
साँस नहीं लेने दूँगी मैं, उनके पीछे
पड़ जाऊँगी, उनके कान पका डालूँगी,
औ' उठते-बैठते, जागते-सोते खाते-
पीते, चाहे किसी काम में लगे हुए हों—
हिरा-फिराकर जिक्र तुम्हारा मैं लाऊँगी।
तो अब कोई फ़िक्र मत करो, क्योंकि वकील

तुम्हारा, अपने प्राण भले ही दे, पर काम
तुम्हारा पूरा किये बिना वह नहीं टलेगा।

(कुछ फ़ासले पर ओथेलो और इयागो आते हुए दिखाई देते हैं।)

एमीलिया : देवि, सेनापति आ रहे हैं।
कैसियो : देवि, मुझे अब विदा दीजिए।
डेसडिमोना : नहीं, नहीं : ठहरो, तुम्हारे सामने ही कहती हूँ।
कैसियो : देवि, न रोको : बहुत इस समय घबराया हूँ।
मैं इस क़ाबिल नहीं कि अपने लिए कुछ करूँ।
डेसडिमोना : तो फिर जैसा तुम ठीक समझो।

[कैसियो बाहर जाता है

इयागो : हेंह ! मुझे यह पसन्द नहीं।
ओथेलो : क्या कहा तुमने ?
इयागो : कुछ भी नहीं, न जाने मुँह से निकल गया क्या ?
ओथेलो : यह कैसियो नहीं था, जो मेरी पत्नी से
विदा हुआ है ?
इयागो : श्रीमन्, था कैसियो यक़ीनन,
लेकिन मैंने कभी नहीं ऐसा समझा था
कि आपको आता पाकर के गुनहगार-सा
आँख बचाकर खिसक जाएगा।
ओथेलो : निश्चय, वह था।
डेसडिमोना : कहिए श्रीमन्, अच्छे तो हैं।
एक प्रार्थी मेरे पास अभी आया था।
बड़ा दुखी है, क्योंकि आप उससे नाखुश हैं।
ओथेलो : नाम तो सुनूँ।
डेसडिमोना : नहीं जानते, अपने सह-सेनापति को ही।
अच्छे स्वामी, अगर आपके निकट मान कुछ
भी मेरा है, अगर आपके ऊपर मेरा
कुछ प्रभाव है, तो उसकी प्रार्थना मानकर
माफ़ी दे दें। उसे आपके प्रति आदर है,
बड़ा प्रेम है; उसने जो कुछ ग़लती की है
बुरी नियत से नहीं, भूल से कर बैठा है।
मैं भोले चेहरे वालों के साथ नहीं सख़्ती
कर सकती : यह मेरी प्रार्थना कि उसका
पद फिर उसको वापस दे दें।
ओथेलो : वही यहाँ था।
डेसडिमोना : बेचारा, क़िस्मत का मारा !
उसको इतना दुखी देखकर मेरा भी दिल
दुखी हो गया। प्यारे, आप बड़े अच्छे हैं,
उसका पद फिर उसको दे दें।

ओथैलो : अभी असम्भव।
प्यारी डेसडिमोना, आगे देखा जाएगा।

डेसडिमोना : लेकिन 'आगे' जल्दी आए।

ओथेलो : तुम कहती हो
तो, प्यारी, जल्दी आएगा।

डेसडिमोना : यानी आज
रात खाना खाने के पहले?

ओथेलो : आज तो नहीं।

डेसडिमोना : तो फिर कल दिन के खाने तक?

ओथेलो : मैं कल दिन को
घर पर खाना नहीं खा रहा। कप्तानों ने
मुझे क़िले में भोज दिया है।

डेसडिमोना : तो कल रात?
नहीं, तो मंगलवार सबेरे? दिन को? सन्ध्या?
बुद्ध सबेरे? ठीक वक्त मुझको बतला दें।
लेकिन 'आगे' तीन दिनों से अधिक न खिसके :
सच कहती हूँ, उसको भारी पछतावा है,
—फिर भी, जैसे हम चीज़ों को देखा करते—
उसका वह अपराध नहीं इतना भारी है
उससे, हाथ, दोस्ती का, हम दूर खींच लें।
यह ज़रूर है, युद्ध के समय, अगर बड़ों की
ग़लती पर तम्बी की जाए तो छोटे चौकस
हो जाते। मुझसे बतलाइए, ओथेलो,
कब उसका पद वापस देंगे? मैं कल्पना नहीं
कर सकती, आप कभी मुझसे कुछ माँगें
औ' मुझसे इन्कार हो सके, या कि खड़ी मैं
हिचकूँ-झिझकूँ। कभी नहीं। माइकेल कैसियो
वही व्यक्ति है, जो कि आपके साथ-साथ
आया करता था, जबकि आप मेरी मनुहारें
करने मेरे घर आते थे; कितनी बार हुआ
था ऐसा, मैं ख़िलाफ़ हो गई आपके
किन्तु कैसियो सदा आपका तरफ़दार था।
अब उसको ही वापस लाने को इतनी
मिन्नत करने की नौबत आए। सच कहती हूँ,
मैं तो उसके लिए बहुत कुछ कर सकती हूँ—

ओथेलो : कृपा करो अब : वह जब चाहे, अपना पद ले;
ऐसा क्या है जो मैं तुम्हें नहीं दे सकता?

डेसडिमोना : यह कोई वरदान नहीं है; यह तो ऐसा
ही है जैसे, कहूँ आपसे दस्तानों को
पहन लीजिए, या ताक़त की ग़िज़ा खाइए,
या सर्दी से बचकर रहिए, या कुछ ऐसा
कहूँ कि जो हो सिर्फ़ आपके भले के लिए।

जब कि आपका प्रेम परखने को मैं सचमुच
कोई वर माँगा चाहूँगी, तो वह इतना
भारी-भरकम होगा—उसको सुनकर आप
सहम जाएँगे औ' देने के वक़्त डरेंगे ।

ओथेलो : ऐसा क्या है जो मैं तुम्हें नहीं दे सकता ।
किन्तु इस समय एक प्रार्थना मेरी मानो,
ज़रा देर के लिए अकेला मुझे छोड़ दो ।

डेसडिमोना : मानूँगी क्यों नहीं ? विदा लेती हूँ, श्रीमन् ।

ओथेलो : विदा, डेसडिमोना, मैं अभी-अभी आता हूँ ।

डेसडिमोना : एमीलिया, हम चलें यहाँ से । **(ओथेलो से)**
आप करें
जैसा मन भाए । जैसे आप चलाएँगे, मैं
उसी तरह चलती जाऊँगी ।

[डेसडिमोना और एमीलिया बाहर जाती हैं

ओथेलो : **(अपने आप)** मनोमोहिनी नागिन ! तेरे दन्तों से मैं
डसा हुआ हूँ, फिर भी प्यार तुझे करता हूँ,
और तुझे जब प्यार नहीं करता हूँ—लगता
सारी दुनिया उलट गई है ।

इयागो : मेरे मालिक···

ओथेलो : तुम क्या कहना चाह रहे हो ?

इयागो : देवी डेसडिमोना से शादी के पहले
जब कि आपका प्यार चल रहा था, तब उसका
पता कैसियो को भी था क्या ?

ओथेलो : खूब पता था, पहले दिन से अन्तिम दिन तक :
किस कारण तुम पूछ रहे हो ?

इयागो : एक खयाल
उठा था, उसकी सिर्फ़ तसल्ली चाह रहा था,
पर उसके खिलाफ़ मन में कुछ बात नहीं है ।

ओथेलो : मगर ज़रूरत पड़ी तसल्ली की किस कारण ?

इयागो : मेरा ऐसा ख़्याल नहीं था : दोनों की
आपसदारी है ।

ओथेलो : है ही, अक्सर हम लोगों के सन्देसे वह
एक-दूसरे को देता था ।

इयागो : तब क्या शक है ।

ओथेलो : तब क्या शक है ! किसको ? किसमें ? क्या इसमें कुछ
अन्देशे की बात तुम्हें दिखलाई देती ?
क्या माइकेल कैसियो भला आदमी नहीं है ?

इयागो : भला आदमी, मेरे मालिक ?

ओथेलो : भला आदमी !
यानी, अच्छा ।

इयागो : मेरे मालिक, अच्छा ही है,
जहाँ तलक मालूम, मुझे है ।

ओथेलो : लेकिन उसके बारे में क्या ख्याल तुम्हारा ?

इयागो : 'ख्याल तुम्हारा ?' मेरे मालिक !

ओथेलो : (अपने आप)
'ख्याल तुम्हारा ?
मेरे मालिक !' स्वर्ग सुन रहा है, वह मेरी
बात-बात को दुहराता है, जैसे उसके
मन में कोई विभीषिका छिपकर बैठी है,
जो इतनी वीभत्स-घृणित है, अपना चेहरा
दिखलाते भी लज्जित होती। (**इयागो से**)
तेरे मन में
कुछ जरूर है : माइकेल कैसियो जिस समय
विदा हुआ मेरी पत्नी से, मैंने तुझको
कहते हुए सुना था––'मुझे पसन्द नहीं है'
क्या था, तुझे पसन्द नहीं था ? औ' मैंने जब
तुझे बताया ब्याह-पूर्व के मेरे सब
प्रेमाभिसार में तरफ़दार वह मेरा था, तब
तू बोला था—'तब क्या शक है।' औ' तूने
अपनी भौंहें इस तरह सिकोड़ीं जैसे कोई
भीषण शंका तेरे मन में बैठी-बैठी।
प्रेम अगर तुझको मुझसे है, मुझसे अपना
'ख़्याल' छिपा मत।

इयागो : मेरे मालिक, मुझे आपसे
बड़ी मुहब्बत ।

ओथेलो : उसका तो विश्वास मुझे है;
और चूँकि तू मुहब्बती है, सत्यव्रती है,
औ' अपना हर शब्द तोलकर बोला करता,
इसीलिए तेरे रुक-रुक बातें करने से
मेरे मन में और अधिक डर समा गया है ।
ऐसी बातें झूठे, धोखेबाज़ चंट की
चालबाज़ियाँ हैं मामूली। लेकिन जो
ईमानदार हैं, उनके मुँह से ऐसी बातें
दिल में चलनेवाली धारा का संकेत
किया करती हैं, जिसे दिमाग़ अगर चाहे भी,
रोक न सकता।

इयागो : माइकेल कैसियो के लिए,
क़सम उठाकर कह सकता हूँ, भला आदमी;—
जहाँ तलक मालूम मुझे है।

ओथेलो : मैं भी उसको
भला समझता ।

इयागो : इन्सानों को वाजिब है, वे

जब कि आपका प्रेम परखने को मैं सचमुच
कोई वर माँगा चाहूँगी, तो वह इतना
भारी-भरकम होगा—उसको सुनकर आप
सहम जाएँगे औ' देने के वक़्त डरेंगे ।

ओथेलो : ऐसा क्या है जो मैं तुम्हें नहीं दे सकता ।
किन्तु इस समय एक प्रार्थना मेरी मानो,
ज़रा देर के लिए अकेला मुझे छोड़ दो ।

डेसडिमोना : मानूँगी क्यों नहीं ? विदा लेती हूँ, श्रीमन् ।

ओथेलो : विदा, डेसडिमोना, मैं अभी-अभी आता हूँ ।

डेसडिमोना : एमीलिया, हम चलें यहाँ से । **(ओथेलो से)**
आप करें
जैसा मन भाए । जैसे आप चलाएँगे, मैं
उसी तरह चलती जाऊँगी ।

[डेसडिमोना और एमीलिया बाहर जाती हैं

ओथेलो : **(अपने आप)** मनोमोहिनी नागिन ! तेरे दन्तों से मैं
डसा हुआ हूँ, फिर भी प्यार तुझे करता हूँ,
और तुझे जब प्यार नहीं करता हूँ—लगता
सारी दुनिया उलट गई है ।

इयागो : मेरे मालिक···

ओथेलो : तुम क्या कहना चाह रहे हो ?

इयागो : देवी डेसडिमोना से शादी के पहले
जब कि आपका प्यार चल रहा था, तब उसका
पता कैसियो को भी था क्या ?

ओथेलो : खूब पता था, पहले दिन से अन्तिम दिन तक :
किस कारण तुम पूछ रहे हो ?

इयागो : एक खयाल
उठा था, उसकी सिर्फ तसल्ली चाह रहा था,
पर उसके खिलाफ़ मन में कुछ बात नहीं है ।

ओथेलो : मगर ज़रूरत पड़ी तसल्ली की किस कारण ?

इयागो : मेरा ऐसा ख़्याल नहीं था : दोनों की
आपसदारी है ।

ओथेलो : है ही, अक्सर हम लोगों के सन्देसे वह
एक-दूसरे को देता था ।

इयागो : तब क्या शक है ।

ओथेलो : तब क्या शक है ! किसको ? किसमें ? क्या इसमें कुछ
अन्देशे की बात तुम्हें दिखलाई देती ?
क्या माइकेल कैसियो भला आदमी नहीं है ?

इयागो : भला आदमी, मेरे मालिक ?

ओथेलो : भला आदमी !
यानी, अच्छा ।

इयागो : मेरे मालिक, अच्छा ही है,
जहाँ तलक मालूम, मुझे है।

ओथेलो : लेकिन उसके बारे में क्या ख्याल तुम्हारा ?

इयागो : 'ख़्याल तुम्हारा ?' मेरे मालिक !

ओथेलो : (अपने आप)
'ख़्याल तुम्हारा ?
मेरे मालिक !' स्वर्ग सुन रहा है, वह मेरी
बात-बात को दुहराता है, जैसे उसके
मन में कोई विभीषिका छिपकर बैठी है,
जो इतनी वीभत्स-घृणित है, अपना चेहरा
दिखलाते भी लज्जित होती। (इयागो से)
तेरे मन में
कुछ ज़रूर है : माइकेल कैसियो जिस समय
विदा हुआ मेरी पत्नी से, मैंने तुझको
कहते हुए सुना था--'मुझे पसन्द नहीं है'
क्या था, तुझे पसन्द नहीं था ? औ' मैंने जब
तुझे बताया ब्याह-पूर्व के मेरे सब
प्रेमाभिसार में तरफ़दार वह मेरा था, तब
तू बोला था—'तब क्या शक है।' औ' तूने
अपनी भौंहें इस तरह सिकोड़ीं जैसे कोई
भीषण शंका तेरे मन में बैठी-बैठी।
प्रेम अगर तुझको मुझसे है, मुझसे अपना
'ख़्याल' छिपा मत।

इयागो : मेरे मालिक, मुझे आपसे
बड़ी मुहब्बत।

ओथेलो : उसका तो विश्वास मुझे है;
और चूँकि तू मुहब्बती है, सत्यव्रती है,
औ' अपना हर शब्द तोलकर बोला करता,
इसीलिए तेरे रुक-रुक बातें करने से
मेरे मन में और अधिक डर समा गया है।
ऐसी बातें झूठे, धोखेबाज़ चंट की
चालबाज़ियाँ हैं मामूली। लेकिन जो
ईमानदार हैं, उनके मुँह से ऐसी बातें
दिल में चलनेवाली धारा का संकेत
किया करती हैं, जिसे दिमाग़ अगर चाहे भी,
रोक न सकता।

इयागो : माइकेल कैसियो के लिए,
क़सम उठाकर कह सकता हूँ, भला आदमी;—
जहाँ तलक मालूम मुझे है।

ओथेलो : मैं भी उसको
भला समझता।

इयागो : इन्सानों को वाजिब है, वे

भीतर-बाहर एक तरह हों। और न हों
भीतर से जैसे, लगें न बाहर से भी वैसे।

ओथेलो : मगर आदमी जैसे बाहर से लगते हैं,
वैसे भीतर से भी होंगे।

इयागो : ऐसा है तो
माइकेल कैसियो भला ही कहा जायगा;—
जहाँ तलक मैंने देखा है।

ओथेलो : नहीं, और ही
ध्वनि तेरी बातों से आती। जो कुछ तेरे
मन में है तू मुझसे बतला। जो कुछ भी तू
सोच रहा है, जैसा भी तेरा विचार है—
उसको किन्तु-परन्तु बिना तू साफ़-साफ़
मेरे आगे रख।

इयागो : मालिक, मुझको माफ़ करेंगे:
गो अपना हर फ़र्ज़ अदा करने को मैं हर
वक़्त आपके आगे हाज़िर, मुझको इतनी
आज़ादी तो दी ही जाए—जो गुलाम को
भी रहती है। आप चाहते हैं मैं अपना
ख़्याल आप पर ज़ाहिर कर दूँ। मान लीजिए
वे बेजा हों, या झूठे हों; ऐसा कोई
महल नहीं है जहाँ कभी, कुछ गन्दी चीज़ें
नाजायज़ आ नहीं टपकतीं। ऐसा कोई
पाक-साफ़ दिल कहाँ मिलेगा, जिसके अन्दर
कभी-कभी कुछ बुरे इरादे या अन्देशे
घुस अपनी मनहूसी बैठक नहीं जमाते,
या क़ानूनी बहस-कचहरी नहीं खोलते।

ओथेलो : अगर देखता है तू, तेरे साथी के प्रति
धोखेबाज़ी की जाती है, औ' तू उसके
कानों से यह बात छिपाता, तो तू एक
तरह से उसके साथ दग़ाबाज़ी करता है।

इयागो : एक अर्ज़ है—
हो सकता है मेरा ख़्याल-क़यास ग़लत हो;
मैं क़ुबूल करता हूँ यह मेरे मिज़ाज की
कमज़ोरी है—नुक़्स देखना,—औ' मेरी शुबहे
की आदत अक्सर ऐसी बुराइयों का
ख़्वाब देखती, जिनकी कहीं वजूद नहीं है।
इससे अच्छा है हुज़ूर की दानिशमन्दी
उसकी तरफ़ तवज्जह देकर अपने लिए
मुसीबत कोई खड़ी न कर ले, जिसकी आँखों
का फ़ितूर उससे फ़िज़ूल बकवास कराता।
अपना ख़्याल आप पर ज़ाहिर कर देने में
मुझे आपकी सलामती या सुलह न दिखती

और न अपनी, भलमंसी ईमानपरस्ती,
दानिशमन्दी।

ओथेलो : इससे तेरा मतलब क्या है ?

इयागो : सुनिए, मेरे प्यारे मालिक, मर्द-औरतों
के दिल की जो सबसे प्यारी दौलत है वह
भला नाम है। जो मेरा धन चोरी करता,
सिर्फ़ हाथ की मैल चुराता; क्या है यह, कुछ
चीज़ नहीं है; मेरा आज, और कल तेरा;
ऐसे लाखों हाथों में अदला-बदला है।
लेकिन मुझसे मेरा नाम छीननेवाला
मुझसे ऐसी नेमत ठगकर ले जाता है,
जिससे अपना रुतबा तो वह बढ़ा न पाता,
लेकिन बेशक मुझको रुस्वा कर जाता है।

ओथेलो : शपथ स्वर्ग की, मैं तेरा विचार जानूँगा।

इयागो : मैं अपना दिल अगर आपकी हथेलियों पर
धर दूँ तो भी आप नहीं मेरे ख़्यालों को
जान सकेंगे; जब तक ये मेरे छाती में,
आप उन्हें कैसे जानेंगे ?

ओथेलो : हा !

इयागो : मेरे मालिक, शुबहे में मत पड़िएगा;
इसे हरी आँखोंवाला हैवान समझिए;
जिस पर पलता उसी ग़िजा को नफ़रत करता।
वह ख़ाविन्द बड़ा खुशक़िस्मत है जो इसको
जान गया है उसकी बीवी उसके लिए बफ़ा
से ख़ाली; वह अपनी तक़दीर जानता,
और बेवफ़ा की वह भी परवाह न करता;
पर वह कैसे ग़म की भारी घड़ियाँ गिनता,
जो है उस पर फ़िदा और शक भी रखता है;
जो शुबहा करता है लेकिन बहुत प्यार भी !

ओथेलो : हाय, अभागे !

इयागो : जो ग़रीब है, और जानता है ग़रीब है,
वह अमीर है; वह अच्छा-ख़ासा अमीर है;
लेकिन बेशुमार धन-दौलत रखकर के भी
जिसको यह डर लगा हुआ है उसकी दौलत
छिन जाएगी, वह ग़रीब है—चमन खिज़ाँ के
इन्तजार में। ओ बहिश्त, इन्सानों का दिल
शुबहे के शैतान से बचा !

ओथेलो : क्यों, क्यों उससे
बचने की आवश्यकता है ? क्या तू ऐसा
समझ रहा है शुबहे को मैं अपनी छाती
के अन्दर पालता रहूँगा, बढ़ने दूँगा,
चाँद की तरह रोज़-रोज़ के सन्देहों से ?

कभी नहीं, जो एक बार शक बैठ गया तो
एक बार संकल्प कर लिया । मुझे समझ तू
मुई खाल की बनी धौंकनी जो मैं शंका-
सन्देहों से फैलूँ-फूलूँ और प्रणय के
उच्छ्वासों में निकलूँ-पिचकूँ, जिसकी तूने
अभी-अभी आशंका की है । इन बातों से
मेरे मन में शंका नहीं खड़ी होती है—
मेरी पत्नी सुन्दर और सुरुचि वाली है,
लोगों से मिलती-जुलती है, खुलकर बातें
करती, गाती और बजाती, और नाचती'—
सतवन्ती में इनसे चार चाँद लगते हैं :
और न अपने ही अवगुण के कारण मुझको
किंचित भय है, या संशय है मुझसे उसके
खिंच जाने का । आँख खोलकर उसने मुझको
वरण किया था । नहीं, इयागो, मैं पहले
देखूँगा तब सन्देह करूँगा, जब सन्देह
करूँगा सब सबूत चाहूँगा : औ' सबूत मिल
जाने पर बस दो में एक बात होनी है—
दूर करूँगा सन्देहों को या कि प्रणय को ।

इयागो : इसको सुनकर मुझे खुशी है । वजूहात अब
पेश हुए हैं जिनसे खुले हुए दिल से मैं
अपना फ़र्ज़ आपके आगे बजा सकूँगा,
और आपके लिए मुहब्बत दिखा सकूँगा ।
जबकि आपने कहने को मजबूर किया है
तब फिर सुनिए । मैं सबूत की बात नहीं इस
वक़्त कह रहा । नज़र ज़रा बीवी पर रक्खें;
देखें अच्छी तरह कैसियो की सोहबत में;
आँखें ऐसी रहें न उनसे शुबहा ही
ज़ाहिर हो और न बेख़बरी ही । मैं यह कभी
नहीं चाहूँगा कि आपकी आज़ाद और
फ़ैयाज़ तबीयत का कोई फ़ायदा उठाए
क्योंकि शराफ़तमन्द आप हैं, ध्यान रहे यह :
खूब जानता हूँ मैं अपने मुल्क की फ़िज़ा,
वेनिस की हूरें अपनी जो चुहलबाज़ियाँ
अपने खाविन्दों को दिखलाने से डरतीं,
आसमान की नाक तले खुलकर करती हैं ।
उनका यह एखलाक नहीं है—पाप न करना,
बल्कि पाप करके उसको पोशीदा रखना ।

ओथेलो : क्या तू ऐसी बातें कहता ?

इयागो : शादी करके उसने दिया पिता को धोखा;
और आपको देख काँपती-डरती-सी जब
वह लगती थी, तब भीतर से प्यार आपको

वह करती थी।

ओथेलो : और ठीक ऐसा करती थी।

इयागो : तो फिर इसको समझ लीजिए, जो अपनी कम-
उमरी में भी ऐसा दिखलावा करती थी,
अपने वालिद की आँखें भी कील सकी थी,
जैसे कोई साँप कील दे—वह यह समझा
कि आपने ही जादू-टोना किया।—मगर मैं
गुनहगार हूँ—अगर आपसे प्यार न होता,
मैं चुप रहता : बड़े अदब से माफ़ी का मैं
ख़्वास्तगार हूँ।

ओथेलो : ऐसा मत कह, सदा के लिए
मैं तेरा आभार मानता।

इयागो : देख रहा हूँ
कि आपके दिल को इससे धक्का पहुँचा है :

ओथेलो : तनिक भी नहीं।

इयागो : मुझे, क़सम से, ऐसा लगता।
आप इसे मानें, जो मैंने बात कही है,
सिर्फ़ मुहब्बत में कह दी है, मगर यक़ीनन,
मुझको लगता इससे आप भड़क उट्ठे हैं :
लेकिन मेरी अर्ज़ सुनें, मेरी बातों को
खींच-तानकर किसी तरह के फ़ोश नतीजे
पर मत पहुँचें, उसको शुबहे की हद के ही
अन्दर रक्खें।

ओथेलो : मैं रक्खूँगा।

मेरे मालिक,

इयागो : अगर नहीं रक्खेंगे तो मेरी बातों से
ऐसा बुरा असर पहुँचेगा जैसा मैंने
कभी न सोचा। लायक़ दोस्त कैसियो मेरा—
मुझको लगता आप ज़रूर भड़क उट्ठे हैं।

ओथेलो : इतना नहीं कि जितना तूने समझ लिया है।
इसके सिवा और कुछ सोच नहीं सकता मैं
कि डेसडिमोना सतवन्ती है।

इयागो : ज़िन्दाबाद उसे
यों रहना! ज़िन्दाबाद आपको उसको
यों सतवन्ती समझे रहना!

ओथेलो : लेकिन फिर भी
मानव अपनी प्रकृति भूलकर कैसी-कैसी—

इयागो : ठीक यही तो ग़ौरतलब है—माफ़ करेंगे,
साफ़ कहूँ तो—उसके अपने देश, भेस,
दर्जेवालों के रिश्ते आए, एक नहीं, सौ—
और क़ुदरतन उनकी ओर उसे झुकना था—
सब चीज़ों में ऐसा होता, सभी जानते—

लेकिन आँख उठाकर उसने उन्हें न देखा।
तुफ़ ! ऐसी के दिल के अन्दर बड़ी गन्दगी
भरी हुई है; ख़्यालों के अन्दर बेढंगी
बेतरतीबी, औ' मिज़ाज में नक़्क़ाली है।
लेकिन मुझको ग़लत न समझें। आम तौर से
जो देखा जाता उसको मैंने कह डाला;
कोई ख़ास इशारा उसकी तरफ़ नहीं है;
गो उसके दिमाग़ का मुझको नहीं भरोसा।
बेहतरीन फ़ैसले की तरफ़ पलट कहीं वह
वेनिस के गोरे-चिट्टे, रंगीन जवानों
के मुक़ाबले में न आपको रखती हो औ'
किए हुए पर पछताती हो।

ओथेलो : मुझे विदा दे :
और देख, तो आकर मुझसे और बता तू;
अपनी पत्नी को भी इस पर लगा कि ताड़े;
अभी चला जा।

इयागो : मेरे मालिक, मैं जाता हूँ।

[**इयागो चला जाता है**

ओथेलो : **(अपने आप)**
मैंने उससे ब्याह किया क्यों ? यह सच्चा
आदमी मुझे बतलाता जितना, उससे ज़्यादा
लगता है इसने देखा है औ' जाना है।

(इयागो लौटकर आता है।)

इयागो : मेरे मालिक, एक गुज़ारिश करने को मैं
फिर आया हूँ। इस मामले पर ज़्यादा और
हुज़ूर न सोचें : इसे वक्त के ऊपर छोड़ें।
गो यह वाजिब है कि कैसियो अपने दर्जे
पर बहाल कर दिया जाय—इसमें क्या शक है,
वह ख़ूबी के साथ अपना काम करता है—
फिर भी आप अगर चाहें तो उसको अभी
अलग रहने दें, क्योंकि इस तरह उसको, उसके
तौर-तरीक़े आप बख़ूबी देख सकेंगे।
ज़रा इसे देखें कि आपकी बीवी उसको
अपनी जगह दिलाने की क्या ज़िद करती है,
क्या ज़ोरों के साथ सिफ़ारिश उसकी करती;
इससे बातें बहुत खुलेंगी ! और बीच में
ऐसा समझा जाय कि मैं अपने शुबहों का
बैठा ताना-बाना बुनता, क्योंकि यही मेरे
दिमाग़ की बीमारी है—नुक्स देखना—
पर हुज़ूर से एक ज़रूर गुज़ारिश मेरी

बेक़सूर बीवी को समझें।

ओथेलो : मुझको अपने पर संयम है।

इयागो : मुझे इजाज़त दें हुज़ूर, अब।

[**इयागो चला जाता है।**

ओथेलो : यह आदमी बड़ा सच्चा है, औ' अपने
अनुभव के बल पर, मानव-जीवन का हर पहलू
इसने जाना है, समझा है। यदि यह साबित
हो जाता, वह हरजाई है, तो मेरी छाती
फट जाए, पर मैं उसको अपने दिल से
दूर करूँगा,—जिधर ज़माने का झोंका ले
जाए, जाए; क़िस्मत जैसा रक्खे, रहकर
माँगे, खाए। सम्भव है कुछ इन वजहों से—
मैं काला हूँ; सम्भाषण की कोमल-कान्त
पदावलियों से भिज्ञ नहीं हूँ, जैसे वेनिस,
के जवान हैं, या मैं यौवन के बसन्त से
गिर पतझड़ में पहुँच गया हूँ—गो थोड़ा ही—
वह मेरे क़ाबू से बाहर चली गई है।
उसने मुझसे घात किया है, औ' मुझको अब
चैन इसी से मिल सकता है, मैं भी उसको
घृणा करूँ! अभिशाप ब्याह कितना भारी है!
इन सुकुमारी प्रतिमाओं को तो हम अपना
कह सकते हैं, लेकिन इनकी प्यास को नहीं।
कीचड़ का कीड़ा बनकर दुर्गन्ध-सड़न पर
जीना मुझे गवारा है, पर नहीं सहन है,
जिसे प्यार मैं करूँ, दूसरे चोरी-चोरी
आकर उसके अंगों का रस लें, सुख भोगें।
फिर भी यह सन्ताप बड़े लोगों के दिल का;
इससे छोटे लोग बड़ों से अधिक मुक्त हैं,
मृत्यु की तरह यह दुर्भाग्य न टाले टलता।
जन्म ग्रहण करते हैं जब हम, उसी समय से
यह दुर्भाग्य हमारे माथे पर लिख जाता।
लो, वह इधर चली आती है:

(डेसडिमोना और एमीलिया फिर आती हैं)

अगर नहीं है
यह सतवन्ती, तो विधना ने अपने ऊपर
व्यंग्य किया है। मैं यह कभी नहीं मानूँगा।

सडिमोना : कहो ओथेलो, मेरे प्यारे, तुम कैसे हो?
खाना है तैयार, द्वीप के आमन्त्रित
मेहमान तुम्हारी राह देखते।

ओथेलो : मेरी ग़लती।
डेसडिमोना : तुम धीमे क्यों बोल रहे हो ! जी ख़राब है !
ओथेलो : मेरे माथे में पीड़ा है;—यहाँ, यहाँ पर।
डेसडिमोना : इसका कारण रात-जागरण, चली जायगी।
सिर कसकर बाँधे देती हूँ; घण्टे भर के
अन्दर पीड़ा नहीं रहेगी।
ओथेलो : यह रूमाल
बहुत छोटा है।

(डेसडिमोना के हाथ से छूटकर रूमाल जमीन पर गिर पड़ता है।)

इसको छोड़ो, आओ अन्दर चलकर बैठें।
डेसडिमोना : मुझे बड़ा अफ़सोस, तुम्हारा जी ख़राब है।

[ओथेलो और डेसडिमोना चले जाते हैं

एमीलिया : **(अपने आप)**
मैं खुश हूँ जो मुझको यह रूमाल मिल गया।
इसे मूर ने उनको पहले-पहल दिया था।
मेरे ज़िद्दी पति ने मुझसे कम-से-कम सौ
बार कहा है, इसे चुरा लूँ, लेकिन मलकिन
को यह प्रेम-निशानी इतनी प्यारी लगती,
वे अपने से इसको दूर नहीं करती हैं,
और अकेले में चुम्मी ले-लेकर इससे
बातें करतीं। उन्हें मूर ने क़सम दिलाई
थी वे इसको अपने साथ हमेशा रक्खें।
इसकी नक़ल करा लूँगी मैं और इयागो
को दे दूँगी। इससे उनको जो करना है
स्वर्ग जानता और नहीं मैं;
मैं तो उनकी एक सनक भर पूरी करती।

(इयागो आता है।)

इयागो : कहो, अकेले यहाँ खड़ी तुम क्या करती हो ?
एमीलिया : झिड़की मत दो, एक चीज़ मैं तुमको दूँगी :
इयागो : मुझको दोगी ? होगी कोई मामूली-सी—
एमीलिया : ही !
इयागो : क्या जाहिल बीवी पल्ले पड़ी हुई है।
एमीलिया : बस इतना ही कहने को है ? अच्छा बोलो,
क्या दोगे जो मैं तुमको रूमाल वही दूँ ?
इयागो : कौन वही रूमाल ?
एमीलिया : कौन रूमाल ! वही जो
मालिक ने मलकिन को पहले-पहल दिया था।
जिसे चुरा लाने की तुमने मुझसे अकसर
मिन्नत की है।

इयागो : तुमने उसको चुरा लिया क्या ?
एमीलिया : नहीं, क़सम से; भूले से उनके हाथों से
छूट पड़ा था : मौके से मैं वहाँ खड़ी थी,
उठा लिया बस। देखो, यह है।
इयागो : रण्डो, तुमने
शाबासी का काम किया है, यह मुझको दो।
एमीलिया : तुमको इससे क्या करना है, जो तुम इतने
उतावले थे, किसी तरह मैं इसे चुरा लूँ ?

(इयागो रूमाल छीन लेता है।)

इयागो : क्यों, तुमको इससे क्या मतलब ?
एमीलिया : इसमें कोई काम जरूरी अगर न हो तो
वापस कर दो। इसको खोया हुआ समझकर
बेचारी मलकिन तो पागल हो जाएँगी।
इयागो : तुमसे पूछें तो बस कहना, 'मैं क्या जानूँ ?'
बड़ा ज़रूरी काम मुझे इससे करना है।
तुम अब जाओ।

[एमीलिया चली जाती है

अब मैं यह रूमाल कैसियो के कमरे में
खिड़की से, चुप से डालूँगा, पाएगा ही।
जिनके दिल में शुबहा बैठा, वे मामूली
से मामूली चीज़ों में भी ऐसा साफ़
सबूत देखते, उनको ऐसा ठीक मानते
जैसे कि वे किताब-पाक की आयत ही हों।
इससे कुछ गुल खिल सकता है। हब्शी के
ऊपर अब मेरा ज़हर असर कुछ-कुछ दिखलाता।
खतरेवाले शुबहे ऐसे छिपे ज़हर हैं,
जो पहले तो बदजायका नहीं लगते हैं,
मगर खून पर जहाँ ज़रा-सा असर हुआ, वे
गन्धक की खानों की तरह भभक उठते हैं।
ठीक कहा था मैंने, देखो परेशान-सा
कैसा वह इस तरफ़ आ रहा।

(ओथेलो आता हुआ दिखाई देता है।)

जैसी मीठी
नींद रात कल तू सोया था, वैसी तुझको
अब फिर कभी नसीब न होगी, चाहे खाए
तू अफ़ीम की गोली, खाए भाँग-धतूरा,
चाहे पी ले दुनिया भर की दवा नींद की !
ओथेलो : हाय ! हाय ! विश्वासघातिनी।
इयागो : सेनापति जी,
कहिए, कैसे हाल-चाल हैं ? इसे भुला दें।

ओथेलो : हट जा ! दूर चला जा ! तूने मेरा सत्या-
नाश कर दिया । शपथपूर्वक मैं कहता हूँ,
आधी बात जानने से यह अच्छा होता,
वह मुझसे विश्वासघात करती जाती औ'
मैं न जानता ।

इयागो : ऐसा कैसे होता, मालिक !

ओथेलो : चोरी-चोरी किए गए उसके अभिसारों
की घड़ियों का मुझको कोई ज्ञान नहीं था ।
उन्हें न देखा मैंने और न उन पर सोचा ।
उनके कारण मुझको कोई चोट न पहुँची ।
मैं उस रात मज़े से सोया, औ' आमोद-
प्रमोद किए भी उससे खुलकर; मुझे कैसियो
के चुम्बन के कोई चिह्न नहीं दीखे उसके
अधरों पर । अगर किसी की ऐसी चीज़ चुरा
ली जाए, जो न कमी का भान कराए,
तो अच्छा है चोरी से अनजान रहे वह;
किसी तरह से उसकी चोरी नहीं हुई है ।

इयागो : यह सुनकर अफ़सोस मुझे है ।

ओथेलो : भले फ़ौज के सभी सिपाही, सब खेमे-
बरदार, ख़लासी, उसके यौवन का रस लेते,
मैं सुख से रहता यदि मुझको ज्ञात न होता ।
ओ, लेकिन अब मेरे मन की शान्ति सदा के
लिए विदा हो ! ओ, चित के सन्तोष, विदा हो !
कलँगीधर सैनिक दल, घन संग्राम, विदा हो,
जहाँ महत्त्वाकांक्षा सद्‌गुण बन जाती है !
विदा ! विदा, हिनहिना अयाल हिलाते घोड़े !
विदा, नफ़ीरी-नरसिंघों की तीखी ध्वनियाँ,
जो कानों के परदे फाड़ दिया करती थीं !
विदा, ढोल पर चोट बाँह फड़कानेवाली !
विदा, गगन में उड़ते झण्डे ! विदा, विदा सब
आन-बान, अभिमान, शान-सामान युद्ध के,
जो वीरों का विरुद बढ़ाते ! मौत उगलने-
वाली तोपों, जिनकी क्रुद्ध गरज को सुनकर
इन्द्र-वज्र का घोर घोष भी शरमाता था,
विदा ! ओथेलो किसी काम का नहीं रह गया !

इयागो : मालिक, क्या ऐसा मुमकिन है ?

ओथेलो : दुष्ट, तुझे यह साबित करना होगा, मेरी
प्रिया पुंश्चली, छली; सिद्ध यह करना होगा !
आँखों देखा कुछ सबूत मेरे आगे रख,
नहीं, शपथ प्राणों की लेकर मैं कहता हूँ,
मेरा गुस्सा भड़का औ' तुझ पर उतरा तो
कुत्ते से भी बदतर तुझको मौत मिलेगी !

इयागो : क्या यह हालत आ पहुँची है ?

ओथेलो : यह मुझको आँखों से दिखला; या मुझको
कोई ऐसा पक्का सबूत दे जिसमें 'किन्तु',
'परन्तु' न ऐसी झरन छोड़ दे जिनसे शुबहा
राह बना ले; वर्ना, मेरा जीना, जलना !

इयागो : मेरे अच्छे मालिक, सुनिए—

ओथेलो : यदि तू उसको लांछित करके मुझे सताता,
तो अब से तू ईश्वर की प्रार्थना छोड़ दे,
अपने पापों पर तू पश्चात्ताप त्याग दे,
अत्याचारों पर तू अत्याचार किए जा,
कर तू ऐसे कर्म स्वर्ग के आँसू टपकें,
आँख फाड़कर अचरज से सब धरती देखे;
कारण, यह सन्देह जगाने से बढ़कर तू
कोई पाप नहीं कर सकता ।

इयागो : रहम खुदा का
मुझे बचाए ! यह है इन्सानियत आपकी ?
यही आपकी रूहानियत, समझदारी है ?
खुदा आपकी करे हिफ़ाज़त; और बाज़ आया
मैं इस ताबेदारी से । (अपने से) ओ तू, नामाक़ूल
इयागो, क्या अपनी ईमानपरस्ती
के ऊपर तू दाग़ लगाने को ज़िन्दा है !
दुनिया भी क्या खूब अजीब-ग़रीब जगह है !
खूब समझ ले, खूब समझ ले, इस दुनिया में
सीधा-सच्चा बनना ख़तरे में पड़ना है ।
बड़ा शुक्र है, मुझे आपसे सबक़ मिल गया;
किसी दोस्त से नहीं मुहब्बत अब रखनी है,
क्योंकि मुहब्बत से मुसीबतें पैदा होतीं ।

[**जाने को होता है**

ओथेलो : नहीं, ठहर जा, तू मुझको सच्चा लगता है ।

इयागो : मुझे साथ ही होशियार भी बनना होगा ।
क्योंकि सिर्फ़ सच्चा रहना बुद्धू बनना है;
जिसकी ख़ातिर खपो उसी की ठोकर खाओ ।

ओथेलो : मेरे मन की दुनिया ही हो गई निराली :
कभी सोचता मेरी पत्नी पतिव्रता है,
कभी सोचता हूँ कि नहीं है; कभी सोचता
तू सच्चा है, कभी सोचता कि तू नहीं है ।
किसी तरह का मुझको सिर्फ़ सबूत चाहिए ।
निष्कलंक चन्दा-सा जिसका नाम धवल था
अब वह धब्बेदार हो गया; अब उसके
ऊपर मेरे चेहरे की-सी कालिमा छा गई ।
अगर नहीं वह पतिव्रता तो फाँसी देकर,

छुरा भोंककर, ज़हर पिलाकर, जला आग में,
डुबा नहर में, एक न एक तरह मैं उसका
काम तमाम करूँगा। मुझको इसका निश्चय
भर हो जाए।

इयागो : मुझे आप पर खून सवार हुआ लगता है।
मुझको पछतावा है मैंने ध्यान आपका
इधर दिलाया। औ' अब आप सबूत चाहते !

ओथेलो : सिर्फ चाहता नहीं, उसे लेकर मानूँगा।

इयागो : औ' सबूत मिल भी सकता है; लेकिन कैसे ?
कहें किस तरह मालिक की दिलजमई होगी ?
आँख फाड़, मुँह खोल देखना क्या चाहेंगे
उसके ऊपर कौन···

ओथेलो : तुझे दे मौत नरक ! उफ़ !

इयागो : उनको ऐसी हालत में दिखला सकना तो
मेरे लिए बड़ा मुश्किल है। उनकी आँखें
छोड़, दूसरे इन्सानों की आँखें उनको
अगर इस तरह देख सकें तो उन्हें थुड़ी है !
तब क्या हो ? कैसे हो ?—मैं किस तरह बताऊँ ?
दिलजमई फिर कैसे होगी ? वे शहवत में
बकरों-से बेचैन, बन्दरों-से गरमाए,
कुत्तों-से बेसब्र, नशे में ग़र्क जाहिलों,
नादानों-से बदहवास होते तो भी यह
नामुमकिन था आप उन्हें उस तरह देख लें।
लेकिन फिर भी मैं कहता हूँ, कुछ ऐसे
हालात सामने जो शुबहे को पक्का करते;
जो सच्चाई का सीधा सुराग़ देते हैं।
अगर आपकी इनसे दिलजमई होती है,
तो सबूत की कमी नहीं है।

ओथेलो : मुझको जीता
और जागता दे सबूत—वह फँसी और से।

इयागो : नापसन्द यह बात मुझे है।
मगर मामला चूँकि यहाँ तक ले आया हूँ—
अपनी सच्चाई से और मुहब्बत से ही
ऐसी ग़लती करने को मजबूर हुआ हूँ—
तो आगे भी ले जाऊँगा। अभी हाल में
एक रात मैं और कैसियो हमबिस्तर थे।
मेरे एक दाँत में इतना बुरा दर्द था,
सो न सका मैं !
कुछ दिमाग़ के ऐसे कच्चे-ढीले होते,
सोते में बर्राते, अपना राज़ खोलते;
और कैसियो ऐसों में है।
सोते में वह बोला—'प्यारी डेसडिमोना,

हार न मानें हम-तुम, अपना प्यार छिपाएँ।'
औ' फिर उसने मेरा हाथ दबाया, ऐंठा;
औ' चिल्लाया, 'ओ मेरी प्यारी सुकुमारी!'
औ' फिर मुझको लगा चूमने ज़ोर-ज़ोर से,
जैसे मेरे होठों को ही चबा जायगा।
फिर उसने जाँघों से मेरी जाँघ दबा ली;
आहें खींचीं, मुझको चूमा और कहा, 'जल
जाए क़िस्मत जिसने तुझको दिया मूर को!'

ओथेलो : राक्षस! राक्षस!

इयागो : यह तो उसका महज़ ख़्वाब था।

ओथेलो : लेकिन उसका, जो अनुभव कर लिया गया था।
यह सपना हो पर सन्देहों को बल देता।

इयागो : जो सबूत कमज़ोर अभी दिखलाई देते
उनको यह मज़बूत करेगा।

ओथेलो : उसके तन के
टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।

इयागो : नहीं, ठहरिए;
ज़रा अक़्ल से काम लीजिए। अभी आपने
उसे नहीं कुछ करते देखा; हो सकता है
वह सच्ची हो। ज़रा मुझे यह तो बतलाएँ,
कभी आपको अपनी बीवी के हाथों में
क्या ऐसा रूमाल नज़र आया है जिस पर
झरबेरी की शक्ल कढ़ी हो?

ओथेलो मैंने ही यह
उसे दिया था; मेरी पहली भेंट यही थी।

इयागो : मुझको यह मालूम नहीं है, लेकिन कुछ-कुछ
ऐसा था रूमाल कि जिससे आज कैसियो
अपना चेहरा पोंछ रहा था। मुझे, हो न हो,
यह रूमाल आपकी बीवी का ही लगता।

ओथेलो : अगर वही है—

इयागो : अगर वही है, या कि दूसरा, पर उसका, तो
और सबूतों को उससे ताक़त मिलती है,
जो ख़िलाफ़ उसके जाते हैं।

ओथेलो : काश! कैसियो लाख बार जीकर मर सकता,
जिससे पाजी लाख मृत्यु का दण्ड भोगता।
एक मृत्यु से मेरा बदला नहीं चुकेगा;
मेरा क्रोध नहीं उतरेगा। देख रहा हूँ,
यह सब सच है। देख इयागो, अब मैं अपना
प्यार-वार सब आसमान में उड़ा रहा हूँ।
लुप्त हो गया!
गहरे कन्दर से बदले की काली छाया,
शीश उठा अब!

प्यार, शीश के मुकुट, हृदय के सिंहासन को
इस पिशाचिनी घृणा के लिए तू उतार दे,
ख़ाली कर दे। घृणा, ज़हर भर दे, मेरी छाती
के अन्दर; तुझे सर्प के दन्त मिले हैं !

इयागो : सब्र कीजिए।

ओथेलो : ख़ून ! ख़ून मुझ पर सवार है !

इयागो : सुनिए, रुकिए, शायद ख़याल आपका बदले।

ओथेलो : नहीं, इयागो, अब यह कभी नहीं बदलेगा।
पर्वत से जो नदी फूटती, अपनी शीतल
विकल धार से, अविरल गति से
आगे ही आगे बढ़ती है, कभी नहीं पीछे
हटती है,—जब तक सिन्धु नहीं अपने में
लय कर लेता। उसी तरह मेरे निश्चय की
रक्त-पिपासा अपने सैलाबी प्रकोप की
अन्ध चाल से बढ़ी चलेगी,—कभी नहीं वह
क्षुद्र प्रेम की ओर मुड़ेगी,—जब तक बदले
का विशाल, गम्भीर समुन्दर उसे नहीं अपने
अन्दर लय कर लेता है। अब मैं ऊपर
छाए अविचल नभमण्डल की शपथ उठाकर,
जैसे कोई दृढ़-पवित्र व्रत धारण करता,
इस बदले के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो रहा।

(घुटनों के बल बैठकर सिर झुकाता है।)
(इयागो भी उसी तरह बैठकर सिर झुकाता है।)

इयागो : अभी न उठिए। ओ सिर पर के कभी न बुझने
वाले तारो ! तुम साखी हो; आसमान ओ !
जो कि हमारे चारों ओर घिरा रहता है,
तू गवाह रह; आज इयागो अपने बाज़ू,
और दिमाग़ोदिल की ताक़त वक़्फ़ ओथेलो
की ख़िदमत में कर देता है, जिसको धोखा
दिया गया है ! इन्हें हुक्म देना है, गर मैं
बजा न लाऊँ, मेरे तन में रूह नहीं है—
चाहे जितना बुरा काम हो, बड़ा काम हो।

(दोनों उठते हैं।)

ओथेलो : केवल छूँछे धन्यवाद से कैसे तेरा
प्रेम सराहूँ ? तुझे बहुत कुछ देना मुझको,
जल्दी तुझको इसका साफ़ सबूत मिलेगा।
तीन दिनों के अन्दर मैं सुनना चाहूँगा,
दुनिया में कैसियो नहीं है।

इयागो : मेरा दोस्त मरेगा जब है हुक्म आपका।
डेसडिमोना को जीने दें।

ओथेलो : पड़े नरक में
वह पाखण्डी, रण्डी ! जाए घोर नरक में !
चलें यहाँ से अब हम; कहीं अकेले में जा
मैं सोचूँगा कुछ ऐसी तरकीब कि जिससे
जल्दी इस दुष्टा, कुलटा के प्राण निकालूँ।
अब तू मेरा सह-सेनापति !

इयागो : मुझे हमेशा
अपना अदना ख़ादिम समझें।

[**दोनों जाते हैं**

चौथा दृश्य

गढ़ के आगे

(विदूषक और एमीलिया के साथ डेसडिमोना आती है।)

डेसडिमोना : क्यों रे, तुझे मालूम है कि सह-सेनापति कैसियो कहाँ रहते हैं ?

विदूषक : मैं यह बताने की जुर्रत नहीं कर सकता कि उनकी राहतें कहाँ हैं !

डेसडिमोना : क्यों, सुनूँ तो ?

विदूषक : वे हैं सिपाही; और किसी सिपाही की राहतों का पता बतलाने के मानी हैं, छुरी।

डेसडिमोना : बेसिर-पैर की बात मत कर। उनका घर कहाँ है ?

विदूषक : अरे, उनका घर वहीं है जहाँ उनकी राहतें हैं।

डेसडिमोना : इसका मतलब क्या है ?

विदूषक : मुझे नहीं मालूम कि उनका घर कहाँ है। मेरा काम नहीं कि उनके घर का पता लगाऊँ और बताऊँ कि उनकी राहतें यहाँ हैं कि वहाँ हैं। मैंने ऐसा किया तो मैं अपनी राहतों से हाथ धो बैठूँगा।

डेसडिमोना : जा के राह-राह में उनका पता पूछ, नहीं तुझे राहत नहीं मिलेगी।

विदूषक : तब तो मैं सारी दुनिया से पूछ-ताछ करूँगा, यानी सवाल-जवाब करूँगा; नहीं, नहीं; सवाल करूँगा और जवाब माँगूंगा, और जब तक वह उनकी राह नहीं बताएगी मैं भी उसे राहत नहीं लेने दूँगा।

डेसडिमोना : उनका पता लगा और उनसे कह कि मेरे पास आएँ। उन्हें बता कि मैंने उनके लिए सेनापति को राज़ी कर लिया है और मुझे आशा है कि सब कुछ ठीक होगा।

विदूषक : यह तो इन्सान की समझ में आनेवाली बात हुई, इसलिए इसे करने की कोशिश मैं कर सकता हूँ।

[बाहर जाता है

डेसडिमोना : एमीलिया, पता नहीं मेरा वह रूमाल कहाँ खो गया !

एमीलिया : मालकिन, मैं क्या जानूँ।

डेसडिमोना : सच कहती हूँ, मेरी रुपयों की थैली भी
यदि खो जाती मुझको इतना दुःख न होता।
यह तो कहो कि मेरे अच्छे पति बिलकुल
सुथरे दिमाग़ के; ओछेपन से बहुत दूर हैं,
जो अक्सर शुबहा करनेवाले लोगों में
पाया जाता; वर्ना इसके खो जाने पर
बुरी तरह से वे शक करते।

एमीलिया : तो क्या उनकी
सब पतियों-सी शक करने की बान नहीं है ?

डेसडिमोना : नहीं, ज़रा भी; शायद वे जिस बड़े देश में जन्मे, उसने उनका
हृदय विशाल किया है।

एमीलिया : देवि, देखिए वे आते हैं।

डेसडिमोना : अब मैं उनका
पिण्ड न छोड़ूँगी, वे जब तक माइकेल को
उसके पद पर नहीं बुलाते।

(ओथेलो आता है।)

कहिए श्रीमन्,
हाल-चाल क्या ?

ओथेलो : हाल, श्रीमती, अच्छा ही है।
(अलग) मुझे दिखावा करना कितना मुश्किल लगता।
(प्रकट) डेसडिमोन, तुम अच्छी तो हो ?

डेसडिमोना : अच्छी ही हूँ।

ओथेलो : लाओ, अपना हाथ मुझे दो।

(डेसडिमोना का हाथ अपने हाथ में लेता है।)

मगर हथेली
इतनी भीगी-भीगी क्यों है ?

डेसडिमोना : दूर बुढ़ापा, और न दुख ही मैंने जाना।

ओथेलो : यह बतलाती तुम उदार, अवढर दानी हो;
गर्म, गर्म-नम। इन हाथों के लिए उचित है
अपनी स्वतन्त्रता के ऊपर करें नियन्त्रण,
व्रत रक्खें, प्रार्थना करें, संयम शासित हों,—
ऐसे पावन सदाचरण से शापमुक्त हों।
क्योंकि यहाँ पर एक युवा प्रस्वेद-प्रवाही
दानव रहता जो प्रायः सब नियम तोड़ता।
अच्छा है यह हाथ, छिपाव-दुराव न करता।

डेसडिमोना : ऐसा आप इसे कह सकते क्योंकि इसी ने

मेरा दिल दे दिया आपको।

ओथेलो : यह उदार है।
पूर्व समय में दिल दे हाथ दिया जाता था;
आज हाथ दे, दिल पीछे रक्खा जाता है।

डेसडिमोना : मैं तो ऐसा नहीं समझती। अच्छा अपने
वादे को अब पूरा करिए।

ओथेलो : कैसा वादा,
मेरी प्यारी?

डेसडिमोना : आज कैसियो को मैंने बुलवा भेजा है—
आकर उसको जो कहना है कहे आपसे।

ओथेलो : मेरी आँखों के अन्दर कुछ करक रहा है,
बुरा दर्द है, अपना वह रूमाल मुझे दो।

डेसडिमोना : यह है।

ओथेलो : वह दो, वह जो मैंने तुम्हें दिया था।

डेसडिमोना : वह तो मेरे पास नहीं है।

ओथेलो : नहीं?

डेसडिमोना : नहीं, सच।

ओथेलो : उसको खोना तो अपराध बड़ा भारी है।
वह रूमाल
एक मिस्री से मेरी माता ने पाया था;
वह कोई जादूगरनी थी और मनुष्यों
के मन की सब बातें वह बतला सकती थी।
उसने माँ को समझाया था, जब तक वह
रूमाल पास अपने रक्खेंगी, सुखी रहेंगी;
मेरे पिता छोड़कर उनको नहीं किसी को
प्यार करेंगे और रहेंगे उनके बस में।
पर यदि वे उसको खो देंगी, या कि किसी को
दे डालेंगी, तो वे उनको घृणा की नज़र
से देखेंगे, औ' उनका मन नई सूरतों
को खोजेगा; उनके ही पीछे दौड़ेगा।
माँ ने मरते समय मुझे रूमाल दिया था
और कहा था, जब मेरी शादी हो उसको
मैं अपनी पत्नी को दे दूँ;—किया भी यही—
बड़े जतन से अपने पास उसे वह रक्खे;
बेशक़ीमती, आँखों की पुतली-सा समझे;
क्योंकि अगर यह खो जाए, दे डाला जाए,
तो ऐसा संकट आएगा जिससे भारी
संकट नहीं किसी पर आया।

डेसडिमोना : क्या यह सच है?

ओथेलो : सच है, उसके ताने-बाने में जादू था।
एक बड़ी जादूगरनी ने, जिसने दो सौ
जाड़ा, गर्मी, बरसातों को पार किया था,

उसे बुना था, तब, जब उस पर जिन सवार था।
रेशम भी मन्त्रित कीड़ों ने उपजाया था;
रँगा गया था उसे एक ऐसे द्रव से जो
मृत कुमारियों के दिल से खींचा जाता है,
बड़ी युक्ति से।

डेसडिमोना : क्या सचमुच इस तरह बना था?

ओथेलो : बिल्कुल ऐसे; बड़े जतन से उसको रखना।

डेसडिमोना : तब अच्छा होता, वह मेरे हाथ न आता!

ओथेलो : हैं! ऐसा क्यों?

डेसडिमोना : क्यों इतने आवेश-तैश में आप बोलते?

ओथेलो : खोया? ग़ायब हुआ? नहीं मिलता तो बोलो?

डेसडिमोना : ईश्वर, कैसी बला आ पड़ी!

ओथेलो : बतलाती हो?

डेसडिमोना : खोया नहीं, मगर खो गया अगर तो क्या हो?

ओथेलो : यह कैसे!

डेसडिमोना : मैं कहती हूँ, खो नहीं गया है।

ओथेलो : अगर नहीं खोया तो लाओ मुझे दिखाओ।

डेसडिमोना : दिखला सकती, लेकिन अभी न दिखलाऊँगी।
मेरी माँग टालने की यह खूब चाल है!
सुनिए, जल्द कैसियो को वापस बुलवा लें।

ओथेलो : लाओ वह रूमाल; मुझे कुछ शक होता है।

डेसडिमोना : चलिए, चलिए;
ऐसा क़ाबिल कभी आपको नहीं मिलेगा।

ओथेलो : वह रूमाल कहाँ?

डेसडिमोना : न, कैसियो का बतलाएँ?

ओथेलो : वह रूमाल कहाँ?

डेसडिमोना : जिसने अपने जीवन में
इसको ही सौभाग्य बड़ा अपना माना है,
उसे आपका प्रेम मिला है, जिसने ख़तरे
की घड़ियों में सदा आपका साथ दिया है—

ओथेलो : वह रूमाल कहाँ?

डेसडिमोना : —सच इसमें दोष आपका।

ओथेलो : दूर आँख से हो!

[**ओथेलो बाहर जाता है**

एमीलिया : इनके मन में कुछ शुबहा है।

डेसडिमोना : पहली बार देखती हूँ यह।
क्या वह जादू का रूमाल असर दिखलाता?
उसके खो जाने का मुझको बड़ा दुःख है।

एमीलिया : मर्द साल दो साल में नहीं जाना जाता।
मर्द पेट है, औरत केवल उसका खाना;
भूखा होता है तो हमको रुचि से खाता :

और अघाता है तो हमें उगल देता है।
देखो, उधर कैसियो औ' मेरे पति आते।

(कैसियो और इयागो आते हैं।)

इयागो : राह दूसरी नहीं; इसे वे ही कर सकतीं।
खुशक़िस्मत हो ! जाओ मिन्नत करो उन्हीं से।

डेसडिमोना : कहो कैसियो, कैसे हो, दिन कैसे कटते !

कैसियो : देवि, प्रार्थना पहली ही फिर करने आया
यही निवेदन, अगर आप कुछ कृपा करें तो
मैं फिर से जीवन पा जाऊँ; फिर से उनका
प्रेम-पात्र बन पाऊँ जिनके लिए हृदय में,
मेरे, आदर-प्रेम-भावना भरी हुई है।
और विलम्ब नहीं अब मुझसे सहा जायगा।
यदि मुझसे ऐसा जघन्य अपराध हुआ है
जिसकी माफ़ी मेरी पिछली सेवाओं से,
वर्तमान के पछतावों से, औ' भविष्य में
अच्छे रहने के वादों से नामुमकिन है,
औ' मैं उनका प्रेम नहीं फिर पा सकता हूँ,
तो इसका जानना लाभकर मुझको होगा।
जो सिर पर आया है धीरज से ओढ़ूँगा;
कोई राह दूसरी लूँगा; भाग्य जिधर को
ले जाएगा, जाना होगा।

डेसडिमोना : सुनो, कैसियो,
तुम स्वभाव के कोमल हो। पर, बड़ा दुःख है,
मेरे कहने-सुनने में अब असर नहीं है।
मेरे स्वामी, मेरे स्वामी नहीं रहे अब;
वे अपने मिज़ाज से इतने बदले लगते,
मैं उनको पहचान न पाती, जैसे उनका
रूप-रंग ही बदल गया हो। हे परमेश्वर,
मुझे बचा तू। जो कुछ मेरी ताक़त में था,
उसे तुम्हारे लिए कर चुकी; खुलकर कहने
से उनकी नाराज़ी भी अपने ऊपर ली।
तुम अब थोड़ा धीरज रक्खो। मुझसे जो कुछ
हो सकता है, और करूँगी—जितना अपनी
ख़ातिर करती, उससे ज़्यादा। इतने पर
सन्तोष करो तुम।

इयागो : क्या मालिक सच गुस्से में हैं ?

एमीलिया : अभी-अभी वे गये यहाँ से। सचमुच एक
अजीब परेशानी उनके मुँह पर छाई थी।

इयागो : क्या वे गुस्सा हो सकते हैं ? मैंने देखा
है गोले से उनकी टुकड़ी उड़ा दी गई;
भाई है सामने, मगर शैतान की तरह,

तोप उन्होंने दग़वा दी है औ' माथे पर
शिकन नहीं है। क्या वे गुस्सा हो सकते हैं?
तब फिर कोई ख़ास बात है। उनके पास
अभी जाता हूँ। वे गुस्सा हैं तो ज़रूर ही
आज दाल में कुछ काला है।

डेसडिमोना : जल्दी जाओ।

[**इयागो जाता है**

राज-काज सम्बन्धी कोई झंझट होगी,
जो वेनिस में खड़ी हुई है, या साइप्रस में
छिपे-छिपे षड्यन्त्र कहीं कुछ रचा गया है
जिसका उनको पता चला है; और उसी से
उनके मन की शान्ति अचानक भंग हुई है।
मर्द तंग जब बड़े मामलों से होते हैं,
छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ा करते हैं।
ऐसी ही कुछ बात हुई है। अगर एक उँगली
में भी पीड़ा होती है तो तन के हर
एक अंग में दर्द उभरता, गो वह अच्छा।
हम मत भूलें, पति मनुष्य है, वह कोई
देवता नहीं है; और न यह प्रत्याशा रक्खें
नई दुल्हन की तरह हमारी मनुहारें वह
सदा करेगा। मेरी ग़लती थी, एमीलिया;
बेइन्साफ़ी से मैं उनके साथ लड़ी थी;
मेरे दिल ने उनके ऊपर निर्दयता का
दोष लगाया, पर मेरा दिल साफ़ नहीं था।
झूठ उन्हें दोषी ठहराया।

एमीलिया : ईश्वर करे कि
जैसा आप समझती हैं—यह राज-काज हो।
कहीं आप पर शुबहे की चिंगारी उनके
मन में जागी, तो वह जल्दी बुझ न सकेगी।

डेसडिमोना : ऐसा दुर्दिन कभी न देखूँ! मैंने शुबहा
करने का कोई भी अवसर नहीं दिया है।

एमीलिया : पर शुबहा करनेवालों को ऐसे उत्तर
से सन्तोष नहीं होता है। उनको किसी
बात पर शुबहा थोड़ा होता; उनको शुबहा
करने की आदत होती है—इससे उनको
शुबहा होता। यह ऐसी विष-बेलि कि अपने
को ही अपना बीज बनाकर उगती, बढ़ती।

डेसडिमोना : यह विष-बेलि ओथेलो के मन में न खड़ी हो।

एमीलिया : ईश्वर इससे उन्हें बचाए।

डेसडिमोना : उनके पास अभी जाती हूँ। तुम, कैसियो,
यहीं पर ठहरो। अगर ठीक उनको पाऊँगी,

माँग तुम्हारी मैं उनके आगे रक्खूँगी,
भरसक यत्न करूँगी, मेरी बात मान लें।

कैसियो : देवि, आपका मैं विनम्रता से कृतज्ञ हूँ।

[**डेसडिमोना और एमीलिया बाहर जाती हैं**

(**बियांका आती है।**)

बियांका : कहो कैसियो, अच्छे तो हो !

कैसियो : बाहर कैसे
निकल पड़ी हो ? सुन्दर, सुकुमारी बियांका,
तुम कैसी हो ? प्यारी, इसको सच मानो, मैं
अभी तुम्हारे घर आता था।

बियांका : और, कैसियो,
मैं भी अभी तुम्हारे डेरे पर जाती थी।
हफ़्ते भर से तुम ग़ायब हो ! सात रात-दिन !
चौबिस सत्ते हुए एक सौ अड़सठ घण्टे !
इधर मुहब्बत, उधर जुदाई की ये घड़ियाँ !
एक-एक दिन मुझे महीनों-सा लगता था !
काटे, हाय, नहीं कटता था।

कैसियो : मुझे माफ़ कर
दो, बियांका ! इधर कई दिन से कुछ ऐसे
दुखद विचारों से मेरा मन दबा हुआ था,
मिल न सका मैं। पर उनसे फ़ुरसत पाने पर
प्रेम-विरह की उन घड़ियों का मैं पूरा
परिहार करूँगा; सच मानो, प्यारी बियांका।

(**उसे डेसडिमोना का रूमाल देता है।**)

तुमसे इस पर कढ़ा नमूना उतर सकेगा ?

बियांका : हाय, कैसियो, यह तुमको मिल गया कहाँ से ?
यह तो किसी नई माशूक़ा का तोहफ़ा है।
राज़ तुम्हारे ग़ायब रहने का अब समझी।
क्या अब ऐसी बात करोगे ? अच्छा, अच्छा !

कैसियो : ऐसे गन्दे ख़्यालों को शैतान मनुष्यों
के दिमाग़ में बोया करता; इनकी जड़ मत
जमने देना। इस प्रकार का शक़ फ़िज़ूल है
कि यह किसी माशूक़ा की है प्रेम-निशानी।
नहीं, नहीं, सच; ऐसी कोई बात नहीं है;
सच, बियांका !

बियांका : तो बतलाओ, यह किसका है ?

कैसियो : प्यारी, खुद मैं नहीं जानता। मैंने इसको
अपने कमरे में पाया था। इस पर बढ़िया
काम कढ़ा है, मुझको भाता। मैंने सोचा

इसके पहले कोई इसको मुझसे माँगे—
जिसका है वह माँगेगा ही—इसकी नक़ल
करा लूँगा मैं। तुम ले जाओ औ' कर लाओ;
और इस समय मुझे विदा दो।

बियांका : तुम्हें विदा दूँ!
मगर किसलिए?

कैसियो : मैं सेनापति से कुछ कहने
को आया हूँ। और चाहता नहीं, न ऐसा
अच्छा लगता, वे देखें—मैं औरत को ले
साथ खड़ा हूँ।

बियांका : मुझे न दूर करो अपने से।

कैसियो : यह मत समझो तुमको प्यार नहीं करता हूँ।

बियांका : सचमुच प्यार नहीं करते हो। कहूँ, करोगे?
थोड़ी दूर चलो, मुझको पहुँचाकर आओ;
और करो वादा कि रात जल्दी आओगे?

कैसियो : मैं बस थोड़ी दूर तुम्हारे साथ चलूँगा।
मुझे यहीं रुकना है; तुमसे जल्द मिलूँगा।

बियांका : यही ग़नीमत समझ रही हूँ; मजबूरी है।

[दोनों बाहर जाते हैं

चौथा अंक

पहला दृश्य

साइप्रस : गढ़ के सामने

(ओथेलो और इयागो आते हैं।)

इयागो : क्या ख़्याल है?

ओथेलो : ख़्याल, इयागो!

इयागो : जी हाँ, छिपकर
आपस की चूमा-चाटी पर?

ओथेलो : यह बेजा है!

इयागो : और यार के साथ बिस्तरे में नंगी हो
लेटी रहना, पर मन में कुछ पाप न लाना?

ओथेलो : नग्न बिस्तरे में औ' मन में पाप न लाना!
झुठलाना शैतान को, इसी को कहते हैं।
जो संयम से रहनेवाले हैं उनको भी

डाल प्रलोभन में शैतान डिगा देता है।

इयागो : इसमें उनका कोई बड़ा कुसूर नहीं है;
उनके डिगने को माफ़ी दी जा सकती है।
लेकिन अपनी बीवी को रूमाल अगर मैं
देता हूँ—

ओथेलो : फिर क्या?

इयागो : मालिक, फिर वह उसका है;
जब उसका है, तब वह जिसको चाहे दे दे।

ओथेलो : लेकिन, उसको अपना मान बचाना होगा।
क्या वह उसको दे डालेगी?

इयागो : उसका मान
किसी को दिखलाई देता है? मान बाहरी
रखनेवाले अक्सर ऐसे, जो भीतर से
उससे ख़ाली। पर रूमाल दिखाई देता—

ओथेलो : ईश्वर की सौगन्ध, उसे मैं भूल गया था;
तू कहता है तो फिर उसकी याद जागती;
जैसे किसी अभागे घर पर कोई घुग्घू
आ बैठा हो, औ' अशकुन सब घरवालों का
जता रहा हो—वह रूमाल लिए बैठा है।

इयागो : हाँ, उसका क्या?

ओथेलो : अब वह मेरे काम का नहीं।

इयागो : क्या ख़्याल करते हुज़ूर गर मैं यह कहता
मैंने उसके साथ उसे लेटे देखा है?
या खुद उसके मुँह से ऐसा सुन रक्खा है?—
ऐसे कम-अक़्लों की कोई कमी नहीं है,
जो कि किसी पर बेज़ारी से आशिक़ होकर,
अपने दिल की मजबूरी से; या कि किसी
माशूक़ा के उनके ऊपर सदक़े जाने से,
अपने दिल की मखमूरी से, अपनी बातें
औरों के आगे बकते हैं।

ओथेलो : क्या उसने कुछ
बात कही है?

इयागो : बात कही है, मेरे मालिक,
लेकिन इसको खूब समझ लें, झूठी क़समें
खाकर अपने कहे हुए से मुकर जायगा।

ओथेलो : बतला तो, क्या बात कही?

इयागो : क़समन कहता,
यही कि उसने किया—नहीं मालूम किया क्या!

ओथेलो : बोल, किया क्या?

इयागो : ज़िना—

ओथेलो : साथ मेरी बीवी के?

इयागो : ज़िना आपकी बीवी से; मानें, मत मानें।

ओथेलो : ज़िना मेरी बीवी के साथ ! मेरी बीवी के साथ ज़िना !—
ज़िना, यानी उसके साथ सम्भोग ! ज़िना, यानी उसके साथ
व्यभिचार !—उसके साथ सोना ! महाघृणित है यह !
रूमाल—कुकर्मों का साखी—रूमाल ! उसे अपना पाप
स्वीकार करना होगा; उसे अपने कर्मों के लिए फाँसी पर चढ़ना
होगा। उसे फाँसी के तख्ते पर चढ़कर अपना पाप स्वीकार
करना होगा। मेरा अंग-अंग काँप रहा है। मानव-प्रकृति
अपने को ऐसे आवेशों के अन्ध-कूप में नहीं डालती—जब तक
पीछे कोई अज्ञात प्रेरणा न हो। मैं केवल बातों से ऐसा विचलित
नहीं हुआ। धिक्कार है ! नाक से नाक, कान से कान, होंठ से
होंठ ! क्या यह सम्भव है ? तू नहीं स्वीकार करेगा ?—तो
रूमाल नहीं स्वीकार करेगा ?—ओ शैतान !

(**बेहोश होकर गिर पड़ता है।**)

इयागो : काम किए चल,
मेरी बूटी, काम किए चल ! आसानी से
एतबार कर लेनेवाले बुद्धू ऐसे
ही फँसते हैं। और बहुत-सी बेगुनाह, बे-
दाग़, भली मस्तूरातों को बदनामी सहनी
पड़ती है। अरे, क्या हुआ ! मेरे मालिक !
मेरे मालिक, सुनिए मेरी ! अरे, ओथेलो !

(**कैसियो आता है।**)

कहो कैसियो, कैसे हो ?

कैसियो : क्या बात हो गई ?

इयागो : मेरे मालिक को मिरगी का दौरा आया।
यह दूसरी बार आया है; कल भी ऐसे
ही आया था।

कैसियो : इनके माथे को सहलाओ।

इयागो : नहीं, इन्हें यों ही रहने दो। जब बेहोशी
चली जायगी तब ये अपने आप उठेंगे।
वर्ना मुँह से फेन गिरेगा और बाद को
पागल-वहशी-से अर्राएँ-बर्राएँगे।
देखो, कुछ-कुछ बदन हिला है। ज़रा देर के
लिए यहाँ से तुम हट जाओ; जल्द होश में
आ जाएँगे। इनके जाने पर मैं आकर
बड़ी ज़रूरी बातें तुमको बतलाऊँगा।

[**कैसियो जाता है**

सेनापति, कैसे हैं ? कैसे नाक कट गई ?

ओथेलो : मुझे बनाते हो ?

इयागो : मैं और बनाना ! ना-ना !
आप मर्द की तरह मुसीबत अपनी झेलें !

ओथेलो : जिसकी पत्नी करे और से प्रेम, उसे अपने
को मर्द समझने के कुछ अर्थ नहीं हैं।
इयागो : तब फिर इस आबाद शहर में मर्द कमी हैं;
यह नामर्दों की बस्ती है।
ओथेलो : क्या उसने, सच, यही कहा था ?
इयागो : मर्द की तरह
आप इसे लें। और न भूलें, आप अकेले
नहीं फँसे हैं इस फन्दे में ! जिस-जिस मूँछों
वाले के घर में जोरू है, उसका-उसका
हाल यही है। लाखों हैं जो रोज़ रात को
नाजायज़ तोशक-तकियों पर सोते हैं, पर
हलफ़ उठाकर कह देंगे—वे उनके अपने।
मगर आपकी बात निराली। ओ ! दोज़ख़ ने
भी कैसी दुश्मनी निकाली, औ' कितना भारी
मज़ाक़ शैतान ने किया !—आप एक ऐसे
बिस्तर में, जो कि बरी है शक़-शुबहे से,
एक फ़ाहिशा को हैं अपने गले लगाते,
और समझते हैं वह बिल्कुल पाक-साफ़ है।
नहीं; जानने दो मुझको जो सच्चाई है;
और अगर मैंने अपने को पहचाना है,
मुझको है मालूम कि उसका क्या करना है।
ओथेलो : बात बुद्धि की तू कहता है; बिल्कुल सच है।
इयागो : ज़रा देर को अलग खड़े हों। अपने ऊपर
क़ाबू रक्खें। जब कि आप अपने सदमे में
दबे पड़े थे—ऐसे जज़्बों में खो जाना
नहीं मर्द के लिए मुनासिब—यहाँ कैसियो
आ पहुँचा था। मैंने उसको खिसकाया औ'
बेहोशी की इधर-उधर कुछ वजह बता दी।
वह जल्दी लौटेगा, मुझसे बात करेगा
ऐसा उसने कह रक्खा है। छिपकर बैठें,
और ग़ौर से देखें—कैसे नोक-झोंक से,
छींटे कस-कस, चुटकी ले-ले, ताने दे-दे,
वह मुझसे बातें करता है, मुसकाता है।
फिर मैं उससे वह सब क़िस्सा कहलाऊँगा,
कितनी बार, कहाँ, कब, कैसे, उसे आपकी
बीवी से जुटने का मौक़ा मिल पाया है,
औ' आगे फिर कब मिलने को। मैं कहता हूँ,
बस उसके अन्दाज़ देखिए। क़सम आपको,
जो क़ाबू से बाहर जाएँ। नहीं, मुझे यह
कहना होगा, आप महज़ सोडे के पानी
की बोतल हैं, मर्द नहीं हैं।
ओथेलो : सुनो, इयागो,

सब्र साधने में मैं चूक नहीं कर सकता,
लेकिन मेरा सब्र बड़ा ही जब्र करेगा।

इयागो : इसमें कोई हर्ज नहीं है। मगर वक़्त से
काम करें सब। बस, अब पीछे को हट जाएँ।

(ओथेलो पीछे चला जाता है।)

अभी कैसियो से बियांका के बारे में
पूछ रहा हूँ। यह औरत अपनी अस्मत को
बेच ज़िंदगी अपनी बसर किया करती है।
मगर कैसियो के ऊपर यह फ़रेफ़्ता है।
रण्डो ने बहुतों को चकमा दे रक्खा है,
मगर एक के फन्दे में खुद फँसी हुई है।
जब मैं उसकी बात करूँगा, तब वह ठट्ठे
मार हँसेगा। वह आता है।

(कैसियो आता दिखाई देता है।)

उसको हँसता
देख ओथेलो, बिल्कुल पागल हो जाएगा।
यह गँवार अपने शुबहे में पड़ा—कैसियो
की मुसकानों, ठिठोलियों का, अन्दाज़ों का,
मानी ग़लत लगाएगा।—(**कैसियो से**)
सह-सेनापति जी !
कहो, गुज़रती है अब कैसी ?

कैसियो : 'सह-सेनापति'
कहकर मुझको और दुखी तुम क्यों करते हो ?
अपना दर्जा खोने से मरना अच्छा था।

इयागो : डेसडिमोना के तलवे सहलाते जाओ
और यक़ीनन काम तुम्हारा बन जाएगा।
गर यह काम बियांका की ताक़त में होता,
तो तुम कितनी जल्दी कामयाब हो जाते !

कैसियो : रहम करो उस बदक़िस्मत पर !

ओथेलो : देख रहा हूँ,
वह हँसता है।

इयागो : ऐसी औरत कभी न देखी
जो कि मर्द के ऊपर ऐसी फ़रेफ़्ता हो।

कैसियो : बख़्शो भी उस बाँकी को ! मुझको लगता है
वह सचमुच मुझको अपना दिल दे बैठी है।

ओथेलो : अब वह हँसकर बात टालना चाह रहा है।

इयागो : सुनो, कैसियो !

ओथेलो : अब वह उसको उकसाता है,
अपनी प्रेम-कहानी वह फिर से बतलाए।
ठीक किया है; ठीक किया है।

इयागो : वह कहती है,
तुम उससे शादी कर लोगे। क्या यह सच है ?

कैसियो : हः हः हः हः !

ओथेलो : तुम हँसते हो मानो तुम हो रोम राज्य के विजयी योद्धा।

कैसियो : मैं, उसके साथ शादी करूँगा ! उस सौदेबाज़ से ! तुमने मुझे इतना अक़्ल का अन्धा समझ लिया है ! मैं ऐसा बुद्धू बसन्त नहीं हूँ। हः हः हः हः !

ओथेलो : क्या ऐसा है ! क्या ऐसा है ! क्या ऐसा है !
ऐसे वे हँसते हैं जो विजयी होते हैं।

इयागो : क़सम न कहता, ऐसी चारों ओर ख़बर है,
तुम उससे शादी कर लोगे !

कैसियो : सच बतलाओ।

इयागो : झूठ बोलने से मुझको क्या मिल जाएगा।

ओथेलो : मेरे माथे पर कलंक का टीका तूने
लगा दिया है। मैं भी तुझको बतलाऊँगा।

कैसियो : यह तो उस बँदरिया की अपनी मनगढ़न्त है। वह सिर्फ़ इस धोखे में है कि उसकी मुहब्बत में फंसकर, उसकी बातों में आकर, मैं उससे शादी कर लूंगा। मैंने ऐसा करने का कोई वादा नहीं किया।

ओथेलो : इयागो आँख मारता है; अब वह अपनी कहानी कहने जा रहा है।

कैसियो : वह थोड़ी देर पहले यहीं थी। मैं कहीं भी जाऊँ, वह मेरा पीछा नहीं छोड़ती। अभी उस दिन समुद्र के किनारे मैं कुछ वेनिस निवासियों से बातें कर रहा था कि यह बावली वहाँ पहुँच गई और ऐसे मेरे गले से लिपट गई;—

ओथेलो : और उसने कहा होगा, 'हाय, प्यारे कैसियो !' उसकी भावभंगी से ऐसा ही लगता है।

कैसियो : ऐसे ही वह मुझसे लिपटती है, चिपटती है, और आहें भरती है। ऐसे ही वह मुझे खींचती है, मुझे धक्के देती है। हः हः हः !

ओथेलो : अब वह बता रहा है कि वह उसे मेरे कमरे में कैसे लिवा लाई। ओ, तेरी उस ऊँची नाक को जो मैं कुत्तों से न नोचवाऊँ, तभी कहना।

कैसियो : उससे पिण्ड छुड़ाना मुश्किल हो गया है।

इयागो : ज़ाहिर है ! देखो, वह आ रही है।

कैसियो : इसे भी एक तरह की कुतिया समझो। मुश्की कुत्ती कहना ठीक होगा।

(बियांका आती है।)

मेरे पीछे इस तरह पड़ने का मतलब क्या है ?

बियांका : तुम्हारे पीछे पड़े शैतान और उसकी घरवाली। तुमने जो रूमाल मुझे अभी दिया, उससे तुम्हारा मतलब क्या है ? मुझ भोली-भाली को पकड़ा दिया—'तुमसे इस पर कढ़ा नमूना उतर

सकेगा ?' जैसे यह तुम्हारे कमरे में पड़ा मिला हो, और तुम्हें पता न हो कि कौन छोड़ गया है। कोई क़स्बिन तुम्हें बिनके दे जाय अपनी प्रेम-निशानी और मैं बैठी उस पर कढ़े नमूने की नक़ल उतारूँ। यह ले जाकर दो किसी काठ के उल्लू को। कहीं भी मिला हो, मुझसे इसका नमूना-वमूना नहीं उतरेगा।

कैसियो : क्या बात है, मेरी प्यारी बियांका ! क्या बात है ! बात क्या है !

ओथेलो : अवश्य ही, यह मेरा रूमाल होगा।

बियांका : रात खाने के लिए आना हो तो आ जाना; आज नहीं आए तो मैं कभी—कभी नहीं बुलवाऊँगी।

[**बाहर जाती है**

इयागो : जाओ, उसे मनाओ; जाओ, पीछे-पीछे।

कैसियो : मुझे जाना ही होगा; नहीं, वह गली-गली मुझे बदनाम करती फिरेगी।

इयागो : तो क्या आज रात तुम वहीं खाना खा रहे हो ?

कैसियो : इरादा तो यही है।

इयागो : मौक़ा पाकर मैं तुमसे मिलूँगा; मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।

कैसियो : ज़रूर आना। आओगे न ?

इयागो : अच्छा जाओ; और कहने की ज़रूरत नहीं।

[**कैसियो बाहर जाता है**

ओथेलो : **(आगे बढ़कर)**
इयागो, उसके प्राण न लिए तो कुछ न किया।

इयागो : आपने देखा—वह कैसा क़हक़हा लगा रहा था।

ओथेलो : ओ, इयागो !

इयागो : और आपने वह रूमाल भी देखा ?

ओथेलो : क्या वह मेरा ही था ?

इयागो : हुज़ूर, अगर यह हाथ मेरा है, तो वह रूमाल आपका था। और देखिए कि उस बेवक़ूफ़ औरत की, आपकी बीवी की, वह क़द्र क्या करता है ! उसने दिया इसे और इसने दे डाला है अपनी रखैल को !

ओथेलो : मैं उसका बदन तिल-तिल करके कटवाऊँगा। यह सन्नारी ! यह सुन्दर नारी ! यह सुमधुर नारी !

इयागो : भूलिए भी इन बातों को।

ओथेलो : निश्चय ही, आज रात वह कुएँ में गिरे, आग में जले, नरक में पड़े; क्योंकि मैं उसे जीता नहीं छोड़ूँगा। नहीं, अब मेरी छाती पत्थर की हो गई है; मैं उसे पीटता हूँ तो मेरे हाथों को चोट आती है। आह, जैसी मधुर वह है, वैसी दुनिया में दूसरी नहीं। वह किसी सम्राट के साथ लेट जाय तो वह उसे उँगली पर नचा सकती है।

इयागो : लेकिन, आपका तरीक़ा यह नहीं।

ओथेलो : उसे फाँसी दे देनी चाहिए। मैं तो केवल यह कह रहा हूँ कि वह कैसी है—सुई-सिलाई का काम किस बारीक़ी से करती है; उसके संगीत पर जानवर भी अपना जंगलीपन भूलकर झूमने लगेगा! उसकी बुद्धि कितनी तेज़ है, उसकी कल्पना कितनी ऊँची है!

इयागो : उसकी बदचलनी ने उनकी इन सिफ़तों को ख़ाक में मिला दिया है।

ओथेलो : बिल्कुल, बिल्कुल मटियामेट कर दिया है। और जब उसका स्वभाव इतना कोमल है!

इयागो : हद से ज़्यादा ही कहना चाहिए।

ओथेलो : अब मुझे कोई सन्देह नहीं रह गया। तो भी, इयागो, यह कितनी मर्म को सालनेवाली बात है। इयागो, कितनी मर्म को सालनेवाली बात है, इयागो!

इयागो : उस बदचलन पर अगर आप इतने फ़िदा हैं, तब आप इसकी इजाज़त उसको क्यों नहीं दे देते कि वह खुल खेले। अगर आपको इसकी परवाह नहीं तो किसी दूसरे को क्यों होगी!

ओथेलो : मैं उसकी बोटी-बोटी काट डालूँगा। उसने मुझ पर कलंक लगवाया है।

इयागो : बुरी बात की है।

ओथेलो : और मेरे नीचेवाले अफ़सर के हाथों।

इयागो : यह और बुरी बात की है।

ओथेलो : कहीं से तुम ज़हर ला दो, इयागो; आज रात। मैं उससे वाद-विवाद नहीं करूँगा; कहीं उसका शरीर, उसकी सुन्दरता मेरे मन को फिर से कमज़ोर न बना दे। आज रात, इयागो।

इयागो : उसे ज़हर मत दें; बिस्तर में उसका गला घोट दें उसी बिस्तर में, जिसे उसने नापाक किया है।

ओथेलो : ठीक, ठीक। यह न्याय की बात मुझे पसन्द आई। बहुत ठीक।

इयागो : जहाँ तक कैसियो का तअल्लुक़ है, उससे मैं समझ लूँगा। आधी रात तक और भी बातें खुलेंगी।

ओथेलो : बिल्कुल ठीक। (**भीतर से नरसिंघों की आवाज़**) यह नरसिंघे की आवाज़ कहाँ से आ रही है?

इयागो : ज़रूर ही वेनिस से कोई ख़बर आई है। यह तो लोडोविको है, जिसे, लगता है, राजा ने भेजा है। और देखिए, आपकी बीवी भी उसके साथ हैं।

(लोडोविको, डेसडिमोना और नौकर-चाकर आते हैं।)

लोडोविको : लायक़ सेनापति, प्रभु रक्षा करें आपकी!

ओथेलो : श्रीमन्, मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिए।

लोडोविको : वेनिस के राजा औ' सारे राज्य-सभासद
श्रीमन् का अभिनन्दन करते।

(ओथेलो को एक लिफ़ाफ़ा देता है।)

ओथेलो : उनका आज्ञा-
पत्र लगाता हूँ माथे से।

(लिफ़ाफ़ा खोलकर पढ़ने लगता है।)

डेसडिमोना : वन्धु, बताओ
वेनिस का क्या हाल-चाल है? अच्छे तो सब!
इयागो : मैं, जनाब को यहाँ देखकर बेहद खुश हूँ;
साइप्रस आप पसन्द करेंगे।
लोडोविको : धन्यवाद! सह-सेनापति कैसियो मज़े में?
इयागो : हाँ जनाब, ज़िन्दा हैं अब तक।
डेसडिमोना : मेरे स्वामी के औ' उनके बीच आजकल
दु:खद खाई खुदी हुई है; अब तुम आए
हो तो उनमें मेल-मिलाप करा ही दोगे।
ओथेलो : क्या तुमको इसका निश्चय है?
डेसडिमोना : मेरे स्वामी?
ओथेलो : **(पढ़ता है।)**
'ऐसा करने में, देखो, तुमसे चूक न हो—'
लोडोविको : तुमसे नहीं कहा; वे आज्ञा-पत्र पढ़ रहे।
क्या सेनापति और कैसियो में खटपट है?
डेसडिमोना : इसका मुझको बड़ा दु:ख है। मैं दोनों का
मेल कराने को कुछ भी न उठा रक्खूँगी—
क्योंकि कैसियो के प्रति मुझको बड़ा प्रेम है।
ओथेलो : तुझे नरक की आग जलाए!
डेसडिमोना : मेरे स्वामी?
ओथेलो : बुद्धि कहाँ है तेरी?
डेसडिमोना : क्या स्वामी गुस्सा हैं?
लोडोविको : शायद आज्ञा-पत्र देखकर भड़क उठे हैं;
क्योंकि, मुझे लगता है, उनको राज्य-सभा ने
वेनिस वापस बुलवाया है; औ' शासन का
काम कैसियो को सौंपा है।
डेसडिमोना : सच कहती हूँ,
इससे मुझको बड़ी खुशी है।
ओथेलो : खुशी क्यों न हो!
डेसडिमोना : मेरे स्वामी?
ओथेलो : तुमको पागल हुई देखकर
मुझे खुशी है।
डेसडिमोना : क्यों, प्यारे ओथेलो?
ओथेलो : राक्षसी!

(तमाचा मारता है।)

डेसडिमोना : मेरा कुछ अपराध नहीं है।
लोडोविको : मेरे मालिक, बड़ी ज़्यादती है; वेनिस में

इस घटना की सच्चाई पर कोई नहीं
यक़ीन करेगा, चाहे कहूँ क़सम खाकर भी—
मैंने इसको अपनी आँखों से देखा है।
वह रोती है; उसे मनाएँ।

ओथेलो : महाराक्षसी !
यदि नारी के आँसू धरती में उग सकते,
उसकी आँखों के हर जलकण से नाटक का
अभिनेता पैदा हो जाता। हट आँखों से,
दूर चली जा !

डेसडिमोना : यदि आँखों में गड़ती हूँ तो
चली जा रही।

[**जाने लगती है**

लोडोविको : सच, आज्ञाकारी नारी है।
श्रीमन्, मेरी सुनें, उसे फिर पास बुला लें।

ओथेलो : सुनो, श्रीमती !

डेसडिमोना : मेरे स्वामी ?

ओथेलो : इससे है क्या काम आपका ?

लोडोविको : मेरा, श्रीमन् !

ओथेलो : हाँ; क्या नहीं आपने चाहा था मैं इसको
पास बुला लूँ ? श्रीमन्, पास खड़ी होकर भी
दूरी पर यह रह सकती है, औ' दूरी पर
खड़ी, पास भी; जब चाहे रो-धो सकती है।
आज्ञाकारी है, सबकी आज्ञा में चलती;
बहुत बड़ी आज्ञाकारी है !—रोती जाओ।—
इसके बारे में, श्रीमन्—नक़्क़ाल कहीं की—
मुझको वापस बुलवाया है।—अभी चली जाओ;
मैं जल्दी बुलवाऊँगा—श्रीमन्, आज्ञा
सिर-माथे है; मैं वेनिस को लौट रहा हूँ।—
खड़ी-खड़ी क्या देख रही हो; हटो यहाँ से।—

[**डेसडिमोना चली जाती है**

मेरी जगह कैसियो लेगा। हाँ तो श्रीमन्,
आज रात को मेरे घर पर खाना खाएँ।
श्रीमन् का मैं साइप्रस में स्वागत करता हूँ।—
कुत्ती, बकरी और बँदरिया (से भी बदतर)

[**बड़बड़ाता हुआ बाहर चला जाता है**

लोडोविको : यही तुम्हारा मान्य मूर है जिसे हमारी
राज्य-सभा ने सर्वसमर्थ समझ रखा है ?
इसका ही ऐसा सुभाव माना जाता है
जो आवेगों के उठने पर अविचल रहता ?

इसके ही गुण ऐसे ठोस बताए जाते
जिन पर दुर्घटना के भीषण आघातों का,
या दुर्दिन के प्रखर शरों का कोई असर
नहीं होता है।

इयागो : कितनी तबदीली आई है !

लोडोविको : बुद्धि ठिकाने तो है इनकी ? मुझको तो
इनके दिमाग़ में कुछ फ़ितूर दिखलाई पड़ता।

इयागो : वे जो हैं सो हैं, मैं उन पर रायज़नी कब
करने जाता। जो वे हो सकते थे, गर वे
होने पाते; सो तो वे हो नहीं सके हैं।
काश कि वे ऐसे हो सकते !

लोडोविको : उफ़, पत्नी पर
हाथ छोड़ना !

इयागो : क़समन, अच्छी बात न थी यह;
काश यक़ीन मुझे हो सकता बात यहीं तक
रह जाएगी।

लोडोविको : क्या अक्सर ऐसा करते हैं ?
अथवा वेनिस के पत्रों को पढ़कर उनको
क्रोध आ गया औ' वे कुछ अनुचित कर बैठे ?

इयागो : बड़ा रंज है ! यह मेरा ईमान गवारा
नहीं करेगा, मैं बतलाऊँ जो कुछ मैंने
देखा, जाना। अपने आप उन्हें देखेंगे;
उनके अपने तौर-तरीक़े बतलाएँगे;
मुझको अपनी ज़बाँ खोलनी नहीं पड़ेगी।
उनके पीछे-पीछे आएँ औ' देखें, वे
आगे-आगे क्या करते हैं।

लोडोविको बड़ा शोक है
मैंने उन्हें समझने में जो धोखा खाया।

[**दोनों बाहर जाते हैं**

दूसरा दृश्य

गढ़ का एक कमरा

(**एमीलिया के साथ ओथेलो आता है।**)

ओथेलो : तो तुमने कुछ कभी न देखा ?

एमीलिया : औ' न सुना ही, औ' न कभी सन्देह किया ही।

ओथेलो : तुमने उन्हें कैसियो के सँग तो देखा था ?

एमीलिया : इसमें कोई हर्ज नहीं था; औ' तब मैंने

उन दोनों में एक-एक जो बात हुई थी
उसे सुना था।

ओथेलो : उन दोनों ने काना-फूसी
कभी नहीं की?

एमीलिया : कभी नहीं, ओ मेरे मालिक!

ओथेलो : और न तुमको किसी बहाने दूर हटाया?

एमीलिया : कभी नहीं।

ओथेलो : जैसे पंखा, दस्ताना, चेहरा
लाने को, या ऐसी ही कुछ चीज़ मँगाने?

एमीलिया : मेरे मालिक, कभी भी नहीं।

ओथेलो : अचरज ही है।

एमीलिया : मेरे मालिक, शर्त लगाकर मैं कहने की
जुर्रत करती, वे सच्ची हैं; इसे सिद्ध करने
को अपने प्राण लगा दूँगी बाज़ी पर।
और विचारों को दिमाग़ से दूर हटाएँ;
इन बातों से अपना ही दिल दुखा रहे हैं!
किसी नीच ने ऐसी बातें अगर आपके
कानों डाली हों तो उसका मुँह जल जाए।
अगर आपकी पत्नी सच्ची औ' सतवन्ती,
साफ़ नहीं है, तो फिर किसकी पत्नी होगी?
निष्कलंक से निष्कलंक पर कोई निन्दा
करनेवाला जितना चाहे पाप थोप दे।

ओथेलो : जाओ, उन्हें बुलाकर लाओ; जाओ।

[**एमीलिया जाती है**

इसने
जो बतलाया है, काफ़ी है; पर यह मिट्टी
की धोंधा है; ज़्यादा बोल नहीं सकती है।
वह है पक्की छटी छोकरी, जो अपने सब
पाप-भेद को ताले-कुंजी में रखती है,
फिर भी मत्था टेक-टेक पूजा करती है।
मैंने उसको अक्सर ऐसा करते देखा।

(डेसडिमोना को लेकर एमीलिया लौटती है।)

डेसडिमोना : मेरे स्वामी, क्या आज्ञा है?

ओथेलो : ज़रा सामने
आओ, रानी!

डेसडिमोना : कहें, आपकी मर्ज़ी क्या है?

ओथेलो : मुझे देखने दो अपनी आँखों के अन्दर;
सीधे देखो।

डेसडिमोना : क्या ख़तरे का खब्त सवार
हुआ है इन पर!

ओथेलो : (**एमीलिया से**)

सुनो श्रीमती, तुम भी अपनी
कार्रवाई में लग जाओ, यारों को दो
छोड़ अकेले औ' चुपके दरवाज़ा भीड़ो;
कोई आता हो तो हूँ करना, खखारना।
यही तुम्हारा काम, तुम्हारा काम। रुको मत,
बाहर जाओ।

[**एमीलिया बाहर जाती है**

डेसडिमोना : घुटने टेक रही हूँ आगे,
कहें आपकी इन बातों का मतलब क्या है?
शब्दों में जो गुस्सा है, वह समझ रही हूँ;
शब्दों को मैं नहीं समझती।

ओथेलो : क्यों, तू क्या है?

डेसडिमोना : नाथ, आपकी पत्नी सच्ची औ' सतवन्ती।

ओथेलो : खा झूठी सौगन्ध और कलुषित अपने को
कर ले जिसमें तेरी नैसर्गिक आभा से
धोखा खाकर तुझे नरक के दूत पकड़ने
से मत हिचकें। पाप, पाप कर झूठ बोलने
दोनों का ही दण्ड भोगना तुझे पड़ेगा।
खा सौगन्ध कि तू सच्ची है।

डेसडिमोना : स्वर्ग जानता,
मैं सच्ची हूँ।

ओथेलो : स्वर्ग जानता तू झूठी है,
पापिष्ठा है, औ' तूने नारकी दग़ा की।

डेसडिमोना : मैंने किसके साथ दग़ा की? किससे मिलकर
पाप किया है? स्वामी, कैसे झूठी हूँ मैं?

ओथेलो : हाय, डेसडिमोना, तू मुझसे दूर चली जा!
दूर चली जा! दूर चली जा!

डेसडिमोना : क्या संकट की
घड़ी आ पड़ी! आप इस तरह क्यों रोते हैं?
क्या मेरे कारण यों आँसू बहा रहे हैं?
मेरे स्वामी, अगर आपको आशंका है
कि आपको साइप्रस से वापस बुलवाने में
मेरे वृद्ध पिता का दूषित हाथ कहीं है
तो मुझ पर मत दोष लगाएँ। अगर आपके
दुश्मन हैं वे, तो वे मेरे भी दुश्मन हैं।

ओथेलो : अगर भाग्य सौ विपदाओं में अग्निपरीक्षा
मेरी करता; मेरे नंगे, खुले शीश को
सौ गहरे घावों से भरता; मेरे ऊपर
निन्दा का कीचड़ उछालता; दीन बनाकर
दाने-दाने को तरसाता और मुझे औ'

मेरी ऊँची आशाओं को बन्दी करता;
तो भी मैं अपनी छाती के किसी भाग में
कण भर धीरज पा सकता था; लेकिन मुझको
जड़ीभूत कर, घृणा-घड़ी का मन्द चाल से
चलती अपनी उँगली मेरी ओर दिखाते
रहना मेरे लिए दुसह है ! हाय, करूँ क्या !
इसको भी मैं सह सकता था, मष्ट मारकर,
बड़े धैर्य से। किन्तु वहाँ से जहाँ कि मैंने
अपने उर की मधुर भावनाएँ सब संचित
कर रक्खी हैं; जहाँ अगर मैं रह न सकूँ तो
मुझको जीने का कोई अधिकार नहीं है;
जहाँ स्रोत वह, जिससे मेरी जीवन-धारा
बह न सकी तो सूख जायगी; हाय, वहीं से
दुतकारा, ठुकराया, जाना। या उस निर्मल
स्वच्छ स्रोत को चहबच्चे-सा बना डालना
जिसमें गन्दे कीड़े चल, बलबला रहे हों !—
इसको सुन क्यों तेरा रंग उड़ा जाता है ?
ओ सकुमारी, पंखुरियों-से अधरों की
नैसर्गिक बाले, ज़रा धैर्य धर देख मुझे तू—
इसे देखकर नरक-कालिमा मुझ पर घिरती।

डेसडिमोना : स्वामी मुझको सतवन्ती तो समझ रहे हैं ?

ओथेलो : ओ' निश्चय ही; सतवन्ती उस मक्खी-सी जो
बूचड़खाने में भिन-भिन कर उड़ती रहती,
अण्डे देते देर नहीं फिर गर्भ धारती।
जल की काई, तू बाहर से इतनी प्यारी,
सुन्दर लगती, इतनी मधुर सुरभि फैलाती,
तुझे देखकर मन में पीड़ा होने लगती,
अच्छा होता तू दुनिया में जन्म न लेती।

डेसडिमोना : मुझे नहीं मालूम कि मुझसे पाप हुआ क्या ?

ओथेलो : यह सफ़ेद कागज की इतनी अच्छी कापी
इसीलिए क्या बनी कि इस पर कुलटा लिख दें ?
पाप हुआ क्या ? पाप हुआ ! बाज़ारू वेश्या !
यदि मैं तेरे कर्मों को कह भर डालूँ तो
मेरे मुख में भट्ठी की-सी आग उठेगी,
जिसमें शालीनता दग्ध हो राख बनेगी।
औ' कहती है—पाप हुआ क्या ?—पाप कि जिस पर
नरक नाक अपनी सिकोड़ता, चन्द्र कलंकी
आँख छिपाता औ' बयार बेशर्म, जो कि जिस-
से भी मिलती है उससे अठखेली करती,
शर्मिन्दा हो धरती के गहरे गह्वर में
गुम-सुम होती। औ' कहती है—पाप हुआ क्या !
हरहठ रण्डी !

ओथेलो : (एमीलिया से)
सुनो श्रीमती, तुम भी अपनी
कारवाई में लग जाओ, यारों को दो
छोड़ अकेले औ' चुपके दरवाज़ा भीड़ो;
कोई आता हो तो हूँ करना, खखारना।
यही तुम्हारा काम, तुम्हारा काम। रुको मत,
बाहर जाओ।

[**एमीलिया बाहर जाती है**

डेसडिमोना : घुटने टेक रही हूँ आगे,
कहें आपकी इन बातों का मतलब क्या है ?
शब्दों में जो गुस्सा है, वह समझ रही हूँ;
शब्दों को मैं नहीं समझती।

ओथेलो : क्यों, तू क्या है ?

डेसडिमोना : नाथ, आपकी पत्नी सच्ची औ' सतवन्ती।

ओथेलो : खा झूठी सौगन्ध और कलुषित अपने को
कर ले जिसमें तेरी नैसर्गिक आभा से
धोखा खाकर तुझे नरक के दूत पकड़ने
से मत हिचकें। पाप, पाप कर झूठ बोलने
दोनों का ही दण्ड भोगना तुझे पड़ेगा।
खा सौगन्ध कि तू सच्ची है।

डेसडिमोना : स्वर्ग जानता,
मैं सच्ची हूँ।

ओथेलो : स्वर्ग जानता तू झूठी है,
पापिष्ठा है, औ' तूने नारकी दग़ा की।

डेसडिमोना : मैंने किसके साथ दग़ा की ? किससे मिलकर
पाप किया है ? स्वामी, कैसे झूठी हूँ मैं ?

ओथेलो : हाय, डेसडिमोना, तू मुझसे दूर चली जा !
दूर चली जा ! दूर चली जा !

डेसडिमोना : क्या संकट की
घड़ी आ पड़ी ! आप इस तरह क्यों रोते हैं ?
क्या मेरे कारण यों आँसू बहा रहे हैं ?
मेरे स्वामी, अगर आपको आशंका है
कि आपको साइप्रस से वापस बुलवाने में
मेरे वृद्ध पिता का दूषित हाथ कहीं है
तो मुझ पर मत दोष लगाएँ। अगर आपके
दुश्मन हैं वे, तो वे मेरे भी दुश्मन हैं।

ओथेलो : अगर भाग्य सौ विपदाओं में अग्निपरीक्षा
मेरी करता; मेरे नंगे, खुले शीश को
सौ गहरे घावों से भरता; मेरे ऊपर
निन्दा का कीचड़ उछालता; दीन बनाकर
दाने-दाने को तरसाता और मुझे औ'

मेरी ऊँची आशाओं को बन्दी करता;
तो भी मैं अपनी छाती के किसी भाग में
कण भर धीरज पा सकता था; लेकिन मुझको
जड़ीभूत कर, घृणा-घड़ी का मन्द चाल से
चलती अपनी उँगली मेरी ओर दिखाते
रहना मेरे लिए दुसह है ! हाय, करूँ क्या !
इसको भी मैं सह सकता था, मष्ट मारकर,
बड़े धैर्य से। किन्तु वहाँ से जहाँ कि मैंने
अपने उर की मधुर भावनाएँ सब संचित
कर रक्खी हैं; जहाँ अगर मैं रह न सकूँ तो
मुझको जीने का कोई अधिकार नहीं है;
जहाँ स्रोत वह, जिससे मेरी जीवन-धारा
बह न सकी तो सूख जायगी; हाय, वहीं से
दुतकारा, ठुकराया, जाना। या उस निर्मल
स्वच्छ स्रोत को चहबच्चे-सा बना डालना
जिसमें गन्दे कीड़े चल, बलबला रहे हों !—
इसको सुन क्यों तेरा रंग उड़ा जाता है ?
ओ सकुमारी, पंखुरियों-से अधरों की
नैसर्गिक बाले, जरा धैर्य धर देख मुझे तू—
इसे देखकर नरक-कालिमा मुझ पर घिरती।

डेसडिमोना स्वामी मुझको सतवन्ती तो समझ रहे हैं ?

ओथेलो ओ' निश्चय ही; सतवन्ती उस मक्खी-सी जो
बूचड़खाने में भिन-भिन कर उड़ती रहती,
अण्डे देते देर नहीं फिर गर्भ धारती।
जल की काई, तू बाहर से इतनी प्यारी,
सुन्दर लगती, इतनी मधुर सुरभि फैलाती,
तुझे देखकर मन में पीड़ा होने लगती,
अच्छा होता तू दुनिया में जन्म न लेती।

डेसडिमोना : मुझे नहीं मालूम कि मुझसे पाप हुआ क्या ?

ओथेलो : यह सफ़ेद कागज की इतनी अच्छी कापी
इसीलिए क्या बनी कि इस पर कुलटा लिख दें ?
पाप हुआ क्या ? पाप हुआ ! बाज़ारू वेश्या !
यदि मैं तेरे कर्मों को कह भर डालूँ तो
मेरे मुख में भट्ठी की-सी आग उठेगी,
जिसमें शालीनता दग्ध हो राख बनेगी।
औ' कहती है—पाप हुआ क्या ?—पाप कि जिस पर
नरक नाक अपनी सिकोड़ता, चन्द्र कलंकी
आँख छिपाता औ' बयार बेशर्म, जो कि जिस-
से भी मिलती है उससे अठखेली करती,
शर्मिन्दा हो धरती के गहरे गह्वर में
गुम-सुम होती। औ' कहती है—पाप हुआ क्या !
हरहठ रण्डी !

डेसडिमोना : स्वामी, स्वर्ग रहेगा साखी,
यह मुझ पर अन्याय आपका।

ओथेलो : क्या तू रण्डी
नहीं, छोकरी ?

डेसडिमोना : नहीं, धर्म की शपथ मुझे है।
क्या इस काया को स्वामी की सेवा के हित,
किसी और की अनुचित और अपावन छाया
से हर समय बचाकर रखना, रण्डी होना !
नहीं, कभी भी।

ओथेलो : क्या तू कुलटा नारि नहीं है ?

डेसडिमोना : नहीं, न्याय के दिन का भी यह निर्णय होगा।

ओथेलो : क्या यह सम्भव ?

डेसडिमोना : ईश्वर हमको क्षमादान दे।

ओथेलो : तब तो आप मुझे माफ़ी दें। मैंने ग़लती
से समझा था आप कुटिल कुलटा वेनिस की,
जिसने ओथेलो से शादी की।

[**एमीलिया को पुकारकर**

और श्रीमती,
तुम्हें सन्त पतरस का जोड़ीदार कहूँगा,
स्वर्ग-द्वार की चाभी वह, तो नरक-द्वार की
तुम रखती हो !

(**एमीलिया लौटकर आती है।**)

तुम्हीं; तुम्हीं; हाँ, तुमसे कहता।
अब हम अपना काम कर चुके; ये अपनी
बख़्शीश सँभालो, दरवाज़े पर जँदरा मारो,
और हमारी बात किसी से भी मत कहना।

[**बाहर जाता है**

एमीलिया : हाय, हाय ! इनके मन में क्या बैठ गया है ?
अच्छी तो हैं, भली मालकिन ? अच्छी तो हैं ?

डेसडिमोना : कुछ सोई-सी, कुछ जागी-सी।

एमीलिया : भली मालकिन, मालिक को क्या आज हो गया ?

डेसडिमोना : किसको ?

एमीलिया : मेरे मालिक को, औ' किसको ?

डेसडिमोना : तेरा मालिक कौन ?

एमीलिया : मालकिन, जो कि आपके।

डेसडिमोना : मेरा कोई नहीं। पूछ कुछ मत, एमीलिया।
उत्तर मेरे पास नहीं है, मेरे मुख में
शब्द नहीं हैं, मेरी आँखों में पानी है।
आज रात मेरे बिस्तर पर वही चादरें

बिछी हुई हों, जो सुहाग की रात बिछी थीं।
अपने पति को यहाँ बुला ला।

एमीलिया : यहाँ सभी कुछ
बदल गया है !

[**बाहर जाती है**

डेसडिमोना : जो कुछ मेरे साथ हुई है,
ठीक, बहुत ही ठीक हुई है। किसने मेरे
साथ किया क्या, जिसके कारण मेरे पति ने,
मेरी छोटी-सी ग़लती पर, मुझको इतनी
ओछी समझा ?

(एमीलिया इयागो को लेकर लौटती है।)

इयागो : हाज़िर हूँ मैं, हुक्म दीजिए, अच्छी तो हैं ?

डेसडिमोना : क्या बतलाऊँ। जो छोटे-छोटे बच्चों को
पाठ पढ़ाते, वे नर्मी से, सहज तरीक़ों
से सिखलाते। अगर उन्हें कुछ समझाना था,
मुझे प्यार से समझा देते। सच कहती हूँ,
मैं बच्ची हूँ; झिड़की देकर नहीं, प्यार से
मुझको समझाया जा सकता।

इयागो : देवी जी, क्या
बात हो गई ?

एमीलिया : मालिक ने गुस्से में आकर
आज मालकिन को हरजाई, कुलटा, वेश्या
कह डाला है। वह कलंक इन पर थोपा है,
ऐसी बुरी गालियाँ दी हैं, कोई सच्चे
दिल का उनको कभी नहीं बर्दाश्त करेगा।

डेसडिमोना : उन्हें मुझे ऐसा कहना था !

इयागो : कैसा, मेरी
भली मालकिन ?

डेसडिमोना : जैसा एमीलिया बतलाती,
जो मेरे स्वामी ने मेरे लिए कहा है।

एमीलिया : कुलटा इनके लिए कहा है। कोई गुण्डा,
पिए हुए भी, ऐसी गाली रण्डी को भी
कभी न देगा।

इयागो : किया उन्होंने क्योंकर ऐसा ?

डेसडिमोना : मुझे नहीं मालूम, जानती हूँ मैं केवल,
कभी नहीं मैं ऐसी, कोई कुछ भी कह ले।

(रोने लगती है।)

इयागो : यों न रोइए, यों न रोइए ! दिन ख़राब हैं !

एमीलिया : भली मालकिन ने अच्छे-अच्छे रिश्तों को,

अपने पिता, देश को, अपनी सहेलियों को,
इसीलिए क्या त्याग दिया था, वे कुलटा
कहलाई जाएँ ? इस पर कौन नहीं रोएगा ?

डेसडिमोना : मेरी क़िस्मत ही फूटी थी।

इयागो : बुरा किया है
मालिक ने। उनके कानों को किसी तरह से
भरा गया है।

डेसडिमोना : इसको तो ईश्वर ही जाने !

एमीलिया : मैं मर जाऊँ अगर बात यह ठीक न निकले,
कोई पक्का पाजी, कोई लुच्चा ऐसा,
जिसका पेशा है औरों की चुगली खाना;
कोई चलता-पुर्ज़ा, चंट, चौपटा ऐसा,
जिसने कोई पद पाने को यह तोहमत की
बात गढ़ी है। यही न हो तो, मैं मर जाऊँ।

इयागो : ऐसा कोई शख़्स नहीं है। यह नामुमकिन।

डेसडिमोना : ऐसा कोई हो तो, ईश्वर, उसे क्षमा कर !

एमीलिया : ऐसे को तो क्षमा करे फाँसी का फन्दा !
उसकी हड्डी सड़े नरक में। कुलटा कैसे
कहा उन्होंने ? कौन साथ इनके रहता है ?
किया इन्होंने क्या ? कब ? कैसे ? और कहाँ पर ?
किसी बड़े पाजी, शोहदे ने मालिक को
बरगला दिया है; बड़ा नीच, नटखट शोहदा है;
बड़ा लफंगा, लुंगाड़ा है। सच कहती हूँ,
गर ऐसे आवारागर्दों को पहचाना
जा सकता तो, मैं सब सच्चे आदमियों के
हाथों में कोड़े दे कहती, इन दुष्टों की
नंगी पीठों पर सड़काते, इन्हें भगाते,
इस दुनिया के एक सिरे से दूर दूसरे
तक ले जाएँ।

इयागो : घर को तो सिर पर न उठा लो।

एमीलिया : थू ऐसों पर। ऐसा ही कोई छलिया था,
जिसने कुछ दिन हुए आपको उल्टा-सीधा
पढ़ा दिया था, मैं मालिक से फँसी हुई हूँ।

इयागो : तुम जाहिल हो; हटो यहाँ से।

डेसडिमोना : अपने पति को फिर पाने के लिए क्या करूँ ?
मेरे अच्छे मीत, उन्हें जाकर समझाओ।
चन्दा की सौगन्ध, मुझे मालूम नहीं है,
मैंने कैसे उन्हें खो दिया। प्रभु के आगे
घुटने टेके मैं कहती हूँ किसी भी समय,
मनसा, वाचा और कर्मणा मैंने उनकी
प्रेम-परिधि के बाहर अपना पाँव न रक्खा।
मेरी आँखों, मेरे कानों, मेरे तन के

अंग-अंग ने उनको तजकर किसी और में,
किसी तरह के, सुख का अनुभव नहीं किया है।
औ' मैंने अपने तन-मन से सदा उन्हीं को
प्यार किया है, अब भी करती, और हमेशा
किया करूँगी, चाहे वे मुझको तलाक़ दें
गली-गली की भीख मँगाएँ। अगर न ऐसा
हो, तो फिर मैं कभी न सुख की घड़ियाँ जानूँ।
निर्ममता से, बन्धु, बहुत कुछ हो सकता है।
उनकी निर्ममता ले मेरे प्राण भले ही,
पर वह मेरा प्यार कभी भी छू न सकेगी।
'कुलटा' मेरे मुँह से नहीं निकल सकता है।
उसका उच्चारण करते मुझको घिन आती।
करना ऐसा काम कि ऐसा नाम कमाऊँ !—
दुनिया की सारी दौलत भी मुझसे ऐसा
करा न सकती।

इयागो : मेरी सुनिए, धीरज रखिए;
सिर्फ़ सनक है यह मालिक की। राज-काज की
किसी बात से वे नाखुश हैं और आप पर
बिगड़ उठे हैं।

डेसडिमोना : अगर यही हो···

इयागो : ठीक यही है, मैं कहता हूँ।

(तुरही की आवाज़ आती है।)

सुनिए बाजे। यह दावत के लिए बुलावा !
वेनिस के नामावर खाने पर आए हैं।
अन्दर जाएँ, मत रोएँ; सब ठीक रहेगा।

[डेसडिमोना और एमीलिया बाहर जाती हैं

(राडरीगो आता है।)

कहो, राडरीगो कैसे हो ?

राडरीगो : मेरा ख्याल है कि तुम मेरे साथ इन्साफ़ नहीं कर रहे हो।

इयागो : बेइन्साफ़ी क्या कर रहा हूँ ?

राडरीगो : इयागो, तुम किसी न किसी तरकीब से मुझे हर दिन टरका देते हो। और, अब तो मुझे यह लगता है कि उम्मीद का कोई मौक़ा देने की बात तो दूर, मेरी रही-सही सहूलतें भी तुम छीन रहे हो। अब मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता, और न मैं इसी बात के लिए तैयार हूँ कि अपनी बेवकूफ़ी से जो मुसीबतें मैंने आज तक उठाई हैं, उन पर ग़म खाकर बैठ रहूँ।

इयागो : मेरी बात भी सुनोगे, राडरीगो ?

राडरीगो : ईमान से, बहुत सुन चुका हूँ; तुम्हारी बात और तुम्हारे काम में कोई जोड़ ही नहीं है।

इयागो : मुझ पर ऐसी तोहमत लगाना, तुम्हारी बड़ी बेइन्साफ़ी है।

राडरीगो : पर क्या मैंने झूठ लगाया है? अपनी हैसियत से कहीं ज़्यादा मैं फूँक बैठा हूँ। डेसडिमोना को देने के लिए जो ज़ेवर तुम मुझसे ले गए थे, उनसे तो बड़ी पाक-साफ़ का भी मन डोल जाता। तुमने कहा था कि उसने उन्हें मंज़ूर किया है और कहलाया है कि इन्तज़ारी करते रहो; कभी अचानक तुम्हारे सामने हो तुमसे दोस्ती बढ़ाऊँगी और तुम्हारा दिल बहलाऊँगी, पर उसके बाद कहीं कुछ भी नहीं।

इयागो : अच्छा जाओ; अच्छी बात है।

राडरीगो : 'अच्छी बात है! अच्छा जाओ!' मैं ऐसे नहीं जा सकता; और न यह अच्छी बात है। क़सम खाकर कहता हूँ, यह बहुत बुरी बात है; और अब मुझे लगता है कि तुमने मुझे खूब उल्लू बनाया है।

इयागो : अच्छी बात है।

राडरीगो : मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि यह अच्छी बात नहीं है। मैं डेस-डिमोना के सामने अपने को ज़ाहिर कर दूँगा। अगर वह मेरे ज़ेवर लौटा देती है तो मैं उसका पीछा करना छोड़ दूँगा, और नाजायज़ तरीके से उसके पास पहुँचने के लिए माफ़ी माँग लूँगा। अगर नहीं, तो यक़ीन रक्खो मैं तुमसे समझूँगा।

इयागो : अब तुमने बात कही है।

राडरीगो : और जो मैंने कही है, वह मैं करके भी दिखला दूँगा।

इयागो : ठीक; अब देखता हूँ कि तुम्हारे अन्दर कुछ दम है। मैंने तो इसी वक़्त से अपनी राय बदल दी। तुम्हारे बारे में इतनी अच्छी राय मेरी पहले कभी नहीं थी। अपना हाथ मुझे दो, राडरीगो। तुमने मेरे ख़िलाफ़ जो शिकायत की, वह बिल्कुल बजा है; लेकिन, फिर भी मैं ज़ोर देकर कहूँगा कि तुम्हारे मामले में मैंने बड़ी ही सच्चाई से काम किया है।

राडरीगो : ज़ाहिर तो नहीं हुआ।

इयागो : बेशक; मैं यह मानता हूँ कि ज़ाहिर तो नहीं हुआ, और तुम्हारा शुबहा भी बेवजह और बेअक़्ली का नहीं है। लेकिन, राडरीगो, अगर सचमुच तुम्हारे अन्दर वह है, जिसके तुममें होने का सबूत जितना मुझे आज मिला है उतना पहले कभी नहीं मिला था; मेरा मतलब है, क़स्द, हिम्मत, ताक़त से; तो आज रात को तुम कुछ कर दिखाओ। और कल ही रात को अगर तुम डेसडिमोना के मज़े न लूटो तो तुम मेरे साथ जो चाहो वह करो, जिस तरह से भी तुम चाहो मुझे इस दुनिया से नेस्त-नाबूद कर दो।

राडरीगो : अच्छा, तो क्या करना है? मगर काम अक़्ल का हो, और मुमकिन हो।

इयागो : सुनो, वेनिस से एक ख़ास हुक्मनामा आया है कि ओथेलो की जगह पर कैसियो को तैनात किया जाय।

राडरीगो : सच? तब तो ओथेलो और डेसडिमोना वेनिस को वापस चले जायँगे।

इयागो : अरे, नहीं। वह जायगा मारीतानिया और खूबसूरत डेसडिमोना को अपने साथ ले जायगा। उसे रोकने की सूरत सिर्फ़ एक है कि यहाँ कोई वारदात हो जाय; और सबसे पुरअसर वह होगी जिससे कैसियो को दूर कर दिया जाय।

राडरीगो : उसे दूर कर दिया जाय! तुम्हारा मतलब?

इयागो : यही कि उसे इस क़ाबिल ही न रक्खा जाय कि ओथेलो की जगह ले सके; उसका भेजा फोड़ दिया जाय।

राडरीगो : और तुम चाहते हो कि यह काम मैं करूँ?

इयागो : बेशक; अगर तुममें अपने फ़ायदे की और जा बात करने की जुर्रत है। आज रात को वह एक फ़ाहशा के यहाँ खाना खा रहा है, और वहीं मैं उससे मिलूँगा। उसे अभी अपनी खुशक़िस्मती का पता नहीं। मैं ऐसा इन्तज़ाम करूँगा कि वह बारह और एक के बीच में जाए। अगर तुम उसके रास्ते पर ताक लगाए रहो तो तुम चुटकियों में उसका सफ़ाया कर सकते हो। पास ही मैं रहूँगा, तुम्हारी चोट पर चोट लगाने को; और वह हम दोनों के बीच ढेर हो जायगा। इस तरह मुँह खोलकर खड़े क्या हो? आओ मेरे साथ। मैं तुम्हें यह साबित कर दूँगा कि उसका मरना इतना ज़रूरी है कि उस पर हथियार चलाना तुम अपना फ़र्ज़ समझोगे। रात ढल चली है; उसके खाने पर जाने का वक़्त क़रीब है। तैयारी में लग जाओ।

राडरीगो : उसे खत्म करने के लिए और वजहें भी सुनूँगा।

इयागो : और मैं सुनाऊँगा भी, आओ!

[दोनों बाहर जाते हैं

तीसरा दृश्य

गढ़ का एक दूसरा कमरा

(ओथेलो, लोडोविको, डेसडिमोना, एमीलिया और नौकर-चाकर आते हैं।)

डोविको : श्रीमन्, सुनिए, अब आगे मत कष्ट कीजिए।

ओथेलो : कष्ट कहाँ का? चलना मेरे लिए भला है।

डोविको : नमस्कार है, देवि विदा दें, धन्यवाद लें।

डिमोना : माननीय ने बड़ी कृपा की।

ओथेलो : श्रीमन् क्या
पैदल जाएँगे?—डेसडिमोना—

डिमोना : मेरे स्वामी?

ओथेलो : तुम सीधे बिस्तर में जाओ; मैं अभी लौटा। सेविका को छुट्टी दे देना। देखना, यह सब हुआ रहे।

इयागो : मुझ पर ऐसी तोहमत लगाना, तुम्हारी बड़ी बेइन्साफ़ी है।

राडरीगो : पर क्या मैंने झूठ लगाया है? अपनी हैसियत से कहीं ज़्यादा मैं फूँक बैठा हूँ। डेसडिमोना को देने के लिए जो ज़ेवर तुम मुझसे ले गए थे, उनसे तो बड़ी पाक-साफ़ का भी मन डोल जाता। तुमने कहा था कि उसने उन्हें मंजूर किया है और कहलाया है कि इन्तज़ारी करते रहो; कभी अचानक तुम्हारे सामने हो तुमसे दोस्ती बढ़ाऊँगी और तुम्हारा दिल बहलाऊँगी, पर उसके बाद कहीं कुछ भी नहीं।

इयागो : अच्छा जाओ; अच्छी बात है।

राडरीगो : 'अच्छी बात है! अच्छा जाओ!' मैं ऐसे नहीं जा सकता; और न यह अच्छी बात है। क़सम खाकर कहता हूँ, यह बहुत बुरी बात है; और अब मुझे लगता है कि तुमने मुझे खूब उल्लू बनाया है।

इयागो : अच्छी बात है।

राडरीगो : मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि यह अच्छी बात नहीं है। मैं डेस-डिमोना के सामने अपने को ज़ाहिर कर दूँगा। अगर वह मेरे ज़ेवर लौटा देती है तो मैं उसका पीछा करना छोड़ दूँगा, और नाजायज़ तरीके से उसके पास पहुँचने के लिए माफ़ी माँग लूँगा। अगर नहीं, तो यक़ीन रक्खो मैं तुमसे समझूँगा।

इयागो : अब तुमने बात कही है।

राडरीगो : और जो मैंने कही है, वह मैं करके भी दिखला दूँगा।

इयागो : ठीक; अब देखता हूँ कि तुम्हारे अन्दर कुछ दम है। मैंने तो इसी वक़्त से अपनी राय बदल दी। तुम्हारे बारे में इतनी अच्छी राय मेरी पहले कभी नहीं थी। अपना हाथ मुझे दो, राडरीगो। तुमने मेरे ख़िलाफ़ जो शिकायत की, वह बिल्कुल बजा है; लेकिन, फिर भी मैं ज़ोर देकर कहूँगा कि तुम्हारे मामले में मैंने बड़ी ही सच्चाई से काम किया है।

राडरीगो : ज़ाहिर तो नहीं हुआ।

इयागो : बेशक; मैं यह मानता हूँ कि ज़ाहिर तो नहीं हुआ, और तुम्हारा शुबहा भी बेवजह और बेअक़्ली का नहीं है। लेकिन, राडरीगो, अगर सचमुच तुम्हारे अन्दर वह है, जिसके तुममें होने का सबूत जितना मुझे आज मिला है उतना पहले कभी नहीं मिला था; मेरा मतलब है, क़स्द, हिम्मत, ताक़त से; तो आज रात को तुम कुछ कर दिखाओ। और कल ही रात को अगर तुम डेसडिमोना के मज़े न लूटो तो तुम मेरे साथ जो चाहो वह करो, जिस तरह से भी तुम चाहो मुझे इस दुनिया से नेस्त-नाबूद कर दो।

राडरीगो : अच्छा, तो क्या करना है? मगर काम अक़्ल का हो, और मुमकिन हो।

इयागो : सुनो, वेनिस से एक ख़ास हुक्मनामा आया है कि ओथेलो की जगह पर कैंसियो को तैनात किया जाय।

राडरीगो : सच? तब तो ओथेलो और डेसडिमोना वेनिस को वापस चले जायँगे।

इयागो : अरे, नहीं। वह जायगा मारीतानिया और ख़ूबसूरत डेसडिमोना को अपने साथ ले जायगा। उसे रोकने की सूरत सिर्फ़ एक है कि यहाँ कोई वारदात हो जाय; और सबसे पुरअसर वह होगी जिससे कैसियो को दूर कर दिया जाय।

राडरीगो : उसे दूर कर दिया जाय! तुम्हारा मतलब?

इयागो : यही कि उसे इस क़ाबिल ही न रक्खा जाय कि ओथेलो की जगह ले सके; उसका भेजा फोड़ दिया जाय।

राडरीगो : और तुम चाहते हो कि यह काम मैं करूँ?

इयागो : बेशक; अगर तुममें अपने फ़ायदे की और जा बात करने की जुर्रत है। आज रात को वह एक फ़ाहशा के यहाँ खाना खा रहा है, और वहीं मैं उससे मिलूँगा। उसे अभी अपनी खुशक़िस्मती का पता नहीं। मैं ऐसा इन्तज़ाम करूँगा कि वह बारह और एक के बीच में जाए। अगर तुम उसके रास्ते पर ताक लगाए रहो तो तुम चुटकियों में उसका सफ़ाया कर सकते हो। पास ही मैं रहूँगा, तुम्हारी चोट पर चोट लगाने को; और वह हम दोनों के बीच ढेर हो जायगा। इस तरह मुँह खोलकर खड़े क्या हो? आओ मेरे साथ। मैं तुम्हें यह साबित कर दूँगा कि उसका मरना इतना ज़रूरी है कि उस पर हथियार चलाना तुम अपना फ़र्ज़ समझोगे। रात ढल चली है; उसके खाने पर जाने का वक़्त क़रीब है। तैयारी में लग जाओ।

राडरीगो : उसे खत्म करने के लिए और वजहें भी सुनूँगा।

इयागो : और मैं सुनाऊँगा भी, आओ!

[**दोनों बाहर जाते हैं**

तीसरा दृश्य

गढ़ का एक दूसरा कमरा

(ओथेलो, लोडोविको, डेसडिमोना, एमीलिया और नौकर-चाकर आते हैं।)

लोडोविको : श्रीमन्, सुनिए, अब आगे मत कष्ट कीजिए।

ओथेलो : कष्ट कहाँ का? चलना मेरे लिए भला है।

लोडोविको : नमस्कार है, देवि विदा दें, धन्यवाद लें।

डेसडिमोना : माननीय ने बड़ी कृपा की।

ओथेलो : श्रीमन् क्या पैदल जाएँगे?—डेसडिमोना—

डेसडिमोना : मेरे स्वामी?

ओथेलो : तुम सीधे बिस्तर में जाओ; मैं अभी लौटा। सेविका को छुट्टी दे देना। देखना, यह सब हुआ रहे।

डेसडिमोना : हुआ रहेगा, मेरे स्वामी।

[ओथेलो, लोडोविको और नौकर-चाकर बाहर जाते हैं

एमीलिया : अब कैसे हैं? अब तो मालिक के चेहरे पर पहले से कुछ नर्मी दिखलाई पड़ती है।

डेसडिमोना : कहा उन्होंने है कि अभी वे लौट रहे हैं।
मुझको आज्ञा दी है मैं बिस्तर में जाऊँ,
औ' आदेश दिया है, तुमको छुट्टी दे दूँ।

एमीलिया : मुझको छुट्टी!

डेसडिमोना : ऐसा ही आदेश दिया था;
इस कारण, अच्छी एमीलिया, मुझको मेरा
रतजामा दो, और विदा हो। हमें उन्हें अब
नाखुश करना ठीक न होगा।

एमीलिया : अच्छा होता,
आप कैसियो को मत मिलतीं।

डेसडिमोना : मैं नो ऐसा
नहीं समझती। स्वामी के प्रति मुझमें इतना
प्रेम भरा है, उनका ज़िद करना, झुँझलाना,
झिड़की देना—सब मुझको प्यारा लगता है,
अच्छा लगता। मेरी पिन तो ज़रा खोल दो।

एमीलिया : वही चादरें मैंने बिस्तर पर कर दी हैं।

डेसडिमोना : सभी एक-सी। सच, हममें कितनी नादानी!
देखो, अगर तुम्हारे पहले मैं मर जाऊँ
तो, मेरी ऐसी इच्छा है, एक उन्हीं में
से ले मुझ पर क़फ़न ओढ़ाना।

एमीलिया : यों मत कहिए।

डेसडिमोना : मेरी माँ की एक सेविका थी, उसका था
नाम बर्बरा। उसे किसी से प्रेम हो गया।
जिससे उसने प्रेम किया था, पागल निकला;
बेचारी को छोड़ गया। वह एक विरह का
गीत सदा गाया करती थी। गीत पुराना
था, पर उसमें पीर उसी की बोल रही थी।
गाते-गाते उसने अपने प्राण दे दिए।
आज रात को गीत वही मेरे कानों में
गूँज रहा है। बहुत करूँ मैं, पर मेरा जी
यही चाहता, सिर को एक तरफ़ लटकाकर
बेचारी बर्बरा की तरह उसको गाऊँ।
जल्दी ख़त्म करो।

एमीलिया : रतजामा लाकर दे दूँ।

डेसडिमोना : नहीं, दूसरा पिन भी खोलो। लोडोविको
बड़ा सुन्दर है।

एमीलिया : बड़ा ख़ूबसूरत जवान है।

डेसडिमोना : बातचीत भी अच्छी करता।

एमीलिया : उसके होठों को बस एक बार छूने के लिए वेनिस की औरतें, नंगे पाँव फ़िलिस्तीन तक भागतीं।

डेसडिमोना : (गाती है।)

मोहें छोड़ गए मँझधार;
नैया डूबती।
झाँझर नैया, कोउ न खेवैया,
डाँड नहीं पतवार;
नैया डूबती।
मोहें छोड़ गए मँझधार;
नैया डूबती।
घोर झकोर बहे पुरवैया;
पाल भया तार-तार;
नैया डूबती।
मोहें छोड़ गए मँझधार;
नैया डूबती।

इनको रख दो।

(उतारे हुए कपड़े देती है।)

मोहें छोड़ गए मँझधार;
नैया डूबती।

तुम अब जाओ; वे जल्दी ही आते होंगे।

डगमग डोले खाय झकोले,
लहर उठें ज्यों पहार;
नैया डूबती।
मोहें छोड़ गए मँझधार;
नैया डूबती।

हाँ, उसकी अन्तिम कड़ियाँ यों। ज़रा सुनो तो, कोई दरवाज़ा खड़काता।

एमीलिया : हवा चल रही।

डेसडिमोना : (फिर गाने लगती है।)

दूर किनारा, कोई न सहारा,
कौन सुनेगा पुकार;
नैया डूबती।
मोहें छोड़ गए मँझधार;
नैया डूबती।
मैं न बचूंगी, डूबूँ-मरूँगी,
राखे उन्हें करतार;
नैया डूबती।
मोहें छोड़ गए मँझधार।

अब तुम जाओ, नमस्कार है। मेरी आँखों में खुजली है। कहते हैं जिसकी आँखों में खुजली होती, उसको जल्दी रोना पड़ता।

एमीलिया : इसमें कोई सत्य नहीं है।

डेसडिमोना : मैंने ऐसा,
सुन रक्खा है।—पुरुष बड़े टेढ़े होते हैं।
ओ, कितने टेढ़े होते हैं!—सुन, एमीलिया,
सच-सच बतला, ऐसी भी औरतें कहीं क्या
होती हैं जो इस प्रकार के बुरे काम कर
अपने पतियों से धोखेबाजी करती हैं?

एमीलिया : होती हैं; इसमें क्या शक है?

डेसडिमोना : तुझको कोई
सारी दुनिया भी दे डाले तो, सच बतला,
क्या तू ऐसा काम करेगी?

एमीलिया : क्यों न करूँगी?
और आप क्या नहीं करेंगी?

डेसडिमोना : जब तक सूरज-
चाँद चमकते मैं तो ऐसा नहीं करूँगी।

एमीलिया : सूरज-चाँद चमकते हों तो मैं भी ऐसा
नहीं करूँगी, मगर अँधेरे में, हो सकता
है, मैं कर लूँ।

डेसडिमोना : सच कहती हूँ, तू सब दुनिया
पाने पर भी ऐसा काम नहीं कर सकती।

एमीलिया : सुनिए, दुनिया, बहुत बड़ी है। मुझे ज़रा-से
बुरे काम का कितना भारी दाम मिलेगा!

डेसडिमोना : सच; मेरा मन कहता है, तू नहीं करेगी।

एमीलिया : सच, मेरा मन कहता है, मैं ज़रूर करूँगी; और करके छोड़ दूँगी। यह ठीक है कि मैं थोड़ी-सी ज़मीन, थोड़े-से गहने-कपड़े या छोटी-मोटी चीज़ों के लिए ऐसा काम नहीं करूँगी, लेकिन सारी दुनिया!—अगर किसी का मियाँ सारी दुनिया का राजा बन सके, तो उसकी थोड़ी-सी नाक कटने की परवाह कौन करेगा? मैं तो इसके लिए नरक की भी परवाह न करूँ।

डेसडिमोना : सारी दुनिया पाने पर भी जो मैं ऐसी
बेजा बात करूँ तो सौ धिक्कार मुझे है।

एमीलिया : मैं ऐसा नहीं मानती। जो बेजा है वह तो दुनिया में ही है न? और जब अपने काम से सारी दुनिया ही हाथ में आ गई, तो वह बेजा भी अपने हाथ में आ गया। बस, चट से बेजा को जा कर दीजिए।

डेसडिमोना : मैं तो नहीं समझती कोई ऐसी होगी।

एमीलिया : ऐसी तो दर्जनों मिलेंगी; इतनी, जितनी
समा न पाएँ, इस दुनिया में जिसकी खातिर
वे अपनी आबरू दाँव पर चट धर देंगी।
लेकिन, मैं यह खूब समझती हूँ, बीवी जब
नीचे गिरती, तब क़सूर किसका होता है?
सिर्फ़ मियाँ का। वह अपना सब फ़र्ज़ भुला दे,

मेरी दौलत से औरों की झोली भर दे,
बिला वजह वह शुबहा करने लगे किसी दिन,
नज़र कड़ी रक्खे, या मुझ पर हाथ चला दे,
या कि तंग करने को मेरा ख़र्च रोक दे,
तो क्यों गुस्सा मुझे न आए ? माना, हममें
रहम-फ़हम है, पर बदला लेना भी हमसे
बरी नहीं है। मियाँ समझ लें, कि बीवियों के
भी दिल होता, आँख-नाक उनके भी होतीं;
उनकी भी ज़बान मीठा-कड़ुआ बतलाती;
घरवाली को ठुकराकर बाहरवाली को
अपनाते हैं, तो वे ऐसा क्यों करते हैं ?
शौक़ के लिए ? हाँ, ऐसा भी हो सकता है।
या कि मुहब्बत ज़ोर मारती ? हाँ, वह ऐसा
भी करती है। या दिल की कोई कमज़ोरी
ऐसी भूल करा देती है ? हाँ ऐसा भी
होता ही है। औ' क्या हममें शौक़ नहीं, या
नहीं मुहब्बत, और नहीं वह सब कमज़ोरी
जो मर्दों में पाई जाती ? तो उनका बर्ताव
हमारे साथ भला हो। वर्ना इसको
अच्छी तरह समझ लें, हममें जो बुराइयाँ
आई हैं, वे सारी उनकी सिखलाई हैं।

[**नमस्कार करके बाहर जाती है**

डेसडिमोना : नमस्कार है। मुझमें ऐसी क्षमता आए,
मुझे बुरी भी, बुरा न करके, भली बनाए।

[**बाहर जाती है**

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

साइप्रस की एक गली

(इयागो और राडरीगो आते हैं।)

इयागो : यह दूकान, ज़रा-सी जो आगे निकली है,
इसके पीछे खड़े रहो तुम; वह जल्दी ही
आता होगा। तेग़ा अपना बाहर कर लो,

बस घुसेड़ देना छाती में। देर करो मत,
फ़ौरन जाओ, डर की कोई बात नहीं है;
मैं पीछे ही खड़ा रहूँगा। सुनो, हमारा
बनना और बिगड़ना—सब कुछ इसी बात पर।—
यह न भूलना और इरादा पक्का रखना।

राडरीगो : रहो पास ही; मेरा वार न ख़ाली जाए।

इयागो : बस पीछे हूँ; हिम्मत बाँधो; ताक में रहो।

[**दूकान के पीछे चला जाता है**

राडरीगो : ऐसा करना मुझको बहुत पसन्द नहीं है;
फिर भी उसने वजह बताई, जो जँचती है।
एक आदमी ही तो मरता। तेग़ा मेरा
चला कि उसका हुआ ख़ात्मा।

इयागो : इस चोंगट लौंडे को मैंने ऐसा घिस्सा
दिया कि उसको अक़्ल आ गई; उसका ग़ुस्सा
भड़क उठा है। अब चाहे कैसियो मरे उसके
तेग़ से, या कि राडरीगो को ही वह
मार गिराए, या लड़कर दोनों मर जाएँ,
मेरी पाँचों उँगली घी में। बचा राडरीगो
तो वह वापस माँगेगा वह सब सोना—
ज़ेवर जो मैं डेसडिमोना को देने को
उसको झाँसा देकर लाया।
उसका बचना ठीक नहीं है। बचा कैसियो
तो उसकी ज़िन्दगी ख़ूबसूरत इतनी है,
मुझको हर दिन बदसूरत साबित करती है।
फिर, हब्शी ने अगर सामना करा दिया तो
मैं ख़तरे में पड़ जाऊँगा। नहीं, उसे भी
मरना होगा। बचे न वह भी। उसके पैरों
की आहट कानों में आती।

(**कैसियो आता है।**)

राडरीगो : चाल उसी की
लगती। वह ही। मरता है, बदमाश कहीं के !

(**कैसियो के ऊपर वार करता है।**)

कैसियो : वार यह मुझे ले ही जाता, पर तुझको यह
पता नहीं है, कवच पहनता हूँ मैं नीचे।
अभी सबक़ सिखलाता तुझको।

(**तलवार निकालकर राडरीगो को घायल कर देता है।**)

राडरीगो : अरे मरा मैं।

(**पीछे से इयागो कैसियो के पाँव को घायल करके भाग निकलता है।**)

कैसियो : पाँव गया रे ! अरे बचाओ ! हत्या ! हत्या !

(गिर पड़ता है।)

(ओथेलो आता है।)

ओथेलो : यह आवाज़ कैसियो की है। अपनी बात
इयागो रखता।

राडरीगो : करनी का फल मुझे मिल गया !

ओथेलो : मिलना ही था।

कैसियो : अरे, बचाओ। कोई आओ !
करो रोशनी ! अरे डाक्टर को बुलवाओ !

ओथेलो : ठीक, वही है। वीर इयागो, तुम कितने
सच्चे, कितने ईमान के धनी। एक मित्र की
आन के लिए, तुमने अपने प्राणों को
बाज़ी पर रक्खा। तुमसे बहुत सीखना मुझको।—
मनोमोहिनी, तेरा मोहन मरा पड़ा है,
औ' तेरा दुर्भाग्य झपटने को ही तुझ पर।
कुलटे, मैं आता हूँ। अब तेरी आँखों का
जादू मेरे मन के ऊपर नहीं चलेगा,
तेरी पाप-सेज पर तेरा ख़ून बहेगा।

[बाहर चला जाता है

(लोडोविको और ग्रेशियानो आते हैं।)

कैसियो : कोई सुनता नहीं ? यहाँ पर ख़ून हो गया !
कोई पहरा नहीं ? न कोई आता-जाता ?

ग्रेशियानो : दुर्घटना हो गई ; दर्द से भरी पुकारें।

कैसियो : अरे, बचाओ !

लोडोविको : षी !

राडरीगो : ओ लुच्चे, बदमाश !

लोडोविको : लगता है दो-तीन तड़पते। घनी रात है।
कहीं न आवाज़ें जाली हों। बिना और
लोगों के आये, इस कराह में धँसना, ख़तरा।

राडरीगो : कोई पास नहीं आता है ? तब तो ऐसे
बहते-बहते ख़ून जान ही चली जायगी।

लोडोविको : षी !

(इयागो मशाल लेकर लौटता है।)

ग्रेशियानो : यह मशाल, तलवार लिये कोई आता है !

इयागो : कौन यहाँ है जो चिल्लाता, 'हत्या ! हत्या !'

लोडोविको : नहीं पता।

इयागो : क्या तुमने नहीं सुनीं आवाजें ?

कैसियो : यहाँ, यहाँ ! भगवान तुम्हारा भला करेगा,
मुझे बचाओ !

इयागो : यहाँ मामला कुछ गड़बड़ है।

ग्रेशियानो : यह झंडाबरदार, ओथेलो का, लगता है।

लोडोविको : ठीक; वही है; बड़ा बहादुर नौजवान है।

इयागो : यहाँ पड़े तुम कौन दर्द से कराहते हो ?

कैसियो : अरे इयागो, तुम हो ? मुझ पर गुंडे टूटे
औ' मेरी यह गत कर डाली; मुझे बचाओ !

इयागो : तुम हो क्या, ओ सह-सेनापति ? किन गुंडों की
यह बदमाशी ?

कैसियो : मुझको लगता, यहीं कहीं पर
एक छिपा है, और भाग वह नहीं सकेगा।

इयागो : दग़ाबाज़, बदमाशो।

(ग्रेशियानो और लोडोविको से)

तुम हो कौन वहाँ पर ?
आओ ज़रा मदद दो।

राडरीगो : मदद मुझे भी देना !

कैसियो : एक यही है।

इयागो : ले, क़ातिल ! बदमाश कहीं के !

(राडरीगो की छाती में तलवार भोंकता है।)

राडरीगो : ओ शैतान इयागो ! नमकहरामी कुत्ते !

इयागो : ख़ून रात में करना ! बाक़ी चोर कहाँ हैं ?
शहर पड़ा सुनसान ! ख़ून हो गया यहाँ पर !
ख़ून।

(ग्रेशियानो और लोडोविको से)

अरे, तुम लोग कौन हो ? भले कि शोहदे ?

लोडोविको : पहचानोगे तो तुम हमको भला कहोगे।

इयागो : क्या जनाब लोडोविकोऽ हैं ?

लोडोविको : हाँ, मैं ही हूँ।

इयागो : मुझे माफ़ कीजिए। कैसियो को गुंडों ने
ज़ख़्मी कर डाला।

ग्रेशियानो : क्या तुमने कहा, कैसियो !

इयागो : कहो बिरादर, क्या हालत है ?

कैसियो : लगता मेरा
पाँव कट गया।

इयागो : ऐसा न कहो ! हिम्मत बाँधो !
ज़रा रोशनी ! मैं क़मीज़ से घाव बाँधता।

(बियांका आती है।)

बियांका : बात क्या हुई, अरे ! कौन था, चिल्लाता था ?

इयागो : 'अरे, कौन था, चिल्लाता था?'
बियांका : हाय कैसियो! हाय कैसियो, मेरे प्यारे!
हाय कैसियो! हाय कैसियो!
इयागो : हाय फ़ाहशा औरत!—मेरे दोस्त बताओ
किन लोगों ने तुमको ज़ख़्मी कर डाला है?
तुमको किस पर-किस पर शक है?
कैसियो : नहीं किसी पर
ग्रेशियानो : तुमको ऐसा देख मुझे अफ़सोस बड़ा है।
खोज तुम्हारी ही करने को मैं निकला था।
इयागो : अपनी पट्टी दें। कोई कुरसी मँगवाएँ;
कुरसी से ले चलने में आसानी होगी।
बियांका : ये बेहोश हुए जाते हैं! हाय कैसियो!
इयागो : सुनो साहबो! मुझको शक है कि इस हादसे
के पीछे इस टुच्ची औरत की साज़िश है।
दोस्त कैसियो, ज़रा देर को सब्र करो तुम।
जल्दी! जल्दी! ज़रा रोशनी तो दिखलाओ।

(राडरीगो की लाश को देखकर)

इसका चेहरा तो पहचाना-सा लगता है।
ओ, यह मेरा प्यारा साथी और हमवतन :
अरे, राडरीगो है!—नहीं, यक़ीनन वह है।
आह, राडरीगो ही है यह।
ग्रेशियानो : क्या वेनिस का?
इयागो : जी हाँ, जी हाँ; : क्या जनाब जानते उसे थे?
ग्रेशियानो : उसे? बखूबी।
इयागो : आप जनाब ग्रेशियानो हैं?
माफ़ करेंगे यह ख़ूनी हादसा कि जिससे
मैं हुज़ूर की तरफ़ तवज्जह नहीं दे सका।
ग्रेशियानो : तुमसे मिलकर मुझे खुशी है।
इयागो : कहो कैसियो,
क्या हालत है? कुरसी लाओ, कुरसी लाओ!
ग्रेशियानो : राडरीगो!
इयागो : वही, वही है, वही। क्या कहा, कुरसी लाए।

(कुछ लोग कुरसी लेकर आते हैं।)

इन्हें होशियारी से कुरसी पर ले जाओ;
मैं सेनापति के सरजन को ले आता हूँ।
(बियांका से)
और, श्रीमती, ख़ैर तुम्हारी इसमें ही है
अलग रहो तुम। जो यह घायल पड़ा हुआ है,

मेरा प्यारा दोस्त कैसियो। तुम दोनों के
बीच अदावत थी क्या कोई ?

कैसियो : ज़रा भी नहीं।

(राडरीगो की लाश की तरफ़ इशारा करके)

मैंने इसको पहले कभी नहीं देखा था।

इयागो : **(बियांका से)**
क्यों तुम डरी हुई लगती हो ? **(कुरसी वालों से)**
देखो ठँड न
लगने पाए।

(लोग कैसियो और राडरीगो को ले जाते हैं।)

(ग्रेशियानो और लोडोविको से)

आप लोग ठहरिए यहीं पर।
(बियांका से)
तुम क्यों डरी हुई लगती हो ?
(ग्रे. और लो. से) इसकी आँखों
का भयावनापन तो देखें। ज़रा आँख में
इसकी आँखें डालें, राज़ अभी खुलता है।
आप लोग क्या नहीं देखते ?—कोई अपनी
ज़बाँ न खोले, पर गुनाह खुद बोला करता।

(एमीलिया आती है।)

एमीलिया : हाय, हुआ क्या ? अरे क्या हुआ ? मेरे प्यारे !

इयागो : रात राडरीगो औ' उसके चन्द साथियों
ने हमला कर दिया कैसियो पर, औ' उनकी
मारधाड़ में उसको गहरी चोट आ गई,
और राडरीगो का काम तमाम हो गया।
उसके साथी निकल भगे सब।

एमीलिया : हाय कैसियो !
हाय राडरीगो, क्यों तू मरने आया था।

इयागो : यह रण्डीबाज़ी का फल है। ज़रा कैसियो
से जा पूछो रात कहाँ उसने खाया था।—
(बियांका से)
तुम इस पर क्यों चौंक रही हो ?

बियांका : मेरे घर खाया था। क्यों मैं इस पर चौंकूँ ?

इयागो : हूँ, ऐसा है ? मेरा हुक्म—साथ में आओ।

एमीलिया : छिः, कुलटा, धिक्कार तुझे है !

बियांका : ख़बरदार, कुलटा मत कहना। मैं वैसी ही
पाक-साफ़ हूँ जैसी तुम हो; गाली मत दो।

एमीलिया : जैसी मैं हूँ ! खूब कहा ! तुझ पर सौ लानत !

इयागो : (**ग्रे. और लो. से**)
चलिए देखें कि कैसियो की मरहम-पट्टी
ठीक हो गई।—(**बियांका से**)
चलो, श्रीमती, हमें बताओ,
इस फ़साद के पीछे क्या है।—औ' एमीलिया,
तुम आनन-फ़ानन जा करके क़िले में कहो
मालिक और मालकिन से जो यहाँ हुआ है।
चलो, बढ़ो तुम आगे-आगे।

[**इयागो को छोड़कर सब चले जाते हैं**

यही रात है,
जिसमें मेरी जीत कि मेरी बुरी मात है।

[**बाहर जाता है**

दूसरा दृश्य

गढ़ के अन्दर, सोने का कमरा

(**डेसडिमोना बिस्तर पर सो रही है; एक मोमबत्ती जल रही है।**)

ओथेलो : यही न्याय है, यही न्याय है, ओ मेरे मन !
ओ नभ के निर्मल नक्षत्रो, मत पूछो किस
घृणित पाप का यही न्याय है। इसके तन को,
जो कि स्वच्छ हिम से उज्ज्वल है, जो समाधि में
लगनेवाले सँगमरमर से भी चिकना है,
घायल करके नहीं खून से तर कर सकता।
फिर भी इसको मरना होगा; जीती रहकर
यह बहुतों को धोखा देगी। ठण्डी कर दूँ
पहले यह लौ, तब फिर इस जीवन की लौ को।
ओ जगमग लौ, अगर बुझा देता मैं तुझको,
और मुझे पछतावा होता, तो मैं तुझमें
फिर से पहलेवाली जोत जगा सकता हूँ।
लेकिन तेरी जोत अगर ठण्डी कर देता,
तेरी, जो तू छली प्रकृति की महाचातुरी
भरी पोटली, तो मुझको मालूम नहीं है

वह नैसर्गिक ज्वाल कहाँ है जिससे तुझको
पुनः जगा लूँ। फूल तोड़ लेने पर कोई
उसमें फिर से जीवन-रस कब दे पाता है?
वह तो कुम्हला ही जाता है। इसे सूँघ लूँ
जबकि डाल में लगा हुआ यह।

(डेसडिमोना के गाल चूमता है।)

इसकी साँसों
का मलयानिल अगर करे मनुहार न्याय से,
तो वह अपना खड्ग तोड़ दे। एक बार फिर,
एक बार फिर!

(डेसडिमोना के गाल चूमता है।)

मरने पर भी इसी तरह रह;
तुझे मारकर फिर मैं तुझको प्यार करूँगा।
एक बार फिर, एक बार, आखिरी बार, फिर।

(डेसडिमोना के गाल चूमता है।)

इतनी मधुमय, इतनी विषमय कभी नहीं थी।
मेरे आँसू निकल पड़े हैं, लेकिन इनमें
निर्ममता है। नैसर्गिक यह विषम व्यथा है;
जो प्रहार करती है प्यार जहाँ करती है।
जाग पड़ी यह।

डेसडिमोना : कौन? ओथेलो?

ओथेलो : हाँ मैं ही हूँ; डेसडिमोना।

डेसडिमोना : मेरे स्वामी, आएँ बिस्तर में सो जाएँ।

ओथेलो : आज रात को ईश-प्रार्थना तुमने की थी?

डेसडिमोना : की थी स्वामिन।

ओथेलो : अगर सोचती हो, तुमने कुछ
ऐसा पाप किया है, जिसको नहीं स्वर्ग के
आगे माना, जिसकी प्रभु से क्षमा न माँगी,
तो तत्काल उसे स्वाकारो, क्षमा माँग लो।

डेसडिमोना : हैं, इन बातों से स्वामी का मतलब क्या है?

ओथेलो : खैर, प्रार्थना जल्दी कर ले, बहुत बोल मत;
तब तक यहीं टहलता हूँ मैं। औचक तेरे
प्राण न लूँगा; नहीं, स्वर्ग ऐसा न कराए।
मैं तेरी आत्मा का हंता नहीं बनूँगा!

डेसडिमोना : मुझे मारना चाह रहे हो?

ओथेलो : हाँ, अवश्य ही।

डेसडिमोना : तब तो मेरे ऊपर स्वर्ग दया दिखलाए।

ओथेलो : मैं अपने पूरे दिल से 'आमीन' कहूँगा।

डेसडिमोना : यदि ऐसा है तो तुम मुझे नहीं मारोगे।

ओथेलो : हूँ !

डेसडिमोना : फिर भी तुमसे मैं डरती हूँ। तुम पर खून
सवार हुआ करता है जब, तब इसी तरह
पुतलियाँ तुम्हारी नाचा करतीं। मैं तुमसे क्यों
डरती हूँ, मैं नहीं जानती; नहीं जानती
क्या मैंने अपराध किया है, फिर भी तुमसे
मैं डरती हूँ।

ओथेलो : तू अब अपने पाप याद कर।

डेसडिमोना : मेरा पाप यही है, प्यार तुम्हें करती हूँ।

ओथेलो : और इसी के लिए आज मरना है तुझको।

डेसडिमोना : यह तो उल्टी बात, प्यार के लिए किसी को
मारा जाए। हाय, होंठ क्यों चबा रहे हो ?
लगता किसी बड़े खूनी गुस्से के कारण
काँप रहे हो; फिर भी ऐसा नहीं समझती,
नहीं समझती, यह मेरे ऊपर उतरेगा।

ओथेलो : चुप रह, और न बिस्तर से हिल।

डेसडिमोना : नहीं हिलूंगी;
बात क्या हुई ?

ओथेलो : जो रूमाल मुझे इतना प्यारा
था, जिसको मैंने तुझको दिया, कैसियो
को उसको तूने दे डाला।

डेसडिमोना : नहीं, क़सम खा-
कर कह ी हूँ, उसे बुलाकर अभी पूछ लें।

ओथेलो : भोली, चेत, अगर झूठी सौगन्ध खायगी,
नरक जाएगी। मृत्यु-सेज के ऊपर तू है।

डेसडिमोना : मुझको अभी मार डालेंगे ?

ओथेलो : हाँ, दम भर में।
इससे खुलकर अपने सब पापों को कह दे।
एक-एक के लिए अलग सौगन्ध उठाकर
भी जो तू इन्कार करेगी, तू न मिटा
पाएगी मेरी वह दृढ़ शंका जो मुझको
खाए जाती है। आज तुझे मरना ही होगा।

डेसडिमोना : तब तो मुझ पर दया करें प्रभु !

ओथेलो : दया करें प्रभु !

डेसडिमोना : तुम भी मुझ पर दया करो ! मैंने जीवन में
कुछ भी, कभी, विरुद्ध तुम्हारे नहीं किया है।
औ' न कैसियो को ही मैंने प्यार दिया है—
अगर दिया है, तो बस इतना, जितना प्रभु की
आज्ञा है सब संसारी आपस में दें-लें।
मैंने उसको कभी नहीं उपहार दिया है।

ओथेलो : सप्त स्वर्ग साखी हों, मैंने इन आँखों से
वह रूमाल कैसियो की मुट्ठी में देखा।

नारि नारकी ! तू मेरी छाती को पत्थर
बना रही है। और विवश करती है मुझको
कि जो चाहता हूँ मैं करना उसको 'हत्या'
कहूँ, जबकि 'बलिदान' उसे मैं मान रहा हूँ।
मैंने वह रूमाल स्वयं देखा है।

डेसडिमोना : तब तो
उसे कहीं पर पड़ा मिला है। उसे बुलाएँ,
वह बतलाए, सच-सच···

ओथेलो : उसने बतलाया है।

डेसडिमोना : क्या बतलाया ?

ओथेलो : उसने तेरे साथ किया है···

डेसडिमोना : क्या ? बेजा कुछ ?

ओथेलो : हाँ।

डेसडिमोना : वह ऐसा कह न सकेगा।

ओथेलो : कभी नहीं। अब उसकी 'बोली बन्द हो चुकी।
सच्चा दोस्त इयागो उससे समझ चुका है।

डेसडिमोना : हाय, मुझे इसकी शंका थी। नहीं रहा वह ?

ओथेलो : उसके तन में जितने रोएँ उतने जीवन
लेकर भी वह आया होता तो बदले की
महाज्वाल जो मेरे तन में धधक रही है
उसको आत्मसात कर जाती।

डेसडिमोना : हाय, किसी ने
उसे छला है और नहीं मैं रही कहीं की।

ओथेलो : हट, कुलटे ! मेरे आगे उसको रोती है।

डेसडिमोना : देश-निकाला मुझको दे दें, मुझे न मारें !
मेरे स्वामी !

ओथेलो : हट कलंकिनी !

डेसडिमोना : कल मारें, बस
आज रात मुझको जीने दें !

ओथेलो : ख़बरदार जो तूने बचने की कोशिश की।

डेसडिमोना : मुझे आध घण्टा जीने दें।

ओथेलो : हाथ बढ़ चुका,
अब न खिंचेगा।

डेसडिमोना : एक प्रार्थना भर करने दें।

ओथेलो : वक़्त नहीं अब !

(डेसडिमोना का गला घोट देता है।)

एमीलिया : **(नेपथ्य से)**
मेरे मालिक, नहीं सुन रहे।

ओथेलो : यह गुल कैसा ! साँस अभी है। मरी नहीं है।
मैं निर्दय हूँ, साथ दया भी मेरे अन्दर;
तुझे दर्द में नहीं तड़पने दूँगा ऐसे।

और दबा दूँ, और दबा दूँ।

(फिर गला घोटता है।)

एमीलिया : (नेपथ्य में)

नहीं सुन रहे ?

मेरे मालिक ! मेरे मालिक !

ओथेलो : कौन द्वार पर !

एमीलिया : (नेपथ्य में)

मेरे मालिक मुझे आपसे कुछ कहना है।

ओथेलो : हाँ, यह एमीलिया लगती है। अभी बुलाता।
अब यह मुर्दा पड़ी। कैसियो के मरने का
समाचार देने को शायद वह आई है।
घबराई आवाज़ लगी थी। अह, अब कोई
अंग न हिलता। क़ब्र की तरह शान्त पड़ी है।
उसे बुला लूँ ? उसका आना ठीक रहेगा ?
मुझको लगता फिर कि लाश में हरकत होती !
नहीं, वहम था ! अब क्या करना ठीक रहेगा ?
वह आई तो मेरी पत्नी से बोलेगी।
मेरी पत्नी ! मेरी पत्नी ! कैसी पत्नी !
पत्नी मेरी कहाँ रही अब ! हाय, नहीं झेली
जा सकतीं, जीवन की ये भारी घड़ियाँ !
मुझको लगता ऐसा भीषण ग्रहण लगा है
जिसने सूरज और चाँद को साथ ग्रस लिया
और भयातुर भूमण्डल इस परिवर्तन पर
अपना मुँह बाए बैठा है।

एमीलिया : (नेपथ्य में)

कृपा कीजिए,

मुझे आपसे कुछ कहना है, मेरे मालिक !

ओथेलो : तुझको तो भूल ही गया था। आ एमीलिया।
धड़क न छाती, साँस सँभल जा, पर्दे खींचूँ।
अरी, कहाँ तू ?

(दरवाज़ा खोलता है।)

(एमीलिया आती है।)

तू घबराई क्यों लगती है ?

एमीलिया : मेरे मालिक, बड़ा भयंकर खून हो गया !

ओथेलो : कब ?

एमीलिया : बस मालिक, अभी-अभी ही।

ओथेलो : लगता जैसे चाँद रास्ता भूल गया है।
कहते हैं, जब वह धरती के पास चला
आया करता है, लोगों को पागल कर देता।

एमीलिया : अभी कैसियो ने वेनिस का एक जवान
क़त्ल कर डाला; उसका नाम राडरीगो है।

ओथेलो : मरा राडरीगो क्या ! औ' कैसियो भी मरा ?

एमीलिया : नहीं, कैसियो नहीं मरा है।

ओथेलो : नहीं मरा कैसियो
अगर तो, हत्या ठीक नहीं हो पाई,
औ' बदले से जो सन्तोष मुझे मिलना था,
दूर हो रहा।

डेसडिमोना : निरपराध ही, निरपराध ही,
मेरी हत्या, हाय, हुई है !

एमीलिया : हाय, कहाँ से
रोने की आवाज़ हुई है ?

ओथेलो : वह ! क्या अब भी ?

एमीलिया : यह तो मेरी, हाय, मालकिन की बोली थी।
अरे बचाओ, अरे बचाओ, हाय मालकिन,
फिर से बोलो ! हा सुकुमारी डेसडिमोना,
हाय, मालकिन मेरी, प्यारी, बोलो-बोलो !

डेसडिमोना : मैं निर्दोष मौत मरती हूँ।

एमीलिया : हा, किसने यह काण्ड किया है ?

डेसडिमोना : नहीं किसी ने, मैंने अपने आप, विदा दो !
मेरे स्वामी को तुम मेरी याद दिलाना—
मेरे करुणामय स्वामी को, विदा, ओ विदा !

[**मर जाती है**

ओथेलो : क्यों, किसने इसकी हत्या की ?

एमीलिया : मैं क्या जानूँ ?

ओथेलो : तुमने उसे स्वयं यह कहते हुए सुना है—
हत्या मेरा काम नहीं था।

एमीलिया : यही कहा था,
मुझको सच-सच बतलाना है।

ओथेलो : यह ऐसी झूठी है, इसको नरक-ज्वाल में
गिरना होगा। मैंने इसकी हत्या की है।

एमीलिया : हा, वह कितनी ऊँची देवी औ' तू कितना
नीच राक्षस !

ओथेलो : वह कुमार्ग पर चली गई थी, वह कुलटा थी।

एमीलिया : झूठ कलंक लगाता उसको, तू राक्षस है।

ओथेलो : वह मृगतृष्णा-सी झूठी थी।

एमीलिया : तू बन दावा-
सा उतावला, जो कहता है वह झूठी थी।
हा, उस देवी में नैसर्गिक पावनता थी।

ओथेलो : देवी फँसी कैसियो से थी। पूछ इसे जा
अपने पति से। इस हद तक जाने को मैंने

अगर सहारा ठीक प्रमाणों का न लिया हो,
तो मैं कुम्भीपाक नरक में गिरूँ सदा को।
तेरे पति को सारे कुछ का खूब पता है।

एमीलिया : मेरे पति को !

ओथेलो : तेरे पति को।

एमीलिया : कि मालकिन ने अपने सत को छोड़ दिया था।

ओथेलो : और कैसियो से अपना नाता जोड़ा था।
सच, यदि वह सतवन्ती होती तो चाहे
निर्मल मरकत का एक नया संसार बनाकर
स्वर्ग सामने मेरे रखता, डेसडिमोना
के बदले मैं उसे न लेता।

एमीलिया : मेरे पति ने
यह बतलाया !

ओथेलो : पहले-पहल उसी ने मुझको
बतलाया था। वह इतना ईमानदार है,
उसे कुकर्मों पर छानेवाले गन्देपन
से नफ़रत है।

एमीलिया : मेरे पति ने यह बतलाया !

ओथेलो : बार-बार इस तरह पूछने का मतलब क्या ?
मैं कहता हूँ, तेरे पति ने।

एमीलिया : हाय मालकिन, छल-बल ने ठग लिया प्रेम को।
मेरे पति ने बतलाया, मालकिन छली थीं !

ओथेलो : हाँ, उसने ही; मैं कहता हूँ, तेरे पति ने।
वह दुनिया को खूब समझता। मेरा मित्र
और तेरा पति, सच्चा, सच्चा सदा, इयागो।

एमीलिया : यदि उसने यह बात कही है तो उसकी
पापिष्ठ आत्मा तिल-तिल करके सड़े नरक में !
उसने बिल्कुल झूठ कहा है। हाय, मालकिन
ने जो गन्द पसन्द किया था, वे उस पर ही
बलिहारी थीं !

ओथेलो : हैं !

एमीलिया : तुने जो काम किया है,
वह कलंक इस तरह स्वर्ग पर जैसे उन पर
तू लगता था।

ओथेलो : भला चाहती है तो चुप रह।

एमीलिया : तुझमें जितनी कहने-करने की ताक़त है,
उससे ज्यादा मुझमें सहने की ताक़त है।
उल्लू ! बुद्धू ! गोबर है तेरे दिमाग़ में !
तूने हत्या की है, तू तलवार दिखाकर
मुझको नहीं डरा सकता है, तेरा भण्डा-
फोड़ करूँगी, चाहे मुझको बीस बार जी-
कर मरना हो। अरे बचाओ, अरे बचाओ !

कोई आओ। सेनापति ने अपनी पत्नी
की हत्या कर दी है। हत्या, खून हो गया !

(मनटानो ग्रेशियानो, इयागो तथा और कई लोग आते हैं।)

मनटानो : बात क्या हुई ? सेनापति जी, बात क्या हुई ?
एमीलिया : अरे इयागो, तुम आ पहुँचे ? अच्छे आए,
हत्या करके लोग तुम्हारे माथे मढ़ते।
ग्रेशियानो : बात क्या हुई ?
एमीलिया : अगर मर्द हो तो इस खल का झूठ खोल दो।
यह कहता है, तुमने इससे कहा कि इसकी
पत्नी ने सत छोड़ दिया था। मुझको है मालूम
कि तुमने नहीं कहा है। तुम ऐसे खल
नहीं कि ऐसी बात निकालो। बोलो, मेरी
छाती फटती।
इयागो : मैंने इनको बतलाया जो
मैंने सोचा। औ' मैंने जो बतलाया था,
उसे इन्होंने ठीक और सच खुद पाया है।
एमीलिया : क्या तुमने यह कहा, मालकिन ने सत छोड़ा।
इयागो : कहा।
एमीलिया : तो तुमने यह झूठ कहा है, बड़ा घिनौना
झूठ कहा है, कहकर तुमने गन्दा, पापी
काम किया है। क़सम उठाकर मैं कहती हूँ !
अरे कहाँ वे, कहाँ कैसियो ! क्या तुमने यह
कहा, कैसियो ने उनके सत को तोड़ा था।
इयागो : ठीक, कैसियो ने ही उनके सत को तोड़ा।
दूर यहाँ से हटो, और मुँह बन्द रहे अब।
एमीलिया : मैं मुँह बन्द नहीं कर सकती, मैं बे-बोले
नहीं रहूँगी। यहाँ मालकिन की, बिस्तर में,
हत्या कर दी गई।
सब : दया कर हम पर भगवन् !
एमीलिया : (इयागो से)
और तुम्हारे कहने से यह काण्ड हुआ है।
ओथेलो : आप लोग ऐसे मत घूरें, यह सब सच है।
ग्रेशियानो : यह अचरज की बात हुई है।
मनटानो : बड़ा राक्षसी काम हुआ है।
एमीलिया : शैतानी है,
शैतानी है ! शैतानी है ! सोच रही हूँ !
समझ गई मैं। भेद खुल गया। शैतानी है !
उसी बात से मेरा माथा ठनक गया था।
इस दुख से तो अच्छा अपनी हत्या कर लूँ।
शैतानी है, शैतानी है !

इयागो : पागल तो तुम नहीं हुई हो। मैं कहता हूँ
घर को जाओ।

एमीलिया : आप लोग सब मुझे बोलने
की आज्ञा दें। मुझे उचित है इनकी मानूँ,
किन्तु नहीं अब। हाय, इयागो, शायद अब मैं
घर को कभी नहीं जाऊँगी।

ओथेलो : ओ ! ओ ! ओ ! ओ !

(बिस्तर पर गिर पड़ता है।)

एमीलिया : नहीं, भूमि पर लोट-लोटकर अब तू चिल्ला।
क्योंकि आज ऐसी प्यारी, भोली, सुकुमारी
की तूने हत्या कर दी है जैसी जग में
कभी न जन्मी।

ओथेलो : **(उठकर)** वह कुमार्ग पर चली गई थी !

(ग्रेशियानो से)

काका, मैंने नाम आपका सिर्फ़ सुना था;
यहाँ आपकी मरी भतीजी पड़ी हुई है;
इन हाथों ने उसकी साँसें बन्द अभी कीं।
ज्ञात मुझे यह दृश्य भयंकर, हृदय-विदारक !

ग्रेशियानो : डेसडिमोन, हा ! भला हुआ यह आज पिता जो
तेरे जीवित नहीं रहे हैं। तेरा ब्याह
उन्हें घातक था। वृद्धावस्था के उस दुख ने
उनको तोड़ दिया अन्दर से। आज अगर वे
जीवित होते तो आँखों से दृश्य देख यह
सँभल न सकते, औ' ऐसा क्या कर न गुज़रते,
चाहे उससे वे अपना सब पुण्य गँवाकर
घोर नरक में जाकर गिरते।

ओथेलो : लज्जा की है बात, इयागो, किन्तु, जानता
है कि सैकड़ों बार कैसियो ने इससे
व्यभिचार किया है। इसे कैसियो ने माना है।
औ' उसके प्रेमाभिसार की यादगार में
इसने उसको वह उपहार दिया है जिसको
मैंने अपनी प्रणय-प्रतिज्ञा की सहदानी
के स्वरूप में इसको पहले-पहल दिया था।
इसे कैसियो के हाथों में मैंने देखा।
यह था वह रूमाल कि जिस पर कढ़ा हुआ था
काम पुराना, जिसको मेरे पूज्य पिता ने
मेरी माँ को भेंट किया था।

एमीलिया : हे भगवान ! सज़ा दो मुझको।

इयागो : खबरदार, जो फिर मुँह खोला।

एमीलिया : बात खलेगी,

कोई आओ। सेनापति ने अपनी पत्नी
की हत्या कर दी है। हत्या, खून हो गया !

(मनटानो ग्रेशियानो, इयागो तथा और कई लोग आते हैं।)

मनटानो : बात क्या हुई ? सेनापति जी, बात क्या हुई ?

एमीलिया : अरे इयागो, तुम आ पहुँचे ? अच्छे आए,
हत्या करके लोग तुम्हारे माथे मढ़ते।

ग्रेशियानो : बात क्या हुई ?

एमीलिया : अगर मर्द हो तो इस खल का झूठ खोल दो।
यह कहता है, तुमने इससे कहा कि इसकी
पत्नी ने सत छोड़ दिया था। मुझको है मालूम
कि तुमने नहीं कहा है। तुम ऐसे खल
नहीं कि ऐसी बात निकालो। बोलो, मेरी
छाती फटती।

इयागो : मैंने इनको बतलाया जो
मैंने सोचा। औ' मैंने जो बतलाया था,
उसे इन्होंने ठीक और सच खुद पाया है।

एमीलिया : क्या तुमने यह कहा, मालकिन ने सत छोड़ा।

इयागो : कहा।

एमीलिया : तो तुमने यह झूठ कहा है, बड़ा घिनौना
झूठ कहा है, कहकर तुमने गन्दा, पापी
काम किया है। क़सम उठाकर मैं कहती हूँ !
अरे कहाँ वे, कहाँ कैसियो ! क्या तुमने यह
कहा, कैसियो ने उनके सत को तोड़ा था।

इयागो : ठीक, कैसियो ने ही उनके सत को तोड़ा।
दूर यहाँ से हटो, और मुँह बन्द रहे अब।

एमीलिया : मैं मुँह बन्द नहीं कर सकती, मैं बे-बोले
नहीं रहूँगी। यहाँ मालकिन की, बिस्तर में,
हत्या कर दी गई।

सब : दया कर हम पर भगवन् !

एमीलिया : **(इयागो से)**
और तुम्हारे कहने से यह काण्ड हुआ है।

ओथेलो : आप लोग ऐसे मत घूरें, यह सब सच है।

ग्रेशियानो : यह अचरज की बात हुई है।

मनटानो : बड़ा राक्षसी काम हुआ है।

एमीलिया : शैतानी है,
शैतानी है ! शैतानी है ! सोच रही हूँ !
समझ गई मैं। भेद खुल गया। शैतानी है !
उसी बात से मेरा माथा ठनक गया था।
इस दुख से तो अच्छा अपनी हत्या कर लूँ।
शैतानी है, शैतानी है !

इयागो : पागल तो तुम नहीं हुई हो। मैं कहता हूँ
घर को जाओ।

एमीलिया : आप लोग सब मुझे बोलने
की आज्ञा दें। मुझे उचित है इनकी मानूँ,
किन्तु नहीं अब। हाय, इयागो, शायद अब मैं
घर को कभी नहीं जाऊँगी।

ओथेलो : ओ ! ओ ! ओ ! ओ !

(बिस्तर पर गिर पड़ता है।)

एमीलिया : नहीं, भूमि पर लोट-लोटकर अब तू चिल्ला।
क्योंकि आज ऐसी प्यारी, भोली, सुकुमारी
की तूने हत्या कर दी है जैसी जग में
कभी न जन्मी।

ओथेलो : (उठकर) वह कुमार्ग पर चली गई थी !

(ग्रे शियानो से)

काका, मैंने नाम आपका सिर्फ़ सुना था;
यहाँ आपकी मरी भतीजी पड़ी हुई है;
इन हाथों ने उसकी साँसें बन्द अभी कीं।
ज्ञात मुझे यह दृश्य भयंकर, हृदय-विदारक !

ग्रे शियानो : डेसडिमोन, हा ! भला हुआ यह आज पिता जो
तेरे जीवित नहीं रहे हैं। तेरा ब्याह
उन्हें घातक था। वृद्धावस्था के उस दुख ने
उनको तोड़ दिया अन्दर से। आज अगर वे
जीवित होते तो आँखों से दृश्य देख यह
सँभल न सकते, औ' ऐसा क्या कर न गुज़रते,
चाहे उससे वे अपना सब पुण्य गँवाकर
घोर नरक में जाकर गिरते।

ओथेलो : लज्जा की है बात, इयागो, किन्तु, जानता
है कि सैकड़ों बार कैसियो ने इससे
व्यभिचार किया है। इसे कैसियो ने माना है।
औ' उसके प्रेमाभिसार की यादगार में
इसने उसको वह उपहार दिया है जिसको
मैंने अपनी प्रणय-प्रतिज्ञा की सहदानी
के स्वरूप में इसको पहले-पहल दिया था।
इसे कैसियो के हाथों में मैंने देखा।
यह था वह रूमाल कि जिस पर कढ़ा हुआ था
काम पुराना, जिसको मेरे पूज्य पिता ने
मेरी माँ को भेंट किया था।

एमीलिया : हे भगवान ! सज़ा दो मुझको।

इयागो : खबरदार, जो फिर मुँह खोला।

एमीलिया : बात खुलेगी,

बात खुलेगी। मैं कैसे चुप रह सकती हूँ।
मैं अब झंझावात की तरह बात कहूँगी।
दानव, देव, मनुष्य सभी मिलकर मुझको
निर्लज्ज कहें तो कहने दो, पर मैं बोलूँगी।

इयागो : बात अक़्ल की कर, घर जा, हट।

एमीलिया : नहीं हटूँगी।

(इयागो एमीलिया पर तलवार उठाता है।)

ग्रेशियानो : शर्म करो, तुम औरत पर तलवार उठाते।

एमीलिया : मूढ़ मूर, सुन, तू जिसकी बातें करता है,
वह रूमाल मिला मौक़े से मुझको, मैंने
अपने पति को दिया, क्योंकि वह इसकी ख़ातिर
मुझसे मिनतें करता था, मैं इसे चुरा लूँ।
मैं सोचूँ, यह क्यों उस मामूली टुकड़े के
लिए इस क़दर परेशान है।

इयागो : बक मत, रण्डी !

एमीलिया : डेसडिमोना ने इसको कैसियो को दिया !
नहीं; बड़ा अफ़सोस, इसे मैंने पाया था।
मैंने अपने हाथ दिया था अपने पति को।

इयागो : गन्दी, झूठ बके जाती है।

एमीलिया : मुझे स्वर्ग की
क़सम, नहीं मैं झूठ बोलती। अरे, नहीं मैं
झूठ बोलती, सबको साखी कर कहती हूँ।
ओ हत्यारे बेवकूफ़ ! तुझ ऐसा बुद्धू
इतनी अच्छी बीवी पा कब रख सकता था।

ओथेलो : आसमान में आँधी-ओले छोड़ नहीं क्या
ऐसे पत्थर, इस पाजी के सिर पर बरसें।
ओ शातिर शैतान कहीं के।

(इयागो की तरफ झपटता है; मनटानो ओथेलो को रोकने का प्रयत्न करता है; इयागो एमीलिया की छाती में तलवार भोंककर निकल भागता है।)

ग्रेशियानो : औरत गिरती; मार दिया उसने बीवी को।

एमीलिया : मार दिया; औ' मेरी क़ब्र मालकिन के ही
पास बनाना।

ग्रेशियानो : निकल गया वह, लेकिन मार गया बीवी को।

मनटानो : ज़बरदस्त पाजी है। यह तलवार सँभालो
इसे मूर से मैंने छीना। द्वार बाहरी
चलकर घेरें। पाजी निकल न जाने पाए;
मार गिराएँ। मैं उसके पीछे जाता हूँ।
महानरक में गिरे दुष्ट यह !

[मनटानो और ग्रेशियानो बाहर चले जाते हैं।

ओथेलो : बल भी मुझमें
नहीं रहा अब, अब कोई दुर्बल भी मेरे
हाथों से तलवार छीन ले। पुण्य गया तो
मान रहे क्यों ? सब कुछ जाए।

एमीलिया : देवी, तेरे
उस गाने का क्या मतलब था ? क्या तू मुझको
सुन सकती है ? ऐसा सुनते हैं मराल जब
मरने लगता है गाता है। मैं भी आज
मराल बनूँगी। (गाती है)
'मोह छोड़ गए मँझधार, नैया डूबती।'
मूर, मालकिन पतिव्रता थीं। मूर निर्दयी,
उनको तुझसे बड़ा प्यार था। शान्ति मिले
मेरी आत्मा को क्योंकि सत्य मैं बोल रही हूँ;
जैसा मन में वैसा मुख पर लेकर मारती।

[**मर जाती है**

ओथेलो : इस कमरे में एक और हथियार पड़ा है—
इस्पेनी तलवार बुझी हिम-शीतल जल में।
इधर पड़ी है; काका, मैं बाहर आता हूँ।

ग्रेशियानो : **(नेपथ्य से)**
पाँव बढ़ा तो क़ीमत भारी देनी होगी।
तुम हो बे-हथियार, चोट गहरी खाओगे।

ओथेलो : तो फिर अन्दर आएँ मेरी बात सुनें कुछ;
नहीं बिना हथियार आप पर टूट पड़ूँगा।

(ग्रेशियानो फिर अन्दर आता है।)

देखें मेरे हाथ एक तलवार आ गई।
इससे बढ़कर किसी सिपाही की पेटी से
कभी न लटकी। मैंने वह दिन भी देखा है
आपकी तरह बीस आदमी डटे हुए हैं,
औ' मैं इस तलवार और इन हाथों के बल
उन्हें मारता और काटता निकल गया हूँ।
लेकिन अब यह दम्भ व्यर्थ है। भाग्यचक्र से
कौन बचा है ? दूर गईं पहले की बातें !
डरिए मत हथियारबन्द पा करके मुझको;
मेरा सफ़र ख़त्म होता है, यह मंज़िल है;
मेरी किश्ती के पालों ने आज किनारा
देख लिया है। डरकर पीछे क्यों हटते हैं ?
डर यह बिल्कुल बेमानी है। एक ज़रा-सा
तिनका लेकर आज ओथेलो की छाती के
आगे रख दें औ' वह पीछे हट जाएगा।
कहाँ ओथेलो जा सकता है ?

(डेसडिमोना के शव की ओर देखकर)

अब तू कैसे
देख रही है, अब तू मुझको ? ओ अभागिनी,
कुसुम-कामिनी ! पति बदन की, पीत वसन की !
जब कि न्याय का दिन आएगा, और मिलेंगे
फिर हम दोनों, तो यह तेरी एक नज़र ही
मुझे नरक के अन्ध गर्त में पहुँचा देगी;
और वहाँ के प्रेत-पिशाच मुझे नोचेंगे।
ओ मेरी सुकुमारी, शीतल, कितनी शीतल !
इतनी शीतल, जितनी तेरी पावनता थी।
अरे नराधम, अरे नराधम !
ओ यमदूतो, मैंने ऐसा पाप किया है,
इस नैसर्गिक सुखमा के आगे से मुझको
कोड़े मार हटा दो, झंझा के झोकों में
डाल झिंझोड़ो, गन्धक से भभकी ज्वाला में
उलट-पुलटकर मुझको भूनो। अतल नरक में
बलक पिघलती हुई आग में पटक-पटककर
मुझको फींचो। डेसडिमोन, ओ ! डेसडिमोन, ओ !
कहाँ गई तू ! ओ ! ओ ! ओ ! ओ !

(लोडोविको और मनटानो आते हैं। घायल कैसियो को कुर्सी पर लाया जाता है। अफ़सर लोग इयागो को जंजीरों में बाँधकर लाते हैं।)

लोडोविको : वह उतावला और अभागा व्यक्ति कहाँ है ?
ओथेलो : कभी ओथेलो जो था, यह है। यहाँ खड़ा हूँ।
लोडोविको : वह जहरीला साँप कहाँ है ? उस पिशाच को
आगे लाओ।
ओथेलो : उसके पाँवों को तो देखूँ।
मैंने ऐसा सुना, पिशाचों के उलटे पंजे होते है।
लेकिन यह तो दन्तकथा है। अगर सत्य ही
तू पिशाच है, तो तू मुझसे नहीं मरेगा।

(इयागो को घायल कर देता है।)

लोडोविको : इससे यह तलवार छीन लो।
इयागो : घाव लगा बस,
मरा नहीं मैं।
ओथेलो : मुझको इसका खेद नहीं है,
मेरी इच्छा है कि जिए तू, क्योंकि आज
मेरी परिभाषा में मर जाना सुख पाना है।
लोडोविको : अरे ओथेलो, जो तू इतना भला कभी था,
इस नरपशु के फन्दे में किस तरह फँस गया ?

और कहे क्या तुझको कोई ?

ओथेलो : कुछ भी कह लो।
यदि तुम चाहो मुझे कहो, मानी हत्यारा;
क्योंकि घृणा के कारण मैंने किया न कुछ भी;
सिर्फ़ मान के लिए किया है।

लोडोविको : इस पाजी ने कुछ शैतानी अभी क़बूली।
क्या तुम दोनों ने सलाह की थी कि कैसियो
की हत्या कर डाली जाए।

ओथेलो : की थी हमने।

कैसियो : प्यारे सेनापति जी, मैं तो बेक़सूर हूँ।

ओथेलो : इसे मानता हूँ मैं, मुझको क्षमा करो तुम।
मैं तुमसे कहता हूँ, इस नरपशु से पूछो,
क्यों इसने मेरे तन-प्राणों को ऐसे
फन्दे में डाला ?

इयागो : मुझसे कोई बात न पूछो;
तुमको है मालूम कि क्या मालूम तुम्हें है।
अब से मेरे मुँह से लफ़्ज़ नहीं निकलेगा।

लोडोविको : क्या न प्रार्थना करने को भी ?

ग्रेशियानो : खाल उधेड़ी
जाएगी तब मुँह खोलोगे।

ओथेलो : तेरी चुप ही
सबसे अच्छी।

लोडोविको : श्रीमन्, अब मैं बतलाता हूँ,
बात हुई क्या; आप बेखबर हैं इन सबसे।
मरे राडरीगो के पाकिट में, देखें, यह
पत्र मिला है, पत्र दूसरा भी उसमें था।
एक बताता है कि कैसियो की हत्या के
लिए राडरीगो को इसने खड़ा किया था।

ओथेलो : धूर्त कहीं के !

कैसियो : महा नारकी। महा नराधम।

लोडोविको : एक शिकायत का यह काग़ज और उसी की
पाकिट में था। इसे राडरीगो ने शायद
इस पाजी के लिए लिखा था मगर बीच में
इसने मिलकर शायद उसको फिर से समझा-
बुझा दिया था।

ओथेलो : ओ पापिष्ठ, नरक के कीड़े !—
तुम्हें, कैसियो, वह रूमाल मिला था कैसे;
वह तो मेरी पत्नी का था।

कैसियो : उसको मैंने
अपने कमरे में पाया था। इसने खुद यह
अभी क़बूला, इसने उसको मेरी खिड़की
से अन्दर को फेंक दिया था, अपना कोई

काम बनाने की मंशा से।

ओथेलो : (**इयागो से**) महा मूर्ख तू !

कैसियो : इन बातों को छोड़, राडरीगो ने ख़त में
इस पर भी अपनी नाराज़ी ज़ाहिर की है।
जो इसने उसको भड़काकर, जब मैं पहरे
पर था, मुझसे भिड़ा दिया था, जिसका फल था
मैंने अपना दर्जा खोया। अभी-अभी जो
मरा लग रहा था, वह बोला, 'मुझे इयागो
ने उकसाया, मुझे इयागो ने ही मारा।'

लोडोविको : और आप अब इस कमरे को छोड़ दीजिए।
आप हमारे साथ आइए। अब शासन की
शक्ति आपसे ली जाती है और कैसियो
को दी जाती। वह अब साइप्रस का शासक है।
इस नरपशु को ऐसा निर्मम दण्ड मिलेगा,
जिससे इसकी कड़ी यातना चले बहुत दिन !
नज़रबन्द हैं आप तब तलक, वेनिस की
सरकार जब तलक नहीं जाँचती, आप कहाँ तक
अपराधी हैं। आप हमारे साथ आइए।

ओथेलो : ज़रा ठहरिए; आप जायँ इसके पहले मैं
चार शब्द कहना चाहूँगा। सुनें, राज्य की
मैंने जो कुछ सेवा की है सभासदों से
छिपी नहीं है; लेकिन उसकी अब क्या चर्चा।
एक प्रार्थना करता हूँ, अपने पत्रों में
जबकि आप इस दुर्घटना की बात चलाएँ,
आप कहें मेरे बारे में जैसा हूँ मैं;
न कुछ बढ़ाकर, और द्वेषवश, न कुछ घटाकर।
आप कहें उसके बारे में, प्यार ख़ूब जो
कर सकता था, लेकिन नहीं समझदारी से।
उसके बारे में, जो जल्दी शक में पड़ना
न जानता था, पर उकसा देने पर उसकी
बेचैनी की थाह नहीं थी; उसके बारे
में, जिसके नादान हाथ ने, दन्तकथाओं
में वर्णित उस महामूर्ख की भाँति, रत्न वह
फेंक दिया जो उसकी सारी जाति-सम्पदा
से भी ज़्यादा मूल्यवान था; उसके बारे
में, जिसकी आँखों ने इतना दुख देखा था
रोना-धोना भूल गई थीं, पर अब ऐसे
झर-झर झरतीं जैसे अरबिस्तानी बिरवे
से टप-टप कर गोंद टपकती। यह सब लिखिए;
और अलावा इसके कहिए कि अलप्पो में
एक बार जब पग्गड़धारी, दुष्टाचारी,
एक तुर्क ने वेनिस के वासी को पीटा,

और राज्य की निन्दा की तो गुस्से में भर
सुन्नतवाले उस कुत्ते की गर्दन धरकर
मैंने उसकी छाती में यों छुरा घुसेड़ा।

(अपने पेट में तलवार घुसेड़ लेता है।

लोडोविको : घड़ियाँ आज ख़ून की प्यासी !
ग्रेशियानो : कहा-सुना सब
व्यर्थ हो गया।
ओथेलो : मैंने तुझे मारने के पहले चूमा था।
ठीक इस तरह;

(डेसडिमोना के ऊपर गिर पड़ता है।)

अपने को अब मार मर रहा तुझे चूमता
हुआ, अहह ! अह। **(मर जाता है।)**
लोडोविको : **(इयागो से)** अरे ख़ून के लोभी कुत्ते !
तेरी तृष्णा, अन्तर्दाह, अकाल, बाढ़ से
भी निर्दय है। देख बिस्तरे पर क्या दारुण
दृश्य दीखता। यह तेरी करतूत सामने।
इसे देखकर आँखों में विष छलक रहा है।
इसको ढक दो। आप, ग्रेशियानो, इस घर को
देखें-भालें। जो भी हो सम्पत्ति मूर की
उस पर अपना क़ब्ज़ा कर लें, क्योंकि आप
उत्तराधिकारी।
(कैसियो से) आप द्वीप को शासन में लें।
महा नारकी इस पिशाच को कहाँ और कब,
किस प्रकार का दण्ड मिले, इस पर निर्णय दें।
उस निर्णय पर निर्ममता से सज़ा दिलाएँ।
मैं जहाज़ से वेनिस को प्रस्थान करूँगा,
जहाँ दुखी मन से यह दुःखद कथा कहूँगा।

'हैमलेट' : प्रथम प्रकाशन 1969; राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली से प्रकाशित ।

प्रवेशिका

'हैमलेट' के पद्य-गद्यानुवाद को पुस्तक-रूप में प्रस्तुत करते हुए मैं बड़ी प्रसन्नता, बड़े सन्तोष, और सिर से एक बड़े भार के उतर जाने की राहत का अनुभव कर रहा हूँ। इस राहत को थोड़ा स्पष्ट करना होगा।

मुझे अपने पाठकों को शायद ही यह बतलाने की आवश्यकता हो कि शेक्सपियर के नाटकों के अनुवाद की श्रृंखला में यह तीसरा नाटक है जो मैं उनके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। पहला 'मैकबेथ' था, जो 1957 में प्रकाशित हुआ था, और दूसरा 'ओथेलो', जो 1959 में। 'हैमलेट' प्राय: एक दशक बाद प्रकाशित हो रहा है, और लगभग इतना ही समय इसके अनुवाद में लगा भी है। 'मैकबेथ' का अनुवाद एक वर्ष में, और 'ओथेलो' का प्राय: दो वर्ष में मैंने पूरा कर दिया था। 'हैमलेट' को अनूदित करने में मुझे दस बरस लग गये। 'हैमलेट' ने मुझे बड़ा परेशान किया। 1960 में जब 'मैकबेथ' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ था, तभी मैंने उसकी 'प्रवेशिका' में अपने पाठकों को यह सूचना दे दी थी कि "मैंने 'हैमलेट' का अनुवाद हिन्दी ब्लैंक वर्स में 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' की पद्धति पर आरम्भ कर दिया है, जो यथासमय आपके हाथों में पहुँचेगा।'' 'यथासमय' का अर्थ होगा एक दशक—इसकी कल्पना न मैंने की थी और न मेरे पाठकों ने। इस बीच मेरे बहुत-से पाठक मुझसे पूछते रहे कि 'हैमलेट' का क्या हुआ? और मैं उन्हें कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे पाता था। बहुतों ने तो यह आशा भी छोड़ दी थी कि मैं इसे पूरा भी कर पाऊँगा—शायद मेरा उत्साह शेक्सपियर के नाटकों के प्रति समाप्त हो गया है, शायद मैं और कामों में लग गया हूँ; क्योंकि यह तो सच है कि दस बरस तक लगातार 'हैमलेट' पर काम नहीं हुआ—मैं और कई तरह की कलम-घिसाई करता रहा। पर किसी काम को अधूरा छोड़ना मेरे स्वभाव में नहीं है; वह किसी टूटे काँटे की तरह मेरे दिमाग में करकता रहता है। और अधूरा हैमलेट तो बहुत बुरी तरह मेरे दिमाग में करक रहा था—वह है भी अधूरा—शेक्सपियर ने भी उसे पूरा प्रकट नहीं किया है—शेक्सपियर ने जितने भी पात्रों का निर्माण किया है, शायद एक हैमलेट ही उनमें ऐसा है जिसे पूरी तरह जानने के संकेत उन्होंने नहीं दिये, अथवा वे दे नहीं पाये। निश्चय ही हैमलेट का व्यक्तित्व शेक्सपियर के लिए भी एक बड़ी भारी चुनौती सिद्ध हुआ होगा। हैमलेट कहता है,

> ······घायल मेरा नाम पड़ा है।
> मेरे पीछे कितनी बातें अनजानी ही
> रह जायेंगी।

वह रंगमंच पर जब पहली बार आता है तब भी हम उसे घायल ही पाते हैं—मन से—और मन का घाव तन के घाव से कहीं अधिक पीड़ादायक होता है;—जैसे-जैसे

नाटक आगे बढ़ता है वह अधिकाधिक घायल ही होता जाता है, और अन्त में तन से भी घायल होकर वह अपनी जीवन-लीला समाप्त करता है। इस अधूरे का भी अधूरा हैमलेट—घायल के भी अधकटे अंग-सा—कितने भीषण रूप में मेरे सामने आता और मुझे सन्तप्त करता रहा है, इसे बताना मेरे लिए सम्भव नहीं है। शेक्सपियर मेरे प्रिय कवि हैं, 'हैमलेट' उनकी सबसे प्रिय रचना, और उसमें भी हैमलेट मेरा सबसे प्रिय पात्र है। मैं उसे अपने और निकट लाने के लिए ही चाहता था कि वह मेरी भाषा में मुझसे अपनी वेदना कहे :

'पूर्ण कर दे वह कहानी
जो शुरू की थी सुनानी' —**निशा निमन्त्रण**

मैंने उससे न जाने कितनी बार कहा होगा। पर मुसीबत तो यह थी कि मुझे ही हैमलेट बनकर यह कहानी कहनी थी और मुझे ही सुननी थी। और इस स्थिति को बना पाना और उसमें पर्याप्त समय तक रहे आना, मेरे जैसे व्यक्ति की परिस्थितियों में असम्भव जान पड़ता था।

मैं यह स्वीकार करूँगा कि 'हैमलेट' से हार मान लेने की स्थिति के बहुत निकट मैं पहुँच चुका था। 1959 में जब मैंने 'हैमलेट' को अनूदित करना आरम्भ किया तो मुझे 'वर्टिगो' की बीमारी हो गयी—बैठे से उठता, नीचे झुकता या सिर ऊपर उठाता तो एकदम चक्कर आ जाता, आँखों के आगे अँधेरा छा जाता। तेजीजी को सन्देह हुआ, शायद यह हैमलेट से अपने को एकात्म करने का परिणाम है। काम छोड़ दिया गया, दवा-दरमत शुरू हुई। कुछ दिनों बाद ठीक हो गया। कुछ और तरह का लिखना-पढ़ना होता रहा। तीन वर्ष बाद उस अधूरे काम ने फिर मुझे बेचैनी से याद किया। अभी कुछ ही दिन मैंने उस पर काम किया होगा—कभी-कभी तो दस-बारह घण्टे लगातार कुर्सी पर बैठकर—कि मुझे हर्निया की तकलीफ हो गयी, जिसका ऑपरेशन कराना पड़ा; काम तो छूट ही गया, अपना पुराना स्वास्थ्य प्राप्त करने में भी लगभग दो वर्ष लग गये। कुछ और कामों से फ़ुरसत मिली तो फिर 'हैमलेट' की याद ने मुझे सताया। इस बार इस पर थोड़ा ही काम हुआ था कि मुझे प्लूरिसी हो गयी और कई महीने इन्जेक्शन लेता मैं चारपाई पर पड़ा रहा। अब क्या था, मेरे घर में यह अन्ध-विश्वास जग गया कि जब-जब मैं 'हैमलेट' का काम उठाता हूँ तब-तब मैं बीमार पड़ जाता हूँ। तेजीजी ने हैमलेट की फ़ाइल उठाकर ताले में बन्द कर दी—'इस काम में मैं तुम्हें अब हाथ नहीं लगाने दूँगी'। पर मैं भी कम ज़िद्दी नहीं हूँ। पिछली सितम्बर में पेट में 'अल्सर' का रोग लेकर मैं लगभग एक मास अस्पताल में पड़ा रहा। कुछ अच्छा होकर लौटा तो मैंने तेजीजी से कहा, देखो, जब-जब मैं 'हैमलेट' उठाता हूँ, मुझे कोई न कोई गम्भीर बीमारी लग जाती है, अब की बार मैं उस प्रक्रिया को उलटने जा रहा हूँ। उन्होंने पूछा, 'मतलब ?' मैंने कहा, एक गम्भीर बीमारी से उबरकर मैं 'हैमलेट' के काम में हाथ लगाने जा रहा हूँ। मैंने उन्हें फुसला-पँदलाकर फ़ाइल उनसे ले ली—वे बड़ी भोली हैं—और कई महीनों के अनवरत श्रम के बाद अब यह काम पूरा हुआ है। सिर से भार उतरने की राहत का मेरा अनुभव अकारण नहीं है। पर इस भार को मैंने किसी तरह सिर से उतार फेंका है, ऐसा न समझा जाना चाहिए। मैंने इस भार को लेकर चलने का पूरा आनन्द उठाया है—भार उठाने का एक सुख तो है ही,

'कण्ठ में स्वर, भार सिर पर !' —**आरती और अंगारे**

किस सर्जक को इस स्थिति पर ईर्ष्या न होगी ?

शेक्सपियर के नाटकों को जब एक नयी पद्धति से अनूदित करने की बात मेरे मन में उठी थी—यानी पद्य-भाग का पद्य में और गद्य-भाग का गद्य में—तो शेक्सपियर के चार सर्वश्रेष्ठ नाटक मेरे दिमाग़ में थे—'मैकबेथ', 'ओथेलो', 'हैमलेट' और 'किंग लियर'। 'हैमलेट' को पूरा करने में आयीं इतनी बाधाएँ देख मैंने अपने मन में कहा था,—"चलो, चार करने चाहे थे, दो कर दिये—'अर्ध तजहिं बुध सर्बस जाता'।" अब 'हैमलेट' पूरा हो गया है तो मुझे आशा बँधती है कि शायद किसी दिन 'किंग लियर' का अनुवाद भी आपके हाथों में रख सकूँ।

'हैमलेट' को वर्तमान रूप में प्रस्तुत करने में मैं उन्हीं सिद्धान्तों से प्रेरित हुआ हूँ जिनसे प्रेरित होकर मैंने 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' का अनुवाद प्रस्तुत किया था, और जिनकी विस्तृत व्याख्या मैं उक्त दोनों अनुवादों के दो संस्करणों की प्रवेशिकाओं में कर चुका हूँ। मैं अपने पाठकों से यह आग्रह तो नहीं करता कि वे किस क्रम में मेरी रचनाएँ पढ़ें, पर यदि वे 'हैमलेट' का अनुवाद पढ़ने के पूर्व 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' (नये संस्करणों में) स-प्रवेशिका पढ़ लेंगे तो मुझे प्रसन्नता होगी, और मैं विश्वास दिलाता हूँ कि उन्हें भी 'हैमलेट' के अनुवाद को एक वांछित दृष्टिकोण से देखने की पूर्व-पीठिका मिल जायेगी, और शायद वे बहुत-से सन्देह, शंकाएँ और जिज्ञासाएँ उठें ही नहीं जो 'हैमलेट' को पहली बार पढ़ने पर उठ सकती हैं। जिन बातों का उत्तर मैं पहले दे चुका हूँ उन्हें फिर यहाँ दुहराना उचित नहीं समझता।

शेक्सपियर (1564-1616) विश्वविख्यात नाटककार और कवि हैं। 'हैमलेट' उनकी चोटी की रचनाओं में गिना जाता है। उसका अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए किसी क्षमा-याचना की आवश्यकता नहीं। 'हैमलेट' हिन्दी में लगभग एक दर्जन रूपों में प्रस्तुत किया जा चुका है। फिर भी जिस रूप में वह यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है, वह मेरे 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' के समान ही अपनी विधा में सर्वप्रथम और मौलिक है।

'हैमलेट' की रचना सन् 1602 में हुई थी, और तब से अब तक यह मूल अंग्रेज़ी तथा अनूदित रूप में दुनिया की पचासों भाषाओं में, सैकड़ों रंगमंचों से, हज़ारों बार खेला जा चुका है; लाखों बार पढ़ा जा चुका है; और इस त्रासदी में कुछ ऐसा है जो आज भी मानव-हृदय को छूता और उसे विचलित करता है। 'हैमलेट' पर बहुत-कुछ लिखा गया है, लिखा जा सकता है। कहते हैं, हैमलेट और नेपोलियन पर जितना लिखा गया है उतना दुनिया के किसी काल्पनिक अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति पर नहीं। मैं हैमलेट को व्यष्टि और समष्टि के संघर्ष में व्यष्टि के टूटने की त्रासदी मानता हूँ। हैमलेट दुनिया से कुछ प्रत्याशा करता है, दुनिया उसे निराश करती है; हैमलेट दुनिया से न्याय चाहता है और उसके साथ होता है अन्याय। (वह मरने के पूर्व अपने मित्र होरेशियो से दुनिया को बतलाने के लिए कहता है, '···और न्याय के बारे में भी, जो मैं जग से माँग रहा था।'—पृ. 378) वह दुनिया को काली पाता है, वह उसे उजाली करना चाहता है और इस प्रयत्न में वह स्वयं अपनी ज्वाला में स्वाहा हो जाता है,

'······घड़ियाँ काली।
नियति ! निकाला तूने मुझसे कब का बदला,
मुझको भेजा, इन घड़ियों को करूँ उजाली !' —पृ. 285

मुझे अपने 'एकान्त संगीत' की कुछ पंक्तियाँ याद आ गयी हैं। शायद तब मैं कुछ ऐसी ही मनःस्थिति से गुज़र रहा था,

'जग में अँधियाला छाया था,
मैं ज्वाला लेकर आया था,
मैंने जलकर दी आयु बिता, पर जगती का तम हर न सका !'

यही है हैमलेट की अनुभूति ! मरते समय वह होरेशियो से कहता है,

'और दर्द की साँसें ले तू इस दुनिया में
जो निर्मम है।' —पृ. 378

हाँ, हैमलेट इस कटुतर अनुभूति के लिए नहीं जीता—

'बीता अवसर क्या आयेगा,
मन जीवन भर पछतायेगा,
मरना तो होगा ही मुझको, जब मरना था तब मर न सका।'

हैमलेट, जब मरना था तब, मर गया। आज के हैमलेट की त्रासदी मरने की नहीं, जीने की त्रासदी है, और इस कारण शायद अधिक संत्रासपूर्ण। पर समस्या, चाहे कल के हैमलेट की हो, चाहे आज के हैमलेट की, एक ही है, समष्टि के समक्ष व्यष्टि के आदर्शों, सपनों, मान-मूल्यों की असमर्थता, पराजय, उपेक्षा, जिसका समाधान न कल था, न आज है, न कल होगा। फिर भी जो कृति जीवन और जगत के इस चिरन्तन कटु सत्य की अनुभूति हमारी नस-नाड़ियों में कराती है वह कम महत्त्व की है ? 'हैमलेट' को देखने के लिए यहाँ मैंने एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण का संकेत कर दिया है, क्योंकि उसके इसी रूप को मैंने अपने निकट पाया। आप उसे किसी और दृष्टिकोण से भी देख सकते हैं। दृष्टिकोणों की कमी नहीं, आँख-वाला चाहिए।

'घायल की गति घायल जाने'—अनुवादक की कठिनाइयाँ अनुवादक ही समझ सकता है। और अनुवादों में भी सबसे कठिन अनुवाद है नाटक का। यहाँ सोचने-समझने को रुका नहीं जा सकता, टीका-टिप्पणी देखने का मौक़ा नहीं, कोश खोलने को समय नहीं। मंच से जो मुखरित होता है उसे तुरत, सुनते ही श्रोता को, दर्शक को ग्राह्य होना चाहिए, साथ ही प्रभावकारी और उद्‌बोधक भी। नाटक, पढ़ने के लिए नहीं लिखा जाता, मंच पर अभिनीत होने के लिए लिखा जाता है, कम-से-कम शेक्सपियर के नाटक इसीलिए लिखे गये थे, गो वह अभिनय की कल्पना से पढ़ा भी जा सकता है। अनुवादक भी नाटक की भाषा के इस पक्ष की अवहेलना नहीं कर सकता। 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' के समान ही मैं 'हैमलेट' को किसी दिन रंगमंच पर देखना चाहूँगा। दर्शकों की प्रतिक्रिया को ही मैं अनुवाद की सफलता अथवा असफलता की कसौटी मानूँगा, बशर्ते कि अभिनेता भी अपनी भूमिका पूरी तरह अदा करें, क्योंकि नाटक की लिपि ध्वनि, गति और मुद्रा से ही सप्राण बनती है। नाटक को अभिनय की कल्पना से पढ़ना कम सुखद अनुभव नहीं, और मुझे विश्वास है, बहुत बड़ी संख्या में लोग इस अनुवाद को इसी प्रकार पढ़ेंगे।

'हैमलेट' के अनुवाद के मैं कई प्रकार के पाठकों की कल्पना करता हूँ। कुछ ऐसे लोग होंगे जिन्होंने हैमलेट' का अंग्रेज़ी में अध्ययन किया होगा—शायद समझा भी होगा। वे सम्भवतः मूल से मेरे अनुवाद का मिलान भी करना चाहेंगे, हालाँकि हिन्दी-संसार में ऐसा श्रम-साध्य काम करनेवाले बिरले ही हैं। उनसे मैं यही कहना चाहूँगा कि वे शब्दशः—मक्षिकास्थाने मक्षिका—अनुवाद की प्रत्याशा न करें। शब्दशः अनुवाद अच्छा नहीं होता, पर अपनी समझ में, सूक्ष्म से सूक्ष्म

भावना-विचारों के प्रति मैं सजग-सचेत रहा हूँ। अपनी भाषा की ध्वनि-धारा, अपने देश-प्रदेश के वातावरण तथा मनोजगत के अनुकूल और अनुरूप बने रहने, और अपने पाठकों-श्रोताओं-दर्शकों को त्वरित-ग्राह्य होने के लिए अनुवादक को मूल से स्वतन्त्रता लेने का अधिकार है, पर उसका दुरुपयोग करने का नहीं। अनुवाद करते समय मैंने, अपने अधिकार और अपनी सीमा, दोनों का ध्यान रक्खा है। मैं तो यहाँ तक कहना चाहूँगा कि किसी अनुवादक की सूझ, रुचि, विवेक-बुद्धि को परखने का स्थान वही है जहाँ उसने मूल से स्वतन्त्रता ली है। जहाँ कहीं मैंने कुछ बदला, छोड़ा, जोड़ा है वहाँ उनके लिए रुककर सोचने का मौक़ा है कि मैंने ऐसा क्यों किया है। मुझे विश्वास है कि खुले मन से विचार करने पर, जो मैंने किया है, उसका औचित्य वे देख सकेंगे।

सिर्फ़ एक छोटा-सा उदाहरण यहाँ दूँगा। अन्तिम दृश्य में हैमलेट की माँ अपने पुत्र को मोटा कहती है (He's fat); हैमलेट के 'मोटे' होने की कल्पना मैं नहीं कर सकता! बहुत बार अंग्रेज़ी रंगमंच पर भी मैंने दुबला-पतला हैमलेट ही देखा है। कहते हैं, शेक्सपियर के समय में जो अभिनेता हैमलेट की भूमिका अदा किया करता था वह मोटा था, इसीलिए शेक्सपियर ने उसकी माँ के मुख से उसे मोटा कहला दिया। शेक्सपियर ने रंगमंच की सीमाओं का ध्यान रखकर बहुत-से ऐसे काम किये हैं। मैंने उसको 'दुर्बल' कर दिया है। हैमलेट ने जो सहा-झेला है उसके बाद भी वह दुर्बल न हो, मोटा-टाँठा बना रहे तो हैमलेट का मेरा चित्र विकृत होता है! यहाँ मेरे स्वतन्त्रता लेने को आप क्या कहेंगे? ख़ैर, कुछ भी कहें; इतना विश्वास करें कि जहाँ भी मैंने स्वतन्त्रता ली है वह सकारण है।

दूसरे प्रकार के पाठक वे होंगे जिन्होंने 'हैमलेट' पढ़ा तो है पर वे मूल से अनुवाद की तुलना करने नहीं बैठेंगे, हिन्दी में भी पढ़ना चाहेंगे, शायद कौतूहल-वश। मैं उन्हें अपनी ईमानदारी का विश्वास दिलाना चाहूँगा—'हैमलेट' को मैंने ठीक उसी तरह—अनुवाद की सीमाओं में निश्चय—प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, जैसा कि वह मूल में है। और मैं उनके कानों में कहना चाहूँगा, अंग्रेज़ी आप भले ही थोड़ी-बहुत जानते हों, अंग्रेज़ी में 'हैमलेट' को समझना सरल नहीं—आप अपनी भाषा के माध्यम से 'हैमलेट' को अधिक अच्छी तरह समझेंगे। 'हैमलेट' को समझना एक बड़ी सांस्कृतिक और साहित्यिक उपलब्धि है।

अधिकतर पाठक ऐसे होंगे जिन्होंने अंग्रेज़ी में 'हैमलेट' को नहीं पढ़ा होगा, और उन्हीं के लिए विशेषतया यह अनुवाद है भी। उन्हें अपनी कल्पना पर कुछ जोर डालना पड़ेगा—अपरिचित नाम, देश-काल-परिवेश से परिचय और निकटता प्राप्त करनी होगी। उनके हैमलेट, होरेशियो, ओफ़ीलिया वही होंगे जो अनुवादक ने उन्हें दिये हैं। मैं उनसे यही कहना चाहूँगा कि मैंने अपने दायित्व को समझा है, और निभाने का यथा-सामर्थ्य प्रयास किया है। एक बड़े लेखक की एक बड़ी रचना आपके सामने आ रही है; यदि इस अनुवाद से भी वह अपने बड़प्पन का कुछ संकेत आपको दे सके तो मैं अपने प्रयास को असफल न समझूंगा। किसी भी अनुवाद का इससे बड़ा अभिशाप और क्या हो सकता है कि एक महान लेखक, अनुवादक की असफलता अथवा त्रुटिपूर्णता के कारण, छोटा प्रतीत हो? अगर किसी जगह पर पाठकों को ऐसा आभास हो तो वे यही समझें कि मैं एक बड़े लेखक को उसके सही क़द में प्रस्तुत नहीं कर सका हूँ।

अन्त में मैं फिर कहना चाहूँगा कि नाटक—मूल में चाहे अनुवाद में—अपना पूरा अर्थ रंगमंच पर ही खोलता है—अभिनीत होकर, पर अभिनय, यहाँ तक कि

नाटक-पाठ और अभिनय-पाठ भी—इनकी व्याख्या 'मैकबेथ' और 'ओथेलो' की प्रवेशिकाओं में मैं कर चुका हूँ—सामूहिक प्रयत्न हैं; -- फिर अकेला पाठक क्या करे ? इसका संकेत मैं पहले भी कर चुका हूँ। कविता और नाटक को सस्वर पढ़ा जाना चाहिए, नाटक को विशेषकर—अभिनेता की कुछ प्रतिभा हो—और थोड़ी-बहुत तो सभी में होती है—तो परिस्थिति के अनुसार, विचारभावों के अनुरूप, स्वरों के उतार-चढ़ाव, गति-यति और, सम्भव हो तो, मुद्रा के साथ भी। अपने को अपने से अलग कर दूसरे के भावों से एकात्म करने की क्षमता कोई छोटी उपलब्धि नहीं, और न इसके मानसिक परिणाम ही कम महत्त्वपूर्ण;—प्रयोग करके देखें।

जीवन की भाषा के रूप में जो भाषा समृद्ध नहीं होती उसमें सफल नाटक नहीं लिखे जा सकते। सफल नाटकों के सफल अनुवाद भी नहीं प्रस्तुत किये जा सकते। यहाँ हिन्दी की सीमाओं के साथ ही मैं अपनी सीमाओं से भी अनवगत नहीं हूँ।

संसार के जिन देशों में नाट्य-कला विकसित है वहाँ शेक्सपियर के नाटकों के अभिनय का एक अलग ही स्कूल है। कहा जाता है कि शेक्सपियर के नाटकों के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता आज रूस में हैं। मेरी इच्छा है कि हिन्दी का एक शेक्सपियर-मंच हो। 'मैकवेथ' के अभिनय के साथ मैंने उसकी नींव तो डाली थी, पर उस पर निर्माण का कार्य नहीं हो सका। इसके लिए आवश्यक है कि शेक्सपियर के सब नाटक अभिनय की दृष्टि से अनूदित किये जायें। मैंने जिस रूप में उन्हें प्रस्तुत किया है वे अभिनय के प्रयोगों में असफल नहीं सिद्ध हुए। सृजन-कल्पना-शील नवयुवक उत्साही अनुवादक यदि इस ओर रुचि लें तो सम्भव है उनका कुछ और मौलिक, ग्राह्य और आकर्षक रूप सामने आये। उसके बाद नाटक-पाठ और अभिनय-पाठ से भाषा को ज़बान पर चढ़ाने की ज़रूरत है। और अन्त में आवश्यकता होगी कुशल अभिनेताओं की जो उस भाषा में जान डाल सकें। शेक्सपियर अपनी मानवीय भावनाओं में इतने सार्वजनीन हैं कि अपने पात्र-परिस्थितियों की एक-देशीयता अथवा विदेशीयता के बावजूद वे किसी भी दर्शक-समूह के समक्ष परिचित, पहचाने और अपने-से प्रतीत होंगे।

मेरे अनुवाद इस दिशा में कोई योग दे सकें तो मुझे प्रसन्नता होगी।

मेरे पाठक प्रस्तुत कृति के सम्बन्ध में अपनी कोई प्रतिक्रिया देंगे तो मैं उनका आभारी हूँगा।

13, विलिंगडन क्रिसेण्ट,
नयी दिल्ली-11 **बच्चन**
1-1-'69

अपने बेटे
अमिताभ को
जिसने मेरे हिन्दी-ओथेलो के प्रथम प्रदर्शन में
कैसियो की भूमिका अदा की थी;
और जो, मुझे आशा है,
किसी दिन मेरे हिन्दी-हैमलेट के प्रदर्शन में
हैमलेट की भूमिका अदा करेगा।

नाटक के पात्र

क्लाडियस	डेनमार्क का राजा
हैमलेट	भूतपूर्व राजा का बेटा और वर्तमान राजा का भतीजा
फ़ोर्टिन ब्रास	नारवे का राजकुमार
होरेशियो	हैमलेट का मित्र
पोलोनियस	राजा का मन्त्री
लायरटीज़	पोलोनियस का पुत्र
वोल्टिमांड	राजदरबारी
कारनीलियस	राजदरबारी
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़	राजदरबारी
गिल्डेन्सटर्न	राजदरबारी
ओसरिक	राजदरबारी
एक भद्र पुरुष	राजदरबारी
एक पादरी	राजदरबारी
मार्सेलस	अफ़सर
बरनार्डो	अफ़सर
फ्रैंसिस्को	एक सैनिक
रेनाल्डो	पोलोनियस का नौकर
एक कप्तान	
अंग्रेज़ राजदूत	
अभिनेता	
दो मज़दूर	क़ब्र खोदनेवाले
गरट्रूड	डेनमार्क की रानी और हैमलेट की माँ
ओफ़ीलिया	पोलोनियस की पुत्री

सरदार, उनकी पत्नियाँ, अफ़सर, सैनिक, नाविक, दूत, नौकर-चाकर, हैमलेट के पिता की प्रेतात्मा

स्थान : एलसिनोर

हैमलेट
डेनमार्क का राजकुमार

पहला अंक

पहला दृश्य

एलसिनोर—गढ़ के सामने का चबूतरा

(फ्रैंसिस्को पहरे पर है। बरनार्डो उसकी तरफ बढ़ता है।)

बरनार्डो : कौन ?
फ्रैंसिस्को : रुको, मुझे पहले बतलाओ कि तुम कौन हो।
बरनार्डो : महाराज की जय हो !
फ्रैंसिस्को : बरनार्डो हो ?
बरनार्डो : मैं ही।
फ्रैंसिस्को : बिल्कुल ठीक वक्त पर आये।
बरनार्डो : अभी बजा है
बारह; फ्रैंसिस्को, तुम अब जाकर सो जाओ।
फ्रैंसिस्को : धन्यवाद है, जो तुमने आकर छुट्टी दी।
बड़ी ठण्ड पड़ती है; मेरा जी ख़राब है।
बरनार्डो : पहरे पर तो अमन रहा सब ?
फ्रैंसिस्को : पात न खड़का।
बरनार्डो : तो तुम जाओ, नमस्कार है; अगर मार्ग में
होरेशियो, मार्सेलस मिलें तो, मेरे पहरे
के साथी हैं, उनसे कहना, जल्दी पहुँचें।
फ्रैंसिस्को : मुझको लगता, वे आते हैं। रुको, कौन हो ?

(होरेशियो और मार्सेलस आते हैं।)

होरेशियो : मातृभूमि के पुत्र,
मार्सेलस : प्रजा हम महाराज की।
फ्रैंसिस्को : नमस्कार है तुम्हें।
मार्सेलस : विदा, विश्वासी सैनिक।
किसने ली है जगह तुम्हारी ?
फ्रैंसिस्को : बरनार्डो ने।
नमस्कार करता हूँ तुमको। [बाहर जाता है।
मार्सेलस : हो ! बरनार्डो !

बरनार्डो : बोल रहा हूँ; क्या होरेशियो आ पहुँचा है ?
होरेशियो : उसके पाँव ज़रूर यहाँ···
बरनार्डो : स्वागत, होरेशियो।
और भले मार्सेलस, तुम्हारा भी स्वागत है।
होरेशियो : आज रात को क्या वह चीज़ दिखायी दी फिर ?
बरनार्डो : नहीं अभी तक।
मार्सेलस : होरेशियो कहता है, यह कल्पना हमारी;
इसे नहीं विश्वास कि ऐसा दृश्य भयंकर
हमें दुबारा दीख चुका है। इसीलिये तो
मैंने इससे बिनती की है, आज रात को
हम दोनों के साथ बराबर पहरा दे यह,
जिससे, यदि वह दृश्य दिखायी दे फिर हमको,
यह अपनी आँखों से देखे, उससे बोले।
होरेशियो : वहम, वहम; कुछ नहीं दिखायी पड़नेवाला।
बरनार्डो : आओ, बैठो ज़रा; हमारे इस क़िस्से पर
गो तुमने कानों में उँगली दे रक्खी है,
हम तुमसे फिर एक बार कहना चाहेंगे
जो हम दोनों ने दो रातों को देखा है।
होरेशियो : बैठ गये, लो; बरनार्डो को बतलाने दो।
बरनार्डो : सुनो, बात कल रात हुई जो;
जब वह तारा, जो ध्रुव तारे से पश्चिम को,
आसमान में इसी जगह पर चमक रहा था,
एक बजा था, और मार्सेलस औ' मैं दोनों···

(भूत आता है।)

मार्सेलस : चुप, रुक जाओ; देखो, वह फिर आ पहुँचा है।
बरनार्डो : ठीक दिवंगत महाराज-सा दीख रहा है।
मार्सेलस : पण्डित हो तुम; होरेशियो, इससे कुछ पूछो !
बरनार्डो : होरेशियो, देखो, यह कितना महाराज-सा !
होरेशियो : बिल्कुल वैसा; डर-अचरज से काँप रहा हूँ !
बरनार्डो : लगता है बोलेगा।
मार्सेलस : होरेशियो, कुछ पूछो।
होरेशिया : क्या है तू जो घनी रात पर टूट पड़ा है
धरा-सुप्त डेनमार्क महीपति के चोले में—
दिव्य, दीर्घ—जिसमें वे धरती पर चलते थे ?
तुझे स्वर्ग की शपथ दिलाता हूँ, उत्तर दे।
मार्सेलस : बिगड़ उठा है।
बरनार्डो : लम्बे डग भरते जाता है।
होरेशिया : ठहर ! बोल ! मुँह खोल ! और मुझको उत्तर दे !

[भूत चला जाता है।

मार्सेलस : गया; वह नहीं उत्तर देगा।

बरनार्डो : तुम पीले पड़ गये, काँपते हो, कैसे हो ?
होरेशियो, यह नहीं सिर्फ़ कल्पना हमारी !
क्या कहते हो ?

होरेशियो : ईश्वर की सौगन्ध, अगर मेरी आँखों ने
साफ़ न इसको देखा होता, मैं इसकी
सच्चाई पर विश्वास न करता।

मार्सेलस : था न ठीक वह
महाराज-सा ?

होरेशियो : जैसे दर्पण में छाया हो।
इसी तरह का कवच उन्होंने धारण करके
धूर्त नारवे के राजा से युद्ध किया था;
इसी तरह से उनके तेवर चढ़े हुए थे,
जब जोशीली बात-चीत के बीच उन्होंने
अपना घन-सा भारी फरसा बर्फ़ीली
धरती के ऊपर चला दिया था। अचरज ही है !

मार्सेलस : इसी तरह से, पहले भी दो बार जबकि हम
पहरे पर थे, हमने आधी रात के समय
उनको फ़ौजी बाने में फिरते देखा है।

होरेशियो : इसका कोई समाधन मैं नहीं पा रहा;
लेकिन मेरी सीमित, मोटी बुद्धि बताती
कुछ विचित्र उत्पात राज्य में होने को है।

मार्सेलस : अच्छा, बैठो, और जिसे हो पता, बताये,
किस कारण इस क़दर कड़े, चौकस पहरे में
प्रजा राज्य की रात-रात भर मेहनत करती;
किस कारण प्रतिदिन तोपें ढाली जाती हैं,
और विदेशों से हथियार ख़रीदे जाते;
क्यों नौका-निर्माताओं से इतना काम
लिया जाता है, उनको इसका पता न चलता,
कब आया इतवार, गया कब; क्या होने को,
जिसके कारण लोग रात-दिन खून-पसीना
एक किये हैं ? जिसे पता हो मुझे बताये।

होरेशियो : मुझे पता है; कम-से-कम ऐसी चर्चा है।
अभी-अभी जिनकी छाया हमने देखी है,
उन्हीं हमारे भूतपूर्व राजा को फ़ोर्टिनब्रास,
नारवे के नरपति, ने अपने उद्धत
अहंकार में पागल होकर युद्ध के लिए
ललकारा था; इसे जानते ही होगे तुम;
हैमलेट का बल-विक्रम दुनिया में प्रसिद्ध था;
फ़ोर्टिनब्रास मरा उनके विजयी हाथों से।
उन दोनों में मुहरबन्द इक़रार हुआ था—
वीर-नीति अनुरूप, न्याय-नियमों से सम्मत—
जो भी मारा जाय, विजेता उसकी सारी

बरनार्डो : बोल रहा हूँ; क्या होरेशियो आ पहुँचा है ?
होरेशियो : उसके पाँव ज़रूर यहाँ···
बरनार्डो : स्वागत, होरेशियो।
और भले मार्सेलस, तुम्हारा भी स्वागत है।
होरेशियो : आज रात को क्या वह चीज़ दिखायी दी फिर ?
बरनार्डो : नहीं अभी तक।
मार्सेलस : होरेशियो कहता है, यह कल्पना हमारी;
इसे नहीं विश्वास कि ऐसा दृश्य भयंकर
हमें दुबारा दीख चुका है। इसीलिये तो
मैंने इससे बिनती की है, आज रात को
हम दोनों के साथ बराबर पहरा दे यह,
जिससे, यदि वह दृश्य दिखायी दे फिर हमको,
यह अपनी आँखों से देखे, उससे बोले।
होरेशियो : वहम, वहम; कुछ नहीं दिखायी पड़नेवाला।
बरनार्डो : आओ, बैठो ज़रा; हमारे इस क़िस्से पर
गो तुमने कानों में उँगली दे रक्खी है,
हम तुमसे फिर एक बार कहना चाहेंगे
जो हम दोनों ने दो रातों को देखा है।
होरेशियो : बैठ गये, लो; बरनार्डो को बतलाने दो।
बरनार्डो : सुनो, बात कल रात हुई जो;
जब वह तारा, जो ध्रुव तारे से पश्चिम को,
आसमान में इसी जगह पर चमक रहा था,
एक बजा था, और मार्सेलस औ' मैं दोनों···

(भूत आता है।)

मार्सेलस : चुप, रुक जाओ; देखो, वह फिर आ पहुँचा है।
बरनार्डो : ठीक दिवंगत महाराज-सा दीख रहा है।
मार्सेलस : पण्डित हो तुम; होरेशियो, इससे कुछ पूछो !
बरनार्डो : होरेशियो, देखो, यह कितना महाराज-सा !
होरेशियो : बिल्कुल वैसा; डर-अचरज से काँप रहा हूँ !
बरनार्डो : लगता है बोलेगा।
मार्सेलस : होरेशियो, कुछ पूछो।
होरेशिया : क्या है तू जो घनी रात पर टूट पड़ा है
धरा-सुप्त डेनमार्क महीपति के चोले में—
दिव्य, दीर्घ—जिसमें वे धरती पर चलते थे ?
तुझे स्वर्ग की शपथ दिलाता हूँ, उत्तर दे।
मार्सेलस : बिगड़ उठा है।
बरनार्डो : लम्बे डग भरते जाता है।
होरेशिया : ठहर ! बोल ! मुँह खोल ! और मुझको उत्तर दे !

[भूत चला जाता है

मार्सेलस : गया; वह नहीं उत्तर देगा।

बरनार्डो : तुम पीले पड़ गये, काँपते हो, कैसे हो ?
होरेशियो, यह नहीं सिर्फ़ कल्पना हमारी !
क्या कहते हो ?

होरेशियो : ईश्वर की सौगन्ध, अगर मेरी आँखों ने
साफ़ न इसको देखा होता, मैं इसकी
सच्चाई पर विश्वास न करता।

मार्सेलस : था न ठीक वह
महाराज-सा ?

होरेशियो : जैसे दर्पण में छाया हो।
इसी तरह का कवच उन्होंने धारण करके
धूर्त नारवे के राजा से युद्ध किया था;
इसी तरह से उनके तेवर चढ़े हुए थे,
जब जोशीली बात-चीत के बीच उन्होंने
अपना घन-सा भारी फरसा बर्फ़ीली
धरती के ऊपर चला दिया था ! अचरज ही है !

मार्सेलस : इसी तरह से, पहले भी दो बार जबकि हम
पहरे पर थे, हमने आधी रात के समय
उनको फ़ौजी बाने में फिरते देखा है।

होरेशियो : इसका कोई समाधन मैं नहीं पा रहा;
लेकिन मेरी सीमित, मोटी बुद्धि बताती
कुछ विचित्र उत्पात राज्य में होने को है।

मार्सेलस : अच्छा, बैठो, और जिसे हो पता, बताये,
किस कारण इस क़दर कड़े, चौकस पहरे में
प्रजा राज्य की रात-रात भर मेहनत करती;
किस कारण प्रतिदिन तोपें ढाली जाती हैं,
और विदेशों से हथियार ख़रीदे जाते;
क्यों नौका-निर्माताओं से इतना काम
लिया जाता है, उनको इसका पता न चलता,
कब आया इतवार, गया कब; क्या होने को,
जिसके कारण लोग रात-दिन खून-पसीना
एक किये हैं ? जिसे पता हो मुझे बताये।

होरेशियो : मुझे पता है; कम-से-कम ऐसी चर्चा है।
अभी-अभी जिनकी छाया हमने देखी है,
उन्हीं हमारे भूतपूर्व राजा को फ़ोर्टिनब्रास,
नारवे के नरपति, ने अपने उद्धत
अहंकार में पागल होकर युद्ध के लिए
ललकारा था; इसे जानते ही होगे तुम;
हैमलेट का बल-विक्रम दुनिया में प्रसिद्ध था;
फ़ोर्टिनब्रास मरा उनके विजयी हाथों से।
उन दोनों में मुहरबन्द इक़रार हुआ था—
वीर-नीति अनुरूप, न्याय-नियमों से सम्मत—
जो भी मारा जाय, विजेता उसकी सारी

राज्य-सम्पदा का अधिकारी माना जाये।
फ़ोर्टिनब्रास जयी होता तो महाराज के
पूर्ण राज्य पर उसका, उसकी सन्तानों का
हक हो जाता; पर उसके मारे जाने से,
अगर शर्तनामे का विधिवत् पालन हो तो,
हैमलेट उसके पूर्ण राज्य के अधिकारी हैं।
लेकिन फ़ोर्टिनब्रास-पुत्र ने अपनी अनुभव-
हीन जवानी के उबाल, जोशोख़रोश में
जहाँ-तहाँ नारवे राज्य की सीमाओं पर
कुछ उपद्रवी नवयुवकों को जमा किया है।
खाने-पीने का लालच दे, उन्हें काम वह
दिया गया है जिसमें स्वाद उन्हें आता है।
वह क्या है ?—सरकार हमारी खूब समझती—
ज़ोर-ज़बर्दस्ती से, हाथों की ताक़त से,
उन देशों के ऊपर फिर क़ब्ज़ा कर लेना
जिनको उसका पिता शर्त से हार चुका है।
आज मुल्क में जो हलचल है, भाग-दौड़ है,
जो तेज़ी है, तैयारी है, उसके पीछे
मुझे मुख्य कारण, आधार यही लगता है।

बरनार्डो : औ' मेरा भी यही ख़्याल है; यही वजह है।
तब तो पहरे की घड़ियों में इस छाया का
फ़ौजी के बाने में आना कोई अशकुन
जना रहा है, और ख़ासकर जब वह राजा
से इतनी मिलती-जुलती है, जो इस जंगी
चहल-पहल के मूल केन्द्र हैं।

होरेशियो : यह दिमाग़ को
परेशान इस तरह किये है जैसे आँखों
के अन्दर किरकिरी पड़ी हो। ऐसा कहते,
परम समुन्नत, जगत-विजेता रोम राज्य में
महाबली सीज़र की हत्या के कुछ पहले
सहसा क़ब्रें फटीं, क़फ़न में लिपटे मुर्दे
बाहर निकले और नगर की गली-गली में
घूमे रोते या बर्राते, नक्षत्रों से
लम्बी-लम्बी लपटें छूटीं, ओस की जगह
लोहू टपका, सूरज धब्बेदार हो गया,
और वरुण की जलसेना का नायक चन्दा
ऐसा ग्रहण-गृहीत और निस्तेज हो गया
जैसे उसकी प्रलय-काल तक मुक्ति न होगी।
जैसे आगम आगामी भीषण घटना की,
जैसे अशकुन आनेवाली दुखद घड़ी की,
जैसे लक्षण होनेवाले अमंगलों की
पूर्व सूचना देते हैं, वैसे ही समझो,

अवनि और अम्बर ने मिलकर देश, देश के
बाशिन्दों को एक तरह आगाह किया है।

(भूत फिर आता है।)

पर, चुप, देखो, इसी तरफ़ वह फिर आता है !
मैं इसके आगे जाता हूँ; भले भस्म यह
मुझको कर दे। ओ छलना, आगे मत बढ़ना !
अगर कण्ठ में तेरे स्वर है, मुख में जिह्वा,
मुझको बतला,
क्या कुछ ऐसा पुण्य कार्य है जिसके द्वारा
तुझे शान्ति औ' मुझे बड़ाई मिल सकती है;
मुझको बतला,
क्या कुछ तुझको ज्ञात देश का दैन्य भविष्यत्
जिसे जानकर उसका निराकरण हो सकता;
मुझको बतला,
क्या तूने जीवन में कोई लूट-ख़ज़ाना
चोरी-चोरी धरती के अन्दर गाड़ा था,
जिसके लिए, कहा जाता, मुर्दों की रूहें
अक्सर पृथ्वी के ऊपर भटका करती हैं।
मुझको बतला, ठहर, बोल ! मार्सेलस, रोक ले !

(मुर्ग़ा बाँग देता है।)

मार्सेलस : इसके ऊपर क्या कुठार से वार करूँ मैं ?
होरेशियो : रुके न तो कर।
बरनार्डो : इधर, यहाँ है।
होरेशियो : इधर, यहाँ है।
मार्सेलस : निकल गया वह !

[भूत चला जाता है।

इसका इतना भव्य रूप है, इसके ऊपर
हाथ चलाना इसका तिरस्कार करना है।
हवा काटने का प्रयास भी सफल हुआ है ?
यह प्रहार पर अवहेला से व्यंग्य करेगा।

होरेशियो : फिर भी मुर्ग़े ने जैसे ही बाँग शुरू की
चोर की तरह डरकर भागा; सुना गया है,
अरुणचूड़, जिसको प्रभात का चारण कहते,
जब अपनी ऊँची-तीखी आवाज़ उठाता,
तब दिन का देवता नेत्र खोला करता है।
उसकी ललकारों को सुनकर क्षिति, जल, पावक,
पवन, गगन में दम्भी, लोभी, पापी रूहें
भाग कहीं पर छिप जाती हैं। इसने भी यों
ग़ायब होकर आज सत्य यह सिद्ध कर दिया।

मार्सेलस : जैसे ही मुर्ग़ा बोला वह लुप्त हो गया।
कुछ कहते हैं, जब वह पुण्य-पक्ष लगता है
जिसमें हम अपने संरक्षक प्रभु मसीह का
जन्म-जयन्ती-पर्व मनाते, यह प्रभात का
वाहक पंछी, रात-रात भर बोला करता।
तब कोई भी रूह नहीं बाहर आने की
हिम्मत करती; रातें बड़ी मनोरम होतीं,
नभ में तारे नहीं टूटते, परियाँ नहीं
उपद्रव करतीं, औ' न चुड़ैलें जादू-टोने;
ऐसी पावन औ' मंगलमय घड़ियाँ होतीं।

होरेशियो : सुन रक्खा है; इस पर कुछ विश्वास मुझे है।
लेकिन देखो, ऊँचे उदयाचल के ऊपर
पड़ी ओस पर भूरे कुहरे की चादर में
प्रात उतरता; अब हम पहरे से छुट्टी लें;
और अगर मेरी मानो तो, आज रात जो
हमने देखा, उसे युवक हैमलेट से कह दें।
मुझको निश्चय है कि रूह जो हमसे चुप थी
उससे बोलेगी; सहमत हो, उसे बता दें?
उसके प्रति हम प्रेम और कर्त्तव्य निभायें
तो ऐसा करना आवश्यक, और उचित भी।

मार्सेलस : चलो, बता दें! मुझे पता है, आज सुबह को
उससे भेंट कहाँ सुविधा से हो सकती है।

[**सब बाहर जाते हैं।**

दूसरा दृश्य

गढ़ का एक राज-कक्ष

(राजा, रानी, हैमलेट, पोलोनियस, लायरटीज, बोल्टिमाण्ड, कारनीलियस, सरदार और सेवक गण आते हैं।)

राजा : गो कि हमारे प्यारे भाई हैमलेट के
देहावसान की याद आज भी बिल्कुल ताज़ी,
और उचित ही था, इस दुख से हृदय हमारे
भारी हों औ' देश समूचा शोक-मग्न हो,
फिर भी मन को हम विवेक से साध रहे हैं;
उनके ग़म में हम सन्तुलन नहीं खो सकते,
आखिर हमें ध्यान अपना भी तो रखना है।
इस कारण सुख-दुख समान पलड़ों पर धरकर,

एक आँख में ख़ुशी, एक में रंज बसाकर,
मातम से शादी औ' शादी से मातम की
गाँठ जोड़कर, एक तरह से दबे हृदय से,
हमने अपनी पहले-की भाभी रानी से
ब्याह कर लिया, और हमारे साथ आज वे
इस रण-उन्मुख राज्य, राज्य के सिंहासन की
मान्य स्वामिनी। —और आपकी शुभ सलाह से
भी हम वंचित नहीं रहे हैं; इस प्रसंग में
खुले हृदय से आप हमारे साथ रहे हैं।
हम इन सबके लिए आपके आभारी हैं।
अब जो कहना है, उसका है पता आपको;
फ़ोर्टिनब्रास-पुत्र ने हमको निबल समझकर,
या विचारकर कि हमारे स्वर्गीय बन्धु के
उठ जाने से राज्य हमारा असंगठित हो
बिखर गया है, जिसका लाभ उठा सकता वह,
हमको सन्देसे पर सन्देसे भेजे हैं
जिनमें कहा गया है हम वह सारी धरती
वापस कर दें जिसको उसका पिता हमारे
पराक्रमी भाई के हाथों, शर्त बाँधकर,
हार चुका था। इसके बारे में इतना ही।
अब मैं आता हूँ उस पर जिसलिए मिले हम,
औ' जो कुछ हमको करना है। यह ख़त है जो
उसके चचा, नारवे को हम भेज रहे हैं,
जो रोगी, कमज़ोर, खाट से लगा हुआ है,
और भतीजे की मंशा से बेख़बरा है,
कि वह उसे समझाये, आगे मत बढ़ने दे;
जितनी सेना औ' जितना सामान और कर
उसे प्रजा से दिलवाना है, यहाँ लिखा है।
वृद्ध नारवे को यह अभिवादन देने को,
योग्य कारनीलियस, तुम्हें औ' वोल्टिमाण्ड को
जाना होगा। जिन बातों का ब्योरा इसमें
दिया गया है उनके बाहर राजा से कुछ
तै करने का तुम्हें निजी अधिकार नहीं है,
किसी तरह का। विदा तुम्हें, कर्तव्य तुम्हारा
जल्दी करने को कहता है।

कारनीलियस
वोल्टिमाण्ड : इसके, और
सभी कामों के लिए आपके हम सेवक हैं।

राजा : हमें तनिक सन्देह नहीं है। विदा, सिधारो।

[**वोल्टिमाण्ड और कारनीलियस बाहर जाते हैं।**

लायरटीज़, कार्यक्रम अब अपना बतलाओ।
तुमने किसी काम पर जाने की हमसे कुछ

चर्चा की थी। लायरटीज़, काम वह क्या है ?
उचित बात पर ध्यान हमेशा हम देते हैं।
क्या है ऐसी चीज़ जिसे तुम हमसे माँगो
और तुम्हें वह देने से इन्कार करें हम ?
जो रिश्ता दिल से दिमाग़ का माना जाता,
जो सम्बन्ध वचन का कर्मों से होता है,
वही तुम्हारे पिता और डेनमार्क राज्य के
सिंहासन का। बतलाओ, क्या तुम्हें चाहिए ?

लायरटीज़ : महाराज, अपराध क्षमा हो; मुझे दया कर
आज्ञा दें, मैं फ्रांस देश को वापस जाऊँ।
महामहिम के राज्यारोहण के अवसर पर
अपनी स्वामिभक्ति जतलाने की इच्छा से
बड़ी ख़ुशी से मैं आया था। लेकिन अपना
फ़र्ज़ बजाकर, झूठ आपसे नहीं कहूँगा,
फ्रांस लौट जाने की मेरी अभिलाषा है;
यदि श्रीमन्त कृपा कर अपनी अनुमति दें तो।

राजा : तुम्हें पिता ने अनुमति दे दी ? पोलोनियस, तुम
क्या कहते हो ?

पोलोनियस : श्रीमन्, इसने एक तरह से
अनुमति मेरी ले ही ली है। इसने अपनी
बिनती बारम्बार सुनाकर मुझको इतना
विवश कर दिया, मुझको कहना पड़ा, तुम्हारी
जैसी इच्छा। अब मेरी प्रार्थना यही है,
महाराज भी इसको जाने की आज्ञा दें।

राजा : लायरटीज़, तुम्हारे यौवन की यह बेला,
समय तुम्हारे हाथों में है; अपने सद्गुण
विकसित करने में इसका उपयोग करो तुम,
अपनी रुचि से। अब, हैमलेट, तुमसे दो बातें—
मेरे भाई के बेटे, बेटे मेरे भी—

हैमलेट : (अलग) चाचा से तुम पिता बन गये, किन्तु पिता से
कितने नीचे !

राजा : कारण क्या है, तुम पर शोक अभी तक छाया !

हैमलेट : महाराज के छाया-छत्र तले रहता हूँ,
शोक मुझे क्या !

रानी : प्यारे हैमलेट, अब मातम के
वस्त्र उतारो, दीन देश पर दया दिखाओ,
आँखों को आँसू से तर कर, आहें भर-भर,
अपने पूज्य पिता को मिट्टी में मत खोजो।
तुम्हें ज्ञात है ऐसा ही होता आया है,
जो भी पैदा हुआ उसे मरना पड़ता है—
दो दिन जगना, फिर अनन्त निद्रा में सोना।

हैमलेट : देवि, सत्य है, ऐसा ही होता आया है।

रानी : यदि ऐसा है, तो तुमको ऐसा क्यों लगता,
तुम पर यह आघात नया है ?

हैमलेट : 'लगता' न कहो,
देवि, सत्य ही यह मुझ पर है, 'लगने' भर की
बात नहीं है। प्यारी माँ, ये काले कपड़े,
संजीदा काली पोशाकें, जिनको मातम
जतलाने को पहना जाता, गहरी, ठण्डी,
आहें जो बरबस मुँह से बाहर आती हैं,
आँसू की धाराएँ जो नयनों से बहतीं,
घनी उदासी जो चेहरे पर छायी रहती,—
ये सब की सब, और शोक सूचित करने के
सब ढकोसले और चोचले और दिखावे,
सब आकृतियाँ, सभी रीतियां, सब मुद्राएँ,
मेरे मन के दुख को व्यक्त नहीं कर सकतीं।
इन सबसे इन्सान दुखी लगता है, सच है,
पर मनुष्य इनका अभिनय भी कर सकता है।
मेरे अन्दर जो है दूर दिखावे से है;
ये दुख के ऊपरी वसन हैं, अलंकरण हैं।

राजा : हैमलेट, अपने पूज्य पिता के स्वर्गवास पर
शोक मनाना पुत्र के लिए उचित बात है;
और तुम्हारा तो स्वभाव इतना कोमल है।
लेकिन देखो, पिता सदा किसका जीता है;
गये पिता के पिता, पितामह-पिता भी गये।
और पुत्र का धर्म, दिवंगत पिता के लिए
शोक मनाना, मातम करना, पर कितने दिन ?
सदा के लिए सदमे को दिल पर बिठलाना
भला नहीं है; हठधर्मी है; ऐसे दुख के
आगे झुकना नहीं मर्द को शोभा देता।
जो ऐसा करता है वह ईश्वर की इच्छा का
आदर करना नहीं जानता; वह निश्चय ही
दुर्बल-मन है, अस्थिर-चित है, ज्ञान-शून्य है,
और समझदारी उसको छू नहीं गयी है।
जो होनी है, और सदा जो होती रहती,
जैसे आँखों के आगे सौ बातें होतीं,
उससे हम अपने जड़ हठ में क्यों दुख मानें ?
छिः, गुनाह यह ईश्वर के प्रति, मृतकों के प्रति,
कुदरत के प्रति—बुद्धि जिसे स्वीकार न करती।
जब से पहली मृत्यु हुई है तब से लेकर
आज तलक जो मृत्यु हुई है, एक बात ही
प्रकृति पुकार-पुकार सदा कहती आयी है—
मृत्यु पिताओं की होती, आगे भी होगी।
सुनो हमारी, व्यर्थ शोक करना अब छोड़ो,

हमको अपना पिता समझ लो; इसे सुनें सब,
बाद हमारे तुम सिंहासन के अधिकारी।
जितना पावन प्रेम पिता का पुत्र के लिए
हो सकता है उतना हमें तुम्हारे प्रति है।
विटेनबर्ग विद्यालय को तुम वापस जाना
चाह रहे हो, किन्तु हमारी मर्ज़ी के
बिल्कुल ख़िलाफ़ यह। हम तो यही चाहते हैं तुम
यहीं रहो; तुमको आँखों के आगे पाकर
हमें बड़ा सन्तोष, बड़ा आनन्द मिलेगा।
तुम्हीं प्रमुख सरदार, भतीजे, बेटे, सब कुछ।

रानी : हैमलेट, माता की बिनती को मत ठुकराओ।
यहीं रहो औ' विटेनबर्ग का ख़्याल छोड़ दो।

हैमलेट : माँ, भरसक आज्ञा-पालन का यत्न करूँगा।

राजा : यह कितना प्यारा, कितना सुन्दर उत्तर है!
यह डेनमार्क हमें जैसे है, तुमको भी हो।
देवि आइए, हैमलेट ने अपनी कोमलता,
अपनी इच्छा से जो मेरे मन की कर दी
उससे, सच मानो, मेरा दिल बाग़-बाग़ है।
इस अवसर पर जामे-सेहत पीने का उत्सव
किया जायगा; औ' तोपें दागी जायेंगी,
जिनकी आवाज़ों से बादल काँप उठेंगे,
राज्य-सभा के पान-गान की मादक ध्वनियाँ
प्रतिध्वनित अम्बर से होंगी, जैसे वह भी
धरती के उल्लास-हास से मगन-मस्त हो।
देवि, आइए!

[हैमलेट को छोड़कर सब बाहर चले जाते हैं।

हैमलेट : उफ़, ओ मेरी हाड़-मांस की यह जड़ काया,
काश, पिघल-गल ओस बिन्दुओं में ढल सकती!
हाय, धर्म ने आत्मघात को पाप किसलिए
कह रक्खा है। ओ परमेश्वर! ओ परमेश्वर!
मुझको सब संसार और यह सारा जीवन
कितना जर्जर, शिथिल, असार, निरर्थक लगता!
इसको सौ धिक्कार! जगत ऐसा कानन है
जिसके झाड़ों-झंखाड़ों को कोई साफ़
नहीं करता है। जो कि प्रकृति में मलिन-घृणित है
उसने सबको छाप लिया है। यह होना था!
पिता को मरे मुश्किल से दो मास हुए हैं!
अरे, कहाँ दो; इससे भी कम। कैसे महिमा-
मण्डित राजा! उनकी तुलना में यह लगता
जैसे नर के आगे बानर। मेरी माँ को
कितना प्यार किया करते थे! माँ के मुख पर

अगर हवा का झोंका भी लग जाता था वे
विचलित हो जाया करते थे। अम्बर-धरती !
क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं ? एक समय था,
उन्हें देखते माँ की आँख नहीं थकती थी,
जैसे पीकर प्यास किसी की बढ़ती जाये,
फिर भी एक मास के अन्दर—कैसे भूलूँ ! —
छलना तेरा नाम नारि है—एक महीना
क्या होता है—हाय, पिता का शव जिस पथ से
गया, अभी उसके पग-चिह्न नहीं मिट पाये;
माँ ने उसको अश्रु-कणों से सींच दिया था;
उसने, आह, उसी माँ ने कैसे—परमेश्वर ! —
बुद्धिहीन पशु अधिक समय तक शोक मनाता—
मेरे चाचा, मेरे पूज्य पिता के भाई
को अपना पति बना लिया है—लेकिन दोनों
में क्या समता ! कहाँ देवता, कहाँ आदमी !
एक महीने के अन्दर ही ! — उनकी सूजी,
लाल आँख के बिल्कुल दिखावटी आँसू भी
सूख न पाये थे कि उन्होंने ब्याह कर लिया !
ओ, निर्लज्जा की हद होती, किस उतावली
से व्यभिचारी बिस्तर में वे जाकर लेटीं !
अच्छा है यह नहीं, न कोई अच्छाई ही
इससे होनेवाली, मेरी छाती, फट जा,
क्योंकि मुझे अपने मुँह को बाँधे रहना है !

(होरेशियो, बरनार्डो और मारसेलस आते हैं ।)

होरेशियो : श्रीमन्, मेरा अभिवादन लें।

हैमलेट : तुमसे मिलकर मुझे खुशी है।
होरेशियो हो, कच्ची याद नहीं है मेरी।

होरेशियो : ठीक आपने पहचाना है;
श्रीमन्, मुझको अपना अदना सेवक समझें।

हैमलेट : मैं तो साथी समझ रहा हूँ; तुम चाहो तो
मुझको अपना सेवक समझो। विटेनबर्ग को
छोड़ यहाँ तुम क्या करते हो ? कहो मारसेलस,
कैसे हो ?

मारसेलस : कृपा आपकी।

हैमलेट : तुमसे मिलकर
बड़ी खुशी है; पर होरेशियो, सच बतलाओ,
विटेनबर्ग से दूर यहाँ तुम करते क्या हो ?

होरेशियो : कूचागर्दी, श्रीमन्, मेरी बान पुरानी।

हैमलेट : इसका दोषी कभी तुम्हारा दुश्मन तुमको
नहीं कहेगा। जो खिलाफ़ तुम अपने कहते,
यदि उसका विश्वास करूँ तो बड़ा कान पर

जब्र करूँगा। तुम आवारागर्द नहीं हो।
लेकिन आये एलसिनोर तुम किस मतलब से ?
यहाँ सबक़ बस पीने का सीखा जा सकता।

होरेशियो : यहाँ आपके पूज्य पिता के स्वर्गवास पर
मातमपुर्सी को आया था।

हैमलेट : मेरे साथी
होकर मुझको मत झुठलाओ। तुम आये थे
मेरी माता की शादी में शामिल होने।

होरेशियो : सच है, श्रीमन्, अर्थी के बस पीछे ही
बारात लगी थी।

हैमलेट : सोचो, इससे हुई किफ़ायतशारी कितनी !
मृत्यु-भोज के लिए बने पकवान-व्यंजनों
से शादी की दावत दे दी—गो थे बासी।
होरेशियो, मेरी आँखों ने यह दिन देखा !
इससे अच्छा था कि स्वर्ग से धक्के दे
शैतान नरक में मुझे गिराता।
मेरे पिता ! मुझे लगता, मैं उन्हें देखता !

होरेशियो : कहाँ ? किस जगह ?

हैमलेट : होरेशियो, मन की आँखों में।

होरेशियो : एक बार उनको देखा था, क्या राजा थे !

हैमलेट : क्या मनुष्य थे !—अपने पूरेपन के अन्दर।
उन जैसा अब कभी देखने को न मिलेगा।

होरेशियो : मानें तो कल रात उन्हें मैंने देखा था।

हैमलेट : देखा ? किसको ?

होरेशियो : राजा को, आपके पिता को।

हैमलेट : मेरे पूज्य पिता, राजा को ?

होरेशियो : अचरज में यों मत खो जायें; सुनें ध्यान से
जो मैं अद्भुत बात बताता; उसके साखी
ये दोनों हैं।

हैमलेट : कहो कृपा कर, सुनता हूँ मैं।

होरेशियो : दो रातों को एक साथ जब ये दो सज्जन
पहरे पर थे, अर्द्ध रात्रि के घुप्प अँधेरे,
सन्नाटे में, इनको ऐसा लगा कि जैसे
एक शक्ल हू-ब-हू आपके पिता की तरह,
एड़ी से लेकर चोटी तक, बड़ी शान से
कवच, कृपाण, कुठार, ढाल से सज्जित होकर
इनके आगे आ पहुँची औ' लगी टहलने,
धीमी पर गम्भीर चाल से; तीन बार वह
तीन हाथ पर इनके आगे होकर गुज़री।
भय से, भ्रम से दोनों की आँखें पथराईं,
मारे डर के अंग-अंग सब शिथिल हो गये,
ठूँठ की तरह जड़ीभूत हो मूक भाव से

खड़े रह गये, हुई न हिम्मत, उससे बोलें।
अपने तक रखने की भारी क़सम दिलाकर
मुझे इन्होंने यह बतलाया। और तीसरी
रात रहा पहरे पर मैं भी। ठीक जिस समय,
ठीक जिस तरह, मुझे इन्होंने बतलाया था,
शक्ल सामने मेरे आयी; शब्द-शब्द इनका
सच निकला, पिता आपके, मेरे जाने-
पहचाने थे — बिल्कुल शक्ल उन्हीं-जैसी थी,
जैसे मेरा एक हाथ दूसरे की तरह।

हैमलेट : मगर कहाँ पर दिखलायी दी ?

मारसेलस : श्रीमन्, चबूतरे पर, जिसके ऊपर हम
पहरा देते थे।

हैमलेट : क्या तुम उससे बोले भी थे ?

होरेशियो : बोला था, श्रीमन्, पर उसने दिया न उत्तर।
फिर भी मुझको लगा कि उसने शीश उठाया,
और बनायी मुद्रा जैसे वह कुछ कहना
चाह रही है। ठीक उसी क्षण मुर्ग़े ने दी
बाँग ज़ोर से, और भोर की उस पुकार पर
वह तेज़ी से सिमटी, ओझल हुई आँख से।

हैमलेट : बड़ा मुझे इस पर अचरज है !

होरेशियो : प्राणों की सौगन्ध मुझे है, सब कुछ सच है।
और परम कर्तव्य हमारा यह था इसकी
खबर आपको कर दी जाये।

हैमलेट : ठीक किया है तुमने, लेकिन मैं यह सुनकर
परेशान हूँ। आज रात तुम पहरे पर हो ?

दोनों : हम दोनों हैं।

हैमलेट : क्या तुमने यह कहा—शक्ल हथियारबन्द थी ?

दोनों : यही कहा था।

हैमलेट : एड़ी से लेकर चोटी तक ?

दोनों : श्रीमन्, सिर से ले पाँवों तक।

हैमलेट : तब तो चेहरा दिखा न होगा।

होरेशियो : पर, श्रीमन्, उसके चेहरे से झिलम उठी थी।

हैमलेट : क्या उसके मुँह पर ग़ुस्सा था ?

होरेशियो : ग़ुस्से से ज़्यादा सदमा था।

हैमलेट : चेहरा पीला था कि लाल था ?

होरेशियो : बिल्कुल पीला पड़ा हुआ था।

हैमलेट : आँख गड़ाकर क्या उसने तुमको देखा था ?

होरेशियो : घूर-घूरकर।

हैमलेट : काश वहाँ पर मैं भी होता !

होरेशियो : आप बड़े अचरज में पड़ते।

हैमलेट : पड़ता ही मैं, क्या वह देरी तक ठहरी थी ?

होरेशियो : धीरे-धीरे सौ गिनने तक।

जब्र करूँगा। तुम आवारागर्द नहीं हो।
लेकिन आये एलसिनोर तुम किस मतलब से ?
यहाँ सबक़ बस पीने का सीखा जा सकता।

होरेशियो : यहाँ आपके पूज्य पिता के स्वर्गवास पर
मातमपुर्सी को आया था।

हैमलेट : मेरे साथी
होकर मुझको मत झुठलाओ। तुम आये थे
मेरी माता की शादी में शामिल होने।

होरेशियो : सच है, श्रीमन्, अर्थी के बस पीछे ही
बारात लगी थी।

हैमलेट : सोचो, इससे हुई किफ़ायतशारी कितनी !
मृत्यु-भोज के लिए बने पकवान-व्यंजनों
से शादी की दावत दे दी—गो थे बासी।
होरेशियो, मेरी आँखों ने यह दिन देखा !
इससे अच्छा था कि स्वर्ग से धक्के दे
शैतान नरक में मुझे गिराता।
मेरे पिता ! मुझे लगता, मैं उन्हें देखता !

होरेशियो : कहाँ ? किस जगह ?

हैमलेट : होरेशियो, मन की आँखों में।

होरेशियो : एक बार उनको देखा था, क्या राजा थे !

हैमलेट : क्या मनुष्य थे !—अपने पूरेपन के अन्दर।
उन जैसा अब कभी देखने को न मिलेगा।

होरेशियो : मानें तो कल रात उन्हें मैंने देखा था।

हैमलेट : देखा ? किसको ?

होरेशियो : राजा को, आपके पिता को।

हैमलेट : मेरे पूज्य पिता, राजा को ?

होरेशियो : अचरज में यों मत खो जायें; सुनें ध्यान से
जो मैं अद्‌भुत बात बताता; उसके साखी
ये दोनों हैं।

हैमलेट : कहो कृपा कर, सुनता हूँ मैं।

होरेशियो : दो रातों को एक साथ जब ये दो सज्जन
पहरे पर थे, अर्द्ध रात्रि के घुप्प अँधेरे,
सन्नाटे में, इनको ऐसा लगा कि जैसे
एक शक्ल हू-ब-हू आपके पिता की तरह,
एड़ी से लेकर चोटी तक, बड़ी शान से
कवच, कृपाण, कुठार, ढाल से सज्जित होकर
इनके आगे आ पहुँची औ' लगी टहलने,
धीमी पर गम्भीर चाल से; तीन बार वह
तीन हाथ पर इनके आगे होकर गुज़री।
भय से, भ्रम से दोनों की आँखें पथराईं,
मारे डर के अंग-अंग सब शिथिल हो गये,
ठूंठ की तरह जड़ीभूत हो मूक भाव से

खड़े रह गये, हुई न हिम्मत, उससे बोलें।
अपने तक रखने की भारी क़सम दिलाकर
मुझे इन्होंने यह बतलाया। और तीसरी
रात रहा पहरे पर मैं भी। ठीक जिस समय,
ठीक जिस तरह, मुझे इन्होंने बतलाया था,
शक्ल सामने मेरे आयी; शब्द-शब्द इनका
सच निकला, पिता आपके, मेरे जाने-
पहचाने थे — बिल्कुल शक्ल उन्हीं-जैसी थी,
जैसे मेरा एक हाथ दूसरे की तरह।

हैमलेट : मगर कहाँ पर दिखलायी दी ?

मारसेलस : श्रीमन्, चबूतरे पर, जिसके ऊपर हम
पहरा देते थे।

हैमलेट : क्या तुम उससे बोले भी थे ?

होरेशियो : बोला था, श्रीमन्, पर उसने दिया न उत्तर।
फिर भी मुझको लगा कि उसने शीश उठाया,
और बनायी मुद्रा जैसे वह कुछ कहना
चाह रही है। ठीक उसी क्षण मुर्गे ने दी
बाँग ज़ोर से, और भोर की उस पुकार पर
वह तेज़ी से सिमटी, ओझल हुई आँख से।

हैमलेट : बड़ा मुझे इस पर अचरज है !

होरेशियो : प्राणों की सौगन्ध मुझे है, सब कुछ सच है।
और परम कर्तव्य हमारा यह था इसकी
खबर आपको कर दी जाये।

हैमलेट : ठीक किया है तुमने, लेकिन मैं यह सुनकर
परेशान हूँ। आज रात तुम पहरे पर हो ?

दोनों : हम दोनों हैं।

हैमलेट : क्या तुमने यह कहा—शक्ल हथियारबन्द थी ?

दोनों : यही कहा था।

हैमलेट : एड़ी से लेकर चोटी तक ?

दोनों : श्रीमन्, सिर से ले पाँवों तक।

हैमलेट : तब तो चेहरा दिखा न होगा।

होरेशियो : पर, श्रीमन्, उसके चेहरे से झिलम उठी थी।

हैमलेट : क्या उसके मुँह पर ग़ुस्सा था ?

होरेशियो : ग़ुस्से से ज़्यादा सदमा था।

हैमलेट : चेहरा पीला था कि लाल था ?

होरेशियो : बिल्कुल पीला पड़ा हुआ था।

हैमलेट : आँख गड़ाकर क्या उसने तुमको देखा था ?

होरेशियो : घूर-घूरकर।

हैमलेट : काश वहाँ पर मैं भी होता !

होरेशियो : आप बड़े अचरज में पड़ते।

हैमलेट : पड़ता ही मैं, क्या वह देरी तक ठहरी थी ?

होरेशियो : धीरे-धीरे सौ गिनने तक।

दोनों : इससे ज़्यादा, इससे ज़्यादा !
होरेशियो : नहीं, जबकि मैंने देखा था।
हैमलेट : दाढ़ी के अधपके बाल थे ?
होरेशियो : थे, जैसे मैंने उनके, जीते में देखे;
जैसे काली रात चाँदनी में लगती है।
हैमलेट : आज रात मैं पहरा दूँगा,
सम्भव है, छाया फिर आये।
होरेशियो : शर्त लगा लें, वह आयेगी।
हैमलेट : यदि वह मेरे पूज्य पिता का रूप धारकर
आती है तो मैं तो उससे बात करूँगा,
चाहे दोज़ख़ गला फाड़कर मुझको रोके।
तुम सबसे मेरी बिनती है, अगर अभी तक
बात गुप्त यह तुमने रक्खी, तो उस पर चुप
रहकर उसको गोपनीय पहले से समझो।
औ' जो भी तुम आज रात को देखो, उसको
समझो, उस पर मुँह मत खोलो। मुझ पर होगा
बहुत बड़ा एहसान तुम्हारा; अभी विदा दो।
चबूतरे पर ग्यारह औ' बारह के अन्दर
मैं पहुँचूंगा।
सब : हमें आपके प्रति अपना कर्तव्य ज्ञात है।

[**सब जाते हैं।**

हैमलेट : मुझे तुम्हारा प्रेम चाहिए, जैसे मेरा
तुम सबके प्रति; मुझे विदा दो।
कवच-किरच में क्यों है लैस पिता की आत्मा !
हैं अच्छे आसार न दिखते, कोई छल-बल
किया गया है। काश, रात जल्दी आ जाती !
तब तक मेरे मन, धीरज धर। बुरी करनियाँ
अपने को ज़ाहिर कर देंगी—चाह लोगों
की आँखों से उन्हें छिपाये सारी दुनिया।

[**जाता है।**

तीसरा दृश्य

पोलोनियस के घर का कमरा

(लायरटीज़ और ओफ़ीलिया का प्रवेश)

लायरटीज़ : मेरा सब सामान जा चुका, मुझे विदा दो।
जब अनुकूल हवाएँ हों, जब सुविधाएँ हों,

सन्देसे भेजवाने की, तब सो मत जाना,
समाचार अपना, बहना, तुम देती रहना।

ओफ़ीलिया : क्यों इसमें सन्देह तुम्हें है ?

लायरटीज़ : हैमलेट ने जो थोड़ा-बहुत झुकाव तुम्हारे
प्रति दिखलाया, उसे समझना, वह बहाव है
सिर्फ़ समय का, नये ख़ून की बस अठखेली,
कली डाल पर लगी प्रकृति के नव वसन्त में,
कली अधखिली मुर्झाकर के झर जाने को,
टटकी, लेकिन नहीं बहुत दिन टिकनेवाली,
जो पल भर मुसकरा, गन्ध को बिखराकर, पर
मार निकल जाती है; बहना, और नहीं कुछ।

ओफ़ीलिया : क्या वह केवल इतनी ही है ?

लायरटीज़ : उसको इससे अधिक न समझो।
चन्द्र दूज का बढ़ता है जब तब वह केवल
क्या आकार ग्रहण करता है, या प्रकार भी ?—
सुन्दरता, प्रकाश में बढ़कर। इसी तरह से
जब मनुष्य बढ़ता बाहर से, भीतर-भीतर
बुद्धि-आत्मा भी उसकी विकसित होती है।
सम्भव है वह अभी प्यार तुमको करता हो,
और इस समय भव्य भावनाएँ उसकी हों
निर्मल-निश्छल। पर वह जैसे ऊँचे पद पर,
उसे देखकर डरा चाहिए; उसकी इच्छा
अपनी इच्छा मात्र नहीं है, क्योंकि जन्म के
बन्धन से वह बँधा हुआ है; अपने मन की,
जैसे दुनिया के अगणित अनजाने करते,
करने को आज़ाद नहीं है; वह पसन्द जो
आज करेगा उस पर कल सम्पूर्ण राज्य की
क्षेम-कुशलता निर्भर होगी; तब पसन्द पर
उसकी, अंकुश रखना आवश्यक हो जाता।
उसे राज्य की इच्छाओं पर, संकेतों पर,
चलना होगा, क्योंकि राज्य का वह मुखिया है।
तब यदि वह कहता है प्यार तुम्हें करता है,
बुद्धि तुम्हें इसलिए मिली, उसके कहने का
उतना ही विश्वास करो तुम जितने को वह
अपने पद से संयत व्यवहारों में परिणत
कर सकता है। वह उतने से अधिक न होगा
जितना है डेनमार्क राज्य की इच्छा की संविहित
परिधि में। तब अनुमान करो तुमको क्या
हानि, मान की, सहनी होगी यदि तुम उसके
गीतों पर लट्टू हो जातीं, दिल दे देतीं,
या सुनकर उसकी उच्छृङ्खल मनुहारों को
अपने यौवन का पावन धन लुटा बैठतीं।

डरो, बहन, उससे डरने की आवश्यकता।
अपने दिल का प्यार छिपाकर ऐसा रक्खो
नज़र-निशाना उसका इसको बेध न पाये।
काली लड़की की मति मारी नहीं गयी तो
शुक्ल चन्द्र के सम्मुख घूँघट कभी न खोले।
गुण भी अवगुण के प्रहार से नहीं बचा है;
इसके पूर्व कि मधुऋतु मधुवन में मुसकाये,
नव कलिका के अन्दर कीड़े लग जाते हैं
औ' यौवन के तरल, सरल, स्वर्णिम प्रभात में
काले और कलंकी बादल घिर आते हैं।
तो सचेत हो, भय सबसे अच्छी रक्षा है,
यौवन खुद अपने विरुद्ध विद्रोह जगाता,
हो न सामने कोई ताक़त, कोई भी शै।

ओफ़ीलिया : बन्धु, तुम्हारी भली सीख का मेरे दिल पर
असर हुआ जो, कभी न उसको मिटने दूँगी,
लेकिन मेरे प्यारे भाई, कभी न मुझको
कुश-कण्टकमय कठिन स्वर्ग का पन्थ दिखाना,
पर-उपदेश-कुशल पादरियों के समान जो
फूल-फैल अपने घमण्ड में, बेफ़िक्री से
आज़ादी से फूल-कली से ढके पन्थ पर
रँगरलियाँ करते फिरते हैं औ' अपने ही
शब्दों से बेबहरे रहते।

लायरटीज़ : इसकी आशंका मत रक्खो !

(पोलोनियस आता है।)

देर हो गयी; लेकिन मेरे पिता आ रहे;
फिर उनका आशीष मिलेगा, मंगल होगा,
पुनर्विदा का अवसर कोई शकुन जनाता।

पोलोनियस : कितनी देर लगा दी, अब तक गये नहीं तुम;
पालों में भर गयीं हवाएँ और जहाज़ी
राह तुम्हारी देख रहे हैं; तुम्हें दुआएँ !
औ' जो थोड़े-से उपदेश तुम्हें देता हूँ,
मन:पटल पर अंकित कर लो। जो मन में हो
फिरो न कहते, और न अधकचरे विचार को
कार्य-रूप दो; मिलनसार हो, लेकिन अपनी
चाल-ढाल में कभी गँवरपन मत आने दो।
जाँच-परखकर तुमने मीत बनाये हैं जो,
उन्हें लगा रक्खो छाती से, कस बाँहों में,
किन्तु अशिक्षित और अदीक्षित आवारों के
साथ करो मत यारबाशियाँ। पड़ो न झगड़े
में, लेकिन यदि पड़ना ही हो तो दुश्मन को
सबक़ सिखा दो ऐसा जो वह कभी न भूले।

सबकी बात सुनो, लेकिन सबसे मत बोलो,
सबकी जानो राय, मगर दो राय न जल्दी,
ख़र्च करो पर पहले अपनी जेब देख लो,
औ' फ़िज़ूलख़र्ची की आदत बहुत बुरी है,
अच्छा पहनो, तड़क-भड़क को मत अपनाओ,
अक्सर कपड़ा इन्सानों का भेद बताता,
और फ्रांस के ऊँचे दर्जे, ऊँचे ओहदे—
वाले कपड़ों के चुनाव में अपनी ऊँची
रुचि-रुझान का ख़ास सबूत दिया करते हैं।
दो उधार मत और साथ ही लो उधार मत,
दौलत और दोस्त दोनों का यह दुश्मन है,
जो उधार ले ख़र्च करेगा, धन फूँकेगा;
सबके ऊपर, अपने प्रति ईमानदार हो;
यदि ऐसे इन्सान बन सको तो, ध्रुव जानो,
तुम न किसी को धोखा दोगे; विदा, दुआएँ
मेरी तुमको ऐसा ही गुणवान बनायें।

लायरटीज़ : विनम्रता से विदा ले रहा हूँ मैं, श्रीमन्।
समय जा रहा, नौकर-चाकर बाट देखते।

लायरटीज़ : बहन, विदा दो, ख़ूब याद रखना मैंने जो
बात कही है।

ओफ़ीलिया : गाँठ बाँध ली है वह मैंने
औ' रक्खो विश्वास किसी पर नहीं खुलेगी।

लायरटीज़ : विदा मुझे दो !

[**लायरटीज़ बाहर जाता है।**

पोलोनियस : ओफ़ीलिया, इसने तुमसे क्या बात कही है ?

ओफ़ीलिया : कुछ बातें श्रीमन्त हैमलेट के बारे में

पोलोनियस : मरियम साखी, बहुत ठीक उसने सोचा है।
इधर, कई लोगों से मैंने सुना कि अक्सर
तुम्हें अकेले में उसने बुलवा भेजा है,
औ' तुम भी खुलकर, आज़ादी से उससे
मिलती-जुलती हो। यदि ऐसा है, जैसा मुझसे
कहा गया है, एक तरह से मुझको आगाही
देने को, तो मुझको यह कहना होगा,
तुम अपने को ठीक तरह से नहीं समझतीं;
मेरी बेटी होकर के अपनी इज़्ज़त का
ख़्याल न रक्खे ! तुम दोनों में जो है उसको
साफ़-साफ़ मुझसे बतलाओ !

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, पिछले दिनों उन्होंने अक्सर मेरी
प्रेम-भरी मनुहारें की हैं।

पोलोनियस : प्रेम, ख़ूब है ! तुम कच्ची कचनार कली हो।
इन आँधी-तूफ़ानों से तुम अभी न गुज़रीं।

क्या उसकी मनुहारों का विश्वास तुम्हें है ?—
'मनुहारें' तुम जिन्हें समझतीं ।

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, मैं खुद नहीं जानती, मैं क्या समझूँ !

पोलोनियस : मरियम साखी, मैं तुमको सब समझाऊँगा ।
तुम अपने को बच्ची समझो । जिन मनुहारों
को तुमने हारों-सा समझा, वे तो मणि के
हार नहीं हैं । इतनी जल्दी मन मत हारो ।
वर्ना, हो ज़्यादती शब्द के साथ भले ही,
तुम मुझको मनिहार बनाकर ही छोड़ोगी ।

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, मेरे लिये उन्होंने बड़ा प्रेम-सत्कार
दिखाया ।

पोलोनियस : ठीक, 'दिखावा' ही तुम उसको कह सकती हो ।
छी-छी ! छी-छी !

ओफ़ीलिया : और कहा जो, सत्य सिद्ध उसको करने को
सप्त स्वर्ग की शपथ उठायी ।

पोलोनियस : यह लासा है जिससे चिड़ियाँ फाँसी जातीं ।
ख़ूब जानता, जब यौवन-ज्वर बलकाता है,
सन्निपात से ग्रसी हुई-सी जीभ जल्पती,
शब्द-ज्वाल से प्रेम-प्रतिज्ञा, वादे करती,
लेकिन इस ज्वाला में, बेटी, चमक बहुत
होती है, ताप बहुत कम होता । भूले से भी
इसको दिल की आग न समझो । यह उठते ही
उठते अपने प्रण-प्रलाप को भस्मसात कर
आब-ताब दोनों से वंचित हो जाती है ।
अब से उसके पास न ज़्यादा आओ-जाओ ;
इतनी सस्ती बनो न तुमको जो जब चाहे
बुलवा भेजे । और मुझे श्रीमन्त हैमलेट
के बारे में यह कहना है, औ' इतना ही
तुम्हें जानना, कि वे मर्द हैं, नौजवान हैं,
औ' जितनी आज़ादी से वे चल सकते हैं,
कभी नहीं तुमको मिल सकती । ओफ़ीलिया,
थोड़े में, उनके वादों का विश्वास करो मत,
क्योंकि लबादे जो वे लादे, वे बाहर से
पाक-साफ़ हैं पर उनके अन्दर गूदड़ है ;
जोगिनियों के बाने में वे कुट्टनियाँ हैं,
जिससे उनको छल करने में आसानी हो ।
बस, इतना ही मुझको कहना, अब से, इसको
साफ़ समझ लो, कभी नहीं मैं यह चाहूँगा,
अपनी फ़ुरसत की घड़ियों में लुक-छिपकर के
तुम श्रीमन्त हैमलेट की सोहबत में बैठो,
बदनामी लो ; ध्यान रहे यह, मैं कहता हूँ ;
ठीक राह पर तुम लग जाओ ! समझ गयी हो !

औफ़ीलिया : श्रीमन्, मैं आज्ञा मानूँगी।

[दोनों जाते हैं।

चौथा दृश्य

(हैमलेट, होरेशियो और मारसेलस आते हैं।)

हैमलेट : हवा काटती-सी लगती है; बड़ी ठण्ड है।
होरेशियो : चुभती-सी है, तेज़ हवा है।
हैमलेट : बजे हुए कै ?
होरेशियो : बारह बजनेवाले होंगे।
मारसेलस : नहीं, बज चुके।
होरेशियो : सुना न मैंने, तब तो वक़्त पहुँचता है जब
रूह निकलती और घूमती

(तुरही और ढोल की आवाज़ आती है।)

श्रीमन्, कैसी
ये आवाज़ें ?
हैमलेट : आज रात को राजा उत्सव
मना रहे हैं, खान-पान है, नाच-गान है।
उधर ढालते होंगे वे प्याले पर प्याले,
इधर ढोल औ' नरसिंहे चीपों-चीपों कर
उनके मदहोशी के वादे घोषित करते।
होरेशियो : यह रिवाज है ?
हैमलेट : मरियम साखी, है ऐसा ही;
मुझे ख़्याल आता है, गो मैं इसी देश का
वाशिन्दा हूँ और यहीं जन्मा-जागा हूँ,
मैंने इस रिवाज का पालन कम ही देखा।
इस बदहोशी की लत से हम पूरब-पच्छिम—
सब देशों में निन्दित-नीचे समझे जाते।
हमें पियक्कड़ वे कहते हैं, और सुअर के
साथ हमारा नाम जोड़ते। औ' इससे जो
सद्गुण हम में पाये जाते, उन पर भी
पानी फिर जाता। लोगों के भी साथ यही
अक्सर होता है—किसी प्राकृतिक त्रुटि के कारण—
जुड़ा जन्म से जो है उसके लिए किसी को
दोषी कहते ?—जन्म प्रकृति की लाचारी है—
या उनमें कोई विकार पैदा होने से,
जिससे उनकी तर्कशक्ति मारी जाती है,
या कि किसी ऐसी आदत के लग जाने से,

जो उनके व्यवहारों को अप्रिय कर देती,
उनमें एक बुराई ऐसा घर कर लेती—
चाहे हो वह देन प्रकृति की, या क़िस्मत की—
उनका गुण, उनकी पावनता औ' महानता,
एक उसी ख़ामी के कारण सब दब जातीं
औ' दुनिया उनकी बदनामी करती फिरती।
महज़ ख़राबी, माशा भर की, पूरे मन भर
की ख़ूबी को हल्का साबित कर देती है।

(भूत आता है।)

होरेशियो : देखें, श्रीमन्, वह आता है !

हैमलेट : ओ स्वर्दूतो, दिव्य शक्तियो, हमें बचाओ !
चाहे तू हो कोई जीवन-मुक्त आत्मा,
चाहे तू अभिशप्त प्रेत हो, चाहे तू ला
स्वर्ग-बयारें या कि नरक के झड़-झकझोरे,
चाहे तेरी मंशा अच्छी या कि बुरी हो,
तू ऐसी मुद्रा में आता, मुझको लगता,
मैं कुछ प्रश्न करूँगा तो तू उत्तर देगा।
मैं अवश्य तुझसे बोलूँगा, तू हैमलेट है,
नृपति, पिता, डेनमार्क महीपति, ओ, उत्तर दे !
क्या मेरा अज्ञान चीख़ता रह जायेगा ?
तेरा शव मन्त्राभिषिक्त कर जिस पेटी में
हम धर आये थे क्यों उसको तोड़-ताड़कर,
जिस पक्की औ' बड़ी संगमरमरी क़ब्र में
तुझे सुलाकर हम आये थे उसे फाड़कर
क्यों तू बाहर निकल पड़ा है ? मतलब क्या है ?
प्राणहीन शव, क्यों तू पूरे कवच-किरच में
चन्दा के धुँधले प्रकाश में घूम रहा है ?
तुझसे रात डरी-सी लगती। औ' जग के
अनजान जीव हम, ऐसे प्रश्न उठाकर थरथर
काँप रहे हैं जिनके उत्तर नहीं हमारी
बुद्धि-परिधि के अन्दर आते। बोल, कि यह क्यों ?
बोल, किसलिए ? बोल, कि हमको क्या करना है ?

(भूत हैमलेट को बुलाने का संकेत करता है।)

होरेशियो : अपने साथ लिवा जाने को बुला रहा है,
जैसे उसको अलग आपसे कुछ कहना है।

मारसेलस : देखें, कैसे झुक-झुककर के हाथ हिलाता
कहीं निराले में चलने को; लेकिन उसके
साथ न जायें।

होरेशियो : हरगिज़, हरगिज़ !

हैमलेट : नहीं बोलता;
तब मैं उसके साथ जा रहा।

होरेशियो : श्रीमन्, ऐसा
मत करियेगा !

हैमलेट : क्यों, डर का कुछ कारण भी हो ?
मैं अपने जीवन की कौड़ी भर परवाह
नहीं करता हूँ; और जीव का क्या बिगड़ेगा;
जीव नित्य है, जैसे इसका, वैसे मेरा।
मुझको यह फिर बुला रहा है; मैं जाऊँगा।

होरेशियो : कहीं सिन्धु की ओर न फुसलाकर ले जाये,
या पहाड़ की धुर ऊँची चोटी के ऊपर
जिसकी छाया नीचे फैले जल में धँसती;
और वहाँ दूसरा भयानक रूप न ले ले,
बुद्धि हरण जो कर ले, जो पागल कर डाले !
इसे सोच लें; और न कुछ भी हो तो ऐसी
जगह खड़े हो पुरसों नीचे गर्जन करते
सागर को देखना सिर्फ़ सिर चकरा देता।

हैमलट : अब भी मुझको बुला रहा है;
चल, मैं तेरे साथ चलूँगा।

मारसेलस : श्रीमन्, आगे मत बढ़ियेगा।

हैमलेट : हाथ छोड़ दो।

होरेशियो : कहना मानें, आप न जायें।

हैमलेट : मेरा भाग्य पुकार रहा है ! औ' शरीर की
शिरा-शिरा तन गयी कि जैसे हो तन्नाये
हुए शेर की। अब भी मुझको बुला रहा है,
दूर हटा लो हाथ, साथियो। कसमन, मुझको
जो रोकेगा, वह धोयेगा हाथ जान से।
मैं कहता हूँ, दूर हटो !—चल, साथ चलूँगा।

(भूत और हैमलेट बाहर जाते हैं।)

होरेशियो : इन्हें न जाने किन ख्यालों ने जकड़ लिया है।

मारसेलस : साथ चलें हम; इनकी सुनना ठीक न होगा।

होरेशियो : चलो चलें; देखें क्या इसका फल होता है।

मारसेलस : निश्चय ही डेनमार्क राज्य में कुछ गड़बड़ है।

होरेशियो : ईश्वर बेड़ा पार लगाये।

मारसेलस : नहीं, चलें हम
उनके पीछे।

[दोनों बाहर जाते हैं।

पाँचवाँ दृश्य

(भूत और हैमलेट आते हैं।)

हैमलेट : मुझे कहाँ तक ले जायेगा ? बोल, और मैं
नहीं बढ़ूँगा।

भूत : ध्यान लगाकर सुन !

हैमलेट : सुनता हूँ।

भूत : वक़्त नहीं अब दूर कि अपने को जब मुझको
गन्धक की धक-धककर उठती हुई ज्वाल में
स्वाहा करना होगा।

हैमलेट : मुझको बड़ा दुःख है।

भूत : मेरे कारण दुखी न हो, पर जो मैं कहता
कान लगाकर तू उसको सुन !

हैमलेट : कह, सुनता हूँ।

भूत : सुनकर उसका बदला लेना होगा।

हैमलेट : किसका ?

भूत : मैं हूँ तेरे मरे पिता की रूह; कुछ समय
मुझे रात में फिरना होगा, और दिवस में
अग्नि-देश में बन्दी रहकर भूखा रहना,
जिससे मैंने अपने दैहिक जीवन में जो
पाप सँजोये, दह-बह जायें। किन्तु मना है
मुझको अपने बन्दीघर का भेद बताना,
वर्ना उसका थोड़ा-सा भी वर्णन तेरे
प्राणों को झकझोर डालता, ख़ून सुखाता,
और निकल पड़ते बाहर आँखों के कोए,
तेरी घन-घुँघराली लट के बाल अलग हो
एक-एक इस तरह खड़े हो जाते जैसे
किसी भयंकर साही के तन के काँटे हों;
पर यह प्रेत-पुरी का वर्णन मानव के
कानों में पड़ना नहीं चाहिए; सुन, हैमलेट,
यदि तूने अपने पूज्य पिता को प्यार किया है—

हैमलेट : ओ परमेश्वर !

भूत : छल से उसकी भद्दी हत्या का बदला ले।

हैमलेट : कैसी हत्या ?

भूत : यों तो हत्या सभी तरह की भद्दी होती;
यह थी सबसे भद्दी, अद्भुत, अस्वाभाविक !

हैमलेट : जल्दी बतला, जल्दी सब कुछ बतला, जिससे
मनःकल्पना, मनोभावना के डैनों की
तेज़ी से बदला लेने को टूट पड़ूँ मैं।

भूत : मैं मुस्तैद तुझे पाता हूँ;
प्रेत-लोक के नदी-तीर पर मन्थर गति से

उगते पौधे की मोटी जड़ से भी मट्ठर
तुझे कहूँगा, अगर नहीं तू इस बदले के
लिए उठेगा।
अब, हैमलेट, सुन, लोगों से यह कहा गया है,
मुझे साँप ने काट लिया था जबकि बाग़ में
मैं सोया था। मेरे मरने की यह झूठी
वजह बनाकर, फैलाकर डेनमार्क राज्य के
सब लोगों को भारी धोखा दिया गया है।
नौजवान, तू जान कि तेरे सुप्त पिता को
जिसने काटा, साँप वही अब राज-मुकुट उसका
पहने है।

हैमलेट : क्या वह चाचा? मैं पहले ही
भाँप गया था।

भूत : निश्चय वह विषयी, लम्पट, पशु,
जिसने बातों के जादू से धोखेवाली,
सौगातों से, ऊपर-से-सतवन्ती-दिखती
मेरी रानी को अपनी निर्लज्ज वासना
का शिकार कर लिया (अरे, ये खोटी बातें,
सौगातें किस तरह फँसातीं!) औ,' हैमलेट, क्या
पतन हुआ मेरी पत्नी का! मुझसे—जिसने
प्रेम किया था इस गरिमा से, गिरजे में जा,
हाथ हाथ में ले, विवाह की पुण्य प्रतिज्ञा
ली—उस पर, उस लुच्चे पर, जो गुण-स्वभाव में
मुझसे नीचा। सद्गुण, दुर्गुण के नैसर्गिक
प्रलोभनों से कभी नहीं तिल भर डिग सकता।
विषय-वासना, चाहे वे हों स्वर्दूतों में,
नैसर्गिक सेजों के ऊपर तृप्त न होतीं,
गन्दी गलियों में जा गिरतीं।
धीमे बोलूँ, प्रात पवन सौरभ बिखराता।
थोड़े में यह : जबकि बाग़ में मैं सोया था,
मुझको तिपहर में सो जाने की आदत थी,
मुझे अकेला पा चुपके से तेरा चाचा
एक ज़हर की नामुराद शीशी ले आया,
औ' उँडेल दी मेरे कानों के रन्ध्रों में,
जिससे कोढ़ उभर आता है, उसको इन्साना
लोहू से ऐसी है दुश्मनी कि पारे-
सा वह तन की नस-नाड़ी में बहुत जल्द ही
भिन जाता है। और बड़ी तेज़ी से अच्छा-
पतला लोहू बँधने लगता, दही की तरह,
जैसे दूध खटाई पड़ने पर जम जाता।
मेरे साथ हुआ ऐसा ही, आनन-फ़ानन
मेरे सारे चिकने तन पर पड़े चकत्ते,

चमड़ी पर खुरदुरी, बुरी पपड़ी चढ़ आयी।
इस प्रकार सोते में भाई के हाथों से
अपने जीवन, राज-मुकुट, रानी से वंचित
किया गया मैं; गया गिराया मनोविकारों
से भी फूला; मुझको भेजा गया गुनाहों
की गठरी को सिर पर लादे; अन्तिम प्रायश्चित
न कर सका, अन्तिम बार न पाप सकारे,
अन्तिम बार न माफ़ी माँगी, घनी निराशा!
अब मुझको अपनी करनी खुद भरनी होगी।
बड़ी वेदना, बड़ा शोक है, महाशोक है!
यदि तुझमें जीवन है तो इसको न सहन कर।
तू डेनमार्क-राज्य-शय्या को विषय-वासना,
ऐयाशी की शापित सेज न बन जाने दे।
किसी तरह यह काम तुझे पूरा करना हो,
देख, विकार न तेरे मन को छूने पाये!
अपनी माता के विरुद्ध कुछ बात सोच मत;
उसे छोड़ दे ईश्वर पर या उन काँटों पर
जो उसकी छाती के अन्दर—चुभें, कुरेदें।
अब जुगनूँ की जोत मन्द पड़ती जाती है।
इससे लगता है कि प्रात अब दूर नहीं है।
विदा, विदा दे, हैमलेट, मुझको भूल न जाना!

[**बाहर जाता है**

हैमलेट : ओ, तुम सातों स्वर्ग! ओ, धरा!—और किसे मैं
साथ पुकारूँ? अन्ध नरक को? छी-छी! छी-छी!
मेरी छाती पत्थर कर दो; देह-शिराओ,
क्षण-भर को भी ढीली मत हो, तनी रहो तुम,
तना मुझे भी रक्खो!—कैसे तुझे भुला दूँ?
ओ दुखियारी रूह, याद जब तक न छोड़कर
जाती इस बिगड़े दिमाग़ को, कैसे भूल
तुझे सकता हूँ। निश्चय ही अपने दिमाग़ से
दूर करूँगा सब छोटी-मोटी बातों को,
सब किताब की शिक्षाओं को, सब अतीत की
शक्ल-सूरतों को, छापों को, जिनको यौवन-
अनुभव संचित करता रहता; तेरा ही
आदेश एक बस मेरी बुद्धि बसा रक्खेगी,
बाहर कर देगी बाक़ी छोटों-ओछों को;
ऐसा ही होगा, सौगन्ध मुझे ईश्वर की।
ओ पापी पतिघाती नारी!
ओ खल 'खलखल' हँसनेवाले हत्यारे खल!
कहाँ गयी मेरी कापी, मैं अंकित कर दूँ,
'खलखल' हँसनेवाला भी खल हो सकता है;

कम से कम डेनमार्क राज्य में ऐसा खल है।
चचा, वही तुम ! क्या थे अन्तिम शब्द रूह के ?—
विदा, विदा दे, हैमलेट, मुझको भूल न जाना।
मैं इसकी सौगन्ध खा चुका।

मारसेलस
होरेशियो } श्रीमन्, श्रीमन्।

(होरेशियो और मारसेलस आते हैं।)

मारसेलस : अच्छे हैं श्रीमन्त ?
करे प्रभु रक्षा उनकी !
हैमलेट : ऐसा ही हो।
होरेशियो : कहिए श्रीमन्, कहिए श्रीमन् !
हैमलेट : आ हीरामन, आ हीरामन !
मारसेलस : श्रीमन्, कैसे हैं ?
होरेशियो : श्रीमन्, क्या हाल-चाल हैं ?
हैमलेट : बहुत ठीक हूँ।
होरेशियो : श्रीमन्, जो बीती कह डालें।
हैमलेट : नहीं तुम्हारे मुँह पर ताले।
होरेशियो : क़समन श्रीमन्, मैं न किसी से बात कहूँगा।
मारसेलस : औ' न किसी से मैं भी, श्रीमन् !
हैमलेट : कभी किसी ने इस पर पूछा तो भी, बोलो,
मौन रहोगे ?
होरेशियो : निश्चय, श्रीमन्, क़समन कहता।
हैमलेट : इस पूरे डेनमार्क राज्य में जो खल बसता,
साथ-साथ वह मूर्खराज भी।
होरेशियो : इसे क़ब्र से निकल रूह के हमसे कहने
की कोई दरकार नहीं है।
हैमलेट : ठीक बात है, तुमने जो कुछ कहा ठीक है,
तो अब आगे और बात-बकवास बिना मैं
ठीक समझता, हाथ मिलाओ और विदा हो।
लगो काम से, या कि जहाँ को चाहो जाओ;
यहाँ सभी का काम, सभी की चाह अलग है;
सच ऐसा ही है, औ' देखो, मैं बेचारा
चला प्रार्थना करने को अब।
होरेशियो : श्रीमन्, ये सब शब्द अटपटे, ऊटपटाँग
मुझे लगते हैं।
हैमलेट : मुझे दुःख है, उनसे तुमको चोट पहुँचती।
बड़ा दुःख है, दिली दुःख है।
होरेशियो : श्रीमन्, उनसे चोट किसी को नहीं पहुँचती।
हैमलेट : सच सौगन्ध सन्त पैतृक की, ओ होरेशियो,
बड़ी चोट दे गया दृश्य जो आगे आया।
मेरी मानो, रूह बड़ी ईमानदार है।

उसके मेरे बीच हुई जो, उसे जानने
की इच्छा पर क़ाबू रक्खो। औ' अब मेरे
अच्छे मित्रो, क्योंकि मित्र हो, सहपाठी हो,
सेनानी हो, एक प्रार्थना मेरी मानो।

होरेशियो : क्या है, श्रीमन्, हम मानेंगे।

हैमलेट : कभी किसी को मत बतलाना, आज रात जो
तुमने देखा।

दोनों : श्रीमन्, कभी न बतलायेंगे।

हैमलेट : क़सम उठाओ!

होरेशियो : क़समन, श्रीमन्, मैं न किसी से बतलाऊँगा।

मारसेलस : और न मैं ही, क़समन श्रीमन्!

हैमलेट : कहो इसे तलवार उठाकर।

मारसेलस : श्रीमन्, हमने तो पहले ही क़सम उठा ली।

हैमलेट : नहीं, नहीं, तलवार उठाकर क़सम उठाओ।

(रंगमंच के नीचे से भूत चिल्लाता है।)

भूत : क़सम उठाओ!

हैमलेट : आ, हा, लड़के तू यह कहता? तू है टुन्ने?
और नहीं कुछ; तहख़ाने से बोल रहा है।
क़सम उठाने को राज़ी हो।

होरेशियो : श्रीमन्, हमको शपथ दिलायें।

हैमलेट : जो तुमने देखा है उसको कभी नहीं तुम
बतलाओगे, ले मेरी तलवार हाथ में
क़सम उठाओ।

भूत : क़सम उठाओ!

हैमलेट : अत्र तत्र सर्वत्र? चलें हम और कहीं पर।
आ जाओ इस जगह, सज्जनो!
औ' मेरी तलवार हाथ में फिर से लेकर
जो सुन रक्खा उसे किसी से मत कहने की
क़सम उठाओ।

भूत : क़सम उठाओ!

हैमलेट : बोली ख़ूब छछूंदर बूढ़ी, अन्दर-अन्दर
कितनी जल्दी राह बनाती।
तू नेता बनने लायक़ है। मित्रो, फिर से
जगह बदल लें।

होरेशियो : ओ दिन-रात! मगर यह कितना अद्‌भुत-अनजाना
लगता है।

हैमलेट : तो अनजान बने रहकर ही इसका स्वागत
करते जाओ। ओ होरेशियो, सुनो हमारे
दर्शन की कल्पना जहाँ तक पहुँच सकी है,
धरा-गगन में उसके आगे बहुत पड़ा है।
लेकिन आओ,

जितनी संयम-शक्ति मिली है तुमको अब तक,
आगे उससे भी ज़्यादा की आवश्यकता,
कि जब अजनबी-सा कि अजब-सा जान पड़ूँ मैं
(सम्भव है आगे से मुझको ठीक लगे, मैं
पागल-सा व्यवहार बना लूँ)
तो ऐसे अवसर पर मुझको देख कभी तुम
बाहों को ऐसे मत बाँधो, या इस विधि से
शीश हिलाओ, या कुछ ऐसे शब्द निकालो,
जो सन्देह जगा सकते हों, जैसे, 'हम यह
ख़ूब समझते', या 'हम चाहें तो कर डालें',
या 'हम कह सकते यदि चाहें', या 'ऐसे हैं
या यदि ऐसे हो सकते हों', या ऐसे ही
गोलमोल कुछ जिससे यह ज़ाहिर होता हो
तुमको मेरा अता-पता है---ऐसा कोई
काम न करना। तुमको प्रभु की दया-कृपा की
सबसे ज़्यादा आवश्यकता। क़सम उठाओ।

भूत : क़सम उठाओ !

हैमलेट : शान्तिः, शान्तिः, अशान्त आत्मा !
सुनो, सज्जनो, तुमसे यह प्रार्थना कि मुझको
अपने प्यार, मित्रता का अधिकारी समझो;
प्रभु ने चाहा तो यह दीन-हीन हैमलेट भी
प्यार और मित्रता तुम्हारे साथ निभाने
को जो कुछ भी कर सकता है, सदा करेगा।
हम सब मिलकर काम करेंगे, लेकिन एक
निवेदन, कोई मुँह मत खोलो। घड़ियाँ काली।
नियति ! निकाला तूने मुझसे कब का बदला,
मुझको भेजा, इन घड़ियों को करूँ उजाली !
हम सब मिलकर साथ चलेंगे।

[**सब बाहर जाते हैं।**

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(पोलोनियस और रेनाल्डो आते हैं।)

पोलोनियस : रेनाल्डो, रुपयों की थैली और चिट्ठियाँ
मेरे लड़के को दे देना।

रेनाल्डो : दूँगा, श्रीमन् !

पोलोनियस : मगर तुम्हारी उस्तादी मैं तब मानूँगा
जब तुम उससे मिलने के पहले ही उसके
चाल-चलन का पता लगा लो।
रेनाल्डो : ठीक यही मैंने सोचा था।
पोलोनियस : मरियम साखी, बहुत ख़ूब, तुम ख़ूब आदमी !
सुनो, तुम्हारी जगह अगर मैं होता पहले
पता लगाता, कौन-कौन से डेनमार्के
पेरिस में हैं; क्या हैं, कैसे, किस ज़रिये से
और कहाँ पर वे रहते हैं; साथी कैसे, ख़र्चा कितना;
मैं अपने इन चन्द सवालों के जवाब के
रुख़ से भाँप इसे लेता वे मेरे लड़के
से वाक़िफ़ हैं। अब जो तुमको अता-पता है,
ख़ास उसी के बारे में तुम अगर पूछते,
पा सकते थे ? तुम कहना, मैं उसे जानता,
मगर दूर से, उसके पिता जानते मुझको,
कई मित्र भी, मैं भी थोड़ा उसे जानता !
ध्यान रहे इसका, रेनाल्डो।
रेनाल्डो : श्रीमन्, इसका मैं रक्खूँगा।
पोलोनियस : थोड़ा, लेकिन अच्छी तरह नहीं कह सकता,
लेकिन अगर वही है जिससे मेरा मतलब,
बड़ा तेज़-तर्रार, लती है इसका, उसका;
अब तुम उस पर जो चाहे इल्ज़ाम लगा दो,
लेकिन ऐसा नहीं कि उसकी इज्जत में
बट्टा लग जाये, इतना तुम्हें बचाना होगा;
हाँ, दिल-फेंक तबीयत, तेज़ी, या कुछ ऐसी
ही कमज़ोरी हो तो कोई फ़िक्र नहीं है,
जो कि जवानी-आज़ादी में घर कर लेती।
रेनाल्डो : जैसे उसको लत शिकार की।
पोलोनियस : या पीने की, दुन्द मचाने की, लड़ने की
या तलवार-रियाज़ी की, कोठेबाज़ी की;
तुम इस हद तक जा सकते हो।
रेनाल्डो : श्रीमन्, इससे तो इज़्ज़त पर दाग़ लगेगा।
पोलोनियस : नहीं, क़सम से, सिर्फ़ ज़ोर मत इस पर देना।
लेकिन, देखो, यह तोहमत उस पर मत मढ़ना—
खुलकर ऐयाशी करता है; मेरा मतलब
ग़लत न समझो, उसकी ख़ामी को इस ख़ूबी—
से दिखलाओ, सुननेवाले समझें बस वह
ज़्यादा आज़ादी पाने से बहक गया है,
या दिमाग़ की गर्मी से वह भभक उठा है,
या कि ख़ून की तेज़ी से वह बेक़ाबू है।
नौजवान अक्सर शिकार इनके होते हैं।
रेनाल्डो : लेकिन, श्रीमन्—

पोलोनियस : तुम पूछोगे, मैं यह सब कुछ करूँ किसलिए ?
रेनाल्डो : निश्चय श्रीमन्, मैं इसको जाना चाहूँगा।
पोलोनियस : मरियम साखी, मेरी बातों का रुख़ समझो;
और चाल यह खूब आज़माई मेरी है;
तुम मेरे बेटे में यह-वह-ऐब दिखाते—
छोटे-मोटे —जिसे ख़राबी कोई ख़ास
नहीं कह सकते; ध्यान रहे यह;
अब तुम जिससे बातें करते, जिसे भाँपते,
अगर कभी उसने देखा है उस जवान को
उसी जुर्म में जिसका मुजरिम तुमने उसको
ठहराया है, तो यक़ीन तुम इसका रक्खो,
वह तुमसे कुछ इसी ढंग से बात करेगा,
'जी' ! 'मैं भी आँखें रखता हूँ,' 'हाथ मिलायें'—
मुल्क-मुल्क में बातें करने के लोगों के
अलग-अलग लब-लहज़े होते।
रेनाल्डो : बहुत ठीक है।
पोलोनियस : और फिर, जनाब, वह यह करेगा, क्या करेगा; मैं क्या कह रहा था ? क़समिया, मैं कुछ कहने जा रहा था; मैंने अभी-अभी क्या कहा था?
रेनाल्डो : कि 'वह कुछ इसी ढंग से बात करेगा', 'मैं भी आँखें रखता हूँ', 'हाथ मिलायें' —
पोलोनियस : याद आ गया, 'इसी ढंग से बात करेगा';
वह तुमसे कुछ इसी ढंग से, 'मैं हज़रत को
खूब जानता, कल या परसों ही देखा था,
फ़लाँ-फ़लाँ थे सँग, जैसा तुमने बतलाया,
डटे जुए में थे', या 'पीकर झगड़ रहे थे',
'खेल रहे थे टेनिस', या यह भी कह सकता,
'मैंने उनको कोठे पर चढ़ते देखा था',
यानी चकले में जाते, या इसी तरह कुछ।
अब तुम देखो;
झूठा चारा दिया, फँसा ली मच्छी सच्ची;
इसी तरह से दाना-दूरन्देश लोग हम
दुनिया को चक्कर-चकमा दे पूरब जाते
औ' पच्छिम की कौड़ी लाते ! मेरे कहने
पर चलने से तुम भी ऐसा कर सकते हो।
समझे, बेटा ?
रेनाल्डो : श्रीमन्, बिल्कुल समझ गया हूँ।
पोलोनियस : ईश्वर करे तुम्हारी रक्षा। तुम्हें अलविदा।
रेनाल्डो : श्रीमन्, आभारी हूँ, जैसी भी आज्ञा दें।
पोलोनियस : तुम खुद भी देखना कि उसके रंग-ढंग क्या।
रेनाल्डो : श्रीमन्, इसको, मैं देखूँगा !
पोलोनियस : लेकिन उसको अपनी रौ में बहने देना।

रेनाल्डो : अच्छा, श्रीमन् !
पोलोनियस : विदा !

[**रेनाल्डो बाहर जाता है।**

(ओफ़ीलिया अन्दर आती है।)

अरे, तुम हो, ओफ़ीलिया ! अच्छी तो हो ?
ओफ़ीलिया : ओ, श्रीमन्, इस समय बहुत ही डरी हुई हूँ !
पोलोनियस : क्यों, किससे, सच-सच बतलाओ ?
ओफ़ीलिया : श्रीमन्, सुई-सिलाई करती अपने कमरे
में बैठी थी, सहसा हैमलेट आकर आगे
खड़े हो गये— तन पर कपड़े ढीले-ढाले,
और नदारद सिर से टोपी, औ' पाँवों में
मोज़े-मैले, बे-फ़ीते के नीचे लटके,
उनकी ही पीली कमीज़-सा पीला चेहरा,
पैर लड़खड़ाते, आँखों में दर्द भरा-सा,
जैसे कोई रूह नरक से छूट खड़ी हो
विपद वहाँ की बतलाने को।
पोलोनियस : इस पागलपन
का कारण क्या प्रेम तुम्हारा ?
ओफ़ीलिया : श्रीमन्, मैं कुछ
नहीं जानती, पर मुझको इसका अन्देशा।
पोलोनियस : उसने तुमसे कहा नहीं कुछ ?
ओफ़ीलिया : नहीं, कलाई
मेरी पकड़ी और दबा दी, हटे क़दम भर,
और दूसरा हाथ भौंह पर यों रखकर के
मुझे घूरकर ऐसे देखा जैसे मेरी
शक्ल खींचना चाह रहे हों। बड़ी देर तक
खड़े रहे यों, और हाथ फिर मेरा झटका,
तीन बार ऊपर से नीचे मुझको देखा
और आह खींची जो इतनी दर्द-भरी,
इतनी गहरी थी, लगा कि उससे उनकी छाती
फट जायेगी, जैसे वह आख़िरी साँस हो।
तब फिर मेरा हाथ छोड़कर, शीश घुमाकर
कन्धे पर से मुझे देखते दरवाज़े से
निकल गये वे; अन्त समय तक उनकी आँखें
मेरे ऊपर गड़ी हुई थीं।
पोलोनियस : आओ, इस पर मैं राजा से बात करूँगा;
इस वहशत की वजह मुहब्बत मुझको लगती,
जिसे मर्ज़ यह लगा उसे खा ही जाता है,
वह कुछ भी करने को आमादा हो सकता,
दुनिया की कोई बीमारी इससे ज्यादा

बुरी नहीं है; मुझको इस पर बड़ा रंज है।
इधर उसे कुछ कड़ी बात क्या तुमने कह दी ?

ओफ़ीलिया : नहीं, एक भी; मगर आपके ही कहने पर
मैंने उनको मना किया था, मुझको कोई
पत्र न भेजें, और न मुझसे मिलने आयें।

पोलोनियस : इसी बात ने उसको पागल बना दिया है।
मुझे रंज है, अपनी ही ग़फ़लत-ग़लती से
मैंने उसको ठीक न समझा। मुझको डर था
खेल न तुमसे वह करता हो, और तुम्हें
बर्बाद न कर दे। लानत है ऐसे शुबहे पर।
अक्सर जैसे नौजवान ना-समझी करते
उसी तरह से हम बूढ़े भी सूझ-समझ
बालाय-ताक़ रख रायज़नी करते फिरते हैं।
आओ, राजा से हम सारी बात बता दें;
सुनकर, मुमकिन है, हमसे नाख़ुश हो जायें,
चुप रहने से आ सकती हैं और बलाएँ।
आओ।

[दोनों बाहर जाते हैं।

दूसरा दृश्य

(तुरही बजती है : रोज़ेन्क्राण्ट्ज़, गिल्डेन्सटर्न तथा अन्य लोगों के साथ रानी-राजा आते हैं।)

राजा : प्यारे रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और प्रिय गिल्डेन्सटर्न
तुम्हारा स्वागत ! बड़ी हमारी इच्छा थी
तुमसे मिलने की, साथ काम भी एक मुझे
तुमसे लेना है, जल्द बुलाना पड़ा इसी से।
हैमलेट की जो कायापलट हुई है उसका
पता तुम्हें है, मैं तो इसको यही कहूँगा।
तन से, मन से भी पहले-सा नहीं रहा वह।
मैं तो समझ नहीं पाता हूँ, पिता के मरण
से भी क्या दुखदायी घटना घटी कि अपनी
सारी सुध-बुध वह खो बैठा। तुम तीनों ही
एक अवस्था के, स्वभाव के; बचपन से ही
एक साथ खेले-खाये हो, बड़े हुए हो;
तुम दोनों से एक प्रार्थना—थोड़े दिन के
लिए हमारे पास रहो तुम। साथ तुम्हारा
पाकर उसका मन बहलेगा। अवसर पाकर
तुम समझोगे, क्या है, उसको साल रहा है,

जिसका हमको पता नहीं है। जान सके तो
उसे दूर करने की हम कुछ जुगत करेंगे।

रानी : भद्र सज्जनो, उसने अक्सर तुम दोनों की
बातें की हैं। मुझको है विश्वास कि दुनिया
में दो ऐसे और नहीं हैं जिनसे उसकी
अधिक पट सके। बड़ी कृपा होगी यदि कुछ दिन
पास हमारे ठहर सको तुम ! हम तुमसे जो
आशा रखते हैं यदि तुमने पूरी कर दी,
याद इसे राजा रक्खेंगे, और बड़ा एहसान
तुम्हारा मानेंगे हम।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : आप महारानी हैं, आप महाराजा हैं,
हम सेवक हैं, हम पर है अधिकार आपका,
हुक्म करें, हम बजा न लायें तो जो चाहे
दण्ड हमें दें। आप नहीं प्रार्थना करेंगे।

गिल्डेन्सटर्न : हम दोनों आज्ञाकारी हैं; तन से, मन से
हम अपने को, अपनी सारी सेवाओं को
श्री चरणों में अर्पित करते, हुक्म हमें दें !

राजा : तुम दोनों को धन्यवाद है !

रानी : धन्यवाद है
तुम दोनों को ! यही प्रार्थना—फ़ौरन जाओ
और मिलो मेरे बेटे से, जो अब कितना
बदल गया है !—तुममें से दो-एक साथ जा
इनको हैमलेट तक पहुँचा दें।

गिल्डेन्सटर्न : ईश्वर करे
हमारे कारण और हमारी सेवाओं से
वह प्रसन्न हो और लाभ कुछ उसको पहुँचे।

[राजा-रानी को छोड़कर सब चले जाते हैं।

रानी : ऐसा ही हो।

(पोलोनियस का प्रवेश)

पोलोनियस : महाराज, जो राजदूत नारवे गये थे
वे ख़ुश-ख़ुश वापस आये हैं।

राजा : पोलोनियस, तुम सदा ख़बर अच्छी लाते हो।

पोलोनियस : इसे मानते तो हैं, श्रीमन् ? मेरे स्वामी,
मैं विश्वास दिलाता हूँ तन, मन, बाणी से
मैं अपने ईश्वर, करुणामय राजेश्वर को
सदा समर्पित ! सुनिए, श्रीमन्, इस दिमाग़ में
राजनीति का दाँव भाँपने की यदि पहले-
सी ताक़त है तो हैमलेट के पागलपन का
कारण मैंने जान लिया है।

राजा : तो बतलाओ,
मैं सुनने के लिए विकल हूँ।

पोलोनियस : क्यों न राज-
दूतों की बातें पहले सुन लें, और बाद को
मेरी, जैसे भोजन कर चुकने पर मीठा।
राजा : तुम्हीं उन्हें आदर के साथ बुलाकर लाओ।

[**पोलोनियस बाहर जाता है।**

प्यारी, तुमने सुना अभी जो वह कहता था ?
हैमलेट के पागलपन का सब कारण उसने
समझ लिया है।
रानी : इसे छोड़कर क्या हो सकता—
मृत्यु पिता की और हमारा इतनी जल्दी
शादी करना।
राजा : ख़ैर, सुनेंगे, वह क्या कहता।

(पोलोनियस, वोल्टिमाण्ड, कारनीलियस आते हैं।)

प्यारे मित्रो, स्वागत करता तुम दोनों का।
वन्धु नारवे का तुम क्या सन्देशा लाये ?
वोल्टिमाण्ड : स्नेहपूर्ण अभिवादन, मंगलमय बधाइयाँ !
ख़त पढ़ते ही वृद्ध नारवे ने अपनी सेनाएँ
भेजीं, दुष्ट भतीजे की फ़ौजों को
जाकर रोकें; उनका तो ऐसा ख़याल था—
यह तैयारी पोलक लोगों के विरुद्ध है,
मगर ग़ौर करते ही उनको पता चल गया,
महामहिम के ही विरुद्ध यह तैयारी थी।
उन्हें बड़ा अफ़सोस हुआ, उनकी बीमारी,
लाचारी, वृद्धावस्था का लाभ उठाकर
उसने यह धोखेबाज़ी की। हाकिम भेजे
गये, पकड़कर उसको लायें। क़िस्सा-कोता,
वृद्ध चचा के आगे हाज़िर किया गया वह,
खूब उन्होंने उसको डाँटा, और अन्त में
उसने वादा किया कि अब से महामहिम से
बैर ठानने की वह बात नहीं सोचेगा।
वृद्ध नारवे इससे बहुत प्रसन्न हुए औ'
तीन हज़ार स्वर्ण-मुद्राएँ सालाना उसको
बँधवा दीं, आज्ञा दे दी, जो सेना
तैयार हुई है, पोलक लोगों के विरुद्ध वह
भेजी जाये। और प्रार्थना की, जो इसमें **(पत्र देता है।)**
भी अंकित है, बड़ी कृपा होगी यदि इस
आक्रमण के लिए आप हमारी सेनाओं को
डेन राज्य में होकर जाने से मत रोकें।
अपनी रक्षा के हित जो-जो शर्तें रखकर
ऐसी अनुमति दे सकते हैं, इसमें दी हैं।

राजा : मैं राज़ी हूँ। फ़ुरसत से हम इसे पढ़ेंगे,
उत्तर देंगे, इस मसले पर ग़ौर करेंगे।
धन्यवाद है, तुमने बढ़िया काम किया है।
अब जाकर आराम करो तुम, रात हमारे
साथ तुम्हें भोजन करना है; बड़ी ख़ुशी है
तुम घर लौटे।

[**वोल्टिमाण्ड और कारनीलियस बाहर जाते हैं।**

पोलोनियस : ख़ूबी से यह काम हो गया।
मेरे मालिक और मालकिन, कोई कैसे
बता सकेगा मलकाना क्या, सेवकाई क्या—
दिन बस दिन है, रात रात है, वक़्त वक़्त है—
बतलाने की कोशिश करना वक़्त, रात, दिन
ज़ाया करना। बुद्धिमान सूत्रों में कहते,
मूर्ख बहुत-सा ताना-बाना फैलाते हैं।
बीज-रूप में मुझको कहना है कि आपके
साहबज़ादे पागल हैं, बस पागल उनको
मैं कहता हूँ, क्योंकि पगलपन की परिभाषा
पूरी देना, क्या है इससे सिवा कि ख़ुद
पागल बन जाना! लेकिन इसको भूल जाइए।

रानी : बात बतायें, ताना-बाना कम फैलायें।

पोलोनियस : देवि, कहाँ मैं ताना-बाना फैलाता हूँ।
सच कहता हूँ, वे पागल हैं; बड़ा दुःख है
कि यह सत्य है; कि यह सत्य है, बड़ा दुःख है।
बात ज़रा कुछ उलझी-सी यह लग सकती है:
जानें भी दें; क्यों ताना-बाना फैलाऊँ!
तब हम यह माने लेते हैं, वे पागल हैं।
अब रह जाता है कारण का पता लगाना
जिससे उनकी दशा हुई यह, या यों कहिए,
जो उनकी दुर्दशा हुई, उसके कारण का;
नहीं अकारण होती है दुर्दर्श दशा यह।
तो अब बात अटकती है कारण पर जाकर;
कारण यह है, मुझसे सुनिए;
मेरे एक सुपुत्री है—मेरी है जब तक
नहीं पराई हो जाती है—आज्ञाकारी
है, सुशील है, तभी न उसने ला यह चिट्ठी
मेरे हाथों में रख दी है; इसको सुनिए
और समझिए,

(**पढ़ता है।**)

'मेरे मन-मन्दिर की देवी सुभग सुन्दर
ओफ़ीलिया को'—

ये गन्दे शब्द हैं, भद्दे शब्द हैं, 'सुभग सुन्दरी' बड़े
गन्दे शब्द हैं। लेकिन मुझे सुनाना ही पड़ेगा।
'तेरे सँगमरमरी समुज्ज्वल वक्षस्थल में ···आदि-आदि'

रानी : हैमलेट ने उसे लिखा था ?

पोलोनियस : भली मालकिन, ज़रा ठहरिए; नहीं छिपाऊँगा
मैं कुछ भी।

(**फिर पढ़ता है।**)

'कर सन्देह कि नभ-तारों में चमक नहीं है,
कर सन्देह कि सूरज चलता नहीं गगन में,
कर सन्देह कि सत्य बोलता सत्य नहीं है,
लेकिन प्यार तुझे करता मैं,
इस पर कर सन्देह कभी मत अपने मन में।
ओ प्यारी ओफ़ीलिया, मैं तुकबन्दी में कच्चा हूँ; मुझे
अपने उच्छ्वासों को गिनने की कला नहीं आती; लेकिन
सबसे अधिक मैं तुझे प्यार करता हूँ—सबसे अधिक से
भी अधिक, विश्वास कर, विदा!
परम प्रियतमे, सदा-सर्वदा तेरा,
तन में जब तक प्राण-बसेरा,
हैमलेट!'
मेरी आज्ञाकारी पुत्री ने यह मुझको
दिखलाया है, और नहीं केवल इतना ही,
कब-कब, कैसे-कैसे, किस-किस जगह उन्होंने
प्रणय-निवेदन किया—सभी कुछ उसने मुझको
बतलाया है।

राजा : पर हैमलेट के प्रति ओफ़ीलिया का
रुख़ क्या है ?

पोलोनियस : आप समझते क्या ख़ादिम को ?

राजा : वफ़ादार, ईमानदार इन्सान आप हैं।

पोलोनियस : ऐसा ही अपने को साबित कर सकता हूँ।
लेकिन तब क्या आप सोचते, जब मैंने इस
प्रेम-ज्वाल को आसमान में उठते देखा—
और आप से सच कहता, मेरी आँखों ने
बेटी के बतलाने के पहले ही इसको
ताड़ लिया था—आप सोचते क्या, रानीजी
क्या न सोचतीं, अगर उस समय पीठ फेरकर
अनजाना-सा बन जाता मैं, चोट छिपाये
रखता छाती में, होंठों पर ताला देकर,
या कि प्रणय-लीला यह देखा करता पथ-चलते
राही-सा, आप सोचते क्या ? पर मैंने
कुछ भी ऐसा नहीं किया है।
सीधे जाकर मैंने अपना फ़र्ज़ बजाया,

मैंने अपनी भोली बेटी को समझाया,
'हैमलेट राजा के बेटे हैं; क्या बराबरी
उनकी-तेरी ! ग़लत बात है।' और सीख दी
उसको मैंने, वह हैमलेट से रहे दूर ही,
अगर किसी को वे भेजें तो मिले न उससे,
और करे स्वीकार न उनकी भेजी चीज़ें।
बेटी मानी; सीख हुई बेकार न मेरी।
और हैमलेट, मैं थोड़े में बतलाता हूँ,
विफल हुए तो रहने लगे उदास बराबर,
खाना-पीना छूट गया फिर,
नींद हुई आँखों से ग़ायब,
फिर कमज़ोरी ने आ घेरा,
रहने लगा दिमाग़ बाद को भारी-भारी,
औ' अब गिरते-गिरते हालत आ पहुँची है,
वे पागल की भाँति भूंकते, बर्राते हैं,
जिसका हम सबको सदमा है।

राजा : ख्याल तुम्हारा क्या है इस पर ?

रानी : यह भी सम्भव हो सकता है।

पोलोनियस : ऐसा भी क्या कभी हुआ है—
अगर हुआ है, उसे जानना मैं चाहूँगा—
जब दावे के साथ कहा है मैंने,
'साहब, यह ऐसा है,'
और हुआ है साबित मेरा दावा झूठा ?

राजा : कभी हुआ हो, ऐसा मुझको याद नहीं है।

पोलोनियस : बात दूसरी गर निकले तो सिर से धड़ को जुदा करा दें,
सच्चाई हो छिपी कहीं पर—छिपी सात परतों के अन्दर—
उसे ढूँढ़कर मैं लाऊँगा;
शर्त एक, हालात साथ दें।

राजा : और जाँच कैसे की जाये ?

पोलोनियस : देखा होगा, इस बरामदे में घण्टों वे
कभी-कभी घूमा करते हैं।

रानी : हाँ, मैंने ऐसा देखा है।

पोलोनियस : तब मैं अपनी बेटी को आगे कर दूँगा,
हम दोनों परदे के पीछे छिपे रहेंगे;
मुलाक़ात पर गौर कीजिए;
अगर मुहब्बत हैमलेट उस पर करें न ज़ाहिर,
अगर पागलों की-सी बातें करें न उससे,
राजकाज के क़ाबिल मुझको आप न समझें,
मैं जाकर गाड़ी हाँकूँगा, हल जोतूँगा।

राजा : हम ऐसे ही जाँच करेंगे।

रानी : लेकिन, देखो तो, वह बेचारा कोई किताब पढ़ता इधर ही आ रहा है। कितना उदास है !

पोलोनियस : अब आप जायें; मेरी मानें, आप दोनों चले जायें; मैं अभी इनसे बात करता हूँ।

[**राजा-रानी और नौकर-चाकर चले जाते हैं।**

(किताब पढ़ते हुए हैमलेट का प्रवेश)

क्षमा करेंगे, श्रीमन्त हैमलेट,
आप अच्छे तो हैं ?

हैमलेट : अच्छा ही हूँ, ईश्वर की कृपा है।

पोलोनियस : श्रीमन्त, मुझे पहचानते तो होंगे ?

हैमलेट : खूब अच्छी तरह; आप हैं मछलीफाँस।

पोलोनियस : मैं, श्रीमन्त ? नहीं, नहीं।

हैमलेट : तब तो मैं कहूँगा, आप बड़े भोले हैं।

पोलोनियस : भोला, श्रीमन्त ?

हैमलेट : जी हाँ; आज की चालाक दुनिया में हज़ारों में कोई एक मिलेगा जिसे भोला कहा जा सके।

पोलोनियस : आप बिल्कुल ठीक कहते हैं, श्रीमन्त।

हैमलेट : सूरज की किरणें किसी मरे कुत्ते पर भी पड़ें तो उसमें कृमि-कीटों का आधान कर देती हैं, और उसकी किरणें सजीव मांस के लोथड़ों को भी चूमती हैं---आपके कोई लड़की है ?

पोलोनियस : है, श्रीमन्त।

हैमलेट : तो धूप में उसे न घूमने दें; सूरज की किरणों को उसे न चूमने दें। आधान तो समाधान है। पर उसने आपकी लड़की में गर आधान कर दिया तो बड़ा व्यवधान होगा,— दोस्त, होशियार रहें।

पोलोनियस : (**स्वगत**) क्या कहूँ इस पर ? अब भी मेरी लड़की की ही रट लगाये जा रहा है; फिर भी, पहले उसने मुझे नहीं पहचाना था, पहले उसने मुझे मछलीफाँस कहा था। गहरे में है इस वक़्त। अरे, मैं भी तो अपनी जवानी के दिनों में मुहब्बत की इन्हीं मुसीबतों का शिकार हो चुका हूँ; और मेरी हालत भी बस ऐसी ही थी। मैं इससे ज़रा फिर बात करूँ।—श्रीमन्त, क्या पढ़ रहे हैं ?

हैमलेट : शब्द, शब्द, शब्द।

पोलोनियस : श्रीमन्त, विषय क्या है ?

हैमलेट : विषय की बात विषयी जानें !

पोलोनियस : श्रीमन्त, मेरा मतलब है कि जो पुस्तक आप पढ़ रहे हैं उसका विषय क्या है ?

हैमलेट : निन्दा, जनाब; बूढ़ों की निन्दा, क्योंकि यह बेहूदा मसखरा लिखता है कि बूढ़ों की दाढ़ियाँ सफ़ेद हो जाती हैं, उनके चेहरों पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, उनकी आँखें लीबड़ टपकाती हैं—गाढ़ा, जैसे हक़ीमजी का काढ़ा— उनकी अक़्ल घास चरने चली जाती है और उनके घुटनों को मिरगी आती है।—इन सारी

बातों को मैं पूरी-पक्की तरह मानता हूँ, पर मैं इस बदतमीज़ी पर नहीं उतर सकता कि इन्हें इन लफ़्ज़ों से क़लमबन्द करूँ; क्योंकि आप ख़ुद, जनाब, मेरी तरह जवान हो सकते हैं, अगर आप केकड़ों की तरह उल्टे चल सकें —वक़्त की ज़मीन पर।

पोलोनियस : (स्वगत) बात पागलपन में कही गयी है, पर बिल्कुल बे-तुकी भी नहीं है।—श्रीमन्त, ज़रा आसमान से नीचे उतरिए।

हैमलेट : क्या अपनी क़ब्र में ?

पोलोनियस : क़ब्र तो आसमान से नीचे, ज़मीन में ही बन सकती है। (स्वगत) इसके जवाब कभी-कभी कितने बामानी होते हैं! ऐसे ख़ुशनुमा ख़यालों पर अक्सर पगलपन ही पहुँचता है। ठण्डे दिमाग़ और सही समझ-बूझ से आसानी से सूझनेवाली ये चीज़ें नहीं। अब मुझे यहाँ से चल देना चाहिए और फ़ौरन कोई ऐसी तरकीब लगानी चाहिए कि मेरी बेटी से इसकी मुलाक़ात हो जाये।—महामना श्रीमन्त, मुझे अब विदा दीजिये।

हैमलेट : बड़ी ख़ुशी से लीजिए, आप कुछ भी माँगते तो इससे ज़्यादा ख़ुशी से मैं आपको नहीं दे सकता था—सिवा अपनी जान के, सिवा अपनी जान के, सिवा अपनी जान के।

पोलोनियस : श्रीमन्त की जय हो, मैं चला।

[जाने लगता है।

हैमलेट : ये बकवासी बूढ़े बेवक़ूफ़ !

(रोजेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

पोलोनियस : क्या कुमार हैमलेट से मिलना ? खड़े सामने।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : **(पोलोनियस से)** ईश्वर आपका भला करे !

[पोलोनियस बाहर जाता है।

गिल्डेन्सटर्न : मेरे माननीय श्रीमन्त !

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : मेरे परम प्रिय श्रीमन्त !

हैमलेट : मेरे बहुत अच्छे मित्रो ? कैसे हो गिल्डेन्सटर्न ? तुम भी, रोजेन्क्राण्ट्ज़ ? भई, ख़ूब हो ! कैसे हो तुम दोनों ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : जैसे दुनिया के लावारिस बच्चे !

गिल्डेन्सटर्न : हम ख़ुश हैं कि हम बहुत ख़ुश नहीं हैं। हम भाग्य-देवी की आँखों की पुतलियाँ नहीं हैं।

हैमलेट : तो उसकी जूतियों की तलियाँ भी नहीं हैं।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्त ने ठीक ही कह दिया।

हैमलेट : मतलब यह है कि तुम उसके सिर और पाँव के बीच में हो, यानी उसकी कमर से लिपटे हो।

गिल्डेन्सटर्न : हम उसके ख़ास जो हैं।

हैमलेट : और इसी से उसके खास अंगों में ? ओ, बिल्कुल ठीक; हैं भी तो भाग्य-देवी भग-देवी ! अच्छा बताओ, ख़बर क्या है ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : कोई ख़ास नहीं, सिवा इसके कि दुनिया अब ईमानदार हो गयी है।

हैमलेट : तब तो क़यामत का दिन नज़दीक समझो; लेकिन तुम्हारी ख़बर ठीक नहीं है। मैं कुछ ख़ास बातें पूछूँ ? अच्छा, मेरे अच्छे दोस्तो, यह तो बताओ कि तुमने भाग्यदेवी का ऐसा क्या बुरा किया है कि उन्होंने तुम्हें इस जेलख़ाने में डाल दिया है ?

गिल्डेन्सटर्न : जेलखाना, श्रीमन्त ?

हैमलेट : डेनमार्क जेलख़ाना ही तो है।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : तब तो यह दुनिया ही जेलख़ाना है।

हैमलेट : अच्छा-ख़ासा, जिसमें बहुत-से घेरे हैं, कटघरे हैं, काल-कोठरियाँ हैं, डेनमार्क उनमें सबसे बुरी है।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : लेकिन, श्रीमन्त, हम ऐसा नहीं समझते।

हैमलेट : तो हो सकता है तुम्हारे लिए वह ऐसा न हो। वास्तव में न कुछ अच्छा है, न बुरा; जैसा सोच लो वैसा हो जाता है; मेरे लिए तो यह जेलख़ाना ही है।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : तो आपकी महत्त्वाकांक्षा ने उसे ऐसा बना रक्खा है। आपकी उमंगों के लिए तो यह तंग है ही।

हैमलेट : ओ भगवान, मैं एक बादाम में बन्द होकर अपने को अनन्त आकाश का सम्राट् समझ सकता था, अगर मेरे दुःस्वप्न मुझे न सताते।

गिल्डेन्सटर्न : और यही सपने तो आपकी महत्त्वाकांक्षा हैं। महत्त्वाकांक्षी का सत्य सपनों की छाया ही तो है।

हैमलेट : स्वप्न स्वयं सिवा छाया के और क्या हैं ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : सत्य ही, मैं महत्त्वाकांक्षा को इतना निस्तत्त्व और वायवी गुण समझता हूँ कि यह एक छाया की छाया-भर है।

हैमलेट : तब तो हमारे महत्त्वाकांक्षाहीन भिखारी तत्त्वपूर्ण हैं, और हमारे सम्राट् और उच्चाभिलाषी नायक भिखारियों की छायाएँ। चलो, दरबार चलें। मुझसे अब तर्क-वितर्क नहीं होता, सच।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : हम आपके पीछे-पीछे चलेंगे।

हैमलेट : इसकी आवश्यकता नहीं; मैं तुम्हारी गणना अपने नौकरों में नहीं करता; तुमसे सच कहूँ तो मैं बड़े विकट रूप से घिरा हुआ हूँ; फिर भी तुमसे पुरानी दोस्ती के नाते पूछता हूँ कि तुम एलसिनोर कैसे आये ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : आपसे मिलने, श्रीमन्त। कोई और कारण नहीं।

हैमलेट : भिखारी तो मैं हूँ ही, धन्यवाद देने में भी असमर्थ हूँ; फिर भी मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ; गो, प्यारे दोस्तो, मेरे धन्यवाद कौड़ियों के मोल भी महँगे हैं। देखो, मुझसे झूठ मत बोलना, तुम्हें बुलवाया गया ? या तुम अपने मन से आये ? बिना किसी काम के ? सच-सच कहो; बोलो, न ?

गिल्डेन्सटर्न : हम क्या कहें, श्रीमन्त ?

हैमलेट : कुछ भी, पर बा-मतलब। तुम्हें बुलवाया गया। तुम्हारी आँखें जो स्वीकार कर रही हैं उस पर कोई दूसरा रंग चढ़ाने की

कला तुम्हारी शालीनता को नहीं आती। मुझे मालूम है कि नये राजा और रानी ने तुम्हें बुलवाया है।

रोजेन्क्राण्ट्ज : किसलिए, श्रीमन्त?

हैमलेट : यह तो तुम्हीं बता सकते हो। फिर भी मित्रता के अधिकार से, बन्धुत्व के नाते, स्नेह-सम्बन्ध के नाम पर, और इन सबसे कुछ अधिक मूल्यवान के निहोरे—जो मैं नहीं बता पा रहा हूँ—मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझसे सीधी-सच्ची बात कहो, तुम्हें बुलवाया गया था या नहीं?

रोजेन्क्राण्ट्ज : (**अलग** – **गिल्डेन्सटर्न से**) क्या कहते हो?

हैमलेट : (**स्वगत**) मैं भी अन्धा नहीं हूँ।—मुझे प्यार करते हो तो छिपाओ मत।

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्त, हमको बुलवाया गया था।

हैमलेट : मैं बतलाता हूँ, क्यों। मैं भेद खोलता हूँ, जिसमें न तुम्हें मुँह खोलना पड़े और न राजा-रानी से की, तुम्हारी गोपनीयता की शपथ टूटे। इधर कुछ दिनों से—पता नहीं क्यों - मेरी सारी हँसी-खुशी न जाने कहाँ ग़ायब हो गयी है, सब खेल-कूद से बिल्कुल जी उचट गया है, और मन इतना भारी-भारी रहता है कि यह सदा-सुन्दरा वसुन्धरा मुझे एक बंजर मरुस्थली-सी प्रतीत होती है; यह वायु का परम रम्य चँदोवा, ज़रा इसे देखो तो, यह सिर पर छत्र-सा छाया आकाश, यह सुवर्ण किरणों से खचित विराट् वितान, न जाने क्यों, मुझे एक दमघोट, गन्दे, घने कुहासे के सिवा और कुछ नहीं मालूम होता! मनुष्य भी सिरजनहार का कितना बड़ा चमत्कार है! बुद्धि में अद्वितीय! शक्ति में निःसीम! आकार-अंगसंचार में कैसा साँचे में ढला-सा, कैसा भला-सा! आचार में स्वर्गदूत! अवधान में देवता! संसार का सौन्दर्य! सब प्राणियों का सिरमौर! फिर भी, यह मेरे लिए, एक मुश्त गुबार के सिवा और क्या है? मुझे न आदमी को देखकर खुशी होती है, न औरत को, गो अपनी मुसकान से तुम ऐसा प्रकट करते हो कि मैं बन रहा हूँ।

रोजेन्क्राण्ट्ज : ऐसी कोई बात मेरे मन में नहीं थी, श्रीमन्त।

हैमलेट : तब तुम हँसे क्यों, जब मैंने कहा कि मुझे आदमी को देखकर खुशी नहीं होती?

रोजेन्क्राण्ट्ज : यह सोचकर, श्रीमन्त, कि अगर आदमी से मिलकर आपको खुशी नहीं होती तो उस नाटक-मण्डली को आपसे क्या स्वागत-सत्कार मिलेगा जिससे हम रास्ते में मिले थे, और जो आपकी सेवा में आ रही है।

हैमलेट : जो राजा की भूमिका अदा करेगा उसका स्वागत होगा, उन महामहिम का मैं सत्कार करूँगा; साहसी सरदार जो ढाल-तलवार चलायेगा और प्रेमी जो आँसू बहायेगा पुरस्कार पायेगा, सनकी अपनी भूमिका अदा कर सन्तुष्ट होगा हँसोड़ उनको हँसायेगा जो आसानी से हँसते हैं और प्रेमिका दिल खोलकर बोलेगी, नहीं तो पायेगी कि छन्द उसे कसते हैं—यह कौन-सी

नाटक-मण्डली है ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : अरे वही, जिसे आप पसन्द करते थे, नगर के अभिनेताओं की ---त्रासदी-प्रदर्शक।

हैमलेट : पर वे दर-दर घूम क्यों रहे हैं ? उनका एक जगह पर जमकर बैठना नामा और नाम, दोनों, कमाने के लिए बेहतर होता।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : मैं समझता हूँ, उनकी यह मजबूरी उन पर इधर लगी पाबन्दी है।

हैमलेट : क्या उनका अब भी वही आदर है जो तब था जब मैं नगर में था ? क्या अब भी लोग उनके पीछे-पीछे फिरते हैं ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : नहीं, अब वह बात कहाँ !

हैमलेट : कारण क्या है ? क्या वे पुराने पड़ गये हैं ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : नहीं, वे अपने तईं बराबर कोशिश किये जाते हैं, पर बात यह है, श्रीमन्, कि एक नयी पौध उठ खड़ी हुई है, छुटभैयों की, जो गला फाड़-फाड़कर अललाते हैं और लोग हैं कि उन्हीं पर ज़ोर-शोर से तालियाँ बजाते हैं। आजकल उन्हीं का बाज़ार गर्म है और वे जड़गण-फ़नकारों का (यही नाम उनका उन्होंने दे रक्खा है) ऐसा मज़ाक उड़ाते हैं कि बड़े-बड़े हथियार बाँधने-वाले भी उन क़लमवीरों से घबराते हैं जो उन छुटभैयों के लिए लिखते हैं, और उनके पास फटकते थर्राते हैं।

हैमलेट : क्या वे सब छोटे लड़के हैं ? उनका ख़र्च कौन उठाता है ? उनको मेहनताना कैसे मिलता है ? क्या वे तभी तक इस पेशे में रहेंगे जब तक वे गा सकेंगे ? जब वे खुद बड़े होकर जनगण-फ़नकार बनेंगे (जैसा कि वे बनेंगे ही अगर, उन्होंने कोई बेहतर पेशा नहीं अख़्तियार किया) तो क्या वे नहीं कहेंगे कि उनके लेखकों ने उनके प्रति अन्याय किया कि उन्हीं से उनकी भावी जीविका की खिल्ली उड़वायी ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : सच तो यह है कि इस मसले को लेकर, दोनों तरफ़ खूब सरगर्मी रही है; और देशवासी इसे बुरा भी नहीं समझते कि उन्हें बहस के लिए हुलकार दिया जाये, और कभी तो ऐसा भी वक़्त रहा है कि ऐसे किस्से के लिए कोई कानी कौड़ी भी देने के लिए तैयार न था जिसमें इस मामले पर कवि और अभिनेता में हाथापाई न दिखायी गयी हो।

हैमलेट : क्या यह सम्भव है ?

गिल्डेन्सटर्न : अरे, इस पर तो बड़ी सिरफुटौअल हुई है।

हैमलेट : तो क्या लड़के जीते ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : हाँ, श्रीमन्, वही जीते; बड़े-बड़े पहलवान उनके सामने चित हो गये।

हैमलेट : इसमें कोई अचरज की बात नहीं है; देखो न, मेरे चाचा अब डेनमार्क के राजा हैं, और वही लोग जो मेरे पिता के जीवन-काल में मेरे चाचा को मुँह चिढ़ाते थे, अब उनकी छोटी-सी तस्वीर के लिए बीस, चालीस, पचास और सौ तक देने को

तैयार हैं। इसमें ज़रूर कोई राज़ है; पता दार्शनिक ही लगायें।

(अन्दर से तुरही की आवाज)

गिल्डेन्सटर्न : अभिनेता आ पहुँचे।

हैमलेट : सज्जनो, एलसिनोर में तुम्हारा स्वागत। आओ, हाथ मिलाओ, स्वागत के साथ शिष्टाचार भी चाहिए; ऐसे तुमसे हाथ मिला लूँ; नहीं, अभिनेताओं के प्रति मेरा स्वागत देखकर—जिसमें आवभगत भी काफी होनी ही चाहिए—कहीं तुम यह न सोचो कि तुमसे मिलकर मुझे उतनी खुशी नहीं हुई जितनी अभिनेताओं से मिलकर। तुम्हारा स्वागत करता हूँ; पर मेरे चाचा-नुमा-बाप और चाची-नुमा-माँ ग़लतफ़हमी में हैं।

गिल्डेन्सटर्न : किसके बारे में, श्रीमन्त ?

हैमलेट : उनकी निगाहों में मैं बस पागल हूँ। मैं उत्तर जा रहा हूँ, जब कि सारी दुनिया दक्खिन जा रही है। बाज़ और बगुले में जो भेद है, मैं जानता हूँ।

(पोलोनियस का पुनः प्रवेश)

पोलोनियस : सज्जनो, आपका मंगल हो !

हैमलेट : सुनो, गिल्डेन्सटर्न; और तुम भी, ज़रा ध्यान से; वो बड़ा-सा बाबा, जो तुम सामने देख रहे हो, अभी अपने बचकाने पहनावों में ही है।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज : शायद वह दूसरी बार उन्हें पहन रहा है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि बुढ़ापा दूसरा बचपन है।

हैमलेट : मैं पहले से बता दूँ, वह अभिनेताओं के बारे में कहने आ रहा है, देख लेना। (**पोलोनियस को सुनाकर**)—तुम ठीक कहते हो। सोमवार की सुबह को। बिल्कुल यही बात थी।

पोलोनियस : मैं आपके लिए एक खबर लाया हूँ, श्रीमन्त।

हैमलेट : मैं आपके लिए एक खबर लाया हूँ, श्रीमन्त ! रोसियस जिन दिनों रोम में अभिनय किया करता था—

पोलोनियस : श्रीमन्त, अभिनेता लोग आ पहुँचे हैं।

हैमलेट : बस-बस !

पोलोनियस : मेरा विश्वास कीजिए—

हैमलेट : —तब हरेक अभिनेता अपने-अपने गधे पर चढ़कर आता था।

पोलोनियस : त्रासदी, कामदी, ऐतिहासिकी, गोचारणी, गोचारणी-कामदी, ऐतिहासिकी-गोचारिणी, त्रासदी-ऐतिहासिकी, त्रासदी-कामदी-ऐतिहासिकी-गोचारणी के लिए, या किसी ऐसे दृश्य के लिए जो इनमें से किसी में न आता हो, या ऐसी कविता के लिए जो स्वच्छन्द हो, ये दुनिया के सबसे अच्छे अभिनेता हैं। इनके लिए न सेनेका भारी है न प्लाटस हल्का। क़लमबन्द और फ़िलबदी, दोनों में यही लोग माहिर हैं।

हैमलेट : ओ यहूदियों के न्यायाधीश जेफ़्था, क्या ख़ज़ाना है तेरे पास !

पोलोनियस : उसके पास क्या ख़ज़ाना था, श्रीमन्त ?

हैमलेट : क्यों,

'एक सुन्दरी कन्या और न कुछ,
जिसको करता था वह प्यार बहुत।'

पोलोनियस : (**स्वगत**) अब भी मेरी बेटी की ही रट।

हैमलेट : जरठ जेफ़्था, मैंने सही कही है न ?

पोलोनियस : श्रीमन्त, अगर आप मुझे जेफ़्था कहते हैं तो मेरे एक लड़की है जिसे मैं बहुत प्यार करता हूँ।

हैमलेट : नहीं, इसके बाद यह कहाँ आता है ?

पोलोनियस : तब क्या आता है, श्रीमन्त ?

हैमलेट : यही न :

'करम का लेखा, विधि का देखा'

और इसके बाद तो तुम जानते ही हो—

'वही घटी जो कुछ थी बदी'—

इस भक्ति-पद की पहली पंक्ति तुम्हें कुछ और दृष्टि देगी; पर लो, ये मेरा वक़्त और मेरी बात काटनेवाले आ गये।

(**चार-पाँच अभिनेताओं का प्रवेश**)

तुम्हारा स्वागत है, कलाकारो; तुम सबका स्वागत !—तुझे सकुशल देखकर मुझे खुशी है; स्वागत, अच्छे दोस्तो !—ओ मेरे पुराने मीत ! क्यों, पिछली बार जब तुझे देखा था तब तो तेरी मसें न भीगी थीं; देख, डेनमार्क में कहीं भीगी बिल्ली बनकर न रह जाना। और यह रही मेरी नित्य-नवेली स्नेह-सहेली! सौगन्ध स्वर्ग देवी की, देवीजी, जब आपको पिछली बार देखा था, तब से तो आप स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच गयी हैं—अपनी जूतियों की ऊँची एड़ियों के बल! ईश्वर न करे कि आपकी आवाज़ फटी-फटी-सी लगे, जैसे किसी खोटे सिक्के की—कलावन्तो, तुम सबका स्वागत है ! बाज़ कुछ भी देखे, सीधे उस पर टूटता है। हम भी पीछे नहीं रहने के; हो जाये एक सम्भाषण चटापट; चलो, अपनी कला का एक नमूना तो पेश करो; हाँ, ज़रा जोशीला सम्भाषण हो।

पहला अभिनेता : कौन सम्भाषण, श्रीमन्त ?

हैमलेट : वही जो एक बार तूने मुझे सुनाया था, गो उसका अभिनय कभी नहीं किया गया था, या किया गया था तो शायद एकाध बार। वह खेल मुझे याद है, आम जनता को पसन्द नहीं आया था—'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद'—लेकिन वह मेरी राय में, और ऐसों की दृष्टि में भी, जिनके निर्णय का इन मामलों में मैं आदर करता हूँ, बढ़िया नाटक था—दृश्य खूब संगठित, और अभिनय जितना स्वाभाविक उतना ही कलापूर्ण। मुझे याद है, किसी ने कहा था कि पंक्तियों में वह नमक-मिर्च तो नहीं है जो विषय को चटपटा कर दे, पर पदों में कुछ ऐसा भी नहीं कि लेखक पर बनावटीपन का दोषारोपण किया जाये। साथ ही

यह भी कहा था कि प्रयास में ईमानदारी है, और जो चीज़ बन पड़ी है वह जितनी सुघर है उतनी ही मधुर, और उसमें तड़क-भड़क भले ही कम हो, सुन्दरता अधिक है। उसका एक सम्भाषण मुझे ख़ासतौर से पसन्द आया था, ईनियस का डीडो के प्रति, और उसमें भी विशेषकर वह स्थल, जहाँ वह प्रायम के वध का वर्णन करता है। अगर तुम्हें याद हो तो इस पंक्ति से शुरू करो। देखो तो, क्या है वह पंक्ति,

'बीहड़ पिर्हुस हिरकन बन के चीते-जैसा'

नहीं, यह नहीं है; पिर्हुस से शुरू तो होती है।—
बीहड़ पिर्हुस ने—जिसकी काली बाहें औ'
काली चाहें होड़ लगाती थीं रातों से,
जब वह परम अमंगलकारी लकड़ी के घोड़े
के अन्दर घात लगाकर के बैठा था—
अब अपनी काली, डरावनी-सी चमड़ी पर
और अशोभन रंग भैरवी चढ़ा लिया है—
रंग लाल, सिर से पाँवों तक पूरे तन पर—
रक्त, पिताओं, माताओं, बेटी-बेटों का
जिसमें उसने निर्ममता से स्नान किया था,
जिसको धूप-तपी गलियों ने सुखा-सुखाकर
उसके तन पर परत-दर-परत जमा दिया है,
जो बतलाता है किन क्रूर-जघन्य करों से
रन में ट्रायवासियों का वध किया गया था;
कोपानल-उत्तप्त, रक्त की जमी पपड़ियों
से फूला-सा भारी और भयंकर लगता,
ज़हरबाद के दो फोड़ों-सी आँखोंवाला
महानारकी पिर्हुस खोज रहा प्रायम को
वयोवृद्ध जो।
—ऐसे ही आगे चलो—

पोलोनियस : श्रीमन्त ने इसे बड़ी खूबी से अदा किया—ठीक जगहों पर ज़ोर देकर, ठीक सफ़ाई से।

पहला अभिनेता : औ' तुरन्त वह उन्हें देखता,
यवन-सैन्य पर शस्त्र चलाते, लक्ष्य न पाते;
खड्ग पुराना मुट्ठी की कस, बस के बाहर,
गिरा जिस जगह नहीं वहाँ से उठ पाता है,
जैसे उनकी आज्ञा के प्रति विद्रोही है।
अपने से कमज़ोर उन्हें पा पिर्हुस उन पर
खड्ग चलाता जो कि तैश के कारण गिरता
उनसे हटकर, लेकिन उसकी क्रूर भाँज की
ज़न्नाहट से विचलित वृद्ध पिता गिर पड़ते।
इस पर गढ़-ईलियम, चेतना-हीन, घात-सा
अपने ऊपर अनुभव करके अपने जलते
हुए कँगूरे लिये धराशायी हो जाता।

और वज्र-सी उसकी ध्वनि से हो जाता है
पिर्हुस बहरा। औ', देखो, उसका खाँड़ा जो
वयोवृद्ध प्रायम के सन-से श्वेत शीश पर
गिरने को था, रुका हवा में रह जाता है।
चित्रलिखित अत्याचारी-सा खड़ा रह गया
पिर्हुस अपनी संज्ञा खो, संकल्प-शून्य हो;
औ' क्षण-भर कुछ किया न उसने।
लेकिन जैसे अक्सर हम देखा करते हैं,
शान्त आसमाँ हो जाता आँधी से पहले,
बादल चलते नहीं, हवा नीरव हो जाती,
और मौत-का-सा सन्नाटा भू पर छाता;
तभी बवण्डर एक भयंकर सहसा उठकर
फाड़ दिशाओं को देता है, उसी तरह से
पिर्हुस थोड़ी देर ठहरकर, फिर भड़काकर
बदले की भावना, कार्य-तत्पर होता है।
अमित प्रहारों को सहने की क्षमतावाला
कवच बना था जो मंगल का, उसके ऊपर
जिस निर्ममता से साइक्लोपों के हाथों
के घन की चोटें पड़ती थीं, उससे भी ज़्यादा
बेदर्दी से पिर्हुस का
खूनी खाँड़ा प्रायम के ऊपर गिरता है।
अरी भाग्य-भामिनि कुलटे, तेरा विनाश हो!
अरे स्वर्ग के देवो, देव-सभा में बैठे,
उसको सारे अधिकारों से वंचित कर दो,
तोड़ अरे, सब डालो उसके भाग्य-चक्र के
औ' लोहे का हाल चढ़ा जो उसके ऊपर;
और फेंक दो धुरी स्वर्ग-पर्वत से नीचे,
गिरे नरक में!

पोलोनियस : यह तो बहुत लम्बा है।

हैमलेट : कहिए तो इसे आपकी दाढ़ी के साथ नाई के यहाँ भिजवा दें। —भाई, तुम कहते जाओ, इन्हें तो कोई गन्दा गीत या फूहड़ क़िस्सा चाहिए, नहीं तो ख़र्राटे भरने लगते हैं; आगे चलो, हेकूबा पर आओ।

हला अभिनेता : पर किसने, ओ, किसने देखा था घूंघटवाली रानी को?

हैमलेट : 'घूंघटवाली रानी'?

पोलोनियस : बहुत अच्छे, 'घूंघटवाली रानी', खूब कही!

हला अभिनेता : जो आँसू की धार बहाती, बनी चुनौती
रण से उठती ज्वालाओं को, नंगे पैरों
कभी इधर को, कभी उधर को भाग रही थी;
राजमुकुट शोभित होता था जिस मस्तक पर
उस पर बस कपड़े का टुकड़ा एक बँधा था;
बसन राजसी कहाँ, एक कम्बल से उसने

अपनी ढीली, बहुप्रसविनी कोख ढकी थी,
हाथ आ गया था जो सहसा उन घबराहट
की घड़ियों में। जिसने भी यह देखा होता
भाग्य-भामिनी के प्रति विद्रोही बन जाता,
औ' विरुद्ध, उसके, निश्चय ही ज़हर उगलता;
पर देवों ने खुद यदि उसको देखा होता,
जिस क्षण फाड़ कलेजा अपना वह चीखी थी,
देख क्रूर पिर्हुस को अपने क्रूर खड्ग से
उसके पति के अंग-अंग की बोटी-बोटी
काट फेंकते,—जैसे उसके लिए खेल हो—
यदि मानव के दुख-सुख के प्रति उदासीन ही
नहीं देवगण बिल्कुल रहते, तो उनकी जलती
आँखें भी अश्रु गिरातीं, और स्वर्ग की
छाती भी उस दिन पसीजती।

पोलोनियस : देखो तो उसके चेहरे का रंग उड़ गया है और उसकी आँखों में आँसू आ गये हैं। भई, अब रहने दो।

हैमलेट : बहुत अच्छा; बाक़ी भी मैं तुमसे जल्द ही सुनूँगा।—श्रीमन्, अभिनेताओं के ठहरने का ठीक प्रबन्ध करा दीजिए। सुनते हैं न, उनकी अच्छी आवभगत की जाये, क्योंकि ये ही समय के सार पदार्थ और संक्षिप्त इतिहास हैं; मरने के बाद समाधि-लेख बुरा हो तो इतना बुरा नहीं जितना जीवन-काल में इनकी दृष्टि में बुरा होना।

पोलोनियस : श्रीमन्, इनके साथ वही व्यवहार किया जायेगा जिसके ये अधिकारी हैं।

हैमलेट : भले आदमी, जिसके ये अधिकारी हैं उससे अच्छा व्यवहार। प्रत्येक व्यक्ति के साथ उसके योग्य व्यवहार हो तो हरेक को कोड़े लगें। इनके प्रति आपका व्यवहार आपके मान और प्रतिष्ठा के अनुरूप हो। वे जितने ही कम के अधिकारी होंगे उतना ही अधिक श्रेय आपकी उदारता को दिया जायेगा। इन्हें अन्दर लिवा लाइए।

पोलोनियस : आइए, जनाब!

हैमलेट : दोस्तो, इनके साथ जाओ। हम तुम्हारा खेल कल देखेंगे। **(पहले को छोड़कर शेष सब अभिनेता पोलोनियस के साथ अन्दर चले जाते हैं।)**—मेरे पुराने मीत, सुनते हो, क्या तुम 'गंज़ागो का वध' नाटक खेल सकते हो?

पहला अभिनेता : निश्चय, श्रीमन्!

हैमलेट : तो यह नाटक हम कल रात करायेंगे। जरूरत पड़े तो क्या तुम बारह-चौदह पंक्तियों का एक सम्भाषण याद कर सकते हो जो मैं उस नाटक में अपनी तरफ़ से जोड़ देना चाहूँगा; कर लोगे न याद?

पहला अभिनेता : निश्चय, श्रीमन्!

हैमलेट : तो ठीक है। उस सरदार के साथ जाओ; और देखो, उसका मज़ाक मत उड़ाना।

[**पहला अभिनेता चला जाता है।**

(**रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न से**) मेरे अच्छे दोस्तो, रात तक के लिए मुझे आज्ञा दो; एलसिनोर में तुम्हारा स्वागत है !

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : आपकी कृपा है, श्रीमन्त !

हैमलेट : ईश्वर साथ तुम्हारा दें !

[**रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न जाते हैं।**

हैमलेट : —अब मैं एकाकी।
मैं भी कैसा बुद्धू हूँ, घोंघाबसन्त हूँ !
कितने अचरज की है बात कि यह अभिनेता
कल्पित एक कहानी के कल्पित भावों में
अपने प्राणों को उँडेल ऐसा देता है,
ऐसे बह जाता, उसका मुँह पीला पड़ता,
आँख भीगती, कण्ठ रुद्ध होता, उदास हो
जाती सूरत, औ' उसके आवेगों के अनु-
रूप सभी मुद्राएँ उसके तन की होतीं।
औ' यह सब कुछ किसके लिए किया करता वह ?
प्रायम की रानी के लिए ?
मगर वह रानी
उसकी क्या लगती, वह क्या लगता रानी का ?—
जो वह उसके कारण अपने अश्रु बहाये।
उसकी छाती में अपने इन आवेगों का
अगर व्यक्तिगत कारण होता—जैसे मुझमें—
ओ ! क्या कुछ वह कर न गुज़रता। रंगमंच को
आँसू में मज्जित कर देता, दर्दभरी उसकी
वाणी से कान दर्शकों के फट जाते,
अपराधी पागल हो जाता, निरपराध भय-
कम्पित होते, भोले-भाले घबरा उठते,
और सुना-देखा जो जाता उस पर कानों-
आँखों को विश्वास न होता।
लेकिन मैं तो
जड़ माटी का बोदा लोंदा, ऊँघा करता
जुम्मन अफ़ीमची-सा अफ़सुरदा, पज़मुरदा,
और नहीं कुछ भी कह पाता। नहीं, नहीं, उस
राजा के भी लिए कि जिसके राजपाट के,
प्रिय प्राणों के साथ घृणित विश्वासघात-छल
किया गया है। क्या मैं सचमुच ही कायर हूँ ?
कौन मुझे खल कहता ? मेरा माथा खाता ?
मेरी दाढ़ी नोंच फेंकता मेरे मुँह पर ?

पकड़-पकड़कर नाक हिलाता ? और गले में,
और फेफड़ों में भी गहरे बैठा-पैठा
मुझसे कहता, तू झूठा है।
उफ़ !
शपथ मुझे प्रभु ईसा के तन के घावों की,
यह सब सहना मुझे पड़ेगा; क्यों न पड़ेगा;
मुझे लवे का हृदय मिला है जिसके अन्दर
आग नहीं है, सहे न जो अत्याचारों को,
वर्ना मुझे बहुत पहले ही इस नर-पशु का
मांस खिला देना था कौओं को, चीलों को।
हत्यारा, व्यभिचारी, पाजी !
कपटी, कुटिल, बेहया, कामी, निर्दय, पापी !
तुझसे बदला लेना होगा !
लेकिन मैं तो फ़कत गधा हूँ। क्या बहादुरी ! —
मेरे पूज्य पिता का वध कर दिया गया है,
स्वर्ग-नरक बदला लेने को प्रेरित करते
मुझे, और उनका सपूत मैं, कंजड़ जैसे,
शब्दों से अपने दिल को हल्का करता हूँ,
सिर्फ़ कोसता हूँ रण्डी-सा,
भड़भण्डी-सा !
लानत इस पर ! थू-थू ! मेरे मनुवाँ, कुछ कर !
मैंने ऐसा सुन रक्खा है, अपराधी गण
किसी नाट्य में अगर दर्शकों में बैठे हों,
और दृश्य कोई प्रभावकारी आ जाये,
तो उनका दिल हिल उठता है, औ' फ़ौरन वे
अपने दुष्कर्मों को घोषित कर देते हैं।
हत्या के मुँह में तो होती जीभ नहीं है
किन्तु बड़े ही सूक्ष्म-चमत्कारी संकेतों
से वह अपना सारा भेद बता देती है।
इन अभिनेताओं के द्वारा अपने चाचा
के आगे मैं पूज्य पिता की हत्या का-सा
कोई नाटक खेलवाऊँगा; और ग़ौर से
उसकी मुद्राएँ देखूँगा। आनन-फ़ानन
उसे भाँप लूँगा; वह चौंका भर तो मुझको
नहीं समझते देर लगेगी, क्या करना है।
छाया जो मैंने देखी थी, शैतानी भी
तो हो सकती, शैतानी छाया भी रखती
ताक़त रूप भला लेने की। औ' संभव है
मुझको पज़मुरदा-सा, अफ़सुरदा-सा पाकर
(ऐसों पर ही भूत सहज हावी हो जाता)
मेरे हाथों पाप कराके नरक कुण्ड में
मुझे डालना चाह रही है। मैं सबूत इससे

पक्का पाना चाहूँगा; औ' यह मुझको
रात खेलाया जानेवाला नाटक देगा,
उससे ही चाचा के मन का भेद खुलेगा।

[बाहर जाता है।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

गढ़ का एक राजकक्ष

(राजा, रानी, पोलोनियस, ओफ़ीलिया, रोजेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्स्टर्न का प्रवेश)

राजा : तो क्या तुमने किसी तरह से पता न पाया,
क्यों उसने खब्तुलहवास-जैसा अपने को
बना लिया है; अपने मन की शान्ति मिला दी
है मिट्टी में, ख़ौफ़नाक औ' ख़तरनाक इस
पागलपन से ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : इतना तो स्वीकारा उसने, परेशान है;
किस कारण, यह किसी तरह से नहीं बताता।

गिल्डेन्स्टर्न : नहीं चाहता है कोई उससे कुछ पूछे।
अपनी सच्ची हालत वर्णन करने पर जब
हम उसको ले आते हैं तब चतुराई से
पागल-सा बन हमसे साफ़ मुकर जाता है।

रानी : तुमसे अच्छी तरह मिला था ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : सज्जनता से।

गिल्डेन्स्टर्न : पर यह मिलना जैसे ऊपर-ऊपर से था।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : हमसे उसने कुःछ न पूछा; हाँ, हमने कुछ
पूछा तो उसने बतलाया बड़ी ख़ुशी से।

रानी : उसका दिल बहलाने की कोशिश की तुमने ?

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : देवि, राह में हमें मिले थे कुछ अभिनेता
जब हम एलसिनोर आते थे। उनकी चर्चा
जब हमने की तब वह सुनकर बहुत ख़ुश हुआ।
यहीं-कहीं वे टिके हुए हैं, और जहाँ तक
मुझे ज्ञात, आदेश उन्हें यह दिया गया है,
आज रात को नाटक खेलें उसके आगे।

पोलोनियस : ऐसा ही है; और उन्होंने मेरे द्वारा
आप महामहिमों से की है बिनती, आयें
आप कृपा कर, नाटक देखें।

राजा : बहुत खुशी से। बड़ी तसल्ली मुझको, उसका
जो रुझान इस तरफ़ हुआ है। सुनो, सज्जनो,
उसे और भी प्रोत्साहन दो। इस प्रकार के
मनोरंजनों में उसका मन और लगाओ।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : जैसी आज्ञा महाराज की !

[**रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते हैं।**

राजा : प्रिय गरट्रूड, चली जाओ तुम : किसी बहाने
से हैमलेट को हमने यहाँ बुला भेजा है,
जिससे उसका ओफ़ीलिया से अकस्मात् हो
जाय सामना।
उसके पिता और हम, दोनों,—जिनको अपने
बच्चों पर नज़रें रखने का हक़ हासिल है—
ऐसे छिपकर के बैठेंगे, देखेंगे हम
उनको, वे न हमें देखेंगे, और इस तरह
उनके मिलने पर हम अपना निर्णय लेंगे,
देख-समझकर उसके सारे व्यवहारों को
राय बनायेंगे कि प्रेम की पीड़ा है यह,
या कि और कुछ जिसके कारण परेशान वह।

रानी : जैसी आज्ञा—
और तुम्हारा, ओफ़ीलिया, सम्बन्ध जहाँ तक
यही मनाती हूँ कि तुम्हारी सुन्दरता ही
प्रिय हैमलेट के पागलपन का कारण निकले;
और यही आशा करती हूँ, शुभ्र तुम्हारी
गुणावली ही उसे ठीक पथ पर लायेगी—
पथ, जो तुम दोनों के लिए प्रतिष्ठा का है।

ओफ़ीलिया : देवि, कामना मेरी भी यह।

[**रानी चली जाती है।**

पोलोनियस : ओफ़ीलिया, तुम रहो घूमती इसी जगह पर।—
महाराज, यदि आज्ञा हो तो, यहाँ रहें हम।—
इस किताब को पढ़ती रहना, इससे समझा
जायेगा तुम एकाकी हो, और इसी से
वक़्त काटने को तुम पुस्तक देख रही हो।—
इसमें अक्सर दोष हमारा—सिद्ध हज़ारों
बार हो चुका—दानव के मुख पर भी चन्दन-
तिलक लगा, उसके दिखावटी सत्कर्मों का
ढोल बजा, हम उसे देवता के बाने में
प्रस्तुत करते।

राजा : (**स्वगत**) ओ, इसमें कितनी सच्चाई !
यह भाषण मेरे विवेक पर कैसा चाबुक-
सा पड़ता है।

रंग और रोग़न से सजा-सँवारा चेहरा,
रण्डी का, जैसे उसके असली चेहरे से
भद्दा लगता, वैसे ही मेरी करतूतें
मेरे रँगे हुए शब्दों से भद्दी लगतीं।
मेरे मन पर बड़ा भार है !

पोलोनियस : उसके पाँवों
की आहट है। श्रीमन्, हम पीछे हट जायें।

[**राजा और पोलोनियस चले जाते हैं।**

(हैमलट का प्रवेश)

हैमलेट : अब जीना है या मरना है, तय करना है !
शाबाशी किसमें है, क़िस्मत के तीरों के
आघातों को भीतर-भीतर सहते जाना,
या संकट के तूफ़ानों से लोहा लेना
औ' विरोध करके समाप्त उनको कर देना,
औ' समाप्त ख़ुद भी हो जाना ?—
मर जाना,—सो जाना,—औ' फिर कभी न जगना !
औ' सोकर मानो यह कहना, सब सिर-दर्दों,
और सैकड़ों मुसीबतों से, जो मानव के
सिर पर टूटा करतीं, हमने छुट्टी पा ली।
इस प्रकार का शान्त समापन कौन नहीं दिल
से चाहेगा ? मर जाना—सोना—सो जाना !
लेकिन शायद स्वप्न देखना ! अरे, यहीं पर
तो काँटा है। जब हम इस माटी के चोले
को तज देंगे, मृत्यु-गोद में जब सोयेंगे,
तब क्या-क्या सपने देखेंगे ! अरे, वही तो
हमें रोकते। इनके ही भय से तो दुनिया
इतने लम्बे जीवन का संत्रास झेलती;
वर्ना सहता कौन समय के कर्कश कोड़े,
ज़ुल्म ज़ालिमों का, घमण्ड धन-घमण्डियों का,
पीर प्यार के तिरस्कार की, टालमटोली
कचहरियों की, गुस्ताख़ी कुर्सीशाही की,
और घुड़कियाँ, जो नालायक़ लायक़ लोगों
को देते हैं, जब कि एक नंगी कटार से
सब झगड़ों से छुटकारा पाया जा सकता।
कौन भार ढोता, जीवन का जुआ खींचता,
करता अपना ख़ून-पसीना एक रात-दिन,
किसी तरह का अगर न मरने पर डर होता।
वह अनजाना देश, जहाँ से कभी लौटकर
कोई पथिक नहीं आता है, मन भरमाता।
वहाँ पहुँचने पर जाने क्या पड़े भोगना,
इस भय से हम दुःख यहाँ के सहते जाते।

यह शंका हम लोगों को डरपोक बनाती,
और हमारे निश्चय की स्वाभाविक दृढ़ता
में इन कच्चे ख़्यालों से ढुलमुलपन आता,
और योजनाएँ, महत्त्व की, धाराओं-सी
पहुँच न सागर को मरुथल में खो जाती हैं,
कार्यरूप में कभी नहीं परिणत हो पातीं।—
धीमे बोलूँ! यह क्या सुन्दर ओफ़ीलिया है?
देवि, प्रार्थना में मेरे भी अपराधों की
क्षमा माँगना भूल न जाना

ओफ़ीलिया : कहिए, श्रीमन्,
बहुत दिनों के बाद मिले हैं, अच्छे तो हैं?

हैमलेट : पूछा तुमने, आभारी हूँ; अच्छा ही हूँ।

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, मेरे पास आपकी दी चीजें हैं,
जिनको अरसे से लौटाना चाह रही थी।
सुनें प्रार्थना मेरी, उनको अब वापस लें।

हैमलेट : नहीं, न, मैंने तुम्हें कभी कुछ नहीं दिया है।

ओफ़ीलिया : माननीय श्रीमन्त, आप हैं ख़ूब जानते
मुझे आपने दी थीं चीजें, साथ पंक्तियाँ
रचकर सुमधुर जिनसे उनका मूल्य बढ़ा था,
पर अब वापस लें, उनमें माधुर्य नहीं है;
जब देनेवाला निर्मोही बन बैठे तो,
कितनी ही बहुमूल्य भेंट हो, मिट्टी ही है।
यह लें, श्रीमन्।

हैमलेट : हः हः! क्या तुम सच्ची हो?

ओफ़ीलिया : श्रीमन्त!

हैमलेट : क्या तुम सुन्दर हो?

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, आपका मतलब क्या है?

हैमलेट : यही कि अगर तुम सच्ची और सुन्दर हो तो तुम्हारी सच्चाई और सुन्दरता में कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए।

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, सुन्दरता का सबसे अच्छा सम्बन्ध तो सच्चाई से ही हो सकता है।

हैमलेट : यह ठीक है, लेकिन इसके पहले कि सच्चाई की ताक़त सुन्दरता को अपने अनुरूप बना ले, सुन्दरता की शक्ति सच्चाई को हरजाई बना देती है। पहले कभी यह विरोधाभास समझा जाता था, लेकिन समय ने अब इसको सत्य सिद्ध कर दिया है। मैं किसी समय तुमको प्यार करता था।

ओफ़ीलिया : निश्चय ही, श्रीमन्त, आपने मुझे इसका विश्वास दिलाया था।

हैमलेट : तुम्हें मेरा विश्वास नहीं करना था। क्योंकि कोई नया गुण किसी पुराने अवगुण पर इस प्रकार चस्पाँ नहीं किया जा सकता कि उसे पूरी तरह ढक ले। मैं तुम्हें प्यार नहीं करता था।

ओफ़ीलिया : तब तो मैंने और बड़ा धोखा खाया।

हैमलेट : तुम तो किसी मठ में जाओ! गुनहगारों को क्यों जन्म दोगी?

मैं भी कहने-भर को सच्चा हूँ; लेकिन ऐसे गुनाहों का मैं भी शिकार हूँ; क्या ही अच्छा होता कि मेरी माँ ने मुझे जन्म न दिया होता। मैं घमण्डी हूँ, बदलाभिलाषी हूँ, महत्त्वाकांक्षी हूँ। जिन्हें कल्पनाएँ भी निरूपित न कर सकें, विचार भी अपने में न बाँध सकें, और कितना भी समय, जिन्हें कार्यरूप में परिणत न कर सके, उनसे भी ज़्यादा गुनाहों का मैं अम्बार हूँ। आसमान और ज़मीन के बीच में रेंगनेवाले हमारे-जैसे लोग करें भी तो क्या! हम ग़ज़ब के बुद्धू हैं—सबके सब, हममें से किसी का विश्वास मत करो। तुम बस किसी मठ की ओर सिधारो। तुम्हारे पिता कहाँ हैं?

ओफ़ीलिया : घर पर हैं, श्रीमन्त!

हैमलेट : उन्हें कमरे में बन्द करके रक्खो, जिससे उनकी मूर्खता उनके घर तक ही सीमित रहे। विदा!

ओफ़ीलिया : हे भगवान, इनकी रक्षा कर!

हैमलेट : अगर तू शादी करेगी तो दहेज़ के रूप में तुझे मैं यह शाप दूँगा कि तू बर्फ़-सी अमल हो, हिम-सी धवल हो, तो भी तू कलंकित हो। तू मठ में जा बैठ, जा, विदा। पर यदि तुझे शादी करनी ही हो तो किसी मूर्ख से कर, क्योंकि बुद्धिमान जानते हैं कि तुम अपने पतियों को क्या तमाशा बना देती हो। मठ को जा, और जल्दी जा, विदा!

ओफ़ीलिया : ओ स्वर्गिक शक्तियो, इनके मन को शान्त करो!

हैमलेट : मैंने तुम्हारी वेश-केश-रचना के बारे में भी सुन रक्खा है, जो तुम बड़ी दक्षता से करती हो। भगवान ने तुमको एक चेहरा दिया है, तुम उस पर दूसरा लगा लेती हो। तुम कमर लचकाती हो, अंग मटकाती हो, कनखियों से बतियाती हो, सीधे-सादों को बुद्धू बनाती हो, और अपनी चतुराई को अपने भोलेपन का बाना पहनाती हो। जा, जा; अब इस प्यार से मेरा कोई सरोकार नहीं : इसने मुझे पागल बना दिया है। मैं कहता हूँ कि अब हम विवाह का रिवाज ही बन्द कर देंगे। जिनकी शादी हो चुकी है, वही शादी-शुदा रहेंगे, सिर्फ़ एक को छोड़कर; जिनकी नहीं हो चुकी, उनकी अब नहीं होगी; इससे तू मठ में जा।

[हैमलेट बाहर जाता है।

ओफ़ीलिया : कितनी ऊँची सत्ता नीचे गिरी पड़ी है!—
राजपुरुष की दृष्टि, जीभ विद्या-व्यसनी की,
औ' तलवार-कुशल सैनिक की—रम्य राज्य की
आशाओं का जो गुलाब था, रुचि का दर्पण,
औ' स्वरूप का साँचा जो था, जिसके ऊपर
सभी आँखवालों की आँखें लगी हुई थीं,
कितना नीचे, कितना नीचे गिरा पड़ा है!
औ' मैं, महिलाओं में परम निराश, अभागिन,

जिसने उसकी प्रेम-प्रतिज्ञा की मधुमय
संगीत-सुरा का पान किया था, हा, अब उसकी
तीव्र बुद्धि का यह विकार, उसकी प्रतिभा का
करुण पतन यह, देख रही हूँ। —मधुर घण्टियाँ
बजतीं, उनमें, पर, कोई स्वर-साम्य नहीं है;
कानों को वे कर्कश लगतीं। अद्वितीय यह
रूप-रंग विकसित यौवन का, पागलपन से
बिखर गया है। बड़ी दुखी मैं, बहुत दुखी हूँ;
क्या मैंने तब देखा, अब क्या देख रही हूँ!

(राजा और पोलोनियस का पुनः प्रवेश)

राजा : प्रेम? नहीं उसके विकार का कारण लगता।
जो वह बोला उसमें, गो थी कमी गठन की
कुछ थोड़ी-सी, नहीं पगलपन मैंने पाया।
उसकी छाती में कोई विष-वृक्ष उगा है,
जिसे उदासी, उसके मन की, सींचा करती,
और मुझे पूरी आशंका है जो उसमें
फल आयेगा, वह कुछ बहुत भयंकर होगा।
जल्दी उसकी रोक-थाम करने को मैंने
यह सोचा है—उसे शीघ्र इंग्लैण्ड भेज दूँ,
माँग करे वह वहाँ पहुँचकर उस कर की जो
उसके ऊपर बहुत दिनों से चढ़ा हुआ है।
सम्भव है सागर, विभिन्न देशों की यात्रा,
और वहाँ की तरह-तरह की नयी वस्तुएँ
हटा सकें जो उसकी छाती पर बैठा है,
चैन न लेने देता जो उसके दिमाग को,
जिससे उसको अपना होश-हवास न रहता।
क्या है राय तुम्हारी इस पर?

पोलोनियस : अच्छा होगा।
पर पूरा विश्वास मुझे है इस पीड़ा का
मूल और आरम्भ प्रेम ही है, ठुकराया
जिसे गया है—अच्छी तो हो तुम ओफ़ीलिया?
तुमसे जो श्रीमन्त हैमलेट बोले उसको
मत दुहराओ; हमने वह सब सुन रक्खा है।—
जैसा ठीक समझिए, करिए, मेरे मालिक;
लेकिन आप उचित समझें तो, बाद खेल के
रानी-माता उन्हें अकेले में ले जाकर
उनके दुख का कारण पूछें। जो बातें हों,
साफ़-साफ़ हों। अगर आप अनुमति दें तो मैं
छिपकर उनकी बात सुनूंगा। कुछ न बनी तो
उन्हें आप इंग्लैण्ड भेज दें या फिर कर दें
नज़रबन्द जिस जगह आपके मन को भाये।

राजा : करना होगा कुछ ऐसा ही।
बड़ा अगर पागल हो, करो न लापरवाही।

[**सब जाते हैं।**

दूसरा दृश्य

गढ़ का एक बड़ा कक्ष

(हैमलेट और दो या तीन अभिनेताओं का प्रवेश)

हैमलेट : कृपया इन पंक्तियों को ऐसे बोलो जैसा मैंने बतलाया है—गले पर बग़ैर ज़ोर डाले। अगर तुम इन्हें गला फाड़-फाड़कर दहाड़ते हो, जैसा करने के तुम्हारे बहुत-से अभिनेता आदी हैं, तो ज़्यादा अच्छा होगा कि यह काम मैं किसी ढँढोरची से लूँ। साथ ही हवा में अपने हाथों को भी ज़्यादा मत भाँजो—ऐसे-ऐसे। अंग-संचालन हो, पर जितना जरूरी हो। आवेगों के तेज़ बहाव, तूफ़ान, यहाँ तक कि प्रचण्ड बवण्डर में भी संयम लाओ—बाहर से ही नहीं, भीतर से भी—इससे संजीदगी आयेगी। इससे मुझे सख़्त नफ़रत है कि कोई भालू-नुमा धमधूसर किसी आवेश में आकर ऐसा चीख़े-चिल्लाये, जैसे वह शब्दों के परख़चे उड़ा रहा हो, और उन घटिया दर्शकों के कानों के पर्दे फाड़ दे जो दो ही तरह की चीज़ें समझते हैं—या तो मूक-प्रदर्शन या फिर हथिया-चिग्घाड़। मेरा वश चले तो ऐमे लोगों को कोड़े लगवाऊँ जो किसी क्रोधोन्मत्त नायक की भूमिका अदा करने में भी अत्ति करें—उद्धत को अतिशयोद्धत बनाकर। देखो, ऐसा न करना।

पहला अभिनेता : जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा, श्रीमन्त!

हैमलेट : लेकिन आवाज़ एकदम दबी भी न हो। अपने विवेक से भी काम लो। इस बात का विशेष ध्यान रहे कि प्रकृति की सीमा का उल्लंघन कहीं पर भी न हो। क्योंकि किसी प्रकार की अत्ति करना नाटक के उद्देश्य से ही दूर हो जाना है, जिसका लक्ष्य पहले भी यही था और अब भी यही है—उसके दर्पण में प्रकृति को प्रतिबिम्बित करना—युग को उसका स्वरूप दिखाना, और अवगुण को उसका ख़ाका, और युग और काल को उसका नक़्शा और उसका प्रभाव। उसकी अतिव्याप्ति अथवा अपर्याप्ति पर गँवार भले ही हँसे, पर समझदार आँसू बहाता है। और ऐसे एक समझदार की राय का, तुम्हारी दृष्टि में, दर्शकों की एक पूरी भीड़ की राय से अधिक मूल्य होना चाहिए। अरे, ऐसे भी अभिनेता हैं जिनके करतब मैंने देखे हैं, और ऐसे भी लोग

हैं जिन्होंने उनकी तारीफें की हैं—ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर—पर मुझे क्षमा किया जाये यदि मैं कहूँ कि न उनकी बात में कोई विशेषता है, न उनकी चाल में; न स्वाभाविकता ही; आदमी-सा कुछ भी तो नहीं। रंगमंच पर उनकी धमा-चौकड़ी देख, और हुंकार-चिग्घाड़ सुन, मुझे तो यही लगा है कि इन इन्सानों को भगवान ने नहीं, शैतान ने बनाया है; बनाया क्या है, बिगाड़ा है; मनुष्य नहीं, मनुष्य का विद्रूप खड़ा किया है।

पहला अभिनेता : श्रीमन्, हमने इस दिशा में काफ़ी सुधार किया है।

हैमलेट : अरे, 'काफ़ी' नहीं, 'पूरा' सुधार करो। तुम्हारे नाटक में जो विदूषकों की भूमिका अदा करते हैं वे उतना ही बोलें जितना उनके लिए लिखा गया है, क्योंकि उनमें कोई-कोई तो ऐसे हैं कि कुछ मनहूस दर्शकों को हँसाने के लिए ख़ुद हँसना शुरू कर देते हैं, गो उस समय नाटक की किसी आवश्यक समस्या को प्रस्तुत करने का अवसर होता है। यह तो उद्दण्डता हुई, और यह प्रकट करती है कि जो विदूषक ऐसा करते हैं वे कितनी दयनीय महत्त्वाकांक्षा के शिकार हैं।—

[**अभिनेता चले जाते हैं।**

(पोलोनियस, रोजेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

—कहिए श्रीमन्, क्या राजा यह खेल देखने
को आयेंगे ?

पोलोनियस : जी हाँ, रानी भी आयेंगी औ' जल्दी ही।

हैमलेट : अभिनेताओं से जा कहिए, जल्दी आयें।

[**पोलोनियस जाता है।**

तुम दोनों भी जाकर उनकी मदद करो जल्दी
आने में।

रोजेन्क्राण्ट्ज़
गिल्डेन्सटर्न } : श्रीमन्, हम उनको लाते हैं।

[**रोजेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते हैं।**

हैमलेट : होरेशियो, तू !

(होरेशियो का प्रवेश)

होरेशियो : हाँ, श्रीमन्, मेरी सेवा लें।

हैमलेट : बहुतों से मैं मिला, नहीं, पर, मैंने पाया
कोई ऐसा, तुझ-सा सुलझा-समझदार हो।

होरेशियो : श्रीमन्, मैं क्या···

हैमलेट : सत्य इसे तू मान कि तेरी
नहीं चापलूसी करता हूँ। तुझसे क्या पाने
की आशा रख ऐसा करना चाहूँगा ?

खाना-कपड़ा जुट पाये जितने में उसको
छोड़ पास क्या तेरे है ? बस, मन की मस्ती।
करे चापलूसी कोई क्यों कंगालों की ?
जहाँ ख़ुशामद से आमद हो, वहाँ भले ही
मिठबोली जिह्वा चाटे चाँदी के तलवे,
और दरे-दौलत पर घुटने टेके जायें।
देख, चूँकि मैं अपनी मर्ज़ी का मालिक हूँ,
भले-बुरे इन्सानों की पहचान मुझे है,
तुझको मैंने अपने मन का मीत चुना है।
तू दुःखों में, दुख से विचलित नहीं हुआ है;
तूने क़िस्मत के अभिशापों, वरदानों को
एक तरह साभार सदा स्वीकार किया है।
होरेशियो, वे लोग धन्य हैं—कम ऐसे हैं—
जो आवेग-विवेक सन्तुलित अपना रखते,
नहीं भाग्य के हाथों की कठपुतली बनते,
जैसा चाहे, उन्हें नचाये। दे मुझको तू
वह मनुष्य जो नहीं वासना का गुलाम है,
और उसे मैं अपनी छाती में रख लूंगा—
—अन्तस्तल में—जैसे मैं तुझको रखता हूँ।
मैं इस पर कुछ बहुत कह गया। आज रात को
नाटक एक दिखाया जायेगा राजा को,
एक दृश्य है मेरे पूज्य पिता के मरने
के प्रसंग से मिलता-जुलता, जिसके बारे
में तुझसे मैं बता चुका हूँ। दृश्य दिखाया
जाये जब वह तब तू पूरा ध्यान लगाकर
आँखें रख मेरे चाचा पर। कथन एक है
उसमें ऐसा जो यदि अपने-आप न उसका
गुप्त गुनाह उजागर कर दे, तो तू ऐसा
समझ भूत वह झूठा था जो हमें दिखा था;
और कल्पना मेरी, जैसे सन्निपात के
रोगी की हो। बड़े ग़ौर से देख उसे तू;
मेरी आँखें उसके मुख पर टिकी रहेंगी;
और बाद को दोनों मिलकर, उसके चेहरे
से क्या खुलता है—इस पर मशविरा करेंगे।

होरेशियो : अच्छा, श्रीमन् ! जब नाटक खेला जाता हो,
तब यदि चोरी से वह खिसके, पकड़े जाने
के डर से तो, छिप न सकेगा मेरी आँखों
से उसकी दाढ़ी का तिनका।

हैमलेट : वे लोग नाटक देखने आ रहे हैं; मुझे फिर पागल-सा बन जाना
चाहिए। तुम किसी जगह बैठ जाओ।

(डेनिश मार्च का बैण्ड बजता है। तुरही बजती है।

राजा, रानी, पोलोनियस, ओफ़ीलिया, रोज़ेन्क्राण्ट्ज़, और गिल्डेन्सटर्न आते हैं; उनके पीछे हैं कई सरदार और मशालें लिए हुए अंगरक्षक)

राजा : कैसे हो, प्यारे हैमलेट ?

हैमलेट : बहुत अच्छा हूँ, बेशक; गिरगिट खाकर, हवा पीकर, वादों से पेट भरकर; बधिया मुर्ग़ा भी इस पर नहीं जिएगा।

राजा : सवाल दीगर, जवाब दीगर! हैमलेट, मेरे प्रश्न से इन शब्दों का क्या सम्बन्ध है ?

हैमलेट : और मेरा भी क्या है ?—(**पोलोनियस से**) जनाब, आप कहते थे कि एक बार आपने विश्वविद्यालय में अभिनय भी किया था ?

पोलोनियस : किया था मैंने, श्रीमन्त, और मुझे अच्छा अभिनेता माना गया था।

हैमलेट : और किसकी भूमिका आपने अदा की थी ?

पोलोनियस : मैं जूलियस सीज़र की भूमिका में उतरा था; मुझे कैपिटल में मारा गया था; ब्रूटस ने मुझे मारा था।

हैमलेट : आपको भूमि पर उतरना ही नहीं था; नहीं तो आप न मारे जाते।—क्या अभिनेता लोग तैयार हो गये ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : हाँ, श्रीमन्; वे आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

रानी : यहाँ आओ, प्यारे हैमलेट, मेरे पास बैठो।

हैमलेट : नहीं माँ, यहाँ के चुम्बक में मेरे लिये अधिक आकर्षण हैं।

पोलोनियस : (**राजा से**) ओ-हो! आप इसे देख रहे हैं।

हैमलेट : देवि, क्या मैं तुम्हारी गोद में लेट सकता हूँ ?

[**ओफ़ीलिया के पैरों के पास लेट जाता है।**

ओफ़ीलिया : नहीं, श्रीमन्।

हैमलेट : मेरा मतलब है, अपना सिर तुम्हारी गोद में रखकर ?

ओफ़ीलिया : जैसा आप चाहें, श्रीमन्।

हैमलेट : क्या तुम समझती हो कि यह भद्दी-बात है ?

ओफ़ीलिया : नहीं तो, श्रीमन्।

हैमलेट : किसी कुमारी की टाँगों में पड़े रहना—यह तो बड़ी सुखद कल्पना है।

ओफ़ीलिया : क्या है, श्रीमन् ?

हैमलेट : कुछ नहीं।

ओफ़ीलिया : प्रसन्न तो हैं आप, श्रीमन् ?

हैमलेट : कौन ? मैं ?

ओफ़ीलिया : हाँ, श्रीमन्।

हैमलेट : मैं तो तुमको प्रसन्न करनेवाला हूँ, तुक में तुक जड़नेवाला हूँ। प्रसन्न होने के सिवा मनुष्य कर ही क्या सकता है। मेरी माँ को ही देखो, कैसी प्रसन्न वे दिख रही हैं और मेरे पिता को मरे दो ही महीने अभी हुए हैं।

ओफ़ीलिया : नहीं, दो दूनी चार महीने, श्रीमन् !

हैमलेट : इतने···ऽ दिन हो गये ? तब तो मेरी बला पहने मातमी कपड़े, मैं अब एक काला सूट सिलाऊँगा। ओ परमात्मा, मरे हो गये पूरे दो महीने और उन्हें अब तक नहीं भुलाया गया ! तब यह आशा बँधती है कि किसी बड़े आदमी की याद उसके मरने के बाद छह महीने तक तो बनी ही रहेगी। परन्तु, सौगन्ध स्वर्ग की देवी की, तब उसे पत्थर का गिरजाघर बनवाना पड़ेगा, नहीं तो उसे बिल्कुल भुला दिया जाएगा, काठ का घोड़ा, घास की ज़ीन वाले की तरह—'काठ का घोड़ा, घास की ज़ीन, याद किसे हैं दाता-दीन ?'

(नरसिंघों की आवाज़; मूक अभिनय करनेवालों का प्रवेश। एक राजा-रानी प्रेमी-प्रेमिका की तरह आते हैं। वे एक-दूसरे का आलिंगन करते हैं। रानी घुटनों के बल बैठकर राजा को कुछ उलाहने देती है। राजा उसे उठाता है और उसके कन्धे पर अपना सिर रख देता है। वह उसे एक फूलों की सेज पर लेटा देती है। उसको सोता देखकर वह वहाँ से हट जाती है। तभी एक आदमी आता है, उसका ताज उतारता है, उसे चूमता है और राजा के कान में ज़हर डाल देता है, और चला जाता है। रानी लौटती है; देखती है कि राजा मर गया है और विकलता की मुद्राएँ बनाती है। दो या तीन व्यक्तियों के साथ राजा के कान में ज़हर डालनेवाला फिर आता है और रानी के साथ शोक प्रकट करने की मुद्राएँ बनाता है। राजा के मृत शरीर को लोग उठा ले जाते हैं। ज़हर डालनेवाला तरह-तरह के उपहार देकर रानी की मनुहार करता है; रानी पहले तो उसके प्रति उदासीन और अनमनी रहती है, पर अन्त में उसके प्रेम को स्वीकार कर लेती है—

(अभिनय करनेवालों का प्रस्थान)

ओफ़ीलिया : इसका मतलब क्या है, श्रीमन् ?

हैमलेट : सच बताऊँ ? बगली ठेस, यानी शरारत।

ओफ़ीलिया : शायद इस प्रदर्शन में नाटक के कथानक का कुछ संकेत है।

(सूत्रधार का प्रवेश)

हैमलेट : इसका पता तो इस आदमी से लगेगा। अभिनेताओं के पेट में बात नहीं पचती; वे हमारे सामने सब उगल देंगे।

ओफ़ीलिया : क्या यह बताएगा कि इस मूक-प्रदर्शन का मतलब क्या है ?

हैमलेट : निश्चय, या किसी भी प्रदर्शन का, जो तुम उसके आगे प्रदर्शित कर सको। तुम प्रदर्शित करने में न शरमाओ, और वह उसका मतलब समझाने में नहीं शरमायेगा।

ओफ़ीलिया : आप तो टेढ़ी बातें करते हैं, टेढ़ी; मैं खुद खेल को समझूँगी।

सूत्रधार :
हमारी त्रासदी पर और हम पर
बड़ा आभार होगा आपका गर
सुनें सब आप हमको धैर्य धरकर !

[**सूत्रधार जाता है।**

हैमलेट : यह सूत्रधार का प्रवचन है कि अँगूठी पर खुदा सूत्र ?

ओफ़ीलिया : जल्द ही समाप्त हो गया।

हैमलेट : जैसे किसी स्त्री का प्रेम।

(राजा और रानी—दो अभिनेताओं का प्रवेश)

अभिनेता राजा : पूरे तीस बार सूरज के अविरत रथ ने
वरुण-वास खारे सागर की, भू-मण्डल की
परिक्रमा की, और तीस दर्जन चाँदों ने,
माँगी चादर ओढ़ किरण की, इस धरती की
तीस गुणित बारह फेरी दी, जब से हमको
प्रणय और परिणय ने बाँधा कभी न खुलने
वाली गाँठों में पावनतम, परम मनोरम।

अभिनेत्री रानी : सूरज-चन्दा की इतनी ही परिक्रमाएँ
फिर हमको गिननी हों, लेकिन गाँठ प्रेम की
बाँध रही जो हम दोनों को पड़े न ढीली।
पर मेरा दुर्भाग्य, इधर अस्वस्थ आप हैं।
चेहरे पर अब पहले-सा उल्लास नहीं है;
और आपके लिए मुझे चिन्ता रहती है।
भय-चिन्ता चाहे मुझको हो, मेरे स्वामी,
विचलित होना कभी आपको नहीं चाहिए।
नारी-उर में प्यार सन्तुलित रहता भय से—
या तो नारी में अभाव दोनों का होगा,
या उसमें फिर दोनों अतिशयता पर होंगे।
जैसा मेरा प्यार, आपसे छिपा नहीं है;
मेरे भय की माप उसी से कर सकते हैं।
प्यार अधिक हो तो थोड़ी सी आशंका भी
भय उपजाती। भय से आशंका बढ़ती है,
जितनी ही बढ़ती उतना ही प्यार बढ़ाती।

अभिनेता राजा : मेरे तन की शक्ति क्षीण होती जाती है;
प्रिये, छोड़ना मुझे तुझे होगा, औ' जल्दी;
मेरे पीछे बनी रहेगी तू सुखमामय
इस वसुधा पर; स्नेह-समादर भी पायेगी,
औ' सम्भव है, मुझ-सा प्रेमी पति भी तुझको—

अभिनेत्री रानी : और न बोलें ! प्रेम अगर ऐसे बदले तो
वह केवल धोखेबाज़ी मेरी नज़रों में।
फिर से ब्याह करूँ तो ईश्वर मुझे सज़ा दे !
कोई पति-हत्यारी फिर पति करती होगी।

हैमलेट : बात बड़ी चुभनेवाली है।

अभिनेत्री रानी : ब्याह दूसरा किया जाय तो उसका कारण
प्रेम न होगा, कोई नीच प्रलोभन होगा।
अगर दूसरा पति मुझको बिस्तर में चूमे,
मुझे लगेगा ऐसा जैसे अपने पहले
मरे हुए पति की मैं फिर से हत्या करती!

अभिनेता राजा : मुझको है विश्वास कि जो तुम बोल रही हो
सोच-समझकर बोल रही हो, लेकिन अक्सर
हम ख़ुद अपने वादों को तोड़ा करते हैं,
क्योंकि याद के ऊपर निर्भर वादे रहते।
वादे जन्म लिया करते हैं आवेगों में,
पर उनमें सुस्थिरता लेश नहीं रहती है,
जैसे कच्चा फल डाली से चिपका रहता,
पर पकने पर अनजाने ही चू पड़ता है।
और यही अक्सर होता, हम याद न रखते
जो ऋण हम पर, और चुकाना जिसको हमको।
हम आवेगों में वादे तो कर लेते हैं,
पर वे ठण्डे पड़े कि हम वादे बिसराते;
सुख-दुख के आवेग स्वयं ही सुख-दुख को ही
सहते-सहते, धीरे-धीरे, मिट जाते हैं।
अत्ति जहाँ पर सुख की, या दुख की होती है,
सुख दुख में, दुख सुख में जल्द बदल जाता है।
नहीं एक-सी रहती दुनिया, अचरज क्या है,
भाग्य बदलता, प्रेम भाग्य के साथ बदलता।
एक प्रश्न है जिसका उत्तर मिला न अब तक,
प्रेम भाग्य पर निर्भर है, या भाग्य प्रेम पर।
बड़ा गिरा तो उसके प्रियजन उससे कटते,
छोटा उठा कि शत्रु, पूर्व के, प्रियजन बनते।
और अभी तक तो निर्भर है प्रेम भाग्य पर,—
जो समृद्ध है उसे मित्र की कमी नहीं है।
दुर्दिन में ऊपरी मित्र को जो परखेगा,
निश्चित है, उसको अपना दुश्मन कर लेगा।
शुरू किया था जहाँ, वहीं यदि ख़त्म करूँ तो
कहना होगा, अभिलाषा औ' भाग्य विरोधी।
यत्न हमारे सदा विफल होते रहते हैं,
अभिलाषाएँ अपनी, उनका अन्त न अपना।
सोच रही हो तुम कि दूसरा पति न करोगी,
किन्तु प्रथम पति के मरने पर यह विचार भी
मर जायेगा।

अभिनेत्री रानी : एक बार विधवा बनकर मैं
यदि फिर सधवा बनूँ, अन्न मुझको न धरा दे,
ज्योति न दे आकाश; रात हो चाहे दिन हो,

किसी समय भी शान्ति, हास-उल्लास न जानूँ,
आशा औ' विश्वास निराश मुझे कर जायें,
भिखारिणी-सी मैं दर-दर की ठोकर खाऊँ,
नियति सभी मेरी खुशियों में आग लगा दे,
अरमानों पर पानी फेरे, उन्हें मिटा दे,
यहाँ-वहाँ मैं किसी जगह पर चैन न पाऊँ।

हैमलेट : इतने पर भी यदि वह अपने वचन तोड़ दे !

अभिनेता राजा : प्यारी, तुमने बड़ी कड़ी सौगन्ध उठा ली,
अब तुम थोड़ी देर के लिए मुझे छोड़ दो,
भीतर से कमज़ोरी मैं अनुभव करता हूँ,
थोड़ा सोकर लम्बा दिन काटा चाहूँगा।

[**सोता है।**

अभिनेत्री रानी : नींद आपको अच्छी आये,
और हमारे बीच न कुछ अघटित हो पाये।

[**जाती है।**

हैमलेट : देवि, आपको यह नाटक कैसा लगता है ?

रानी : मुझे लगता है कि नारी अपने पतिव्रत का कुछ ज़्यादा ही ढोल पीट रही है।

हैमलेट : ओ, लेकिन वह अपने वचनों पर दृढ़ रहेगी।

राजा : क्या तुमने इस नाटक का कथानक देख रक्खा है ? इसमें कुछ आपत्तिजनक तो नहीं है ?

हैमलेट : नहीं, नहीं; वे तो केवल हँसी-खेल कर रहे हैं। ज़हर देने का अभिनय-भर; कोई आपत्तिजनक बात नहीं।

राजा : नाटक का नाम क्या है ?

हैमलेट : 'चूहेदानी'। यानी, चूहे की नादानी। इस नाटक में एक हत्या प्रदर्शित की गयी है जो वियना में हुई थी। गंज़ागो राजा का नाम है; उसकी पत्नी का बपतिस्ता। आप इसे जल्द ही देखेंगे। यह बड़ी कटाक्षपूर्ण रचना है; पर उससे क्या ? आप महामहिम को और हमको, जिनके दिल साफ़ हैं, यह छू भी नहीं सकती। तिनके के लिए चोर अपनी दाढ़ी टटोले, हमारी उँगलियाँ बेफ़िक्र हैं—

(लूसियानस के रूप में एक अभिनेता का प्रवेश)

यह लूसियानस है, राजा का चचेरा भाई।

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, आप तो बिल्कुल कोरस का काम कर रहे हैं—नाटक को समझाने में।

हैमलेट : मैं तुम्हारे और तुम्हारे प्रेमी के मन की बातें बता सकता था अगर मैं तुमको कठपुतलियों-जैसी हरकत करते देख भर पाता।

ओफ़ीलिया : आप बड़े तेज़ हैं, श्रीमन्, बड़े तेज़।

हैमलेट : इस तेज़ी को कुन्द करना चाहोगी तो चीख़ निकल जायेगी।

ओफ़ीलिया : बात तो आपने और तेज़ कही, पर भद्दी।

हैमलेट : ऐसी ही प्रशंसा और निन्दा से तो तुम अपने पतियों को भरमाती हो।—शुरू भी कर, हत्यारे; दुष्ट, अपना घिनौना मुखौटा उतार और अपना काम शुरू कर। चल, तुझसे बदला लेनेवाला अब उतावला हो रहा है।

लूसियानस :
हत्या का निर्णय पक्का है, हाथ सधा-सा,
ज़हर तेज़, अनुकूल समय, मौसम सहायप्रद,
और किसी प्राणी की आँखें नहीं खुली हैं।
ओ निर्दय द्रव, अर्द्ध रात्रि को जड़ी-बूटियों
से सचित, औ' मरघट-मुर्दों की देवी की
तीन फूँक से तीन बार शापित, विष-मिश्रित,
तेरे जादू के प्रभाव से, मारक बल से
आनन-फ़ानन हरा-भरा भी जीवन झुलसे !

(सोनेवाले के कान में जहर उँडेलता है।)

हैमलेट : वह उसका राज्य पाने के लिए उसके बाग़ में उसे ज़हर दे देता है। उसका नाम गंज़ागो है; सुन्दर इटालवी में लिखी यह कथा सच्ची है; अभी आप देखेंगे कि किस प्रकार हत्यारा गंज़ागो की पत्नी का प्रेम प्राप्त करता है।

ओफ़ीलिया : महाराज तो खेल से जाने के लिए उठ खड़े हुए हैं !

हैमलेट : क्या आतिशबाज़ी से आग के अन्देशे ?

रानी : महाराज कैसे हैं ?

पोलोनियस : खेल ख़त्म करो !

राजा : मुझे रोशनी दिखाओ—सब जाओ !

सब : रोशनी, रोशनी, रोशनी !

[हैमलेट और होरेशियो को छोड़ सब चले जाते हैं।

हैमलेट :
वाण-बिधा मृग बन में रोये
छौना सुख से करे बिहार,
कुछ जागा, कुछ सोया करते—
ऐसा चलता है संसार।

क्यों जी, मेरा यह कमाल, परदार पहनाव, धारीदार जूतियों पर दो-दो गुलाब---अगर मेरे बुरे दिन भी आ जायें तो—रोटी-रोज़ी के लिए—किसी नाटक-मण्डली की सदस्यता तो दिला ही सकते हैं।

होरेशियो : आधा हिस्सा।

हैमलेट : पूरा क्यों नहीं जी ?
बन्धु, तुझे तो सब कुछ ज्ञात।
नर-शार्दूल जहाँ था राजा
देश पड़ा वह उजड़ा आज,
एक प्रदर्शन-प्रिय, खल, कामी
मोर वहाँ करता है राज।

होरेशियो : 'गर्दभराज' की तुक नहीं लगा सकते थे ?
हैमलेट : प्यारे होरेशियो, सच मानो, भूत ने लाख टके की बात कही थी। देखा ?—
होरेशियो : ख़ूब अच्छी तरह, श्रीमन् !
हैमलेट : —ज़हर देने की बात पर ?
होरेशियो : मैंने बड़े ग़ौर से उसे देखा।
हैमलेट : अह-हा ! आओ कुछ गाना-बजाना हो जाये। लाओ, बजे बाँसुरी !—

यदि राजा को नहीं कामदी भायी,
तो हो सकता है—उन्हें पसन्द न आयी,
आओ, कुछ गाना-बजाना हो जाये।

(रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न का पुनः प्रवेश)

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, आज्ञा हो तो एक बात कहूँ ?
हैमलेट : पूरा इतिहास !
गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, राजा—
हैमलेट : हाँ, तो क्या हुआ है राजा को ?
गिल्डेन्सटर्न : अकेले कमरे में जा बैठे हैं; बहुत बेहाल हैं।
हैमलेट : ज़्यादा पी गये होंगे।
गिल्डेन्सटर्न : नहीं, श्रीमन्, उनका सिर फटा जा रहा है।
हैमलेट : तो अक़्ल की बात यह है कि उन्हें किसी अच्छे हकीम को दिखाओ। क्योंकि मैं, क्योंकि मैं कुछ करूँ भी तो नतीजा उसके सिवा और क्या होगा—'नीम हकीम ख़तरे जान !'
गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, ढंग की बात करें; मेरी ख़बर पर आप तो ऐसे बिचक उठे हैं, जैसे कोई जंगली जानवर।
हैमलेट : अच्छा भाई, मैं पालतू जानवर बनता हूँ। कहो जो कहना हो।
गिल्डेन्सटर्न : राजरानी, आपकी माताजी, ने बहुत ही दुखी होकर मुझे आपके पास भेजा है।
हैमलेट : स्वागतम् !
गिल्डेन्सटर्न : नहीं, श्रीमन्, यह शिष्टाचार तो मुझे केवल व्यंग्यात्मक मालूम होता है। यदि आप मुझे समुचित उत्तर दे सकें तो मैं आपकी माता का आदेश आपसे कहूँ ? नहीं तो, आप मुझे क्षमा करें, मैं विदा लेता हूँ, और मेरा काम समाप्त होता है।
हैमलेट : वह तो मुझसे नहीं होगा।
गिल्डेन्सटर्न : क्या नहीं होगा, श्रीमन् ?
हैमलेट : कि मैं तुमको समुचित उत्तर दूँ; मेरी अक़्ल ठिकाने नहीं है। लेकिन जैसा उत्तर मैं दे सकता हूँ उसी के अनुरूप तुम अपना आदेश करो, या जैसा तुम कहते हो, मेरी माता करें; इसलिए अब और कुछ नहीं, सिर्फ़ काम की बातें; तुम कहते हो कि मेरी माँ—
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : तो आपकी माँ यह कहती हैं कि आपके व्यवहार ने उन्हें घबराहट और अचरज में डाल दिया है।

हैमलेट : वाह, बेटा भी क्या अजीब है कि माँ को अचम्भे में डाल सकता है; लेकिन इस आश्चर्य के परिणामस्वरूप वे करना क्या चाहती हैं ? वह तो बताओ।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : वे चाहती हैं कि सोने जाने से पहले आप उनके कमरे में उनसे मिलें।

हैमलेट : हम उनकी आज्ञा का पालन करेंगे, जैसे वे हमारे दस जन्मों की माँ हों। तुम्हें हमसे कोई और काम है ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, किसी समय आप मुझे प्यार करते थे।

हैमलेट : वह तो मैं अब भी करता हूँ, क़सम इन गिरहकट और चोरी करनेवाले हाथों की।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, आपकी बद-मिज़ाजी का कारण क्या है ? आप अपनी ही आज़ादी के पैरों में बेड़ियाँ डालते हैं, अगर आप अपनी तकलीफ़ अपने दोस्तों से छिपाते हैं।

हैमलेट : भाई, मेरे आगे बढ़ने के रास्ते बन्द हैं।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : यह कैसे हो सकता है, जब स्वयं राजा ने आपको यह वचन दे रक्खा है कि आप ही डेनमार्क के युवराज हैं।

हैमलेट : यह तो ठीक है, लेकिन तुमने कहावत नहीं सुनी—गँवरपन माफ़ हो—'भूसा भुसौले में, घोड़ा घुड़साल में' !

(अभिनेताओं का बाँसुरियों के साथ पुनः प्रवेश)

ओह, बाँसुरियाँ आ गयीं ! एक मुझे दिखाओ—
ज़रा इधर आओ—मेरा क्या भेद लेने के लिए तुम मेरे पीछे पड़े हो ?—मुझे किस फन्दे में फँसाना चाहते हो ?

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, जब मनुष्य के ऊपर कर्त्तव्य का भार अधिक होता है तब वह अपना प्यार समुचित रीति से व्यक्त नहीं कर पाता।

हैमलेट : तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आयी। बाँसुरी बजा सकते हो ?

गिल्डेन्सटर्न : नहीं, श्रीमन्।

हैमलेट : मैं प्रार्थना करता हूँ।

गिल्डेन्सटर्न : विश्वास कीजिए, मैं नहीं बजा सकता।

हैमलेट : मेरा आग्रह मान लो।

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, मुझे तो इसे पकड़ना भी नहीं आता।

हैमलेट : इसे बजाना उतना ही आसान है जितना झूठ बोलना। इन सूराख़ों को अपनी उँगली-अँगूठे से क़ाबू में करो, और मुँह से फूंको और इसमें से बड़ी ही सुरीली आवाज़ निकलेगी। देखो, ये हैं सूराख़।

गिल्डेन्सटर्न : पर यह मेरे वश के बिल्कुल बाहर है कि उससे कोई सुमधुर स्वर निकाल सकूँ। मुझे यह कला नहीं आती।

हैमलेट : तो मुझे लगता है कि तुम मुझे कितनी ज़टियल चीज़ समझते हो ! तुम मुझ पर क़ाबू पाना चाहते हो; मैं कहाँ, किस तरह खुल सकता हूँ, यह भी तुम जानते हो; तुम मेरे दिल की धीमी से धीमी आवाज़ से लेकर ऊँची से ऊँची आवाज़ तक सुनना

चाहते हो; और इस छोटे-से बाजे से, जिसमें सुरीला संगीत है, सुमधुर स्वर है, तुम आवाज़ नहीं निकाल सकते। तुम बड़े भोले हो जो तुम समझते हो कि इस बाँस को बजाने से मुझे ठोंकना-बजाना ज़्यादा आसान है। तुम मुझे चाहे जिस प्रकार का बाजा समझो, तुम मुझे ठोंक सकते हो, बजा नहीं सकते।

(पोलोनियस का पुनः प्रवेश)

—भगवान आपका भला करे, श्रीमन्।

पोलोनियस : श्रीमन्, राजरानी आपसे कुछ कहना चाहती हैं और फ़ौरन।

हैमलेट : सामने जो बादल हैं, देख रहे हैं? बिल्कुल ऊँट-की-सी शक्ल है उसकी।

पोलोनियस : बिल्कुल ऊँट-सा लगता है।

हैमलेट : नहीं, मैं समझता हूँ, यह नेवले-जैसा है।

पोलोनियस : हाँ, उसकी पीठ बिल्कुल नेवले-जैसी है।

हैमलेट : या ह्वेल मछली-सा है बादल?

पोलोनियस : बिल्कुल ह्वेल-मछली-जैसा।

हैमलेट : तो मैं फ़ौरन माँ के पास आ रहा हूँ।—
(**स्वगत**) किसी को बेवकूफ़ बनाने की हद होती है।
—मैं फ़ौरन आ रहा हूँ।

पोलोनियस : मैं उनसे कह दूँगा।

[जाता है।

हैमलेट : 'फ़ौरन' कहना सरल—विदा हो मुझसे मित्रो!

[हैमलेट को छोड़कर सब चले जाते हैं।

(**स्वगत**) वही रात अब जिसमें जादू-टोने चलते,
जिसमें जबड़े फाड़ जँभाई लेतीं क़ब्रें,
नरक विषभरी साँस छोड़ता है दुनिया पर;
गर्म रक्त इस वक़्त पान कर सकता हूँ मैं,
औ' जघन्य ऐसे कर्मों को, जिन्हें देखकर
काँप उठे दिल! बस! माँ से मिलने जाना है।
हृदय, देख, अपनी सहृदयता छोड़ न देना,
किसी मातृहन्ता की आत्मा बसे न तेरी
दृढ़ छाती में; निर्दय बन, पर कभी न बन तू
अस्वाभाविक। मैं कटार-सी पैनी बातें
कहूँ, मगर न कटार चलाऊँ, कहे भले ही
मेरी जिह्वा को मेरी आत्मा पाखण्डी,
मैं शब्दों से चाहे जितना उनको बेधूँ
हाथ न उन पर, किन्तु, कर्म की मुहर लगाये!

[बाहर जाता है।

तीसरा दृश्य

गढ़ का एक कमरा

(राजा, रोजन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

राजा : नापसन्द उसको करता हूँ, और हमारी
रक्षा इसमें नहीं कि उसके पागलपन को
हम बढ़ने दें। अब तो तुम तैयारी कर लो।
आज्ञापत्र तुम्हारा जल्दी भेजवाऊँगा;
उसको भी इंग्लैण्ड साथ अपने ले जाना।
उसके पागलपन से आये-दिन जो ख़तरे
खड़े हो रहे निकट हमारे, उन्हें झेलना
राज्य के लिए शायद ही सम्भव हो पाये।

गिल्डेन्सटर्न : हम कर लेंगे सब तैयारी। इस ख़तरे के
प्रति सचेत रहना है पावन धर्म आपका,
क्योंकि देश के अगणित लोगों का संरक्षण
और भरण-पोषण निर्भर है महामहिम पर।

रोजेन्क्राण्ट्ज़ : हर अनिष्ट से अपने को रक्षित रखने को
बुद्धि और बाहों के बल से प्राणी-प्राणी
यत्न सदा करता रहता है। तब उस सत्ता
को सयत्न कितना रहना है जिसके मंगल
और कुशल पर बहुतों का जीवन निर्भर है।
राजा रूपी नाव डूबती नहीं अकेली,
निकट सभी कुछ खींच भँवर में ले जाती है।
राजा एक महान् चक्र है जो पर्वत के
उच्च शिखर पर धरा हुआ है, और अरों से
तरह-तरह की लाखों चीज़ें बँधी-जुड़ी हैं;
गिरता जब यह महाचक्र तब अगणित चीज़ें
छोटी-मोटी भी गिर टूट-बिखर जाती हैं;
आह अकेले कभी नहीं राजा मरता है,
देश एक, युग एक, साथ क्रन्दन करता है।

राजा : मेरा है आदेश कि तुम तैयारी करके
इस यात्रा पर जल्दी जाओ। हम उस ख़तरे
के पाँवों में बेड़ी देंगे जो आज़ादी
ज़्यादा पाकर आवारागर्दी करता है।

रोजेन्क्राण्ट्ज़, गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, हम जल्दी जायेंगे।

[रोजेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते हैं।

पोलोनियस : महामहिम, वह माँ के कमरे में जाता है;
बातचीत सुनने को मैं पर्दे के पीछे
छिपा रहूँगा। मेरा दावा है, वे उसके

दिल की तह तक पहुँच सकेंगी; फिर भी जैसा
कहा आपने कि यह उचित है जब माँ-बेटे
बात करें तब कोई और उन्हें सुनता हो,
क्योंकि बड़ा स्वाभाविक है यह, माँ को बेटे
का लिहाज़ हो। मेरे मालिक, मुझे विदा दें।
मैं हाज़िर हूँगा हज़ूर के बिस्तर में जाने
से पहले, और बताऊँगा जो मैंने
सुना-गुना है।

राजा : दिल से तुमको धन्यवाद है।

[**पोलोनियस बाहर जाता है।**

(**स्वगत**) यह अपराध घृणित इतना है नाक नरक भी
सिकोड़ता है! उफ़, भाई की हत्या करना!
परम पुरातन और प्रथम अभिशप्त पाप यह।
अपने पूरे इच्छा-बल से चाह रहा हूँ,
लेकिन मुझसे नहीं प्रार्थना की जाती है।
प्रबल कामना मेरी, पर अपराध प्रबलतर
उसे पराजित कर देता है। मैं दुबधे में
पड़े व्यक्ति-सा एक जगह पर खड़ा सोचता,
शुरू करूँ किसको पहले मैं; औ' असमंजस
में दो में से नहीं किसी को कर पाता हूँ।
अगर हाथ शापित ये मेरे, मेरे भाई
के लोहू में सने हुए हैं तो वरदानी
सघन घटा में, हाय, नहीं क्या इतना पानी
उनको धोकर हिम-सा उज्ज्वल, निर्मल कर दे?
करुणा फिर किसलिए बनी है यदि न द्रवित हो
देख पाप का भाल कलंकित, और प्रार्थना
में भी क्या है अगर न वह दो शक्ति-समन्वित,—
एक, बचाये जो हमको गिरने से पहले,
और दूसरी, क्षमा करे जो गिर जाने पर।
तब आशान्वित हो मैं बीती को बिसराऊँ।
पर मेरा उद्धार करेगी, हाय, प्रार्थना
किस प्रकार की? 'मेरी इस गर्हित हत्या का
पाप क्षमा कर'। लेकिन यह स्वीकार न होगी;
जिन प्रलोभनों में पड़ मैंने हत्या की थी
अब भी मैं उनसे चिपका हूँ—नहीं मुक्त मैं
अभी महत्वाकांक्षाओं से, राजमुकुट सिर
पर मेरे है, रानी मेरी बाहों में है।
क्या ऐसा भी हो सकता है, क्षमा प्राप्त कर
ले कोई औ' अपराधों का फल भी भोगे?
भ्रष्टाचार-भरी दुनिया में यह सम्भव है,
रँगे पाप के हाथ न्याय को परे हटा दें;

औ' अक्सर देखा जाता है, लूट-झूठ से
पाये धन से न्याय ख़रीद लिया जाता है;
पर ईश्वर के घर ऐसा अन्धेर नहीं है।
वहाँ नहीं कोई हथकण्डा चल सकता है,
और न झुठलाया जा सकता है करनी को;
वहाँ विवश होकर ख़ुद हमको शीश झुकाये,
आँखें नीची किये, गुनाहों को अपने सिर
लेना होता। तो अब क्या हो ? शेष रहा क्या ?
कोशिश करके पश्चात्ताप करूँ— सुनता हूँ,
कुछ भी ऐसा नहीं असम्भव हो जो उससे;
फिर भी क्या हो, पश्चात्ताप न जब हो पाये।
भाग्यहीन तू ! मृत्यु-कालिमा-सी अँधियारी
छातीवाले ! तेरी आत्मा ऐसे बन्धन
में जकड़ी है, जितना तू विमुक्त होने की
कोशिश करता उतना ही फँसता जाता है।
अरे देवदूतों, सहाय हो, जल्दी आओ !
ओ दम्भी, घुटनों के बल झुक ! और हृदय के
इन इस्पाती रग-रेशों को इतना कोमल
बना कि वे नवजात बाल की नस-नाड़ी में
परिवर्तित हों। सम्भव है सब मंगलमय हो !

(पीछे हटकर घुटनों के बल बैठता है।)

(हैमलेट का प्रवेश)

हैमलेट : इसका काम तमाम इसी दम कर सकता हूँ;
करता है प्रार्थना, भोंक दूँ छुरा पीठ में,
ऐसे मरकर स्वर्गलोक सीधे जायेगा,
और चुका लूँगा मैं बदला—मगर सोच लूँ—
एक धूर्त वध करता मेरे पूज्य पिता का;
उसी धूर्त को मैं, उनका इकलौता बेटा,
स्वर्ग भेजता।
यह तो उसके दुष्ट कृत्य का पुरस्कार-सा
देना होगा, और न उससे बदला लेना।
इसने मेरे पूज्य पिता की हत्या तब की
जब वे भौतिक भोग-विलासों में लिपटे थे,
पश्चात्ताप नहीं कर पाये थे भूलों पर,
ईश्वर ही जानता कि उनके पुण्य-पाप का
लेखा क्या है। सीमित ज्ञान हमारा कहता,
उनके ऊपर घड़ियाँ भारी बीत रही हैं।
इसे मारना तब क्या बदला लेना होगा
जब यह पश्चात्ताप कर रहा है पापों पर,
जब अनुकूल समय है उसके देह-त्याग का ?

नहीं।...
ओ मेरी तलवार, म्यान से निकल तभी जब
इस पिशाच के लिए अधिक प्रतिकूल समय हो—
जब यह मदिरा में डूबा बेहोश पड़ा हो,
या क्रोधातुर या कामातुर हो बिस्तर में,
या क्रीड़ारत, कलहग्रस्त हो, या फिर ऐसे
किसी कृत्य में, जो कि मोक्ष में बाधक होता;
तभी गिरा इसको, न स्वर्ग में जा पाये यह,
और कलंकित, कलुषित, गर्हित इसकी आत्मा
गिरे नरक में जो कि घिनौना इस-जैसा ही—
इन्तज़ार माँ करती होंगी—इन उपचारों
से तू अपनी रोग-अवधि ही बढ़ा रहा है।

[**बाहर जाता है।**

राजा : (**उठते हुए**) ऊपर उठते शब्द, अर्थ नीचे रह जाते,
अर्थ-रहित जो शब्द स्वर्ग को पहुँच न पाते।

चौथा दृश्य

रानी का कमरा

(**रानी और पोलोनियस का प्रवेश**)

पोलोनियस : वह सीधे आयेगा, उसको खरी सुनायें;
कहें कि उसकी शरारतें सहने की सीमा
पार कर गयीं, अपनी उदारता से उसकी
आड़ आप करती आयी हैं, वर्ना अब तक
वह राजा के उग्र कोप का भाजन बनता।
यहीं खड़ा चुपचाप रहूँगा। आप कृपा कर
साफ़-साफ़ उसको समझा दें।

हैमलेट : (**भीतर से**) माँ, माँ, माँ, माँ!

रानी : मैं तुमको विश्वास दिलाती। करो न मेरी
चिन्ता। जल्दी से छिप जाओ। वह आता है।

(**पोलोनियस पर्दे के पीछे छिप जाता है।**)

(**हैमलेट का प्रवेश**)

हैमलेट : क्यों बुलवाया है, माँ?

रानी : हैमलेट, तुमने अपने
नये पिता को बहुत अधिक नाराज़ किया है।

हैमलेट : मेरे पूज्य पिता को कुछ कम नहीं, आपने।
रानी : देखो, अच्छा नहीं जीभ इस भाँति चलाना।
हैमलेट : और जीभ के नीचे, क्या है, जीभ लगाना?
रानी : कैसे हो हैमलेट अब ?
हैमलेट : जैसे मैं पहले था।
रानी : क्या तुम मुझको भूल गये हो ?
हैमलेट : नहीं, नहीं तो,
आप राजरानी हैं, अपने पति के भाई
की पत्नी हैं—काश कि ऐसी बात न होती—
और आप मेरी माता हैं।
रानी : तब मैं तुमको
ले जाऊँगी उनके आगे जो इन बातों
का तुमको समुचित उत्तर दें।
हैमलेट : सुनिए, सुनिए;
और यहीं पर बैठी रहिए; तिल भर भी मैं
नहीं आपको हिलने दूँगा; नहीं कहीं भी
जाने दूँगा जब तक नहीं खड़ा कर देता
ऐसा दर्पण एक सामने जिसके अन्दर
दिखे आपको अपने अन्तरतम की झाँकी।
रानी : क्या करने पर आमादा है ? मेरी हत्या ?
अरे, बचाओ !
पोलोनियस : कोई है क्या ! जल्दी आओ !
हैमलेट : (तलवार खींचकर) चूहेदानी के चूहे, तू अब न बचेगा।

(परदे में तलवार भोंक देता है।)

पोलोनियस : **(पीछे से)** हाय, मरा मैं !

(गिरता है और मर जाता है।)

रानी : उफ़, तूने यह क्या कर डाला ?
हैमलेट : मुझको कुछ मालूम नहीं था। क्या राजा थे ?
रानी : तूने पागलपन में भीषण काण्ड किया यह !
हैमलेट : भीषण, पर क्या इतना भीषण जितना यह, माँ,
पति की हत्या कर देवर से शादी करना !
रानी : पति की हत्या ?
हैमलेट : हाँ, माँ, मेरे शब्द यही थे।

(परदा उठता है और मृत पोलोनियस को देखता है।)

जगह-जगह पर अपनी टाँग अड़ानेवाले,
अन्धे, मूढ़, अभागे बूढ़े, तुझे अलविदा !
जिसको मैंने राजा समझा था तू निकला।
यही बदा था ! तूने अब यह समझा होगा,
बहुत व्यस्त रहना है काम बड़े ख़तरे का—

हाथ मलो मत, बैठो होकर शान्त, ज़रा मैं
यह तो देखूँ हृदय तुम्हारी छाती में है;
क्या वह ऐसी धातु की बनी जिसके अन्दर
पैठ सके कुछ; या कि तुम्हारे दुष्कर्मों ने
उसे कड़ा इतना कर डाला जैसे पत्थर,
और उसे भावना नहीं कोई छू पाती।

रानी : क्या मैंने ऐसा कर डाला जो तू इतनी
अभद्रता से मेरे ऊपर चिल्लाता है ?

हैमलेट : ऐसा काम कि जिसने लज्जा और शील के
मुँह पर कालिख पोत दिया है; जो सद्गुण को
ढोंग बताता; जिसने नोचा है गुलाब को
जो खिलता है माथे पर अकलंक प्रेम के,
और वहाँ पर एक फफोला दाग़ दिया है;
जो विवाह-वचनों को झूठा साबित करता,
जैसे वे बस किसी जुआरी की क़समें हों।
आह, काम ऐसा जो परिणय के बन्धन को
झटके देकर टुकड़े-टुकड़े कर देता है,
जो करता है सिद्ध की पावन मन्त्र, धर्म के,
मन्त्र नहीं हैं, केवल भाँड़ों की भड़न्त हैं;
स्वर्ग शर्म खाता है तेरे इस कुकर्म पर
औ' सुस्थिर-संगठित धरित्री शोक-निमज्जित,
चिन्ता-पीड़ित, काँप रही है, जैसे पास
क़यामत का दिन आ पहुँचा है।

रानी : हाय, हुआ क्या,
जिस पर इतना हो-हंगामा किया जा रहा ?

हैमलेट : माँ, देखो, यह चित्र और उसको भी देखो;
मेरे चाचा और पिता की तस्वीरें हैं।
देखो, भाल पिता का कितना शोभामय है !
क्या घुँघराले बाल, दिव्य कितना मुखड़ा है !
आँखों मे कैसी आभा है—जिससे भय हो,
औ' जिसके प्रति आदर भी हो ! और खड़े वे
ऐसे लगते जैसे कोई देव-दूत हों,
अभी-अभी जो उतर स्वर्ग से गगन-विचुम्बित
पर्वत की चोटी के ऊपर खड़ा हुआ है !
उनका रूपाकार बनाने को जैसे हर
एक देवता ने अपना उत्तम-से-उत्तम
अंश दिया था जिससे जग को उनमें मानव
का अनिद्य प्रतिमान प्राप्त हो। ऐसा तुमने
पति पाया था। और सुनो, अब जो कहता हूँ—
माँ, यह नया तुम्हारा पति है जिसने अपने
सगे-सलोने भाई को ही खा डाला है,
सड़ी बाल जैसे खा डाले हरी बाल को।

कहाँ तुम्हारी आँखें थीं जो शुभ्र शिखर को
छोड़ निम्न, गन्दे दलदल में उतर पड़ी हो !
हाय, पड़ गया था पर्दा कैसे आँखों पर !
प्रेम इसे तुम कह न सकोगी क्योंकि उम्र अब
नहीं तुम्हारी जबकि रक्त में बिजली दौड़े;
इस वय में आवेग विवेक-नियन्त्रित रहता;
यही विवेक तुम्हारा, उतरीं यहाँ, वहाँ से !
समझ तुम्हें है निश्चय, वर्ना नहीं वासना
तुममें होती; किन्तु समझ वह लकवा-मारी।
पागलपन भी ऐसी भूल नहीं कर सकता।
बुद्धि कभी भी इतनी भ्रष्ट नहीं हो सकती,
अन्तर करने का सामर्थ्य न कुछ बाक़ी हो
दो ऐसी चीज़ों में जो विपरीत परस्पर।
बाँध आँख पर पट्टी जिसने अपने वश में
किया तुम्हें, शैतान नहीं तो वह फिर क्या था?
आँख, कान, मुख, नाक, हाथ, दिल—कोई इन्द्रिय,
भले रुग्ण ही, जिसके होती, ठगा न ऐसे
जा सकता था। शर्म नहीं आती है तुझको ?
कहाँ गयी है लज्जा तेरी ? —ओ उत्पाती
नरक, अगर तू ठण्डी हड्डी में, अधेड़ की,
काम-अग्नि भड़का सकता है, तो यौवन के
तप्त रक्त में सारे सद्गुण मोम की तरह,
अपनी ही ज्वाला में जैसे, गल जायेंगे।
जबकि बर्फ़ में आग उठी है, बुद्धि वासना
की दासी है, तब उद्दाम जवानी अवगुण
कुछ करती तो, उठा न उँगली उसके ऊपर।

रानी : ओ हैमलेट, आगे मत कुछ कह। तूने मेरी
आँखें मेरे अन्तरतम की ओर फेर दीं,
और वहाँ मैं ऐसे काले-काले धब्बे
देख रही हूँ जो न किसी से धुल पायेंगे।

हैमलेट : केवल इतना नहीं, जी रही है तू गीजे
बिस्तर में दुर्गन्ध, पसीने की, भरने को,
काम-दग्ध विषयाभिसार करने को, जैसे
सुअर-सुअरियाँ अपने बाड़े में करती हैं।

रानी : और नहीं अब ! शब्द-शब्द हैं छुरे तुम्हारे
जो मेरे कानों को चीरे डाल रहे हैं !
और न अब कुछ, प्यारे हैमलेट !

हैमलेट : यह हत्यारा,
बदनीयत, बदमाश, तुम्हारे पहले पति का,
सच मानो, पासंग नहीं है। शाह नहीं है,
सिर्फ़ शेख़चिल्ली है, शासन और देश का
चोर-गिरहकट जिसने ऊँचे एक ताक़ से

बेशक़ीमती ताज उठाकर अपने सिर पर
बिठा लिया है।

रानी : और नहीं अब !

हैमलेट : यह राजा है
सिर्फ़ चीथड़ों औ' पैबन्द लगे कपड़ों का !

(**भूत का प्रवेश**)

रक्षा करनेवाले, ओ, नैसर्गिक दूतो,
अपने डैनों की छाया में मुझको ले लो,
मुझे बचाओ—ओ करुणामय छाया, तेरी
क्या इच्छा है ?

रानी : हाय, पागलों की-सी बातें यह करता है !

हैमलेट : क्या अपने आलसी पुत्र को नहीं डाँटने
तुम आये हो, जो बर्बाद समय करता है,
जो बटोर पाता है साहस नहीं, तुम्हारी
आज्ञा पाले—भीषण और महत्त्वपूर्ण जो ?
बोलो, बोलो !

भूत : भूल न जाओ। प्रकट इस तरह होना मेरा,
धार तेज़ करने को है जो कुन्द पड़ी है;
पर देखो अपनी माँ को, आश्चर्य-स्तब्ध हैं;
उनके औ' उनकी संघर्ष-लीन आत्मा के
बीच पड़ो तुम। जो दुर्बल हैं प्रबल कल्पना
झेल न पाते। हैमलेट, माँ से बात करो तुम।

हैमलेट : देवि, आपका जी कैसा है ?

रानी : हाय, तुम्हारा
जी कैसा है जो तुम अपनी आँख शून्य में
गड़ा रहे हो, सूनेपन से बातें करते ?
औ' घबराया दिल आँखों से झाँक रहा है।
और तुम्हारे सिर पर बैठे बाल अचानक
खड़े हो गये हैं जैसे सोते सिपाहियों
के ख़तरे का घण्टा सुनकर, मानों साही
के काँटे हों। मेरे प्यारे बेटे, अपने
ग़ुस्से की इस तपन और ज्वाला के ऊपर
धीरज का शीतल जल छिड़को। देख रहे क्या ?

हैमलेट : उनको, उनको ! देखो, आँखें कितनी पीलीं !
उनके इस दयनीय रूप को देख, जानकर
कारण उसका, जड़ पत्थर भी पिघल उठेंगे।—
ऐसे मेरी ओर न देखो ! कहीं करुण यह
दृष्टि तुम्हारी मेरी इस कठोर छाती को
मृदुल न कर दे। तब जो कुछ मुझको करना है
उसकी सूरत बदल जायगी। शायद होगा
रक्त की जगह केवल आँसू।

रानी : तुम किससे बातें करते हो ?
हैमलेट : क्या तुमको उस जगह नहीं कुछ दीख रहा है ?
रानी : कुछ भी नहीं सिवा उसके जो चीज़ वहाँ पर।
हैमलेट : औ' तुमने कुछ सुना भी नहीं ?
रानी : सुनी वही जो बात हुई है तुममें-मुझमें।
हैमलेट : ज़रा वहाँ देखो, धीरे से खिसक रहे हैं,
मेरे पूज्य पिता, जैसे वे जीवन में थे;
देखो कहाँ चले जाते, अब भी फाटक पर !

[**भूत चला जाता है।**

रानी : इसको केवल भ्रम समझो अपनी आँखों का।
पागल मन छाया के ऐसे रूप बनाने
में पटु होता।
हैमलेट : पागलपन इसको कहती हो !
मेरी नाड़ी तेज़ तुम्हारी नाड़ी से क्या ?
जैसे स्वास्थ्य तुम्हारा, मेरा भी बतलाती।
पागलपन यह नहीं, कहा है जो कुछ मैंने,
चलो परीक्षा मेरी ले लो; जो कुछ मेरे
मुख से निकला, शब्द-शब्द फिर दुहराता हूँ;
पागल ऐसा करे—जीभ लड़खड़ा जायगी।
माँ, यदि लेश विवेक तुम्हें हो, तो अपने मन
को प्रसन्न करने को ऐसी बात न सोचो,
नहीं तुम्हारा पाप, सिर्फ़ पागलपन मेरा,
मुझसे यह सब कहलाता है। इससे घावों
को ऊपर-ऊपर कपड़ों से तो ढक लोगी,
पर नीचे-नीचे नासूर चला जायेगा
बढ़ता-सड़ता। अपने पापों को स्वीकारो।
पश्चाताप करो बीती पर औ' आगे के
लिए सँभल जाओ, मत झाड़ों-झंखाड़ों पर
खाद बिछाओ—और बढ़ें-छछड़ेंगे इससे।
मुझमें कुछ गुण हो तो उसके लिए क्षमा दो।
लूट-लूटकर तिजोरियाँ भरने के युग में
क्षमा माँगनी पड़ती है गुण को दुर्गुण से,
और सुगुण उसको करने को उसके आगे
झुकना पड़ता, और खुशामद करनी पड़ती।
रानी : हैमलेट, तूने मेरे दिल को दो टुकड़ों में
तोड़ दिया है।
हैमलेट : तो उनमें जो बुरा, फेंक दो;
अच्छेवाले से अच्छी बन जीना सीखो।
विदा ले रहा हूँ; पर चाचा के बिस्तर में
सोने मत जाना। सद्‌गुण तुममें अगर नहीं तो
दिखलाने को ही उनको ऊपर से ओढ़ो।

आदत ऐसी बला, समझ को खा जाती है,
औ' कपड़े भी उसके होते हैं शैतानी;
एक बात में, किन्तु, फ़रिश्ते-सी भी है वह,
काम भला-अच्छा यदि कोई करता जाये,
तो वह शैतानी लिबास की जगह दूसरे
चुस्त, दुरुस्त, फबीले कपड़े पहनाती है।
आज रात अपने को रोको, और रोकना
कल अपने को तुम्हें न इतना मुश्किल होगा,
और तीसरे दिन ज़्यादा आसान लगेगा।
ऐसा है अभ्यास, प्रवृत्ति बदल देता है;
इसमें ऐसा अद्भुत बल है दुर्व्यसनों को
वश में करता है या दूर हटा देता है।
एक बार फिर विदा माँगता हूँ मैं तुमसे।
चाहोगी जब तुम कि स्वर्ग आशीष तुम्हें दे,
तब आशीष तुम्हारा लेने मैं आऊँगा।—
इस बूढ़े सरदार के लिए दुःख मुझे है;
पर ईश्वर की मर्ज़ी थी यह—सज़ा मिले इस
वध की मुझको, मेरे द्वारा इसका वध हो—
दण्ड सुनाऊँ, और करूँ दण्डित भी मैं ही।
इसकी लाश हटाता हूँ मैं औ' अपने पर
इसे मारने की जवाबदेही लेता हूँ।
एक बार फिर विदा माँगता हूँ मैं तुमसे।
दयाभाव से कभी क्रूरता करनी पड़ती।
एक शब्द तुमसे कहना मैं और चाहता।

रानी : कहो, मुझे जो कुछ करना है।

हैमलेट : ऐसा होना
नहीं चाहिए, पर न लगे मेरा सिखलाया।
भले प्रलोभन दे कुप्पे-सा फूला राजा
तुमको बिस्तर में ले जाये, गालों की
चंचल चुटकी ले, भले पुकारे तुमको अपनी
मैना कहकर, थूक-सने होठों से चूमे,
गन्दी-भ्रष्ट उँगलियों से गर्दन सहलाये,
लेकिन राज़ उगलवा तुमसे कभी न पाये—
सचमुच पागल नहीं, सिर्फ़ मैं बना हुआ हूँ।
गो यह बुरा न होगा तुम खुद उसे बता दो;
जो रानी है, बुद्धिमती, सुन्दर, संजीदा,
उसको ऐसे पिल्ले, बिल्ले, चमगादड़ से
मनोविनोदी ऐसा राज़ छिपाने में किस
कारण भय हो ? कभी उसे भय हो सकता है ?
गोपनीयता रखने में जो समझ-बूझ है
उसे भूलकर तुम चाहो तो छत पर चढ़कर
उलट पिटारा दो, चिड़ियों को उड़ जाने दो,

और जानने को कि पिटारे के अन्दर क्या,
कथा-प्रसिद्ध बँदरिया-सी अन्दर सिर डालो
औ' उसमें फँसकर अपनी गर्दन तुड़वा लो।

रानी : कर विश्वास कि अगर बने हैं शब्द साँस से,
साँस बनी है जीवन से तो, जब तक जीवन,
साँस न लूँगी इस बारे में जिसकी तूने
बात कही है।

हैमलेट : तुम्हें पता तो होगा इसका,
जाना है इंग्लैण्ड मुझे।

रानी : अफ़सोस मुझे है,
भूल गयी थी, इसका निश्चय किया जा चुका।

हैमलेट : क़ाग़ज़ात पर मुहर लग चुकी; इनको लेकर
मेरे दो सहपाठी मेरे साथ जायँगे।
इन पर मुझको उतना ही विश्वास कि जितना
विषदन्ती साँपों के ऊपर। मेरे आगे-
आगे होंगे नेता जैसे दाँव-पेंच में।
चलने भी दो; ख़ूबी इसमें, पहलवान को
उसके अपने ही दावों से चित कर देना।
ऐसा करने में कुछ मुश्किल तो होगी ही।
मैं इनकी सुरंग से अपनी डेढ़ हाथ
नीचे खोदूँगा; उन्हें उड़ा दूँगा चन्दा तक।
बड़ा मज़ा आता है जब एक ही क्षेत्र के
दो गुणवन्तों की भिड़न्त सीधी होती है!—
यह मनुष्य तो मुझे फँसा देनेवाला है;
मैं डालूँगा लाश साथवाले कमरे में।
नमस्कार! मन्त्री बड़बोला इस बेला में
बिल्कुल गुपचुप औ' बिल्कुल गम्भीर बना है,
जीते में, पर, यह भड़भड़िया बेवक़ूफ़ था—
आओ, श्रीमन्, तुम्हें ठिकाने कहीं लगाऊँ।—
नमस्कार, माँ!

[**दोनों अलग-अलग जाते हैं। हैमलेट पोलोनियस की लाश घसीटता हुआ ले जाता है।**

पहला दृश्य

गढ़ का कमरा

(राजा, रानी, रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्स्टर्न का प्रवेश।)

राजा : इन उच्छ्वासों के पीछे कुछ राज़ छिपा है,
इन लम्बी-ठण्डी आहों का अर्थ निकालो।
इन्हें समझना होगा हमको। प्रिये, कहाँ है
पुत्र तुम्हारा ?

रानी : तुम कुछ देर अकेले हमको छोड़ सकोगे ?

[रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्स्टर्न बाहर जाते हैं।

मेरे स्वामी, आज रात मैंने क्या देखा !

राजा : क्या देखा गरट्रूड ? हाल क्या हैमलेट का है ?

रानी : पागल है, जैसे विक्षुब्ध समुद्र, प्रभंजन
जबकि प्रबलतर अपने को साबित करने को
दोनों में होड़ा-होड़ी हो। पागलपन के
इस दौरे में पर्दे के पीछे कुछ चलता
उसको लगता, वह अपनी तलवार खींचता,
चूहा-चूहा चिल्लाता है, और दिमाग़ी
इस फ़ितूर में पोलोनियस का वध कर देता—
वयोवृद्ध मन्त्री का—जो थे छिपे आड़ में।

राजा : कितना भीषण काण्ड हुआ यह ! वहाँ अगर हम
होते, होता हाल हमारा भी ऐसा ही।
उसकी आज़ादी से सब लोगों को ख़तरा
है, तुमको, हमको भी औ' प्रत्येक व्यक्ति को।
हत्या किसने की, क्यों, क्या हम बतलायेंगे ?
इसमें हाथ हमारा भी समझा जायेगा।
दूरदर्शिता हममें होती तो इस पागल
नौजवान को हमें नियन्त्रण, क़ाबू में रख
दूर-अलग सबसे रखना था। पर उसके प्रति
इतना प्रेम हमारा था हम समझ न पाये
जो करना था। रोगी-जैसे हमने अपना
रोग छिपाया, उसको बढ़ने दिया यहाँ तक
जान पड़ गयी है ख़तरे में। कहाँ गया वह ?

रानी : जिसको मारा उसके शव को दूर हटाने;
वह अपनी करनी पर आँसू बहा रहा है;
मृत शरीर के सिरहाने पागल-सा बैठा
वह मिट्टी के पास पड़े सोने के टुकड़े-
सा लगता है—शुद्ध, चमकता।

राजा : प्रिये, चलें हम !
इसके पूर्व कि सूर्य पहुँचता अस्ताचल पर
उसे यहाँ से विदा करेंगे हम जहाज से;
और घृणित इस घटना का सामना करेंगे,
पूरे अपने रोब-दाब से, और हादसे
का कुछ कारण ढूंढेंगे हम चतुराई से।—
गिल्डेन्सटर्न, ज़रा सुनना तो।

(रोज़ेन्क्राण्ट्ज और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

दोनों मित्रो, कुछ लोगों को और साथ लो;
हैमलेट ने पागलपन में वध, पोलोनियस का,
कर डाला है, और खींच ले गया लाश को
अपनी माता के कमरे से। उसको खोजो।
उससे ऐसे बोलो वह न भड़कने पाये;
मृत शरीर को गिरजे के अन्दर ले आओ।
देखो, काम बहुत जल्दी हो !

[रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते हैं।

चलो, चलें, गरट्रूड, और हम जल्द बुलायें,
सबसे ज्यादा बुद्धिमान अपने मित्रों को,
उन्हें बतायें जो दुर्घटना आज घटी है,
औ' जो इस बारे में करना चाह रहे हैं।
बदनामी का भाँडा जब फूटा करता है
तब उसमें विष भरा हुआ जो, कानों से मुँह,
मुँह से कानों होता हुआ पहुँच जाता है
इस दुनिया के कोने-कोने। हमने कर ली
अगर पेशबन्दी थोड़ी-सी, नाम हमारे
इस कलंक से बच जायेंगे। चलो, चलें हम,
मेरे मन में भरा हुआ है संशय, भय, भ्रम।

[दोनों बाहर जाते हैं।

दूसरा दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(हैमलेट का प्रवेश)

हैमलेट : चलो, ठिकाने लगा।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ / गिल्डेन्सटर्न : (भीतर) हैमलेट ! श्रीमन्त हैमलेट ! !

हैमलेट : ऐं, यह आवाज़ कैसी ! हैमलेट को कौन पुकार रहा है ?
अच्छा, ये लोग थे।

(रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, आपने पोलोनियस की मिट्टी का क्या किया ?
हैमलेट : मिट्टी मिल गयी मिट्टी में, जिससे उसका नाता है।
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : हमें बताइए कि वह कहाँ है कि हम उसे गिरजे ले जायें।
हैमलेट : इसका विश्वास मत रक्खो।
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : किसका विश्वास ?
हैमलेट : कि तुम्हारा भेद मैं छिपा रक्खूँगा और खुद अपना खोल दूँगा। अलावा इसके, जब एक जोंक सवाल करे तब एक राजा का बेटा उसे क्या जवाब दे ?
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, आप मुझे जोंक समझते हैं ?
हैमलेट : बिल्कुल, जोंक, जो एक राजा का रक्त चूसती है और इसके लिए बख़्शीश पाती है और फिर उसी पर रंग जमाती है। लेकिन तुम-ऐसे अफ़सर राजा के सबसे ज्यादा काम आते हैं। जैसे बन्दर, वह उनको अपने जबड़े के कोने में रखता है; और पहले तो उन्हें मुँह लगाता है, लेकिन बाद को निगल जाता है। जब राजा को उसकी ज़रूरत होगी, जो तुमने चूसा है, तो उसे तुम्हें सिर्फ़ निचोड़ना भर होगा; और तब जोंक फिर सूखी की सूखी रह जायेगी।
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, आपकी बात मेरी समझ में नहीं आयी।
हैमलेट : मुझे खुशी है इस बात की। जब चालाक की बात बेवक़ूफ के कानों में पड़ती है तो उन्हें सुन्न कर देती है।
रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, हमें बतायें कि मिट्टी कहाँ है, राजा जानना चाहते हैं; और हमारे साथ उनके पास चलें।
हैमलेट : राजा खुद मिट्टी हैं, लेकिन मिट्टी राजा नहीं है। राजा एक चीज़ हैं—
गिल्डेन्सटर्न : 'चीज़' श्रीमन् !
हैमलेट : ना-चीज़; ले चलो मुझे उनके पास। छिपी लोमड़ी, कुत्ते ढूंढें।

तीसरा दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(कुछ दरबारियों के साथ राजा का प्रवेश)

राजा : उसका पता लगाने को औ' मिट्टी का भी
हमने लोगों को भेजा है। बात बड़े ही
ख़तरे की है कि यह आदमी आज़ादी से
घूम रहा है। इसे रोकना हमें चाहिए,

पर इस पर क़ानून कड़ा लगवाने में हम
झिझक रहे हैं; असमझ जनता का वह प्यारा,
जिसमें नहीं विवेक, महज़ आँखें होती हैं।
यहाँ दण्ड जो अपराधी को दिया गया है
देखा जाता, पर अपराध न अपराधी का।
जब कोई गड़बड़ी नहीं, सब ठीक-ठाक है,
अगर हटाया गया अचानक उसे यहाँ से
लोग कहेंगे, इसमें कोई ख़ास चाल है।
रोग बड़ा जितना, उतनी ही कड़ुई भेषज
से वह अच्छा हो पाता है, या फिर अच्छा
कभी न होता।

(रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ का प्रवेश)

अच्छे तो हो ? पता लगा कुछ ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : पोलोनियस की लाश कहाँ पर है यह, श्रीमन्,
उसने हमको नहीं बताया।

राजा : किन्तु कहाँ वह ?

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : बाहर, श्रीमन्, सन्तरियों के पहरे में है;
आप उसे जैसी आज्ञा दें।

राजा : उसे हमारे आगे लाओ।

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : गिल्डेन्सटर्न, लिवा लाओ श्रीमन्त हैमलेट
को कमरे में।

(हैमलेट और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

राजा : सुनो, हैमलेट, पोलोनियस कहाँ है ?

हैमलेट : खाने की मेज़ पर।

राजा : खाने की मेज़ पर ! कहाँ ?

हैमलेट : जहाँ वह खा नहीं रहा है, खाया जा रहा है; राजनीतिज्ञ की काया से उत्पन्न होनेवाला एक ख़ास तरह के कीड़ों का दल उस पर महा-महोत्सव मना रहा है।
आपका कीड़ा ही आपकी खाने की मेज़ का ख़ानेजहाँ है। हम सब जानवरों को खिला-पिलाकर मोटा करते हैं कि उन्हें खाकर हम मोटे हो सकें; और हम खा-पीकर मोटे होते हैं कि हमें कीड़े खा सकें। आपका मोटा राजा और दुबला रंक बस दो प्रकार के व्यंजन हैं : दो तश्तरियाँ, पर एक ही मेज़ पर सजीं और यहीं पर इत्यलम्।

राजा : बड़ा अफ़सोस होता है।

हैमलेट : मुमकिन है कि जिस कीड़े को कटिया में लगाकर कोई आदमी मछली फँसाता है, उसने किसी राजा का मांस खाया हो, और जो मछली वह खा रहा हो उसने किसी ऐसे कीड़े को।

राजा : तुम्हारा मतलब क्या है ?

हैमलेट : सिर्फ़ यह बताना कि किस प्रकार एक बादशाह एक फ़क़ीर की

अँतड़ियों में पहुँच सकता है।

राजा : पर पोलोनियस कहाँ है?

हैमलेट : स्वर्ग में; किसी को भेज दीजिए, देख आये; और अगर वह आपके दूत को वहाँ न मिले तो उसे नरक में खोजने को आप ख़ुद जा सकते हैं। लेकिन अगर वह आपको महीने भर के अन्दर न मिला तो उसकी दुर्गन्ध आपको ऊपरवाली दालान में मिलेगी।

राजा : (**नौकरों से**) जाओ, वहाँ तो देखो।

हैमलेट : तुम्हारे पहुँचने तक वह बैठा रहेगा।

[**नौकर बाहर जाते हैं।**

राजा : हैमलेट, तुमने जो कर डाला उस पर हमको
बड़ा दुःख है, और तुम्हारी रक्षा की उतनी
ही चिन्ता। तुम्हें यहाँ से जितनी जल्दी
सम्भव हो चल देना होगा। तैयारी तुम
फ़ौरन कर लो। है जहाज़ तैयार; हवा का
रुख़ माफ़िक है; साथ के लिए साथी भी हैं।
इँग्लिस्तान चले जाने में नहीं रुकावट
कोई तुमको।

हैमलेट : इँग्लिस्तान?

राजा : वहीं जाना है।

हैमलेट : जैसी आज्ञा!

राजा : पर आज्ञा के पीछे कुछ उद्देश्य हमारा।

हैमलेट : मैं एक स्वर्गदूत देख रहा हूँ और वह आपका उद्देश्य देख रहा है—लेकिन अब तो इँग्लिस्तान के लिए प्रस्थान करूँ—विदा माँ!

राजा : तुम पिता के कितने आज्ञाकारी बेटे हो, हैमलेट!

हैमलेट : माता का। पिता और माता नर और नारी हैं न? और नारी और नर अर्द्धनारीश्वर हैं—एक शरीर—इसलिए माता का—तो इँग्लिस्तान के लिए प्रस्थान।

[**बाहर जाता है।**

राजा : तुम भी पीछे-पीछे जाओ, और प्रभोलन
देकर जल्दी ही जहाज़ पर उसे चढ़ाओ।
करो न देरी, आज रात ही उसे यहाँ से
मुझे हटाना। जाओ। जो पत्रादि ज़रूरी,
मुहरबन्द तैयार हो चुके। जल्दी जाओ।

[**रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते हैं।**

(**स्वगत**) इँग्लिस्तान, तुझे मेरे प्रति प्रेम अगर है—
होना ही चाहिए, प्रीति भय से होती है,
औ' मेरी ताक़त का लोहा मान चुका तू,

तेरे तन पर डेन-मारका तलवारों के
घाव आज भी ताज़े हैं, पुर नहीं सके हैं,
जिनसे आतंकित हमको तू शीश झुकाता—
हो न उपेक्षित यह शाही फ़रमान हमारा,
जिसमें साफ़ खुले शब्दों में कहा गया है—
किसी तरह वध करा दिया जाये हैमलेट का।
चूक न इसमें होने पाये। यह न हुआ तो
मेरी छाती कभी न ठण्डी हो पायेगी;
मेरे जी की जलन मिटानी होगी तुझको,
वह जायेगा, तभी चैन आयेगा मुझको।

[**बाहर जाता है।**

चौथा दृश्य

डेनमार्क का एक मैदान

(**कप्तान और मार्च करते हुए सैनिकों के साथ फ़ोर्टिनब्रास का प्रवेश**)

फ़ोर्टिनब्रास : (**कप्तान से**) डेनराज को जाकर मेरा अभिवादन दो;
कहो कि, पहले के क़रार पर, डेन-देश में
होकर के अपनी सेनाएँ ले जाने को
फ़ोर्टिनब्रास आपकी अनुमति माँग रहा है।
तुम्हें पता है हमें किस जगह पर मिलना है।
महामहिम राजा यदि मुझसे मिलना चाहें,
तो मैं स्वयं उपस्थित होकर उनके आगे,
उनके प्रति सम्मान यथोचित व्यक्त करूँगा।

कप्तान : जैसी आज्ञा !

फ़ोर्टिनब्रास : जाओ, पर तेज़ी न दिखाओ।

[**फ़ोर्टिनब्रास और सैनिक बाहर जाते हैं।**

(**हैमलेट, रोज़ेन्क्राण्ट्ज़, गिल्डेन्सटर्न और अन्य लोगों का प्रवेश**)

हैमलेट : कहिए, किसकी सेनाएँ हैं ?

कप्तान : श्रीमन्, ये नारवे-राज की।

हैमलेट : कहाँ जा रही हैं ? किस कारण ?

कप्तान : पोल-देश के एक भाग पर कब्ज़ा करने।

हैमलेट : और, कौन सेनानायक है ?

कप्तान : फ़ोर्टिनब्रास, भतीजे वृद्ध नारवे-पति के।

हैमलेट : क़ब्ज़ा पूरे पोल-देश पर करना या
केवल सीमा के प्रदेश पर ?

कप्तान : सत्य कहूँ तो, डींग मारने में क्या रक्खा,
हम छोटा-सा भूमि-भाग हथियाने जाते,
और लाभ जो होना उससे, नाम-मात्र है;
उस पर खेती पाँच टके में भी महँगी है;
पोल-देश, नारवे उसे कोई भी बेचे,
नहीं मिलेगा कोई ज़्यादा देनेवाला ।

हैमलेट : पोल-निवासी तब न लड़ेंगे उसकी ख़ातिर ।

कप्तान : मगर, उधर भी सेनाएँ तैयार खड़ी हैं ।

हैमलेट : ख़र्च हज़ारों होंगे, औ' सैकड़ों मरेंगे,
तृण भर धरती का सवाल हल हो न सकेगा ।
सुख-समृद्धि में ज़हर जमा कुछ ऐसा होता
जो कि फूटता अन्दर-अन्दर, बाहर से कुछ
पता नहीं लगता मनुष्य क्यों मर जाता है ।
धन्यवाद है ।

कप्तान : भला करे भगवान आपका !

[**बाहर जाता है ।**

रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ : श्रीमन्, चलिए ।

हैमलेट : अभी आ रहा, अभी; चलो तुम आगे-आगे ।

[**हैमलेट को छोड़कर सब चले जाते हैं ।**

(**स्वगत**) सब घटनाएँ धिक्कारा मुझको करती हैं
औ' बदला लेने की मेरी सुप्त भावना
को उकसातीं । पेट भाठ कर सो रहने में
अपनी उम्र गँवानेवाला भी मनुष्य है !
वह मनुष्य है तो पशु की परिभाषा क्या है ?
निश्चय ही, जिसने हमको वह मनःशक्ति दी,
हम अतीत को तोलें औ' भेदें भविष्य को,
उसने ऐसी दिव्य बुद्धि, ऐसी सक्षमता
इसीलिए तो हमें नहीं दी, कुछ भी उनसे
काम न लेकर, मिट्टी में हम उन्हें मिला दें ।
मुझे नहीं मालूम कि जब है न्याय पक्ष में
मेरे, मुझमें इच्छा-बल है, और शक्ति है,
साधन भी हैं, काम ख़त्म कर डाला जाये,
तब मैं इतना ही कहने को क्यों जीता हूँ,
'काम मुझे यह करना होगा' । ऐसा क्यों है ?
या पशु की विस्मरण शक्ति या कादर मन का
यह कोई संकोच, सोचने के कारण जो
हद से ज़्यादा बारीकी से किसी बात पर
जग उठता है । जो सोचा करता मैं, उसका

अगर करूँ विश्लेषण तो उसका चौथाई
भाग बुद्धिमत्ता निकलेगी, शेष बुज़दिली।
माटी-जैसी ठोस मिसालें मुझे जगातीं;
सजी हुई इस भारी सेना को ही देखो,
जिसका नायक सुन्दर-कोमल राजपुत्र है,
जिसका मन दैवी महदाकांक्षा-प्रफुल्ल है,
जो करता उपहास अदेखी घटनाओं का,
और मर्त्य औ' क्षणभंगुर अपनी काया से
मृत्यु, भाग्य, ख़तरों को अभय चुनौती देता,
केवल उसके लिए कि जो दमड़ी में महँगा।
सही बड़प्पन यही कि जब तक कोई कारण
बड़ा उपस्थित न हो, न अपना हाथ उठाये,
किन्तु जहाँ पर अपनी इज़्ज़त का सवाल हो,
वहाँ एक तृण के ऊपर भी जान लड़ा दे।
क्या मैं कभी बड़प्पन का दावा कर सकता ?
मेरे पूज्य पिता का वध कर दिया गया है,
माँ पर धब्बा लगा हुआ है, मन अशान्त है,
ख़ून खौलता, पर मेरे सब अंग शिथिल हैं।
मुझे चाहिए लज्जा से सिर नीचा कर लूँ
जबकि देखता हूँ कि हज़ारों जान हथेली पर
लेकर बढ़ते जाते हैं, जो कि किसी की
सनक, किसी की नामवरी के लिए क़ब्र में
ऐसे जाने को उद्यत, जैसे सोने को;
जो ऐसे भू-भाग के लिए लड़ने जाते
जिस पर इतने नहीं खड़े भी हो सकते हैं;
और समर में मरे हुओं की क़ब्र के लिए
भी जो काफ़ी सिद्ध न होगा। इसी समय से
भय से ! लेता विदा इरादा ख़ूनी, मेरा

[बाहर जाता है।

पाँचवाँ दृश्य

एलसिनोर : गढ़ का एक कमरा

(रानी, होरेशियो और एक भद्र पुरुष का प्रवेश)

रानी : उससे बात नहीं कर सकती।

भद्र पुरुष : वह घबरायी है, सचमुच, दुख से पागल है,
उसे आपके संवेदन की आवश्यकता।

रानी : वह मुझसे क्या चाह रही है ?

भद्र पुरुष : अपने वृद्ध पिता की बात बहुत करती है।
कहती, उसके कानों में गूँजता कि दुनिया
चालबाज़ है; और पीटती अपनी छाती।
चलती है तो पाँवों से तिनके ठुकराती;
सन्देहों में डूबी-डूबी बातें करती,
जिनका आधा अर्थ नहीं पल्ले पड़ता है।
उसके शब्दों के अन्दर कुछ सार नहीं है,
पर उनका अनगढ़ प्रयोग भी श्रोताओं को
जोड़-तोड़ कुछ करने को प्रेरित करता है;
वे अटकलबाज़ी करते हैं औ' शब्दों को
खींच-तान अपने विचार उनमें बिठलाते;
औ' फिर उसके पलक झँपाने, शीश हिलाने,
मुद्राओं से, लोग सोचते सचमुच उनमें
कुछ विचार हैं; गो वे साफ़ नहीं हैं तो भी,
बात खेद की, उनमें आँका बहुत गया है।

होरेशियो : अच्छा होगा उससे बातें कर ली जायें,
वर्ना वह विष से अभिसिंचित मस्तिष्कों में
ख़तरनाक अटकल के बीज रहेगी बोती।

रानी : तो उसको अन्दर ले आओ।

[**भद्र पुरुष बाहर जाता है।**

(**स्वगत**) मेरे अपने से ही ऊबे-ऊबे मन को,—
पाप भयातुर अपने से ही इतना रहता—
हल्की भी हर चीज़ किसी भारी विपत्ति की
पूर्व-पीठिका-सी लगती है, पापी को जो
होता है सन्देह स्वयं पर छिपा न रहता—
पाप, छिपाने में अपने को कितना कच्चा ! —
इस डर से कि न पकड़ा जाये, वह अपने को
पकड़ा देता।—

(**भद्र पुरुष का ओफ़ीलिया के साथ प्रवेश**)

ओफ़ीलिया : कहाँ रूप की रानी मानी डेन-देश की ?

रानी : कैसी हो, ओफ़ीलिया ?

ओफ़ीलिया : (**गाती है**) मैं कैसे जानूँ, अलग सभी से
तेरा प्रेमी रसिया छैल-छबीला ?
सिर तिरछी टोपी, छड़ी हाथ में,
और पाँव में जूता है चमकीला !

रानी : हाय, सुकुमारी ओफ़ीलिया, इस गीत का मतलब क्या है ?

ओफ़ीलिया : कुछ कहा ? नहीं, कुछ और सुनिए,
(**गाती है**) वह चला गया इस दुनिया से, इस दुनिया से,
वह पड़ा हुआ है मरकर।
उसके सिरहाने हरी घास है, हरी घास है,

पैताने है पत्थर !
ओ, हो !

रानी : पर, ओफ़ीलिया,--

ओफ़ीलिया : आप कृपाकर सुनती जायें।
(**गाती है**) उसके शव पर कफ़न कि जैसे
हो सफ़ेद हिम की चादर—

(**राजा का प्रवेश**)

रानी : बड़ा दुःख है, मेरे स्वामी, इसे देखिए।

ओफ़ीलिया : रंग-बिरंगे, ताज़े-ताज़े,
फूल सजे उस पर सुन्दर;
गया, कब्र में सोने जब वह
नहीं गिरे तब उसके ऊपर
प्रेमी के आँसू झर-झर !

राजा : कैसी हो, सुन्दरी ?

ओफ़ीलिया : अच्छी, भगवान आपको बहो···त दे। सुना है कि उल्लू की बीवी बावर्ची की बेटी थी। मालिक, हम यह तो जानते हैं कि हम क्या हैं, पर हम क्या होंगे, यह नहीं जानते।
भगवान आपका मेहमान हो।

राजा : इन बेमानी बातों के पीछे है पिता का सदमा।

ओफ़ीलिया : कृपया, इसके बारे में एक शब्द मत कहिए। मगर जब लोग पूछें कि इसके मानी क्या हैं तो उनसे कहिए—
(**गाती है**) कल दिन सन्त वलन्ताइन का,
उठकर मुँह-अँधियारे,
मैं सुकुमारी सजी-सँवारी
पहुँची द्वार तुम्हारे।
तुमने उठकर कपड़े पहने,
फिर खोला दरवाज़ा,
औ' नयनों से किया इशारा,
आ जा, अन्दर आ जा।
मैंने अपने भोलेपन में
मानी बात तुम्हारी।
गयी कुमारी अन्दर, बाहर
निकली, पर, न कुमारी।

राजा : सुन्दरी ओफ़ीलिया !

ओफ़ीलिया : सच, हाँ, क़सम तो न खाऊँगी, पर इसे पूरा करके ही छोड़ूंगी।
(**गाती है**) साखी प्रभु हैं और सन्त हैं,
मैं लज्जा की मारी;
यौवन का यह खेल नहीं है,
भारी ज़िम्मेदारी।
"तुमसे मैं कर लूँगा शादी"—
तुमने बात भुला दी;

वह उत्तर देता है,

"आज बनाता पत्नी तुमको,
कल न अगर तुम आतीं।"

राजा : कब से इसकी हालत ऐसी है ?

ओफ़ीलिया : मैं समझती हूँ, सब ठीक होगा। हमको धीरज रखना चाहिए; लेकिन जब मैं सोचती हूँ कि लोगों ने उसे ठण्डी ज़मीन में गाड़ दिया, तब मैं अपने आँसुओं को नहीं रोक पाती। मेरे भाई को इसका पता ज़रूर लगेगा; और अब आपकी नेक सलाह के लिए धन्यवाद—लाओ मेरी गाड़ी ! —नमस्ते देवियो, नमस्ते ! भद्र महिलाओ, नमस्ते, नमस्ते !

[**बाहर जाती है।**

राजा : इसके पीछे जाओ; इस पर आँखें रक्खो।

[**होरेशियो बाहर जाता है।**

ओह, ज़हर यह दिल पर भारी सदमे का है;
मृत्यु पिता की इसको पागल बना गयी है।
औ', गरट्रूड, नहीं आता है दुःख अकेला,
उसकी पूरी सेना धावा बोला करती।
देखो, पहले पोलोनियस की मौत हो गयी;
फिर विदेश को चला गया है पुत्र तुम्हारा—
उसे ठीक ही हटवाया है उसके हिंसा-
पूर्ण कृत्य ने—और भलेमानस पोलोनियस
के मरने पर, लोग नासमझ, मोटी जिनकी
बुद्धि, विचारों के खोटे जो, तरह-तरह की
काना-फूसी करते फिरते; हमने अपनी
नादानी में लुका-छिपाकर उसे गड़ाया;
औ' बेचारी ओफ़ीलिया की बुद्धि छोड़कर
उसे न जाने कहाँ गयी है; बुद्धिहीन हम
पशु हैं या फिर बस चलती-फिरती तस्वीरें।
और अन्त में, सारी विपदाओं से बढ़कर
उसका भाई, जो रहता था फ्रांस देश में,
छिपे-छिपे घर को लौटा है, सुना गया है,
वह घबराया, खोया-खोया-सा रहता है;
और चुग़लखोरों की कोई कमी नहीं है,
जो उसके सम्मान्य पिता की मृत्यु से जुड़ी
झूठी-सच्ची ज़हरीली बातों से उसके
कानों को भरते रहते हैं। जब सबूत कुछ
उन्हें न मिलता, तब सब दोष हमारे ऊपर
मढ़कर उसको कान-कान में पहुँचाते वे
नहीं झिझकते। मेरी प्यारी, ऐसी ख़बरें,
तोपों के गोले फटने से छर्रे-जैसे,
जगह-जगह पर मेरी हत्याएँ करती हैं।

(**भीतर शोर होता है।**)

रानी : हैं ! ये कैसी आवाज़ें हैं ?
स्विस सिपाहियों
को बुलवाओ; वे दरवाज़ों पर डट जायें !

(दूसरे भद्र पुरुष का प्रवेश)

भद्र पुरुष : श्रीमन्, अपनी रक्षा करिए ! —
उद्धत लायरटीज़ उपद्रवकारी जनता
का नेता बन डेन-राज के हुक्कामों पर
टूट पड़ा है, जैसे सागर अपनी सीमा
लाँघ, तेज़ तूफ़ानी गति से तट पर टूटे ।
हुल्लड़बाज़ उसे अपना राजा कहते हैं,
औ' प्रस्तावक और समर्थक हों जैसे वे
ही हर पद के, गला फाड़कर चिल्लाते हैं—
'लायरटीज़ हमारा राजा, हमने माना !'
मानो दुनिया अभी शुरू होनेवाली है,
भुला दी गयीं परम्पराएँ, उठा दी गयीं
रीति-नीतियाँ; हाथ उठा, टोपी उछालकर
अम्बर-भेदी स्वर में वे उद्घोषित करते,
'लायरटीज़ हमारा राजा—डैन देश का !'

रानी : कितने ज़ोरों से वे नारे ग़लत लगाते ! —
ग़लती पर हो, ओ तुम झूठे डेनी कुत्तो !

(भीतर शोर होता है ।)

राजा : लो, अब दरवाज़े भी टूटे !

(तलवार हाथ में लिये हुए लायरटीज़ का प्रवेश । उसके पीछे डेनमार्क की जनता है ।)

लायरटीज़ : राजा है किस जगह ? —आप सब बाहर रहिए।

डेनमार्क-निवासी : नहीं, हमें अन्दर आने दें।

लायरटीज़ : कृपया, थोड़ा
समय मुझे दें।

डेनमार्क-निवासी : हम देते हैं ! हम देते हैं !

[वे दरवाज़े के बाहर चले जाते हैं ।

लायरटीज़ : धन्यवाद है, दरवाज़े को छेके रहिए ।—
ओ, तू दुष्ट कमीने राजे, वापस मेरा
पिता मुझे दे ।

रानी : अच्छे लायरटीज़, शान्त हो ।

लायरटीज़ : इतने पर भी शान्त रहूँ तो रक्त नसों का
आज पुकार-पुकार कहेगा मुझे हरामी,
औ' नामर्द पिता को, माता को हरजाई,
जिनके निष्कलंक माथे पर वह कलंक का
टीका देगा ।

राजा : लायरटीज़, वजह क्या है जो
तू गुस्से में आग-भभूका होता जाता।—
तुम, गरट्रूड, उसे मत रोको; चिन्ता मेरे
लिए करो मत। राजा की रक्षा करने को,
दिव्य शक्ति ऐसी उसको घेरे रहती है,
द्रोह दूर से चाहे जितना ताके-झाँके,
निकट पहुँचकर कभी नहीं उसको छू सकता।—
लायरटीज़, बता क्यों इतना गर्माया है?—
आने दो, गरट्रूड, उसे तुम।—बतला तो कुछ।

लायरटीज़ : पिता कहाँ?

राजा : मर गये।

रानी : नहीं राजा ने मारा।

राजा : उसे पूछने दो जो चाहे।

लायरटीज़ : मरे किस तरह? मैं सीधा जवाब चाहूँगा।
सिंहासन के प्रति निष्ठा जा विष्ठा खाये,
आग लगे सब राज-भक्ति की सौगन्धों में,
और भाड़ में जाये शील, विवेक, विनय सब।
नरक मिले मुझको, इसकी परवाह नहीं है।
अब तो मैं बस एक बात पर तुला हुआ हूँ—
लोक और परलोक नष्ट हों, चाहे जो हो,
जिसने मेरे पूज्य पिता की हत्या की है
उससे पूरा बदला लेकर ही मानूँगा।

राजा : बात किसी की तो मानोगे?

लायरटीज़ : दुनिया भर में नहीं किसी की, केवल अपनी।
औ' मैं अपने यत्किंचित् साधन का ऐसे
कौशल से उपयोग करूँगा, व्यय थोड़ा हो,
लाभ अधिक हो।

राजा : लायरटीज़, सुनोगे मेरी?
अपने पूज्य पिता की हत्या से सम्बन्धित
सारी बातें ठीक जानना तुम चाहोगे,
पर बदला लेने में इतने अन्धे होगे,
दोस्त और दुश्मन में अन्तर नहीं करोगे?
जुआबाज़ तब तो तुम ऐसे साबित होगे,
हारे, जीते—सबको गिनता एक तरह जो।

लायरटीज़ : सिर्फ दुश्मनों से लोहा लेना चाहूँगा।

राजा : पहले उनको पहचानो तो?

लायरटीज़ : जो हैं उनके
दोस्त, उन्हें मिलने को ऐसे अपनी बाहें
फैलाऊँगा। और पसीना जहाँ गिरेगा
उन मित्रों का, खून बहा दूँगा मैं अपना।

राजा : ठीक, बात अब तुमने की है जैसे अच्छे
लड़के, सच्चे और भलेमानस करते हैं।

यह तो दिन की तरह साफ़ है, यदि विवेक से
देख सको तुम, इस हत्या में मेरा कोई
हाथ नहीं है; सत्य, तुम्हारे वृद्ध पिता की
दुखद मृत्यु से मुझे बड़ा सदमा पहुँचा है।

डेनमार्क-निवासी : आने दो, आने दो उसको।

लायरटीज़ : यह गुल कैसा ?

(ओफ़ीलिया का पुनः प्रवेश : पीछे-पीछे होरेशियो है।)

इसकी ऐसी दशा देखने से यह ज़्यादा
अच्छा होता, इतनी गर्मी पड़ती, इतनी,
यह दिमाग़ मेरा उड़ जाता। आँसू खारे
इतने होते, इतने, उनसे आँखों की सब
चमक, चेतना और भावना ही मिट जाती !
साखी हों भगवान कि तेरे पागलपन का
भीषण बदला लिया जायगा—ओ बसन्त की
कली कुमारी, प्यारी, ओ बहना ओफ़ीलिया ! —
ओ परमेश्वर ! क्या यह सम्भव, एक नवलवय
सुकुमारी की बुद्धि इस तरह नत-जर्जर हो,
जैसे होती देह वृद्ध की।—प्रेम प्रकृति का
वरद हस्त है। जो इसके नीचे रहता है
उसके ऊपर वह बहुमूल्य विभव-वैभव की
वर्षा करता।

ओफ़ीलिया : **(गाती है)** लोग ले गये, बिना ढके मुख, उसका, टिकठी के ऊपर,
नना-न-नाना, नना-न-नाना, नना-न-नाना,
ना-ना-ना,
और क़ब्र में, उसकी, बरसे बहुतों के आँसू झर-झर !
ओ बन-पाखी, विदा, विदा !

लायरटीज़ : तू सचेत होती औ' मुझको प्रेरित करती
बदला लेने को, तो भी मैं नहीं प्रभावित
इतना होता, जितना तेरी दशा देखकर
आज हुआ हूँ।

ओफ़ीलिया : तुम सबको घूम-घूमकर गाना चाहिए—'चाईं-माईं अन्ता, घुमरी बसन्ता'। देखो, कैसा चक्कर बन जाता है। वह झूठा ख़ानसामा था जो अपने मालिक की बेटी भगा ले गया।

लायरटीज़ : इन निःसार बातों में कम सार नहीं है।

ओफ़ीलिया : **(लायरटीज़ से)** यह रोज़मरी का फूल है, याद दिलाने के लिए; देखो, प्यार, मुझे याद करना; और यह पैंज़ी का फूल है, ख़्याल रखने के लिए।

लायरटीज़ : यह पागलपन का पाठ है जिसके साथ ख़्याल रखना और याद करना जुड़े हैं।

ओफ़ीलिया : **(राजा से)** तुम्हारे लिए यह फ़ेनेल का फूल है, और कोलम्बाइन भी; **(रानी से)** तुम्हारे लिए रयू का फूल है; और यह

र्यू मेरे लिए है; हम इसे रविवार के पवित्र दिन की बूटी भी कह सकते हैं; पर हम-तुम इसे अलग-अलग भावों से लगायेंगी। (**होरेशियो से**) यह लो डेज़ी का फूल, मैं तुम्हें कुछ वायलेट के फूल भी देती, लेकिन मेरे पिता के मरने पर वे सब सूख गये; सुनती हूँ उनका अन्त अच्छा हुआ; —(**गाती है**) 'मेरे प्रियतम, मेरा तन-मन-धन सब तेरा !'

लायरटीज़ : नरक-तुल्य आघात, वेदना, चिता को भी
कैसा कर अनुकूल बनाया सुन्दर इसने !

ओफ़ीलिया : (**गाती है**) क्या न कभी फिर आयेगा ?
क्या न कभी फिर आयेगा ?
वह दुनिया से चला गया,
मृत्यु-सेज पर तू भी जा;
वह न कभी फिर आयेगा।
दाढ़ी उसकी हिम-सी श्वेत,
सन-से उसके सिर के बाल;
चला गया वह, चला गया;
रोनेवाला छला गया ।
उस पर हों भगवान कृपाल,
उसे शरण दें दया-निकेत !

और सब पुण्यात्माओं के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। भगवान तुम्हारा भला करे !

[**बाहर जाती है।**

लायरटीज़ : हे परमेश्वर, क्या तू यह सब देख रहा है ?

राजा : लायरटीज़, अगर मुझको तुम अपने दुख का
भागीदार नहीं समझोगे, तो तुम मेरे
हक़ से वंचित मुझे करोगे। जाओ, चुन लो
अपने ऐसे मित्रों को जो सबसे ज्यादा
बुद्धिमान हों, और सुनें वे बात हमारी;
और तुम्हारे-मेरे बीच वही निर्णय दें।
यदि वे देखें इस हत्या में हाथ हमारा,
या उसकी साज़िश में हमको शामिल पायें,
तो सन्तुष्ट तुम्हें करने को मैं दे दूँगा
राजपाट, सिंहासन, जीवन—सब जो मेरा;
लेकिन ऐसी बात न हो तो, तुम धीरज से
सुनो मुझे जो कुछ कहना है। साथ-साथ हम
दोनों मिलकर कोई ऐसा काम करेंगे,
जो तुमको सन्तुष्ट कर सके।

लायरटीज़ : ऐसा ही हो।
कैसे उनकी मृत्यु हुई है ? क्यों चोरी से
उनको दफ़ना दिया गया है ? क्यों समाधि पर
खड्ग, विजय का चिह्न, निशानीवाला पत्थर

नहीं लगा है ? क्यों कोई संस्कार पदोचित
हुआ न उनका, और न कोई वाह्य प्रदर्शन ?—
ये सवाल हैं जिनको चिल्ला-चिल्लाकर के
धरा पूछती, गगन पूछता; समुचित उत्तर
इनका मैं पाना चाहूँगा।

राजा : पाओगे भी;
जो अपराधी होगा उसको सज़ा मिलेगी।
आओ मेरे साथ, कृपा कर।

[**सब जाते हैं।**

छठा दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(होरेशियो और एक नौकर का प्रवेश)

होरेशियो : कौन लोग हैं, मुझसे मिलना चाह रहे हैं?

नौकर : नाविक, श्रीमन्; जो कहते हैं, पत्र आपके
लिए कहीं से वे लाये हैं।

होरेशियो : अन्दर भेजो। [**नौकर बाहर जाता है।**
यदि श्रीमन्त हैमलेट का यह पत्र नहीं है,
नहीं जानता, किसने मुझको, और कहाँ से
याद किया है।

(नाविकों का प्रवेश)

पहला नाविक : श्रीमन्, भगवान आपका भला करे।

होरेशियो : वह तेरा भी भला करे।

पहला नाविक : निश्चय करेगा, श्रीमन्, अगर उसकी मर्जी हुई। आपके नाम
एक पत्र है, श्रीमन्,—उस राजदूत की ओर से जो
इँग्लिस्तान जा रहा था—अगर आप ही का नाम
होरेशियो है, जैसा कि मुझे बताया गया है।

होरेशियो : (**पढ़ता है**) 'होरेशियो, इस पत्र के मिलने पर तुम इन लोगों के महाराज तक पहुँचने का कोई उपाय कर देना। उनके लिए भी ये पत्र लाये हैं। हमें यात्रा आरम्भ किये अभी दो दिन भी न हुए थे कि एक बड़े लड़ाकू समुद्री डाकू ने हमारा पीछा किया। चूँकि हमारी नौका आगे नहीं निकल सकती थी, इसलिए हमें उससे टक्कर लेनी ही पड़ी, और मार-धाड़ में मैं उसकी नौका में जा गिरा। देखते-ही-देखते वह हमारी नौका से दूर चली गयी और इस प्रकार मुझ अकेले को उन डाकुओं ने अपना बन्दी बना लिया, पर उन्होंने मेरे साथ भलमंसी का व्यवहार

किया है और इसके बदले में वे समान व्यवहार की प्रत्याशा करते हैं। मैं भी उनके साथ कुछ भलाई करना चाहता हूँ। जो पत्र मैंने भेजे हैं वे महाराज को मिल जायें; और तू मेरे पास चला आ —इतनी तेज़ी से कि जैसे तू मौत से भाग रहा हो। मुझे तेरे कानों में जो कहना है उसे सुनकर तेरे होश-हवास गुम हो जायेंगे। फिर भी अर्थों की गम्भीरता देखते हुए मेरे शब्द बहुत हल्के-फुल्के हैं। ये भले लोग तुझे मेरे पास ले आयेंगे। रोज़ेन्क्राण्ट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न इँग्लिस्तान की ओर जा रहे हैं। उनके विषय में भी मुझे बहुत-कुछ कहना है। विदा।

तेरा अपना ही—हैमलेट'

चलो तुम्हारे इन पत्रों को पहुँचाने की
राह बता दूँ; करो काम पूरा यह जल्दी,
जिससे जल्दी तुम मुझको उस तक पहुँचा दो
जिसने तुमको पत्र दिये थे।

[**सब बाहर जाते हैं।**

सातवाँ दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(**राजा और लायरटीज का प्रवेश**)

राजा : अब तो दृढ़ हो गया तुम्हें, मैं निरपराध हूँ;
औ' अब मन का मीत मुझे तुम अपना समझो।
कान खोलकर तुमने सारी बातें सुन लीं;
जो कि तुम्हारे नेक पिता का हत्यारा है,
वही पड़ा था मेरे प्राणों के पीछे भी।

लायरटीज : ज़ाहिर ऐसा ही होता है। किन्तु आपने
इन अपराधों के विरुद्ध कुछ किया नहीं क्यों,
जो इतने भीषण थे, जो इतने जघन्य थे,
जबकि बुद्धिमानी, रक्षा भी स्वयं आपकी,
और बहुत-सी बातों के अतिरिक्त, आपको
इसी ओर प्रेरित करती थी?

राजा : कारण उसके
दो विशेष थे, तुमको लग सकते साधारण,
किन्तु निकट मेरे वे कारण थे महत्त्व के,—
रानी, उसकी माता जीती उसे देखकर;
औ' सम्बन्ध जहाँ तक मेरा, तुम इसको गुण
समझो, चाहे अवगुण समझो, तन से, मन से
मैं उनसे इस भाँति जुड़ा हूँ, अलग नहीं जा

सकता उनसे, जैसे तारे अपना-अपना
वृत्त छोड़कर। और दूसरा कारण, जिसने
खुली कार्रवाई करने से मुझको रोका,
यह था, जनता उसको प्यार बहुत करती है।
प्रेम दोष के अन्दर भी गुण देखा करता;
सुना, किसी चश्मे का पानी लकड़ी को
पत्थर कर देता; उसी तरह से जनता उसके
उत्पाती कामों को उसका शील बताती;
और धनुष से मेरे छोड़े तीर निशाने
पर न पहुँचकर, ज़ोर-शोर की इस आँधी में,
केवल तुक्के साबित होते।

लायरटीज़ : और नतीजा
मेरे सिर से नेक पिता का हाथ उठ गया
औ' मेरी सुकुमार बहन पागल बन बैठी;
जब करता हूँ याद पूर्व गुण उसके सारे
तो लगता है उनके बल पर पूरे युग को
वह पर्वत पर खड़ी चुनौती-सी देती है।
लेकिन इनका बदला मैं लेकर छोड़ूँगा।

राजा : नींद हराम करो मत अपनी इसके कारण;
और न सोचो हम बस माटी के धोंधे हैं
जिनकी जो, जब चाहे दाढ़ी-मूँछ हिलाये।
खेल बड़ा ही ख़तरनाक यह साबित होगा।
मैं जल्दी ही तुमसे बातें और करूँगा।
पिता तुम्हारे मेरे प्रिय थे, औ' अपने भी
प्राण मुझे प्रिय। इससे, मैं आशा करता हूँ,
स्वयं कल्पना तुम कर लोगे···

(एक सन्देशवाहक का प्रवेश)

सन्देशवाहक : ख़त लाया हूँ;
हैमलेट का है; महामहिम के लिए एक है
इसे लीजिए; औ' यह पत्र महारानी को।

राजा : हैमलेट के हैं पत्र? कौन इनको लाया है?

सन्देशवाहक : नाविक, श्रीमन्, ऐसा बतलाया जाता है;
मैंने उन्हें नहीं देखा है; दिये क्लाडियो
ने हैं मुझको; उसे मिले उनसे जो लाये।

राजा : लायरटीज़, सुनाऊँगा तुमको जो इसमें।—
अब तुम जाओ।

[सन्देशवाहक बाहर जाता है।

(पढ़ता है) 'महामहिम एवं महाप्रतापी, आपको यह जानकर खेद होगा कि आपके राज्य में मैं नंगा करके छोड़ दिया गया हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि कल आप मुझे अपने समक्ष उपस्थित

होने की आज्ञा दें। तभी मैं इसके लिए क्षमा माँगकर आपको बताऊँगा कि किन कारणों से मुझे एकाएक और इस अप्रत्याशित ढंग से लौट आना पड़ा।

हैमलेट'

इसके क्या माने हैं ? क्या बाक़ी भी लौटे ?
या यह कोई धोखेबाज़ी, और नहीं कुछ ?

लायरटीज़ : क्या पहचानी हुई लिखावट ?

राजा : हैमलेट का यह लिखा हुआ है, देखो 'नंगा' !
औ' पुनश्च में उसी हाथ का लिखा 'अकेला'।
अपनी राय मुझे दो इस पर।

लायरटीज़ : श्रीमन्, मैं कुछ समझ न पाता। पर वह आये;
इससे मेरे दिल की आग भड़क उट्ठी है
कि मैं कहूँगा उसके मुँह पर, खड्ग खींचकर,
'ऐसे, दुष्ट, किया था तू ने !'

राजा : यदि ऐसा हो,
लायरटीज़—मगर ऐसा कैसे हो सकता ?
और तरह क्या हो सकता है ?—मेरा कहना
मानोगे तुम ?

लायरटीज़ : श्रीमन्, मैं निश्चय मानूँगा;
मुझे शान्त रहने को, लेकिन, आप कहें मत।

राजा : वही कहूँगा जिससे तुमको शान्ति मिलेगी।
यात्रा से मुख मोड़ लौट यदि वह आया है,
औ' फिर से जाने का उसका नहीं इरादा,
तो मैं ऐसा दुःसाहस करने को उसको
भड़काऊँगा, किसी तरह वह बच न सकेगा;—
इसका पूरा नक़्शा है मेरे दिमाग में।
औ' तब उसकी मौत के लिए कौन करेगा
शुबहा हम पर ?—उसकी माँ भी हमें दोष से
मुक्त समझकर, दुर्घटना इसको मानेगी।

लायरटीज़ : श्रीमन्, वही करूँगा जो कुछ आप कहेंगे;
बस इतना चाहूँगा, कुछ तरकीब लगायें,
ऐसी, उसको मौत मिले मेरे हाथों से।

राजा : ठीक यही मेरे दिमाग़ में। तुम प्रवास में
गये तभी से तुम चर्चा के विषय रहे हो,
जिसे सुनी है हैमलेट ने भी,—एक तुम्हारे
गुण की चर्चा, जिसमें लोग कहा करते हैं,
कोई सानी नहीं तुम्हारा। अन्य तुम्हारे
सभी गुणों ने मिलकर के भी उसके अन्दर
इतनी ईर्ष्या नहीं जगायी जितनी इसने,
गो मेरी नज़रों में यह औरों से घटकर।

लायरटीज़ : श्रीमन्, मेरा क्या गुण ऐसा ?

राजा : उसे जवानी की टोपी का फुँदना समझो,
गो वह अपनी जगह ज़रूरी। गुरु-गभीरता
ज़ाहिर करनेवाले काले-सादे कपड़े
बड़ी उम्रवालों के ऊपर जैसे फबते,
उसी तरह चटकीली-भड़कीली पोशाकें
युवकों के तन के ऊपर शोभा देती हैं।
हुए मास दो, यहाँ नारमण्डी से आया
एक पुरुष था। फ्रांस-निवासी, अपने अनुभव
से मैं कहता, क्योंकि लड़ चुका हूँ मैं उनसे,
अच्छे घुड़सवार होते हैं। यह नर-नाहर
तो जैसे जादूगर ही था। वह काठी पर
बठा नहीं, उगा जैसे उससे लगता था;
उसने घोड़े से ऐसे करतब दिखलाये
जैसे वह उस चतुर जानवर के शरीर का
ही हिस्सा हो, जैसे उससे एक हुआ हो।
काम हैरतंगेज़ दिखाये उसने जैसे
नहीं कल्पना में भी, मेरी, आ सकते थे।

लायरटीज़ : घुड़सवार क्या वह नार्मन था?

राजा : होगा नार्मन।

लायरटीज़ : क्या उसका लामोर नाम था?

राजा : यही नाम था।

लायरटीज़ : ख़ूब जानता हूँ मैं उसको। फ्रांस देश का
हीरा है वह; बड़ा मान उसने पाया है।

राजा : उसने बतलाया, वह तुमसे बहुत प्रभावित;
और तुम्हारे खाँड़ा-ओड़न के अभ्यास
तथा कौशल का ऐसा वर्णन विशद किया था—
ख़ास तुम्हारे खड्ग चलाने की तेज़ी का—
कि वह जोश में आकर बोला, दृश्य देखने
लायक़ होगा, अगर मिल सके कोई जोड़ी-
दार तुम्हारा! उसने खाकर क़सम कहा यह,
फ्रांस देश में एक नहीं तलवार चलाने-
वाला ऐसा जो मुक़ाबले में आने पर
वह बचाव, वह फ़ुर्ती, वह आँखों की तेज़ी
दिखा सके जिनमें माहिर तुम। इसको सुनकर
हैमलेट के अन्दर ईर्ष्या का वह विष जागा
बोल उठा वह, मैं मुक़ाबले में आऊँगा,
लौटे तो वह। अब इससे ही—

लायरटीज़ : श्रीमन्, मतलब?

राजा : लायरटीज़, तुम्हें प्यारे थे पिता हमारे
या तुम केवल सदमे की तस्वीर बने हो
जिसके अन्दर जान नहीं है?

लायरटीज़ : प्रश्न किसलिए?

राजा : नहीं इसलिए कि मैं समझता, नहीं पिता थे
प्यारे तुमको, बल्कि इसलिए कि जानता मैं
प्यार काल पर आधारित है, और सामने
मेरे ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे साबित,
आग प्यार की, ज्वाला उसकी, काल-प्रभावित।
क्योंकि प्यार की ज्वाला में ही एक तरह की
बत्ती रहती, कम जो अविरत होती जाती।
जो अच्छा है सदा नहीं अच्छा रहता है,
जो अच्छा, अपनी अच्छाई की अधिकाई
से देता है जन्म बुराई को, जो उसको
खा जाती है। हमें चाहिए जो कुछ करना
हम कर लेंगे जब चाहेंगे; और चाह यह
बदला करती, घटती और विलम्ब कराती,
जीभ, हाथ, घटनाएँ जितनी बार करायें।
और 'चाहिए' कहकर कुछ तसकीन भले हो,
करने का हौसला बराबर घटता जाता।
मगर घाव पर नमक छिड़कता हैमलेट आता।
अब अपने को शब्दों से ज़्यादा कर्मों में
पुत्र पिता का साबित करने को, करना तुम
क्या चाहोगे ?

लायरटीज़ : गला काटना उसका गिरजाघर के अन्दर !

राजा : हत्यारे के लिए कहीं पर शरण नहीं है।
बदला लेना है तो फिर सीमाएँ कैसी ?
लेकिन, लायरटीज़, करोगे क्या तुम इतना
तुम अपने घर से बाहर मत आओ-जाओ।
हैमलेट आकर जानेगा ही तुम घर लौटे;
हम ऐसों को भेजेंगे जो जाकर उससे
ख़ूब तुम्हारी करें बड़ाई और इस तरह
फ्रांसीसी के द्वारा जो गुण-गान तुम्हारा
किया गया था, उस पर दुहरी शान चढ़ेगी।
हम लायेंगे मुक़ाबले में तुम दोनों को,
और लगेगी बाज़ी तुम पर, और चूंकि वह
दरिया-दिल है, खुला, अनछुआ छल-छुद्रों से,
शायद ही वह तलवारों की परख करेगा;
और इस तरह आसानी से याकि ज़रा-सी
हाथ-सफ़ाई से तुम ऐसी चुन सकते हो,
कुन्द नहीं जो, औ' प्रारम्भिक चाल-काट में
बदला अपने पूज्य पिता का ले सकते हो।

लायरटीज़ : यही करूँगा, और इसलिए मैं अपनी पर
लेप लगा लूँगा जो मैंने मोल लिया था
किसी अताई से जो ऐसा भीषण मारक
छुरी डुबा भर लो बस उसमें, फिर तो उसका

घाव लगा जब—घाव नहीं केवल खरोंच भर—
कोई मरहम, चाहे कितनी भी गुणकारी
और जादुई जड़ी-बूटियों से हो निर्मित,
बचा नहीं सकता घायल को, मरना निश्चित।
इसी ज़हर में अपनी नोक डुबा लूँगा मैं—
धीरे से भी अगर छुला दूँ, वह मर जाये।

राजा : और ग़ौर इस पर हमको कर लेना होगा।
समय और साधन दोनों की सुविधाओं को
हमें तोलना—मंशा के अनुकूल कहाँ तक।
चल न सके तरकीब अगर यह, और हमारे
फूहड़पन से लोग भाँप लें चाल हमारी,
तो अच्छा होगा हम इसमें हाथ न डालें।
इसीलिए दो तीर ज़रूरी हैं तरकस में,
अगर एक तुक्का साबित हो, लगे दूसरा।
ज़रा सोच लेने दो मुझको—हमें तुम्हारी
चालाकी पर गहरा दाँव लगाना होगा—
सूझ गयी है। तुम्हें पैंतरे की तेज़ी से—
प्यास और गर्मी का अनुभव तो होगा ही—
कुछ ज़्यादा तेज़ी दिखलाना, ऐसा ही हो—
तब वह निश्चय पानी पीने को माँगेगा,
मैं प्याला तैयार करा रक्खूँगा ऐसा,—
अगर तुम्हारी नोक, ज़हर की, लगी न उसको—
उसकी चुस्की एक हमारा काम करेगी।
लेकिन ठहरो, यह ग़ुल कैसा?—

(रानी का प्रवेश)

अच्छी तो हो, प्यारी रानी?

रानी : ऐसा लगता है कि दुखों का अन्त नहीं है;
एक नहीं जाता कि दूसरा आ पड़ता है।—
लायरटीज़, नदी में डूबी बहन तुम्हारी।

लायरटीज़ : हाय, कहाँ पर?

रानी : जहाँ विलो का पेड़ किनारे लगा खड़ा है,
श्वेत पत्तियाँ बिम्बित करता निर्मल जल में।
वहाँ गयी वह गजरा पहने हुए निराला—
क्रो फ़्लावर का, नेटेल और डेज़ी का और लाँग परपिल का
जिसे नाम भद्दा-सा चपल गड़रिये देते,
पर सुशील बालाएँ शव की उँगली कहतीं।
वहाँ झुकी डाली पर माला लटकाने को
जैसे ही वह चढ़ी कि टूटी वह दयमारी
और गिरी मय अजरे-गजरे वह पानी में।
उसके कपड़े फैले और हवा में फूले,
उतराती कुछ देर रही वह जल-कन्या-सी;

जैसे वह अपनी इस विपदा से अजान हो,
या जैसे जल में ही जन्मी, पली, बढ़ी हो,
जब तक वह उतराती थी, गाती जाती थी
गीत पुराने, पर वह ज़्यादा देर न ठहरी;
भीग-भीगकर भारी कपड़े खींच ले गये
उस बेचारी को गीतों की मधुर सेज से
नीचे कीचड़ में, औ' उसकी मृत्यु हो गयी !

लायरटीज़ : हाय, सत्य ही क्या वह डूबी ?

रानी : डूब गयी हो।

लायरटीज़ : तुझ पर पानी बहुत पड़ा होगा, ओफ़ीलिया,
इसीलिए मैं अपने आँसू रोक रहा हूँ;
पर कब रुकते, दिल कैसे पत्थर हो जाये !
लोग कहेंगे मुझमें नारी की भावुकता,
कहें, मगर जब आँसू मेरे झड़ जायेंगे,
तब वह नारी भी मुझमें से निकल जायगी,—
विदा मुझे दें, मेरे स्वामी ! मेरे दिल में
आग इस समय, जो कि भभकना चाह रही है,
पर ये दुर्बल आँसू मेरे उसे बुझाते।

[**बाहर जाता है।**

राजा : चलो, चलें, गरट्रूड, चलें हम उसके पीछे।
बड़े यत्न से शान्त उसे मैं कर पाया था।
कहीं न इससे उसका क्रोध भड़क फिर उट्ठे;
चलो, चलें हम उसके पीछे।

[**दोनों बाहर जाते हैं।**

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

गिरजे से लगा क़ब्रिस्तान

(फावड़ा और गदाला लिये हुए दो मजदूरों का प्रवेश)

पहला मजदूर : क्यों जी, जिस लड़की ने अपने को खुद मुक्त कर दिया हो, क्या उसे ईसाई क़ब्रिस्तान में दफनाया जा सकता है ?

दूसरा मजदूर : मैं कहता हूँ कि उसे दफ़नाया जा सकता है; और इसीलिए उसकी क़ब्र फ़ौरन तैयार कर दो। हाकिमों ने उसकी लाश की

जाँच कर ली है और उन्होंने अपना फ़ैसला दे दिया है कि उसे ईसाई क़ब्रिस्तान में दफ़नाया जा सकता है।

पहला मज़दूर : यह कैसे हो सकता है, जब तक कि वह अपना बचाव करने के लिए ही डूब न मरी हो।

दूसरा मज़दूर : यही बात तो पायी गयी है।

पहला मज़दूर : तब तो यह क़ानून उल्टा लागू हुआ है, दूसरा कुछ हो नहीं सकता। मुद्दे की बात तो यह है कि अगर मैं जान-बूझकर डूब मरूँ तो कानून की भाषा में यह एक काम हुआ; और हर काम के होते हैं तीन हिस्से—काम शुरू करना, काम करना और काम पूरा करना। इससे यह नतीजा निकला कि वह जान-बूझकर डूब मरी।

दूसरा मज़दूर : लेकिन, सुनो भी तो भल खोदूमल।

पहला मज़दूर : पहले मुझे कहने दो। यहाँ पानी है—ठीक है न ? यहाँ आदमी खड़ा है—ठीक है न ? अगर आदमी पानी के पास जाता है और उसमें डूब मरता है तो वह चाहे मरना चाहे, चाहे न चाहे, वह पानी के पास जाता तो है ही; इस बात को साफ़ समझ लो; लेकिन अगर पानी उसके पास आता है और उसे डुबा देता है तो वह खुद नहीं डूब मरता। नतीजा यह निकला कि वही खुदकुशी का अपराधी नहीं है, जो अपनी उम्र को कम नहीं करता।

दूसरा मज़दूर : लेकिन, यह कोई क़ानून की बात हुई ?

पहला मज़दूर : क्यों नहीं, क़समिया; यह हाकिमाना तहक़ीक़ाती क़ानून है।

दूसरा मज़दूर : लेकिन खरी बात कह दूँ ? अगर वह किसी बड़े घर की औरत न होती तो उसे ईसाई क़ब्रिस्तान से दूर दफ़नाया जाता।

पहला मज़दूर : बस, मुद्दे की बात तुमने कह दी; पर ज़्यादा अफ़सोस तो इस पर होता है कि इन बड़े आदमियों को दुनिया ने डूब मरने की, फाँसी लगा लेने की, अपने और ईसाई भाइयों की बनिस्बत ज़्यादा आज़ादी दे रक्खी है।—लाओ मेरा फावड़ा। दुनिया के सबसे पहले बड़े आदमी हैं बाग़ लगानेवाले, खाई खोदनेवाले और क़ब्र बनानेवाले। और ये आज तक आदम के पेशे को चलाये जा रहे हैं।

दूसरा मज़दूर : क्या आदम बड़ा आदमी था ?

पहला मज़दूर : वह पहला आदमी था जिसने हाथों में औज़ार पकड़ा।

दूसरा मज़दूर : लेकिन औज़ार तो उसके पास थे ही नहीं।

पहला मज़दूर : तू तो मुझे काफ़िर लगता है। तू इंजील को समझता भी है ? इंजील कहती है कि आदम ने ज़मीन खोदी; वह बिना औज़ार के खोद सकता था ? मैं तुझसे एक और सवाल पूछता हूँ। अगर तू ठीक जवाब नहीं देता तो मान ले कि तू—

दूसरा मज़दूर : अच्छा पूछ।

पहला मज़दूर : वह कौन है जो मेमार, जहाज़साज़ और बढ़ई से भी ज़्यादा मज़बूत चीज़ बनाता है ?

दूसरा मज़दूर : जो फाँसी की टिकठी बनाता है, हज़ार आदमियों को पार लगा-

कर के भी टिकठी ज्यों-की-त्यों खड़ी रहती है।

पहला मजदूर : तुझे अक्ल अच्छी मिली है, सच। टिकठी अच्छे काम आती है; पर वह अच्छे काम किनके आती है? वह अच्छे काम उनके आती है जो बुरा काम करते हैं। अब यह कहना तो बुरी बात होगी कि टिकठी गिरजाघर से भी मज़बूत होती है। ख़ैर, टिकठी तेरे अच्छे काम आये। पर मेरे सवाल का ठीक जवाब दे, फिर कोशिश कर, चल!

दूसरा मजदूर : मेमार, जहाज़साज़ और बढ़ई से भी ज़्यादा मज़बूत चीज़ कौन बनाता है?

पहला मजदूर : हाँ, जवाब दे और अपनी जान छुड़ा।

दूसरा मजदूर : क़सम से, मैं अब दे सकता हूँ।

पहला मजदूर : तो दे।

दूसरा मजदूर : क़सम से, मैं नहीं दे सकता।

(कुछ फ़ासले पर हैमलेट और होरेशियो का प्रवेश)

पहला मजदूर : अपने दिमाग़ को ज़्यादा मत खरोंचो, क्योंकि तेरा यह लद्धड़ गया पीट-पाट से अपनी चाल नहीं सुधारने का। और जब दूसरी बार कोई यह सवाल पूछे तो कह, क़ब्र बनानेवाला, क्योंकि वह जो घर बनाता है वह क़यामत के दिन तक खड़ा रहता है। अच्छा, अब जॉन की दूकान पर जा और मेरे लिए एक बोतल शराब ला।

[दूसरा मजदूर चला जाता है।

(पहला मजदूर क़ब्र खोदता हुआ गाता है)

जब थी जवानी, तब था प्यार से,
सिर्फ़ प्यार से नाता।
हाय, छोड़कर उससे मिलना,
कुछ न मुझे था भाता।

हैमलेट : इस आदमी का काम कहाँ, इसकी भावनाएँ कहाँ; तभी तो यह खोद रहा है क़ब्र और गा रहा है प्रेम का गीत।

होरेशियो : रोज़-रोज़ यही काम करते इसकी भावनाएँ कुन्द हो गयी हैं।

हैमलेट : तभी तो जिन्हें मोटा काम कम करना पड़ता है, उनकी भावनाएँ अधिक सुकुमार होती हैं।

पहला मजदूर : **(गाता है)** किन्तु बदन पर, अब तो बुढ़ापे
की है साफ़ निशानी,
अब लगता है, कभी नहीं थी
मुझ पर, हाय, जवानी!

[एक हड़मुण्ड बाहर फेंकता है।

हैमलेट : इस हड़मुण्ड में कभी जीभ रही होगी, और कभी यह गा भी सकता होगा; पर कैसी निर्ममता से अब यह गँवार इसे ज़मीन

पर फेंकता है, मानो यह केन के जबड़े की हड्डी हो, जो दुनिया का पहला हत्यारा था। हो सकता है कि यह किसी राजनीतिज्ञ का सिर हो, जिससे यह गधा भी इस समय अपने को बड़ा समझता है, पर कभी यह ईश्वर की आँखों में भी धूल झोंक सकता होगा। होगा न?

होरेशियो : हो सकता है, श्रीमन्!

हैमलेट : या किसी दरबारी का, जो कहता होगा, कृपानिधान की जय हो! श्रीमान् कुशल-मंगल से तो हैं? या फ़लाँ सरदार का, जो फ़लाँ सरदार के घोड़े की प्रशंसा करता होगा कि वे प्रसन्न होकर उसे दे डालें? हो सकता है न ऐसा?

होरेशियो : हाँ, श्रीमन्!

हैमलेट : और हो ही क्या सकता है? और अब देखो, यह दीमक-चाटा हड़मुण्ड; जबड़ा ग़ायब, और खोपड़ी पर क़ब्र खोदनेवाले के फावड़े की चोट से कभी इधर लुढ़कता, कभी उधर। मानव का यह कितना अद्‌भुत परिवर्तन है, अगर हम आँख खोलकर देख सकें! क्या इन हड्डियों को इसीलिए पाला-पासा गया था कि इनके साथ गुल्ली-डण्डा खेला जाये? यह सोचकर मेरी हड्डियों में दर्द होने लगा है।

पहला मज़दूर : (गाता है) एक कुदाली, एक फावड़ा,
एक कफ़न की चादर,
मिट्टी के घर के मेहमाँ का
बस, इतना ही आदर!

[**एक और हड़मुण्ड फेंकता है।**

हैमलेट : यह लो दूसरा; हो सकता है यह किसी वकील का हड़मुण्ड हो। कहाँ गये अब उसके मुक़दमे, उसके मुवक्किल, उसके हथकण्डे? भूल न गया अब सब क़ानून की बारीकियाँ दिख-लाना और बाल की खाल उधेड़ना। एक बेहूदा गँवार अपने गन्दे फावड़े से उसके सिर को ठकठका रहा है, पीट रहा है, पर वह उससे किसी तरह का उज्र क्यों नहीं करता? हूँ! यह शख़्स किसी समय कोई बड़ा ज़मीन-ख़रीदार रहा होगा। कहाँ हैं अब उसके शर्तनामे, उसके नज़राने, उसके हर्जाने, उसकी दुहरी रसीदें और उसकी वसूलियाँ? क्या यह उसके हर्जाने का हर्जाना है, उसकी वसूलियों की वसूली कि उसके क़ीमती सिर में यह बेशक़ीमती मिट्टी भरी जाये? क्या अब उसकी रसीदें, दुहरी होकर भी, उससे ज़्यादा लम्बी, चौड़ी ज़मीन की ख़रीद की सनद नहीं देंगी जितनी कि एक जोड़े पट्टे से ढकी जा सके? उसकी ज़मीन के दस्तावेज़ भी मुश्किल से क़ब्र के उस छोटे-से सन्दूक में समा सकेंगे। और क्या उसके उत्तराधिकारियों का भी इससे अधिक पर अधिकार न होगा?

होरेशियो : एक तिल भी अधिक पर नहीं, श्रीमन्।

हैमलेट : लोग दस्तावेज़ों को टिकाऊ बनाने के लिए भेड़ की खाल पर लिखाते हैं न ?

होरेशियो : हाँ श्रीमन्, और बछड़े की खाल पर भी।

हैमलेट : वे भेड़-बछड़ों से ही बोदे हैं जो समझते हैं कि उनके चमड़े टिकाऊ होंगे। मैं इस आदमी से बात करना चाहता हूँ।—अरे सुनो, यह किसकी क़ब्र है ?

पहला मजदूर : मेरी, श्रीमन्।
(**गाता है**) मिट्टी के घर के मेहमाँ का
बस इतना ही आदर।

हैमलेट : मैं मानता हूँ कि यह तेरी है क्योंकि तू इसके अन्दर है।

पहला मजदूर : और आप इसके बाहर हैं, श्रीमन्, इसलिए यह आपकी नहीं है; मैं इसके अन्दर हूँ, गो पड़ा नहीं, फिर भी यह मेरी है।

हैमलेट : यह तो झूठ बात हुई कि चूँकि तू इसके अन्दर है इसलिए यह तेरी है। यह ज़िन्दों के नहीं, मुर्दों के पड़ने के लिए है; इसलिए तेरा कहना झूठ है।

पहला मजदूर : तो यह मुँह पर आया झूठ है; अभी मेरे मुँह में है, अभी आपके मुँह में पहुँच जायेगा।

हैमलेट : यह क़ब्र तू किस आदमी के लिए खोद रहा है ?

पहला मजदूर : किसी आदमी के लिए नहीं, श्रीमन्।

हैमलेट : तो किस औरत के लिए ?

पहला मजदूर : किसी औरत के लिए भी नहीं।

हैमलेट : तो किसे इसमें दफ़नाया जायेगा ?

पहला मजदूर : कोई जो पहले औरत थी, पर उसकी आत्मा को शान्ति मिले, अब वह मर गयी है।

हैमलेट : यह कैसा मुँहज़ोर गँवार है ! हम तोल-तोलकर न बोलें तो यह गोल-मोल जवाब से हमारी बोलती बन्द कर देगा। क़सम से, होरेशियो, पिछले तीन बरसों से मैंने यह बात देखी है—ज़माने में वह तेज़ी आयी है कि गँवार के पाँव का अँगूठा, दरबारी की एड़ी के इतने पास आ गया है कि वह उसको ठोकर मारने लगा है।—यह क़ब्र खोदने का काम तू कितने दिन से करता है ?

पहला मजदूर : साल के सब दिनों में मैंने यह काम उस दिन शुरू किया था जिस दिन हमारे पिछले राजा हैमलेट ने फ़ोर्टिनब्रास को हराया था।

हैमलेट : उसको कितने दिन हो गये ?

पहला मजदूर : आपको इतना भी नहीं मालूम ? यह तो कोई ऐरा-ग़ैरा भी बता देगा; यह वही दिन था जिस दिन छोटे हैमलेट का जन्म हुआ था; अब तो वह पागल हो गया है और उसे इँग्लिस्तान भेज दिया गया है।

हैमलेट : सच ! उसे इँग्लिस्तान क्यों भेजा गया ?

पहला मजदूर : क्यों ? क्योंकि वह पागल था और वहाँ जाकर उसकी अक़्ल ठिकाने आ जायेगी, और अगर न भी आये तो वहाँ के लिए

कोई बड़ी बात न होगी।

हैमलेट : क्यों ?

पहला मजदूर : वहाँ उसकी ओर किसी का ध्यान भी न जायेगा, क्योंकि वहाँ सभी आदमी उसी-जैसे पागल हैं।

हैमलेट : वह पागल क्यों हो गया ?

पहला मजदूर : सुना है, बड़े अजीब ढंग से।

हैमलेट : अजीब ढंग से, कैसे ?

पहला मजदूर : लोग कहते हैं कि उसकी अक़्ल कहीं चरने चली गयी।

हैमलेट : कहाँ ?

पहला मजदूर : यहीं कहीं डेनमार्क में; जहाँ छुटपन से क़ब्र खोदते मुझे तीस बरस हो चुके हैं।

हैमलेट : मिट्टी में गड़ने के कितने दिन बाद आदमी सड़ जाता है ?

पहला मजदूर : अगर वह मरने के पहले ही सड़ नहीं गया है— जैसे कि आज कल के आतशक से सड़े-गले मुर्दे, जिन्हें दफ़नाना भी मुश्किल होता है—तो मुर्दे के सड़ने में आठ या नौ बरस लगेंगे, चमार चौदस के मुर्दे सड़ने में चौदह बरस।

हैमलेट : उसके सड़ने में औरों से ज़्यादा वक़्त क्यों लगता है ?

पहला मजदूर : इसलिए, श्रीमन्, कि चमड़ा कमाते-कमाते उसकी चमड़ी इतनी चीमड़ हो जाती है कि उसे बहुत दिनों तक पानी नहीं खा पाता; और इस हरामज़ादी लाश को यह पानी ही बुरी तरह गलाता है। यह देखिए, एक और हड़मुण्ड निकला। यह बीस ऊपर तीन बरस तक ज़मीन के अन्दर गड़ा रहा है।

हैमलेट : यह किसका था ?

पहला मजदूर : यह एक पागल हरामज़ादे का था। आप बता सकते हैं कि यह किसका था ?

हैमलेट : नहीं, मुझे नहीं मालूम।

पहला मजदूर : यह पागल बदमाश जहन्नुम में जाये ! इसने एक बार मेरे सिर पर शराब की पूरी बोतल उलट दी थी। यही हड़मुण्ड, श्रीमन्, यारिक का सिर था—राजा का विदूषक।

हैमलेट : यही !

पहला मजदूर : जी हाँ।

हैमलेट : ज़रा मुझे दिखाओ। **(हड़मुण्ड हाथ में लेता है।)**
—हाय, बेचारा यारिक !—मैं उसे जानता था, होरेशियो; उसके मज़ाक ख़त्म ही न होते थे; क्या कमाल की उड़ानें होती थी उनमें; हज़ार बार तो उसने अपनी पीठ पर चढ़ाकर मुझे घुमाया होगा; अब इन बातों को सोचकर कितनी घिन छूटती है ! मेरा जी मिचलाने लगता है। यहाँ उसके होठ थे, जिन्हें पता नहीं, मैंने कितनी बार चूमा होगा।—कहाँ हैं अब तुम्हारी ठठोलियाँ, तुम्हारी कलाबाज़ियाँ, तुम्हारे गाने-तराने ? तुम्हारी वक़्तिया फब्तियाँ ?—जिनसे उठनेवाले क़हक़हों से महफ़िलें गूँज उठती थीं। अब एक नहीं, जो तुम्हारे इस खीस-बाये चेहरे की नक़ल भी उतार सके ! बिल्कुल मुँह लटकाये। अब

तुम हमारी राजरानी के कमरे में जाओ और उनसे कहो कि वे कितना ही रंग-रोग़न अपने चेहरे पर चढ़ायें, अन्त में उनकी सूरत ऐसी ही होनी है; उन्हें इस पर हँसाओ !—कृपाकर, होरेशियो, मुझे एक बात बताओ।

होरेशियो : क्या, श्रीमन् !

हैमलेट : तुम्हारा क्या ख़्याल है कि सिकन्दर भी जमीन में गड़ा ऐसा ही दिखता होगा ?

होरेशियो : बिल्कुल ऐसा ही।

हैमलेट : और ऐसा ही बदबू भी करता होगा ? उफ़ !

[**हड़मुण्ड गिरा देता है।**

होरेशियो : ऐसा ही, श्रीमन् !

हैमलेट : हमारी मिट्टी की भी क्या दुर्दशा होती है, होरेशियो ! हमारी कल्पना क्यों नहीं यह देख पाती कि जिस मिट्टी से पीपे का मुँह बन्द किया जाता है, शायद वह सिकन्दर की ही हो।

होरेशियो : ऐसी कल्पना तो बड़ी अजीब कल्पना होगी।

हैमलेट : नहीं, क़सम से, ज़रा भी नहीं; इस नतीजे पर तो हम केवल तथ्य और सम्भावनाओं के सहारे पहुँच सकते हैं; देखो ऐसे—सिकन्दर मर गया, सिकन्दर को दफ़ना दिया गया, सिकन्दर मिट्टी में मिल गया, फिर मिट्टी-मिट्टी में क्या अन्तर ? उसी मिट्टी का हम लोंदा बनाते हैं, और उसी लोंदे से, जो बहुत सम्भव है, सिकन्दर की मिट्टी से ही बना हो, क्या शराब का पीपा बन्द नहीं किया जा सकता ?—

जिस मिट्टी से बन्द झरोखा किया गया है,
हवा न आये, सम्भव है वह महाप्रतापी
सीज़र की हो !
जिस मिट्टी से सारी दुनिया थी आतंकित,
जाड़े की अब हवा रोकनेवाली केवल
वह मिट्टी हो !
पर, चुपचाप हटें अब हम; राजा आते हैं।

(**पादरियों आदि का जलूस के रूप में प्रवेश; उनके पीछे ओफ़ीलिया की अर्थी है, जिसके पीछे लायरटीज़ तथा अन्य शोक-सन्तप्त लोग हैं; उनके पीछे राजा-रानी तथा दरबारी गण हैं।**)

रानी-दरबारी हैं किसके पीछे-पीछे ?
रस्में पूरी तरह अदा की नहीं गयी हैं;
जिस शव के पीछे सब लोग चले आते हैं
क्या उसने अपने हाथों अपनी हत्या की ?
लाश किसी सम्भ्रान्त व्यक्ति की-सी लगती है।
आओ, दोनों छिपकर देखें !

[**होरेशियो के साथ पीछे चला जाता है।**

लायरटीज़ : और कौन रस्में बाकी हैं ?
हैमलेट : यह है लायरटीज़, बड़ा गुणवान युवक है।
लायरटीज़ : और कौन रस्में बाक़ी हैं ?
पादरी : शव-सम्बन्धी जिन रस्मों के लिए हमें थी
अनुमति हमने पूरी कर दीं। मृत्यु हुई थी
इसकी कैसे, इसका निश्चय नहीं हो सका;
यदि गिरजाघर की आज्ञाएँ सिंहासन के
आदेशों के ऊपर होतीं, इसे अपावन
किसी ठौर पर गाड़ा जाता, और क़यामत
तक रहती यह पड़ी वहीं पर; इसके शव पर
करुणा की प्रार्थना न होती, वर्षा होती
ईंट-पत्थरों की, ढेलों की; किन्तु यहाँ तो
डलिया भर-भर फूल और मालाएँ आयीं,
शव की सेज सजाने को, शव पर रखने को,
औ' पावन घण्टे, बजने को, दफ़नाने पर—
जो कुछ भी था उचित कुमारी कन्या के हित।
लायरटीज़ : और नहीं कुछ करने को है ?
पादरी : और नहीं कुछ,
शान्ति-पाठ जो उन आत्माओं के हित होता
जो शरीर से विदा शान्ति से हो जाती हैं,
यदि हम इसके लिए करें तो मृतक-प्रार्थना
को हम दूषित करने के अपराधी होंगे।
लायरटीज़ : तो धरती में इसे सुला दो।—इसके सुन्दर,
पावन तन से सुन्दर-कोमल कलियाँ फूटें !—
सुन मेरी, नादान पादरी, बहना मेरी
एक स्वर्ग की देवी होगी, घोर नरक में
पड़ा चीख़ता जब तू होगा।
हैमलेट : क्या यह सुन्दर
ओफ़ीलिया है ?
रानी : विदा ! मिले सुन्दर को सुन्दर।

[**फूल बिखेरती है।**

मैंने आशा की थी तू मेरे हैमलेट की
रानी होगी, ओ सुकुमारी, औ' सुहाग की
शय्या तेरी मैं साजूँगी, अपने हाथों;
हाय, उन्हीं हाथों से तेरी क़ब्र सजाती !
लायरटीज़ : उसके सिर पर गाज गिरें सौ, जिस पापी के
दुष्कर्मों ने तुझसे तेरी बुद्धि छीन ली—
सजग-सचेतन।—रुको, अभी मत मिट्टी डालो।
एक बार उसको फिर बाहों में तो भर लूँ।

[**क़ब्र में कूद पड़ता है।**

अब ज़िन्दा-मुर्दे के ऊपर मिट्टी डालो,
इतनी डालो, यह चौरस इतना ऊँचा हो,
इतना, इसके आगे पर्वत पुरा पीलियन,
नभचुम्बी नीला ओलिंपिस भी छोटा हो !

हैमलेट : (**आगे बढ़कर**) कौन, कौन यह, जो दुख में इतना डूबा है,
शब्द-शब्द जिसके ऐसी पीड़ा से भीगे,
उनको सुनकर नभ से चलनेवाले तारे
स्तब्ध खड़े हैं।—लो, हैमलेट सामने तुम्हारे।

[क़ब्र में कूद पड़ता है।

लायरटीज़ : तेरी आत्मा गिरे नरक में।

[हैमलेट का गला पकड़ लेता है।

हैमलेट : यही प्रार्थना तूने सीखी ?
मैं कहता हूँ, हटा गले से अपना पंजा;
क्रोध और आवेश नहीं है मुझमें तो भी
कुछ ऐसा है जो कि बहुत ही ख़तरनाक है,
और अक़्लमन्दी इसमें ही छेड़ न उसको;
हाथ हटा ले।

राजा : इन्हें छुड़ाओ।

रानी : हैमलेट, हैमलेट !

सब : भलेमानसो !

होरेशियो : समझदार हैं आप, शान्त हो जायें, श्रीमन्।

[साथ के लोग उन्हें अलग करते हैं और वे क़ब्र से बाहर निकलते हैं।

हैमलेट : मत रोको, इस पर मैं इससे युद्ध करूँगा।
तब तक जब तक साँस नहीं मेरी थम जाती।

रानी : किस पर, मेरे प्यारे बेटे ?

हैमलेट : ओफ़ीलिया को प्यार—इसे भगवान जानता—
मैं करता था, आधे लाख भाइयों का भी
प्यार नहीं इतना हो सकता जितना मेरा।—
उसके लिए करेगा क्या तू ? बोल, सुनूँ तो।

राजा : यह पागल है, लायरटीज़, भिड़ो मत इससे।

रानी : तुम्हीं करो बर्दाश्त, भला भगवान करेगा।

हैमलेट : क़सम तुझे, बतला क्या इसके लिए करेगा ?—
रोयेगा तू ? युद्ध करेगा ? व्रत साधेगा ?
तू अपनी छाती फाड़ेगा ? ज़हर पियेगा ?
मगर खायगा ? मैं भी यह सब कर सकता हूँ।
क्या तू आया यहाँ राँड़-रोदन करने को ?
मुझको नीचा दिखलाने को कूद क़ब्र में ?
ज़िन्दा इसके साथ दफ़न होने को ? मैं भी

हो सकता हूँ। तूने बातें बड़े पहाड़ों
की हाँकी थीं ? —चलो करोड़ों एकड़ मिट्टी
हम पर डालो कि यह भूमि इतनी ऊँची हो,
अग्नि-पिण्ड सूरज से इसकी चोटी झुलसे;
इसके आगे ओसा पर्वत लगे मसे-सा।
बड़े बोल तू बोलेगा तो डींग मारने
में मैं तुझसे नीचे-पीछे नहीं रहूँगा।

रानी : यह केवल पागलपन इसका; यह दौरा बस
थोड़ी देर रहेगा इस पर। फिर यह ठण्डा,
शान्त इस तरह हो जायेगा जैसे चिड़िया,
जो अपने अण्डों को सेती चुप बैठी हो।

हैमलेट : सुनिए, श्रीमन्, मेरे प्रति व्यवहार आपका
ऐसा क्यों है ? आप सदा से मेरे प्रिय थे।—
लेकिन अब उन बातों से किसको मतलब है ?—
हरकुलीज़ करता जो उसके जी में आता,
बिल्ली रोती, कुत्ता अपनी पूँछ हिलाता।

[**बाहर चला जाता है।**

राजा : होरेशियो, जाओ, उसके ही साथ रहो तुम।—

[**होरेशियो बाहर जाता है।**

(**लायरटीज़ से**) जो बातें कल रात कहीं थीं मैंने तुमसे
उन पर पूरा करो भरोसा। कार्य रूप में
उनको परिणत करने में अब देर नहीं है।—
प्रिये, किसी से कहो आँख रक्खे बेटे पर।—
इस समाधि पर यादगार कोई सजीव-सी निर्मित होगी—
जल्दी आयेंगे क्षण शान्ति हमें जो देंगे,
तब तक हम धीरज से अपना काम करेंगे।

दूसरा दृश्य

गढ़ का एक बड़ा कमरा

(हैमलेट और होरेशियो का प्रवेश)

हैमलेट : इतना इस पर, अब आयें दूसरी बात पर;
याद परिस्थितियाँ तो तुमको सारी होंगी।

होरेशियो : सभी याद हैं मुझको, श्रीमन्।

हैमलेट : मेरे मन के अन्दर ऐसी उथल-पुथल थी
नींद नहीं मुझको आती थी। मेरी हालत
उस जहाज़ के बाग़ी से बदतर थी जिसके

पाँवों में बेड़ियाँ पड़ी हों। पागलपन में,—
और दाद दूँगा मैं ऐसे पागलपन की,
ख़ूब समझ लो,—कभी हमारी नासमझी से
ऐसे काम बना करते हैं, सोच-समझकर,
गहराई से, जिन्हें बनाना नामुमकिन है।
और हमें यह एक सबक़ सिखला सकता है,
एक शक्ति है, जो सबकी मंज़िल तै करती,
हम कितने ही ऊबड़-खाबड़ पथ से जायें !

होरेशियो : इसमें कुछ सन्देह नहीं है।

हैमलेट : उस जहाज़ के अपने कमरे से बाहर हो,
डाल समुद्री जामा तन पर, अन्धकार में
पथ टटोलता, उसे खोजने को मैं निकला;
मिली सफलता, पड़ा पुलिन्दा मेरे हाथों,
दबे-पाँव फिर अपने कमरे को मैं लौटा;
भय से भूल नियन्त्रण सारे, साहस करके
राजपत्र पर मुद्रित मुहरें मैंने तोड़ीं;
और देखता क्या, होरेशियो—घृणित राज-छल !—
राजपत्र पर साफ़-साफ़ आदेश लिखा था,
तरह-तरह के बहुतेरे कारण दे-देकर,
इस मेरे कृमि-कीट-तुल्य जीवन से ख़तरा
भारी है डेनमार्क देश को, आंग्लदेश को
भी हो सकता; इसीलिए यह राजपत्र पढ़
बिना समय थोड़ा भी खोये, चाहे उसमें
शान कुल्हाड़े पर ही क्यों न धरी जानी हो,
मेरे धड़ से जुदा किया जाये सिर मेरा !

होरेशियो : क्या यह सम्भव ?

हैमलेट : राजपत्र प्रस्तुत करता हूँ।
फ़ुरसत से पढ़ लेना इसको, पर क्या सुनना
तुम चाहोगे, काम किया जो आगे मैंने ?

होरेशियो : निश्चय ही, बतलायें मुझको।

हैमलेट : इस प्रकार छल-छुद्र जाल से घिर जाने पर,—
इससे पूर्व कि मैं इस पर कुछ सोचूँ-समझूँ,
काम शुरू था उनका अपना—बैठ गया मैं,
राजपत्र नूतन मैंने तैयार कर दिया,
सुन्दर लिपि में, लिपिकारों की तरह कभी
सुन्दर लिखने को नीचा काम समझता था मैं,
औ' यह कला भुलाने की कोशिश भी की थी,
किन्तु समय पर बड़े काम आयी यह मेरे;
जो कुछ मैंने लिखा उसे सुनना चाहोगे ?

होरेशियो : निश्चय, श्रीमन्।

हैमलेट : डेनराज का परमावश्यक एक सँदेसा—
आंग्लदेश के आज्ञाकारी करदाता होने के नाते,

उन दोनों के प्रेम-सूत्र में बँधे हुए होने के नाते,
दोनों के ही शान्ति-पुजारी, शान्ति-भक्त होने के नाते,—
शान्ति कर रही जो समृद्ध दोनों देशों को—
इसी तरह के और बहुत-से दृढ़ नातों की
याद दिलाकर आंग्लदेश के राजा से यह
कहा गया था, राजपत्र यह पाते ही वे
निर्विवाद, औ' क्षण भर की भी देर न करके,
इन दोनों ही पत्र-वाहकों को मरवा दें।

होरेशियो : मुहर लगायी गयी किस तरह ?

हैमलेट : और यहाँ भी नियति सहायक मेरी निकली।
मुहर, पिता की, मेरे बटुए में रक्खी थी।
डेनराज्य की मुहर नक़ल थी बिल्कुल उसकी।
नये पत्र को मैंने पहले-सा ही मोड़ा,
उसी तरह से किये दस्तख़त, मुहर लगायी,
और हिफ़ाज़त से ले जाकर उसे रख दिया।
अदल-बदल जो हुई किसी ने कभी न जाना।
हुआ दूसरे रोज़ समुद्री युद्ध हमारा।
औ' जो उसके बाद हुआ मालूम तुम्हें है।

होरेशियो : तो गिल्डेन औ' रोज़ेन हैं अब काल-गाल में।

हैमलेट : हों, यह काम उठाने को वे उतावले थे;
उनके मरने पर मुझको अफ़सोस न होगा,
उनकी हार हुई उनके अपने हाथों से।
दो तगड़े जब एक-दूसरे के विरोध में
खड्ग-हस्त हों, तब यदि आकर कोई पिद्दा
पड़े बीच में, तो वह ख़तरा उठा रहा है।

होरेशियो : यह भी क्या राजा है। धिक् ऐसे राजा को !

हैमलेट : तू ही बतला, क्या यह मुझ पर नहीं कि उसको
जिसने मेरे पूज्य पिता की हत्या कर दी,
जिसने मेरी माता को कर दिया कलंकित,
जिसने मेरे राजा बनने में बाधा दी,
जिसने ख़त्म मुझे करने को जाल बिछाया,
औ' फिर इतनी छल-विद्या से,—क्या यह मुझ पर
नहीं कि इसमें बिना पाप देखे तिल भर भी,
एक हाथ में उसके धड़ से सिर उतार लूँ ?
जो कि हमारे जीवन का नासूर बना है
उसे बख़्शना, और हमारी हानि करे वह,—
यह तो सत्यनाश स्वयं अपना करना है।

होरेशियो : आंग्लदेश से जल्द ख़बर उसको पहुँचेगी,
काम वहाँ जो होना था वह कैसा निबटा।

हैमलेट : आये जल्दी। अन्तराल फिर भी मेरा है;
'एक' गिनो औ' मानव का जीवन समाप्त है।
पर मुझको अफ़सोस कि लायरटीज़ सामने

आया तो मैं अपनी सुध-बुध भूल गया सब।
अपने ग़म की सूरत में मैं उसकी सूरत
देख रहा हूँ, मेल बढ़ाऊँगा मैं उससे।
पर, निश्चय ही, दुख की उसकी अतिशयोक्ति से
मेरे मन का ज्वालामुखी भड़क उट्ठा था।

होरेशियो : सुनो, किसी के पैरों की आहट आती है।

(ओसरिक का प्रवेश)

ओसरिक : मालिक के सकुशल डेनमार्क लौटने पर हृदय से आपका स्वागत!

हैमलेट : श्रीमन्, हृदय से आपका आभारी हूँ।
(होरेशियो से अलग)—इस पनडुब्बे को जानते हो?

होरेशियो : **(हैमलेट से अलग)** बिल्कुल नहीं, श्रीमन्।

हैमलेट : **(होरेशियो से अलग)** तो इसे अपनी ख़ुशक़िस्मती समझो, इसे जानना एक बला है। इसके पास बड़ी ज़मीन है और उपजाऊ भी। जब कोई जानवर जानवरों का राजा होता है तो उसका हौदा राजा के भोजनालय में पहुँच जाता है। है तो यह पन-कौआ, पर मुझे मालूम है कि इसने अपने चारों तरफ़ काफ़ी गन्द जमा कर रक्खी है।

ओसरिक : मेरे मालिक, अगर आप कुछ समय दे सकें, तो मैं आपके नाम महाराज का एक सन्देश प्रस्तुत करूँ।

हैमलेट : श्रीमन्, मैं बड़ी तत्परता के साथ उसे सुनने को प्रस्तुत हूँ। अपनी टोपी को उसकी ठीक जगह दें; यह सिर के लिए बनी है।

ओसरिक : मेरे मालिक, धन्यवाद है आपको, इस समय बड़ी गर्मी है।

हैमलेट : नहीं, मेरा विश्वास करें, इस समय बड़ी ठण्ड है, उतरहटा बह रहा है।

ओसरिक : हाँ, थोड़ी ठण्ड तो ज़रूर है, मेरे मालिक।

हैमलेट : मगर, मेरे लिए तो इसमें बड़ी ऊमस और गर्मी है।

ओसरिक : बेहद, मेरे मालिक; और बहुत ही ऊमस—जैसे कि—बताना मेरे लिए मुश्किल है। लेकिन, मेरे मालिक, महाराज ने मुझे आपको यह सूचित करने का आदेश किया है कि उन्होंने आपके ऊपर बहुत बड़ी बाज़ी लगायी है। श्रीमन्, बात यह है कि—

हैमलेट : मैंने कुछ प्रार्थना की थी, याद है?

(सिर पर टोपी रखने के लिए हैमलेट उसे इशारा करता है।)

ओसरिक : नहीं, मेरे मालिक; सच, इससे तो मुझी को आराम है। हाँ, तो बात यह है, श्रीमन्, कि लायरटीज़ हाल ही में दरबार को लौटा है, और विश्वास कीजिए, वह बड़ा ही शरीफ़ आदमी है, और उसमें बड़ी खूबियाँ हैं—देखने में सुन्दर, मिलने-बैठने में शालीन, बोल-चाल में शीलवान; उसका सटीक वर्णन करना हो तो यही

कहेंगे कि वह शराफ़त का एक ऐसा नक़्शा है जिसकी सहायता से कोई भी शरीफ़ आदमी अपने जीवन का पथ प्रशस्त कर सकता है।

हैमलेट : श्रीमन्, आपने उसका जो वर्णन किया उस पर कोई टिप्पणी नहीं की जा सकती, पर मैं यह जानता हूँ कि अगर आप उसके एक-एक गुण की गणना करना चाहेंगे तो गणित का ही दिमाग़ चकरा जायेगा, और आप उसके सजीव व्यक्तित्व से दूर जाकर उसके गुणों का विश्लेषण ही करते रह जायेंगे। लेकिन उसकी सच्ची प्रशंसा में मैं तो यही कहूँगा कि वह बड़े ऊँचे पाए का आदमी है, और उसके गुण ऐसे अलभ्य और असाधारण हैं कि उनको ठीक-ठीक प्रदर्शित करने का काम केवल वह प्रतिबिम्ब करता है जो उसके दर्पण में पड़ता है; और कोई ऐसा नहीं जो उसकी छाया को उससे अधिक अच्छी तरह आकार दे सके।

ओसरिक : मेरे मालिक, आप तो उसमें किसी प्रकार का दोष ही नहीं देखते।

हैमलेट : मतलब क्या है आपका ? —हम उस भले आदमी के सूक्ष्म गुणों को अपने स्थूल शब्दों से क्यों बाँध रहे हैं ?

ओसरिक : श्रीमन् !

होरेशियो : क्या किसी दूसरी शैली में समझना-समझाना सम्भव नहीं ? वास्तव में, श्रीमन्, आप ऐसा कर सकते हैं।

हैमलेट : उस भले आदमी की प्रशंसा का तात्पर्य क्या है ?

ओसरिक : लायरटीज़ की ?

होरेशियो : (**हैमलेट से अलग**) अब इसका बटुआ ख़ाली हो चुका है और इसके सारे सुनहरे शब्द समाप्त।

हैमलेट : उसी की, श्रीमन्।

ओसरिक : मैं जानता हूँ कि आप अनजान नहीं हैं—

हैमलेट : काश, इसे आप सचमुच जानते; फिर भी, क़सम से, अगर आप जानते तो भी इससे मेरी प्रतिष्ठा में कोई विशेष बढ़ती न होती। क्यों, श्रीमन् ?

ओसरिक : —आप अनजान नहीं हैं उन ख़ूबियों से जो लायरटीज़ में हैं—

हैमलेट : मैं इसे स्वीकार करने का दुःसाहस नहीं कर सकता, इस भय से कि कहीं मैं उसकी ख़ूबियों से अपनी ख़ूबियों की तुलना न करने लगूँ; क्योंकि किसी आदमी को अच्छी तरह जानने का मतलब है ख़ुद अपने को जानना।

ओसरिक : मेरा मतलब था, श्रीमन्, हथियार चलाने की ख़ूबी से। लेकिन लोग जिस तरह उसकी प्रशंसा करते हैं, उससे लगता है कि उसका कोई जोड़ीदार नहीं है।

हैमलेट : उसका हथियार क्या है ?

ओसरिक : तलवार और कटार।

हैमलेट : तो ये दो हथियार उसके हैं। लेकिन, ख़ैर।

ओसरिक : महाराज ने, श्रीमन्, उसके साथ छह अरबी घोड़ों की बाज़ी लगायी है। इसके जोड़ में उसने, जहाँ तक मुझे मालूम है, छह

फ्रांसीसी तलवारों और खंजरों को दाँव पर लगाया है, मय उनके साज-सामान के, जैसे पेटियाँ, लटकन वग़ैरह; तीन पट्टे तो, क़सम से, बड़े ही सुन्दर हैं, तलवारों की मूठों के अनुरूप, बड़े ही नफ़ीस, बड़े ही बारीक काम के।

हैमलेट : पट्टे से तुम्हारा क्या मतलब ?

होरेशियो : (**हैमलेट से अलग**) मुझे मालूम था कि बात समाप्त होने के पहले आपको कहीं न कहीं व्याख्या की आवश्यकता होगी।

ओसरिक : पट्टे वही हैं, श्रीमन्, जो लटकन।

हैमलेट : यह शब्द विषय के अधिक अनुरूप होता अगर हम अपने साथ कुत्ते ले जाते। अगर ऐसा नहीं, तो फ़िलहाल हम इसको लटकन ही क्यों न कहें। मगर, ख़ैर। तो छह अरबी घोड़ों के जोड़ में छह फ्रांसीसी तलवारें हैं, मय साज-सामान के, और तीन नफ़ीस, बारीक काम के लटकन। यह है डेनमार्क की बाज़ी के मुकाबले में फ्रांसीसी बाज़ी। तुम उन्हें 'दाँव' पर लगा क्यों कहते हो ?

ओसरिक : महाराज ने, श्रीमन्, यह शर्त रक्खी है, कि आप दोनों के बीच एक दर्जन काटों में वह आपको तीन से ज़्यादा चोटें न देगा, और उसने यह शर्त लगायी है कि वह आपकी नौ पर बारह चोटें देगा। और यह शक्ति-परीक्षण फ़ौरन होगा अगर मालिक उत्तर देने को तैयार हों।

हैमलेट : और जो मैं मौन रहूँ तो ?

ओसरिक : मेरा मतलब है, श्रीमन्, शक्ति-परीक्षण के समय आपके सामना करने से।

हैमलेट : श्रीमन्, मैं इसी हाल में टहल रहा हूँ; महामहिम जानते हैं कि यह मेरे व्यायाम करने का समय है; तलवारें मँगायी जायें; लायरटीज़ राज़ी हो, और महाराज अपनी बात पर दृढ़ हों, तो मैं उन्हें जिताने का प्रयत्न करूँगा; मगर मैं ऐसा न कर सका तो हार उनकी, पर शर्म और मार मुझ पर।

ओसरिक : क्या मैं इन्हीं शब्दों में आपकी बात उन तक पहुँचा दूँ ?

हैमलेट : श्रीमन्, इसी मतलब की; —अपने स्वभाव के अनुसार जो भी नमक-मिर्च आप चाहें लगाकर।

ओसरिक : मेरे मालिक, आपके प्रति कर्त्तव्य-पालन मेरा धर्म है।

हैमलेट : अपने, अपने (प्रति) — [**ओसरिक बाहर जाता है।**
अच्छा करता है कि यह अपना धर्म अपने-आप ही बता देता है। दूसरे किसी को बताने की क्या पड़ी है।

होरेशियो : यह चिरौटा अभी अण्डे से पूरी तरह निकला भी नहीं कि इसने भागना शुरू कर दिया है।

हैमलेट : यह सब यह माँ के पेट से ही सीखकर आया है। इस पर ही नहीं, इसी नस्ल के और बहुतेरे हैं जिन पर, मुझे खूब मालूम है, यह खोटा ज़माना लट्टू है। इन्हें सिर्फ़ वक्त की भनक भर मिल गयी है, और उसकी मजलिसी लफ़्फ़ाज़ी। और ये झाग-भरे बुलबुले, क्या दाना, क्या नादान, सबके ऊपर छाये रहते हैं;

पर उन्हें आज़माने को ज़रा फूँक भर दीजिए, और उनकी हवा निकल जायेगी।

(**एक सरदार का प्रवेश**)

सरदार : मेरे मालिक, महाराज ने नवयुवक ओसरिक के द्वारा आपके पास कुछ सन्देश भेजा था; उसने लौटकर उनसे कहा कि आप इसी हाल में उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं; उन्होंने मुझे यह मालूम करने के लिए भेजा है कि आप लायरटीज़ से खेलने के लिए तैयार हैं या आप और समय चाहेंगे ?

हैमलेट : मैं अपनी बात पर दृढ़ हूँ। महाराज की इच्छा ही मेरी इच्छा है। अगर लायरटीज़ तैयार है तो मैं भी तैयार हूँ, अभी या कभी भी, बशर्ते कि तब भी मैं ऐसा ही स्वस्थ रहूँ जैसा कि अब हूँ।

सरदार : महाराज, महारानी और सब लोग आ रहे हैं।

हैमलेट : बहुत अच्छा है।

सरदार : महारानी ने कहलाया है कि लायरटीज़ के साथ खेल शुरू करने के पहले आप उससे कुछ मेल-मिलाप की बातें कर लें।

हैमलेट : वे मुझे नेक सलाह देती हैं।

[**सरदार बाहर जाता है।**

होरेशियो : श्रीमन्, आप यह शर्त हार जायेंगे।

हैमलेट : मैं तो ऐसा नहीं समझता; जब से वह फ्रांस गया था, मैं बराबर अभ्यास करता रहा हूँ, और फिर मुझे जो रियायत मिली है उससे मैं जीत जाऊँगा; पर तुम सोच भी नहीं सकते कि इस वक़्त मेरा दिल कितना खराब है, लेकिन कोई बात नहीं।

होरेशियो : फिर भी, श्रीमन् !

हैमलेट : यह सिर्फ़ मेरी नादानी है, लेकिन यह कुछ उसी तरह की आशंका है जैसी कि शायद औरतों के मन में उठती है।

होरेशियो : अगर आपका जी किसी चीज को नहीं चाहता तो उसे न करें। मैं उनके यहाँ आने के पहले ही उनसे जाकर कह दूंगा कि आपका जी ख़राब है।

हैमलेट : ज़रा भी नहीं; हम शकुन-अशकुन की परवाह क्यों करें; एक पत्ता भी उसकी मर्ज़ी के बग़ैर नहीं गिरता। अगर उसे अभी गिरना है, तो यह टाला नहीं जा सकता; और अगर यह टाला नहीं जा सकता तो यह अभी गिर के रहेगा; अगर वह अभी नहीं गिरेगा तो कभी तो गिरेगा ! तैयार रहना ही सब कुछ है। कोई आदमी कुछ भी तो लेकर यहाँ से नहीं जाता; हम समय से पहले ही छुट्टी लेकर चले जायें तो क्या ! छोड़ो भी इसे।

(**तलवारों और दस्तानों के साथ राजा, रानी, लायरटीज, ओसरिक, सरदारों और दरबारियों का प्रवेश :**

एक मेज भी साथ लायी जा रही है जिस पर शराब की सुराहियाँ हैं।)

राजा : आओ, हैमलेट, इनसे आकर हाथ मिलाओ।

[**राजा लायरटीज़ का हाथ हैमलेट के हाथ में देता है।**

हैमलेट : मेरे भाई, क्षमा प्रदान करो मुझको तुम;
सत्य, तुम्हारे प्रति मैंने अन्याय किया है;
क्षमा करो इसलिए कि तुम हो नेक आदमी।
यहाँ उपस्थित सब लोगों ने, औ' तुमने भी
निश्चय यह सुन रक्खा होगा, एक बड़े ही
नामुराद मानसिक रोग से मैं पीड़ित हूँ।
जो कुछ मैंने किया, हो उठा जिससे आहत
उन्मद, उद्धत मान, गुमान, स्वभाव तुम्हारा,
घोषित करता यहाँ कि मेरा पागलपन था।
लायरटीज़, तुम्हारे प्रति अन्याय किया था
क्या हैमलेट ने ? हैमलेट नहीं रहा होगा वह।
जब हैमलेट कर दिया गया है दूर स्वयं से,
तब अपने से बाहर होने की हालत में,
यदि उससे अपराध कहीं, कुछ हो जाता है,
हैमलेट को अपराधी कहना उचित न होगा;
हैमलेट उसको कभी नहीं स्वीकार करेगा;
तब यह किसका ? केवल उसके पागलपन का।
यदि यह बात मान ली जाये तब तो हैमलेट
उस दल का है जिसके प्रति अन्याय हुआ है।
हैमलेट का पागलपन ख़ुद उस बेचारे का
महाशत्रु है, इतने लोगों के आगे मैं
यह कहता हूँ, जानबूझकर नहीं बुराई
कुछ मैंने की; औ' तुम अपनी उदारता से
मुक्त मुझे इतना कर दो मैं ऐसा समझूँ,
मैंने अपने घर पर ही था तीर चलाया
और हुआ जो घायल, मेरा ही भाई था।

लायरटीज़ : मेरा मन सन्तुष्ट हो गया है जो अब तक
मुझको बदला लेने को प्रेरित करता था;
लेकिन मेरा मान-गुमान अभी कुण्ठित है,
औ' तब तक वह शान्त नहीं होने का जब तक
जाने-माने वयोवृद्धगण इस प्रकार की
सुलह के लिए अपनी राय, मिसाल न देते,
जिससे मेरे नाम लगा धब्बा मिट जाये।
पर तब तक मैं प्रेम तुम्हारा प्रेम-भेंट-सी
अपनाता हूँ, और न उसको अवमानूँगा।

हैमलेट : मुक्त हृदय से मैं विश्वास तुम्हारा करता।
औ' जो बाज़ी लगी हुई, उसमें भाई की

तरह खुले दिल से खेलूँगा—तलवारें दो
हमें, चलो, हाँ।

लायरटीज : चलो, एक मुझको भी देना।

हैमलेट : लायरटीज़, जँचोगे बेहतर तुम तुलना में।
मेरे कचपन के आगे चातुर्य तुम्हारा
अमा-निशा में, निश्चय, तारे-सा चमकेगा।

लायरटीज : मुझे बनाते क्यों हैं, श्रीमन् ?

हैमलेट : सच कहता हूँ।

राजा : तलवारें दो मुझे, ओसरिक—प्यारे हैमलेट,
शर्तों का तो तुम्हें पता है ?

हैमलेट : बिल्कुल, श्रीमन् !
जिसका निर्बल पक्ष उसे कुछ रियायतें भी
महामहिम ने दिलवा दी हैं, धन्यवाद है।

राजा : मुझे नहीं डर; मैं दोनों को देख चुका हूँ।
क्योंकि फ्रांस में उसने अधिक प्रशिक्षण पाया,
तुम्हें रियायत मैंने थोड़ी-सी दिलवा दी।

लायरटीज : यह ज़्यादा भारी, मुझको दूसरी दिखाओ।

हैमलेट : मुझको यह अच्छी लगती है—सभी एक-सी।

[**वे खेलने के लिए तैयार होते हैं।**

ओसरिक : मालिक, आप ठीक कहते हैं।

राजा : मदिरा के प्यालों को मेरे लिए मेज़ के
ऊपर रख दो – यदि हैमलेट ने सबसे पहली,
या कि दूसरी चोट लगायी प्रतिद्वन्द्वी पर,
या कि तीसरे मुक़ाबले में पहले की सब
चोटें काटीं, तो फ़सील की तोपें सारी
दागी जायँ; अब हैमलेट का सधा रहे दम,
इस कारण मैं उसका जामे-सेहत पीऊँगा,
औ' प्याले में एक बड़ा मोती डालूँगा;
डेनमार्क के पिछले चार महाराजाओं
के मुकुटों में इससे ज़्यादा क़ीमतवाला
मोती शोभित नहीं हुआ है।—प्याले लाओ।
ढोल ठनक दे तो उस पर नरसिंघे बोलें,
नरसिंघे बोलें तो उन पर तोपें छूटें,
तोपें छूटें तो आवाज़ गगन में गूँजे,
और गगन से लौट प्रतिध्वनि भू पर आये;—
'अब हैमलेट का जामे-सेहत मैं उठा रहा हूँ !'
खेल शुरू हो, औ' निर्णायकगण सचेत हों।

हैमलेट : आओ !

लायरटीज : तुम भी।

(**वे खेलते हैं।**)

हैमलेट : एक।

लायरटीज़ : नहीं।

हैमलेट : निर्णायक बोलें।

ओसरिक : एक चोट, जो साफ़ चोट है।

लायरटीज़ : अच्छा, फिर से।

राजा : ठहरो; मदिरा लाओ,—हैमलेट, मोती तेरा।
तेरा जामे-सेहत पीता हूँ—

(नरसिंघे बजते हैं और भीतर तोपें दगती हैं।)

उसको भी दो।

हैमलेट : हो ले पहले यह मुक़ाबला, ज़रा ठहरकर—
आओ, **(वे फिर खेलते हैं।)**
अब लो चोट दूसरी; क्या कहते हो ?

लायरटीज़ : छुआ-छुआ भर मान रहा हूँ।

राजा : पुत्र हमारा ही जीतेगा।

रानी : वह दुर्बल है,
इसीलिए दम जल्द उखड़ता—हैमलेट, लेना
मेरा यह रूमाल, पोंछ ले माथा अपना;
हैमलेट, तेरा जामे-सेहत अब मैं पीती हूँ।

हैमलेट : धन्यवाद माँ को।

राजा : गरट्रूड, इसे मत पीना।

रानी : श्रीमन्, मेरी मानें, मुझको आज न रोकें।

राजा : **(स्वगत)** उस प्याले में ज़हर मिला था। अब न बचेगी।

हैमलेट : अभी नहीं मैं पी सकता, माँ, ज़रा ठहर के।

रानी : आ, मैं तेरा माथा पोंछूँ।

लायरटीज़ : श्रीमन्, अब मैं चोट इसे देनेवाला हूँ।

राजा : मैं तो ऐसा नहीं समझता।

लायरटीज़ : **(स्वगत)** अपनी आत्मा के विरुद्ध करने जाता हूँ।

हैमलेट : लायरटीज़, तीसरे में अब क्या देरी है ?
पर तुम नष्ट समय करते हो; मैं कहता हूँ,
अपने पूरे ज़ोर-शोर से आगे आओ; मुझको शक है,
तुम मज़ाक ही अब तक मेरा बना रहे हो।

लायरटीज़ : यह कहते हो ? तो फिर आओ।

ओसरिक : नहीं किसी की चोट किसी पर।

लायरटीज़ : अब तुम पर यह लगती, सँभलो !

(लायरटीज़ हैमलेट को घायल कर देता है। बाद को गुत्थिम-गुत्था में उनकी तलवारों में अदल-बदल हो जाती हैं और हैमलेट लायरटीज़ को घायल कर देता है।)

राजा : अलग करो इन दोनों को, ये बड़े तैश में।

हैमलेट : नहीं, चलो फिर। **(रानी गिर पड़ती है।)**

ओसरिक : अरे, महारानी को देखो।

होरेशियो : दोनों ही लोहूलुहान—कैसे हैं श्रीमन् ?

ओसरिक : लायरटीज़, आप कैसे हैं ?

लायरटीज़ : अपने ही फन्दे में जैसे फँसा चिरौटा;
मेरे छलछन्दों ने ठीक मुझे मारा है ।

हैमलेट : रानी की हालत कैसी है ?

राजा : ग़श आया है
उन्हें देखकर, तुम दोनों लोहूलुहान हो ।

रानी : नहीं, नहीं, यह थी शराब, यह, प्यारे हैमलेट,
यह शराब थी जिसके अन्दर ज़हर मिला था । **(मर जाती है ।)**

हैमलेट : अरे दग़ाबाज़ी यह भारी ! — दरवाज़ों पर
ताला मारो । धोखेबाज़ जहाँ हो पकड़ो ।

लायरटीज़ : वह मौजूद यहीं है, हैमलेट । तू अपने को
मरा समझ ले; दुनिया की कोई भी औषध
तुझे नहीं अच्छा कर सकती, आधे घण्टे
से ज़्यादा तू नहीं चलेगा; छलकारी है
जो तलवार हाथ में तेरे—कुन्द नहीं है,
और ज़हर में बुझी हुई है; मेरा छोड़ा
तीर उलटकर मुझे लगा है, देख यहाँ मैं
पड़ा हुआ हूँ और कभी अब नहीं उठूँगा,
तेरी माँ सो गयी ज़हर पी—मैं न कभी अब
उठ पाऊँगा ।—अपराधी है यह, यह राजा ।

हैमलेट : और नोक भी ज़हर बुझी थी ! —
तो फिर काम, ज़हर, कर अपना ।

[राजा को तलवार भोंकता है ।

सब : ग़द्दारी है ! ग़द्दारी है ! !

हैमलेट : ले, ओ हत्यारे, ओ लम्पट, शापित पापी,
ज़हर मिली इस मदिरा को पी; संग निभा तू;
जहाँ गयी माँ, तू भी जा, तू । **(राजा मर जाता है ।)**

लायरटीज : दण्ड ठीक ही
इसे मिला है । उन प्यालों में ज़हर इसी ने
मिलवाया था ।—हैमलेट, आओ, एक-दूसरे
को हम दोनों क्षमादान दें । मेरी, मेरे
पूज्य पिता की मृत्यु के लिए तुम अपराधी
नहीं, तुम्हारी मृत्यु के लिए, और, नहीं मैं । **(मर जाता है ।)**

हैमलेट : ईश्वर तुमको क्षमा करें ! मैं पीछे आता ।—
होरेशियो, मैं मरा ! —विदा बदक़िस्मत रानी ! —
ओ' जो पीले पड़े हुए तुम काँप रहे हो,—
गूँगे दर्शक रोमप्रहर्षक इस घटना के,—
अगर समय होता (लेकिन यह काल-देवता
है कठोर, वह पकड़ किसी को नहीं छोड़ता)—
तो, हा, मैं तुमको बतलाता,—पर जाने दो,—
होरेशियो, मैं मरा, मगर तू ज़िन्दा रहता;

जिन लोगों को पूरी बातें ज्ञात नहीं हैं,
उन्हें बताना ठीक-ठीक मेरे बारे में,
और न्याय के बारे में भी, जो मैं जग से
माँग रहा था।

होरेशियो : समझ न पीछे रह जाऊँगा।
मैं भी तेरे साथ जहाँ तू जाता, आता।
थोड़ी मदिरा अभी बची है।

हैमलेट : यह मर्दों की
बात नहीं है। इस प्याले को मुझको दे दे।
छोड़ हाथ से, क़सम, इसे मैं ख़ुद पीऊँगा।
ओ होरेशियो, घायल मेरा नाम पड़ा है।
मेरे पीछे कितनी बातें अनजानी ही
रह जायेंगी। तूने मुझको प्यार किया है
अगर कभी तो, स्वर्ग-मोह को त्याग अभी तो,
और दर्द की साँसें ले तू इस दुनिया में
जो निर्मम है, और कहानी कह तू मेरी।—

(दूर पर सिपाहियों के मार्च करने की आवाजें और भीतर तोपों का छूटना)

ये कैसी आवाज़ें जैसे युद्ध हो रहा ?

ओसरिक : फ़ोर्टिनब्रास, अभी जो लौटा पोल देश से
विजय प्राप्त कर, आंग्लदेश के राजदूत को
तोप-सलामी दिला रहा है।

हैमलेट : ओ, होरेशियो,
मैं मरता हूँ, ज़ोर ज़हर का मुझ पर हावी
होता जाता। आंग्लदेश से आयी ख़बरें
सुनने को मैं नहीं रहूँगा। पर मैं घोषित
किये जा रहा, फ़ोर्टिनब्रास राज पायेगा;
मेरे अन्तिम शब्द पक्ष में हैं उसके ही;
डेनमार्क के सिंहासन पर उसे निमन्त्रित
करनेवाली घटनाओं से उसे यथोचित
अवगत करना—शेष मौन के गुप्त गर्भ में ! **(मर जाता है।)**

होरेशियो : एक महान पुरुष इस दुनिया से जाता है।—
प्यारे राजकुमार, उदार, विदा देता हूँ।
स्वर्गदूत लोरी गाएँ, तू सुख से सोये !—
रणभेरी के शब्द पास क्यों आते जाते ?—

(भीतर सिपाहियों के मार्च करने की आवाज—ढोल, झण्डों, परिचारकों के साथ फ़ोर्टिनब्रास और अंग्रेज राजदूतों का प्रवेश)

फ़ोर्टिनब्रास : आगे मैं क्या देख रहा हूँ ?

होरेशियो : आप देखना

क्या चाहेंगे ? हृदय-विदारक, विस्मयकारक ?
इससे अधिक नहीं पायेंगे, कहीं न खोजें।

फ़ोर्टिनब्रास : त्राहि-त्राहि, लोथों पर लोथ पुकार रही है।—
मृत्यु दम्भिनी, तेरी अन्ध, अनन्त गुहा में
आज भोज कैसा था, तूने एक बाण से
इतने राजकुमारों का वध कर डाला है ?

पहला राजदूत : दृश्य भयंकर ! और हमारे आंग्लदेश से
समाचार आने में अधिक विलम्ब हुआ है।
कान सुनें जो बात हमारी, बन्द पड़े हैं।
हमको इनसे कहना था आज्ञा का पालन
किया गया है। रोज़ेन-गिल्डेन क़त्ल हो चुके।
धन्यवाद अब कौन हमें दे !

होरेशियो : उसके मुख से
आप न सुनते, यदि वह जीवित होता भी तो;
मृत्युदण्ड उनको देने की उसने आज्ञा
कभी न दी थी। चूँकि आप इस ख़ून-ख़राबे
के मौक़े पर आ पहुँचे हैं—पोल देश से
विजयी होकर आप, आप भी आंग्लदेश से,
आज्ञा दें ये सारी लाशें उच्च मंच पर
रख दी जाएँ, जिससे उनको देख सकें सब,
औ' अनजानी दुनिया से मुझको कहने दें
कैसे यह सब काण्ड हुआ है; तभी सुनेंगे
आप वासनाओं में डूबी, रक्त में सनी
अस्वाभाविक करतूतों की, ग़लत निर्णयों,
और अकारण हत्याओं की, छलछद्मों से
रचे मृत्यु के षड्यन्त्रों की, हठधर्मी की,
और अन्त में भूले से छूटे तीरों की,
जो कि छोड़नेवाले के ही सिर पर टूटे।—
ये सब बातें मैं सच-सच बतला सकता हूँ।

फ़ोर्टिनब्रास : हम सब सुनने को आतुर हैं,
जल्द निमन्त्रित करो सभी सम्भ्रान्त जनों को;
अपना भाग्य दुखी मन से स्वीकार करूँगा;
मेरा कुछ अधिकार देश पर, लोग न जिसको
भूले होंगे; वही मुझे आमन्त्रित करता
राजमुकुट-सिंहासन का दावा करने को।

होरेशियो : इसके बारे में भी मुझको कहना होगा,
और उसी के शब्दों में, जिसको मानेगी
जनता सारी।
लेकिन सबसे पहले हमको वह करना है
जिससे घबराये लोगों के हृदय शान्त हों,
नहीं, और भी दुर्घटनाएँ ग़लतफ़हमियों,
षड्यन्त्रों से हो सकती हैं।

फ़ोर्टिनब्रास : चलें चार कप्तान उठाये हैमलेट का शव,
सेनानी-सा ले जा रक्खें उसे मंच पर,
क्योंकि अगर अवसर मिलता तो वह अपने को
एक वीर सेनानी निश्चय साबित करता।
औ' उसके देहावसान पर सैनिक बाजे
बजें, युद्ध की सब रस्में हों, पूर्ण रीति से।
बाक़ी लाशें भी हटवा दी जायें—ऐसा
दृश्य रणस्थल में ही फबता, यहाँ अशोभन-
सा लगता है।
कहो सैनिकों से अपनी बन्दूकें दागें!

(मातमी धुन बज उठती है। शवों को उठाकर लोग ले जाते हैं। इसके बाद तोपें छूटती हैं।)

०००

किंग लियर

[सन् 1968-'72 के बीच अनूदित]

'किंग लियर' : प्रथम प्रकाशन 1972; राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, से प्रकाशित।

प्रवेशिका

शेक्सपियर के दुखान्त नाटक 'किंग लियर' का पद्य-गद्यानुवाद आपके सामने प्रस्तुत है।

जहाँ तक मुझे मालूम है 'किंग लियर' का अनुवाद हिन्दी में अब तक नहीं हुआ। हुआ भी हो तो इतना तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि वह पद्य-गद्यानुवाद न रहा होगा—यानी नाटक के पद्य-भाग का अनुवाद पद्य में और गद्य-भाग का गद्य में।

शेक्सपियर के नाटकों के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रयास सर्वप्रथम इन पंक्तियों के लेखक ने ही किया और लगभग दो वर्षों के परिश्रम के फलस्वरूप सन् 1957 में शेक्सपियर के 'मैकबेथ' का प्रकाशन हुआ।

'मैकबेथ' का अनुवाद मुख्यत: चार बातों को ध्यान में रखकर किया गया था जिनको यहाँ दुहरा देना अनुचित न समझा जायेगा।

(1) अनुवाद छायानुवाद न होकर अविकल हो।
(2) पद्य-भाग का अनुवाद पद्य में और गद्य-भाग का गद्य में किया जाए।
(3) नाटक अनूदित रूप में सामान्य शिक्षित-दीक्षित जनता के सामने खेला जा सके।
(4) अनुवाद, शुद्धता की सीमा में रहते हुए भी अनुवाद न मालूम हो।

अनूदित 'मैकबेथ' संक्षिप्त रूप में रेडियो से प्रसारित और पूर्ण रूप से रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया और उसमें जो सफलता देखी गयी उससे मैं आश्वस्त हुआ कि मेरा प्रयास ठीक दिशा में हो रहा है।

इस प्रयोग से प्रोत्साहित हो 'मैकबेथ' की ही पद्धति पर मैंने 'ओथेलो' का अनुवाद सन् 1959 में प्रस्तुत किया और वह भी रेडियो और रंगमंच के द्वारा जनता तक पहुँचा।

'हैमलेट' के अनुवाद ने, जो सन् 1969 में प्रकाशित हुआ, विधा में उपर्युक्त दो नाटकों का अनुसरण किया, पर, मुझे इसका खेद है कि वह रेडियो अथवा रंगमंच के माध्यम से जनता के सामने नहीं आ सका।

शेक्सपियर की चालीस कृतियों में सैंतीस नाटक हैं जिनमें शीर्ष स्थान उनके चार दुखान्त नाटकों को दिया जाता है—'मैकबेथ', 'ओथेलो', 'हैमलेट' और 'किंग लियर' को।

प्रथम तीन नाटकों को अपनी और कुछ अन्य पारखियों की दृष्टि में सन्तोषजनक रूप में अनूदित कर लेने के पश्चात् यह लोभ स्वाभाविक था कि शेष एक और नाटक का अनुवाद कर शेक्सपियर के सर्वश्रेष्ठ नाट्य-चतुष्टय को हिन्दी में पूर्ण कर दिया जाये।

'किंग लियर' के प्रस्तुत अनुवाद से यह लक्ष्य पूरा हुआ।

इन चारों नाटकों में से किसी न किसी दृष्टि से प्रत्येक के लिए यह दावा किया गया है कि वह औरों से श्रेष्ठ है। 'किंग लियर' की सर्वश्रेष्ठता के दावेदारों

की कमी नहीं है। उनकी कुछ चर्चा यहाँ असंगत न होगी।

अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध निबन्धकार हैज़लिट की स्पष्ट राय है कि 'King Lear is the best of all Shakespeare's plays.' ('किंग लियर' शेक्सपियर के नाटकों में सर्वश्रेष्ठ है); ब्रैडले ने, जो शेक्सपियर के दुखान्त नाटकों के पाये के समालोचक माने जाते हैं, लिखा है कि यदि कभी ऐसी दुर्घटना हो जाये जिसमें शेक्सपियर के एक मात्र नाटक को बचाना सम्भव हो तो अधिकतर लोग 'किंग लियर' को बचाना चाहेंगे। यह एक तरह से हैज़लिट की ही बात है, अधिक चित्र-मय शैली में। अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध रूमानी कवि शेली ने लिखा है कि "King Lear is the most perfect specimen of the dramatic art existing in the world.' (संसार में नाट्य कला के जितने भी नमूने हैं उनमें 'किंग लियर' पूर्णतम है।) व्यक्तिगत अभिरुचि और अतिशयोक्ति को बाद दे दें तो भी इन कथनों से इतना तो स्पष्ट है कि 'किंग लियर' का स्थान विश्व के नाटकों में बहुत ऊँचा है।

हिन्दी पाठकों के समक्ष इसे सुलभ करने के लिए मुझे जो श्रम करना पड़ा है वह उस आनन्दमय-वेदना की—त्रासदी के प्रभाव को मैं इसी परस्परविरोधी यौगिक शब्द से व्यक्त कर सकता हूँ—तुलना में कुछ भी नहीं है जो इस प्रक्रिया में नाटक के निकटतम सम्पर्क से मुझे मिल चुकी है।

अनुवाद मूल का स्थान नहीं ले सकता। मूल से परिचितों को अनुवाद हेय लगे तो अस्वाभाविक न होगा। मूल से अनभिज्ञों को अनुवाद से मूल की महत्ता का कुछ भी आभास मिल सके तो मैं अपने श्रम को व्यर्थ न समझूँगा।

अपनी बात समाप्त करने के पूर्व दो शब्द त्रासदी की नाट्य-विधा पर।

एक विशेष जीवन दृष्टि के कारण हमारे यहाँ दुखान्त नाटक नहीं लिखे गये—करुण रस की विशिष्टता को अनुभव करते हुए भी।

दुखान्त नाटक हमारे पास योरोप से आये।

दुखान्त नाटक के लिए हमारे पास शब्द भी नहीं। 'त्रासदी' 'ट्रेजेडी' के आधार पर गढ़ लिया गया है।

योरोप की त्रासदी भी एक रूप में नहीं है।

यूनानी नाटकों से आरम्भ होकर शेक्सपियर तक आते-आते वह बहुत बदली है। वस्तुतः वह जीवन की वास्तविकता के इतने निकट आ गयी है कि हम अपने जीवन-दर्शन में रूढ़ न हों तो वह हमें अग्राह्य नहीं हो सकती।

संक्षेप में शेक्सपियर की त्रासदियों का मूल सूत्र यह है—अपूर्ण जीवन भले-बुरे के संघर्ष से पूर्ण होने के क्रम में है। उसमें बुरा तो नष्ट होता ही है, कुछ भला भी बुरे से अपरिहार्य रूप से जुड़े होने के कारण नष्ट हो जाता है। त्रासदी बुरे के नष्ट होने से नहीं होती, भले के नष्ट होने से होती है। पूर्णता की ओर प्रगति में कुछ मूल्य भले को भी चुकाना पड़ता है। पर एक अन्तर सभी त्रासदियों में स्पष्ट देखा जा सकेगा। अपने विनाश के क्षणों में जहाँ बुरा केवल अपनी विवशता देखता है वहाँ भला किसी न किसी रूप में अपने उत्सर्ग की सार्थकता से अचेत नहीं रहता। इतना भी त्रासदी को एकान्त विषाद, नैराश्य, त्रास अथवा दुःख के ऊपर उठा लेने के लिए पर्याप्त है। इसका आभास पाठकों को 'किंग लियर' में भी होगा।

विशेष अनुभूति तो नाटक को सहृदयतापूर्वक पढ़ने से ही हो सकती है।

20 प्रेसीडेंसी सोसायटी, नार्थ-साउथ रोड नं. 7
जुहू-पारले स्कीम, बम्बई-56

बच्चन

सत्येन्द्र शरत् को
इस आशा से
कि उनके निर्देशन में
कभी यह रंगमंच अथवा चित्रपट पर प्रस्तुत हो।

नाटक के पात्र

लियर	ब्रिटेन के महाराजा
फ्रांस के राजा	
बरगण्डी के ड्यूक	राजा
कार्नवाल के ड्यूक	राजा—रीगन का पति
अलबानी के ड्यूक	राजा—गोनेरिल का पति
केण्ट के अर्ल	सरदार
ग्लास्टर के अर्ल	सरदार
एडगर	ग्लास्टर के सरदार का बेटा—विवाहिता से
एडमण्ड	ग्लास्टर के सरदार का बेटा—रखैल से
क्यूरन	दरबारी
ओसवाल्ड	गोनेरिल का गुमाश्ता
वृद्ध पुरुष	ग्लास्टर के सरदार का जोतदार
डाक्टर	
विदूषक	
अफ़सर	एडमण्ड की सेवा में
भद्र पुरुष	कारडीलिया की सेवा में
उद्घोषक	
कार्नवाल का नौकर	
गोनेरिल, रीगन, कारडीलिया	लियर की बेटियाँ

लियर के साथ रहनेवाले सरदार, अफ़सर, दूत, सिपाही और नौकर-चाकर

स्थान—ब्रिटेन

किंग लियर

पहला अंक

पहला दृश्य

महाराज लियर के राजमहल का एक बड़ा कमरा

(केण्ट, ग्लास्टर और एडमण्ड का प्रवेश)

केण्ट : मैं समझता था कि महाराज, कार्नवाल के राजा से अलबानी के राजा को ज्यादा प्यार करते हैं।

ग्लास्टर : मुझे भी हमेशा ऐसा ही लगता था, लेकिन अब राज्य के बँटवारे से तो यह नहीं मालूम होता कि दोनों में से किसको ज्यादा चाहते हैं; क्योंकि दोनों के हिस्सों में इतनी बराबरी है कि किसी पर ग़ौर करें, उसे दूसरे से बेहतर नहीं कह सकते।

केण्ट : श्रीमन्, यह तो आपका बेटा है न ?

ग्लास्टर : इसका लालन-पालन तो, साहब, मेरे ही द्वारा हुआ है, पर इसे अपना बेटा कहने में मैं इतनी बार झेंपा हूँ, कि अब मैं बेहया हो गया हूँ।

केण्ट : आपकी बात कुछ पल्ले नहीं पड़ी।

ग्लास्टर : पर इस लड़के की माँ के पल्ले तो पड़ी थी; तभी तो उसके पाँव भारी हो गये, और इसके पहले कि उसे बिस्तर के लिए शौहर मिले, उसे पालने के लिए पूत मिल गया। इसमें तुम कोई दोष देखते हो ?

केण्ट : अगर यह दोष हो भी, तो मैं उसका निराकरण न चाहूँगा, क्योंकि परिणाम इतना अच्छा हुआ है।

ग्लास्टर : लेकिन मेरे एक बेटा है, ब्याहता से, इससे लगभग एक साल बड़ा, फिर भी वह मुझे ज्यादा प्यारा नहीं; गो ये बरखुरदार बुलाये जाने के पहले ही दुनिया में आ धमके, इसकी माता सुन्दरी थी, और इसके गर्भ में आने से पहले मैं उससे इतना मिलता-जुलता था कि अविवाहिता से होने पर भी इसे मुझे अपना पुत्र ही मानना चाहिए। एडमण्ड, आप महानुभाव को तुम जानते हो ?

एडमण्ड : नहीं, श्रीमन्।

ग्लास्टर : ये केण्ट के सरदार हैं। याद रखना इन्हें; मेरे सच्चे दोस्त।

एडमण्ड : श्रीमन्, मुझे अपना सेवक समझें।

केण्ट : तुम मुझे अच्छे लगते हो, और मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरे अधिक निकट आ सकोगे।

एडमण्ड : श्रीमन्, मैं आपकी सद्भावना का अधिकारी बनने का प्रयत्न करूँगा।

ग्लास्टर : यह नौ बरस बाहर रहा है, और फिर जानेवाला है। महाराज आ रहे हैं।

(तुरही बजती है। एक आदमी तुरही लिये आगे-आगे चलता है; पीछे हैं महाराज लियर, कार्नवाल, अलबानी, गोनेरिल, रीगन, कारडीलिया और नौकर-चाकर)

लियर : ग्लास्टर, जाओ, और फ्रांस औ' बरगण्डी के
राजाओं के साथ रहो तुम।

ग्लास्टर : जैसी आज्ञा।

[ग्लास्टर और एडमण्ड बाहर जाते हैं।

लियर : अब हम अपनी गुप्त बात कुछ कहने जाते।
मानचित्र दो; तुम्हें ज्ञात हो, हमने अपना
राज्य तीन भागों में बाँटा; और हमारी
प्रबल कामना, हम अपने जर्जर काँधों से
सब चिन्ताएँ, कार्य-भार सब दूर हटाएँ,
यौवन के कन्धों के ऊपर उनको डालें,
और मुक्त-निर्द्वन्द्व मृत्यु की ओर बढ़ें अब।
बेटे कार्नवाल, अलबानी, तुम दोनों ही
मुझे एक-जैसे प्यारे हो। आज बताने
हम जाते हैं, अपनी तीनों कन्याओं को
अलग-अलग क्या दाय-भाग हम देने जाते,
जिससे आगे कोई झगड़ा उठे न उनमें।
फ्रांस तथा बरगण्डी के राजे दोनों ही
मेरी सबसे छोटी कन्या के प्रेमी हैं,
और जीतने को उसका मन वे दोनों ही
राज भवन में बहुत दिनों से टिके हुए हैं,
और जानना अब चाहेंगे उसका निर्णय।
अब हम शासन, राज्य, राज्य की चिन्ताओं को
छोड़ रहे हैं तो कौतूहल एक जगा है;
मेरी कन्याओ, बतलाओ, तुममें ऐसी
कौन कि जिसको मुझसे सबसे अधिक प्यार है;
बेटी होने के अतिरिक्त, प्यार के नाते,
उसको सबसे ज्यादा धन-सम्पत्ति मिलेगी।
सबसे बड़ी गोनेरिल सबसे पहले बोले।

गोनेरिल : श्रीमन्, शब्दों में जितनी ताक़त कहने की
उससे ज़्यादा प्यार आपको मैं करती हूँ।
आँखों से, दुनिया से, दुनिया की खुशियों से
आप मुझे ज़्यादा प्यारे हैं; कुछ भी दुर्लभ,
मूल्यवान कुछ भी, क्या उसकी तुलना में है।
शील, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, मान से भी अभिनन्दित
जीवन से वह प्यार नहीं मापा जा सकता।
किस बेटी ने मेरे-जैसा प्यार किया है ?
और कहाँ है पिता जिसे पुत्री से इतना
प्यार मिला है ? साँसें ऐसा प्यार जताते
थक जाती हैं, हार मान लेती है भाषा।
आप मुझे प्यारे हैं इन सारी चीज़ों से।

कारडीलिया : (स्वगत) कारडीलिया ?—प्यार करेगी, मौन रहेगी।

लियर : इस रेखा से उस रेखा तक, बेटी, तुमको
हम देते हैं; इनकी सीमाओं के अन्दर
घन वन हैं, उर्वरा भूमि है, गहरी नदियाँ,
जिनके तट पर लम्बे-चौड़े चरागाह हैं।
तेरी औ' अलबानी की सन्तानों का हक़
इस धरती पर सदा-सर्वदा बना रहेगा।
बेटी अब दूसरी हमारी कार्नवाल की
पत्नी, रीगन, सबसे ज़्यादा प्यारी हमको,
क्या कहती है ? बोलो।

रीगन : मैं भी उसी धातु की
बनी हुई हूँ, जिसकी मेरी बहन बनी है।
प्यार आपको जितना करती वह, उतना ही
मैं करती हूँ; सच्चे दिल से मैं कहती हूँ,
प्यार आपके प्रति मेरा बिल्कुल ऐसा है
जिसको अपना कहकर उसने बतलाया है।
लेकिन, 'बिलकुल ऐसा' कहना ठीक न होगा;
इसका मुझसे कम है, मैं दावा करती हूँ;
मुझे घृणा है उस सुख से, उन उल्लासों से
जो कि इन्द्रियाँ किसी व्यक्ति को दे सकती हैं।
महामहिम के प्रति जो मेरा प्रेम समर्पित,
मैं तो केवल उससे ही सन्तुष्ट, सुखी हूँ।

कारडीलिया : (स्वगत) कारडीलिया दीन-हीन है, किन्तु नहीं भी;
क्योंकि मुझे विश्वास कि मेरा प्रेम, हृदय का,
जिह्वा से बोले शब्दों से ज़्यादा वज़नी।

लियर : अब अपने इस विशद राज्य का एक तिहाई
बड़ा भाग हम तुझे और तेरी सन्तानों
को देते हैं सदा के लिए; गोनेरिल को जो
भाग मिला है उससे तेरा क्षेत्र, मूल्य में,
सुख पहुँचाने की क्षमता में, ज़रा नहीं कम।

और अन्त में, पर न किसी भी हीन-दृष्टि से,
जो कि हमारे मन की सबसे बड़ी ख़ुशी है,
सबसे छोटी बेटी, जिसके प्यार के लिए
बरगण्डी औ' फ्रांस देश में बहनेवाली
दूध और मधु की धारों में होड़ लगी है,
अपनी बहनों से भी अच्छा एक तिहाई
पाने को क्या कह सकती है ? बोलो, बोलो !

कारडीलिया : श्रीमन्, कुछ भी नहीं कहूँगी।

लियर : कुछ भी ?

कारडीलिया : कुछ भी ?

लियर : कुछ होगा तब तो उसमें से कुछ निकलेगा।
एक बार फिर सोच-समझ लो।

कारडीलिया : यह मेरा दुर्भाग्य कि जो मेरे अन्तर में,
उसे नहीं बाहर शब्दों में रख सकती हूँ।
महामहिम की बेटी हूँ तो बेटी-जैसा
प्यार आपको मैं करती हूँ—न कम, न ज़्यादा।

लियर : कारडीलिया, ज़रा सँभलकर मुँह से बोलो,
वर्ना सब सौभाग्य-सम्पदा तुम खोती हो।

कारडीलिया : श्रीमन्, मैं अनभिज्ञ नहीं इससे कि आपने
मुझे दिया है जन्म, किया है मेरा पालन-
पोषण, मुझको प्यार किया है; इनके कारण
जो कर्तव्य उचित है मेरा, मैं करती हूँ—
आज्ञा का पालन करती हूँ, मान आपका,
प्यार आपको; पूछूँ मैं, मेरी बहनों ने
शादी क्यों की, जब उनका कहना कि आप ही
उनके सब कुछ ? शायद मैं भी ब्याह करूँगी;
और जिसे मैं मन से अपना पति मानूँगी,
उसको भी तो मेरा प्रेम समर्पित होगा,
उसकी भी तो चिन्ता मुझको करनी होगी,
उसके प्रति भी तो कर्तव्य निभाना होगा।
समझ नहीं पाती, बहनों ने शादी क्यों की
अगर पिता के प्रति होना था पूर्ण समर्पित।

लियर : तू जो कहती है क्या तेरे दिल में भी है ?

कारडीलिया : निश्चय, श्रीमन्।

लियर : जितनी छोटी, उतनी निष्ठुर।

कारडीलिया : जितनी छोटी, श्रीमन्, उतनी सच्ची समझें।

लियर : समझ लिया; सच्चाई तेरा दाय-भाग तब !
मुझे शपथ है सूरज की पावन किरणों की,
काली रातों की, रहस्य से भरे चाँद की,
नभ के नक्षत्रों की, जिनकी गति पर, स्थिति पर
हम दुनिया में आते, दुनिया से जाते हैं,
जो अपने को पिता आज से तेरा मानूँ,

तुझे रक्त से जन्मी अपनी पुत्री समझूँ;
मुझसे और हृदय से मेरे एक अपरिचित-
सी अब तू है। किसी समय की बेटी मेरी,
तू जिस अन्तर में रहती थी, वहाँ बसेगा,
सहायता-संवेदन पाएगा अब मुझसे
वह बर्बर नर-भक्षी जो भूखा होने पर
अपनी सन्तानों का ही भक्षण कर जाता।

केण्ट : मेरे स्वामी ! —

लियर : केण्ट, चुप रहो !
सिंह और उसके शिकार के बीच पड़ो मत।
प्यार, अधिक सब से, मैं इसको ही करता था,
सोच रहा था, इसकी स्नेहिल सेवा पाकर
मेरी वृद्धावस्था सुख से कट जाएगी।—
हट जा, मेरी आँखों से तू दूर चली जा !
अब तो मेरी शान्ति क़ब्र ही मुझको देगी;
इस छाती के अन्दर तेरा पिता मर चुका।—
फ्रांस-राज को बुलवाओ। कोई सुनता है ?
बरगण्डी के राजा को भी। कार्नवाल औ'
अलबानी, तीसरा भाग भी तुम दोनों का,
आधा-आधा। अब घमण्ड ही, जिसको कहती
यह भोलापन, इसको ब्याहे। अब मैं अपनी
शक्ति, प्रभुत्व, सम्पदा सारी जो राजा के
साथ जुड़ी है, तुम दोनों में बाँट रहा हूँ।
अब हम तुम दोनों के पास निवास करेंगे
मास-मास तक, बारी-बारी; साथ हमारे
सौ सरदार चलेंगे जिनका भार तुम्हारे
ऊपर होगा। नाम सिर्फ़ राजा का, उसकी
सभी पदवियाँ हम रक्खेंगे। प्यारे बेटो,
राज तथा राजस्व तुम्हारा सारा होगा,
राजा के कर्तव्य शेष सब तुम पर होंगे।
औ' जो मैंने कहा पुष्टि उसकी करने को
देता हूँ यह ताज बाँट लो तुम आपस में।

केण्ट : लियर महीपति, जिसको मैंने अपना राजा
मान सदा सम्मान दिया है, अपना मालिक
मान चला हूँ अनुगामी बन, और प्रार्थना
में अपना संरक्षक कहकर याद किया है—

लियर : चाप झुक चुका और खिंच गयी है प्रत्यंचा;
बीच, बाण के और निशाने के मत आ तू।

केण्ट : चले भले ही बाण, फाड़ दे छाती मेरी,
उद्धत होगा केण्ट, लियर जब पागल होगा।
वृद्ध, चाहता तू क्या करना ? सोच रहा तू,
भय खाकर कर्तव्य न अपना मुँह खोलेगा,

शक्ति खुशामद के आगे जब झुक जायेगी ?
सच्चाई को साफ़-साफ़ तब कहना होगा
जब महानता नादानी पर उतर पड़ी हो।
अपनी गरिमा, शक्ति राजसी संरक्षित रख;
और सोचकर भली-भाँति, अपनी लगाम रख
इस भयावनी उतावली पर। अपने मत पर
मैं अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहा हूँ,
तेरी सबसे छोटी लड़की प्यार नहीं कम
तुझको करती। धीमे स्वर से हृदय-हीनता
और खोखलापन ही व्यक्त नहीं होता है।

लियर : केण्ट, प्राण प्यारे हों तो मत और बोल तू।

केण्ट : अपने प्राणों से दी मैंने सदा चुनौती
उनको जो तेरे दुश्मन हैं। मरने का डर
मुझे नहीं है, मेरी मंशा, तेरी रक्षा।

लियर : आँखों के आगे से हट जा !

केण्ट : लियर, खोलकर आँख देख तू। वफ़ादार तू
अपना जब खोजेगा, मुझको ही पायेगा।

लियर : अब मैं खाकर क़सम—

केण्ट : —क़सम से, महाराज अब
क़सम आपकी बेमतलब है।

लियर : नीच, उपाधी !

[तलवार म्यान से निकालने को मूठ पर हाथ रखता है

अलबानी, कार्नवाल : क्षमा दान दें इसको, श्रीमन्।

केण्ट : कर;
वधकर अपने वैद्यराज का औ' कुरोग को
बढ़ जाने दे। अब भी अपना भाग्य बदल तू।
वर्ना जब तक है आवाज़ गले में मेरे
मैं कहता जाऊँगा तूने बुरा किया है।

लियर : सुन, गद्दारी पर आमादे !
तू अब भी सेवक है, अपने स्वामी की सुन !
तूने कोशिश की हम अपने प्रण को तोड़ें,
जैसा हमने कभी आज तक नहीं किया है;
औ' घमण्ड से शीश उठा तू राजशक्ति औ'
राजाज्ञा के बीच पड़ा है, जिसे हमारा
पद, स्वभाव भी, कभी नहीं बर्दाश्त करेगा;
हम अपने सत्ताधिकार से राजदण्ड यह
तुझको देते। तुझे पाँच दिन की मुहलत है;
जीवन-संकट से बचने का जो प्रबन्ध तू
चाहे कर ले, और छठे दिन पीठ घिनौनी
दिखलाता तू देश हमारा छोड़ चला जा।

देश-निकाला से दसव दिन अगर हमारी
सीमाओं में तेरा सिर दिख गया कहीं तो
उसको धड़ से तुरत अलग कर दिया जायगा।
बस अब हट जा; शपथ उठाकर हम कहते हैं,
यह आदेश अपेल रहेगा।

केण्ट : मुझे विदा दे,
राजा, जो अब ऐसा दिखलायी भर देगा।
आज़ादी बाहर जाती है, देश-निकाला
यहीं रहेगा—(**कारडीलिया से**) ओ सुकुमारी, देव गगन के
तुझको अपनी करुण छत्र-छाया में रक्खें।
तूने सोचा ठीक, बहुत ही ठीक कहा है।

(**गोनेरिल और रीगन से**)

बड़ी तुम्हारी कथनी, करनी भी बन पाये;
शब्द प्रेम के सार्थक हों अपने प्रभाव में !

(**अलबानी और कार्नवाल से**)

राजकुमारो, नमस्कार लो, केण्ट विदा अब तुमसे लेगा;
अब वह जाकर कहीं किसी वीराने को आबाद करेगा।

[**बाहर जाता है**

(**तुरही बजती है। फ्रांस और बरगण्डी के राजा तथा परिचारकों के साथ ग्लास्टर का पुनः प्रवेश**)

ग्लास्टर : फ्रांस और बरगण्डी-पति आ गये, नरेश्वर !

लियर : बरगण्डी-पति,
पहले हम तुमसे कुछ कहना चाह रहे हैं,—
फ्रांस-नृपति की भाँति हमारी कन्या के तुम
भी अभिलाषी —कम-से-कम दहेज़ तुम कितना
उसके साथ लिया चाहोगे, जो न मिला तो
उसे नहीं तुम ब्याह सकोगे ?

बरगण्डी : महाराज ने
जो देने को कह रक्खा है उससे ज़्यादा
नहीं चाहता, औ' न उसे कम आप करेंगे।

लियर : बरगण्डी-पति,
वह तो तब की बात, हमें जब वह प्यारी थी,
किन्तु इस समय उसकी क़ीमत गिरी हुई है।
श्रीमन्, वह उस जगह खड़ी है। माटी की उस
पुतली में यदि कुछ हो जो तुमको पसन्द हो,
या वह जैसी भी, जिससे हम अप्रसन्न हैं,
औ' कुछ जिसके पास नहीं है, यदि उसके प्रति
प्रेम तुम्हें हो तो ले जाओ, अपनी समझो।

बरगण्डी : नहीं जानता, क्या उत्तर दूं।

लियर : उसमें दुर्गुण भरे हुए हैं, उसका कोई
मित्र नहीं है, उसको हम नफ़रत करते हैं,
उसे बद्-दुआ देते हैं, औ' क़सम उठाकर
कहते हैं हम कभी न उसको अपनाएँगे।
तुम छोड़ो, चाहे अपनाओ।

बरगण्डी : श्रीमन्, मुझको
क्षमा करेंगे; ऐसी हालत में अपनाना
नामुमकिन है।

लियर : श्रीमन्, तो फिर छोड़ो उसको।
हम अपने राज्याधिकार से बता चुके जो
दौलत उसकी।—फ्रांस-महीपति, तुमको अपने
निकट मानकर यह सलाह देना चाहूँगा,
ब्याह करो मत उससे जिससे मुझे घृणा है,
और प्रार्थना मानो मेरी, इस मूर्खा को—
जिसको उसका पिता सुता अपनी कहने में
लज्जा का अनुभव करता है,—दूर हटाकर
किसी सुयोग्या को अपने मन में बिठलाओ।

फ्रांस : यह सुनकर आश्चर्य मुझे है; जिस कन्या को
क्षण भर पहले आप समझते थे सर्वोत्तम,
जिसका गुण गाने में आप नहीं थकते थे,
जिसे सहारा वृद्धावस्था का कहते थे—
सबसे अच्छी, सबसे प्यारी—उसने पल में
क्या ऐसा भीषण कर डाला, जो उस पर से
कृपा-दृष्टि हट गयी आपकी। निश्चय उसने
कुछ अपराध किया है ऐसा अस्वाभाविक
जो कि घृणित है; या फिर पहले उसके प्रति जो
प्यार आपका था उसमें ही कुछ ग़लती थी;
बुद्धि करिश्मा ही जब तक न दिखाये कोई,
दोनों में से नहीं किसी पर मैं विश्वास
कभी कर सकता।

कारडीलिया : महामहिम से एक प्रार्थना—
चिकनी-चुपड़ी बातें तो बढ़-बढ़कर करना
किन्तु काम पर पीछे हटना—यह गुण मेरे
पास नहीं है; जो कुछ मैं करना चाहूँगी,
कहने के पहले उसको कर दिखलाऊँगी—
प्रकट आप कर दें यह सब पर, मैंने कुछ भी
किया न ऐसा जिससे धब्बा लगे नाम पर,
ख़ून किसी का किया न कोई बुरा काम ही,
किया न कोई पाप न कुछ अपमानजनक ही,
जिससे अपनी कृपा दृष्टि से वंचित मुझको
किया आपने—गो उससे वंचित होकर भी
मैं अपने को धनी समझती—मेरी आँखें

स्नेह-समादर देने में अब भी समर्थ हैं—
मैं प्रसन्न हूँ, ऐसी जीभ न पायी मैंने,

(रीगन और गोनेरिल की ओर संकेत)

गो मैं ऐसी जीभ न रखने के कारण ही
प्यार आपका खो बैठी हूँ।

लियर : पाकर जन्म प्रसन्न नहीं मुझको करना था,
तो इससे अच्छा था तू जन्म ही न लेती।

फ्रांस : बात सिर्फ़ इतनी-सी है ? यह तो स्वभाव का
संकोचीपन जो अक्सर वह प्रकट न कहता
जो करने की इच्छा रखता। बरगण्डी-पति,
इस रमणी के लिए आपको क्या कहना है ?
प्रेम अलग हो प्रेम-केन्द्र से, प्रेम-पात्र से,
जब अन्यत्र भटकता है वह प्रेम न रहता।
आप इसे क्या अपनाएँगे ? रूप और गुण
ही उसके क्या कम दहेज़ हैं ?

बरगण्डी : लियर महीपति,
राज्य-भाग जो देने का प्रस्ताव किया था
स्वयं आपने, केवल उतना ही दे दें, मैं
कारडीलिया को अपनाने को उद्यत हूँ—
बरगण्डी की रानी होगी।

लियर : कुःछ न दूँगा।
क़सम उठा ली है मैंने। मैं नहीं टलूँगा।

बरगण्डी : मुझे खेद है, जब तुमने खो दिया पिता को
अपनी पत्नी नहीं बना सकता मैं तुमको।

कारडीलिया : भला आपका हो, बरगण्डी।
प्रेम आपका धन-दौलत पर निर्भर है तो
नहीं आपकी पत्नी बनना मैं चाहूँगी।

फ्रांस : परम सुन्दरी कारडीलिया, तू निर्धन है
इसीलिए तू परम धनी है; परित्यक्ता हो
परम ग्राह्य है; हेय, इसी से परम प्रेय है;
मैं तुझ पर, तेरी गुणावली पर बलिहारी।
जिसको ठुकरा दिया गया है उसको मेरा
अपना लेना विधि-संगत हो ! अचरज ही है,
जिसे देवताओं ने निर्ममता से त्यागा
उसके प्रति ममता मेरे मन में उमड़ी है।
महाराज ने सर्वथैव असहाय बनाकर
जिस कन्या को मेरे पथ में डाल दिया है,
रानी होगी मेरी, मेरे फ्रांस देश की।
पनियल बरगण्डी के सारे सरदारों के
धन-दौलत से सोम-सुराही यह न ख़रीदी
जा सकती है। कारडीलिया, ले अब इनसे

विदा, रहे हैं यद्यपि ये तेरे प्रति निर्मम,
और वहाँ चल पग-पग तेरा जहाँ स्वागतम्।

लियर : फ्रांस-राज ले जा, वह तेरी; हम तो उसको
अपनी कन्या नहीं मानते, औ' न कभी अब
हम फिर उसका मुँह देखेंगे; साथ न तेरे
दुआ हमारी, कृपा हमारी, प्रेम हमारा।
बरगण्डी-पति, चलें साथ में।

[तुरही बजती है; लियर, बरगण्डी, कार्नवाल, अलबानी, ग्लास्टर और नौकर-चाकर जाते हैं

फ्रांस : विदा माँग अपनी बहनों से।

कारडीलिया : पूज्य पिता की रत्न-राशियो, कारडीलिया
सजल नयन से विदा माँगती; जो तुम, मुझसे
छिपी नहीं हो; बहन तुम्हारी हूँ, इस कारण
दोष तुम्हारे मुँह पर लाते सकुचाती हूँ।
बड़े मान से, देखो, वृद्ध पिता को रखना;
और कहा जैसा, वैसा ही स्थान हृदय में
उनको देना; हाय, मानते यदि वे मेरी,
उन्हें तुम्हारे पास नहीं मैं रहने देती।

रीगन : बड़ी चली है फ़िक्र पिता की करनेवाली।

गोनेरिल : फ़िक्र करो तुम अपने पति को खुश रखने की
जिसे मिलीं तुम जैसे दी हो भीख भाग्य ने।
तुमने सीखा नहीं पिता का आदर करना;
तुमने जैसा किया, पड़ेगा तुमको भरना।

कारडीलिया : लाख करो चालाकी, पोल समय खोलेगा;
पाप छिपाया आख़िर को ज़ाहिर होता है;
मुँह काला करता है; अच्छा, सुखी रहो तुम।

फ्रांस : कारडीलिया, आओ, अब हम चलें यहाँ से।

[फ्रांस और कारडीलिया बाहर जाते हैं

गोनेरिल : बहन, मुझे बहुत-सी ऐसी बातें करनी हैं जिनका गहरा सम्बन्ध हम दोनों से है। मैं समझती हूँ, हमारे पिता आज यहाँ से जायेंगे।

रीगन : ज़रूर, और तुम्हारे साथ; दूसरे महीने हमारे यहाँ आयेंगे।

गोनेरिल : तुमने देखा कि अपनी बुढ़ौती में कैसे ढुल-मुल हो गये हैं; और आज उन्होंने अपना जो रूप दिखाया उससे तो हद ही कर दी; वे हमेशा से हमारी बहन को सबसे ज़्यादा प्यार करते थे; और साफ़ ज़ाहिर है कि सिर्फ़ अपनी नासमझी से अब उन्होंने उसे दुत्कार दिया है।

रीगन : इसे तुम उनकी बुढ़ौती की बहक कह लो; लेकिन उन्होंने कभी अपने को ठीक समझा ही नहीं।

गोनेरिल : उतावलापन तो उनकी जवानी में भी रहा है जबकि आदमी

का दिमाग़ सब तरह से चुस्त-दुरुस्त रहता है; अब तो हमें उनकी दो-तरफ़ी कमज़ोरियों को बर्दाश्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए—एक तो, एक ज़माने से लगी आदतों की, और दूसरी, उस बेक़ाबू बहक और बेवजह गुस्से की, जो बुढ़ाई की लाचारी बनकर आती है।

रीगन : जैसी सनक में आकर उन्होंने केण्ट को देश-निकाला दे दिया वैसी ही और बातें भी करते रहेंगे।

गोनेरिल : पता नहीं, फ्रांस-राज को विदा देते समय वे क्या कर बैठें। हमें एक-राय रहना चाहिए। अगर उन्होंने अपने अधिकार का मन-माना उपयोग करके राज्य का कोई भाग उसे समर्पित कर दिया तो हमारे साथ बड़ा अन्याय होगा।

रीगन : हमें इस पर और ग़ौर करना होगा।

गोनेरिल : हमें कुछ करना चाहिए, और फ़ौरन।

दूसरा दृश्य

ग्लास्टर के सरदार के गढ़ का एक बड़ा कमरा

(एक पत्र के साथ एडमण्ड का प्रवेश)

एडमण्ड : प्रकृति, इष्ट देवी तू मेरी; तेरे नियमों
पर मैं चलता। दुनियादारी की बीमारी
मैं क्यों पालूँ, औ' समाज के पाखण्डों को
वंचित करने दूँ उससे जिस पर हक़ मेरा?
भाई से मैं बारह मास महज़ छोटा हूँ।
नहीं ब्याहता से जन्मा हूँ, इसीलिए बस
मैं खोटा हूँ? जैसे उसके हाथ-पाँव हैं,
मेरे भी हैं; जैसे उसकी बुद्धि सजग है,
मेरी भी है; और शक्ल-सूरत मेरी है
ब्याही के ही बच्चे-जैसी। तब क्यों दुनिया
दोष लगाये हम पर; हमको दोषी समझे;
हमें दोग़ला कहे; दिखाये हमको नीचा?
तीव्र वासना ने दुनिया की आँख बचाकर
जन्म दिया है जिनको उनमें गुण-स्वभाव का
जो पूरापन, जो पैनापन पाया जाता,
कभी न मिलता उन भोंदू-सी औलादों में
जिनका गर्भाधान हुआ है ढीली-ढाली
खाटों, गन्दे-बुसे बिस्तरों में अनजाने,
आधे सोने, आधे जगने की हालत में।
असली एडगर, जायदाद लूँगा मैं तेरी;
भले दोग़ला हूँ मैं, लेकिन पिता हमारे

असली से कम प्यार नहीं मुझको करते हैं।
'असली' भी क्या खूब शब्द है ! तो असली जी,
मेरा नक़ली पत्र अगर यह चल जाता है,
फलती है मेरी चतुराई, तो खोटा एडमण्ड
बनेगा सच्चा —फूलूँगा, फैलूँगा;
नभ के देवो, पक्ष दोग़लों का अब तुम लो।

(ग्लास्टर का प्रवेश)

ग्लास्टर : देश-निकाला मिला केण्ट को ! फ्रांस-राज को
नाराज़ी से विदा दी गयी ! रात नरेश्वर
गये यहाँ से ! शक्ति समर्पित कर सब अपनी !
आया हाथ वजीफ़ा केवल। और हुआ सब
ऐसे जैसे करा किसी ने दिया अचानक।—
कैसे हो एडमण्ड ! ख़बर क्या ?

एडमण्ड : कोई ख़बर नहीं है श्रीमन्।

[पत्र छिपाता है

ग्लास्टर : इस तेज़ी से पत्र छिपाने का क्या मतलब ?

एडमण्ड : खास नहीं है कुछ भी, श्रीमन्।

ग्लास्टर : तुम कुछ पढ़ रहे थे ?

एडमण्ड : कुछ नहीं, श्रीमन्।

ग्लास्टर : कुछ तो है; नहीं तो तुम्हें इस हड़बड़ी से इसे जेब में डालने की क्या ज़रूरत थी ? जो कुछ नहीं है उसे छिपाने की कोई ज़रूरत नहीं होती। लाओ, दिखाओ; निकालो; अगर कुछ नहीं होगा तो उसे देखने के लिए मुझे चश्मे की आवश्यकता नहीं होगी।

एडमण्ड : आपकी बड़ी कृपा होगी, श्रीमन्, मुझे क्षमा करें; यह मेरे भाई का पत्र है जिसे मैंने अभी पूरा नहीं पढ़ा, और जितना पढ़ा है, उससे मैं समझता हूँ, वह आपके देखने लायक़ नहीं है।

ग्लास्टर : ख़त को मेरे हवाले कीजिए, जनाब !

एडमण्ड : दोनों तरह मेरी मुसीबत है—दूँ तो भी, न दूँ तो भी। थोड़ा-बहुत जो मैंने समझा है उससे मैं कह सकता हूँ कि जो लिखा गया है, ठीक नहीं है।

ग्लास्टर : दिखलाओ, दिखलाओ।

एडमण्ड : अपने भाई के पक्ष में मैं इतना कहना चाहूँगा कि शायद उसने इसे आपके प्रति मेरे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए लिखा है।

[पत्र ग्लास्टर को देता है

ग्लास्टर : **(पढ़ता है)** "वृद्धों के प्रति सम्मान की यह नीति हमारे जीवन के सबसे मधुर दिनों में दुनिया को हमारे लिए सबसे कटु बना देती है, हमारे सौभाग्य से हमको इतने दिनों तक वंचित रखती है कि हम स्वयं वृद्ध हो जाते हैं और उसका कुछ भी रस नहीं

ले पाते। मैं ऐसा सोचने लगा हूँ कि वृद्धों के क्रूर नियन्त्रण की बेड़ियों में रहना हमारी कमज़ोरी ही नहीं, बेवकूफ़ी भी है; वे हमें इसलिए नहीं जकड़तीं कि उनमें ताक़त है, बल्कि इसलिए कि हम उन्हें बर्दाश्त कर लेते हैं। मेरे पास आओ, जिससे इस सम्बन्ध में हम और बातें कर सकें। अगर हमारे पिता अखण्ड निद्रा में सुलाये जा सकें तो सदा के लिए उनकी आधी जायदाद तुम्हारी होगी और तुम मेरे प्यारे भाई की तरह रहोगे —एडगर।"—हूँ !—षड्यन्त्र। 'अखण्ड निद्रा में सुलाये जा सकें···उनकी आधी जायदाद तुम्हारी होगी।' मेरा बेटा एडगर! कट नहीं गया उसका हाथ इसको लिखते ? फट नहीं गयी उसकी छाती, फूट नहीं गया उसका भेजा ? कब यह तुम्हारे पास आया ? कौन लाया ?

एडमण्ड : कोई इसे मेरे पास नहीं लाया, श्रीमन्; और यही तो चाल है; यह मुझे अपने कमरे में खिड़की के ठीक नीचे पड़ा मिला।

ग्लास्टर : तुम अपने भाई की लिखावट तो पहचानते हो न ?

एडमण्ड : श्रीमन्, अगर कोई उचित बात लिखी होती तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता था कि यह उसी की लिखावट है; पर यहाँ जैसा कुछ लिखा है उसे देखकर तो मैं यह सोचता हूँ कि शायद यह उसकी नहीं है।

ग्लास्टर : उसी की है।

एडमण्ड : श्रीमन्, है तो उसी के हाथ की लिखावट; पर मुझे उम्मीद नहीं कि दिल से भी वह ऐसा चाहता है।

ग्लास्टर : इस मामले में उसने पहले भी कभी तुम्हें टटोला है ?

एडमण्ड : कभी नहीं, श्रीमन्; पर मैंने अक्सर उसे इस बात पर ज़ोर देते सुना है कि जब बेटा जवान हो जाये और बाप बूढ़ा, तब उसे बेटे के संरक्षण में रहना चाहिए, और अपनी जायदाद का प्रबन्ध बेटे के हाथों सौंप देना चाहिए।

ग्लास्टर : शैतान कहीं का, शैतान ! जो उसकी राय है वही तो उसने लिखी है ख़त में। ऐसे शैतान से मुझे नफ़रत है। मुरहा, नामुराद, हैवान, शैतान ! शैतान से बदतर ! जाओ, पता लगाओ, वह कहाँ है; गिरफ़्तार कर लो उसे। ऐसे शैतान के मुँह पर मैं थूकना भी न चाहूँगा। कहाँ है वह ?

एडमण्ड : श्रीमन्, मुझे ठीक नहीं मालूम। लेकिन अगर आप बुरा न मानें तो मैं कहूँ कि ठीक बात यह होगी कि जब तक मेरे भाई की मंशा का सही-सही पता नहीं लग जाता तब तक आप अपने क्रोध को क़ाबू में रक्खें। उसके इरादे को ग़लत समझकर अगर आप गुस्से में कुछ उसके ख़िलाफ़ कर बैठते हैं तो उससे आपके नाम पर धब्बा आयेगा और उसके दिल को ऐसा घाव लगेगा जो शायद ही कभी भर सके। मैं अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर कह सकता हूँ कि उसने यह केवल आपके प्रति मेरे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए लिखा है; आपके लिए कोई ख़तरा खड़ा करने के इरादे से नहीं।

ग्लास्टर : तुम ऐसा समझते हो ?

एडमण्ड : अगर श्रीमान् को यह उचित जान पड़े तो मैं आपको ऐसी जगह खड़ा कर सकता हूँ जहाँ से आप इस सम्बन्ध में हमारी बातचीत सुन सकें; और ख़ुद अपने कानों से सुनकर अपनी तसल्ली कर लें; और ऐसा प्रबन्ध मैं आज शाम से पहले ही कर सकता हूँ।

ग्लास्टर : वह ऐसा राक्षस नहीं हो सकता—

एडमण्ड : निश्चय, नहीं।

ग्लास्टर : —जो अपने पिता को ही खा ले, जो उसे दिल से प्यार करता है, उस पर निसार है। कहाँ ज़मीन, कहाँ आसमान ! एडमण्ड, उसका पता लगाओ; उसके अन्दर झाँको; मेरी प्रार्थना है तुमसे। इस मामले में जो क़दम ठीक समझो, तुम ख़ुद उठाओ। असलियत जानने के लिए मैं अपना सब कुछ देने को तैयार हूँ।

एडमण्ड : श्रीमन्, मैं फ़ौरन उसका पता लगाऊँगा। काम पूरा करने के लिए कुछ भी उठा न रक्खूँगा; और सारी बातें आपको बता दूँगा।

ग्लास्टर : हाल ही जो सूर्य और चन्द्र ग्रहण पड़े हैं उनसे हमारा कोई भला नहीं होने का। हम अपनी तर्क-बुद्धि लगाकर भले ही कह लें कि ऐसा क्यों होता है और वैसा क्यों नहीं होता; पर इन घटनाओं का जो परिणाम होता है उसे देखकर बुद्धि चकरा जाती है। प्रेम ठण्डा पड़ जाता है, दोस्ती ख़त्म हो जाती है, भाई-भाई अलग हो जाते हैं, शहरों में ग़दर हो जाता है, मुल्कों में झगड़े ठन जाते हैं, महलों में बग़ावत छिड़ जाती है और बाप-बेटे के सम्बन्ध टूट जाते हैं। राजा की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और पिता अपनी सन्तान के विरुद्ध खड़ा होता है। हमने अपने समय में क्या-क्या नहीं देखा—जालसाज़ी, खोखलापन, धोखेबाज़ी, और बर्बाद करनेवाले वे सारे फ़साद जो हमें क़ब्र में भी चैन नहीं लेने देते।—इस शैतान का पता लगाओ, एडमण्ड; इससे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ने का; काम होशियारी से करना।—और सीधे-सच्चे केण्ट को देश-निकाला दे दिया जाता है ! उसका क़सूर ? ईमानदारी। हैरत होती है।

[**बाहर जाता है**

एडमण्ड : दुनिया के इस भोंदूपन का कोई जवाब नहीं कि जब क़िस्मत हमारा साथ नहीं देती—शायद अपनी ही किसी कमी के कारण—तो हम सारा दोष सूरज, चाँद, सितारों के माथे मढ़ देते हैं, जैसे कि हम शैतान बनने के लिए लाचार हैं, बेवकूफ़ हैं तो आसमानी दबाव के कारण, चण्ट, चोर, चालबाज़ हैं तो ग्रहों से गृहीत होने की वजह से; झूठे, शराबी, रण्डीबाज़ हैं तो इसलिए कि नक्षत्रों के प्रभाव के सामने हम सिर

झुकाने को मजबूर हैं; और हममें जितनी खराबियाँ हैं सब अल्ला मियाँ ने हम पर लाद दी हैं। इस हरामज़ादे इन्सान ने किस खूबी से अपना बचाव किया है—अपनी सारी हैवानियत के लिए उसने सितारों को ज़िम्मेदार ठहरा दिया है। मेरे पिता जब मेरी माता का गर्भाधान कर रहे थे उस समय चाँद ग्रहण से छूट रहा था और जब मेरा जन्म हुआ तब सप्त-ऋषियों की दृष्टि मुझ पर थी—इसी से मुझे उद्दण्ड और लम्पट होना चाहिए। धत्तेरे की! अगर मेरे गर्भ में आते समय अरुन्धती की भी दृष्टि मुझ पर होती तो मैं वही होता जो मैं हूँ। एडगर—

(एडगर का प्रवेश)

और क्या मौक़े से वह आ टपका है जैसे पुरानी कामदी में क़िस्मत पलटा खाये। अब ऊपर से तो मैं बनूँ उदास, पर भीतर छिपी हो कटारी, और आहें भरूँ ऐसे जैसे कोई पागल-खाने का भिखारी। इन ग्रहणों ने ऐसे विरोधाभासों की भविष्य-वाणी कर ही रक्खी है।···न—ना—न—ना—ना···

एडगर : कहो, भाई एडमण्ड! किस गम्भीर चिन्तन में पड़े हो?

एडमण्ड : भाई, मैंने उस दिन कहीं पढ़ा था कि ग्रहणों का प्रभाव क्या-क्या होगा; उसी के बारे में सोच रहा हूँ।

एडगर : तुम ऐसी बातों में अपना सिर खपाते हो?

एडमण्ड : मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि जिन परिणामों के बारे में उसने लिखा है, दुर्भाग्यवश, वे सामने आते हैं; जैसे माता-पिता और उनकी सन्तानों के बीच तनातनी; मौत, सूखा, पुराने सम्बन्धों का टूटना; राज्यों का बँटवारा; राजाओं और सरदारों के विरुद्ध बलवे और बग़ावतें, बे-बुनियाद अन्देशे, दोस्तों को देश-निकाला, मित्रों में मनमुटाव, मियाँ-बीबी का अलगाव और न जाने क्या-क्या।

एडगर : यह तुम ज्योतिष के मुरीद कब से हुए?

एडमण्ड : छोड़ो भी; यह बतलाओ कि तुम पिताजी से पिछली बार कब मिले?

एडगर : कल रात ही।

एडमण्ड : तुम्हारी उनकी कुछ बातचीत हुई?

एडगर : खूब; दो घण्टे तक।

एडमण्ड : एक दूसरे से खुश-खुश विदा हुए? उनकी बात या उनके रुख से कोई नाराज़गी नहीं ज़ाहिर हुई?

एडगर : बिल्कुल नहीं।

एडमण्ड : ज़रा सोचो कि अपनी किसी बात से तुमने उन्हें नाराज तो नहीं कर दिया; और मेरी बात मानो तो कुछ दिनों तक, जब तक कि उनका ग़ुस्सा ठण्डा नहीं पड़ जाता, उनसे दूर ही रहो; इस वक़्त तो उनके दिमाग़ में वह आग है कि तुमको देखते ही वह इस क़दर भड़क उट्ठेगी कि उसको बुझाना नामुमकिन होगा।

एडगर : तो किसी शैतान ने मेरे ख़िलाफ़ उनके कान भरे हैं।

एडमण्ड : इसका अन्देशा मुझे भी है, भाई। मेहरबानी करके तुम अपने को क़ाबू में रक्खो, जब तक कि उनके ग़ुस्से की तेज़ी में कमी नहीं आती, और मेरा कहना मानो, मेरे साथ मेरे डेरे पर चले चलो जहाँ से ठीक मौक़े पर मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलूँगा जहाँ से तुम पिताजी की बातचीत सुन सको। मेहरबानी करके जाओ; यह लो मेरी चाभी। अगर बाहर जाना ही हो तो हथियारबन्द होकर निकलो।

एडगर : हथियारबन्द होकर, भाई !

एडमण्ड : भाई, तुम्हारी भलाई के लिए ही मैं यह सलाह देता हूँ कि हथियारबन्द होकर निकलो। मैं ईमान से कहता हूँ कि पिताजी के इरादे तुम्हारी तरफ़ अच्छे नहीं हैं; जो मैंने देखा-सुना वह मैंने तुमसे बता दिया, लेकिन बहुत कम करके; क्या डरावनी शक्ल उनकी हो गयी थी, मारे ग़ुस्से के। मेहरबानी करके उनसे दूर ही रहो।

एडगर : मुझे जल्द ही मिलोगे न ?

[**एडगर बाहर जाता है**

एडमण्ड : भला तुम्हारा करना केवल चाह रहा हूँ।
पिता तुरत-विश्वासी, भाई ऐसा भोला
बुरा किसी का करने को वह सोच न सकता;
और किसी पर भी सन्देह नहीं करता है;
इसका है ईमान गधा वह जिसके ऊपर
मेरी चालें सहज सवारी गाँठ सकेंगी।
साफ़ देखता हूँ अब मुझको जो करना है।
अगर जन्म से नहीं, अक़्ल से लूँगा मैं जागीर तुम्हारी,
बना सके जो काम चलो वह चाल, करो तरकीबें सारी।

[**बाहर जाता है**

तीसरा दृश्य

अलबानी के सरदार के महल का कमरा

(गोनेरिल का अपने प्रमुख परिचारक, ओसवाल्ड, के साथ प्रवेश)

गोनेरिल : क्या मेरे पिता ने मेरे दरबारी को सिर्फ़ इस बात पर पीट दिया कि उसने उनके विदूषक को डाँटा था ?

ओसवाल्ड : हाँ, देवीजी।

गोनेरिल : वे मुझ पर दिन-रात ज़्यादती करते रहते;
हर घण्टे वे टण्टा ऐसा खड़ा कर दिया
करते हैं हम हक्का-बक्का रह जाते हैं।
यह मुझसे बर्दाश्त न होगा। उनके हमदम
दुन्द मचाते, औ' वे खुद भी ज़रा-ज़रा-सी
बातों को ले, हम पर उबल पड़ा करते हैं।
जब शिकार से लौटें, उनसे मैं न मिलूँगी।
कह देना बीमार पड़ी हूँ। ठीक रहेगा
तुम सेवा में पहले-सी चुस्ती न दिखाओ;
करें शिकायत तो जवाब उनको मैं दूँगी।

ओसवाल्ड : देवीजी, वे आ पहुँचे; आवाज़ें सुनिये।

[**अन्दर नरसिंहों की आवाज़**

गोनेरिल : काम कहें तो ढील करो पूरा करने में;
टालमटोल करो, तुम और तुम्हारे साथी;
मैं चाहूँगी साफ़ बात हो जाये इस पर;
यहाँ नहीं उनको पसन्द तो जायँ बहन के;
इस पर हम दोनों ही बहनें एक-राय हैं—
मनमानी हम उन्हें नहीं करने दे सकतीं।
भकुआ बुढ़वा अब भी अन्दर हवस बसाये
करे हुकूमत सब पर अपने अधिकारों से,
जिनको उसने अपने मन से छोड़ दिया है।
क़सम न कहती, बूढ़े फिर बच्चे बन जाते;
वे बिगड़ें तो उन्हें राह पर लाना होता
फुसला-पँदला करके या फिर डाँट-डपट से।
याद रहे जो कहा।

ओसवाल्ड : बहुत अच्छा देवीजी।

गोनेरिल : सामन्तों की तरफ़ दिखाओ लापरवाही;
जो होगा, देखा जायेगा; सबसे कह दो।
मैं चाहूँगी मौक़ा आये, आ ही जाये,
मुझको अपनी मर्ज़ी को ज़ाहिर करने का।
और बहन को इसी वक़्त मैं ख़त लिखती हूँ,
वही रवैया उनका भी हो जो मेरा है।
जाकर अब खाना लगवाओ।

[**दोनों बाहर जाते हैं**

चौथा दृश्य

उसी महल में एक बड़ा कमरा

(**वेश बदले हुए केण्ट का प्रवेश**)

केण्ट : अगर दूसरों के लब-लहजों को उधार ले
अपनी बोली बदल सकूँ मैं तो निश्चय ही
अपना वह शुभ कार्य सफलता से कर लूँगा
जिसके कारण मैंने अपना भेस छिपाया।
देश-निकाले केण्ट, अगर तू उसकी सेवा
कर सकता है जिसने तुझको ठुकराया है,—
ऐसा ही मुझसे हो पाये,—तेरा मालिक,
जो तुझको प्यारा है, तुझमें अपना सबसे
स्वामि-भक्त सेवक पायेगा।

(**अन्दर नरसिंहों की आवाज़। अपने साथी-सामन्तों और नौकर-चाकरों के साथ लियर का प्रवेश**)

लियर : खाना मुझे इसी वक़्त मिलना चाहिए। जाओ, फ़ौरन लगवाओ।—

[**एक नौकर बाहर जाता है।**

(**केण्ट की ओर देखकर**)—अरे! तू कौन है?

केण्ट : एक साधारण आदमी, श्रीमन्।

लियर : काम क्या करता है? हमसे चाहता क्या है?

केण्ट : काम, वही करता हूँ जो करने लायक़ हूँ; चाहता हूँ, उसकी सेवा करना—सच्चे दिल से—जो मुझ पर विश्वास कर सके; उसे प्यार करना, जो ईमानदार हो; उसके साथ रहना, जो हो तो बुद्धिमान पर बोले कम; क़यामत के दिन से डरना; लड़ना ही पड़े तो लड़ना; और वफ़ादार रहना।

लियर : तू कौन है?

केण्ट : एक बहुत ईमानदार आदमी, और ऐसा ग़रीब जैसा इस देश का राजा।

लियर : अगर तू प्रजा की हैसियत से उतना ही ग़रीब है जितना कि वह राजा की हैसियत से है, तब तो तू क़ाफी ग़रीब है। तू चाहता क्या है?

केण्ट : सेवा करना।

लियर : किसकी सेवा करना?

केण्ट : आपकी।

लियर : तू मुझे जानता है?

केण्ट : नहीं, श्रीमन्; पर आपके चेहरे पर कुछ ऐसा है कि मैं आपको अपना मालिक कहना चाहता हूँ।

लियर : क्या है वह?

केण्ट : अधिकार।

लियर : तू क्या काम कर सकता है ?

केण्ट : ईमानदारी की बात गुप्त रख सकता हूँ; घुड़सवारी कर सकता हूँ, दौड़ सकता हूँ; पेचीदा बात बताने में बिगाड़ सकता हूँ; सादा सन्देश खट से पहुँचा सकता हूँ; जो साधारण आदमी कर सकता है, वह सब मैं बखूबी कर सकता हूँ; और मेरा सबसे अच्छा गुण है कि मैं मेहनती हूँ।

लियर : तेरी उम्र क्या है ?

केण्ट : न इतना जवान हूँ, श्रीमन्, कि औरत के गले पर दिल दे बैठूँ, और न इतना बूढ़ा कि औरत की किसी भी अदा पर लट्टू हो जाऊँ। मैं दो कम पचास पार कर चुका हूँ।

लियर : मेरे साथ रह; तुझे मेरी सेवा करनी होगी; अगर खाने के समय तक मैंने तुझे नापसन्द नहीं किया तो मैं तुझे अपने से अलग नहीं करूँगा। खाना लाओ ! खाना ! अरे, वह शरारती लड़का कहाँ है—मेरा विदूषक ? जाओ, मेरे विदूषक को बुला लाओ।

[**एक नौकर बाहर जाता है।**

(ओसवाल्ड का प्रवेश)

ओ, सुनते हो, तुम्हीं से कह रहा हूँ, मेरी बेटी कहाँ है ?

ओसवाल्ड : मौज कीजिए।

[**बाहर जाता है**

लियर : क्या कहा इसने ? इस बद्‌दिमाग़ को बुलाओ तो ज़रा !

[**एक सामन्त बाहर जाता है**

मेरा विदूषक कहाँ है ?—कोई बताओ। लगता है, सारी दुनिया सो गयी है।

(सामन्त का पुनः प्रवेश)

क्या बात है ? वह कुत्ते का पिल्ला कहाँ है ?

सामन्त : वह कहता है, श्रीमन्, कि आपकी बेटी बीमार है।

लियर : जब मैंने उसे बुलाया था तो वह सुअर का बच्चा आया क्यों नहीं ?

सामन्त : श्रीमन्, उसने मुझे बद्‌तमीज़ी से जवाब दिया कि वह नहीं आयेगा।

लियर : वह नहीं आयेगा!

सामन्त : श्रीमन्, मुझे नहीं मालूम कि बात क्या है; लेकिन मुझे लगता है कि आप राजमान्य, के लिए अब यहाँ वह आदर-मान नहीं रह गया जो पहले था। शिष्टाचार का पालन भी ठीक से नहीं होता; यह नौकर-चाकरों के व्यवहार से जितना स्पष्ट है उतना ही आपके दामाद और बेटी के व्यवहार से।

लियर : तू कैसी बातें करता है ?

सामन्त : आपसे मेरी प्रार्थना है, मुझे क्षमा करें, श्रीमन्, अगर मुझसे कोई भूल हुई हो; जब मैं देखता हूँ कि आप, राजमान्य, के प्रति अन्याय हो रहा है तो मेरा कर्त्तव्य मुझे मुँह खोलने के लिए विवश कर देता है।

लियर : तूने तो उसी बात को खोलकर कह दिया है जो मैं खुद सोच रहा था। मुझे ऐसा आभास हुआ है कि इधर मेरे प्रति एक हल्की-सी उपेक्षा का भाव है यहाँ। मैं समझता था कि शायद इसमें मेरा ही दोष है क्योंकि मैं अत्यधिक आदर-सत्कार की प्रत्याशा करता हूँ, पर मैं देखता हूँ कि अभद्रता का यह व्यवहार जान-बूझकर किया जा रहा है और इसके पीछे कोई मतलब है। मैं इस पर और ग़ौर करूँगा। लेकिन मेरा विदूषक कहाँ है? मैंने उसे दो दिन से नहीं देखा।

सामन्त : श्रीमन्, जब से छोटी राजकुमारी फ्रांस गयी हैं, विदूषक बड़ा उदास रहने लगा है।

लियर : बस-बस! मैं इसे ख़ूब समझता हूँ। जाओ, मेरी बेटी से कहो कि मैं उससे बात करना चाहता हूँ।

[**एक नौकर बाहर जाता है**

जाओ, मेरे विदूषक को बुला लाओ।

[**एक दूसरा नौकर बाहर जाता है**

(ओसवाल्ड का पुनः प्रवेश)

जनाब आली! ज़रा इधर तो आइए! जनाब मन, जानते हैं मैं कौन हूँ?

ओसवाल्ड : मेरी मालकिन के बाप।

लियर : 'मेरी मालकिन के बाप'! मेरे मालिक के जम्हूरे! कुत्ते के पिल्ले! हरामज़ादे! नामाक़ूल।

ओसवाल्ड : गुस्ताख़ी माफ़ हो, जनाब मन, मैं ऐसी गालियाँ सुनने का आदी नहीं हूँ।

लियर : मेरे साथ आँख मिलाता है?—बदज़ात कहीं के!

[**उसे पीटता है**

ओसवाल्ड : मुझ पर हाथ न चलाइए, श्रीमन्।

केण्ट : और न मेरी टाँग खींचिए, आवारागर्द कहीं के!

[**उसकी टाँग खींचता है**

लियर : अच्छा किया; शुक्रिया; तू मेरा काम करेगा तो मैं तुझे प्यार करूँगा।

केण्ट : जनाब मन, उठिये और भागिये यहाँ से! मैं बताऊँगा कि राजा और तेली में क्या फ़र्क होता है; भागिये, भागिये यहाँ से! अपनी भद-भद काया से फिर साष्टांग प्रणाम करना चाहते हों

तो ज़रूर रुकिए, वर्ना भागिये यहाँ से ! भग, अक़्ल के दुश्मन! जा भी !

[ओसवाल्ड को धक्का देकर निकाल देता है

लियर : काम तूने दोस्ती का किया है; शुक्रिया, शुक्रिया ! यह ले अपनी बख़्शीश।

[केण्ट को इनाम देता है

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक : मैं भी इसे कुछ बख़्शीश दूं। यह लो मेरा टोपा।

[केण्ट को अपना टोपा देता है

लियर : आ गया मेरा बुद्ध-वसन्त ! क्या हाल हैं तेरे ?

विदूषक : **(केण्ट से)** यह ज़्यादा अच्छा होगा कि मेरा टोपा तुम ले लो।

केण्ट : मैं क्यों, मियाँ बुद्धू ?

विदूषक : क्योंकि तुमने उसका पक्ष लिया है जिसकी अब कोई पूँछ नहीं है। जब जैसी बयार बहे तब तैसी पीठ अगर तू नहीं दे सकता तो तेरी छाती को फ़ौरन ठण्ड लग जायेगी। ले, यह रहा मेरा टोपा। देख, इस भले आदमी ने अपनी दो बेटियों को देश-निकाला दे दिया है और तीसरी को अपनी मर्ज़ी के खिलाफ़ राजपाट दे डाला है; अगर तू इसके साथ रहेगा तो तुझे मेरा टोपा पहनना पड़ेगा।—कहिए चच्चा जान ! काश मेरे पास दो टोपियाँ और दो बेटियाँ होतीं !

लियर : क्यों भतीजे ?

विदूषक : क्योंकि अगर मैं उनको अपनी सारी जायदाद दे डालता तो मेरे पास अपनी दो टोपियाँ तो रहतीं। यह लीजिए एक मेरी; दूसरी अपनी बेटियों से माँग लीजिए।

लियर : क्या बकता है ! निकालूं कोड़ा ?

विदूषक : सच्चाई वह कुत्ता है जिसे कोड़ा लगाकर कूड़ाखाने की तरफ़ भगा दिया जाता है, और हरजाईपन वह कुतिया है जिसे गोद में लेकर लोग खेलाते हैं।

लियर : गाज गिरे मेरी अक्ल पर !

विदूषक : सुनिए, मैं आपको एक भाषण पिलाना चाहता हूँ।

लियर : पिला, पिला।

विदूषक : ध्यान से सुनियेगा, चच्चा जान !

पास माल हो जितना उससे कम दिखलाओ,
जितना जानो कम उससे मुँह से बतलाओ,
जितने पैसे रक्खो उससे कम उधार दो,
कम पैदल घूमो, ज़्यादा, घोड़े सवार हो,
जितना मानो उससे ज़्यादा सीखो जानो,
बाज़ी छोटी, जीत बड़ी का गुर पहचानो,

मदिरा पीना छोड़ो, छोड़ो रण्डी-मुण्डी,
घर में बैठो, दरवाज़े पर देकर कुण्डी,
तब तुम ऐसी दौलत घर में जोड़ सकोगे,
उतनी ही पाओगे जितनी बार गिनोगे।

केण्ट : यह तो कुछ भी नहीं, बुद्धू मियाँ।

विदूषक : तो फिर यह मुफ़्ती वकील की बक-बक है। तुमने इसके लिए मुझे कुछ दिया तो है नहीं। चच्चा जान, क्या कुछ नहीं का आप कोई उपयोग नहीं कर सकते?

लियर : कुछ भी नहीं, भतीजे। कुछ नहीं से कुछ नहीं निकल सकता।

विदूषक : (**केण्ट से**) कृपया इन्हें बताओ कि इनकी जमीन का कितना किराया आता है; ये विदूषक का विश्वास न करेंगे।

लियर : तू कटु-बोला विदूषक है।

विदूषक : बच्चे, तुझे कटु-बोला विदूषक और मिठ-बोला विदूषक का अन्तर मालूम है?

लियर : नहीं बाबा, तू ही बता।

विदूषक : जिसने तुझको यह सलाह दी
राज-पाट सब कर दे दान,
मेरे पास खड़ा कर उसको—
तू ही ले उसका (अ) स्थान।
अब कटु-बोला कौन विदूषक
औ' मिठ-बोला भँड़ुआ कौन,
साफ़, एक जो बक-बक करता,
एक वहाँ जो बैठा मौन।

लियर : क्यों बे लौंडे, तू मुझे विदूषक कहता है?

विदूषक : बाक़ी अपनी सब उपाधियाँ तो आपने दे डाली हैं। एक उसी पर तो आपका जन्मसिद्ध अधिकार है।

केण्ट : श्रीमन्, यह सिर्फ़ विदूषक नहीं है।

विदूषक : हाँ, ईमान से, सरदार और बड़वार लोग सिर्फ़ मुझे विदूषक नहीं रहने देंगे। अगर मेरे पास इसका ठीका होता तो वे भी अपना-अपना हिस्सा माँगते। देवियाँ भी माँगतीं; वे नहीं चाहेंगी कि सारे का सारा विदूषकत्व मेरे ही पास रहे। वे उस पर झपटेंगी। चच्चा जान, आप मुझे एक अण्डा दान कीजिए तो मैं आपको दो ताज प्रदान करूँगा।

लियर : कैसे होंगे वे दो ताज?

विदूषक : ऐसे, कि जब मैं अण्डे को बीच से काट दूँगा और अन्दर के माल को उड़ा जाऊँगा तो दो ताज बाक़ी बचेंगे। जब तूने अपने ताज को बीच से काट दिया और दो हिस्सों में बाँट दिया तो तेरे सिर पर कूड़ा ढोने की टोकरी के सिवा और क्या रह गया। जब तूने अपना सोने का ताज दे डाला तब तेरी बेल-सी खोपड़ी में गोबर नहीं तो क्या भरा था। अगर मेरी बातों में सिर्फ़ विदूषकत्व हो तो जो सबसे पहले इसका पता लगाये उसको कोड़े लगें।

कहाँ रह गयी विदूषकों की इज़्ज़त जब से
बड़े-बड़े विद्वान विदूषक बन बैठे हैं;
काम अक़्ल से लेना आता उन्हें नहीं है,
सफल नक़लची होने के ऊपर ऐंठे हैं ।

लियर : क्यों रे, यह गाना-वाना तूने कब से शुरू किया ?

विदूषक : यह मैंने तब से शुरू किया, प्यारे चच्चा जान, जब से तूने अपनी बेटियों को अपनी माँओं का दर्जा दे दिया; जब तूने उनके हाथों में बेंत थमा दी और अपना चूतड़ नंगा कर दिया,

तो वे रोईं एकाएक ख़ुशी के मारे
औ' रंजीदा होकर मैंने गाना गाया,—
तुझ ऐसे राजा ने कैसी नादानी की,
औ' ऐसे घामड़ लोगों के दल में आया ।

प्यारे चच्चा जान, एक ऐसा उस्ताद लगा दे जो तेरे विदूषक को झूठ बोलना सिखा सके । मैं बड़ी खुशी से झूठ बोलना सीखना चाहूँगा ।

लियर : याद रख, अगर तू झूठ बोलेगा तो हम तुझे कोड़े लगवायेंगे ।

विदूषक : हैरान हूँ, कि तू और तेरी बेटियाँ किस खानदान की हैं । वे मुझे सच बोलने के लिए कोड़े लगवायेंगी; तू मुझे झूठ बोलने के लिए कोड़े लगवायेगा; और कभी-कभी मुझे इसलिए कोड़ा लगाया जाता है कि मैं कुछ नहीं बोलता । काश, मुझे एक विदूषक छोड़कर किसी और तरह की चीज बनाया गया होता । फिर भी, प्यारे चच्चा जान, मैं तेरी तरह की चीज़ न बनना चाहूँगा, तूने अपनी अक़्ल को दोनों तरफ़ से तराश दिया है और बीच में कुछ भी बाक़ी नहीं बचा । एक तरफ़ की तराश यह रही ।

(गोनेरिल का प्रवेश)

लियर : कहो बेटी, कैसी हो! तुम्हारी भौंहें क्यों तनी हुई हैं ? मैंने देखा है कि इधर तुम्हारी भौंहें कुछ ज़्यादा ही तनी रहती हैं ।

विदूषक : तू बड़ा मनमौजी आदमी था जब तुझे ठेंग परवाह नहीं थी कि आपकी **(गोनेरिल की ओर संकेत करके)** भौंहें कितनी तनी रहती हैं । मुन्ना, अब तू ऐसा सुन्ना है जिसके पहले कोई संख्या नहीं है । तुझसे तो अच्छा अब मैं ही हूँ । मैं विदूषक हूँ, तू कुछ भी नहीं है **(गोनेरिल से)**—हाँ, ठीक है, मुझे अब अपना मुँह बन्द कर लेना चाहिए; आपकी आँखों का इशारा यही है, गो आप कह कुछ नहीं रही हैं ।

चुप, चुप ।
पास नहीं जिसके है खाने को रोटी,
खाने को रोटी औ' तन पर लँगोटी,
अपनी मजबूरी में माँगेगा कुछ ।

इस छीमी में अब कोई दाना बाक़ी नहीं । **(लियर की ओर संकेत करके)**

गोनेरिल : श्रीमन्, केवल नहीं विदूषक ढीठ आपका,
बल्कि आपके बद्-तमीज सब संगी साथी
ऐसा हल्ला-गुल्ला, रगड़ा-झगड़ा करते,
रात-रात, दिन-दिन ऐसा हुड़दंग मचाते,
जिसे नहीं बर्दाश्त किया जा सकता। श्रीमन्,
मैंने सोचा था कि आपके कानों तक इन
बातों को पहुँचा देना ही रोक-थाम इनकी
करने को काफ़ी होगा। मगर हाल में
ख़ुद जो कुछ है कहा आपने, किया आपने,
उससे तो मुझको भय होता है कि आप ही
इस हरकत के सरपरस्त हैं, और इसे शह
देते रहते। अगर आप ऐसा करते हैं
तो जवाबदेही से आप नहीं बच सकते।
औ' ख़िलाफ़ जो कार्रवाई करनी होगी—
अमन राज्य में रखना, तो करनी ही होगी—
उससे बेइज़्ज़ती आपकी हो सकती है।
ऐसी कार्रवाई होगी बात शर्म की,
लेकिन ध्यान ज़रूरत पर जब दिया जायगा,
एहतियात यह वाजिब ही माना जायेगा।

विदूषक : क्योंकि आप जानते हैं, चच्चा जान,
गौरैया ने इतने दिन कोकिल को पाला,
बड़ी हुई तो उसने उसका सिर खा डाला।
गुल चिराग़ अब हम पर छाया है अँधियाला।

लियर : क्या तू हमारी बेटी नहीं है ?

गोनेरिल : सुनिए, श्रीमन्,
मैं चाहूँगी, आप बुद्धि से काम लीजिए,
जिसकी, मैं जानती, आप में कमी नहीं है।
और छोड़िये वे सारी हरकतें हाल की
जो कि आपको नहीं आप-सा होने देतीं।

विदूषक : कोई गधा यह कैसे जान सकता है कि किस हालत में गाड़ी घोड़े को खींचती है ? बच्चू, कच्चू ! मैं तुझे प्यार करता हूँ।

लियर : मुझे जाननेवाला कोई यहाँ नहीं है ?
लियर नहीं यह ! लियर नहीं ऐसे चलता है !
और न ऐसे बोला करता ! उसकी आँखें
कहाँ गयी हैं ! अक़्ल काम करती है उसकी ?
और सलामत सूझ-बूझ है ? हा ! जागा हूँ ?
नहीं, नहीं ऐसा हो सकता। है कोई जो
बतला सकता है, मैं क्या हूँ ?

विदूषक : लियर की छाया।

लियर : मैं जानना चाहूँगा कि मैं कौन हूँ; राजसी ठाट-बाट, ज्ञान और तर्क से मुझे यह भ्रम हो गया था कि मेरे बेटियाँ हैं।

विदूषक : जो अपने पिता को आज्ञाकारी बनायेंगी।

लियर : भली देवीजी ! मैं आपका नाम जान सकता हूँ ?

गोनेरिल : नयी चुहल जो शुरू आपने कर रक्खी है
यह अभिनय भी उसका केवल एक रूप है।
मेरी यह प्रार्थना, आप मेरी मंशा को
ठीक समझिए; आप वृद्ध हैं, माननीय हैं;
बुद्धिमान भी तो अपने को साबित करिये।
सौ सेवक-सामन्त आप हैं साथ लगाये,
जो बेहद सिरचढ़े, लफंगे, बेहूदा हैं,
और उन्होंने बदचलनी से गन्द यहाँ जो
फैला रक्खी, उससे यह दरबार हमारा
लगता है जैसे भटियारों की सराय है।
उनकी मस्ती और मौज ने राजभवन को
चकला या गुण्डों का अड्डा बना दिया है।
कुछ न सही तो ग़ैरत की है माँग कि इसका
कुछ इलाज हो और जल्द ही। तो अब जैसा
मैं कहती हूँ वैसा करिये, वर्ना जो मैं
माँग रही हूँ, मुझको जबरन लेना होगा।
अपनी पल्टन को थोड़ा-सा कम कर डालें,
बाक़ी जो हों, और आप पर जो निर्भर हों,
ऐसे हों हम-उम्र आप जिनको कह सकते,
जो अपने को और आपको जानें, समझें।

लियर : अन्धकार-सी काली और भयंकर भुतनी !
ज़ीन कसो मेरे घोड़ों पर। मेरे सेवक—
सामन्तों को बुलवा भेजो। दुष्ट दोग़ली।
मैं तुझको तकलीफ़ न दूँगा। मेरे बेटी
एक और है।

गोनेरिल : आप हमारे आदमियों पर हाथ चलाते
और आपके साथी शोहदे बेशऊर सब
अपने से ऊँचे ओहदेवाले लोगों पर
रोब जमाते।

(अलबानी का प्रवेश)

लियर : गाज गिरे उस पर जो पीछे से पछताये !
आप आ गये, श्रीमन् ? मर्ज़ी यही आपकी ?
बोलें; मेरे घोड़ों को तैयार करायें।
ओ एहसान-फ़रामोशी, तू पत्थर की छाती
वाली है। अपनी ही औलाद, रूप धर
तेरा, मेरे आगे आयी। सच कहता हूँ,
इससे अधिक घिनौनी तुझको कभी नहीं मैंने
पाया है।

अलबानी : श्रीमन, कृपया धीरज धरिये।

लियर : कंकालिन, तू झूठ बोलती।

मेरे साथी चुने हुए, दुर्लभ गुणवाले;
वे अपने सब कर्तव्यों के प्रति सचेत हैं;
और उन्होंने कीर्ति कमाई जो, उसको
रक्षित रखने में प्रतिपल रहते जागरूक हैं।
कारडीलिया का बिल्कुल छोटा-सा दूषण
मेरी आँखों को कितना अपरूप दिखा था!
उसने उसके प्रति मेरी ममता का बिरवा,
जो मेरी छाती के अन्दर लगा हुआ था,
जड़ से खींच, उखाड़ लिया था; औ' जो ख़ाली
जगह हुई थी उसमें ज़हर उँडेल दिया था।
लियर, लियर, ओ लियर पीट अब अपना माथा

[**अपना माथा पीटता है**

जिसने तेरी नादानी को अन्दर लाकर
तेरा ज्ञान-विवेक निकाल दिया था बाहर,
जिसकी क़द्र तुझे करनी थी। जाओ, जाओ,
मेरे लोगो!

अलबानी : श्रीमन्, मैं हूँ निरपराध, कुछ नहीं जानता
किससे विचलित आप हुए हैं।

लियर : हो सकता है जो कुछ कहते आप ठीक हो।
सुन, ओ प्रकृति पुरातन, सुन, जो मैं कहता हूँ!
इस मादा को माँ करने का अगर इरादा
हो तेरा तो उसे छोड़ दे।
जन्म सके कुछ कोख न इसकी।
इसके अंगों से प्रजनन की शक्ति सोख ले।
इसकी कलुषित काया से शिशु कभी न जन्मे
इसको आदर देनेवाला; लेकिन ब्याना
ही हो इसको तो यह ऐसा बच्चा ब्याए
जो स्वभाव से विद्वेषी हो, विद्रोही हो,
माँ के प्रति हो स्नेह न जिसमें और जिये वह
इसके जीवन का संकट बन!
इसके यौवन-दीप्त भाल पर झुर्री डाले।
आँखों से आँसू बहने से इसके गालों
के ऊपर नहरें बन जायें!
वह उपहासे जो माता ने पीर सही हो,
लाड़ लड़ाया हो जो उसने, उसके बदले
में वह उसको ठोकर मारे, जिससे इसको
पता चल सके, जब कृतघ्न होता है बच्चा
सर्प-दन्त से भी तीखा तब वह लगता है।
आँखों के आगे से हट जा!

[**बाहर चला जाता है**

अलबानी : अब, जिन देवों के आगे हम शीश झुकाते,
वही बताएँ, इस ग़ुस्से का कारण क्या है।

गोनेरिल : कारण को जानने के लिए परेशान मत
आप होइए। वृद्धावस्था में दिमाग़ में
कमज़ोरी आ ही जाती है। वह अपना कुछ
असर दिखाकर ही मानेगी।

(लियर का पुनः प्रवेश)

लियर : क्या ! पचास मेरे साथी बस एक वार में !
और अभी पखवारा एक नहीं बीता है।

अलबानी : श्रीमन्, कहिए, बात हुई क्या ?

लियर : मैं बतलाऊँगा (**गोनेरिल से**) यह जीवन-मरण प्रश्न है।
मैं शर्मिन्दा हूँ, तुझमें इतनी ताक़त है
तू मुझको दहला सकती है; मेरे आँसू
गर्म, विवश जो फूट रहे हैं, तुझ ऐसी के
लिए बहे हैं। वज्र शीश पर तेरे टूटे !
तेरे बर्तावों से घायल हुए पिता का
शाप लगे तेरे तन के रोएँ-रोएँ को !
मेरी बूढ़ी, भोली आँखो, फिर तुम रोओ,
नोच निकालूँगा मैं तुमको और फेंक दूँगा
पानी में, बहा रहीं जो तुम मिट्टी गीली
करने को ! सच, ऐसा आगे आना था !
आये, कोई बात नहीं है। मेरे बेटी
एक और है, जो, मुझको पूरा यक़ीन है,
दयावती है और मुझे सुख से रक्खेगी।
जब वह तेरी निर्ममता की बात सुनेगी
तब अपने नाख़ूनों से तेरे चेहरे को,
जो कि भेड़िये का-सा लगता, नोच नहीं क्या
वह डालेगी ? तू देखेगी उसी शक्ल में
मैं फिर आता, जो, तेरा ऐसा ख़याल है,
सदा के लिए छोड़ चुका मैं। तू देखेगी—
मैं तुझको विश्वास दिलाता।

[**लियर, केण्ट और नौकर-चाकर बाहर जाते हैं**

गोनेरिल : इनकी करतूतों को देख रहे हैं, श्रीमन् ?

अलबानी : तुमको प्यार बहुत करता हूँ तो मत समझो
सब बातों में पक्ष तुम्हारा ही मैं लूँगा।

गोनेरिल : कृपया शान्त रहें। कोई है, ओसवाल्ड, ओ···!
(**विदूषक से**) सुनिये विदूषकजी, गो विदूषक से अधिक आप
धूर्त हैं, लगिये अपने मालिक के पीछे।

विदूषक : चच्चा लियर, चच्चा जान लियर ! ज़रा ठहरिये और अपने
विदूषक को भी साथ लेते जाइये।

अगर लोमड़ी पकड़ी जाये,
बेटी ऐसा रूप दिखाये,
दोनों को फाँसी लटकाये,
टोपी बेचे, फन्दा लाये,
पीछे-पीछे बन्दा आये !

[**बाहर जाता है**

गोनेरिल : इस बुड्ढे को अच्छी राय किसी ने दी है।
सौ सेवक-सामन्तों को है साथ लगाये,
चलने को तैयार इशारे पर जो इसके—
अच्छी नीति, सुरक्षा भी है जिसमें पूरी।
ये सब उसके हर ख़याल की, हर ख़्वाहिश की,
हर मर्ज़ी, हर एक माँग की हामी भरते;
उसे शिकायत जिससे उससे इन्हें शिकायत;
उसको नफ़रत जिससे उससे इनको नफ़रत;
इनके बूते वह अपनी हर एक सनक पर
अड़ जाता है, और हमारी जान मुसीबत
में पड़ती है।—ओसवाल्ड, मैं बुला रही हूँ !

अलबानी : इस सब से तुम कुछ ज़्यादा ही डरी हुई हो।

गोनेरिल : ज़्यादा बेफ़िक्री से तो यह अच्छा ही है।
पहले से ही मुझे दूर करने दें खतरे,
जिनसे डर है; डरने से वे दूर न होंगे।
मुझको है मालूम कि उसके दिल में क्या है;
उसकी बातें मैंने रीगन को लिख दी हैं;
उसको औ' उसके सौ साथी-सामन्तों को
अब अपना मेहमान बनाने के ख़तरे से
मैंने उसको चेता दिया है,—

(ओसवाल्ड का पुनः प्रवेश)

ओसवाल्ड, आ
गये ! बहन को चिट्ठी तुमने क्या लिख ली है ?

ओसवाल्ड : लिख ली है मैंने, देवीजी !

गोनेरिल : कुछ साथी ले लो, घोड़ों को एड़ लगाओ।
मेरे डर की बातें सारी उसे बताना;
और जोड़ देना जो कारण तुमको सूझें,
और असर हो जिससे उनका। जल्दी जाओ;
और लौटने में भी, देखो, जल्दी करना।

[**ओसवाल्ड बाहर जाता है**

नहीं, नहीं, मेरे स्वामी, जो आप दिखाते
कुसुम सरीखी कोमलता, मैं नहीं बुराई
उसकी करती; लेकिन मुझको क्षमा करेंगे,

भले आपकी भलमंसी पर, जो कि हानिकर,
की जाये तारीफ़ आपकी, मगर अक़्ल की
कमी के लिए, माफ़ न आप किये जायेंगे।

अलबानी : दूरन्देशी तुममें कितनी है, मैं उसको
समझ न पाता; छब्बे बननेवाला अक्सर
दूबे ही बनकर रह जाता।

गोनेरिल : लेकिन तब तो—

अलबानी : अच्छा, अच्छा, क्या आगे आता है देखो।

[दोनों बाहर जाते हैं

पाँचवाँ दृश्य

उसी महल के सामने का अहाता

(लियर, केण्ट और विदूषक का प्रवेश)

लियर : तुम इस पत्र के साथ आगे-आगे ग्लास्टर नगर को जाओ। इस ख़त से जो सवाल उठते हों उन्हीं का जवाब तुम मेरी बेटी को देना। ये नहीं, कि जो कुछ तुम्हें मालूम है सब कह डालो। अगर तुम तेज़ रफ़्तार से न गये तो तुमसे पहले मैं ही वहाँ पहुँच जाऊँगा।

केण्ट : मेरे मालिक, जब तक मैं आपका ख़त पहुँचा नहीं देता, तब तक मैं आराम नहीं करूँगा।

[बाहर जाता है

विदूषक : अगर आदमी का दिमाग़ सिर के बजाय उसकी एड़ियों में होता तो क्या उसको बेवाई का ख़तरा न होता।

लियर : ज़रूर होता, लौंडे।

विदूषक : तब मेरी प्रार्थना है कि तू खुश हो; क्योंकि तेरी अक़्ल की बेवाई फट चुकी है और तुझे अब कभी जूता पहनना नहीं नसीब होगा।

लियर : हः, हः, हः !

विदूषक : तू देखेगा कि तेरी दूसरी बेटी तेरे साथ मेहरबानी से पेश आयेगी; गो दोनों में इतना ही फ़र्क़ है जितना साँपिन और नागिन में, फिर भी जो मैं कह सकता हूँ वह मैं कह सकता हूँ।

लियर : तू क्या कह सकता है, लौंडे ?

विदूषक : वह उसी तरह फुफकारेगी जैसे यह फुफकारती है। तू बता सकता है कि आदमी की नाक ठीक उसके चेहरे के बीच में क्यों होती है ?

लियर : नहीं।

विदूषक : सिर्फ़ इसलिए की उसकी आँखें उसकी नाक के दोनों तरफ़ रहें कि आदमी जिसे सूँघ न सके उसे ताड़ तो सके।

लियर : मैंने उसके साथ अन्याय किया—

विदूषक : क्या तू बता सकता है कि सीपी अपना खोल कैसे बनाती है?

लियर : नहीं।

विदूषक : मैं भी नहीं बता सकता; पर मैं यह बता सकता हूँ कि घोंघा अपना घर अपनी पीठ पर लेकर क्यों चलता है।

लियर : क्यों?

विदूषक : इसलिए कि वह उसमें अपना सिर छिपा सके; अपनी बेटियों को न दे डाले कि अपने सींग समाने के लिए उसे कोई जगह न मिले।

लियर : मैं यह भुला दूँगा कि मैं भी कभी बाप था। कितना नर्मदिल बाप! मेरे घोड़े तैयार हैं?

विदूषक : तेरे गधे उन्हें तैयार करने गये हैं। जिस कारण सातारिख में सात से ज़्यादा तारे नहीं हैं उसकी एक अच्छी-ख़ासी वजह है।

लियर : वजह यही है कि वे आठ नहीं हैं।

विदूषक : बिल्कुल ठीक। तू बढ़िया विदूषक बनने लायक़ है।

लियर : उसे ज़बरदस्ती वापस ले लेना! एहसान-फ़रामोश। शैतान!

विदूषक : चच्चा जान, अगर तू मेरा विदूषक होता तो मैं तुझको पिटवाता कि तू समय से पहले बूढ़ा क्यों हो गया।

लियर : यह कैसे?

विदूषक : जब तक तुझे अक़्ल न आती तब तक तुझे बूढ़ा नहीं होना चाहिए था।

लियर : ओ! मुझे पागल होने से बचाओ; पागल होने से, दयावान भगवान; मेरा दिमाग़ दुरुस्त रक्खो; मैं पागल होना नहीं चाहता।

(एक भद्र पुरुष का प्रवेश)

क्या बात है! घोड़े तैयार हैं?

भद्र पुरुष : तैयार हैं, मेरे मालिक!

लियर : आ बे लौंडे!

[**बाहर जाता है**

विदूषक : मेरे जाते वक़्त कुमारी जो है, हँसती खलखल,
अगर न जल्दी लौटा तो हो जायेगी वह बण्डल!

[**बाहर जाता है**

पहला दृश्य

ग्लास्टर के सरदार के महल के अन्दर एक अहाता

(आमने-सामने से एडमण्ड और क्यूरन का प्रवेश)

एडमण्ड : भगवान तेरा भला करे, क्यूरन।

क्यूरन : आपका भी भला करे, श्रीमन्। मैं आपके पिता के पास से आ रहा हूँ; और मैंने उन्हें सूचना दे दी है कि कार्नवाल के राजा अपनी रानी रीगन के साथ आज रात को यहाँ आ रहे हैं।

एडमण्ड : तुम्हें मालूम है, क्यों ?

क्यूरन : नहीं, मुझे नहीं मालूम। क्या आपने कोई ख़बर नहीं सुनी ? मेरा मतलब है जो अफ़वाह उड़ रही है, क्योंकि अभी उसे चोरी-छिपे ही कहा-सुना जा रहा है।

एडमण्ड : नहीं, मैंने तो नहीं सुनी; बताओ तो, क्या है ?

क्यूरन : क्या आपने कार्नवाल और अलबानी के राजा के बीच लड़ाई की सम्भावना की कोई ख़बर नहीं सुनी ?

एडमण्ड : बिल्कुल नहीं।

क्यूरन : समय आने पर आप सुनेंगे ही। विदा दीजिए मुझे, श्रीमन्।

[बाहर जाता है

एडमण्ड : कार्नवाल के राजा रात यहाँ पर होंगे।
यह अच्छा है। इससे अच्छा क्या हो सकता !
इससे तो जो जाल बुन रहा हूँ मैं उसमें
मदद मिलेगी। भाई को बन्दी करने को
पिता सिपाही बिठा चुके हैं। मेरे मन में
एक बात है, बड़े मारके की, जो मुझको
करनी होगी। फ़ुर्ती अब तक़दीर दिखा तू ! —
भाई, सुनना; नीचे उतरो; भाई मैं हूँ !

(एडगर का प्रवेश)

पिता ताक में लगे हुए हैं; भगो यहाँ से;
खबर लग चुकी है उनको, तुम यहाँ छिपे हो;
तुम्हें रात का अच्छा मौक़ा मिला हुआ है।
कार्नवाल के राजा के विरुद्ध क्या बातें
तुमने की हैं ? यहाँ जल्द आनेवाले हैं;
आज रात ही; रीगन भी आ रही साथ में।
कहा नहीं कुछ तुमने उसके दल के ऊपर
जो अलबानी के राजा का प्रतिरोधी है ?
याद करो तो।

एडगर : एक शब्द भी नहीं, यक़ीनन।
एडमण्ड : सुनो, पिता के पैरों की आहट आती है।
माफ़ करो मुझको, दिखलाने को यह करना,
मैं तुम पर तलवार उठाने अब जाता हूँ;
तुम भी अब तलवार खींच लो और दिखाओ,
तुम बचाव अपना करते हो पूरे बल से।—
हार मान ले; तुझे पिता के आगे चलना।—
कोई है ? रोशनी चाहिए यहाँ ! यहाँ पर ! —
भाई, भागो।—यहाँ मशालों को ले आओ ! —
तुम्हें अलविदा !

[एडगर बाहर जाता है

खून कहीं से लूँ निकाल तो
ऐसा समझा जायेगा जोशो ख़रोश से
मैं एडगर से भिड़ा हुआ था।

[अपने हाथ पर घाव करता है

मैंने देखा
है कि शराबी खेल-खेल में इससे ज़्यादा
कर लेते हैं। पिता ! पिताजी ! पकड़ो ! पकड़ो !
कोई नहीं मदद को आता ?

(ग्लास्टर का मशाल लिये हुए नौकरों के साथ प्रवेश)

ग्लास्टर : हम आ पहुँचे; बोलो वह शैतान कहाँ है ?
एडमण्ड : यहाँ अँधेरे कोने में वह खड़ा हुआ था
औ' नंगी तलवार म्यान से बाहर करके;
चाँद की तरफ़ देख-देखकर मन्त्र पढ़ रहा
था वह कोई, शक्ति प्राप्त करने को उससे।
ग्लास्टर : गया कहाँ वह ?
एडमण्ड : देखें, खून बह रहा मेरे।
ग्लास्टर : एडमण्ड, वह शैतान कहाँ है ?
एडमण्ड : वह इस तरफ़ भगा था। किसी तरह जब—
ग्लास्टर : उसका पीछा करो ! देखना, निकल न जाये !

[कुछ नौकर बाहर जाते हैं

'किसी तरह जब' के क्या माने ?
एडमण्ड : किसी तरह जब
वह मुझको राज़ी न कर सका कि मैं आपकी
हत्या कर दूँ; लेकिन मैंने साफ़ कह दिया,
पितृघात का पाप देवता सह न सकेंगे;
गाज गिरायेंगे उसका बदला लेने को।
मैंने उससे कहा कि देखो पुत्र पिता से

कितने दृढ़, कितने सूत्रों से बँधा हुआ है !
और अन्त में, श्रीमन्, जब उसने यह देखा,
मुझको ऐसे पाप कर्म से घोर घृणा है,
औ' विरोध में उसके अविचल, अडिग खड़ा हूँ,
उसने तेज़ी से अपनी तलवार उठाकर
मेरे तन पर वार कर दिया, जिसे बचाने
का कोई भी साधन मेरे पास नहीं था।
घायल कर दी उसने मेरी बाँह, देखिए;
लेकिन जब उसने यह देखा, पक्ष न्याय का
लेने का साहस मुझमें है और चुनौती
लेने को मेरी भी भौंहें फड़क उठी हैं,
या जब मैंने शोर मचाया उससे डरकर
वह भागा सिर पर धरकर अपने पाँवों को।

ग्लास्टर : भागे, जितना भाग सके वह। कहीं देश में
होगा, निश्चय जानो, वह पकड़ा जायेगा।
पकड़ा जायेगा—गर्दन मारी जायेगी।
रात यहाँ पर कार्नवाल-राजा आयेंगे—
मेरे मालिक, मेरे मुखिया, मेरे रक्षक।
उनके बल पर यह एलान करा दूँगा मैं—
जो उस कायर हत्यारे का पता लगाकर
उसको फाँसी के तख़्ते तक ले आयेगा
धन्यवाद हमसे पायेगा, और मौत की
सज़ा मिलेगी उसे छिपायेगा जो उसको।

एडमण्ड : उसके बुरे इरादे से जब उसे हटाना
मैंने चाहा औ' पाया वह उसी बात पर
तुला हुआ है तो मैं उस पर बेहद बिगड़ा;
धमकी दी, 'मैं भेद खोल दूँगा सब तेरा।'
सुनियेगा, जो वह जवाब मुझको देता है ?
'टुकड़ख़ोर दोगले ! समझ क्या रक्खा तूने;
जब ख़िलाफ़ हूँगा मैं तेरे, तब तुझमें हो,
भले भलाई, सच्चाई, सिफ़तें बहुतेरी,
कोई तेरी बातों पर विश्वास करेगा ?
कभी नहीं, औ' जिससे मैं इन्कार करूँगा—
और करूँगा ही मैं निश्चय, चाहे तूने
मेरे हाथ-लिखे ख़त को ही पेश किया हो—
उसे मढ़ूँगा तेरे माथे,—यह कुचक्र, यह
जाल सुझावों पर, तेरे ही, रचा गया है।
दुनिया इतनी मूर्ख नहीं है देख न पाये,
मेरी मौत, मुनाफ़ा तेरा; तब ज़ाहिर है,
और साफ़ है, तेरी सारी साज़िश होगी
मैं मर जाऊँ।'

ग्लास्टर : यह शैतान बड़ा पक्का है।

ख़त से, लेकिन, कैसे वह इन्कार करेगा ?
उसको अपना बेटा कहते लज्जा आती।

[**भीतर से तुरही की आवाज़**

कार्नवाल के राजा की तुरही लगती है।
पता नहीं मुझको वे किस कारण आते हैं।—
रोक लगा दूँगा सारे बन्दरगाहों पर;
यह शैतान नहीं बचकर जाने पायेगा;
इतनी मेरी माँग नहीं राजा टालेंगे।
दूर-पास उसकी तस्वीरें मैं भेजूँगा,
रहे ताक में, उसकी, सारा देश बराबर;
मेरे सीधे-सच्चे बेटे, मैं कुछ ऐसा
जतन करूँगा, जिससे मेरी जायदाद सब
तुम पाओगे।

(**कार्नवाल, रीगन और नौकर-चाकरों का प्रवेश**)

कार्नवाल : अच्छे तो हो, मेरे प्यारे दोस्त, यहाँ जब
से आया हूँ; गो थोड़ी ही देर हुई है
मुझको आये, ख़बरें बड़ी अजीब सुनी हैं।

रीगन : सच हो तो अपराधी से बदला लेने को
जो भी कार्रवाई की जाये कम होगी।
श्रीमन्, कैसे हैं, बतलायें।

ग्लास्टर : देवि, दुःख से कहना पड़ता वृद्धावस्था
में बेटे ने मेरे दिल को तोड़ दिया है।

रीगन : सुना, आपकी हत्या करनी चाही उसने ?
पिता हमारे धर्म-पुत्र उसको माने थे,
और उन्होंने उसको एडगर नाम दिया था।

ग्लास्टर : ऐसा कहते लज्जा में डूबा जाता हूँ।

रीगन : क्या उसकी सोहबत उत्पाती सामन्तों की,
साथ पिता के जो रहते हैं ?

ग्लास्टर : मुझे नहीं मालूम, देवि, यह बुरी बात है,
बहुत बुरी है।

एडमण्ड : देवि, ठीक अनुमान आपका, उनसे ही वह
मिला हुआ था।

रीगन : अचरज क्या जो उस पाजी को उन सबने ही
वृद्ध पिता का वध करने को उकसाया हो,
जिससे उसकी दौलत पर वे मज़े उड़ायें।
आज शाम ही पत्र बहन का आया जिसमें
उनकी सारी करतूतों की दास्तान है।
यह ताक़ीद उन्होंने की है, अगर हमारे
घर में रहने को वे आयें, मिलूँ न घर पर।

कार्नवाल : औ' तुमको विश्वास दिलाता हूँ मैं, रीगन,
मैं भी घर पर नहीं मिलूँगा। एडमण्ड, मैंने
सुना कि तुमने भोले-भाले बच्चे की-सी
पितृभक्ति दिखलायी।

एडमण्ड : श्रीमन्, फ़र्ज़ यही था।

ग्लास्टर : इसने एडगर के कुचक्र का पता लगाया।
उसे पकड़ने में यह चोट इसे आयी है।

कार्नवाल : उसका पीछा किया गया है ?

ग्लास्टर : निश्चय, श्रीमन्।

कार्नवाल : पकड़ गया तो और नहीं नुक़सान कभी वह
कर पायेगा। मेरे साधन, मेरी ताक़त
से जो चाहें काम आप लें। औ' एडमण्ड,
तुम्हारे गुण से, बहादुरी से, पितृभक्ति से
हम इतने ख़ुश हैं तुमको हम अपनाते हैं;
हमें ज़रूरत ऐसों की है जिनका पूरी
तरह भरोसा किया जा सके; तुम मेरे हो।

एडमण्ड : श्रीमन्, मुझको अपना सच्चा सेवक समझें।

ग्लास्टर : कृपा के लिए श्रीमन्, मैं भी आभारी हूँ।

कार्नवाल : आप जानते नहीं यहाँ हम क्यों आये हैं—

रीगन : ऐसे बे-मौक़े, यह काली रात पार कर;
मसला आगे आया है गम्भीर, ग्लास्टर;
हमें आपकी राय चाहिए उसके ऊपर।
पिता-बहन—दोनों ने हमको पत्र लिखे हैं,
आपस के झगड़े पर, जिस पर हमने समझा
उचित कि उनका उत्तर दें हम अपने घर से।
लोग सँदेसा ले जाने के लिए खड़े हैं।
अच्छे दोस्त हमारे, परखे, धीरज धरिये;
इस मसले पर अपनी वाजिब राय दीजिये;
हमें ज़रूरत इसकी फ़ौरन।

ग्लास्टर : देवि, आपका
सेवक हूँ। दिल से स्वागत है यहाँ आपका।

[तुरही बजती है; सब बाहर जाते हैं

दूसरा दृश्य

ग्लास्टर के महल का सामना

(केण्ट और ओसवाल्ड का आमने-सामने से प्रवेश)

ओसवाल्ड : सुनो तो, दोस्त; इसी घर के हो ?

केण्ट : हूँ तो।

ओसवाल्ड : हम अपने घोड़े कहाँ बाँधें ?

केण्ट : दलदल में।

ओसवाल्ड : मेहरबानी करके, अगर मेरा कुछ ख़याल करते हो तो, बता दो न ?

केण्ट : मैं तेरा कुछ भी ख़याल नहीं करता।

ओसवाल्ड : तो मैं भी तेरी कुछ भी परवाह नहीं करता।

केण्ट : घूसेबाज़ी के अखाड़े में तुझे पाता तो मैं तुझे सिखाता कि मेरी परवाह कैसे की जाती है।

ओसवाल्ड : तू मेरे साथ इस तरह क्यों पेश आता है जबकि मैं तुझे जानता भी नहीं ?

केण्ट : अबे, मैं तो तुझे जानता हूँ।

ओसवाल्ड : जानता है तो बता कि मैं कौन हूँ ?

केण्ट : तू है पाजी, बदमाश, टुकड़ख़ोर; नीच, घमण्डी, घटिया, नंगा, भिखमंगा, दुमछल्ला, गन्दा, चिरकुटहा; डरपोक, मुक़दमा-ठोंक; हरामज़ादा, वेहूदा, रंगबाज़, जालसाज़; चिड़ी का गुलाम; दमड़ी के लिए जो बेच दे अपना चाम; तू और कुछ नहीं, सिर्फ़ चोंचों का मुरब्बा है चार चीज़ों का—पाजी, भिखमंगे, दुमदब्बू, दल्लाल का। निठल्ला; मरगिल्ली कुतिये का पिल्ला ! मैंने जो ख़िताब तुझे अता किये हैं उनके एक अक्षर से भी तूने इन्कार किया तो इस क़दर पीटूँगा कि तेरी चीं निकल जायगी।

ओसवाल्ड : तू इन्सान है कि शैतान जो उसे गाली दिये जा रहा है जो न तुझे जानता है, जिसे न तू जानता है।

केण्ट : मक्कार कहीं के ! शर्म नहीं आती तुझे कहते कि तू मुझे नहीं जानता। अरे, दो ही दिन में तू भूल गया कि महाराज के सामने मैंने तुझे लँगड़ी लगाई थी और तेरी पिटाई की थी ! तलवार निकाल, बदमाश; रात है तो क्या, चाँद तो चमक रहा है; तेरी चाँद को चहबच्चे में न चमकाया तभी कहना। निकाल, कलुआ तेली के बच्चे, निकाल तलवार।

ओसवाल्ड : हट जा ! मुझे कुछ नहीं तुझसे लेना-देना है।

केण्ट : तलवार निकाल, बदज़ात। तू महाराज के ख़िलाफ़ ख़त लाता है और उस घमण्डी कठपुतली को उसके बाप के मुक़ाबले में खड़ा करता है जो महाराजाधिराज हैं। तलवार निकाल, बदमाश; नहीं तो अभी तेरे पाँवों के परख़चे उड़ाता हूँ। निकाल तलवार, बदज़ात; सामने आ !

ओसवाल्ड : बचाओ, ओ ! मार डाला ! बचाओ !

केण्ट : वार कर, हुकुम के ग़ुलाम; खड़ा तो रह, बदमाश; वार कर, साफ़ ग़ुलाम !

[**उसे पीटता है**

ओसवाल्ड : बचाओ, ओ ! मार डाला ! मार डाला !

(नंगी तलवार लिये हुए एडमण्ड का प्रवेश)

एडमण्ड : क्या है ? माजरा क्या है ?

[**दोनों को अलग करता है**

केण्ट : आ जाओ, बेटा, अगर लड़ने की मंशा है। आ जाओ, अभी तुम्हारा भुर्ता बनाता हूँ। आ जा, नौजवान !

(कार्नवाल, रीगन, ग्लास्टर और नौकर-चाकरों का प्रवेश)

ग्लास्टर : हथियार ! तलवारें ! आखिर माजरा क्या है ?

कार्नवाल : जान अगर प्यारी हो तो सब शान्त रहें अब।
हाथ उठायेगा जो वह मारा जायेगा।
बात हुई क्या ?

रीगन : बहन और राजा के ये दोनों सँदेसिये।

कार्नवाल : बोलो, तुम क्यों झगड़ पड़े हो ?

ओसवाल्ड : श्रीमन्, मेरे लिए साँस लेना मुश्किल है।

केण्ट : अचरज इस पर मुझे नहीं है; अपनी ताक़त
से ज़्यादा तू उछल रहा था। दर्ज़ी से ले
तूने तन पर वीरों का बाना धारा है।

कार्नवाल : तू तो बड़ा अजीब आदमी मालूम होता है; दर्ज़ी का बाना किसी को वीर बना देगा ?

केण्ट : पर, श्रीमन्, इसे तो दर्ज़ी ने ही ऐसा बनाया है। अगर कोई संगतराश या चित्रकार इसे बनाता, चाहे वह दो ही घण्टे इस पर काम करता, तो भी इसको इतना बुरा न बनाता।

कार्नवाल : फिर भी यह बताओ कि तुम्हारा झगड़ा कैसे बढ़ा ?

ओसवाल्ड : श्रीमन्, यह पुराना घाघ, जिसकी जान मैंने इसकी सफ़ेद दाढ़ी का ख़्याल करके बख़्श दी है—

केण्ट : हरामज़ादे के बच्चे ! नामाक़ूल ! —श्रीमन्, आपकी आज्ञा भर हो जाये तो मैं इस भद्दे शैतान की चटनी बना के रख दूँ और उससे पाखाने की दीवारों पर पलस्तर चढ़वा दूँ। तूने मेरी सफ़ेद दाढ़ी बख़्श दी है; दुमदब्बू कहीं के !

कार्नवाल : शान्त रहो भी।
जो कुछ आता है ज़बान पर बकते जाते।
तुमने औरों का आदर करना भी सीखा ?

केण्ट : सीखा है, श्रीमन्, पर ग़ुस्सा बेक़ाबू होता है।

कार्नवाल : तू किस बात पर ग़ुस्सा है ?

केण्ट : इस पर, श्रीमन्, यह पाजी तलवार बाँधता,
जिसको सच्चाई से कोई ग़रज़ नहीं है।
यह उन बदमाशों में जो दिखते तो भोले
पर चूहे की तरह काटते दो टुकड़ों में
उन पवित्र सम्बन्धों के धागों को जिनसे
मज़बूती से लोग बँधे हैं; जो करते हैं
मक्खनबाज़ी तुनुकमिज़ाजी उनके मालिक

जब दिखलाते; जो कि आग में तेल डालते;
जो उनके ठण्डे दिमाग़ पर बरफ़ लगाते;
जो मौसम बतलानेवाले मुर्ग़ की तरह
मालिक की हर एक बहक, हर एक सनक पर
अपना रुख़ बदला करते हैं, कभी इधर को
कभी उधर को; जो कुत्ते की तरह जानते
एक बात बस, पिछलग्गूपन। थू है तुझ पर;
तुझको मिरगी आये, तुझे वबा ले जाये !
दाँत दिखाता है मेरी बातों पर जैसे
बेवक़ूफ़ मैं ? गधे, अगर तू कहीं खुले में
मिलता मुझको, ऐसे डण्डे बरसाता तू
धोबघटवा की ओर भागता चीपों करता।

कार्नवाल : बूढ़े, क्या बकता है ? तेरी अक़्ल कहाँ है ?

ग्लास्टर : यह बतलाओ, कैसे झगड़ा हुआ तुम्हारा ?

केण्ट : इस पाजी से मेरा कोई जोड़ नहीं है।
मैं उत्तर को जाता तो यह दक्खिन जाता।

कार्नवाल : तू इसको पाजी क्यों कहता ? बतला, इसका
क्या क़सूर है ?

केण्ट : श्रीमन्, इसके चेहरे से मुझको नफ़रत है।

कार्नवाल : शायद, मेरे, उनके, इनके चेहरे से भी।

केण्ट : साहब, मैं तो साफ़ बोलने का आदी हूँ।
माफ़ करेंगे, जो चेहरे मैं अपने आगे
देख रहा हूँ, उनसे अच्छे चेहरे मैंने
अपने जीवन में देखे हैं।

कार्नवाल : यह उन लोगों
में, जिनकी तारीफ़ साफ़-गो होने की हो
गयी कि वे मुँहफट बनने की कोशिश करते;
बनने चलते साफ़, मगर बन जाते भद्दे।—
ये न किसी की कभी चापलूसी करते हैं !
ये सीधे-सच्चे हैं, सच्ची बात कहेंगे !—
लोग मान लें ऐसा, तो इनकी बन आती;
और, न मानें तो ये मुँहफट बन जाते हैं।
मैं ऐसे पाजी लोगों को ख़ूब समझता;
चाल-जालसाजी होती है उनके भोंडे-
पन में जितनी, उतनी तो दस-बीस बुद्धुओं
में भी ढूँढ़े नहीं मिलेगी, जो अपने सब
काम सलीक़े से करते हैं !

केण्ट : श्रीमन्, मैं दृढ़ निष्ठा से, आन्तरिक सत्यता
से कहता हूँ, आप महा महिमाशाली की
अनुमति हो तो, आप कि जो हैं परम प्रतापी
अग्नि-ज्वाल माला से मण्डित स्वर्णाभामय
मार्तण्ड से—

कार्नवाल : इससे तेरा मतलब क्या है ?

केण्ट : मैं अपनी भोंडी भाखा को छोड़ रहा हूँ क्योंकि आपको वह नापसन्द है। इससे, श्रीमन्, यह न समझें कि मैं ठकुरसोहाती कहनेवालों में हूँ। जिस बुद्धू के भोंडेपन से आप धोखे में आये होंगे वह कोई और होगा। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं वैसा न होना चाहूँगा, भले ही आप मुझसे इतने ख़ुश हो जायें कि वैसा बनने के लिए आप मुझे ख़ुद कहें।

कार्नवाल : किस क़सूर पर तुमसे यह नाराज़ हो गया ?

ओसवाल्ड : मैंने कुछ भी नहीं किया था।
इसने राजा से कुछ ऐसी बात लगा दी
मुझे मारने को वे दौड़े; उनका ग़ुस्सा
भड़काने को, और साथ उनका देने को
इसने पीछे से आ मुझको लँगड़ी मारी;
नीचे गिरने पर इसने मुझको ठुकराया,
गाली दी औ' ताल ठोंक मुझ पर चढ़ बैठा।
जो ख़ुद दबा हुआ था उसको और दबाने
पर राजा की नज़रों में यह शख़्स उठ गया,
उसने इसको शाबशी दी। पहली टक्कर
में जो इसकी जीत हुई थी उसी ज़ोम में
इसने मुझ पर फिर अपनी तलवार उठायी।

केण्ट : ऐसे कायर, ठग लोगों को मूर्ख बनाने
को कोई मिल ही जाता है।

कार्नवाल : लक्कड़-बेड़ी
तो ले आओ ! तुझ खूसट-खुर्रार धूर्त को
अभी सबक़ सिखलाते हैं हम।

केण्ट : बूढ़ा तोता
क्या सीखेगा ! लक्कड़-बेड़ी मेरी ख़ातिर
मत मँगवायें। महाराज का नौकर हूँ मैं;
मुझे आपके पास उन्होंने ही भेजा है;
उनके सँदेसिये को लक्कड़-बेड़ी में रख
मेरे स्वामी की गरिमामय महिमा के प्रति
आप अनादर दिखलायेंगे; उनके प्रति
विद्वेष दिखाने का दुःसाहस आप न करिये।

कार्नवाल : लक्कड़-बेड़ी जल्दी लाओ !
मैं मैं हूँ औ' कार्नवाल का राजा हूँ तो
आधे दिन तक यह बेड़ी में खड़ा रहेगा।

रीगन : आधे दिन तक ! नहीं, शाम तक। क्यों न रात-भर ?

केण्ट : देवि, पिता के कुत्ते के प्रति भी क्या ऐसी
बेरहमी करना चाहेंगी ?

रीगन : चाहूँगी ही, जब तुम उनके पाजी साथी।

कार्नवाल : बहन गोनेरिल ने अपनी चिट्ठी में जिनका
ज़िक्र किया है, उन बेढंगों में यह भी है।

लक्कड़-बेड़ी लाने में क्यों देरी होती ?

[**लक्कड़-बेड़ी बाहर लायी जाती है**

ग्लास्टर : मेरी है प्रार्थना कि ऐसा आप मत करें।
इसका है अपराध बड़ा औ' इसके स्वामी
महाराज इस पर, निश्चय, इसको डाँटेंगे।
इसे ठीक करने को आप सज़ा जो देते
वह नीचे दर्जे के चोरों-बदमाशों को
दी जाती है, छोटी-मोटी चोरी करने,
साधारण नियमों का उल्लंघन करने पर।
महाराज अपने सँदेसिये की अवहेला
में अपनी अवहेला समझेंगे। यदि उसको
आप बेड़ियों में देते हैं तो वे बहुत
बुरा मानेंगे।

कार्नवाल : मैं जवाब दे लूँगा इसका।

रीगन : और बहन क्या बुरा नहीं मानेंगी इसका,
बुरा-भला जो कहा गया उनके कारिन्दे
को, जो पीटा उसे गया है ?—दो इसके
पाँवों में बेड़ी।—श्रीमन्, अब हम चलें यहाँ से।

[**ग्लास्टर और केण्ट को छोड़कर सब बाहर जाते हैं**

ग्लास्टर : तरस मुझे तुझ पर आता है, पर यह राजा
की मर्ज़ी है। सारी दुनिया परिचित है उनके
स्वभाव से। कौन उन्हें रोके, समझाये।
फिर भी तेरे लिए कहूँगा कुछ मैं उनसे।

केण्ट : कृपया, मेरे लिए कहें मत। रात जागना,
कष्ट उठाना, नया नहीं मेरे जीवन में।
ऐसी हालत में भी थोड़ा मैं सो लूँगा;
बाक़ी वक़्त बजाकर सीटी मैं काटूँगा।
नमस्कार है, आप जाइये।

ग्लास्टर : इसमें राजा
का क़सूर है। जो देखेगा, बुरा कहेगा।

[**बाहर जाता है**

केण्ट : महाराज पर क्या सटीक यह बात बैठती—
कल्पवृक्ष की छाया से मरुथल में आना—
सूरज, आकर अन्धकार हर बसुन्धरा का;
जिससे तेरे मंगलमय प्रकाश में मैं यह
पत्र पढ़ सकूँ। चमत्कार होने का सपना
संकट में ही देखा जाता। मुझे ज्ञात है,
कारडीलिया की यह चिट्ठी। अहोभाग्य जो
वह मेरी गति-विधि से अवगत, और उपाय

निकालेगी कुछ ऐसी भीषण घड़ियों में भी
भूलों का परिहार हो सके। थकी, देर तक
जागी, भारी पलकोंवाली सारी आँखो,
झँप जाओ, इस लज्जाजनक परिस्थिति में तुम
मुझे न देखो।
भाग्य, विदा दे, सोने जाता, मेरे ऊपर
कृपा-दृष्टि कर अपना चक्र फिरा कुछ ऐसा
मेरे अच्छे दिन फिर लौटें।

[सो जाता है

तीसरा दृश्य

जंगल

(एडगर का प्रवेश)

एडगर : अपने देश-निकाले की घोषणा सुनी थी;
एक वृक्ष-कोटर में छिपकर मैंने अपनी
जान बचाई। सब बन्दरगाहों के ऊपर
रोक लगी है। कोई ऐसी जगह नहीं है
जहाँ ताक में मेरी चौकस चौकी-गारद
नहीं पड़ी है। जब तक उनसे बच पाऊंगा
अपने को ज़िन्दा रक्खूंगा। औ' मैंने
ऐसा सोचा है—सबसे दीन-मलीन वेश
धारण कर लूंगा, पशु के जैसा, जो कि ग़रीबी,
मानवता के तिरस्कार में धारण करती।
अपने चेहरे के ऊपर कालिख पोतूंगा,
कमर लपेटूंगा कमरी से, बालों में गाँठें
दे लूंगा, और खुली नंगी काया से
तूफ़ानों के, आसमान के अत्याचारों
को झेलूंगा। इस प्रदेश में पागलख़ाने
के भिखमंगे पहले से पाये जाते हैं
जो अपनी जड़-मुर्दा-सी बाँहों के ऊपर
पिन, कीलें, लकड़ी के पच्चर रोज़मैरी के
शूल चुभाते, गला फाड़कर शोर मचाते।
और बनाकर भद्दी और भयंकर शक्लें
नीचे खेतों, छोटे गाँवों, भेड़सारों में
और मिलों में फेरी देते औ' लोगों से,
मौज-बहक में कभी बद्दुआ, कभी दुआ दे,
दान-दक्षिणा ऐंठा करते।—

बेचारा दुर्दिन का मारा ! बिना सहारा !
ऐसा होकर भी मैं कुछ हूँ; एडगर होकर
ख़ाक नहीं हूँ ।

[**बाहर जाता है**

चौथा दृश्य

ग्लास्टर के गढ़ का सामना
केण्ट लक्कड़-बेड़ी में

(लियर, विदूषक और भद्र पुरुष का प्रवेश)

लियर : यह अजीब है, चले गये घर से वे दोनों
और न वापस भेजा मेरे सँदेसिये को ।

भद्र पुरुष : जहाँ तलक मालूम मुझे है, कल तक उनका
क़तई नहीं इरादा था बाहर जाने का ।

केण्ट : मेरे अच्छे-सच्चे मालिक की जय !

लियर : यह क्या !
तूने ख़ुद क्या शर्मनाक यह शुग़ल चुना है ?

केण्ट : मेरे मालिक, नहीं—

विदूषक : हः-हः ! इसने पाँवों का गहना पहना है। घोड़ों को सिर से बाँधा जाता है, कुत्तों और रीछों को गर्दन से, बन्दरों को कमर से और आदमियों को पैरों से; जो आदमी अपने पाँवों को थिर नहीं रख सकता उसे यह कठ-बेड़ी पहना दी जाती है—अब थिरको बच्चू !—

लियर : कौन आदमी है जिसने तेरे दर्जे को
बे-पहचाने तुझे इस तरह खड़ा किया है ।

केण्ट : नहीं 'आदमी' केवल, शामिल औरत भी है,
यानी वे हैं बेटी औ' दामाद आपके ।

लियर : नहीं ।

केण्ट : हाँ ।

लियर : नहीं, मैं कहता हूँ ।

केण्ट : मैं कहता हूँ, हाँ ।

लियर : नहीं, नहीं, वे ऐसा नहीं कर सकते ।

केण्ट : हाँ, उन्होंने ही ऐसा किया है ।

लियर : मैं क़सम खा सकता हूँ, वे ऐसा नहीं करेंगे ।

केण्ट : मैं भी क़सम खाकर कहता हूँ कि यह उन्हीं का किया है ।

लियर ; ऐसा करने की वे हिम्मत नहीं करेंगे,
वे कर सकते नहीं न वे करना चाहेंगे ।
यह तो हत्या कर देने से भी बदतर है,
जान-बूझकर जुल्म-ज़ोर ऐसा दिखलाना ।

जितनी जल्दी तू बतला सकता हो बतला,
मेरे द्वारा भेजे जाने पर तूने क्या
कोई अनुचित काम किया जो दण्ड मिला यह ?
वे-क़सूर ही या तुझको यह सज़ा दी गयी ?

केण्ट : मेरे मालिक, जब उनके घर महामात्य की
चिट्ठी देने को मैं पहुँचा, उनके आगे
आदर से झुक सिर भी नहीं उठा पाया था,
तेज़ी से भागता, हाँफता, गिरता-पड़ता
दूत गोनेरिल का आ धमका, और मालकिन
का प्रणाम कह, उनका पत्र बढ़ाया आगे,
बिना किये परवाह कि हस्तक्षेप हो रहा।
फ़ौरन पत्र पढ़ा दोनों ने औ' पढ़ते ही
घर के सब नौकर बुलवाये, घोड़ों पर चढ़
एड़ लगायी, मुझसे बोले, पीछे आओ,
सुविधा से हम उत्तर देंगे, और उपेक्षा-
भरी दृष्टि से मुझको देखा।
और यहाँ पर मिला मुझे वह दूत दूसरा
जिसके स्वागत ने अवहेला मेरी की थी।
दूत वही था जिसने अब से कुछ दिन पहले
महाराज के प्रति अभद्र व्यवहार किया था;
बुद्धि से अधिक बल होने के कारण मैंने
खाँड़ा खींचा; उस पर डरकर उसने ऐसा
शोर मचाया उठा लिया घर को ही सिर पर।
महामहिम की बेटी औ' जामाता ने बस
इस क़सूर पर शर्मनाक यह सज़ा मुझे दी।

विदूषक : जब जंगली हंसिनियाँ उस तरफ को उड़ रही हों तो समझो
कि जाड़ा अभी नहीं गया है।
जिन बापों के तन के ऊपर चिथड़े होते
उनके बच्चे उनके प्रति अन्धे हो जाते;
जिन बापों के हाथों मोटी थैली होती
उनके बच्चे उनके प्रति आदर दिखलाते।
सभी जानते क़िस्मत ऐसी रण्डी गुण्डी
वह ग़रीब के लिए खोलती कभी न कुण्डी।
पर तेरी बेटियाँ तुझे देंगी मोती की लड़ियाँ,
इतनी, उनको गिन न सकेंगी एक साल की घड़ियाँ।

लियर : उफ़! यह कैसी घुटन उठ रही मेरे अन्दर
जो दबोचती है छाती को। उभर न ग़म, थम,
दबा हुआ रह। यह बेटी साहबा कहाँ हैं ?

केण्ट : श्रीमन्, राजा साहब के साथ; यहीं अन्दर।

लियर : कोई मेरे साथ न आये; रुको सब यहीं।

[**बाहर जाता है**

भद्र पुरुष : जो तुमने बताया उसके सिवा कोई क़सूर तुम्हारा नहीं था ?

केण्ट : कोई नहीं।
क्या बात है कि महाराज इतने कम लोगों के साथ आये हैं ?

विदूषक : यह सवाल पूछने के लिए अगर तुझे लक्कड़-बेड़ी में रक्खा जाता तो वह बिलकुल वाजिब होता।

केण्ट : क्यों, बुद्धू बसन्त ?

विदूषक : हम तुझे किसी चींटी की शागिर्दगी में रक्खेंगे जो तुझे सिखा सके कि जाड़ों के दिन भाग-दौड़ के लिए नहीं होते। वे लोग जो अपनी नाक के पीछे चलते हैं, अगर अन्धे न हुए तो, अपनी आँखें खोलकर चलते हैं; और बीस अन्धों में एक ऐसी नाक नहीं होती जो उसे सूँघ न ले जिससे बदबू आती है। जब कोई बड़ा पहिया ढलान पर ढुलक रहा हो तो उसे पकड़े रहने की कोशिश मत कर, नहीं तो उसके पीछे जाने से तेरी गर्दन ही टूटेगी; लेकिन अगर कोई बड़ा पहिया चढ़ान पर चढ़ रहा हो तो उससे चिपका रह कि तुझे भी खींचे चले। जब कोई बुद्धिमान तुझे इससे अच्छी सलाह दे तो मेरी मुझे लौटा दे। मैं तो चाहूँगा कि सिर्फ़ धूर्त ही इस पर चलें क्योंकि इसको देनेवाला सिर्फ़ मूर्ख है।

जो मतलब से साथ लगा है
मीत समझ मत उसको,
जब आँधी-पानी आयेगा
छोड़ भगेगा तुझको।
मैं ठहरूँगा, साथ रहूँगा,
बुद्धिमान भग जाये,
मूर्ख छोड़ मालिक को भागे
तो वह धूर्त कहाये।

केण्ट : तुमने यह कहाँ सीखा, मूर्खराज ?

विदूषक : लक्कड़-बेड़ी में तो नहीं, मूर्खराज।

(ग्लास्टर के साथ लियर का पुनः प्रवेश)

लियर : बात नहीं कर सकते मुझसे ! स्वस्थ नहीं हैं !
थके हुए हैं ! सारी रात सफ़र में थे वे !
सिर्फ़ बहाने; साफ़ बग़ावत की निशानियाँ।
मैं इससे अच्छा जवाब सुनना चाहूँगा।

ग्लास्टर : मेरे प्यारे मालिक, राजा के स्वभाव को
आप जानते—अंगारे हैं। एक बात जो
ठानी उससे उन्हें डिगाना नामुमकिन है।

लियर : मौत ! महामारी ! बद बख़्ती ! बदला ! घपला !
अंगारे ! यह क्या स्वभाव ? ग्लास्टर, ग्लास्टर,
कार्नवाल के राजा औ' उनकी बीवी से
बात करूँगा।

ग्लास्टर : मालिक, मैंने उनको सूचित कर रक्खा है।

लियर : सूचित उनको ! मुझे समझता तो है, बन्दे ?
ग्लास्टर : जी हाँ, मेरे अच्छे मालिक ।
लियर : महाराज को कार्नवाल से कुछ कहना है;
प्यारा बाप करेगा बेटी से कुछ बातें,
उसे सामने हाज़िर होना । उनको सूचित
किया गया है ? साँस उठ रही, ख़ून उबलता !
अंगारे ! क्रोधी स्वभाव के ! गरम तबीयत
के राजा से जाकर कह दो—
नहीं, अभी रुक जाओ; सम्भव है उसका जी
ख़राब ही हो । रोग-व्याधि में लापरवाही
उन कामों के प्रति प्रायः हो ही जाती है
जिन्हें स्वस्थ रहने पर हम करना चाहेंगे ।
जब तन की बीमारी मन की भी बीमारी
बन जाती है अपने तईं नहीं रहते हम ।
फिर मैंने अपने ज़िद्दी स्वभाव के कारण
शायद स्वस्थ उसे समझा है जो रोगी है ।
मेरा राज्य भाड़ में जाये । उसको क्यों इस

[**केण्ट को देखकर**

तरह बिठाया यहाँ गया है ?
इस कारस्तानी से तो ऐसा लगता है
कार्नवाल-रीगन का घर से ग़ायब होना
सिर्फ़ चाल है । मेरा सेवक अभी मुझे दो ।
जाओ, जाकर कार्नवाल, उनकी पत्नी से
कह दो, मुझको उनसे कुछ बातें करनी हैं,
अभी, इसी क्षण । कहो कि फ़ौरन आयें और
सुनें वे मेरी, वर्ना मैं उनके कमरे के
दरवाज़े पर ढोलक ले पीटूँगा तब तक
जब तक उनकी नींद हराम नहीं हो जाती ।
ग्लास्टर : सुलह आपके बीच रहे, मैं तो चाहूँगा ।

[**बाहर जाता है**

विदूषक : चच्चा जान, एक बावर्चिन थी; उसने जीती मछलियों को कड़ाही में डाल दिया और जब वे ऊपर उछलीं तो छड़ी से पीट-पीटकर वह उन पर चिल्लायी, 'दबी रहो, रण्डो, दबी रहो' । आप भी उसी तरह चिल्लाइए न चच्चा जान । उसका एक भाई था जिसने विशुद्ध दया की भावना से घोड़े की घास में विशुद्ध घी मिला दिया ।

(कार्नवाल, रीगन और नौकर-चाकरों के साथ ग्लास्टर का पुनः प्रवेश)

लियर : तुम दोनों के लिए दिवस मंगलकारी हो !

कार्नवाल : महाराज करुणानिधान की जय हो।

[**केण्ट को मुक्त कर दिया जाता है**

रीगन : महामहिम का दर्शन करके मैं प्रसन्न हूँ।

लियर : रीगन, मुझको लगता तुम हो; मुझे ज्ञात है
क्यों मुझको ऐसा लगता है; अगर प्रसन्न न
तू होती तो मैं तलाक़ देता तेरी स्वर्गीया माँ को
किसी और से तुझे गर्भ में धारण करने
की शंका पर। (**केण्ट से**)—तुम्हें मुक्त कर दिया गया है ?
पर इस पर फिर बात करूँगा—प्यारी रीगन,
तेरी बहन निगोड़ी निकली। रीगन, उसने
तीक्ष्ण-दन्त निर्ममता को है यहाँ बिठाया,
गिद्ध की तरह।

[**छाती की ओर संकेत करता है**

मुझसे बात नहीं की जाती; तू विश्वास
नहीं कर सकती जो ओछापन उसने—रीगन !

रीगन : श्रीमन्, धीरज धारण करिए।
क्या यह सम्भव नहीं आपको खुश रखने की
जितनी वह कोशिश करती है उसे आप ही
समझ न पाते।

लियर : तुम ऐसा कैसे कहती हो ?

रीगन : मैं यह सोच नहीं सकती हूँ बहन कभी
कर्तव्यों के पालन में आलस दिखलायेगी।
और अगर यह सच कि आपके पिछलगुओं के
हुड़दंगों पर उसने कोई रोक लगायी
तो उसके कारण ऐसे हैं और नतीजा
इतना अच्छा, उस पर कोई दोष न आता।

लियर : उसको मेरा शाप लगेगा !

रीगन : आप हो गये, श्रीमन्, बूढ़े।
जीवन की अन्तिम सीमा पर आप खड़े हैं
आप किसी ऐसे के अनुशासन में रहिए,
ऐसे के कहने पर चलिए जो कि आपको
जितना आप समझते उससे अधिक समझता।
इस कारण प्रार्थना आपसे मैं करती हूँ,
आप बहन के लौट जाइये, उससे, श्रीमन्,
कहिए, मैंने तेरे प्रति अन्याय किया है।

लियर : यानी उससे माफ़ी माँगूं ?
घर के मालिक के मुँह से ये शब्द लगेंगे
कितने शोभन, 'प्यारी बेटी, अब मैं बूढ़ा;
बूढ़ेपन में कौन पुछंता; घुटने टेक (**घुटने टेकते हुए**)
माँग रहा हूँ, मुझे दयाकर बिस्तर, बस्तर,
भोजन देना।'

रीगन : श्रीमन्, बन्द करें यह नाटक;
नहीं आपको यह चालें शोभा देती हैं;
आप बहन के लौट जाइए।

लियर : (उठते हुए) कभी न, रीगन।
उसने मेरे आधे साथी हटा दिये हैं;
आँख दिखायी, दिल पर चोटें कीं बातों से,
जैसे कोई साँपिन अपने दाँत चुभा दे।
उसने मेरे प्रति कृतघ्नता दिखलायी है
उसके सिर पर गाज गिरे औ' भरी जवानी
में ही उसको वात-रोग हो, वह लँगड़ी,
लूली हो जाये।

कार्नवाल : शर्म नहीं आती यह कहते।

लियर : ओ चंचल बिजलियो, शरारों से तुम अपने
उसकी नफ़रत-भरी आँख को अन्धा कर दो।
सूरज की तपती किरणें गन्दे दलदल से
जो विस्फोटक भाप उठातीं वह ग़रूर पर
उसके गिरकर चूर-चूर उसको कर डाले।

रीगन : दैव दया कर ! शाप आपका यही मुझे भी
सुनना होगा क्रोध आपका जब भड़केगा।

लियर : बेटी रीगन, तुझे कभी मैं शाप न दूँगा।
और न तू ही सरल और सुकुमार प्रकृति की
कभी कर्कशा हो जायेगी। उसकी आँखें
डरावनी हैं, तेरी शीतल और सुखद हैं।
तुझमें नहीं कि चिढ़े विनोदों से तू मेरे,
करे कटौती मेरे साथी-सामन्तों की,
ज़बाँ-दराज़ी करे, मुझे फटकार बताये,
मेरा भत्ता कम कर दे, कहने का मतलब,
मेरा रहना यहाँ न तेरे मन को भाये।
तुझे ज्ञात है क्या कर्तव्य पिता के प्रति है,
सन्तानें किस प्रेम-सूत्र से बँधी हुई हैं,
कैसे शिष्टाचार बरतना होता है औ'
कृतज्ञता की माँगें क्या हैं, तूने इसको
नहीं भुलाया, मैंने तुझको अपना आधा
राज दिया है।

रीगन : मतलब की बातों पर आयें।

लियर : मेरे बन्दे को किसने बेड़ी में रक्खा?

[भीतर तुरही बजती है

कार्नवाल : यह किसकी तुरही का स्वर है?

रीगन : मुझको लगता, बहन आ गयीं। चिट्ठी में ही
लिखा उन्होंने था कि यहाँ जल्दी आयेंगी।

(ओसवाल्ड का प्रवेश)

क्या तेरी मालकिन आ गयीं ?

लियर : यह गुलाम है जैसा टुच्चा-टिर्रा वैसे
ही इसकी मालकिन घमण्डी है, ओछी है,
हट, हरामज़ादे, आगे से ।

रीगन : मतलब क्या है महाराज का ?

लियर : किसने मेरे नौकर को बेड़ी में रक्खा ?
तुझको तो मालूम भी नहीं होगा, रीगन ।
किसे देखता हूँ मैं आते ।

(गोनेरिल का प्रवेश)

ओ परमेश्वर !
वृद्धों से यदि तुझे प्रेम है, यदि तेरे सुख-
मय शासन में आज्ञापालन का विधान है,
यदि तू पुरुष पुरातन यानी स्वयं वृद्ध है,
तू ले मेरा पक्ष भेजकर नभ-दूतों को,
कर सहायता मेरी (**गोनेरिल से**) तुझको शर्म न आती
मेरी इस बूढ़ी दाढ़ी की ओर देखते ?
रीगन, इससे हाथ मिलाना तू चाहेगी ?

गोनेरिल : क्यों न मिलाना चाहेगी ? अपराध किया है
क्या मैंने ? नासमझी औ' कमज़ोर-दिमाग़ी
जिसको भी अपराध कहें, अपराध हो गया ! —
ख़ूब !

लियर : अरी, ओ मेरी छाती ! तू पत्थर की ।
क्या तू अब भी नहीं फटेगी ? किसने मेरे
नौकर को बेड़ी में रक्खा ?

कार्नवाल : मैंने उसको रक्खा, श्रीमन् ! बदतमीज़ वह
ऐसा उसकी इससे भी अच्छी मेहमानी
की जानी थी ।

लियर : तुमने ? क्या यह काम तुम्हारा ?

रीगन : पिता, प्रार्थना मैं करती हूँ, दुर्बल हैं तो
दुर्बल रहिए, झूठी ताक़त मत दिखाइए ।
साथ बहन के लौट जाइए, अपने आधे
सामन्तों को रुख़सत करके पास उन्हीं के
रहिए जब तक मास समाप्त नहीं हो जाता ।
तब फिर मेरे पास आइए । अभी, देख ही
आप रहे, मैं घर से बाहर । बिना साज-
सामान, आपकी मेहमानी के लिए ज़रूरी ।

लियर : इसके साथ लौट जाऊँ मैं ? औ' पचास
अपने बन्दों को छुट्टी देकर ? यह नामुमकिन;
इससे अच्छा तो यह होगा, घर में रहना
ही मैं छोड़ूँ, बसूँ बनों में, तूफ़ानों के
झोंके झेलूँ, फिरूँ, भेड़ियों की संगत में,

पड़े मुसीबत सिर पर तो चीखूँ, चिल्लाऊँ।
इसके साथ लौट जाऊँ मैं ! तो क्यों प्रेमी
फ्रांस नृपति के पास न जाऊँ जिसने मेरी
छोटी बेटी बे-दहेज़ के अंगीकारी,
औ' उसके सिंहासन के आगे नत-मस्तक
मालगुज़ार-समान गुज़ारा अपना माँगूँ,
जिससे अपना अधम शरीर जिलाये रक्खूँ।
इसके साथ लौट जाऊँ मैं ! इससे तो यह
बेहतर होगा इस सईस की करूँ गुलामी

[**ओसवाल्ड की ओर संकेत करके**

औ' घोड़े की लीद उठाऊँ।

गोनेरिल : करें आपकी जैसी मर्ज़ी।

लियर : हाथ जोड़ता हूँ मैं बेटी, मुझको पागल
तो न बना तू; मेरी बच्ची, मैं तुझको
तकलीफ़ न दूँगा; आज अलविदा तुझसे कहता,
कभी नहीं अब हम देखेंगे एक दूसरे
को, न मिलेंगे, फिर भी मेरा रक्त-मांस तू,
मेरी बेटी, या तू कोई बीमारी है
मेरे तन की, जिसे मुझे अपनाना ही है,
मेरे रक्त-विकारों का तू कोई फोड़ा,
पीड़ा-दायक, विषहा, सूजा, पर मैं तुझसे
कुछ न कहूँगा, शर्म तुझे जब आनी होगी
तब आयेगी, मैं शर्मिन्दा नहीं करूँगा,
शाप न दूँगा गाज गिरे तेरे माथे पर,
परम न्याय कर्ता से भी मैं, बेटी, तेरी
कभी शिकायत नहीं करूँगा, जब सुधार
सकती हो अपने को सुधार तब, अच्छी बन
अपनी सुविधा से, मैं धीरज धर सकता हूँ, मैं
रीगन के घर रह सकता हूँ अपने साथी
सौ सामन्तों को लेकर के।

रीगन : ज़रा ठहरिए।
अभी आपके स्वागत को तैयार नहीं मैं,
औ' न साज-सामान, आपकी मेहमानी के
लिए उचित जो। श्रीमन्, बात बहन की मानें;
जो विश्लेषण करे आपके उग्र भाव का
वह सन्तुष्ट भले ही हो ले यह विचार कर
आप वृद्ध हैं और इसलिए—
लेकिन वह जो कुछ करती है सोच-समझकर।

लियर : ठीक बात क्या कही गयी है ?

रीगन : बिलकुल ठीक कहूँगी मैं तो। क्या पचास
अनुगामी, श्रीमन्, ठीक नहीं हैं ? भला आपको

ज़्यादा की आवश्यकता क्या ? भार उठाना
इतने लोगों का मुश्किल है, फिर इनसे
ख़तरा कितना है ! एक भवन में, दो शासन में
इतने ज़्यादा लोग शान्ति से रह सकते हैं ?
मुश्किल ही यह नहीं असम्भव भी लगता है।

गोनेरिल : श्रीमन्, उनसे आप नहीं क्यों सेवा लेते
जो इसके सेवक हैं या जो मेरे नौकर ?

रीगन : बहन ठीक ही तो कहती है। उस हालत में
अगर आपके कामों में वे ढील दिखाते
डाँट-डपट सकते उनको हम। आप अगर
मेरे घर आयें, मैं भी ख़तरा भाँप गयी अब,
तो मेरी प्रार्थना आप से कुल पचीस को
लेकर आयें, ज़्यादा को आपके साथियों
में न गिनूँगी औ' न उन्हें रख ही पाऊँगी।

लियर : मैंने तुमको सब दे डाला—

रीगन : और समय से ही दे डाला।

लियर : सबका तुम्हें प्रबन्धक माना, सारी सम्पद
का संरक्षक, सिर्फ़ शर्त यह रक्खी इतने
बन्दे मेरे साथ रहेंगे। क्या पचीस को
लेकर पास तुम्हारे आऊँ ? रीगन, तुमने
यही कहा है ?

रीगन : और इसे मैं दोहराती हूँ,
ज़्यादा को लेकर के मेरे पास न आयें।

लियर : वे टेढ़े बन्दे मुझको सीधे लगते हैं,
उनसे टेढ़ों को जब आगे देख रहा हूँ।
सबसे बुरे नहीं जो जग में उन्हें प्रशंसा
कुछ पाने का हक़ तो है ही। **(गोनेरिल से)** मैं तेरे ही
साथ चलूँगा। दूने हैं तेरे पचास
इसके पचीस से और प्यार भी तेरा दूना।

गोनेरिल : श्रीमन्, सुनिये मैं जो कहती। आवश्यकता
कहाँ आपको है पचीस की, दस कि पाँच की,
जब इस घर में इनसे दूने सदा आपकी
सेवा करने को हाज़िर हैं ?

रीगन : आवश्यक है नहीं एक भी।

लियर : आवश्यकता को लेकर के बहस करो मत,
भिखमंगा भी अपनी छोटी-मोटी चीज़ें
आवश्यकता से कुछ ऊपर ही रखता है।
जीवन को जो बिलकुल आवश्यक है दो तो
मानव, निश्चय, पशु के स्तर पर उतर पड़ेगा।
तू नारी है, केवल सर्दी से बचना ही
यदि आवश्यक क्यों भड़कीले वस्त्र पहनती ?
मुश्किल से वे तन को गर्मी पहुँचा पाते।

पर सच्ची आवश्यकता के लिए, दैव, तुम
मुझे धैर्य दो; मुझे धैर्य की आवश्यकता।
देवो, मुझको देख रहे हो, मैं बूढ़ा हूँ;
जितना बूढ़ा हूँ उतना ही दुखियारा हूँ—
दोनों ने दुर्दशा बना डाली है मेरी।
अगर तुम्हीं से प्रेरित होकर हृदय पुत्रियों
के विरुद्ध हो गये पिता के, तो तुम मुझको
इतना बुद्धू तो न बनाओ, शीश झुकाकर
मैं यह सह लूँ। मुझमें तुम क्रोधाग्नि जगाओ;
औरत के हथियार, आँसुओं की बूँदों से
दाग़ न लगने पाये मेरे मर्द गाल पर !
नहीं, अरी चण्डाल चुड़ैलो, तुम दोनों से
मैं ऐसा बदला लूँगा यह सारी दुनिया—
ऐसा कुछ कर दिखलाऊँगा, नहीं जानता
अभी कि वह क्या, जिससे सारी धरती यह
थरथरा उठेगी। तुम सोचतीं कि रोऊँगा मैं ?
नहीं कभी भी मैं रोऊँगा, गो रोने के
लिए बहुत है। लेकिन इसके पूर्व कि मेरे
आँसू निकलें, मेरी छाती फटकर टुकड़े-
टुकड़े होगी।—ओ रे बुद्धू—
मुझको लगता है मैं पागल हो जाऊँगा।

[**लियर, ग्लास्टर, केण्ट और विदूषक बाहर जाते हैं**

कार्नवाल : हम अन्दर हो जायें, आँधी आनेवाली।

[**आँधी की आवाज़ कुछ दूर पर**

रीगन : यह घर छोटा, वृद्ध महाशय औ' उनके गण
इसमें अच्छी तरह नहीं रक्खे जा सकते।

गोनेरिल : यह तो उनका ही क़सूर है, जो आराम
नहीं कर सकते, अपनी ज़िद का मज़ा चखेंगे।

रीगन : अगर अकेले वे आयें, उनका स्वागत है,
लेकिन साथी एक नहीं उनका रक्खूँगी।

गोनेरिल : मेरी भी ऐसी ही मंशा।
चले गये ग्लास्टर किधर को ?

रीगन : साथ गये थे वृद्ध महाशय के; वे तो
लौटे आते हैं।

(ग्लास्टर का पुनः प्रवेश)

ग्लास्टर : महाराज हैं बड़े तैश में।

रीगन : कहाँ जा रहे ?

ग्लास्टर : घोड़े माँगे हैं, जायेंगे कहाँ मुझे
मालूम नहीं है।

कार्नवाल : उनको जाने देना अच्छा;
अपनी मर्ज़ी से जाते हैं।

गोनेरिल : श्रीमन्, उनको रुकने को हर्गिज़ मत कहिए।

ग्लास्टर : दुख है, रात चढ़ी आती है, तेज़ हवाएँ
झोंकों पर झोंके देती हैं, मीलों कोई
झाड़ी नहीं दिखायी देती, आड़ के लिए।

रीगन : ज़िद्दी अपनी ज़िद से जो नुक़सान उठाते,
वही नसीहत उनको देता। दरवाज़ों को
बन्द करा दें। उनके सब साथी बिगड़ैले;
भरकर उनके कान न जाने क्या करने को
उनको आमादा कर दें वे; ऐसों से डर
कर रहना ही बात अक़्ल की

कार्नवाल : बन्द करा दें
दरवाज़ों को। राय ठीक दी है रीगन ने।
चलें बचें हम सब आँधी से।

[**सब बाहर जाते हैं**

तीसरा अंक

पहला दृश्य

खुला मैदान

(आँधी—बादलों की गरज, बिजली की चमक। केण्ट और एक भद्र पुरुष का प्रवेश और मिलन)

केण्ट : आँधी के अतिरिक्त कौन है ?

भद्र पुरुष : आँधी-सा ही
या जिसके अन्तर में आँधी उठी हुई है।

केण्ट : तुम्हें जानता। महाराज हैं कहाँ, बताओ ?

भद्र पुरुष : क्रुद्ध प्रकृति के औद्धत्य को झेल रहे हैं;
कहते हैं, ओ तेज़ हवाओ, इस धरती को
बहा सिन्धु के बीच डुबा दो या फिर उच्छल
औ' उत्ताल तरंगों को थल पर दौड़ाओ,
जिससे जगती का क्रम बदले या मिट जाये।
वे अपने सफ़ेद बालों को नोच रहे हैं
जिनको उच्छृंखल अन्धड़ के अन्ध झकोरे
पागलपन में पकड़ न जाने कहाँ उड़ाकर
ले जाते हैं। आँधी-पानी के आगे-पीछे

जाते-टकराते झोंकों से लड़ते हैं
औ' अपने मानव की छोटी-सी दुनिया में
उनसे होड़ लगाने की कोशिश करते हैं।
आज रात जब भूखे भालू और भेड़िये
भी अपनी माँदों में सोये, सिंह नहीं
बाहर आने की हिम्मत करते, वे नंगे सिर
भाग रहे हैं लक्ष्य-विहीन, हताश, बावले !

केण्ट : लेकिन उनके साथ कौन है ?

भद्र पुरुष : सिर्फ़ विदूषक, हँसी-दिल्लगी से जो अपनी
उनके दिल पर लगी चोट को सहलाता है।

केण्ट : बन्धु, जानता हूँ मैं तुमको।
और सूचना मुझे मिली जो उसके बल पर
एक भेद तुमसे कहने की हिम्मत करता—
अलबानी औ' कार्नवाल में तना-तनी है,
गो ऊपर से उसे छिपाये रखने की
दोनों कोशिश में; उनके नौकर, जो नौकर-से
ही लगते हैं—हुआ सितारा जिसका ऊँचा
ऐसा कौन न जो नौकर-चाकर रक्खेगा—
फ्रांस की तरफ़ से जासूसी करनेवाले;
चालाकी से भेद यहाँ का लेते रहते;—
'तनातनी', जो ज़ाहिर होती है दोनों के
मनमुटाव से, या उस कड़े नियन्त्रण से जो
दोनों रखते वृद्ध-दयामय राजा के प्रति;
या फिर कुछ गहरे मसले हैं जिनकी शायद
ये बाहर की निशानियाँ हैं।
पर यह सच इस बँटे राज्य में फ्रांस देश की
कुछ सेनाएँ आ पहुँची हैं और हमारी
लापरवाही देख हमारे बड़े-बड़े
बन्दरगाहों में छिपकर बैठीं, और ताक में
हैं कि जल्द ही खुली लड़ाई घोषित कर दें।
काम कराना अब कुछ तुमसे।
मेरे ऊपर यदि इतना विश्वास तुम्हें हो
तो तुम जल्दी डोवर जाओ। वहाँ मिलेगा
कोई तुमसे, धन्यवाद जो तुमको देगा।
उसको ठीक ख़बर तुम देना, महाराज को
अस्वाभाविक औ' पागल कर देनेवाला
दुःख मिला जो उससे उनको उचित शिकायत।
पैदा-पला भले घर में मैं भला आदमी;
मुझे जानकारी कुछ है, कुछ आश्वासन भी
दिया गया है; इसीलिए यह काम सौंपता
हूँ मैं तुमको।

भद्र पुरुष : इस पर तुमसे और बात करना चाहूँगा।

केण्ट : नहीं ज़रूरत इसकी कोई।
इसे प्रमाणित करने को बाहर से दिखता
हूँ मैं जितना भीतर उससे बहुत अधिक हूँ,
तुमको देता हूँ यह थैली, खोलो, देखो,
ले लो जो इसके अन्दर है। कारडीलिया
तुम्हें दिखे तो, डरो नहीं वह दीखेगी ही,
उसे अँगूठी यह दिखलाना औ' तुमको वह
बतलायेगी कौन तुम्हारा यह साथी है,
जिसे अभी तुम नहीं जानते। बुरा बवण्डर!
महाराज का पता लगाने मैं जाऊँगा।

भद्र पुरुष : हाथ मिलाओ। और तो नहीं कुछ कहना है?

केण्ट : थोड़े शब्द मगर मतलब में उनसे ज़्यादा
अभी तलक जो कहे गये हैं—
महाराज को जब हम पायें, जिन्हें खोजने
तुम जाओगे उधर, इधर को मैं जाऊँगा,
उनके ऊपर नज़र पड़े जिसकी भी पहले
दे आवाज़ दूसरे को वह।

[**दोनों विभिन्न दिशाओं में बाहर जाते हैं**

दूसरा दृश्य

खुले मैदान का दूसरा हिस्सा—
आँधी अब भी चल रही है

(**लियर और विदूषक का प्रवेश**)

लियर : बहो हवाओ, बहो कि थककर चूर-चूर हो!
बहो वेग से! सघन घनो, बरसो, अखण्ड-
धारा में बरसो, गिरजे की मीनारें भीगें,
गुम्बद डूबें। चकाचौंध करनेवाली चपलाओ
चमको, तड़पो, कड़को, गरजो, तरजो,
देवदार के खड़े वृक्ष चिरकर गिर जायें!
उल्का मेरे श्वेत केश में आग लगाये!
सबको थरथर कम्पित करनेवाले वज्रो!
फिर-फिर टूटो गोल धरा चपटी हो जाये।
कुदरत के सारे साँचों को तोड़-फोड़ दो,
और प्रकृति के बीज-कोष को मींज-मसल दो,
जो कृतघ्न मानव को जन्म दिया करते हैं।

विदूषक : ओ चच्चा जान, पानी के लिए दुआ माँगी जाती है जब सूखा पड़ा हो न कि जब झड़ी लगी हो। मेरे अच्छे चच्चा जान,

अन्दर जाइये और अपनी बेटियों से दुआएँ माँगिए; यह रात न दाना पर रहम करनेवाली है, न नादान पर।

लियर : गला फाड़कर गरजो मेघो, शोले उगलो,
पानी की धारा में फूटो ! आँधी-पानी,
बादल-बिजली तो मेरी बेटियाँ नहीं हैं।
तुम्हें नहीं निर्दयता का अपराधी कहता,
तुमको मैंने राज दिया कब या दुलराया,
तुम मुझको आदर देने को बाध्य नहीं हो,
जी भर मुझ पर जुल्म करो तुम, यहाँ खड़ा मैं
दास तुम्हारा, निर्धन, निर्बल, जर्जर, बूढ़ा
औ' अपमानित। फिर भी तुममें भरी ग़ुलामी;
मेरी दोनों दुष्ट बेटियों के संगी बन
तुमने मुझ पर आसमान से जंग छेड़ दी—
मुझ पर जो इतना बूढ़ा, सफ़ेद बालों का !
ओ, ओ, यह तो मेरे ऊपर बड़ी ज़्यादती।

विदूषक : जिसका सिर फिरा नहीं होता वह अपने सिर को छिपाने का इन्तज़ाम रखता ही है।

जिसके पास नहीं घर ऐसा
जिसमें शीश छिपाये,
गर ऐसा नर घरनी लाये
तो जी भर पछताये।
जिसे बनाना था दिल उसको
जो तलुआ कर डाले,
उसके दिल में चुभें न काँटे,
पड़ें न कैसे छाले !

कोई ऐसी ख़ूबसूरत औरत नहीं है जो शीशा पाये और उसके सामने मुँह न बनाये।

लियर : नहीं, नहीं, अब मैं धीरज की मूर्ति बनूँगा;
कुछ न कहूँगा।

(केण्ट का प्रवेश)

केण्ट : कौन यहाँ है ?

विदूषक : कसमियाँ, यहाँ हैं एक बड़ी हस्ती और एक नाचीज़, यानी एक दाना और एक नादान।

केण्ट : बड़े दुःख की बात कि, श्रीमन्, आप यहाँ हैं;
रात-प्रेमियों को भी ऐसी रात न भाती;
अन्धकार में विचरण करनेवाले पशु भी
क्रुद्ध गगन से भयाक्रान्त हो नहीं माँद से
बाहर आते। जब से मैंने होश सँभाला
मैंने, बाबा, कभी न देखा बिजली का इस
भाँति चमकना, घन का ऐसा भीषण गर्जन,
आँधी का ऐसा सन्नाटा, बरखा का ऐसा

अर्राटा। मानव में सामर्थ्य नहीं है
आसमान के इस ऊधम को भोगे-झेले।

लियर : आसमान के बड़े देवता जो कि हमारे
सिर के ऊपर महा भयंकर धमा-चौकड़ी
मचा रहे हैं, अपने दुश्मन तो पहचानें—
नीचो, अपने अपराधों पर परदा डाले
वहुत दिनों तक न्याय-दण्ड से बचते आये,
लेकिन अब तुम थरथर काँपो; खून-खराबा
करनेवालो, दुराचारियो, महा पापियो,
पहन पुण्य का बाना धोखा देनेवालो,
डरकर भागो; ओ हत्यारो, तुमने अपने
पाखण्डों, हथकण्डों के बल बहुत दिनों तक
खेल किया मानव-जीवन से, लेकिन अब तुम
पकड़ गये हो; छिप-छिप किये गये अपराधो,
अब अपने भेदों को खोलो, आसमान के
जाबिर जमदूतों के आगे माफ़ी माँगो।
मुझसे क्या अपराध हुआ जो मेरे प्रति
अपराध हुआ है।

केण्ट : उफ़! इस झंझा में नंगे सिर!
मेरे स्वामी, यहाँ निकट ही एक माँद है
जहाँ आप आँधी-पानी से बच सकते हैं;
वहीं शरण लें; मैं उस पक्के घर को जाता
जिसमें बसनेवालों का दिल पत्थर से भी
ज़्यादा निर्मम; अभी पूछता हुआ आपको
वहाँ गया तो पीठ फेर ली सबने मुझ पर;
फिर जाता हूँ, शायद मुझ पर दया करें कुछ।

लियर : मैं फिर से होशोहवास में, मेरे बच्चे,
आ! कैसा है, मेरे बच्चे? ठण्ड लग रही?
काँप रहा मैं। कहाँ रह गया मेरा नन्हाँ,
मेरा साथी। आवश्यकता जादूगरनी—
तुच्छ वस्तुओं को भी जो बहुमूल्य बनाती।—
आ, बतला यह माँद कहाँ है।—
ओ मेरे मूरखबसन्त, ओ मेरे साथी,
अब भी मेरे दिल का कोई कोना ऐसा
जिसको तेरे लिए दुःख है।

विदूषक : थोड़ी-सी भी बुद्धि अगर हो मेरी सुनो, निगोड़ो,
जैसी आये वैसी ओड़ो, धीरज को मत छोड़ो।
धीरे-धीरे बहे बयारी या आँधी झकझोरे,
नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ बरसें या टूटें घन घोरे।

लियर : ठीक कहते हो, मेरे बच्चे। आओ, मुझे माँद का रास्ता बताओ।

[लियर और केण्ट बाहर जाते हैं

विदूषक : यह बौराई रात किसी रण्डी को ठण्डी करने के लिए बड़ी मौजूँ है। ख़ैर जाने के पहले एक भविष्यवाणी कर दूँ—
जब उपदेशक अर्थ कहे कम ज्यादा शब्द बिखेरे,
जब कलार थोड़ी शराब दे, ज्यादा पानी गेरे,
जब शरीफ़ दिखलाये दर्ज़ी के फ़न में चतुराई,
मौज करे क़ाफ़िर, दण्डित हो रण्डी का शैदाई,
जब क़ानूनन झूठ और सच में न फ़र्क़ रह जाये,
बाना तो पहने वीरों का पर धन-राशि जुटाये,
जब पर निन्दा करती फिरती जीभ न देखी जाये,
जब न भीड़ के अन्दर पाकिटमारों की चल पाये,
सूदख़ोर जब बैठ सरे बाज़ार गिने धन अपना,
रण्डी-मुण्डी देखें चर्च खड़ा करने का सपना।
अलबियान में तब फैलेगी, मित्र, गड़बड़ी भारी
तब युग ऐसा आयेगा,
जो जिया देख पायेगा,
पावों के बल चलना समझी जायेगी होशियारी।
यह भविष्यवाणी मरलिन करेगा क्योंकि मैं उसके समय के पहले का हूँ न ?

[**बाहर जाता है**

तीसरा दृश्य

ग्लास्टर के गढ़ का कमरा

(ग्लास्टर और एडमण्ड का प्रवेश)

ग्लास्टर : बड़े खेद की बात है, एडमण्ड; मुझे यह अमानुषिक व्यवहार पसन्द नहीं। जब मैंने उनकी अनुमति चाही कि महाराज को मैं अपनी संवेदना दे सकूँ तो उन्होंने मुझसे मेरा घर छीन लिया। मुझे चेतावनी दी कि मैं न उनकी बात करूँ, न उनके पक्ष में कुछ कहूँ और न उन्हें किसी प्रकार का प्रश्रय दूँ, वर्ना मुझे हमेशा के लिए उनकी नाराज़गी उठानी पड़ेगी।

एडमण्ड : बड़ी क्रूर और अमानुषिक है यह बात।

ग्लास्टर : आओ, सुनो। तुम कुछ मत कहना। अलबानी और कार्नवाल में अब एका नहीं रह गया; और एक इससे भी बुरी बात हुई है। आज रात मुझे एक ख़त मिला है जिसके बारे में बात करना ख़तरे से ख़ाली नहीं; मैंने उसे अपने सन्दूकचे में बन्द कर दिया है। महाराज को जो यातनाएँ आज दी जा रही हैं उनका पूरा-पूरा बदला लिया जायेगा; किसी सेना की एक टुकड़ी हाल ही में उतरी है; हमको महाराज का साथ देना चाहिए। मैं उनका

पता लगाऊँगा और गुप्त रीति से उनकी सहायता करूँगा। तुम जाओ और कार्नवाल को बातों में लगाये रहो जिससे महाराज के प्रति मेरी संवेदना का उसे भान भी न हो। अगर वह मेरे बारे में पूछे तो कह देना, बीमार हैं, सोने चले गये हैं। अगर इसके लिए मेरे प्राण भी ले लिये जायें, जिससे कम सज़ा की धमकी मुझे नहीं दी गयी, तो भी मैं अपने स्वामी वृद्ध महाराज की राहत के लिए कुछ करना चाहूँगा। कोई अजीब बात होने-वाली है, एडमण्ड; तुम होशियार रहना।

[**बाहर जाता है**

एडमण्ड : इस वर्जित संवेदन की सूचना मुझे अब
कार्नवाल को फ़ौरन देनी; चिट्ठी की भी।
काम ठीक ही मुझको लगता, इससे मुझको
वह मिलता है जो कि पिता मेरा खोता है,
सब मिलता है, युग-युग से होता आता है,
बूढ़ा गिरता है जवान उठता जाता है।

[**बाहर जाता है**

चौथा दृश्य

खुला मैदान—माँद के सामने

(**लियर, केण्ट और विदूषक का प्रवेश**)

केण्ट : यहाँ जगह है, मेरे स्वामी, अन्दर जायें;
खुली रात की यह बेरहमी इतनी ज़ालिम
झेल नहीं कोई इन्सान इसे सकता है।

[**तूफ़ान अब भी ज़ोरों पर है**

लियर : छोड़ो मुझे अकेला।
केण्ट : मेरे अच्छे स्वामी,
अन्दर जायें।
लियर : तू क्या मेरा दिल तोड़ेगा ?
केण्ट : इसके पहले मेरा टूटे, मैं चाहूँगा;
मेरे मालिक, अन्दर जायें।
लियर : हाड़-मांस पर तुझको यह तूफ़ानी हमला
बहुत अखरता। निश्चय तुझे अखरता होगा,
किन्तु न मुझको; बड़ा दर्द जिस जगह उठा हो
छोटे की परवाह वहाँ किसको होती है।
भालू से तू भागेगा पर तेरे आगे

अगर गरजता गहरा सागर मुँह फैलाये
तो तू डटकर भालू का सामना करेगा।
हल्का मन तन को सुकुमार बना देता है;
मेरे मन के अन्दर जो तूफ़ान उठा है
उसने मेरे अन्य सभी अंगों को मुर्दा
कर डाला है। सन्तानों की यह कृतघ्नता !
कभी सुना है, हाथ काट खाया है मुख ने
क्योंकि हाथ ने मुख को भोजन पहुँचाया है !
इसकी पूरी सज़ा मुझे देनी ही होगी।
अब मैं और नहीं रोऊँगा। ऐसी काली-
कठिन रात में मुझको घर से बाहर करना !—
और कड़ाके से बरसो, मैं सब सह लूँगा।—
ऐसी पंकिल प्रलय रात में ! रीगन-गोनेरिल !
अपने वृद्ध कृपालु पिता को, जिसने अपनी
उदारता में सारा कुछ तुमको दे डाला—
पर ऐसे रोना-चिल्लाना पागलपन है
जिससे घृणा मुझे होती थी; और नहीं अब—

केण्ट : मेरे मालिक, यहाँ जगह है, अन्दर जायें !

लियर : बख़्श मुझे, तू ही जा, मेरी फ़िक्र छोड़ दे;
यह तूफ़ान मुझे अवकाश नहीं देने का
उन बातों को सोचूँ जो ज्यादा दुखदायी।
फिर भी मैं अन्दर जाऊँगा। मेरे बच्चे,

(**विदूषक से**)

तू पहले जा, ओ ग़रीब बे-घर-छप्पर के—
ना, पहले तू अन्दर जा रे, अभी प्रार्थना
मुझको करनी; फिर मैं आकर सो जाऊँगा।

[**विदूषक अन्दर जाता है**

जहाँ कहीं भी हो तुम नंगे-भूखे लोगो,
जो इस निर्दय प्रलय रात्रि को झेल रहे हो—
बे-घर-छप्पर के, बे दाना-पानी वालो,
या चूते, भहराते घर के दीन वासियो—
कैसे इस निर्मम मौसम से तुम अपने को
बचा सकोगे ?— मैंने उनकी फ़िक्र नहीं की
ओ समृद्धि के रोग, इलाज करा तू अपना,
छोड़ खुला अपने को जिससे भोग सके तू
जो ये दुखिया-दीन भोगते, जिससे उनको
तू दे डाले नहीं ज़रूरत जिसकी तुझको,
और इस तरह साबित कर दे, ईश्वर न्यायी।

एडगर : (**अन्दर से**) डेढ़ पुरसा, डेढ़ पुरसा, टाम का कोई पुरसाँ-हाल नहीं।

[**विदूषक माँद से बाहर निकलता है**

विदूषक : चच्चा जान, अन्दर मत आइयेगा; यहाँ भूत बैठा है। बचाओ ! बचाओ !

केण्ट : मेरा हाथ पकड़ ले। कौन है अन्दर ?

विदूषक : भूत है भूत; कहता है, मेरा नाम है दुखिया टाम।

केण्ट : कौन है तू जो घास में छिपा हुआ भुनभुना रहा है ?
बाहर निकल।

(पागल के वेश में एडगर का प्रवेश)

एडगर : दूर हट ! बदज़ात शैतान मेरा पीछा कर रहा है।
कटीली झाड़ियों को हवाएँ झकझोर रही हैं। भग, अपने ठण्डे बिस्तर में जाकर अपने को गर्म कर।

लियर : क्या तूने अपना सबकुछ अपनी कन्याओं
को दे डाला, जिससे तेरी हालत ऐसी ?

एडगर : दुखिया टाम को कौन कुछ देता है ? जिसको बदज़ात शैतान खदेड़ रहा है कभी आग के बीच ले जाकर, कभी लपटों के, कभी धारा के, कभी भँवर के, कभी कीचड़ के, कभी दलदल के बीच ले जाकर। उसने मेरी तकिया के नीचे छुरियाँ रख दी हैं, मेरी कुर्सी के नीचे फाँसी के फन्दे, मेरी खिचड़ी के पास ज़हर की पुड़िया कि मैं आत्महत्या कर लूँ। उसने मेरे दिल में ऐसा घमण्ड भर दिया है कि मैं लाल टट्टू पर चढ़कर चार इंच के पुल पर उसे दौड़ाऊँ; अपनी ही छाया को दग़ाबाज़ समझकर उसका पीछा करूँ।
ख़ैर मना कि तेरी सुध-बुध अभी सलामत है। टाम को सर्दी लग रही है—ओ, ड-ड-ड-ड··· (**सर्दी से दाँत बजने की आवाज़**)—भगवान तुझे झंझावात से, उल्कापात से, बीमारी-महामारी से बचाये ! दुखिया टाम पर दया कर जिसे बदज़ात शैतान सता रहा है। वहाँ इसी वक़्त मैं उसे पछाड़ सकता था, और वहाँ, और फिर वहाँ और वहाँ।

[**तूफ़ान अब भी ज़ोरों पर है**

लियर : क्या इसकी बेटियों ने इसे इस हालत पर
पहुँचाया है ? बचा नहीं पाया तू कुछ भी ?
क्या तूने उनको अपना सब कुछ दे डाला ?

विदूषक : नहीं, उसने एक कम्बल बचा लिया था, नहीं तो हम सब को शर्मिन्दगी उठानी पड़ती।

लियर : अब वह सारी वबा जो कि मानव-पापों पर
फट पड़ने को आसमान से लटक रही है
तेरी कन्याओं पर टूटे।

केण्ट : श्रीमन्, इसके नहीं बेटियाँ।

लियर : उन धोखेबाज़ों को मौत उठा ले जाये।
इसकी निर्दय कन्याओं को छोड़ न कोई
इसको ऐसी हालत पर पहुँचा सकता था।

खूब रस्म यह चली कि अपमानित बापों के
तन के ऊपर कोई कुछ न दया दिखलाये।
सज़ा ठीक ही है इस तन की जिसने ऐसी
प्राण-हारिणी कन्याओं को जन्म दिया था।

एडगर : हरिणी हरी पहाड़ी चढ़ती
हौले-हौले-ले-ले-ले-ले···

विदूषक : यह ठण्डी रात हम सबको पागल और बेवक़ूफ़ बनाकर छोड़ देगी।

एडगर : बदज़ात शैतान से होशियार रहो; अपने माता-पिता की आज्ञा मानो; अपने वचनों को पूरा करो; झूठी सौगन्धें मत खाओ ! पर-नारी को अंग न लगाओ और घमण्ड में फूलकर कुप्पा न हो जाओ। टाम को सर्दी लगती है।

लियर : तू पहले क्या करता था ?

एडगर : मैं ख़िदमतगार था, मगर दिलो-दिमाग़ से मग़रूर; बाल बनाता था छल्लेदार, जेब में रूमाल रखता था रेशमी; अपनी मालकिन के दिल का दुलारा था, अँधेरे में उसे बहुत प्यारा था; बात-बात पर क़समें खाता था और ख़ुदा की ख़ास मौजूदगी में उन्हें तोड़ता था; सम्भोग करते-करते सो जाता था और जागकर फिर सम्भोग में जुत जाता था; शराब का दीवाना था, जुए का शौकीन, और औरत पर ऐसे टूटता था कि तुर्क क्या टूटेगा। दिल का झूठा था, कान का कच्चा, हाथ का ख़ूनी; सुअर-सा सुस्त था, लोमड़ी-सा चोर, भेड़िए-सा लालची, कुत्ते-सा पागल और शेर-सा शिकारी था। मख़मल की जूतियाँ और रेशम की पोशाकों पर रीझकर अपना दिले नादाँ किसी औरत को न दे डाल। अपने क़दमों को चकलों से दूर रख, अपने हाथों को पेटीकोट से अलग, और देख, क़र्ज़ देनेवालों के रजिस्टर में तेरा नाम दर्ज न होने पाये। बदज़ात शैतान तेरे पास आये तो तुझे चाहिए उसे ठुकराये। ठण्डी हवा अब भी कटीली झाड़ियों को झकझोरती बह रही है, कहती सन्, सनन्, सर-सर्-भर-भर्-हर-हर्—हर-हर नहाये मेरा राजा, टका सेर भाजी, टका सेर खाजा।

[**तूफ़ान अब भी ज़ोरों पर है**

लियर : अपने नंगे बदन पर आसमान के इस अत्याचार को सहने से अच्छा तो यह होता कि तू अपनी क़ब्र में होता। क्या इन्सान इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं ?—इसकी ठीक देख-रेख करो। तू अपने रेशम के लिए कीड़ों का ऋणी नहीं, न चमड़े के लिए पशुओं का, न ऊन के लिए भेड़ों का, न इत्र के लिए फूलों का। अह, हम तीनों अपनी-अपनी लिबास के कारण उससे भिन्न दिखायी पड़ते हैं जो हम अस्ल में हैं। तू इन्सान है, उसकी अस्ल शक्ल में। सभ्यता के प्रभाव से वंचित मनुष्य एक दीन-हीन पंजोंवाले पशु के सिवा और कुछ नहीं, जैसा कि तू है इस

समय। शरीर को ढकनेवाले कपड़ो, दूर हो। चलो, खोल दो मेरे बटन।

[अपने कपड़ों को फाड़ता है

विदूषक : चच्चा जान, यह आप क्या कर रहे हैं, ठहरिए। ऐसी ख़तरनाक रात में तैरने का इरादा अच्छा नहीं। इस बरसाती मैदान में थोड़ी-सी आग ऐसी लगती जैसे किसी कामी का दिल; दिल में छोटी-सी चिनगारी, बाक़ी सारा बदन ठण्डा। देखिये एक चलती-फिरती आग ही तो सामने से चली आ रही है।

(मशाल के साथ ग्लास्टर का प्रवेश)

यह बदज़ात शैतान फ्लिबरटीजिवेट है; सरे शाम निकलता है और मुर्ग़ की पहली बाँग तक घूमता रहता है; यह आँखों में जाला-माड़ा देता है या भैंगापन या होठों को बीच से फाड़ देता है, गेहूँ की पकती बाल को सड़ाता है और धरती के छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं को सताता है।

बैताली ने जब दुनिया के चक्कर मारे सात,
मिली भूतनी जिसके चेले नौ थे उसके साथ,
बोला, मेरा कहना मान,
अब न किसी को कर हैरान;
औ' अब अपने सिर पर अपने पाँवों को रख भाग !

केण्ट : श्रीमन्, कैसे हैं आप ?

लियर : यह कौन है ?

केण्ट : कौन हो ? किसकी तलाश में हो ?

ग्लास्टर : तुम लोग कौन हो ? तुम्हारे नाम ?

एडगर : दुखिया टाम, जो तैरते मेघों को खाता है, डड्डुओं को, मेढकों को, बिस्तुइयों को और पनिहे···जब बदज़ात शैतान उसके अन्दर दुन्द मचाता है तो दिल की गर्मी में वह सलाद की जगह गोबर खाता है, बूढ़े चूहों को निगल जाता है, नाली के कुत्तों को भी, और पीता है बजबजाते चहबच्चे का काईदार पानी; हाँ, दुखिया टाम, जिसे कोड़े मारता हुआ शैतान एक गाँव से दूसरे गाँव को खदेड़ता है, कठबेड़ी में डालता है और कोठरी में बन्द कर देता है, जिसके पास पहनने को कभी तीन सूट और छह कमीज़ें थीं,

चढ़ने को घोड़ा और बाँधने को हथियार,
और खाने को चुहियों, चूहों, हिरन के बच्चों का अचार,
इस तरह टाम ने दिये हैं पूरे सात वर्ष गुज़ार।

होशियार मेरे सिर पर चढ़े शैतान—चुप हो जा स्मलकिन, मेरी कही मान।

ग्लास्टर : यही लोग क्या मिले आपको साथ के लिए ?

एडगर : शैतान बड़ा शरीफ़ है; उसे मोडो कहते हैं, माहू भी।

ग्लास्टर : मेरे मालिक, आज हमारा रक्त-मांस ही
हमें, जन्म-दाता को अपने, नफ़रत करता---
क्या विकार उसमें आया है !

एडगर : दुखिया टाम को सर्दी लगती है।

ग्लास्टर : अन्दर चलिए, जो मेरा कर्तव्य आपके
प्रति है मुझको प्रेरित करता कि मैं आपकी
कन्याओं का क्रूर-कठिन आदेश न मानूँ।
उनकी आज्ञा है कि बन्द रक्खूँ दरवाज़े,
भले आप आँधी-पानी में रात गुज़ारें,
फिर भी मैं दुःसाहस कर बाहर आया हूँ
खोज आपकी करने, अन्दर ले चलने को,
आयें, गर्म करें अपने को, खाना खायें।

लियर : पहले मैं इस फ़िलासफ़र से बात करूँगा।
बतला सकते हो तूफ़ान उठा करता क्यों ?

केण्ट : मेरे अच्छे मालिक, इनकी बात मान लें,
अन्दर जायें।

लियर : थीबा के इस पण्डित से दो बातें कर लूं;
किसका ज्ञान प्राप्त करने में लगे आजकल ?

एडगर : शैतानों से बचा किस तरह जा सकता है,
और किस तरह कीड़े मारे जा सकते हैं।

लियर : एक बात मैं ज़रा अलग तुमसे पूछूंगा।

केण्ट : श्रीमन्, इनसे एक बार फिर करें प्रार्थना;
अब इनका दिमाग़ इनके क़ाबू से बाहर।

ग्लास्टर : दोषी इनको कौन कहेगा ?

[तूफ़ान अब भी जोरों पर है

इनकी मौत चाहती हैं इनकी कन्याएँ।
भले केण्ट ने कह रक्खा था, ऐसा होगा।
वह बेचारा देश-निकाला भोग रहा है।
तू कहता है महाराज पगलाते जाते,
मैं कहता हूँ, मित्र, कि मैं भी पागल-सा ही।
मेरे एक पुत्र था लेकिन अब मैं उसको
अपना बेटा नहीं मानता; अभी हाल ही,
मेरी हत्या करने की उसने ठानी थी।
बहुत प्यार करता था उसको---किसी बाप ने
अपने बेटे को क्या इतना चाहा होगा---
इस दुख ने, हे बन्धु, सत्य कहता हूँ तुमसे,
मुझको पागल बना दिया है।---बुरी रात है
मेरी है प्रार्थना आपसे---

लियर : क्षमा करो जी;
इस फ़िलासफ़र का ही मुझको साथ चाहिए।

एडगर : टाम को सर्दी लगती है।

ग्लास्टर : अन्दर जाकर उधर माँद में सर्दी से बच।
लियर : सब अन्दर आओ।
केण्ट : श्रीमन्, इस ओर आइए।
लियर : मैं तो बस इस फ़िलासफ़र के साथ रहूँगा।
केण्ट : मेरे मालिक, इनकी मानें, महाराज को,
उसे साथ में ही रखने दें।
ग्लास्टर : तुम उसे लिवा लाओ।
केण्ट : सुनते हो, आओ, हमारे साथ आओ।
लियर : आओ, आओ, अच्छे एथेन्स-निवासी।
ग्लास्टर : मुँह से एक शब्द न निकले। सब चुप!
एडगर : बच्चू चढ़े धरहरे पर
बोल रहे हैं चबर-चबर;
हड्डी-पसली नहीं मिलेगी
अगर गिरेंगे धरती पर!

[**सब बाहर जाते हैं**

पाँचवाँ दृश्य

ग्लास्टर के गढ़ का कमरा

(**एडमण्ड और कार्नवाल का प्रवेश**)

कार्नवाल : इस घर से विदा होने के पहले मैं ग्लास्टर से बदला न लूँ तभी कहना।

एडमण्ड : मेरे मालिक, इससे तो मेरी बड़ी बदनामी होगी कि राज-भक्ति पितृभक्ति पर हावी हो गयी; इस ख़याल से भी मुझे डर लगता है।

कार्नवाल : अब मैं यह देख रहा हूँ, जो तुम्हारे भाई ने उसकी जान लेनी चाही उसके पीछे उसका दुश्चरित्र ही नहीं था, बल्कि उसमें कोई गुण था जिसको उसकी निन्दनीय प्रवृत्ति सहन न हुई और वह उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ।

एडमण्ड : मेरे भाग्य की कैसी विडम्बना है कि जो न्यायपूर्ण है उसके लिए भी मुझे पश्चात्ताप करना पड़ता है। यह है वह ख़त जिसका ज़िक्र उसने किया था, जो यह साबित करता है कि जानबूझकर उसने फ्रांस का पक्ष लिया। हे परमात्मा, काश यह ग़द्दारी न की गयी होती! काश, इसको भाँपनेवाला मैं न होता।

कार्नवाल : मेरे साथ मेरी पत्नी के पास चलो।

एडमण्ड : अगर इस ख़त में लिखी बातें सच हैं तब तो आपको बहुत कुछ करना है।

कार्नवाल : सच हो या झूठ, इस भेद को खोलने पर मैं तुझे ग्लास्टर का

अर्ल बनाता हूँ। अपने पिता का पता लगा कि हम उसे फ़ौरन गिरफ्तार कर सकें।

एडमण्ड : (**अलग**) अगर मैंने यह पाया कि उसकी सहानुभूति महाराज के साथ है तो कार्नवाल का सन्देह उसके प्रति और बढ़ जायेगा। मुझे तो अब राजभक्ति का ही रास्ता अपनाना है, भले ही वह पितृ-भक्ति के प्रतिकूल पड़े।

कार्नवाल : मैं तेरा विश्वास करूँगा और मेरा प्रेम पाकर तू अपने पिता का अभाव नहीं अनुभव करेगा।

[दोनों बाहर जाते हैं

छठा दृश्य

ग्लास्टर के गढ़ से मिले खेती-घर की कोठरी

(ग्लास्टर, लियर, केण्ट, विदूषक और एडगर का प्रवेश)

ग्लास्टर : खुली जगह से तो यह कोठरी ही भली; शुक्र करो। देखता हूँ और क्या सुविधाएँ आपके लिए कर सकता हूँ; जल्द ही आऊँगा।

केण्ट : इनकी सारी सुध-बुध जाती रही है और साथ ही कष्ट सहने की सारी शक्ति। इस उपकार के लिए भगवान आपका भला करेगा।

[ग्लास्टर बाहर जाता है

एडगर : फ्रोटोरेटो मुझे बुलाता, और मुझसे कहता है कि नीरो अन्धकार की झील में बंसी डाले बैठा है। कृपया, मुझे बेक़सूर समझो और बदज़ात शैतान से होशियार रहो।

विदूषक : चच्चा जान, कृपया यह बताइए कि पागल आदमी ज़मीदार होता है कि जोतदार?

लियर : राजा होता है, राजा।

विदूषक : नहीं, नहीं, वह जोतदार होता है और अपने बेटे को ज़मींदार बनाता है; वह पागल जोतदार है जो अपने से पहले अपने बेटे को ज़मींदार बनाये।

लियर : उनकी ओर हज़ार नागिनें आग थूकती
झपट रही हैं—

एडगर : बदज़ात शैतान मेरी पीठ में दाँत गड़ाता है।

विदूषक : वह पागल है जो भेड़िये के पालतूपन, घोड़े की तन्दुरुस्ती, लौण्डे की मुहब्बत और रण्डी की सौगन्धों का विश्वास करे।

लियर : निश्चय, यही करूँगा, उनको सीधे दोषी
ठहराऊँगा। (**एडगर से**) बैठ इधर आ, न्याय-शास्त्र का

पण्डित है तू। (**विदूषक से**) पण्डित का दुम छल्ला है तू,
यहाँ बैठ तू। और उधर बाक़ी लोमड़ियो !

एडगर : देखो तो वह कहाँ खड़ा होकर घूर रहा है। देवीजी,
क्या आपको मुक़दमे के गवाहों की ज़रूरत है ?
आ मछुआरिन, मेरे पास।

विदूषक : (**गाता है**) उसकी नौका में है छेद,
नहीं जानता कोई भेद,
क्यों वह आती नहीं, मछेरे, तेरे पास।

एडगर : बदज़ात शैतान, बुलबुल की आवाज़ में दुखियारे टाम को बारं-बार बुलाता है। हाप-डांस टाम के पेट में चिल्लाता है, मुझे दो सफ़ेद मछलियाँ दो। काले फ़रिश्ते, गुर्रा मत, तेरे लिए मेरे पास खाना-वाना नहीं।

केण्ट : मेरे मालिक, अच्छे तो हैं ? चकित खड़े क्या
देख रहे हैं ? इस गद्दे पर लेट जाइये।

लियर : नहीं, मुक़दमा इनका मुझको पहले करना।
पेश करो इनकी गवाहियाँ (**एडगर से**), चोग़ाधारी
न्यायाधीश, जगह लें अपनी (**विदूषक से**) और सहायक
इनका इनके न्याय-कार्य में, बैठ बग़ल में;
(**केण्ट से**) औ' तुम भी तो एक न्याय-कर्ताओं में हो,
तुम भी बैठो।

एडगर : न्याय बराबर सबके साथ किया जायेगा।
गड़रिया, जागे कि सोये रे।
धँस गयीं भेड़ें खेत के अन्दर,
चर जायेंगी बालें चर-चर,
उन्हें बुला लेने को बाहर
तू क्यों न बँसिया टेरे रे ?
गड़रिया, जागे कि सोये रे।
पर्र ! बिल्ली भूरी है।

लियर : प्रथम इसे दोषी ठहराओ। यह गोनेरिल है।
आदरास्पद, इस परिषद के बीच खड़े हो
मैं सौगन्ध उठाकर कहता, इसने अपने
पूज्य पिता, निर्धन राजा को ठुकराया था।

विदूषक : देवी जी, इस ओर पधारो, नाम तुम्हारा
गोनेरिल है ना ?

लियर : वह इन्कार नहीं कर सकती।

विदूषक : भूल क्षमा हो, मैंने तुम्हें तिपाई समझा।

लियर : और दूसरी यह है जिसकी टेढ़ी भौंहें
बतलाती हैं किस पत्थर की इसकी छाती
बनी हुई है। देखो, भाग न जाने पाये !
दौड़ो, दौड़ो, भालों-तलवारों को लेकर।
भ्रष्टाचार यहाँ फैला दिखलाई देता।

झूठे न्यायाधीशो, तुमने निकल भागने
उसे दिया क्यों ?

एडगर : तेरा होश-हवास ठीक हो ।

केण्ट : बड़ा दुःख है, श्रीमन्, अब वह धैर्य कहाँ है
जिसको धारण करने का दम अक्सर आप
भरा करते थे ।

एडगर : (अलग) इनकी ऐसी दशा देखकर मेरे आँसू
रुक न रहे जो कहीं न मेरा भेद खोल दें ।

लियर : छोटे कुत्ते औ' सबके सब—
टामी, टोनी, फोनी मुझ पर भूँक रहे हैं ।

एडगर : अभी हटाता हूँ मैं इनको । भागो, कुत्तो !
उजले मुँह वाले या काले,
या ज़हरीले दाँतों वाले,
झबरे, कबरे, भूरे, पनिहे,
मोटे, दुबले, हड़हे, खजहे,
सुस्त पाहरू, चुस्त शिकारी,
दुम-कट, दुम-टेढ़ी, दुम-भारी
टाम भगाता सबको अब—
दबा-दबा दुम भागे सब !—
धत्-धत्-धत्-धत्—भागो, जाओ, मेलों-ठेलों और नगर-बाज़ारों में । दुखिया टाम की बोतल ख़ाली है ।

लियर : तब उन्हें चाहिए कि रीगन की चीर-फाड़ करें और देखें कि उसके दिल में क्या-क्या पक रहा है । क्या इसके कोई प्राकृतिक कारण हैं जो इनके हृदय इतने कठोर हैं ?—और जनाब आपको मैं अपने सौ बन्दों में से एक का दर्जा देता हूँ; बस आपकी पोशाक मुझे पसन्द नहीं है। आप कहेंगे कि यह फ़ारसी पोशाक है, लेकिन मैं चाहूँगा कि आप इसे बदल डालें ।

केण्ट : मेरे अच्छे मालिक, अब थोड़ी देर के लिए आप यहाँ लेट जाइये और आराम कर लीजिए ।

लियर : शोर-गुल मत मचाओ; कोई शोर-गुल मत मचाये । अच्छा, अच्छा, अच्छा । हम रात का खाना सबेरे खायेंगे । अच्छा, अच्छा, अच्छा ।

विदूषक : और मैं दोपहर को सोने जाऊँगा ।

(ग्लास्टर का पुनः प्रवेश)

ग्लास्टर : मेरे मालिक महाराज हैं कहाँ, बन्धुवर ?

केण्ट : यहाँ पड़े हैं, लेकिन, श्रीमन्, इन्हें न छेड़ें;
इनकी सुध-बुध चली गयी है ।

ग्लास्टर : मेरी मानो, मित्र, गोद में इन्हें उठा लो;
छिपकर मैंने सुना, रचा षड्यन्त्र गया है,
इन्हें ख़त्म कर देने का; तैयार करा दी
मैंने गाड़ी, इन्हें लेटा दो उसके अन्दर,

औ' डोवर की ओर भगा ले जाओ इनको;
स्वागत और सुरक्षा दोनों वहाँ मिलेगी।
इन्हें उठा लो, अगर देर आधे घण्टे की
भी होती है, इनको, तुमको और सबों को,
जो इनकी रक्षा करते पाये जायेंगे,
निश्चय, मार दिया जायेगा; इन्हें उठा लो
मेरे पीछे-पीछे आओ, जल्दी यात्रा
कर सकने को कुछ सुविधाएँ दिलवा दूँगा।

केण्ट : एक सताया हुआ सो गया है थक कर के।—
अगर तुझे आराम मिला कुछ तेरे दिल के
घावों पर वह मरहम का-सा काम करेगा।
यदि उसमें व्याघात पड़ा तो तेरा अच्छा
होना मुश्किल ही लगता है। (**विदूषक से**) अपने मालिक
को ले चलने में तू भी तो हाथ लगा रे,
तुझे नहीं पीछे रहना है।

ग्लास्टर : आओ, भागें।

[**लियर को उठाकर केण्ट, ग्लास्टर और विदूषक बाहर जाते हैं**

एडगर : हमसे अच्छे जब हम-सा ही दुख सहते हैं,
अपने दुख को तब हम दुःख नहीं कहते हैं।
जब एकाकी दुख सहता, अन्तर दहता है,
हँसी-खुशी का अवसर याद नहीं रहता है।
वही व्यक्ति अपना कुछ दुःख घटा पाता है,
जिसको अपने दुख में साथी मिल जाता है।
अब अपना दुख सहना कितना सरल हुआ है,
जो मुझको कटु था, राजा को गरल हुआ है।
सन्तानों ने उन्हें, पिता ने मुझे सताया,
प्रकट करूँ अपने को अब वह अवसर आया।
झूठी निन्दा ने मुझको बदनाम किया है,
पर सबूत है, मेरा शुद्ध-पवित्र हिया है।
रात और क्या होने को, राजा बच जायें,
किन्तु अभी तो छिप जा, छिप जा—

[**बाहर जाता है**

सातवाँ दृश्य

ग्लास्टर के गढ़ का कमरा

(कार्नवाल, रीगन, गोनेरिल, एडमण्ड और नौकर-चाकरों का प्रवेश)

कार्नवाल : **(गोनेरिल से)** जितनी जल्दी हो सके मेरे मालिक, अपने पति के पास चली जाइये; उन्हें यह ख़त दिखाइये; फ्रांस की फ़ौजें उतर चुकी हैं।—देश-द्रोही ग्लास्टर का पता लगाओ।

[**कुछ नौकर बाहर जाते हैं**

रीगन : उसको फ़ौरन् फाँसी दे दें।
गोनेरिल : उसकी आँखें निकलवा लें।
कार्नवाल : उसे मेरी मर्ज़ी पर छोड़ो। एडमण्ड, तुम हमारी बहन के साथ जाओ। तुम्हारे देश-द्रोही पिता से जो बदला हम लेने जा रहे हैं उसे देखना तुम्हारे लिए उचित न होगा। अलवानी के पास जाकर कहना कि फ़ौरन लड़ाई की तैयारियाँ शुरू कर दें; हम लोग भी वही करने जा रहे हैं; हमारे बीच सन्देशों का आदान-प्रदान जल्दी-जल्दी और सूझ-बूझ का होना चाहिए। विदा, प्यारी बहन; विदा नये ग्लास्टर पति।

(ओसवाल्ड का प्रवेश)

क्या ख़बर लाये ? राजा कहाँ हैं ?
ओसवाल्ड : वृद्ध ग्लास्टर उन्हें यहाँ से भगा ले गया।
पैंतिस या छत्तिस उनके संरक्षक बन्दे
उन्हें खोजते हुए मिले फाटक के आगे।
साथ मिल गये कुछ ग्लास्टर के नौकर-चाकर;
राजा को ले सब डोवर की ओर सिधारे,
जहाँ उन्हें हथियारबन्द मित्रों के मिलने
की आशा है।
कार्नवाल : जा, अपनी मालकिन के लिए घोड़े ले आ।
गोनेरिल : विदा ले रही तुम दोनों से।
कार्नवाल : विदा तुम्हें, एडमण्ड।

[**गोनेरिल, एडमण्ड और ओसवाल्ड बाहर जाते हैं**

और अब तुम सब जाकर
वृद्ध देशद्रोही ग्लास्टर का पता लगाओ;
चोर की तरह बाँध सामने उसको लाओ

[**सब नौकर बाहर जाते हैं**

बिना न्याय की रस्मअदाई किये उसे हम
प्राण-दण्ड तो दे न सकेंगे, पर अपना गुस्सा

निकालने की ताक़त तो है ही हम में,
जिसे दोष दें लोग भले ही रोक नहीं वे
उसको सकते। —कौन सामने, देशद्रोही ?

(ग्लास्टर को बन्दी बनाकर लाते हुए नौकरों का पुनः प्रवेश)

रीगन : वही, वही है; कृतघ्न कुत्ते !
कार्नवाल : इसकी लकड़ी-सी बाँहों को कसकर बाँधो।
ग्लास्टर : श्रीमन् औ' श्रीमती, आपका मतलब क्या है ?
आप दोस्त हैं, फिर अच्छे मेहमान आप हैं;
आप दोस्त के साथ दग़ाबाज़ी मत करिये।
कार्नवाल : बाँधो इसको, मैं कहता हूँ।
रीगन : कसकर बाँधो,
यह गन्दा देश-द्रोही है।
ग्लास्टर : आप बेरहम
जैसी, वैसा मुझे न समझें।
कार्नवाल : इस कुर्सी से
इसे बाँध दो।—दुष्ट, अभी हम तुझे बताते।

[रीगन वृद्ध ग्लास्टर की दाढ़ी नोचती है

ग्लास्टर : दया करो देवो ! अशिष्टता की हद होती;
इस प्रकार मेरी दाढ़ी को हाथ लगाना !
रीगन : इतना बूढ़ा फिर भी ऐसा देशद्रोही !
ग्लास्टर : नटखट नारी, मेरी दाढ़ी से जो तूने
बाल उखाड़े, जीवनधारी होकर तेरे
अपराधों को सिद्ध करेंगे; यह मत भूलो
कि मैं तुम्हारा मेज़बान हूँ, मेरे सेवा-
सत्कारों पर अपने ठग के-से हाथों से
पानी मत फेरो; क्या करना चाह रही हो ?
कार्नवाल : बतलाओ, क्या पत्र फ्रांस से तुम्हें मिला था ?
रीगन : दो जवाब सीधे; सच हमसे छिपा नहीं है।
कार्नवाल : बतलाओ, ग़द्दार, देश में जो उतरे हैं
उनसे मिलकर क्या तुमने षड्यन्त्र रचा है ?
रीगन : और कहाँ पागल राजा को तुमने भेजा ?
ग्लास्टर : पत्र मुझे जो लिखा गया अनुमान महज़ था,
शत्रु-मित्र से लेखक का सम्बन्ध नहीं था;
शत्रु-पक्ष का कभी न था वह।
कार्नवाल : चालाकी है।
रीगन : झूठ सरासर।
कार्नवाल : बोल, कहाँ तूने राजा को भेज दिया है ?
ग्लास्टर : डोवर को।
रीगन : तूने डोवर को भेज दिया क्यों ?

क्या तुझको आगाह नहीं कर दिया गया था—

कार्नवाल : डोवर को किसलिए, उसे उत्तर देने दो।

ग्लास्टर : बँधा हुआ, अपना बचाव मैं कर न सकूँगा;
कुत्ते मुझ पर जैसे चाहें वैसे झपटें।

रीगन : डोवर को क्यों भेजा तूने ?

ग्लास्टर : डोवर को इसलिए कि यह मैं नहीं चाहता
था, उस बूढ़े राजा की दुखियारी आँखें
तेरे निर्मम नाख़ूनों से नोची जायें;
औ' तेरी ख़ूँख्वार बहन उसके पावन तन
में सुअरों के-से ज़हरीले दाँत गड़ाये।
जिस आँधी ने सागर को विक्षुब्ध किया था
ऐसा, वह उठ नभ-तारों की आग बुझा दे,
उसे वृद्ध राजा ने नंगे सिर झेला था;
और, रात में जो कि नरक से भी काली थी।
वह बूढ़ा, दुखियारा अपना दिल निचोड़ता
साथ गगन का दिये रहा अपने आँसू से।
उस आफ़त के वक़्त भेड़िये भी आकर के
गर तेरे दरवाज़े पर आवाज़ लगाते,
तू अपने अच्छे दरबानों से यह कहती,
'उनके सब ख़ूँख्वारपने को माफ़ी देकर
द्वार खोल दो।'—पर मेरी आँखें देखेंगी
ऐसी सन्तानों से बदला लिया जायगा।

कार्नवाल : तू न कभी यह देख सकेगा।—सुनो साथियो,
कुर्सी पकड़ो। —अपने पाँवों की ठोकर से
अभी फोड़ता हूँ मैं तेरी इन आँखों को।

ग्लास्टर : जिसके मन में बूढ़ों के प्रति कुछ ममता हो
मुझे बचाये। नभ के देवो ! बेरहमी से
मुझे बचाओ !

रीगन : एक आँख दूसरी आँख पर
व्यंग्य करेगी; फोड़ उसे भी दें; मत छोड़ें।

कार्नवाल : अगर देखना तुझको बदला—

पहला नौकर : हाथ रोक लें,
मेरे मालिक, दास आपका हूँ बचपन से,
लेकिन सबसे अच्छी सेवा आज कर रहा,
यह कहने में, और न आगे हाथ बढ़ायें।

रीगन : कुत्ते, तेरी यह मजाल है !

पहला नौकर : अगर आपकी
ठुड्डी पर दाढ़ी होती —ख़ैरियत, नहीं है—
तो इस झगड़े पर मैं उसको पकड़ खींचता।
मतलब क्या है ?

कार्नवाल : धूर्त कहीं के !

[दोनों तलवारें खींच लेते हैं

पहला नौकर : तो आ जायें;
और क्रोध मेरा जो कर बैठे वह झेलें।

रीगन : दे अपनी तलवार मुझे तो। दो कौड़ी का
नौकर ऐसी अकड़ दिखाये।

[**तलवार लेकर पीछे से उसकी पीठ में भोंक देती है**

पहला नौकर : हाय, मर गया ! मेरे मालिक, एक आँख तो
अभी बची है; आप दुष्टता इसकी कुछ तो
देख सकेंगे। हाय, मरा मैं।

[**मर जाता है**

कार्नवाल : और देखने से पहले ही उसे फोड़ दो।
निकल, सड़ी-गलती-सी कोयी ! —आँखों की अब
चमक कहाँ है ?

ग्लास्टर : चारों ओर अँधेरा; कोई नहीं सहारा।
मेरे प्यारे बेटे ओ एडमण्ड कहाँ हो ?
अगर पिता से प्रेम तुम्हें हो, इस पापी से
बदला लेना।

रीगन : दग़ाबाज़, मक्कार, निकल जा।
तू पुकारता उसे जिसे तुझसे नफ़रत है।
उसने ही तेरी ग़द्दारी हम पर खोली।
कभी भूलकर भी वह तेरा साथ न देगा —
वफ़ादार इतना सच्चा वह।

ग्लास्टर : हाय, गयी मत
मारी मेरी। तब तो एडगर के प्रति भारी
ज़ुल्म हुआ है। हे नभ के करुणामय देवो,
क्षमा करो मुझको, उसका कल्याण करो तुम।

रीगन : ले जाओ इसको फाटक के बाहर कर दो;
यह टटोलता, ठोकर खाता डोवर जाये।

[**ग्लास्टर को लेकर एक नौकर बाहर जाता है**

चोट तो नहीं आयी, श्रीमन्। अच्छे तो हैं ?

कार्नवाल : रीगन, मुझको घाव लगा है; पीछे आओ;
वह अन्धा बदमाश न घर में रहने पाये;
इस ग़ुलाम को घूरे के ऊपर फेंकवा दो।
रीगन, मेरा ख़ून बड़ी तेज़ी से बहता;
बुरे वक्त यह घाव लगा है; मुझे सँभालो।

[**रीगन के साथ कार्नवाल बाहर जाता है**

दूसरा नौकर : अगर शख़्स यह नहीं बुराई का फल पाता,
कभी बुराई करने से मैं नहीं डरूँगा।

तीसरा नौकर : यह औरत गर बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहती,

बूढ़ी होकर सुख से मरती, सभी नारियाँ
राक्षसियाँ हों जानेवाली।

दूसरा नौकर : हमें चाहिए वृद्ध ग्लास्टर के सँग जायें,
उसके पागल-से बेटे का पता लगायें,
वह पगला ही इन्हें जहाँ यह जाना चाहें
ले जायेगा।

तीसरा नौकर : तू चल, मैं लेकर आता हूँ ज़रा सफ़ेदी
अण्डे की औ' सन जो इनके घावों पर रख
देने से आराम मिलेगा।—ईश्वर इनकी
रक्षा कर तू।

[**अलग-अलग बाहर जाते हैं**

चौथा अंक

पहला दृश्य

खुला हुआ मैदान

(एडगर का प्रवेश)

एडगर : यशोगान मुँह पर, मुँह पीछे निन्दा होती,
इससे तो यह अच्छा मेरी निन्दा होती,
औ' मेरी यह निन्दा मुझसे छिपी नहीं है।
भाग्य किसी को सबसे गन्दी, सबसे नीची,
सबसे भद्दी जगह पटक दे तो भी रहती
है कुछ आशा। और बुरे का डर तो कम-से-
कम मिट जाता। सबसे ऊँचे से परिवर्तन,
ज़ाहिर है, नीचे को होगा, दुःखद होगा;
सबसे नीचे से परिवर्तन कुछ ऊपर ही,
ख़ुशी की तरफ़, ले जायेगा। तो फिर स्वागत
करता इस निस्तत्त्व हवा का जो मेरे तन
से लिपटी है। जिस ग़रीब की तूने सबसे
ज़्यादा ख़स्ता हालत कर दी, तेरे झोंकों
का वह कुछ भी ऋणी नहीं है।—किन्तु कौन यह
इधर आ रहा?

(एक बूढ़े आदमी का हाथ पकड़े हुए ग्लास्टर का प्रवेश)

अरे, पिता मेरे, बूढ़े का लिये सहारा!—

ओ दुनिया, दुनिया, ओ दुनिया ! तेरे अद्भुत
फेर-बदल में अगर न इन्सानों की आशा
उलझी रहती, कौन वृद्ध होने तक जीता।

बूढ़ा आदमी : सुनिए, मेरे अच्छे मालिक, चार दशक से
जोतदार मैं रहा आपका और आपके
पूज्य पिता का।

ग्लास्टर : मेरे अच्छे दोस्त, भाग जा, दूर चला जा,
तेरे ढाढस से मेरा कुछ भला न होगा,
तेरा कुछ नुक़सान भले हो।

बूढ़ा आदमी : राह आपको
नहीं दिखेगी।

ग्लास्टर : मेरी कोई राह नहीं है;
इस कारण मुझको आँखों की नहीं जरूरत;
आँखें जब थीं, गलत राह पर चला गया था।
अक्सर यह देखा जाता है, साधन रहते
हम लापरवाही दिखलाते, साधन खोकर
हम चौकन्ने हो जाते हैं। हाय, कहाँ हो,
मेरे प्यारे बेटे एडगर। तुम शिकार हो
गये पिता की नाराज़ी के। जीते जी मैं
एक बार यदि तुमको हाथों से छू पाता,
तो मैं कहता, मैंने फिर से आँखें पा लीं !

बूढ़ा आदमी : बोलो तो, तुम कौन वहाँ हो ?

एडगर : **(अलग)** मेरी हालत सबसे ख़स्ता, कौन कहेगा ?
देख दृश्य यह उससे ख़स्ता तो अब होती।

बूढ़ा आदमी : लगता है, दुखियारा-पागल टाम खड़ा है।

एडगर : **(अलग)** आगे इससे भी ज़्यादा ख़स्ता हो सकती।
तब तक सबसे बुरी दशा होती न हमारी,
जब तक हम यह कहें न, 'इससे बुरा नहीं कुछ
हो सकता है।'

बूढ़ा आदमी : भले आदमी किधर जा रहा ?

ग्लास्टर : क्या यह कोई भिखमंगा है ?

बूढ़ा आदमी : भिखमंगा है औ' पागल भी।

ग्लास्टर : कुछ कारण होगा जिससे यह भीख माँगता;
गयी रात आँधी-पानी में एक आदमी
ऐसा ही मैंने देखा था जिससे मुझको
लगा कि मानव बस कीड़ा है। अपना बेटा
याद मुझे हो आया लेकिन तब तक उसको
अपना दुश्मन मैं समझे था। तब से मैंने
और बहुत कुछ सुन रक्खा है। नभ-देवों के
लिए धरा के वासी हम सब उसी तरह हैं
नटखट लड़कों की नज़रों में जैसे कीड़े—
खेल-खेल में हमको मार दिया करते वे।

एडगर : मेरे प्रति किस तरह भाव इनका बदला है ?
दुख से जो दिल्लगी करेगा कठिनाई में
पड़ जायेगा—अपने को भी नाख़ुश करके
औरों को भी। — मालिक, तुम्हें दुआ देता हूँ।

ग्लास्टर : अरे, वही क्या नंगा मँगता ?

बूढ़ा आदमी : मालिक वो ही।

ग्लास्टर : तो इतनी कर दया, लौट जा, और नहीं तो
मेरी ख़ातिर, तू हमको फिर पकड़ सकेगा
पहले या दूसरे मील पर, डोवर जाने
वाले पथ पर; इतना कर दे कभी मुझे जो
प्यार किया हो, इस नंगे के लिए साथ में
कुछ कपड़े ला: मैं इससे प्रार्थना करूँगा
मुझे सहारा दे ले जाये।

बूढ़ा आदमी : लेकिन, मालिक, वह पागल है।

ग्लास्टर : बुरे वक्त पागल अन्धे को राह दिखाता।
जैसा मैं कहता वैसा कर या तेरा जो
जी चाहे कर; किसी तरह जा चला यहाँ से।

बूढ़ा आदमी : उसकी ख़ातिर सबसे अच्छे कपड़े लाता;
जो होगा देखा जायेगा।

[**बाहर जाता है**

ग्लास्टर : सुन, ओ नंगे !

एडगर : दुखियारे टाम को सर्दी लगती है। (**अलग**) पागलपन का भगल अब नहीं बना रह सकेगा।

ग्लास्टर : इधर तो आ, भले आदमी।

एडगर : (**अलग**) फिर भी मुझे यह भगल बनाये रखना है।—परमात्मा तेरी आँखों को बनाये रक्खे ! उनसे ख़ून बह रहा है।

ग्लास्टर : तुझे डोवर का रास्ता मालूम है ?

एडगर : रास्ता और फाटक दोनों; घोड़े का भी रास्ता और पगडण्डी भी। दुखियारे टाम का होशोहवास गुम कर दिया गया है। भले आदमी की औलाद, परमात्मा तुझको बदज़ात शैतान के पंजे से बचाये। एक साथ पाँच शैतानों ने दुखियारे टाम पर हमला बोल दिया है। ओबीडिकट विकट वासना का शैतान है; होबर-डि-डांस, गूंगेपन का शाहज़ादा; माहू, चोरी का; मोडो, हत्या का; और फ्लिबर-टि-जिबेट मुँह मटकाने, नाक चिढ़ाने का शैतान है जो सेविकाओं और परिचारिकाओं के सिर आता है। तो, मालिक, परमात्मा तेरा भला करे !

ग्लास्टर : ले यह थैली, तुझे नियति के आघातों ने
सभी तरह से कुचल दिया है, मसल दिया है।
मैं कुछ खोता, पर तुझको कुछ खुशियाँ मिलतीं।
इसी तरह से नियति सदा सन्तुलन बनाये !
जिनके पास ज़रूरत से ज़्यादा दौलत है,

अथक भोगने को जिनके भण्डार भरे हैं,
नियति-कृपा का वे हैं बेजा लाभ उठाते,
औरों का दुख-दर्द नहीं वे अनुभव करते।
उन्हें चाहिए नियति-कृपा का मतलब समझें।
जिनके पास अधिक हो वे कमवालों को दें।
इस प्रकार हर एक ज़रूरत-भर को पाये।—
क्या डोवर की राह जानता ?

एडगर : खूब जानता।

ग्लास्टर : वहाँ कगारा है जो ऊँचा और झुका है।
नीचे गहरा, नीला सागर लहराता है।
ऊपर से नीचे देखो तो सिर चकराता।
तू केवल उसके तट तक मुझको पहुँचा दे
कुछ ऐसी दौलत है मेरे पास जिसे दे
मैं तेरे कष्टों से तुझको मुक्त करूँगा।
नहीं सहारा फिर तेरा आवश्यक होगा।

एडगर : मुझे बाँह दे अपनी; दुखिया टाम वहाँ तक
निश्चय तुझको पहुँचा देगा।

[**दोनों बाहर जाते**]

दूसरा दृश्य

अलबानी के राजा के महल के सामने

(गोनेरिल और एडमण्ड का प्रवेश)

गोनेरिल : श्रीमन् स्वागत, अचरज है जो अलबानी-पति,
नरम-मिज़ाजी, नहीं मिले बाहर स्वागत को।

(ओसवाल्ड का प्रवेश)

बोल कहाँ तेरे मालिक हैं ?

ओसवाल्ड : अन्दर ही हैं;
देवीजी, लेकिन वे कितना बदल गये हैं !
मैंने उन्हें बताया, दुश्मन की सेनाएँ
उतर पड़ी हैं। वे मुस्काकर मौन हो गये।
मैंने उनसे कहा, आप आनेवाली हैं।
उनका उत्तर था कि और भी बुरा हुआ यह।
जब ग्लास्टर की गद्दारी की, उसके सौतेले
बेटे की राजभक्ति की, सेवाओं की
उन्हें सूचनाएँ दी मैंने, मुझसे बोले,
'तू बुद्धू है।' जो सुनकर नाखुश होना था
उस पर खुश हैं। नाखुश, जिस पर खुश होना था।

गोनेरिल : (एडमण्ड से) तो फिर आगे मत आओ तुम। वे स्वभाव से
वकरी-जैसे डर-दब्बू हैं। कोई जोखम
नहीं उठाया उनसे जाता। कुछ अनीति हो
उन्हें नहीं उत्तेजित करती, उसे चुनौती
दें औ' उसका करें सामना। हमने पथ में
जो माँगा था, शायद हमको मिल ही जाये।
वापस जाओ और मिलो तुम कार्नवाल से,
सिपाहियों की भरती तेज़ी से करवाओ,
सेना का संचालन लो अपने हाथों में।
मैं हथियार बदलती घर पर, खाँड़ा लेती,
औ' अपने पति के हाथों में चर्खा देती।
यह नौकर विश्वास-पात्र है। हम दोनों के
बीच रहेगा आता-जाता। अगर तुम्हारे
अन्दर अपने से कुछ करने की हिम्मत है,
तुम्हें प्रेयसी का आदेश मिलेगा जल्दी।
इसको पहनो। बोलो कुछ मत। [**कोई प्रेम चिह्न देती है**
शीश झुकाओ [**एडमण्ड के होंठ चूमती है**
इस चुम्बन का अर्थ अगर तुम समझ सको तो
आसमान को छू लेंगे अरमान तुम्हारे।
करो कल्पना और विदा लो।—

एडमण्ड : मैं जीवनपर्यन्त तुम्हारा बना रहूँगा।

गोनेरिल : युवक ग्लास्टर, तुम मुझको प्राणों से प्यारे।

[**एडमण्ड बाहर जाता है**

मेरे पति, इस युवा पुरुष में कितना अन्तर!
तू नारी की सेवाओं का अधिकारी है।
महज़ मूर्ख है अनधिकार जो मेरे तन का
मालिक आज बना बैठा है।

ओसवाल्ड : देवीजी, मालिक आते हैं।

गोनेरिल : मेरी क़ीमत तो केवल दो कौड़ी की है।

अलबानी : सुनो गोनेरिल, हवा तुम्हारे चेहरे पर जो
धूल फेंकती, नहीं तुम्हारी क़ीमत उससे
कुछ भी ज़्यादा। गरम मिज़ाजी देख तुम्हारी
मैं डरता हूँ। जो मिज़ाज अपनी जड़ को ही
काटे, अपनी मर्यादा में नहीं रहेगा।
अपने को रस देनेवाली डाली से जो
अलग करेगी, वह, निश्चय ही, सूख जायेगी,
और जलाने के ही क़ाबिल रह जायेगी।

गोनेरिल : अपना मूर्ख-पुराण सुनाना बन्द करो अब।

अलबानी : ज्ञान नहीं अज्ञानी के पल्ले पड़ता है।
बुरा भलाई में भी सिर्फ़ बुराई पाता।
गन्द गन्दगी ही फैलाती और बढ़ाती।

सोचो, क्या तुमने कर डाला। नहीं बेटियों-
सा, चीतों-सा तुमने यह व्यवहार किया है।
ओ पतिताओ, पापिष्ठाओ, तुमने अपने
दयावान औ' वृद्ध पिता को पागल करके
छोड़ दिया है। क्रुद्ध रीछ भी ऐसे सीधे,
सरल व्यक्ति के हाथ चाटता। कार्नवाल तो
मेरे अच्छे भाई-सा है; कैसे वह सह
सका तुम्हारा ऐसा करना! मर्द आदमी,
शाह-तबीयत का जिसके प्रति महाराज ने
बहुत बड़े उपकार किये थे। स्वर्ग भेजता
अगर नहीं अपने दूतों को आनन-फ़ानन
इन जघन्य पापों को रोकें, मैं कहता हूँ,
तो यह होगा—
मानवता ख़ुद मानवता को खा जायेगी,
मगर-मच्छ गहरे सागर में जैसा करते।

गोनेरिल : तू कायर है, जो गालों को आगे करता
कोई आकर थप्पड़ मारे; शीश झुकाता,
कोई पाँवों से ठुकराये, तेरी भौंहों
के नीचे जो आँखें क्या वे देख न पातीं,
चोट नहीं तन पर लगती, इज़्ज़त पर लगती?
तुझे नहीं है पता, मूर्ख जिस शैतानी के
प्रति अपनी करुणा दिखलाते, सज़ा उसे दी
जाती इसके पूर्व कि वह ख़तरा बन जाये।
तेरी रन-भेरियाँ कहाँ हैं? फ्रांस हमारे
शान्त देश में अपने झण्डे फहराता है,
कलँगीधारी दुश्मन तुझको धमकी देता,
बेवक़ूफ़-सा नैतिकता का प्रश्न उठाता,
बैठा-बैठा तू चिल्लाता, 'बड़े खेद की
बात कि वह ऐसा करता है, क्यों करता है?'

अलबानी : देख ज़रा शीशे में अपनी शक्ल, पिशाचिन!
कुरूपता, शैतान जिसे धारण करता है
कभी न इतनी भीषण लगती जितनी नारी
के चेहरे पर।

गोनेरिल : ओ घमण्ड में फूले, बूढ़े।

अलबानी : बदल गयी तू, रूप छिपाया तूने अपना;
अगर हया हो, शैतानी चेहरा न बना तू।
यदि न मुझे अपने ग़ुस्से पर काबू होता,
खाल खींच लेता मैं तेरी इन हाथों से,
हड्डी-गुड्डी तोड़ यहीं पर बिठला देता।
औरत के बाने में तू शैतान मुजस्सिम।

गोनेरिल : बड़ा मर्द बनने आया है, तुझे थुड़ी है—

(दूत का प्रवेश)

अलबानी : कहो, ख़बर क्या ?

दूत : मेरे मालिक, कार्नवाल की मृत्यु हो गयी;
उनके नौकर ने ही उनका वध कर डाला;
आँख दूसरी वृद्ध ग्लास्टर की निकालने
वे जाते थे।

अलबानी : कहा, वृद्ध ग्लास्टर की आँखें ?

दूत : नौकर उनका ही पाला-पोसा था लेकिन
वृद्ध ग्लास्टर पर यह ज़ुल्म न वह सह पाया।
बस विरोध में खड़ा हो गया खाँडा लेकर,
कार्नवाल तलवार खींचकर उस पर झपटे,
पति-पत्नी ने मिलकर उसको मार गिराया
लेकिन वह भी ऐसी गहरी चोट दे गया,
जो कि बाद को प्राण-घातिनी सिद्ध हुई है।

अलबानी : यह बतलाता तुम ऊपर हो, तुम अम्बर के
न्यायाधीशो, जो नीचे धरती पर के इन
अपराधों का जल्दी ही बदला लेते हो।
पर दुखियारे वृद्ध ग्लास्टर !—आँख दूसरी
बचा सके क्या ?

दूत : मेरे मालिक, दोनों आँखें
फोड़ दी गयीं। देवि, पत्र लें, इसका जल्दी
ही उत्तर दें। पत्र आपकी भगिनी का है।

[**गोनेरिल को पत्र देता है**

गोनेरिल : (**अलग**) एक तरह इस घटना का मैं स्वागत करती;
लेकिन, अब वह विधवा है औ' युवक ग्लास्टर
को समीप अपने पा करके कहीं न मेरे
सुख-स्वप्नों का महल ढहा दे और मुझे खुद
अपने जीवन से नफ़रत हो। अगर न इतनी
आशंका हो, ख़बर बहुत यह बुरी नहीं है।
पढ़कर इसका उत्तर दूँगी।

[**बाहर जाती है**

अलबानी : वृद्ध ग्लास्टर की आँखें जब गयीं निकाली
उनका बेटा वहाँ नहीं था।

दूत : साथ मालकिन के तब वह आ गया यहाँ था।

अलबानी : वह तो यहाँ नहीं आया है।

दूत : आया था, मेरे मालिक, पर लौट गया है।
वापस होते मुझे मिला था।

अलबानी : क्या उसको इस बदमाशी का पता नहीं है ?

दूत : मेरे मालिक, निश्चय होगा, उसने ही तो
वृद्ध ग्लास्टर के विरुद्ध उनको भड़काया;
इस मतलब से ही मकान से वह हट आया
मनमानी वे सज़ा उसे दें।

अलबानी : वृद्ध ग्लास्टर,
महाराज के प्रति जो तूने प्रेम दिखाया
मैं जीता हूँ धन्यवाद तुझको देने को,
औ' तेरी आँखों का भी बदला लेने को।
मित्र, इधर आओ, बतलाओ, और हुआ क्या।

[**दोनों बाहर जाते हैं**

तीसरा दृश्य

डोवर के निकट फ्रांसीसी डेरा

(केण्ट और एक भद्र पुरुष का प्रवेश)

केण्ट : क्या आपको मालूम है कि फ्रांस के राजा एकाएकी वापस क्यों चले गये ?

भद्र पुरुष : राज्य में वे कोई काम अधूरा छोड़ आये थे जिसका ध्यान उन्हें यहाँ आने के बाद आया। उसके कारण सल्तनत के लिए इतना बड़ा ख़तरा खड़ा हो सकता था कि उनका ख़ुद वापस जाना बहुत ज़रूरी हो गया।

केण्ट : अपनी जगह पर वे सेनापति का काम किसे सौंप गये हैं ?

भद्र पुरुष : फ्रांस के मार्शल मोशिए ला फ़ार को।

केण्ट : क्या आपके पत्रों ने रानी के हृदय को इतना छुआ कि उन्होंने कुछ दुःख प्रकट किया ?

भद्र पुरुष : हाँ, श्रीमन्, पत्रों को लेकर पढ़ा उन्होंने
मेरे आगे, रह-रह करके बड़े-बड़े आँसू
की बूँदें ढलकीं उनके मृदु गालों पर;
लगता था अपने भावों पर शासन उनका,
जो मानो विद्रोही बनकर उनके ऊपर
हावी होना चाह रहे थे।

केण्ट : तो पत्रों ने
कुछ उकसाया।

भद्र पुरुष : उकसाया, पर नहीं क्रोध में।
धैर्य-शोक संघर्ष कर रहे थे आपस में—
कौन पूर्णता से उनको अभिव्यक्त करेगा।
साथ आपने धूप और वर्षा देखी है;
उनके आँसू-मुस्कानों में उसी दृश्य की
प्रतिच्छाया थी, और अधिक मनभावन बनकर।
हल्की-हल्की उनकी वे मधुमय मुस्कानें
जो उनके रक्तिम होठों पर खेल रही थीं,
लगता था, यह नहीं जानतीं उनकी पलकों

में कैसे मेहमान पधारे, लेकिन जब वे
खुलती थीं तब नीलम से मोती की बूँदें
ढल पड़ती थीं। शोक अगर इतना सुन्दर हो
करके आये, वह अलभ्य कुछ ऐसा होगा,
उसको प्यार किया जायेगा पूरे दिल से।

केण्ट : ख़त पढ़ करके कोई प्रश्न उन्होंने पूछा ?

भद्र पुरुष : नहीं, किन्तु दो-एक बार उनके होंठों पर
नाम पिता का आया ठण्डी आहें बनकर,
जैसे वह उनकी छाती पर भार बना हो।
वे चिल्लायीं 'बहनो ! बहनो ! सारी नारी
जाति हुई है लज्जित तुमसे ? मेरी बहनो !
केण्ट ! पिता ! बहनो ! क्या ? आँधी-पानी में औ'
घनी रात में ? करुणा की सत्ता में अब
विश्वास उठ गया !'—
इस पर उनके नैसर्गिक मन्त्रों से पावन
जलकण ढलके। तीव्र भावना शान्त हुई जब
अश्रु बिन्दुओं के झरने से, तब वे अपने
मनःशोक को संयत करने लगीं स्वयं ही।

केण्ट : यह नक्षत्रों, नभ के नक्षत्रों की माया !
वही हमारे व्यक्तित्वों के निर्माता हैं,
वर्ना एक पिता-माता क्या दो सन्तानें
ऐसी पैदा कर सकते थे जिनमें हो इस
भाँति विषमता।—तब से आप न उनसे बोले ?

भद्र पुरुष : नहीं।

केण्ट : राजा के वापस होने के पहले क्या यह
बात हुई थी ?

भद्र पुरुष : नहीं, बाद को

केण्ट : सुनिये, श्रीमन्,
दीन दुःख से टूटा लियर नगर में ही है,
कभी ठीक होने पर याद उसे आता है
हम किस हालत पर पहुँचे, पर किसी तरह भी
वह बेटी से मिलने को तैयार नहीं है।

भद्र पुरुष : ऐसे क्यों है ?

केण्ट : एक बड़ी लज्जा उसको हूला करती है।
उसने अपनी निर्ममता से अपने सद्भावों
से अपनी बेटी को ही वंचित रक्खा,
फेंक दिया उसको विदेश में अनजानों में,
उसका वाजिब हक़ दे डाला कुत्तों-जैसी
कन्याओं को। ये बातें उसके दिमाग़ में
ज़हरीले डंकों-सी चुभतीं, और शर्म से
उसका अन्तर दहता रहता। इसीलिए वह
कारडीलिया से मिलने से कतराता है।

भद्र पुरुष : भला आदमी। बड़ा दुःखी है।

केण्ट : अलबानी औ' कार्नवाल की सेनाओं के
बारे में कुछ पता चला है ?

भद्र पुरुष : सुना गया वे
कूच कर चुकीं।

केण्ट : सुनिये, श्रीमन्, अपने मालिक लियर के निकट
अभी आपको ले चलता हूँ। आप रहें उनकी
सेवा में। कुछ विशेष कारण है जिससे
मैं थोड़े दिन छिपा रहूँगा। मुझे ठीक से
जब जानेंगे, मुझको अपना मित्र बनाने
पर न आप अफ़सोस करेंगे। आयें मेरे
साथ आप अब।

[**दोनों बाहर जाते हैं**

चौथा दृश्य

वही—एक डेरा

(ढोल और झण्डे के साथ कारडीलिया, डाक्टर और सिपाहियों का प्रवेश)

कारडीलिया : बड़ा दुःख है। वे ही होंगे। अभी-अभी ही
वे थे देखे गये क्षुब्ध-विक्षिप्त सिन्धु-से।
गला फाड़कर वे गाते थे। खेत-कछारों
में उगनेवाले फूलों का, कुश-काँटों का
ताज बनाकर अपने सिर पर पहन लिया था।
एक सन्तरी को दौड़ाओ। लम्बी घासों
भरी भूमि का चप्पा-चप्पा जाकर खोजें;
उन्हें हमारी आँखों के आगे ले आयें।

[**एक अफ़सर बाहर जाता है**

क्या मनुष्य ने कोई औषधि नहीं बनायी
छिनी हुई सुध-बुध उनकी वापस मिल जाये ?
जो उनको अच्छा कर दे वह मेरी सब धन-
दौलत ले ले।

डाक्टर : देवि, उपाय किये जा सकते।
शान्ति, प्रकृति की बड़ी लाभकारी औषधि है,
और शान्ति ही उन्हें न मिलती। जड़ी-बूटियाँ
कुछ ऐसी हैं जो प्रभाव दिखला सकती हैं।
उनके बल पर सुख की नींद ले सकेंगे वे।

कारडीलिया : धरती में जो-जो गुणकारी जड़ी-बूटियाँ
दबी पड़ी हों मेरे आँसू से उग आयें;
एक भले को चंगा करने में सहाय हों।
जाकर उनका पता लगाओ। अपने को परि-
चालित करने वाली बुद्धि नहीं जब उनमें
तो उनका विक्षोभ असंयत जीवनघाती
हो सकता है।

(दूत का प्रवेश)

दूत : देवि, ख़बर अंग्रेज़ी फ़ौजें
कूच कर रहीं इधर की तरफ़।

कारडीलिया : इसे जानते
हम पहले से और हमारी सेनाएँ भी
उनका 'स्वागत' करने को तैयार खड़ी हैं।
मेरे प्यारे पिता, तुम्हारे कारण मैंने
यह रन ठाना, इस कारण ही फ्रांस-नृपति ने
मेरे दुख, मेरे आँसू पर करुणा की है।
किसी महत्त्वाकांक्षा से हथियार उठाने
को हम प्रेरित नहीं हुए हैं बल्कि प्रेम के,
सिर्फ़ प्रेम के लिए, पिता का हक़ दिलवाने।
जल्दी उनको देख सकूँ मैं, बोलूँ उनसे।

[**सब बाहर जाते हैं**

पाँचवाँ दृश्य

ग्लास्टर के गढ़ का कमरा

(रीगन और ओसवाल्ड का प्रवेश)

रीगन : पर क्या अलबानी की फ़ौजें कूच कर चुकीं?
ओसवाल्ड : हाँ, देवीजी!
रीगन : वे ख़ुद सेना के संचालक?
ओसवाल्ड : देवि, बहुत कहने-सुनने पर! बहन आपकी
ज़्यादा अच्छी सैनिक लगतीं।
रीगन : एडमण्ड ने
अलबानी से घर पर क्या कुछ बातें की थीं?
ओसवाल्ड : मिले भी नहीं।
रीगन : एडमण्ड के लिए बहन ने ख़त क्यों भेजा?
ओसवाल्ड : देवि, मुझे मालूम नहीं है।

रीगन : काम ज़रूरी
कोई करने को वे भेजे गये यहाँ से।
ग्लास्टर को जब अन्धा ही कर दिया गया था,
उसको ज़िन्दा रहने देना बड़ी भूल थी।
जहाँ पहुँच जाता है लोगों को विरोध में
भड़काता है। उसके दुख से द्रवीभूत हो,
मुझको लगता, एडमण्ड हैं गये कि उसको
अन्धकारमय जीवन से छुटकारा दे दें;
साथ शत्रु की ताक़त का भी पता लगायें।

ओसवाल्ड : देवि, पत्र यह मुझे उन्हें पहुँचाना ही है।

रीगन : सुनो, हमारी सेनाएँ कल कूच करेंगी।
साथ हमारे ठहरो, राहें ख़तरनाक हैं।

ओसवाल्ड : देवि, मैं नहीं रुक सकता हूँ। बड़ा भरोसा
रखकर मुझपर काम मालकिन ने सौंपा है।

रीगन : एडमण्ड के लिए बहन ने पत्र लिखा क्यों ?
क्या तुम आशय नहीं ज़बानी पहुँचा सकते ?
कुछ कारण हैं, ठीक नहीं मैं बतला सकती;
बात दे रही, मेरा प्यार बहुत पाओगे,
मुहर तोड़कर मुझे पत्र को पढ़ लेने दो।

ओसवाल्ड : देवि, प्राण भी जायें तो भी—

रीगन : मुझे ज्ञात, मालकिन तुम्हारी अपने पति को
नहीं चाहतीं; इसका मुझको पूरा निश्चय।
पिछली बार यहाँ जब वे थीं बड़ी वासना-
मयी, अर्थ से भरी दृष्टि से एडमण्ड को
देखा करती थीं, जो सुन्दर हैं, जवान हैं।
मुझे पता है तुमसे कुछ वे नहीं छिपातीं।

ओसवाल्ड : मुझसे कुछ वे नहीं छिपातीं !

रीगन : सोच-समझकर मैं कहती हूँ; मुझे ज्ञात है;
नहीं छिपातीं कुछ वे तुमसे, इस कारण मैं
एक सलाह तुम्हें देती हूँ, यह चिट्ठी लो।
मेरे पति की मृत्यु हो चुकी। एडमण्ड औ'
मैंने इस पर बातें कर लीं। जो विवाहिता
उससे शादी करने से विधवा से शादी
करना उनके लिए अधिक सुविधामय होगा।
और बहुत-सी बातें तुम आगे जानोगे।
अगर मिलें वे उनको मेरी चिट्ठी देना।
और मालकिन को अपने यह सब समझाकर
कहना वे अपने विवेक को जाग्रत रक्खें।
तो अब तुम्हें विदा देती हूँ।
उस अन्धे देशद्रोही का पता चले तो
याद रहे, उसको भारी ईनाम मिलेगा
जो उसकी गर्दन काटेगा।

औसवाल्ड : देवि, काश मैं
उसको पाता। मैं बतलाता, मैं किस दल का।
रीगन : तुम्हें विदा है।

[**दोनों बाहर जाते हैं**

छठा दृश्य

डोवर के निकट का प्रदेश

(ग्लास्टर और खेतिहर की पोशाक में एडगर का प्रवेश)

ग्लास्टर : नहीं पहाड़ी की चोटी हम अब तक पहुँचे।
एडगर : आप चढ़ रहे हैं ऊपर अब। मेहनत पड़ती।
ग्लास्टर : मुझे भूमि चौरस लगती है।
एडगर : खड़ी चढ़ाई।
सुनें! सिन्धु-गर्जन सुन पड़ता?
ग्लास्टर : ज़रा भी नहीं।
एडगर : आँखों की पीड़ा के कारण, ऐसा लगता,
और इन्द्रियाँ शिथिल पड़ गयीं।
ग्लास्टर : हो सकता है।
पर, तेरी आवाज़ मुझे बदली लगती है।
पहले से अच्छे लब-लहजे में तू बोल
रहा है; बातें ठौर-ठिकाने की करता है।
एडगर : आप बड़े धोखे में हैं, मैं बदला हूँ तो
बस कपड़ों में।
ग्लास्टर : लब-लहजे अब तेरे पहले
से अच्छे हैं।
एडगर : इधर आइये। यहीं जगह है।
शान्त खड़े रहिये। इतने नीचे देखें तो
डर लगता है, सिर चकराता। कौए-चिड़ियाँ
जो कि अधर में उड़तीं इतनी छोटी लगतीं
जैसे वे तितलियाँ महज़ हों। एक बीच में
जड़ी इकट्ठी करनेवाला लटक रहा है।
ख़तरनाक उसका पेशा है। अपने सिर से
बड़ा न लगता। जो मछुआरे सागर तट पर
घूम रहे हैं वे बस चूहों-से लगते हैं।
वो जो लंगर डाले भारी पोत खड़ा है
छोटी डोंगी-सा लगता है, डोंगी लंगर-
सी लगती है—इतनी छोटी, उसे देखना
भी मुश्किल है। कंकरवाले सागर-तट से

हर-हर, मर-मर करती जो लहरें टकरातीं
उनका स्वर इस ऊँचाई तक नहीं पहुँचता ।
और नहीं अब मैं देखूँगा वर्ना मेरा
माथा ऐसा चकरायेगा, कुछ न देखता
मैं सिर के बल गिर जाऊँगा ।

ग्लास्टर : जहाँ खड़ा तू
उसी जगह पर मुझे खड़ा कर ।

एडगर : हाथ दीजिये ।
एक क़दम हूँ बिलकुल आप किनारे से अब ।
धरती की सब सम्पद कोई मुझको दे दे,
थोड़ा भी मैं ऊपर नहीं उछल सकता हूँ ।

ग्लास्टर : हाथ छोड़ दे अब तू मेरा । मित्र, दूसरी
थैली भी ले । इसके अन्दर एक रत्न है
जिसको निर्धन पा जाये तो धनी कहाये ।
परी, देवता, नभ के, तेरा भला करेंगे ।
दूर चला जा और विदा ले । जाना तेरा
सुन पाऊँ मैं ।

एडगर : विदा आपसे लेता, श्रीमन्,

ग्लास्टर : पूरे दिल से दुआ तुझे है ।

एडगर : खेल कर रहा
क्यों इनकी ना-उम्मेदी से ? क्योंकि खेल यह
ना-उम्मेदी दूर करेगा ।

ग्लास्टर : **(झुकता है ।)** शक्तिमान ओ
नभ के देवो, यह दुनिया मैं त्याग रहा हूँ
और तुम्हारी आँखों के आगे मैं अपनी
सारी पीड़ाएँ दृढ़ता से झाड़ रहा हूँ ।
अधिक इन्हें यदि मैं सह सकता, और तुम्हारी
दुर्निवार इच्छा के प्रति विद्रोही बनता,
तो मेरी यह जर्जर काया तिल-तिल जलती ।
एडगर ज़िन्दा हो तो उसका भला करो तुम ।
साथी, विदा तुझे देता अब ।

एडगर : श्रीमन्, अब मैं
चला गया हूँ । विदा लीजिए ।

[ग्लास्टर उछलकर कूदता है और गिर जाता है

सचमुच गिरकर होता जो परिणाम, कल्पना
से भी सम्भव—गो यह कैसे होता मुझको
ज्ञात नहीं है । इस प्रकार गिरकर ग्लास्टर का
जहाँ पहुँचने का विचार था, सचमुच गिरकर
उस विचार के पार गये होंगे अब तक तो ।
जीवित या मृत ?—सुनिये, श्रीमन् ! मित्र ! आपको
ही पुकारता । सुनते तो हैं, श्रीमन् ! बोलें ! —

इस प्रकार तो यह सचमुच ही मर जायेगा;
फिर भी यह हिलता-डुलता है।—श्रीमन्, बोलें
आप कौन हैं ?

ग्लास्टर : जाओ दूर, मुझे मरने दो।

एडगर : तू मकड़ी के जाले-सा, चिड़िया के पर-सा,
या कि हवा ही अगर न होता, इतने पुरसे
सीधे नीचे गिरकर अण्डे जैसा टुकड़े-
टुकड़े होता, पर तेरी साँसें चलती हैं,
काया तेरी भरी-पुरी है, रक्त न बहता,
बोल रहा तू, और भला-चंगा दिखता है।
यह ऊँचाई दस पुरसे से ज़्यादा होगी
जिससे बिल्कुल सीधे गिर तू नीचे आया।
तेरा जीवन चमत्कारमय। बोल ज़रा फिर।

ग्लास्टर : पर बतला मैं गिरा या नहीं

एडगर : खड़ियायी भीषण कगार से बिल्कुल सीधे
नज़र उठाकर देख ज़रा ऊँचाई को तो।
खर-स्वर वाली लवा यहाँ से नहीं दीखती
औ' न सुनायी ही पड़ती है। ऊपर को तू
नज़र उठा तो।

ग्लास्टर : हाय, बिना आँखों वाला मैं।
क्या अभाग्य को इतना भी अधिकार नहीं है
आत्मघात करके समाप्त अपने को कर दे।
इससे भी कुछ राहत का अनुभव होता था,
दुःख व्यंग्य कर सकता है अत्याचारी के
ज़ोर-जब्र पर औ' उसकी गर्वीली मर्ज़ी
को भी निष्फल कर सकता है।

एडगर : हाथ पकड़
मेरा उठ जाओ ! ऐसे। हाँ, अब कैसा लगता ?
पाँव तुम्हारे जमे हुए तो ? खड़े हुए हो।

ग्लास्टर : बिल्कुल अच्छी तरह खड़ा हूँ।

एडगर : मैंने इससे बड़ा अचम्भा कभी न देखा।
कौन चीज़ थी जुदा हुई जो तुमसे धुर
ऊँचे कगार पर ?

ग्लास्टर : एक अभागा भिखमंगा था।

एगडर : यहाँ खड़े नीचे मुझको यह लगा कि उसकी
आँखें हैं दो पूरे-पूरे चाँद बराबर।
उसके चेहरे पर हज़ार नाकें तो होंगी,
सींगें उसकी बटी हुई लहरिल सागर-सी।
निश्चय ही शैतान रहा होगा वह कोई।
जो मानव के लिए असम्भव वह अपने हित
सम्भव कर देवता स्वयं को गौरव देते,
किन्तु तुम्हारे लिए असम्भव को सम्भव कर

दिव्य देवताओं ने तुमको बचा लिया है—
इस कारण तुम, बाबा, अपना भाग्य सराहो।

ग्लास्टर : अब मुझको सब याद आ गया। अब से अपने
दु:खों को मैं सहन करूँगा, इतना, अति पर
पहुँच स्वयं वे मिट जायेंगे। जिसके बारे
में तुम कहते, उसे आदमी मैं समझा था।
बार-बार 'शैतान' शब्द वह दुहराता था;
वही कगार किनारे मुझको ले आया था।

एडगर : निडर रहो औ' धीरज रक्खो। पर यह कौन
इधर आता है ?

(जंगली फूलों से अजीब तरह सजे हुए लियर का प्रवेश)

जिसका होश दुरुस्त, भेस वह
ऐसा नहीं बना सकता है।

लियर : नहीं, सिक्का गढ़ने के लिए वे मुझे सज़ा नहीं दे सकते। मैं ख़ुद राजा हूँ।

एडगर : काश, देखने को यह आँखें बनी न होतीं।

लियर : इस दृष्टि से प्रकृति कला के ऊपर है। यह लो अपना बयाना। वह आदमी कमान ऐसे पकड़ता है जैसे खेत-रखा पुतला हो और उस पर तीर चढ़ाता है गज़-भर का। देखो ! देखो ! चूहा ! चुप ! चुप ! चीज़-लगे इस टोस्ट से काम बन जायेगा। यह रहा मेरा चुनौती का दस्ताना; इस बात के लिए तो मैं दानव से भी लड़ूँगा। कटिया-भालाधारी सिपाहियों को बुलाओ। ओ ! क्या ख़ूब तीर लगा है, बीचोबीच में, बिल्कुल बीचोबीच में। षे:। संकेत-शब्द बताओ।

एडगर : मीठा मारजोरम।

लियर : जा सकते हो।

ग्लास्टर : इस आवाज़ को मैं पहचानता हूँ।

लियर : हः ! गोनेरिल, सफ़ेद दाढ़ी में। उन्होंने कुत्ते की तरह मेरी चाटुकारी की और मुझसे कहा, आपके चेहरे पर काली दाढ़ी आने के पहले ही आपकी दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गये थे ! जो कुछ भी मैं कहूँ उस पर 'हाँ' और 'नहीं' करना। 'हाँ' और साथ 'नहीं' भी मेरे प्रति विश्वास जताने का कोई अच्छा तरीक़ा तो न था। जब वर्षा आयी मुझे भिगाने को, जब ठण्डी हवा चली मेरे दाँत बजवाने को, जब मेरे कहने पर भी बिजली ने कड़कना बन्द न किया, तब मैं उन्हें पहचान गया, तब मैंने उन्हें भाँप लिया। जाओ, जाओ, वे अपनी ज़बान के आदमी नहीं हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम सब कुछ हो। मैं किसी मर्ज़ की दवा नहीं हूँ।

ग्लास्टर : इस आवाज़ की ख़सूसियत की मुझे अच्छी तरह याद है। क्या यह महाराज नहीं हैं ?

लियर : हाँ, मैं एड़ी से चोटी तक महाराज हूँ।

आँख गड़ाता हूँ मैं जिस पर थरथर कँपता।
मैं उसकी ज़िन्दगी बख्शता। हाँ, तो तेरा
क्या क़सूर था?
ज़िना?
तुझे ज़िना के लिए मौत की सज़ा न होगी।
मौत ज़िना के लिए! नहीं ऐसा हो सकता।
चिड़िया ऐसा करती, मक्खी भी चमकीली;
मेरी आँखों के आगे जोड़ा खाती है।
पुत्र दोग़ला ग्लास्टर का अपने वालिद पर
मेरी कन्याओं से ज़्यादा मेहरबान था—
जो अपने पतियों से ही जोड़ा खाती हैं।
ज़िना करें सब, जी भर कर सब जोड़ा खायें,
क्योंकि हमारे पास कमी है सिपाहियों की।
उस नारी को देखो—नटखट मुसकानों की—
हाथ रखे चेहरे पर, मानों शुद्ध सती हो;
पर पवित्रता का वह केवल अभिनय करती;
रति का लो बस नाम, शीश वह मटकाती है।
मोटी-टाँठी बिल्ली औ' तगड़े घोड़े भी
इतनी आतुरता से कभी न जोड़ा खाते।
ऊपर नारी किन्तु कमर के नीचे वे पशु;
ऊपर देवों का, नीचे सब शैतानों का।
नरक, अँधेरा, गन्धक से भभकी लपटों का
गढ़ा भस्म करता, जलता, खलबला रहा है।
बदबू इतनी फैलाता है, सही न जाती। थू! थू! थू!
उफ़! उफ़! ओ भाई अत्तार, मुझे ज़रा-सा इत्र दो कि मैं अपनी कल्पना को सुवासित कर सकूँ। लो यह तुम्हारा दाम!

ग्लास्टर : अरे, मुझे उस हाथ को चूम लेने दो।

लियर : पहले मुझे इस हाथ को साफ़ कर लेने दो। इससे मुर्दे की-सी गन्ध आती है।

ग्लास्टर : एक बड़ा प्रासाद खड़ा है खँडहर बनकर;
यह महान संसार एक दिन इसी तरह से
मिट जायेगा। क्या मुझको पहचान रहा तू?

लियर : तेरी आँखों की मुझे अच्छी तरह याद है। क्या तू मुझे आँख मार रहा है? नहीं, अन्धे कामदेव, जो कुछ भी तू कर सकता हो, कर ले। मैं प्रेम में नहीं पड़ूँगा। तू मेरी इस चुनौती को पढ़। सिर्फ़ लिखावट-भर देख ले।

ग्लास्टर : सूर्य से बड़े तेरे अक्षर होते तो भी
नहीं एक भी मुझे दिखायी पड़ सकता था।

एडगर : **(अलग)** सुनकर इस पर कभी मुझे विश्वास न होता।
देख रहा हूँ तो मेरी छाती फटती है।

लियर : पढ़ो।

ग्लास्टर : क्या इन आँखों के कोयों से ?

लियर : ओ, हो ! क्या तुम्हारा यह मतलब है ? तुम्हारे चेहरे पर न आँखें हैं और न तुम्हारी थैली में पैसे ? यानी कोए आँखें खोकर भारी हो गये हैं और थैली पैसे खोकर हल्की ? फिर भी तुम देख रहे हो कि दुनिया कैसे चलती है।

ग्लास्टर : अनुभव से जानता हूँ।

लियर : क्या पागल हो ? कोई आदमी बिना आँखों के भी देख सकता है कि दुनिया कैसे चलती है। अपने कानों से देखो; देखो उस बेचारे चोर के प्रति कैसे न्याय किया जाता है। कानों में सुनो; जगहें बदल लो; जैसा भी तुम चाहो; कौन न्यायकर्ता है, कौन चोर है ? तूने किसान के कुत्ते को भिखभंगे के ऊपर भूँकते देखा है ?

ग्लास्टर : जी हाँ।

लियर : और आदमी कुत्ते से भागा ? यहाँ तू अधिकार की महामूर्ति देख सकता है। कुर्सी पर बैठे कुत्ते का भी हुक्म माना जाता है।

धूर्त सिपाही, अपना खूनी हाथ रोक ले।
उस रण्डी पर क्यों तू कोड़े बरसाता है ?
तू खुद अपनी पीठ नग्न कर। तू मस्ती के
साथ ज़िना उससे करता है, और उसी पर
फिर तू कोड़े सड़काता है। शाह ऊपरी
चोर भीतरी जो छिछोर को फाँसी देता।
चित्थड़-गुद्दड़ से दुर्गुण झाँका करते हैं,
भारी चोग़ों, जामों में सब छिप जाता है।
मढ़ो गुनाहों को सोने से और न्याय का
दृढ़ भाला भी बिना चोट पहुँचाये उनको
टूट जायेगा। पहना दो उनको चिथड़े तो
नन्हाँ-सा तिनका भी उनको भेद सकेगा।
नहीं किसी ने जुर्म किया है, मैं कहता हूँ,
नहीं किसी ने। उन्हें बचाने का बल मुझमें;
लो यह मुझसे, दोस्त, क्योंकि अधिकार मुझे है
दोष लगानेवाले का मुँह बन्द कर सकूँ।
शीशे की आँखें लगवा लो; दिखो देखते,
नीच राजनीतिज्ञ की तरह, उसे जिसे तुम
नहीं देखते। अब, अब, अब, अब;
मेरे जूते खींच निकालो; और ज़ोर से;
और ज़ोर से; हाँ, हाँ, ऐसे।

एडगर : **(अलग)** बात सार की शब्द निरर्थक मिले हुए, हा।
पागलपन के साथ तर्क भी।

लियर : यदि मेरा दुर्भाग्य देख तुझको रोना है।
तो मेरी आँखें तू ले ले। भली भाँति मैं
तुझे जानता। ग्लास्टर है तू। ज़रा सब्र कर।

हम इस दुनिया में रोते-रोते आये थे।
तुझे ज्ञात है, जब हम पहली बार हवा में
साँस खींचते, हम रोते हैं, चिल्लाते हैं।
मैं दूँगा उपदेश तुझे, तू ध्यान लगा सुन।

ग्लास्टर : उस दिन पर अफ़सोस मुझे है, बड़ा दुःख है।

लियर : जब हम पैदा होते हैं तब हम रोते हैं,
हम मूर्खों के महामंच पर पहुँच गये हैं।
यह अच्छी टोपी है। यह तो चतुराई की
चाल रहेगी, घोड़ों की पलटन में उनके
ख़ुर हम नमदे से मढ़वा दें। यही करूँगा,
और चढ़ाई कर दूँगा जब दामादों पर
छिपे-छिपे तब मारो-काटो, मारो-काटो, मारो-काटो !

(नौकरों के साथ एक भद्र पुरुष का प्रवेश)

भद्र पुरुष : अरे, यहाँ वे; इनको जल्दी पकड़ो।—श्रीमन्,
सुनें आपकी सबसे प्यारी बेटी ने यह—

लियर : कोई नहीं बचानेवाला ? क्या मैं बन्दी ?
मैं क़िस्मत के हाथ काठ का उल्लू बनने
को जन्मा था। मुझसे दुर्व्यवहार न करना।
मुझे मुक्त कर देने पर धन राशि मिलेगी।
सर्जन को बुलवा भेजो, मेरे दिमाग़ की
नस-नस टूटी ! —

भद्र पुरुष : जो चाहेंगे आप, मिलेगा।

लियर : कोई मेरा नहीं सहायक ? एकाकी मैं ?
ऐसा पाकर कोई भी इतना रोयेगा,
किसी बाग़ के गमले उससे सींचे जायें,
औ' पतझड़ की झड़ी धूलि बैठा ली जाये।

भद्र पुरुष : सुनिए, श्रीमन् !

लियर : सजा फूल से मैं दूल्हे की भाँति मरूँगा।
क्या तुम समझे ! हँसता-मुसकाता जाऊँगा।
सुनो मालिको मेरे, मेरे पीछे आओ;
मैं राजा हूँ—क्या तुम इतना नहीं जानते ?

भद्र पुरुष : महाराज हैं आप; आपके सेवक हैं हम।

लियर : तब तो कुछ आशा बाक़ी है। पर तुम उसको
पाओगे तो पाओगे पीछा करके ही।
दौड़ो, दौड़ो, दौड़ो, दौड़ो···

[लियर भागते हुए बाहर जाता है
नौकर-चाकर उसका पीछा करते हैं

भद्र पुरुष : इस हालत में किसी दीन-भिखमंगे को भी
देख तरस से दिल भर आता; फिर राजा को
ऐसा पाकर जो होता वह कहा न जाता।—

तेरे बेटी एक जो कि उन अभिशापों का
शमन करेगी जो तेरी दो कन्याओं ने
तुझे दिये हैं।

एडगर : श्रीमन्, मेरा अभिवादन लें

भद्र पुरुष : भला तुम्हारा हो ! बोलो क्या तुम्हें चाहिए।

एडगर : सुना आपने क्या कि युद्ध छिड़नेवाला है ?

भद्र पुरुष : निश्चय, यह तो आम ख़बर है। कोई भी जो
सुन सकता है, इसे जानता।

एडगर : किन्तु, कृपा कर
बता सकेंगे, कितनी दूर दूसरी सेना।

भद्र पुरुष : निकट; और बढ़ती ही आती। हर घण्टे पर
सोचा जाता बस अब आयी।

एडगर : धन्यवाद लें,
श्रीमन्, मेरा; और नहीं कुछ मुझे जानना।

भद्र पुरुष : गो रानी कुछ ख़ास काम से यहाँ उपस्थित,
उनकी सेना कूच कर चुकी।

एडगर : धन्यवाद है !

[**भद्र पुरुष बाहर जाता है**

ग्लास्टर : करुणामय ओ नभ के देवो, तुम जब चाहो
तभी मरूँ मैं। अपने छुद्र अहं से प्रेरित
कभी न मरना चाहूँ बिना तुम्हारी इच्छा।

एडगर : भली प्रार्थना करते, बाबा।

ग्लास्टर : भले आदमी,
अब तो बतला दो कि कौन तुम ?

एडगर : एक अकिंचन,
जिसे भाग्य के आघातों ने तोड़ दिया है,
जिसने इतने कष्ट सहे, संकट झेले हैं,
औरों का दुख देख जागती उसकी करुणा।
हाथ मुझे दें, कहीं आपको ठीक-ठिकाने
पर पहुँचा दूँ।

ग्लास्टर : तुम्हें हृदय से धन्यवाद है।
देवों का आशीष और वरदान तुम्हारे
ऊपर बरसे; फिर-फिर बरसे !

(ओसवाल्ड का प्रवेश)

ओसवाल्ड : यह उद्घोषित
पुरस्कार, बढ़िया शिकार है ! —
बिना आँख के तेरे सिर का मांसपिण्ड यह
इसीलिए था बना कि मेरा भाग्य जगाये।
बूढ़े बदक़िस्मत विद्रोही, जल्दी अपने
पाप याद कर क्षमा माँग ले; खड्ग म्यान के
बाहर है अब जो तेरा वध कर डालेगा।

ग्लास्टर : तुझसे बढ़कर कोई मेरा मीत न होगा;
पूरी ताक़त लगा वार कर।

[**एडगर उसे रोक लेता है**

ओसवाल्ड : किस घमण्ड में
ओ गँवार तू, इस उद्घोषित विद्रोही का
साथ दे रहा ? दूर भाग जा, नहीं उसी के
साथ सफ़ाया तेरा भी मैं कर डालूँगा।
कुशल चाहता है तो इसके हाथ छोड़ दे।

एडगर : हाथ नहीं छोड़ूँगा; कोई वजह भी तो सुनूँ।

ओसवाल्ड : हाथ छोड़ दे गुलमटे, नहीं तो तू मरेगा।

एडगर : भलाई इसी में है, मियाँ, कि अपने रास्ते जाओ, और ग़रीब आदमियों को अपनी राह जाने दो। अगर मैं बन्दरभपकियों से डरनेवाला होता तो कभी का मर चुका होता, एक पखवाड़ा भी न जीता। देखो, बूढ़े आदमी को हाथ न लगाना। दूर ही रहना, मैं आगाह किये देता हूँ, वर्ना मुझे जाँच करनी पड़ेगी कि तुम्हारा सिर ज़्यादा मज़बूत है कि मेरा डण्डा। साफ़ कहे देता हूँ।

ओसवाल्ड : हट, माटी के धोंधे।

एडगर : मैं तुम्हारा दाँत तोड़ दूँगा। आ जाओ। तुम्हारे खाँड़े की मैं
ख़ाक परवाह नहीं करता।

[**दोनों लड़ते हैं और एडगर ओसवाल्ड को गिरा देता है**

ओसवाल्ड : हाय, गुलमटे, मुझे मार ही डाला तूने।
पाजी, यह थैली ले, मुझे दफन कर देना;
ईश्वर तेरा भला करेगा। पत्र जो मिले
मेरे पाकिट में, उसको तू एडमण्ड को—
जो ग्लास्टर के नये अर्ल हैं—पहुँचा देना।
अंग्रेज़ों के दल में तू उनको पायेगा।
हाय, बड़े बे-वक्त मर रहा। हाय, मरा मैं।

[**मर जाता है**

एडगर : भली भाँति मैं तुझे जानता। पाजी था तू
बड़े काम का। बुरी मालकिन के थे जितने
काम बदी के उनको पूरा कर लाने में
तू मुस्तैद सदा रहता था।

ग्लास्टर : क्या वह तेरे
हाथ मर गया ?

एडगर : बाबा, बैठे आप रहें बस।
आप करें आराम, जेब मैं इसकी देखूँ—
बात कही थी इसने जिस ख़त की उसमें कुछ
मेरे मतलब का मिल सकता। मरा यह, मगर
दुःख मुझे है फिर मैं इसको मार न सकता।—

यह ख़त है, लो मुहर तोड़ता, पत्र दूसरे
का पढ़ने पर दोष न कोई मुझको देगा।
भेद जानने को दुश्मन का, उसकी छाती
हम चीरेंगे, फिर तो यह क़ाग़ज़ ही ठहरा।—

(पढ़ता है।)

"हमने परस्पर जो प्रण किये थे उन्हें याद रखना। उसे ख़त्म कर देने के लिए तुम्हें बहुत-से अवसर मिलेंगे। अगर तुम्हीं न हिम्मत हार बैठे तो उपयुक्त समय और स्थान की कमी न रहेगी। अगर वह विजयी होकर लौटता है तब तो कोई बात न हुई। तब मैं उसकी बन्दिनी हूँगी और बिस्तर मेरा बन्दीघर होगा। उस घुटन से अगर मेरा उद्धार करोगे तो अपने श्रम के फलस्वरूप उसकी जगह तुम लोगे।

तुम्हारी—पत्नी, यही मैं कहना चाहूँगी—
प्यारी सेविका
गोनेरिल"

नारी की इच्छा सीमाएँ नहीं जानती!
इसे भला पति मिला, किन्तु उसकी हत्या का
क्या षड्यन्त्र रचा है इसने, और ब्याह फिर
मेरे भाई से करने का।—मैं इन कामी
हत्यारों के सँदेसिये को—जो पापी है
उन्हीं की तरह—यहीं बालुका में गाड़ूँगा;
और समय आने पर मैं यह नामुराद ख़त
अलबानी की आँखों के आगे रक्खूँगा।—
उसके हित में होगा तेरे काम, मौत, की
ख़बर उसे मैं ही पहुँचाऊँ।

ग्लास्टर : राजा पागल
हुए; किन्तु बेहया बुद्धि मेरी कुछ ऐसी
कड़ी धातु की, मैं ज्यों का त्यों खड़ा हुआ हूँ,
अपनी भारी विपदाओं के प्रति सचेत हूँ;
मैं भी पागल हो जाता तो अच्छा होता।
जो मैं सहता वह दिमाग़ को पता न लगता,
और वेदना ग़लत कल्पना करती-करती
अपने को ही भुला बैठती।

[दूर ढोल की आवाज़

एडगर : हाथ मुझे दें।
दूर ढोल के बोल सुनायी देते मुझको—
किसी दोस्त के यहाँ आपको बिठला दूँगा।

[दोनों बाहर जाते हैं

सातवाँ दृश्य

फ्रांसीसी सैन्य शिविर में एक तम्बू

(कारडीलिया, केण्ट, डाक्टर और भद्र पुरुष का प्रवेश)

कारडीलिया : केण्ट, बड़ा ही सज्जन तू है। किया भला जो
तूने उसके बदले में मैं क्या कर सकती।
जीवन-भर भी यत्न करूँ तो असफल हूँगी।

केण्ट : मेरी सेवा, देवि, आपने मानी, मुझको
बहुत मिल गया। मेरा प्रतिवेदन सब सच था,
फिर भी संयत, न कुछ बढ़ाकर, न कुछ घटाकर।

कारडीलिया : अब तू अच्छे वस्त्र पहन ले। जंगलियों के-
से ये कपड़े बुरे दिनों की याद दिलाते।
मेरी है प्रार्थना, उन्हें तू अब उतार दे।

केण्ट : देवि, आपसे क्षमा चाहता।—
जब तक मेरा काम नहीं पूरा हो जाता
मेरा असली रूप छिपा रहना ही अच्छा।
समय नहीं अनुकूल जब तलक, औ' मैं इसको
उचित न समझूँ, तब तक आप दिखाएँ ऐसा
मुझे आप जानती नहीं हैं। कृपा आपको
इतनी मुझ पर करनी होगी।

कारडीलिया : मान गयी मैं।
(डाक्टर से) महाराज की हालत कैसी ?

डाक्टर : देवि, अभी तक
वे सोये हैं।

कारडीलिया : ओ नभ के करुणामय देवो !
उनकी सुध-बुध फिर उनको वापस लौटा दो।
अपनी सन्तानों के अन्यायों के कारण
जो उनके दिमाग़ की नस-नस टूट गयी है,
उन्हें जोड़ दो—वे स्वभाव से शान्त और सुस्थिर
फिर से हों !

डाक्टर : देवि, आपकी आज्ञा हो तो
जगा दिया जाये राजा को। बहुत सो चुके।

कारडीलिया : आप स्वयं अपना निर्णय लें। करें जिस तरह
करना चाहें। पिन्हा दिये हैं कपड़े उनको ?

(लियर को कुर्सी पर बिठाकर लाते हुए नौकरों का प्रवेश)

डाक्टर : जब वे गहरी निद्रा में थे, नये वस्त्र सब
हमने उनको पिन्हा दिये थे।

केण्ट : देवि, जगायें जब हम उनको आप निकट हों।
मुझको इसका निश्चय है वे शान्त रहेंगे।

कारडीलिया : पास रहूँगी। **[संगीत**

डाक्टर : कृपया और निकट आ जायें औ' संगीत
ज़रा ऊँचा हो।

कारडीलिया : मेरे प्यारे पिता, सत्त्व मेरे होठों में
ऐसी औषधि का आ जाये जिससे मेरे
जीवन मिलता है। मेरा चुम्बन उन घावों को
भर दे जो मेरी बहनों ने दिये आपके
वृद्ध हृदय पर।

केण्ट : ओ करुणामय राजकुमारी !

कारडीलिया : आप न होते पिता अगर उनके तो निश्चय
श्वेत केश ये बरबस उनकी दया जगाते।
यह चेहरा था तूफ़ानों के झोंके झेले !
वज्र गिराते घन-घमण्ड का करे सामना !
अग्नि शरों से गगन चीरती चपलाओं की
चुनौतियाँ ले !—कितनी कोमल त्वचा शीश की !
और इसी के शिरस्त्राण को धारण करके
प्रकृति-प्रकोपों को सहते कोई पहरा दे !
अपने दुश्मन के कुत्ते को, भले मुझे वह
काटे होता, उस घनघोर निशा में अपने
आगदान के पास बिठाती। और पिता मेरे
दुखियारे, विवश हुए तुम एक माँद में
सुअरों, भिखमंगों के साथ शरण लेने को,
ढके हुए तन थोड़े-से चित्थड़-गुद्दड़ से !
बड़ा दुःख है ! बड़ा शोक है ! अचरज ही है
इतनी भीषण विपदाओं में जर्जर जीवन-
शक्ति तुम्हारी बची रह गयी !—जाग गये हैं;
बोलें इनसे।

डाक्टर : देवि, आप ही इनसे बोलें। यही उचित है।

कारडीलिया : महाराज का जी कैसा है। महामहिम का
हाल-चाल क्या ?

लियर : मुझे क़ब्र से बाहर लाना मेरे प्रति अन्याय
बड़ा है; तूने कोई विमुक्त आत्मा है,
लेकिन मैं तो अग्नि-चक्र से बँधा हुआ हूँ;
मेरे आँसू पिघले सीसे की धारा बन
मुझे जलाते।

कारडीलिया : श्रीमन्, आप जानते मुझको ?

लियर : ज्ञात मुझे, तुम प्रेतात्मा हो; कहो कब मरीं ?

कारडीलिया : अब भी सुध-बुध ठीक नहीं है।

डाक्टर : अच्छी तरह नहीं जागे हैं। थोड़ी देर न
इनसे बोलें।

लियर : कहाँ गया था ? कहाँ आ गया ? दिन उजियाला !
मेरे ऊपर भारी अत्याचार हुआ है।
और किसी को सिर्फ़ उस तरह देख दया से

मैं भर जाता। नहीं जानता कि मैं कहूँ क्या।
ये हैं मेरे हाथ, क़सम से नहीं कहूँगा।
अच्छा देखूँ। चुभन सुई की अनुभव करता।
काश मुझे अपनी हालत का निश्चय होता।

कारडीलिया : श्रीमन्, मुझको देखें, मेरे सिर के ऊपर
वरद हस्त अपना रक्खें। ना, झुकें न ऐसे।

लियर : कृपया मुझ पर व्यंग्य करें मत। मैं बूढ़ा हूँ
और बड़ा ही बेवकूफ़ हूँ। चार बीस के
ऊपर हूँगा, घण्टा भर भी न कम, न ज्यादा।
और अगर मैं साफ कहूँ तो,
मुझको डर है, मेरा ठीक दिमाग़ नहीं है।
मुझको लगता तुम्हें जानता औ' इनको भी,
फिर भी मैं सन्देह में पड़ा, क्योंकि मुझे कुछ
पता नहीं है, कौन जगह यह; अपनी सारी
बुद्धि लगाकर याद नहीं मुझको आता, ये
किसके कपड़े, और न मुझको यही पता है,
पिछली रात कहाँ पर था मैं। हँसो न मुझ पर;
जितना मुझको यह निश्चय है, मैं मनुष्य हूँ,
उतने ही निश्चय से कहता, यह नारी मुझको
लगती है मेरी बेटी कारडीलिया।

कारडीलिया : और वही मैं हूँ; मैं हूँ ही।

लियर : गाल तुम्हारे भीगे हैं क्या ? हाँ, भीगे ही;
यह मेरी प्रार्थना कि तुम आँसू न बहाओ।
अगर मुझे तुम विष दो तो मैं पी जाऊँगा;
ज्ञात मुझे, तुम प्यार नहीं मुझको करती हो,
क्योंकि तुम्हारी बहनों ने, यदि याद मुझे है,
मुझसे बुरा सलूक किया है। प्यार न करने
का कुछ कारण पास तुम्हारे; लेकिन उनके
पास नहीं कुछ।

कारडीलिया : कोई कारण नहीं; नहीं कोई भी कारण।

लियर : क्या मैं फ्रांस देश के अन्दर ?

केण्ट : श्रीमन यह
सल्तनत आपकी; आप उसी में।

लियर : देखो, मुझको धोखा मत दो।

डाक्टर : देवि, धैर्य से
काम लीजिए; देख रही हैं, इनके अन्दर
पहले का विक्षोभ मर चुका। फिर भी इसमें
ख़तरा होगा, जो दिन इनकी बेहोशी में
गुज़र चुके हैं उनकी सहसा याद दिलाना।
इनसे कहिए, अन्दर जायें; और न जब तक
ये सुस्थिर हों, इनसे कोई बात न करिए।

कारडीलिया : महामान्य, विश्राम आप करना चाहेंगे ?

लियर : मुझे समझदारी थोड़ी-सी देनी होगी।
मेरी बिनती, बीती भूलो, क्षमादान दो।
मैं बूढ़ा हूँ, बेवकूफ़ हूँ।

[**लियर, कारडीलिया, डाक्टर और नौकर-चाकर बाहर जाते हैं**

भद्र पुरुष : क्या यह सच है श्रीमन्, कि कार्नवाल के राजा इस तरह मारे गये ?

केण्ट : सोलहो आने, श्रीमन्।

भद्र पुरुष : तो उनकी प्रजा का नेतृत्व कौन कर रहा है ?

केण्ट : जैसा मैंने सुना है, ग्लास्टर का दोग़ला बेटा।

भद्र पुरुष : ऐसा कहा जाता है कि उसका देश-निर्वासित पुत्र, एडगर, केण्ट के सरदार के पास जर्मनी में है।

केण्ट : कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। बहुत सतर्क रहने का वक़्त है; राज्य की सेनाएँ पहुँचने ही वाली हैं।

भद्र पुरुष : फ़ैसला होने के पहले बड़ी मार-काट होगी। अच्छा तो, श्रीमन् अब मैं आपसे विदा लूँ।

[**बाहर जाता है**

केण्ट : आज लड़ाई जीत गये तो मंशा पूरी,
आज लड़ाई हार गये तो है मजबूरी।

[**बाहर जाता है**

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

डोवर के निकट ब्रिटिश छावनी

(ढोल और झण्डे के साथ एडमण्ड, रीगन, अफ़सर, सिपाहियों, तथा अन्य लोगों का प्रवेश)

एडमण्ड : पता लगाओ, क्या अलबानी साथ हमारे,
या औरों के कहने सुनने में आ करके
राह उन्होंने अपनी बदली। वे ढुलमुल हैं।
जो करते हैं वे खुद उसको ग़लत समझते।
उनका जो अन्तिम निर्णय हो हमें बताओ।

[**एक अफ़सर से जो सुनकर बाहर चला जाता है**

रीगन : बड़ी बहन का नौकर शायद मरा राह में।
एडमण्ड : देवि, इसी का डर मुझको भी।
रीगन : मेरे प्यारे,
तुम्हें पता, जो जगह तुम्हें देनेवाली हूँ।
सच बतलाओ, लेकिन, बिलकुल सच बतलाना,
क्या तुम मेरी बड़ी बहन को प्यार न करते ?
एडमण्ड : करता हूँ पर शुद्ध भाव से।
रीगन : क्या तुम उसके इतने निकट नहीं पहुँचे हो
तुमने मेरे बहनोई का स्थान लिया है ?
एडमण्ड : इस विचार से तुम अपने को धोखा देतीं।
रीगन : मुझको है सन्देह, तुम्हारे औ' उसके दिल
एक दूसरे के इतने नजदीक आ चुके
तुम्हें कहा जा सकता उसका।
एडमण्ड : देवि, क़सम से,
ऐसी कोई बात नहीं है।
रीगन : मेरे प्यारे,
बीच हमारे वह आये, मैं सह न सकूँगी।
मेल-जोल उससे न बढ़ाओ।
एडमण्ड : डरो व्यर्थ मत।
वह औ' उसके पति अलबानी चले आ रहे।

(ढोल और झण्डे के साथ अलबानी, गोनेरिल और सैनिकों का प्रवेश)

गोनेरिल : **(अलग)** एक बार मैं समर हारने को तैयार
भले ही हो लूँ, बहन न होगी, एडमण्ड को,
मुझको आपस में मिलने दे।
अलबानी : मेरी प्यारी बहन, खुशी है तुमसे मिलकर।
(एडमण्ड से) श्रीमन्, मैंने सुना कि राजा अपनी बेटी
के आये हैं, और साथ में ऐसे भी हैं
जिन्हें हमारे राज्य प्रशासन की सख्ती ने
विद्रोही बन जाने को मजबूर किया है।
जहाँ गवाही नहीं हमारा दिल देता है,
बहादुरी हम वहाँ नहीं दिखला पाते हैं।
यहाँ इसलिए सेना लेकर हम आये हैं,
क्योंकि फ्रांस ने हम पर हमला बोल दिया है,
और नहीं इसलिए कि उसने महाराज को
उकसाया है, या औरों को, जिनके विद्रोही
बनने के, क्षमा करें यदि साफ कहूँ तो,
उचित और भारी कारण हैं।
एडमण्ड : श्रीमन्, बातें
ऊँची कहते।
रीगन : नहीं बहस का यह मौका है।

गोनेरिल : हमें चाहिए मिलकर दुश्मन से टक्कर लें।
निजी, पारिवारिक झगड़ों के निबटाने के
मौक़े आगे बहुत मिलेंगे।

अलबानी : तब फिर आयें,
बूढ़े, युद्ध-विशारद लोगों से सलाह कर
कूच करें हम।
अभी आपके खेमे में आ-
कर मिलता हूँ।

रीगन : बहन, हमारे साथ चलो तुम।

गोनेरिल : नहीं।

रीगन : अधिक सुविधा इसमें ही; मेरी बिनती
साथ हमारे ही तुम आओ।

गोनेरिल : समझ गयी मैं
चाल तुम्हारी; साथ तुम्हारे जा न सकूँगी।

(जैसे ही वे बाहर जाने लगते हैं भेस बदले हुए एडगर प्रवेश करता है।)

एडगर : महामान्य ने यदि ग़रीब से बात कभी की,
एक शब्द मेरा भी सुन लें।

अलबानी : अभी पकड़ लूँगा
मैं तुमको।—बोलो, बोलो।

[एडमण्ड, रीगन, गोनेरिल, अफसर, सैनिक और नौकर-चाकर बाहर जाते हैं

एडगर : युद्ध-भूमि में उतरें उसके पहले खोलें
इस चिट्ठी को। अगर आपकी जय होती है
नरसिंहा बजवा दें उसको हाज़िर होने
को जो इस चिट्ठी को लाया। दीन-हीन जो
मैं दिखता हूँ एक बहादुर को मैं प्रस्तुत
कर सकता हूँ जो उसको साबित कर देगा
जो कुछ इसमें लिखा गया है। अगर आप रण
में मर जाते तो दुनिया से नहीं आपका
रहा वास्ता। सब षड्यन्त्र खत्म हो जाते।
भाग्य आपके रहे पक्ष में।

अलबानी : ठहरो जब तक
ख़त पढ़ता हूँ।

एडगर : ऐसा करना मुझे मना है।
उचित समय पर उद्‌घोषक आवाज मुझे दे;
फ़ौरन हाज़िर हो जाऊँगा।

अलबानी : विदा तुझे फिर
इस खत को मैं अभी पढ़ूँगा।

[एडगर बाहर जाता है

(एडमण्ड का पुनः प्रवेश)

एडमण्ड : दुश्मन दिखलायी पड़ता है। अपनी सेना आगे लायें।

[**अलबानी को एक कागज़ देता है**

यहाँ दिया है कितनी ताकत
है दुश्मन की। पता यत्न से लगवाया है।
लेकिन अब तो जल्दी करिए।

अलबानी : हम मौक़े पर
डटे मिलेंगे।

[**बाहर जाता है**

एडमण्ड : मैंने दोनों बहनों से ही प्रेम-प्रतिज्ञा
कर रक्खी है। एक दूसरे से जलती हैं,
दोनों जैसे सर्प-दन्त से डसी हुई हों।
नहीं समझ पाता मैं किसको अपनाऊँगा,
दोनों को ? एक को ? कि या फिर नहीं किसी को ?
दोनों जीतीं तो न एक का भी सुख भोगा
जा सकता है। यदि विधवा को अपनाता हूँ
बहन गोनेरिल उसकी, धीरज खोकर पागल
हो जायेगी। और गोनेरिल को अपनाकर
राज रहा मिलने से मुझको, उसका पति जो
जीवित-जाग्रत। तो अब उसको आगे कर हम
युद्ध लड़ेंगे। उसमें जीता अगर बचा वह
तो जल्दी-से-जल्दी उसको खत्म कराने
की तरकीब करे वह जो उससे छुटकारा
चाह रही हो। कारडीलिया और लियर के
प्रति करुणा दिखलाने का सम्बन्ध जहाँ तक,
तुला हुआ जिस पर अलबानी, जहाँ लड़ाई
ख़त्म हुई औ' बेटी-बाप हमारे क़ब्ज़े
में आये, वे क्षमा नहीं उसकी पायेंगे—
(उसके पहले ही मैं उनको मरवा दूँगा)।
मुझको अपना ऊँचा पद क़ायम रखने को
तर्क-वितर्क नहीं करना है, क़दम उठाना।

[**बाहर जाता है**

दूसरा दृश्य

दोनों छावनियों के बीच एक मैदान

(भीतर तुरही बजती है। ढोल और झण्डे के साथ लियर और कारडीलिया अपनी सेना लेकर एक ओर से प्रवेश करते हैं और दूसरी ओर चले जाते हैं)

(एडगर और ग्लास्टर का प्रवेश)

एडगर : यहाँ पेड़ की छाया में आराम कीजिये;
यही आपका मेज़बान है। करें प्रार्थना,
बाबा, आज विजय हो सच की; अगर लौटकर
आया तो आराम आपको पहुँचाऊँगा।

ग्लास्टर : नभ-देवों की छाया रहे तुम्हारे ऊपर !

[एडगर बाहर जाता है

(तुरही बजती है; बाद को सेना की वापसी का बिगुल बजता है। एडगर का पुनः प्रवेश)

एडगर : बूढ़े बाबा, भागो ! अपना हाथ मुझे दो।
भागो, भागो ! नृपति लियर की हार हो गयी !
क़ैद कर लिया गया उन्हें, उनकी बेटी को।
अपना हाथ मुझे दो, आओ, जल्दी भागें !

ग्लास्टर : भैया, मुझको और न खींचो !—
पड़े-पड़े सड़ने को है यह जगह बुरी क्या।

एडगर : क्या ! फिर मायूसी की बातें ! इंसानों को
एक तरह ने सहना औ' झेलना चाहिए,
इस दुनिया में आना और यहाँ से जाना—
पके हुए फल-सा गिरने को उद्यत रहना।
आओ, बाबा।

ग्लास्टर : तुम जो कहते, वह भी सच है।

[दोनों बाहर जाते हैं

तीसरा दृश्य

डोवर के निकट ब्रिटिश छावनी

(विजयी के रूप में ढोल और झण्डे के साथ एडमण्ड का प्रवेश; बन्दी के रूप में लियर और कारडीलिया का; अफ़सरों और सिपाहियों आदि का भी)

एडमण्ड : कोई अफ़सर इन्हें यहाँ से अब ले जाये।
जो इनका फ़ैसला करेंगे जब तक उनकी

राय नहीं जानी जाती है, इन पर पहरा
कड़ा रहेगा।

कारडीलिया : भला सोचते, बुरा भोगने-
वालों में हम प्रथम नहीं हैं। ओ आफ़त के
मारे राजा, तेरे कारण मैं उदास हूँ;
यदि अभाग्य तुझको टेढ़ा तेवर दिखलाता,
उससे ज़्यादा टेढ़ा मैं दिखला सकती थी।
क्या हम अपनी बहन-बेटियों से न मिलेंगे ?

लियर : नहीं, नहीं, जी नहीं, नहीं जी, चलो चलें हम
अब बन्दीख़ाने के अन्दर। वहाँ पींजरे
में चिड़ियों-से हम दोनों मिलकर गाएँगे।
जब तू माँगेगी मेरे आशीष, झुकूँगा
मैं घुटनों के बल, तुझसे माफ़ी माँगूँगा।
इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारेंगे हम दोनों—
रोज़ प्रार्थना करते, गाते, और पुरानी
कहानियाँ कहते, नवीन रंगीन तितलियों
पर हँसते, सुनते बेचारे रखवारों को
दरबारी ख़बरों की मिलकर चर्चा करते;
उनसे भी हम बात करेंगे औ' जानेंगे
कौन जीतता, कौन हारता, अन्दर आया
कौन, हो गया बाहर कौन, और हम चीज़ों
के रहस्य, तह तक जाने का यत्न करेंगे,
जैसे जगन्नियन्ता के जासूस हमीं हों।
और, बड़े लोगों के दल-संगठन उठेंगे
और गिरेंगे— बढ़ते-घटते चाँद की तरह—
और घिरे दीवारों से बन्दीघर में हम
इसी तरह से बने रहेंगे।

एडमण्ड : ले जाओ अब
इन्हें यहाँ से।

लियर : कारडीलिया मेरी, तूने
त्याग किया जो उस पर अक्षत-पुष्प देवता
बरसाएँगे। तुझे पा लिया है क्या मैंने ?
हमें जुदा करनेवाले को स्वर्ग लोक से
अग्नि शलाका लानी होगी; आग लगाना
होगा, जैसे लोमड़ियों को दूर भगाने
को करते हैं। आँखें अपनी पोंछ डाल तू।
इसके पहले कि वे रुला दें हम दोनों को
काल हड़प जायेगा उनको—हड्डी-पसली।
हम देखेंगे पहले उनको भूखों मरते।
आ।

[**पहरे में लियर और कारडीलिया बाहर जाते हैं**

एडमण्ड : कप्तान, इधर आ, सुन, यह गुप्त पत्र ले ।

[**पत्र देता है**

जा तू इनके पीछे-पीछे बन्दी-घर में ।
तुझे एक दर्जा ऊपर मैं अभी कर चुका;
यदि तू करता जैसा इसमें कहा गया है,
तेरा भाग्य-सितारा निश्चय चमक उठेगा ।
जान यह कि इन्सान वक्त का पुतला होता ।
नर्मी दिखलाना खाँडे का धर्म नहीं है ।
बड़ा काम जो तुझे सौंपता उस पर कोई
प्रश्न उठा मत । या तू कह, मैं इसे करूँगा,
या फिर मुझसे किसी तरह की आशा मत रख ।

अफ़सर : मेरे मालिक, इसे करूँगा ।

एडमण्ड : कर-घर में लग ।
ध्यान रहे—मैं कहता, फ़ौरन, उसी तरह से
काम किया जाये जैसा मैंने लिख रक्खा ।

अफ़सर : गाड़ी खींच नहीं सकता मैं और नहीं मैं
सूखा मक्का खा सकता हूँ । काम आदमी
का होगा तो मैं कर दूँगा ।

[**बाहर जाता है**

(तुरही बजती है । अलबानी, गोनेरिल, रीगन, अफ़सरों और नौकर-चाकरों का प्रवेश)

अलबानी : श्रीमन्, दिखला दिया आपने आज आप
वीरों की सन्तति; और भाग्य भी रहा पक्ष में ।
आज लड़ाई में, विरोध में जो थे उनको
क़ैद आपने कर रक्खा है । हम चाहेंगे
आप करें व्यवहार साथ उनके जैसा हम,
उनके कामों पर, अपनी रक्षा के हित में,
उचित समझते ।

एडमण्ड : श्रीमन् मुझको उचित लगा यह
बूढ़े, दुखियारे राजा को एक तरह से
बन्दी करके रक्खा जाये । पहरा उन पर
बिठा चुका हूँ । उम्र बड़ी आकर्षक उनकी,
पद उससे ज्यादा आकर्षक; साधारण जन
के दिल उनकी ओर सहज ही झुक जाते हैं,
औ' वे भाले जो कि हमारी सेवा में हैं,
उठते हैं प्रतिकूल हमारे । साथ उन्हीं के
मैंने रानी को भेजा है । कारण, जो मैं
बता चुका हूँ । कल या उसके बाद कभी जब
आप न्याय की सभा बुलायें, तब वे हाज़िर
होने को तैयार रहेंगे । अभी ख़ून से
और पसीने से तर हैं हम । न्याय के लिए

लड़ी लड़ाई, जोश-क्रोध की गरमाहट में,
बुरी बतायी जाती प्राय: उनके द्वारा
जिनको उसमें चोट लगी हो। कारडीलिया
और लियर पर कुछ विचार करने का अवसर
अभी नहीं है।

अलबानी : क्षमा करेंगे, श्रीमन्, मुझको;
दो पक्षों के बीच आज जो हुई लड़ाई
उसमें आप प्रजा केवल हैं, मेरे मत में,
नहीं बराबर के सहयोगी।

रीगन : उन्हें यही पद
तो देना मैं चाह रही हूँ। आगे इतनी
बात बढ़ाने के पहले यह अच्छा होता
पुछवा लेते आप कि मेरी मंशा क्या है।
मेरी सेनाओं के वे ही संचालक हैं,
मेरे पद, मेरे अधिकारों की रक्षा का
भार उन्होंने वहन किया है। यही निकटता
उन्हें बराबर के सहयोगी का पद देने
को काफ़ी थी।

गोनेरिल : इतनी तेज़ी तो न दिखाओ।
उनके अपने गुण खुद उनको ऊँचा करते,
उससे ज़्यादा जो तुम उन पर थोप रही हो।

रीगन : मेरे द्वारा दिये गये मेरे अधिकारों
से वे सबसे अच्छों से समता करते हैं।

अलबानी : वे सबसे ज़्यादा उनके कहलाये जाते
अगर तुम्हारे पति वे होते

रीगन : विदूषकों की
वाणी भी प्राय: नबियों की-सी सच होती।

गोनेरिल : ठहरो, ठहरो, जिन आँखों से तुमने यह परि-
णाम निकाला वे शरारतन तो न तुम्हें यों देख
रही थीं।

रीगन : बहन, नहीं जी मेरा अच्छा,
वर्ना तुमको इसका मुँह-भर उत्तर देती।
सेनानायक, तू ले मेरा दाय भाग सब,
मेरी सेना, मेरे वन्दी; औ' कर इनका,
मेरा जो कुछ तेरा जी हो; सब तेरे हैं।
दुनिया साखी रहे बनाती हूँ मैं तुझको
अपना मालिक, अपना स्वामी।

गोनेरिल : क्या तुम इनसे
पति का सुख पाना चाहोगी?

अलबानी : मना कर सको,
इसका तुमको मिला नहीं हक़:

एडमण्ड : और न तुझको।

अलबानी : अबे दोग़ले, मुझको इसका पूरा हक़ है।
रीगन : (**एडमण्ड से**) ढँढोरची यह करे घोषणा राजपाट सब
अपना मैं तुझको देती हूँ।
अलबानी : थोड़ा ठहरो;
कारण समझो। एडमण्ड, तू राजद्रोह का
अपराधी है, गिरफ़्तार तुझको करता मैं,
और साथ तेरे स्वर्णिम इस नागिन को भी;

[**गोनेरिल की ओर संकेत**

बहन, जहाँ तक प्रश्न तुम्हारे दावे का है,
ख़ारिज करता मैं उसको पत्नी के हित में।
यह है, जिसका एडमण्ड से गँठबन्धन है।

[**गोनेरिल की ओर संकेत**

उसके पति के नाते मैं घोषणा तुम्हारी
रद्द कराता। अगर तुम्हें शादी करनी है,
प्यार मुझे तुम कर सकती हो; ये सज्जन तो

[**एडमण्ड की ओर संकेत**

वचन-बद्ध मेरी पत्नी से।
गोनेरिल : यह मजाकिया मध्यान्तर है।
अलबानी : ग्लास्टर, तू हथियारबन्द है; नरसिंहा बजवाया
जाये। तेरे गर्हित, विदित बहुत-से
राजद्रोहों को तुझ पर साबित करने को
अगर न कोई आगे आय तो यह मेरी
रही चुनौती।

[**अपना दस्ताना फेंकता है**

मैं तेरी छाती के ऊपर
सिद्ध करूँगा, सन्ध्या के भोजन से पहले
मैंने तेरे ऊपर जो अपराध लगाये
तृण भर भी वे नहीं बढ़ा कर कहे गये हैं।
रीगन : जी मचलाता, ओ! मेरा जी मचलाता है।
गोनेरिल : (**अलग**) तू न मरी तो विष पर से विश्वास उठेगा।
एडमण्ड : मुझको है स्वीकार चुनौती।

[**अपना दस्ताना फेंकता है**

चाहे वह जो
हो दुनिया में; मुझको राजद्रोही कहने-
वाला है तो धूर्त की तरह झूठ बोलता।
अपना नरसिंहा बजवा दें। जो दुःसाहस
आगे आने का करता है उस पर, तुझ पर,

और न किस पर ? मैं दृढ़ता से सिद्ध करूँगा
अपनी सच्चाई औ' अपनी सच्चरित्रता।

अलबानी : उद्घोषक को बुलवाओ !

एडमण्ड : हाँ, हाँ, बुलवाओ !

अलबानी : ख़ुद की ताक़त पर निर्भर हो। क्योंकि सिपाही
जो कि नाम पर मेरे भर्ती किये गये थे
उन्हें नाम पर मेरे वापस घर जाने का
हुक्म मिल चुका।

रीगन : मेरी मतली बढ़ती जाती।

अलबानी : जी ख़राब इनका है; इनको मेरे तम्बू
में पहुँचा दो।

[लोग रीगन को पकड़कर बाहर ले जाते हैं

(उद्घोषक का प्रवेश)

उद्घोषक आ इधर—बजे तो अब नरसिंहा,
और यह पढ़ा जाय ज़ोर से—

अफ़सर : नरसिंहा बजे !

[नेपथ्य से नरसिंहे की आवाज़ आती है

उद्घोषक : सेना के विभिन्न वर्गों में, प्रतिष्ठित वंश और प्रतिष्ठित पद का यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो एडमण्ड, ग्लास्टर के तथाकथित अर्ल,को बहुविध राजद्रोह का अपराधी सिद्ध करने के लिए उसके साथ खड्ग-युद्ध करने के लिए तैयार हो तो नरसिंहे की तीसरी आवाज़ तक आगे आये। वह अपना बचाव करने के लिए तैयार है।

एडमण्ड : बजे ! **[पहली बार नरसिंहे की आवाज़**

उद्घोषक : फिर ! **[दूसरी बार नरसिंहे की आवाज़**

उद्घोषक : फिर ! **[तीसरी बार नरसिंहे की आवाज़**

[भीतर से नरसिंहे की जवाबी आवाज़

(हथियारबन्द एडगर का प्रवेश। उसके आगे-आगे एक नरसिंहा-वादक चल रहा है।)

अलबानी : नरसिंहे की इस पुकार पर क्यों यह आया,
पूछो इसकी मंशा क्या है ?

उद्घोषक : आप कौन हैं ?
नाम बतायें ! वंश बतायें ! औ' नरसिंहे
की पुकार का उत्तर क्योंकर दिलवाया है ?

एडगर : ग़द्दारी ने अपने नंगे दाँत गड़ाकर,
या घुन के कीड़े-सा लगकर, जानो, मेरा
नाम खा लिया। फिर भी जिस प्रति-
रोधी से मैं टक्कर लेने को आया हूँ
उसके जैसा उच्च वंश का।

अलबानी : कौन तुम्हारा
प्रतिरोधी है ?

एडगर : जो बोले एडमण्ड की तरफ़
से, जो अर्ल ग्लास्टर के हैं।

एडमण्ड : ख़ुद प्रस्तुत हूँ।
बोल उसे तू क्या कहता है ?

एडगर : खड्ग खींच ले,
यदि तेरे निर्मल चरित्र पर मेरी वाणी
कोई झूठा दाग़ लगाये तो तेरे प्रति
तेरा खाँड़ा न्याय कर सके। यह मेरा है।

[**अपने खाँड़े की ओर संकेत**

देख, इसी से मैं अपने प्रण पूरे करता,
इससे अपनी मान-प्रतिष्ठा रक्षित रखता,
इसके बल पर मैं सैनिक का धर्म निभाता।
तुझमें ताक़त, साहस, यौवन है, उमंग है,
तुझे बड़ा पद मिला हुआ है, ख्याति मिली है,
भाग्य-सितारा ऊँचा है, तलवार विजयिनी,
फिर भी तुझको सरेआम ग़द्दार कहूँगा—
तूने अपने भाई से ग़द्दारी की है,
और पिता से, देवों के प्रति भी तू झूठा,
तूने राजा के विरुद्ध षडयन्त्र रचा है।
ऊपर से नीचे तक, चोटी से एड़ी तक,
तू गन्दा ग़द्दार कि जैसे दाग़ी मेढक।
यदि इससे इन्कार करेगा तो यह खाँड़ा
और हाथ यह, और जोश जो मेरे दिल में
तेरी छाती पर चढ़कर यह सिद्ध करेंगे
तू झूठा है।

एडमण्ड : बात अक़्ल की होती, तेरा
नाम पूछता, किन्तु देखने में तू सुन्दर,
चुस्त सिपाही, तेरी वाणी में कुलीनता
की सुगन्ध है। अपनी रक्षा और प्रतिष्ठा
के हित में मैं, खड्ग-युद्ध की नियमावलि के
अन्तर्गत ही, उठा प्रश्न कुछ, मुक़ाबले में
देर लगा सकता था लेकिन ऐसी छोटी
बातों में मैं नहीं उलझता। ग़द्दारी का
दोष लगाया है जो तूने मेरे ऊपर,
उसको उलटे मैं तेरे माथे मढ़ता हूँ।
ऐसे झूठ नरक भी जिनसे घृणा करेगा
तेरी छाती पर बैठें औ' उसे दबोचें।
पर शब्दों से तो खरोंच भी उसे न लगती,
इसीलिए खाँड़ा मेरा तैयार कि उस पर

घाव बनाये, राह बनाये, वह ग़द्दारी
और झूठ वह, सदा वहाँ पर जमकर बैठें।
बजने दो अब नरसिंहों को।

[**नरसिंहे बजते हैं, वे दोनों लड़ते हैं, एडमण्ड गिरता है**

अलबानी : उसे बचा लो ! उसे बचा लो !
गोनेरिल : ग्लास्टर, यह तेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचाया
गया, खा गया तू धोखा औ' व्यर्थ फँस गया।
खड्ग-युद्ध के नियमों के अनुसार नाम यदि
प्रतिरोधी का ज्ञात नहीं था, तुझे नहीं उस-
से लड़ना था; अपने को मत समझ पराजित।
अलबानी : बन्द करो मुँह, बीबी, अपना, वर्ना काग़ज़ [**पत्र दिखाता है**
यह कर देगा। (**एडगर से**) श्रीमन्, इसको अभी न मारें।
(**एडमण्ड से**) तू जितना बदनाम, बुरा तू उससे ज़्यादा।
स्वयं कारनामा अपना पढ़।—इसे फाड़ने
का, ओ, बीबी, यत्न करो मत; देख रहा हूँ
इस चिट्ठी का पता तुम्हें है।

[**पत्र एडमण्ड को देता है**

गोनेरिल : तो क्या, मुझको अगर पता है; मैं क़ानूनन
राज्य-मालकिन, और नहीं तू; मुझको दोषी
ठहराने का किसमें साहस ?

[**बाहर चली जाती है**

अलबानी : नर पिशाचिनी !
ओ ! (**एडमण्ड से**) क्या तुझको इस चिट्ठी का अता-पता है ?
एडमण्ड : मुझको क्या मालूम, इसे मत मुझसे पूछो।
अलबानी : उसके पीछे जाओ; वह अपने क़ाबू में
नहीं, न जाने क्या कर बैठे; उसे सँभालो।

[**एक अफ़सर बाहर जाता है**

एडमण्ड : तुमने मुझको जिसका दोषी ठहराया है
किया उसे मैंने, उससे ज़्यादा, औ' उससे
कहीं ज़ियादा; समय उन्हें आगे लायेगा;
बीत गया वह, जैसे मैं भी बीत रहा हूँ।
किन्तु कौन तू जिसने मुझ पर जय पायी है ?
यदि तू है निर्मल चरित्र का, माफ़ तुझे मैं
कर देता हूँ।
एडगर : हम उदारता एक दूसरे
के प्रति बरतें। एडमण्ड, मैं खानदान में
तुझसे छोटा नहीं पड़ूँगा; अगर बड़ा हूँ,
बहुत बड़ा अन्याय किया तूने मेरे प्रति।

एडगर मेरा नाम, पिता जो तेरा, मेरा।
न्यायी हैं देवता, हमारी दुर्बलताओं
का शिकार वे हमें बनाकर दण्डित करते।
जिस अँधियारी जगह जन्म तुझको देने का,
विवश, पिता ने पाप किया था, उसने उनकी
आँखें ले लीं।

एडमण्ड : तूने ठीक कहा, यह सच है।
काल चक्र अब घूम चुका है पूरा औ' मैं
यहाँ पड़ा हूँ।

अलबानी : चाल-ढाल ही तेरी, मुझको
बतलाने को काफ़ी थी, तू राजवंश का;
आ, मैं तुझसे गले मिलूँगा। घृणा कभी की
हो यदि मैंने तुझे कि तेरे पूज्य पिता को
तो सदमे से यह मेरी छाती फट जाये!

एडगर : महामान्य, यह ज्ञात मुझे है।

अलबानी : कहाँ छिपाकर तूने अपने को रक्खा था?
और पिता की व्यथा-वेदना कैसे जानी?

एडगर : मेरे मालिक, जानी, उनको स्वयं भोगकर।
थोड़े में सुन लें मेरी यह राम-कहानी,
पर, कहने में, ओ, मेरी छाती फटती है।
मेरे देश-निकाले की थी हुई घोषणा—
बचकर भागूँ, कहीं दिखूँ तो मारा जाऊँ—
इन्सानों को, हाय, ज़िन्दगी कितनी प्यारी!
हम पल-पल मरने की पीड़ा सहें भले ही,
लेकिन हम फ़ौरन मर जाना नहीं चाहते।—
बच रहने की इसी कामना ने सिखलाया,
तन पर पागल के-से चिथड़ों को लटका लूँ,
भेस बना लूँ जिसे देखकर कुत्ते भूँकें।
उसी रूप में मिला पिता को जिनके कोयों
से लोहू बहता था, आँखें अँगूठियाँ थीं
जिनमें से बहुमूल्य नगीने निकल चुके थे।
हाथ पकड़कर मैं उनको पथ बतलाता था,
भीख माँग लाता था उनके लिए और जब
वे निराश होते थे तब मैं उनको ढाढस
बँधवाता था। कभी नहीं—शायद ग़लती की—
उन्हें बताया कि मैं कौन हूँ। बतलाया तो
सिर्फ़ आध घण्टे पहले जब खड्ग-युद्ध के
लिए चला मैं। आशा थी, विश्वास नहीं था,
मैं जीतूँगा, तो मैं उनसे बोला, 'मुझको
आज दुआ दें, जय हो मेरी।' और आदि से
अन्त तलक उनको सब अपनी कथा सुनायी,
लेकिन उनका दिल कमज़ोर बड़ा था—दुख है!

शोक-हर्ष के तीव्र द्वन्द्व को सह न सका वह।
एक दिखी मुसकान अधर पर, दिल की धड़कन
बन्द हो गयी।

एडमण्ड : शब्द तुम्हारे सुनकर मेरा
दिल भर आया। शायद मेरा भला करेंगे।
लेकिन कहते जाओ, ऐसा लगता मुझको,
अभी और कुछ कहना तुमको।

अलबानी : अगर और है, अधिक दुखद है, तो न कहो अब;
बड़े यत्न से अपने आँसू रोक रहा हूँ।

एडगर : जिन्हें शोक से प्यार नहीं है, वे सोचेंगे
इससे दुःखद और भला क्या हो सकता है।
लेकिन घटना एक हुई जो दुःखद इससे
कहीं अधिक है।
वृद्ध पिता के शव के ऊपर जब मैं आँसू
बहा रहा था, एक मनुष्य वहाँ पर आया।
एक समय जब मेरी हालत बहुत बुरी थी
उसने मुझसे नफ़रत की थी, उसे गवारा
न था रहे मेरी संगत में, लेकिन उसने
जब जाना मैं कौन, और क्या मैंने झेला,
सबल भुजाओं से वह मेरे गले लग गया,
औ' इतने ज़ोरों से चीख़ा, लगा कि उससे
आसमान ही फट जायेगा, गिरा पिता पर,
और लियर की औ' अपनी भी दिल पिघलाने-
वाली उसने कथा सुनायी; उससे ज़्यादा
करुण कहानी कभी कान में पड़ी न होगी।
कहते-कहते हुई वेदना उसके ऊपर
इतनी हावी, तार-तार उसके जीवन के
लगा कि अब टूटे, तब टूटे; दो आवाज़ें
नरसिंहे की तभी सुन पड़ीं; बेहोशी में
उसे छोड़ मैं यहाँ आ गया।

अलबानी : बतला सकते
हो कि कौन था ?

एडगर : श्रीमन्, वह था केण्ट, लियर ने
देश-निकाला जिसे दिया था। वेश बदलकर
महाराज के साथ लगा था, उसने उनकी
वह सेवा की जो गुलाम भी कभी न करता।

(ख़ून से रँगा चाकू लिए हुए एक भद्र पुरुष का प्रवेश)

भद्र पुरुष : अरे बचाओ ! अरे बचाओ !

एडगर : किसे बचायें ?

अलबानी : बोलो भी तो !

एडगर : ख़ून लगे चाकू का क्या मतलब ?

भद्र पुरुष : गर्म खून से रँगा हुआ यह, अभी निकाला
गया, ओह, उनकी छाती से, हाय, मर गयीं !

अलबानी : कौन मर गयी, भले आदमी, बतलाओ तो ?

भद्र पुरुष : ओह ! आपकी पत्नी, श्रीमन्; उनकी छोटी
बहन भी मरी जिसे उन्होंने ज़हर दिया था;
स्वयं उन्होंने स्वीकारा है।

एडमण्ड : वचन-बद्ध था मैं दोनों से। साथ-साथ अब
तीनों की शादी होती है।

एडगर : केण्ट आ रहे।

अलबानी : मरीं कि जीतीं, उन्हें सामने मेरे लाओ।

[**भद्र पुरुष बाहर जाता है**

स्वर्ग लोक ने न्याय किया जो हमें कँपाता,
कोई करुणा, पर, अन्तर में नहीं जगाता।

(**केण्ट का प्रवेश**)

यही केण्ट है ? माँग शिष्टता की है उनका
किया जाय जैसा अभिवादन, समय न वैसा
करने देगा।

केण्ट : मैं अपने मालिक राजा से
विदा माँगने को आया हूँ। यहाँ नहीं वे ?

अलबानी : बात बड़ी तो भूल गये हम। हाँ, राजा हैं
कहाँ, कहाँ है कारडीलिया ? एडमण्ड यह
तो बतलाओ।—केण्ट दृश्य यह देख रहे हो ?

[**गोनेरिल और रीगन के शव लाये जाते हैं**

केण्ट : महाशोक ! यह हुआ किस तरह ?
एडमण्ड था
दोनों का प्रिय ! बड़ी बहन ने छोटी को विष
देकर मारा; फिर अपने को छुरी मार ली।

अलबानी : यही बात है। इन दोनों के चेहरे ढक दो।

एडमण्ड : क्षण-भर में मैं मरनेवाला। उससे पहले
बद होने पर भी कुछ अच्छा किया चाहता।
जल्द किसी को गढ़ भेजो, मत देर लगाओ।
मैंने लिखकर हुक्म दिया था कारडीलिया
और लियर को खत्म कर दिया जाये फ़ौरन।
भेज किसी को जल्द रोकाओ।

अलबानी : दौड़ो ! दौड़ो !

एडगर : मेरे मालिक, किससे कहना ? काम गया था
सौंपा किसको ? हुक्म रद्द करने का कोई
चिह्न बना था ?

एडमण्ड : अच्छा सोचा। मेरा खाँड़ा

ले जाकर गढ़ का जो है कप्तान उसे दो,
समझ जायगा।

अलबानी : प्राण छोड़कर दौड़ो। दौड़ो।

[**एडगर एडमण्ड का खाँड़ा लेकर बाहर जाता है**

एडमण्ड : उसको आज्ञा थी तेरी पत्नी की, मेरी,
कारडीलिया को बन्दीघर में लटका दे,
और इस तरह—यह क़सूर उसका अपना ही
समझा जाए—मायूसी में डूब खुदकशी
कर लेने का।

अलबानी : करें देवता उसकी रक्षा!
इसे यहाँ से दूर हटाओ।

[**एडमण्ड की ओर संकेत**

(कारडीलिया के शव को अपने हाथों पर उठाये लियर का पुनः प्रवेश; साथ में एडगर, अफ़सर तथा अन्य लोग हैं।)

लियर : रोओ! रोओ! रोओ! रोओ! पत्थर के दिल
वालो लोगो! मेरी होतीं अगर तुम्हारी
जिह्वाएँ औ' आँखें तो मैं इतना रोता
औ' चिल्लाता आसमान की छत फट पड़ती।
चली गयी वह सदा-सदा को। मुझे ज्ञात है
कब कोई मर जाता, कब ज़िन्दा रहता है।
यह मुर्दा है जैसे माटी का ढोंका हो।
कोई मुझको दर्पण देगा? भाप अगर
इसकी साँसों की उसपर जमती तो समझूँगा,
यह ज़िन्दा है।

केण्ट : क्या दुनिया का अन्त आ गया?

एडगर : उसी ध्वंस की यह छाया है।

अलबानी : आसमान फट
पड़ औ' दुनिया को समेट ले।

लियर : पर हरकत इस
में होती है; यह ज़िन्दा है; यदि ऐसा है
इस अवसर पर मेरे सारे दुःखों का परि-
हार हो गया, जिन्हें कभी मैंने भोगा है।

केण्ट : ओ, तुम मेरे अच्छे मालिक!

लियर : कृपा करो औ'
रहो दूर ही।

एडगर : ये हैं अच्छे अर्ल केण्ट के,
मित्र आपके।

लियर : तुम्हें महामारी ले जाये,
हत्यारे ग़द्दार सभी तुम। बचा इसे मैं

सकता था, अब सदा के लिए चली गयी यह।
कारडीलिया ! कारडीलिया ! ठहर ज़रा ! हा !
क्या तू कहती ? इसकी बोली सदा सुकोमल,
मन्द, मधुर होती थी जो नारी की शोभा।
जो तुझको फाँसी देता था उस पिशाच को,
देखा तूने, कैसे मैंने मार गिराया।

अफ़सर : मेरे मालिक, सच यह, ऐसा किया इन्होंने।

लियर : किया नहीं था ? मैंने वह दिन भी देखा है—
मेरे हाथ खड्ग ख़ासा है, तेज़ धार का,
जिससे अपने विरोधियों को खेला-खेला मैं
मार रहा हूँ। अब मैं बूढ़ा हूँ, मेरे दुख
मुसीबतों ने बिलकुल मुझको तोड़ दिया है।
कौन ? कौन तुम ? मेरी आँखों में पहले की
जोत नहीं है। अभी-अभी मैं बतलाता हूँ।

केण्ट : अगर भाग्य दम भरे कि उसने दो को चाहा
और घृणा की, उनमें से मैं एक सामने
देख रहा हूँ।

लियर : धुन्ध पड़ गयी है आँखों में।
केण्ट नहीं हो ?

केण्ट : वही आपका दास पुराना।
कहाँ आपका नौकर कायस ?

लियर : बड़ा भला था,
इसका मैं विश्वास दिलाता। खड्ग चलाता
था तेज़ी से। बेचारा मर गया, गल गया।

केण्ट : नहीं, नहीं ऐसा है; मेरे अच्छे मालिक !
वह मैं ही हूँ।

लियर : अभी देखता हूँ मैं इसको।

केण्ट : जिसने तब से जब से झगड़ा खड़ा हुआ था,
आज आपके सर्वनाश तक सदा दिया है
साथ आपका।

लियर : यहाँ तुम्हारा स्वागत करता।

केण्ट : कौन देखना यह चाहेगा ? सबके ऊपर
यहाँ उदासी, मायूसी, मुर्दनी छा रही।
आपकी बड़ी कन्याओं ने अपना सत्या-
नाश कर लिया। मरीं निराशा-भरी हुईं वे।

लियर : ऐसा मैं भी सोच रहा हूँ।

अलबानी : नहीं जानते
ये जो कहते, और व्यर्थ है अपने को अब
इनके आगे प्रस्तुत करना।

एडगर : लाभ नहीं कुछ।

(एक अफ़सर का प्रवेश)

अफ़सर : मेरे मालिक, एडमण्ड की मृत्यु हो गयी।

अलबानी : अब इसकी परवाह किसे है। मेरे मित्रो
औ' सरदारो, हम जो चाह रहे हैं समझो—
इस महान खँडहर को जो सुख, जो सुविधाएँ
दी जा सकतीं, दी जाएँगी। औ' शासक के
जितने भी अधिकार, शक्तियाँ जितनी उसकी
मैं अर्पित करता हूँ, वृद्ध महाराजा को,
जो इनकी होंगी ये जब तक जीवित रहते।

(एडगर और केण्ट की ओर देखकर)

जो अधिकार तुम्हारे हैं, तुमको मिलते हैं;
अपनी सेवाओं से जिनके योग्य बने तुम
पुरस्कार-पद वे भी तुमको दिये जायँगे।
मित्र सभी विधिवत् सम्मानित किये जायँगे,
और शत्रु सब उचित दण्ड के भागी होंगे।
देखो, देखो, उधर महाराजा की हालत।—

लियर : और, गया लटकाया फाँसी के फन्दे से
मेरी भोली-भाली मेरी दुखियारी को।
नहीं, नहीं, अब नहीं चिह्न जीवन का कुछ भी।
गाय, बैल, कुत्ते, बिल्ली, चूहे क्यों जीते
जब तुझसे जीवन की साँसें छीन ली गयीं?
हाय, लौटकर कभी नहीं अब तू आयेगी—
कभी भी नहीं, कभी भी नहीं, कभी भी नहीं, कभी भी नहीं!
कृपया मेरा बटन खोल दो; धन्यवाद है।
क्या तुम उसको देख रहे हो? उसको देखो।
उसके होठों को तो देखो। देखो, देखो!...

[मर जाता है

एडगर : वे बेहोश हुए जाते हैं। मेरे मालिक,
मेरे मालिक!

केण्ट : छाती, फट जा! फट जा छाती।

एडगर : मेरे मालिक, आँखें खोलें।

केण्ट : उनकी प्रेतात्मा को छेड़ो नहीं, उन्हें अब
सदा के लिए सो जाने दो। उनको उससे
नफ़रत होगी जो इस क्रूर-कठिन दुनिया में
खींच उन्हें लाना चाहेगा, थोड़ी-सी भी
देर के लिए।

एडगर : वे सचमुच अब चले जा चुके।

केण्ट : अचरज ही है इतने दिन तक यह सब सहते
चले गये वे। उन्हें छोड़ देनी थी अपनी
देह कभी की।

अलबानी : इन्हें यहाँ से अब ले जाओ।

महाशोक में हम क्या डूबे, दुनिया डूबी।
(केण्ट और एडगर से) तुम दोनों को
अपने मन का मीत मानता। तुम शासन की
बागडोर अपने हाथों लो, औ' यह घायल
राज्य सँभालो।

केण्ट : श्रीमन्, मुझको एक सफ़र पर
जल्दी जाना, बुला रहा है मालिक मेरा,
ओ दुनिया, अब क्या नाता है मुझसे तेरा ?—

एडगर : इन उदास घड़ियों का भार हमें सहना है,
हृदय खोलकर कहें हमें जो कुछ कहना है।
सबसे बूढ़े ने सबसे ज़्यादा दुख ढोया,
हम जवान जो, कभी न इतना ज़हर पियेंगे,
कभी न इतना देखेंगे, इतना न जियेंगे !—

[मातमी धुन के साथ सब बाहर जाते हैं

०००